जलियांवाला बाग।

* श्रीहरिः *

भूमिका

परमात्मा जो कुछ करता है भलेके लिये ही करता है यह बात पञ्जाबके हत्याकाण्डने भली भांति स्पष्ट कर दिखायी। भारतवासी न जाने कबतक मोहनिद्रामें पडे रहते और उस काले सांपको दूध पिलाकर उसे और भी मोटा बनाते रहते जो मौका पडनेपर उन्हें डसनेको सदा तैयार है। किस भारतवासीको स्वप्नमें भी इस बातका ज्ञान था कि साम्राज्य वादियोंकी असली ताकत डायरशाहीपर ही कायम है। पञ्जाबी हत्याकाण्डने वह भी प्रकट कर दिखाया। गोलियां खाकर और पेटके बल रेंगकर भारतवासियोंको भी ज्ञान हुआ कि संसारमें सबसे भयानक रोग दासताका है और गुलामीमें पडे रहनेसे मर जाना ही अच्छा है। भारतको इस आश्चर्यजनक जागृतिका सम्बन्ध यदि पञ्जाबके अत्याचारोंके साथ नहीं तो और किससे है। इसीसे प्रत्येक भारतीय देशभक्तकी यही प्रबल इच्छा होती है कि भारतवासी मात्र पञ्जाबके हत्याकाण्डको ध्यानमें रखें। इसी उद्देश्यसे वर्तमान पुस्तक तैयार की गयी है। पञ्जाबके अत्याचारोंकी जांचके लिये दो कमेटियां बैठी थीं। एक तो देशकी

प्रधान राष्ट्रीय महासभाने नियुक्त की थी और एक सरकारद्वारा नियुक्त की गयी थी जो हण्टर कमेटीके नामसे प्रसिद्ध है, क्योंकि लार्ड हण्टर उस कमेटीके अध्यक्ष थे। दोनों कमेटियोंने जांच कर अपनी अपनी रिपोर्टें प्रकाशित कीं। कांग्रेस कमेटीकी रिपोर्ट केवल पञ्जावके अत्याचारोंसे सम्बन्ध रखती है परन्तु हण्टर कमेटीमें पञ्जाबी अत्याचारोंके साथ और कई स्थानोंकी जांचका फल जोड़ दिया गया है। हमने दोनो रिपोर्टों को पढ़कर देखा वे उतने महत्वकी न दिखायी दीं जितने महत्वकी कांग्रेस कमेटीद्वारा संग्रह की हुई गवाहियां हैं। इसका यही कारण है कि रिपोर्टों में जो वातें दी गयी हैं उनका साधारण ज्ञान प्रत्येक भारतवासीको है, परन्तु पञ्जाबी अत्याचार कैसे भीषण थे इसका पता भुक्तभोगियोंकी गवाहियोंसे ही लगता है जिन्हें पढ़कर शायद ही कोई ऐसा अभागा भारतवासी हो जो आंसू न बहाये। इन गवाहियोंके बिना कोई पुस्तक पूरी नही कही जा सकती। कांग्रेस कमेटीने सत्तरह सौ आदमियोकी गवाहियां लीं और ६५० गवाहियां प्रकाशित की। जो गवाहियां प्रकाशित नहीं की गयीं वे प्रकाशित गवाहियोंके समान ही थी। प्रकाशित गवाहियोंसे बड़े आकारकी हजार पृष्ठकी एक मोटी पुस्तक तैयार हुई जिसका हिन्दी भाषान्तर करनेसे कमसे कम दो हजार पृष्ठ तो अवश्य ही हो जायेंगे। इस कठिनाईको दूर करनेके लिये हमने समानता रखनेवाली गवाहियोंको और भ[illegible] कर दिया है तथा उन गवाहियोंका भाषान्तर प्रकाशित

करना आवश्यक नहीं समझा जो घटनाओंका वर्णन करनेवाली हैं। जिन गवाहियोंसे अत्याचारियोंके अमानुषिक अत्याचार प्रकट होते हैं उन्हें ही प्रकाशित करना उचित समझा है। साथ ही सक्षेपमें घटनाओंका इतिहास भी दे दिया है परन्तु हमारा प्रधान उद्देश्य केवल रोमांचकारी गवाहियां ही प्रकाशित करना है जो कांग्रेस कमेटीकी रिपोर्टसे ली गयी हैं। भारतके बच्चे बच्चेको ये गवाहियां पढ़नी चाहिये। इन्हें पढ़ लेना ही पर्याप्त है। बस, हमारा उद्देश्य सफल हो जायेगा।

विनीत—

प्रकाशक।

कांग्रेस-कमीशनकी रिपोर्ट।

कमेटीका संगठन ।

पञ्जाबी अत्याचारोंकी जांचके लिये कांग्रेस द्वारा जो कमेटी सगठित की गयी थी उसके अध्यक्ष पंडित मोतीलाल नेहरू और सदस्य महात्मा गांधी, देशबन्धु चित्तरञ्जनदास, श्रीयुक्त अब्बास तैयबजी और वैरिस्टर जयकार थे। कमेटीने अपना कार्य १७ नवम्बर १९१९ को आरंभ किया। लाहोरके सुप्रसिद्ध वैरिस्टर मि० सन्तानम् कमेटीके सेक्रेटरी नियुक्त हुए थे। कलकत्तेके मि० फजलुल हक पहले सदस्य चुने गये थे, परन्तु आवश्यक कार्य वश वे सम्मिलित नहीं हो सके और उनका स्थान वम्बईके वैरिस्टर मि० जयकारको दिया गया। जिस समय पंडित मोतीलाल नेहरू अमृतसर कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए उन्होंने कमेटीका सदस्य रहना उचित नहीं समझा और इस्तीफा दे दिया। कमेटीने उनका इस्तीफा मजूर कर लिया और उनकी जगहपर कोई नया सदस्य नियुक्त नहीं किया क्योंकि गवाहियां लेनेका काम उस समय तक प्रायः समाप्त हो चुका था। कांग्रेस कमेटीने जहांतक सम्भव हो सका गवाहियोंकी सत्यताकी पूरी जांच की। कमेटीका

कमेटीका संगठन ।

पञ्जावी अत्याचारोंकी जांचके लिये कांग्रेस द्वारा जो कमेटी संगठित की गयी थी उसके अध्यक्ष पंडित मोतीलाल नेहरू और सदस्य महात्मा गांधी, देशबन्धु चित्तरञ्जनदास, श्रीयुक्त अब्बास तैयवजी और बैरिस्टर जयकार थे। कमेटीने अपना कार्य १७ नवम्बर १६१६ को आरंभ किया। लाहोरके सुप्रसिद्ध बैरिस्टर मि० सन्तानम् कमेटीके सेक्रेटरी नियुक्त हुए थे। कलकत्तेके मि० फजलुल हक पहले सदस्य चुने गये थे, परन्तु आवश्यक कार्य वश वे सम्मिलित नहीं हो सके और उनका स्थान बम्बईके बैरि-स्टर मि० जयकारको दिया गया। जिस समय पंडित मोतीलाल नेहरू अमृतसर कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए उन्होंने कमेटीका सदस्य रहना उचित नही समझा और इस्तीफा दे दिया। कमेटीने उनका इस्तीफा मंजूर कर लिया और उनकी जगहपर कोई नया सदस्य नियुक्त नहीं किया क्योंकि गवाहियां लेनेका काम उस समय तक प्रायः समाप्त हो चुका था। कांग्रेस कमेटीने जहांतक संभव हो सका गवाहियोंकी सत्यताकी पूरी जांच की। कमेटीका

कोई न कोई सदस्य लाहौर, अमृतसर, तरन तारन, कसूर, गुजरानवाला, वजीराबाद, निजामाबाद, अकलगढ़, रामनगर, हाफिजाबाद, सगलाहिल, शेखूपुरा, चूहारकाना, लायलपुर, गुजरात, मालकवाल और सरगोधा अवश्य ही गया। वहां जो गवाहियां एकत्र की गयीं वे एक सार्वजनिक सभामें पढ़कर सुनायी गयीं और कहा गया कि जिसे उनके सम्बन्धमें कुछ भी विरोध करना हो वह करे परन्तु किसीने गवाहियोंकी सत्यताका विरोध नहीं किया।

दूसरा अध्याय।

उपद्रवका प्रधान कारण।

बड़े लाटकी व्यवस्थापिका सभामें १८ मार्च १९१९ को रौलट बिल पास हुआ जो भारतीयोंकी राजनीतिक स्वाधीनतापर आघात करनेवाला था। सरकारके एक भारतीय सदस्यके सिवा और किसी भी भारतीयने उसका समर्थन नहीं किया और बिलके पास होते ही पण्डित मदनमोहन मालवीय, मि० जिन्ना और [illegible] मि० मजरुलहकने कौंसिलकी मेम्बरीसे इस्तीफा दे दिया। बिलके पास होनेपर तमाम भारतमें एक सिरेसे दूसरे सिरेतक हलचल मच गयी। जर्मन महासमरके समय जो भारत-

रक्षा कानून बना था वह युद्धके अन्त होनेपर शीघ्र उठा दिया जाने वाला था। उसका रद्द करना तो अलग रहा, एक और नया दमनकारी कानून भारतमें प्रचलित होते देख भारतीयोंका क्षुब्ध होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि महासमरमें धन जनसे अङ्गरेजो की पूरी सहायता कर वे यह आशा कभी न करते थे कि सेवाका बदला इस बुरे ढङ्गसे चुकाया जायेगा। रालट एक्ट पास होनेपर भारतीय किंकर्त्तव्यमूढ हो गये और किसी भी भारतीय नेताके समझमें यह बात न आयी कि अब क्या करना चाहिये। उसी समय महात्मा गान्धीने सत्याग्रहकी घोषणा कर दी। सत्याग्रह प्रतिज्ञामें यह लिखा हुआ था कि जबतक रालट एक्ट रद्द न होगा प्रतिज्ञापत्रपर सही करनेवाले हम लोग उसे कभी न मानेंगे और अन्य कानून भी न मानेंगे जिनके सम्बन्धमें नियुक्त होनेवाली एक कमेटी अपना निर्णय प्रकट कर देगी। हम लोग जानमालपर किसी तरहकी चोट न करेंगे और शान्तिपूर्वक अपना कार्य करेंगे। सत्याग्रहका आरम्भ ३० मार्च १९१९ से सूचित किया गया जिस दिन तमाम भारतमें हड़ताल करनेकी घोषणा हुई, परन्तु पीछेसे महात्मा गान्धीने ३० मार्चकी जगह ६ अप्रेलको हड़ताल करनेकी घोषणा की। समस्त पञ्जाबमें ६ अप्रेलको हड़ताल मनायी गयी। पञ्जाबमें सत्याग्रहने खास जोर पकड़ा क्योंकि पञ्जाबके लेफटीनेण्ट गवर्नर सर माईकेल ओडायरकी नादिरशाहीने प्रजाको बहुत ही दुःखी बना दिया था और युद्धकालमें बड़े बुरे ढङ्गसे सैनिक भर्ती की गयी थी। सर माईकेल

कोई न कोई सदस्य लाहोर, अमृतसर, तरन तारन, कसूर, गुजरानवाला, वजीराबाद, निजामाबाद, अकलगढ, रामनगर, हाफिजाबाद, संगलाहिल, शेखूपुरा, चुहारकाना, लायलपुर, गुजरान, मालकवाल और सरगोधा अवश्य ही गया। वहां जो गवाहियां एकत्र की गयीं वे एक सार्वजनिक सभामें पढ़कर सुनायी गयीं और कहा गया कि जिसे उनके सम्बन्धमें कुछ भी विरोध करना हो वह करे, परन्तु किसीने गवाहियोंकी सत्यताका विरोध नहीं किया।

दूसरा अध्याय।

उपद्रवका प्रधान कारण।

बड़े लाटकी व्यवस्थापिका सभामें १८ मार्च १९१९ को रालट बिल पास हुआ जो भारतीयोंकी राजनीतिक स्वाधीनतापर आघात करनेवाला था। सरकारके एक भारतीय सदस्यके सिवा और किसी भी भारतीयने उसका समर्थन नहीं किया और बिलके पास होते ही पण्डित मदनमोहन मालवीय, मि० जिन्ना और बिहारके मि० मजहरुल हकने कौंसिलकी मेम्बरीसे इस्तीफा दे दिया। बिलके पास होनेपर तमाम भारतमें एक सिरेसे दूसरे सिरेतक खलबली मच गयी। जर्मन महासमरके समय जो भारत-

रक्षा कानून बना था वह युद्धके अन्त होनेपर शीघ्र उठा दिया जाने वाला था। उसका रद्द करना तो अलग रहा, एक और नया दमनकारी कानून भारतमें प्रचलित होते देख भारतीयोंका क्षुब्ध होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि महासमरमें धन जनसे अङ्गरेजो की पूरी सहायता कर वे यह आशा कभी न करते थे कि सेवाका बदला इस बुरे ढङ्गसे चुकाया जायेगा। रालट एक्ट पास होनेपर भारतीय किकर्त्तव्यमूढ़ हो गये और किसी भी भारतीय नेताके समझमें यह बात न आयी कि अब क्या करना चाहिये। उसी समय महात्मा गान्धीने सत्याग्रहकी घोषणा कर दी। सत्याग्रह प्रतिज्ञामें यह लिखा हुआ था कि जबतक रालट एक्ट रद्द न होगा प्रतिज्ञापत्रपर सही करनेवाले हम लोग उसे कभी न मानेंगे और अन्य कानून भी न मानेंगे जिनके सम्बन्धमें नियुक्त होनेवाली एक कमेटी अपना निर्णय प्रकट कर देगी। हम लोग जनमालपर किसी तरहकी चोट न करेंगे और शान्तिपूर्वक अपना कार्य करेंगे। सत्याग्रहका आरम्भ ३० मार्च १९१९ से सूचित किया गया जिस दिन तमाम भारतमें हड़ताल करनेकी घोषणा हुई, परन्तु पीछेसे महात्मा गान्धीने ३० मार्चकी जगह ६ अप्रेलको हड़ताल करनेकी घोषणा की। समस्त पञ्जाबमें ६ अप्रेलको हड़ताल मनायी गयी। पञ्जाबमें सत्याग्रहने खास जोर पकड़ा क्योंकि पञ्जाबके लेफ्टीनेण्ट गवर्नर सर माईकेल ओडायरकी नादिरशाहीने प्रजाको बहुत ही दुःखी बना दिया था और युद्धकालमें बड़े बुरे ढङ्गसे सैनिक भर्ती की गयी थी। सर माईकेल

ओडायर पञ्जाबके शिक्षितोपर बड़ी कड़ी दृष्टि रखते थे। देशके गण्यमान्य प्रजाहितैषी नेताओंका प्रवेश भी उन्हें अपने प्रान्तमें असह्य था और निर्भीक समाचारपत्रोंको भी वे जनताके हाथमें नहीं देखना चाहते थे। ६ अप्रेलकी व्यापक हड़ताल देखकर वे अधीर हो गये और उन्होंने दमनपर कमर कसी। उन्होंने एक व्याख्यानमें स्पष्ट कह दिया कि इस प्रान्तको सरकारने सफलतापूर्वक युद्धकालमें पूर्ण शान्ति रखी। युद्ध समाप्त हो जानेपर अब वह भङ्ग नहीं की जा सकती। जनताकी हड़तालमें उन्हें अशान्तिका भूत दिखायी दिया यद्यपि हड़ताल शान्तिपूर्वक की गयी थी। सर माईकेल ओडायरकी नादिरशाही ही पञ्जाबी अत्याचारोंका आदि कारण है। सर माईकेल ओडायर और उनके समान विचार रखनेवालोंको हिन्दू मुसलमानोंकी एकता भी असह्य थी। ३० मार्चको दिल्लीमें हिन्दू मुसलमानोंके मेलका जो अपूर्व दृश्य उपस्थित हुआ उससे इन स्वेच्छाचारी शासकोंको भय हो गया था कि कहीं पञ्जाबमें भी मेलकी लहर न बह पड़े।

तीसरा अध्याय ।

६ अप्रेल

महात्मा गांधीकी घोषणाके अनुसार तमाम पञ्जाबमें ६ अ-
[illegible] व्यापक हड़ताल रही। पञ्जाबके वर्तमान इतिहासमें यह

अभूतपूर्व घटना थी। उस दिन हिन्दू मुसल्मानोंके पारस्परिक प्रेमका मानो समुद्र ही उमड़ पड़ा। हड़ताल और इस मेलमें सर माइकेल ओडायरको वृटिश शासनके लिये बड़ा खतरा दिखायी दिया। उन्होंने इस मेलको नष्ट करनेकी प्रतिज्ञा की। हिन्दू मुसल्मान लोकप्रिय नेता सम्राट्के विरुद्ध षड्यन्त्र रचनेवाले माने गये क्योंकि वे मेलपर जोर देते थे। जनताको पागल बनानेके लिये अधिकारियोंने षड्यत्र रचा जिसका परिणाम पञ्जाबमें मार्शललाकी घोषणा कहा जायेगा। अमृतसरमें ६ अप्रेलको अन्य स्थानोंकी भांति व्यापक हड़ताल रही। लोगोंने अपना कारबार एकदम बन्द रखा। लाहोर आदि अन्य स्थानोंमें भी इसी प्रकार शान्तिपूर्ण हड़ताल रही। इस हड़तालने पञ्जाबके अधिकारियोंका दिमाग किस तरह फेर दिया और उन्होंने क्या क्या करतूतें कीं इसका व्योरा हम प्रत्येक स्थानको अलग अलग लेकर ही करना चाहते हैं।

चौथा अध्याय।

अमृतसर

६ अप्रेलकी हड़तालके बाद अमृतसरके हिन्दू मुसल्मान सिख एकदिल हो गये। ९ अप्रेलको हिन्दुओंका धार्मिक त्योहार रामनवमी था। उसमें हिन्दू मुसल्मान और सिखोंने बड़े

हसे भाग लिया। अमृतसरके नेता डा० सैफुद्दीन किचलू और डा० सत्यपालने प्रेमप्रदर्शनमें खास भाग लिया। दोनों नेता अमृतसरमें देवताओंके समान पूजे जाने लगे। पञ्जाब सरकार २६ मार्च १६१६ को आज्ञा निकल चुकी थी कि डा० सत्यपाल किसी सार्वजनिक सभामें भाग न ले और वे अमृतसरमें नजर-बन्द भी कर दिये गये थे। अमृतसरमें महात्मा गांधीकी पूर्व सूचनाके अनुसार ३० मार्चको भी एक सार्वजनिक सभा हुई थी। जिसमें डा० किचलूका प्रभावशाली भाषण हुआ था। इस सभा की धूमने भी अधिकारियोंको भयभीत कर दिया क्योंकि सभामे जनताकी उपस्थिति ३०।३५ हजार हो गयी थी। सर माइकेल ओडायरकी सरकारने ३ अप्रेलको डा० किचलूको भी डा० सत्य-पालके समान आज्ञा दी कि वे अमृतसरके वाहर न जाये और किसी सार्वजनिक सभामे किसी तरहसे भाग न लें। समाचार पत्रोंमे भी कुछ न लिखें। पण्डित कोटूमल, पण्डित दीनानाथ और स्वामी अनुभवानन्दको भी इसी प्रकार आज्ञाएं दी गयीं। ६ अप्रेलको जो सार्वजनिक सभा अमृतसरमे हुई थी उसमें इन कड़ाइयोंके कारण जनता और भी अधिक संख्यामें एकत्र हुई थी। ५० ह-जारकी सभामे रालटएक्ट रद्द करने और नेताओंके सम्बन्धमे आज्ञाएं दूर करनेका प्रस्ताव पास हुआ था। नेताओंके उद्योगसे रामनवमीके दिन जनताने आपसमे बडा प्रेम दिखाया। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरेके गले लगे और एक दूसरेने विना भेदभावके सबका जूठा पानीतक पिया। डा० किचलू और

सत्यपालने अलग अलग स्थानोंमे बैठकर यह जुलूस देखा और जनताने उन्हें देखकर बड़ी हर्ष ध्वनि की। सर माइकेल ओडायरके दिलको जलानेवाली ये सब बातें थीं। इधर जनता उत्साह-लीन हो रही थी और उधर ओडायरशाही नेताओंके देश निकालेकी आज्ञा तैयार कर रही थी। ९ वीं अप्रेलको रातको डा० सत्यपाल और किचलूके देश निकालेकी आज्ञा हुई। १० वीं को वे दोनो नेता किसी अनिश्चित स्थानको भेज दिये गये। यह खबर अमृतसरमें बिजलीकी तरह फैल गयी। लोग तुरन्त ही नंगेशिर और नंगे पैर जमा होकर डिप्टी कमिश्नरके बंगलेको ओर नेताओंके छुटकारेकी प्रार्थना करनेके लिये जाने लगे, परन्तु रेलवे पुलके पास वे रोक लिये गये और उनके आगे बढ़नेपर गोली चलायी गयी जिससे कुछ आदमी मरे और घायल हुए। भीड़में किसीके पास छड़ी तक न थी। जब गोली चल गयी तो लोग वापस लौटे और फिर बहुत बड़ी भीड़ उत्तेजित होकर लाठियां लेकर रेलवे पुलको तरफ बढ़ी। अमृतसरके वकील बैरिस्टर लोगोंको वापस जानेकी सलाह दे रहे थे कि फिर गोली दागी गयी जिससे लगभग बीस आदमी तुरन्त ही मर गये और कई आदमी घायल हुए। अब जन समूह एकदम बिगड़ पड़ा। जनाना अस्पतालकी मिसेज ईस्डन लोगोंको घायल देख हंस पड़ीं और बोलीं कि हिन्दू मुसल्मानोंके मेलका स्वाद मिल गया। इसपर लोग बिगड़े और उन्हें पकड़नेके लिये अस्पतालमें घुस पड़े। वे किसी तरह बच गयीं। उत्तेजित जनताने फिर नेशनल बेंकपर

धावा किया और उसके मेनेजर मि० स्टुअर्ट और एकाउण्टेंट मि० स्काटको जानसे मार डाला। मालगुदाममें कुछ लोगोंने रेलवे गार्ड मि० राविन्सनको कत्ल किया। एलायन्स बैंकके मेनेजर मि० टामसन भी मार डाले गये क्योंकि उन्होंने तमंचा दागा था। सार्जेण्ट रोलेण्ड भी मार डाला गया। टाउनहाल, पोस्टआफिस और मिशन हाल जलाकर खाक कर दिया गया। भगतनवाला रेलवे स्टेशनका हिस्सा भी जला दिया गया। चार्टर बैंकपर भी धावा हुआ। मिस शेरवुड वाइसिकलपर सवार चली आती थीं उनपर धावा हुआ परन्तु वे अपने एक हिन्दुस्तानी शिष्यके पिताद्वारा बचा ली गयीं। यह सब काण्ड १० अप्रेलके ५ बजे शामतक समाप्त हो गया। इस धूमने अधिकारियोंको आपेसे बाहर कर दिया। लेफ्टीनेण्ट गवर्नरने मि० किचिनको लाहोरसे अमृतसर भेजा। अमृतसरका अधिकार सैनिक शासकके अधीन कर दिया गया और रामबागमें जनरल डायरने ११ अप्रेलको डेरा डाल दिया। जनरल डायरने पहला काम यही किया कि शहरमें घुसकर बारह आदमी गिरफ्तार किये। ११ अप्रेलको पहले तो लोगोंको जुलूस बनाकर लाशोंके साथ जाने की आज्ञा नहीं दी गयी, परन्तु पीछेसे आज्ञा मिली कि ठीक २ बजे जुलूसको लौटना होगा। जुलूस यद्यपि बहुत बड़ा था परन्तु नियत समयके भीतर ही लौटा। १२ अप्रेलको धावख टीकानमें एक सभा हुई जिसमें हंसराजने घोषणा की कि १३ ताहरके प्रसिद्ध वकील डा० कन्हैयालालकी अध्यक्षतामें
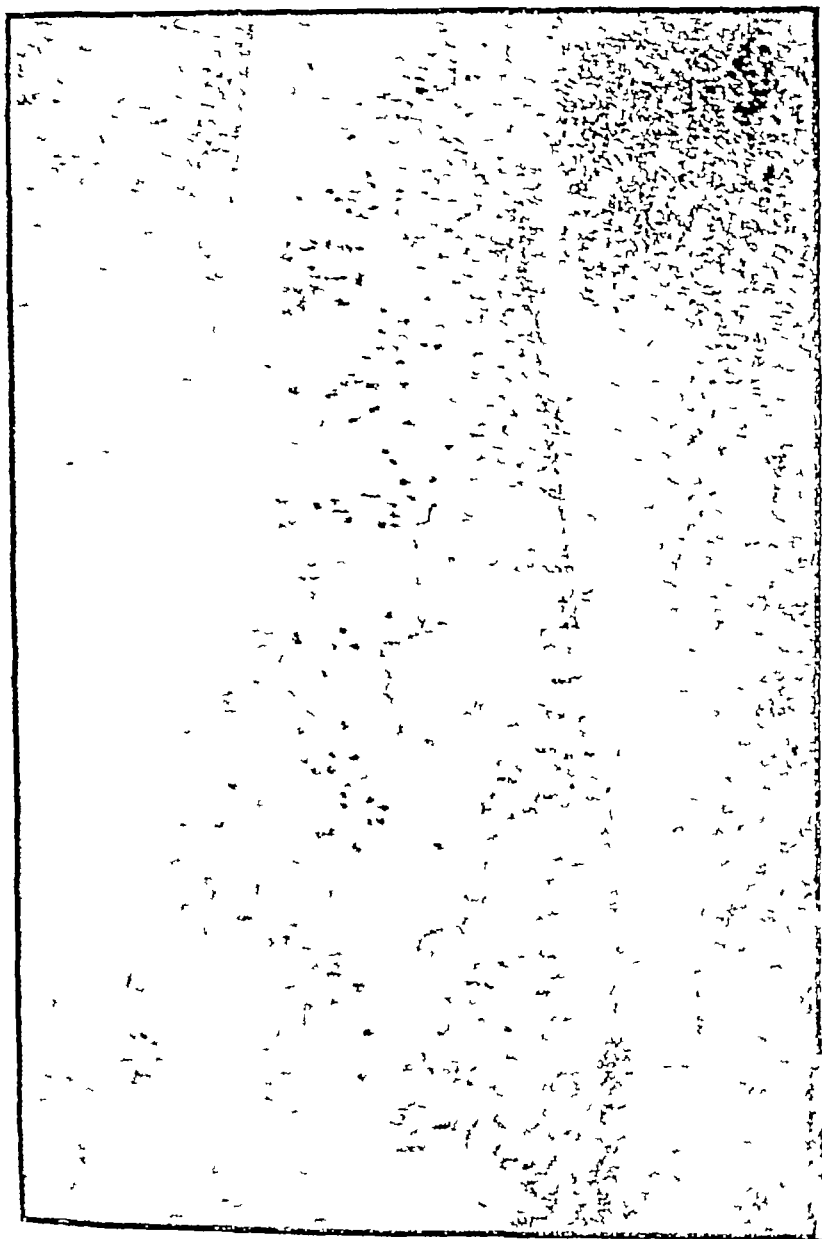
पड़ती है कि उस दिन जालियांवाला वागमें एक हजार आदमी अवश्य मरे होंगे यद्यपि सरकार २९० मरे वताती है और वह पीछेसे पांच सौ मरे मान चुकी है जो सेवासमितिकी जांचका फल है, परन्तु एक हजारका अनुमान अधिक नहीं क्योंकि जनरल डायरकी इच्छा अधिक आदमियोंको मार डालनेकी ही थी। यह दूसरी वात है कि गोला वारूद कम हो जानेसे वह इच्छा पूर्ण न हो सकी हो।

१० अप्रेलकी घटनाके वाद सभी युरोपियन हिन्दुस्तानियोंसे वेतरह चिढ़ गये थे और सव उत्तेजित हो रहे थे। मि० सेमूरने कह ही दिया था कि प्रत्येक युरोपियनकी जानके वदले एक हजार भारतीयोंकी जानें ली जायेंगी और जालियांवाला वागमें ठीक वही वात हुई भी। यहांतक अफवाह थी कि तमाम शहर गोलीसे उड़ा दिया जायेगा। सिविलसर्जनने डा० वालमुकुन्दको नक्शा भी खींचकर वताया था कि जनरल डायर किस तरह गोली चलायेंगे। इन वातोंसे १३ अप्रेलके हत्याकाण्डका समर्थन हो जाता है। सर माइकेल ओडायरने जनरल डायरके हत्याकाण्डको पसन्द किया। १४ अप्रेलको लोगोंने लाशों और घायल मनुष्योंका प्रवन्ध किया। उसदिन तमाम शहरमें शान्ति रही। कोतवालीमें गण्यमान्य व्यक्तियोंकी सभा की गयी जिसमें कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर और जनरल डायर सभीने नाराजी दिखायी और कहा कि आप लोग सरकारसे लड़ना चाहते हैं या शान्ति चाहते हैं। ...नोंकी हत्याका वदला लिया जायेगा। सरकार शक्तिवान्

एक 'टिकटिकी' लगायी गयी थी जिसमें लोगोंको बांधकर उनके बेत लगाये जाते थे। आठ दिन तक आर्डर जारी रहा। जो लोग पेटके बल रेंगते थे यदि उनके शरीरका कोई भी अङ्ग ऊपरको उठता था तो उनपर बन्दूकों और भालोंकी चोटकी जाती थी। गलीमें ही गोरे टट्टी पेशाब किया करते थे और कुएपर जहांसे पानी लिया जाता था टट्टी वगैरः कर दिया करते थे। सबेरे ६ बजेसे शामके १० बजे तक गोरोंका पहरा रहता था। डायरका कहना है कि मैं नही समझता था कि कोई भी समझदार आदमी इस आज्ञाका पालन करता हुआ उस गलीसे निकलेगा। लार्ड हंटरने जब डायरसे प्रश्न किया कि जब ६ बजेसे १० बजेतक पहरा रहता था तो लोग अपने खाने पीनेका सामान कब लाते। उत्तरमे कहा गया कि १० बजेके बाद ला सकते थे। जनरल डायरकी बुद्धिमानीका अनुमान इसी उत्तरसे लग सकता है क्योंकि वह यह आज्ञा भी तो निकाल चुका था कि रातको १० बजेके बाद जो कोई आदमी अपने घरसे बाहर होगा वह गोलीसे उड़ा दिया जायेगा। जनरल डायरने यह भी कह दिया कि थोड़ा ही कष्ट तो हुआ होगा और इतने कष्टकी मैं परवा नहीं करता जब कि मार्शलला जारी था। जनरल डायरका कहना है कि मैंने उन्हीं लोगोंके कोड़े लगवानेका प्रबन्ध किया था जिन्होंने मिस शेरवुडपर चोट की थी, परन्तु गवाहियोंसे मालूम होगा कि प्रतिष्ठित व्यक्तियोंको असुविधा और अपमानका सामना करना पड़ा तथा निर्दोष बालकोंपर

चेत पड़े! जो लोग जैन मन्दिरमें दर्शन करने जाते थे उन्हें भी रेंगकर जाना पड़ता था। मन्दिरपर वैठे हुए कबूतरोंको गोरे अपने खानेके लिये मार लिया करते थे। एक अच्छे आदमीको भी पेटके बल रेंगना पड़ा था। शहरमें युरोपियनोंको सलाम न करनेपर लोगोंके कोड़े लगते थे। जिनके कोड़े लगे उनकी गवाहियां अन्यत्र प्रकाशितकी गयी हैं। ६३ वकीलोंको स्पेशल कान्सटेबल बनकर अपमानित होना पड़ा। लोगोंको झूठे बयान देनेके लिये पुलिसने जिस तरह तंग किया वह गवाहियोंमें दर्ज है। जो स्पेशल अदालतें बनी थीं उनमें मार्शलला कमीशनोंके तीन सदस्योंको फांसी कालेपानी और जायदाद जब्तीकी आज्ञा देनेका अधिकार था और उनके निर्णयके विरुद्ध अपील भी नहीं हो सकती थी। एक एक मजिस्ट्रेट या अफसरको दो वर्षकी जेल और हजार रुपये जुर्मानेका अधिकार था और उसके निर्णयके विरुद्ध अपील ही नहीं हो सकती थी। रालट एक्टपर भाषण करने या हड़तालमें भाग लेनेवालोंको आजावन कालेपानी और जायदाद जब्तीकी आज्ञा मिली। साधारणसी गवाहीपर लोगोंको फांसीकी आज्ञा मिली। अमृतसरमें मार्शलला कमीशनके सामने १८२ आदमियोंके मामले पेश हुए जिनमेंसे केवल तीन आदमी छूटे। छोटी अदालतोंके सामने १७३ मामले पेश हुए जिनमेंसे ३२ आदमी छूटे। ,इसीसे पता लग सकता है कि किस ढङ्गसे न्याय किया गया। तरन तारनका रेलवे स्टेशन अमृतसरसे १६ मीलपर है। वहांपर लोगोंपर यह दोषारोपण किया

गया कि खजाना लूटना चाहते थे। स्पेशल अदालतमे कई आदमियोंको इसी अभियोगपर दंड भी दे दिया गया।

पांचवां अध्याय।

लाहोर शहर।

लाहोर पञ्जावकी राजधानी है और राजनीतिक दृष्टिसे वह पञ्जाबमें सर्व प्रधान नगर है। लाहोर एक वड़ा रेलवे जंकशन भी है। लाहोर छावनीको छोडकर शहरकी आवादी ढाइ लाख है। लाहोरमें मुसलमान अधिक रहते हैं। हिन्दू मुसलमानोंकी अपेक्षा एक तिहाई हैं। लाहोरमें लड़कोंके लिये दस और लड़कियोंके लिये दो कालेज हैं। इसके सिवा वहां अनेक हाई स्कूल भी हैं। लाहोरमे विश्वविद्यालय भी हैं। दो अंग्रेजी समाचार पत्र प्रति दिन प्रकाशित होते हैं। एक तो नौकरशाही और यूरोपियनोंका समर्थक है और दूसरा राष्ट्रीय हितका पोषक है। इसके सिवा कई दैनिक और साप्ताहिक पत्र देशी भाषाओंमें निकलते हैं। इसीसे पञ्जावमे सबसे अधिक राजनीतिक जागृति लाहोरमें है। रालटएक्टके सम्बन्धमें तमाम भारतमें जो तीव्र आन्दोलन उठा था उसमें लाहोरने भी काफी भाग लिया। जिस समय महात्मा गान्धीने सत्याग्रहकी घोषणा की [illegible] किसी नेताने आगे बढ़कर प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर

गया कि खजाना लूटना चाहते थे। स्पेशल अदालतोंमें कई आदमियोंको इसी अभियोगपर दंड भी दे दिया गया।

पांचवां अध्याय।

लाहौर शहर।

लाहौर पञ्जाबकी राजधानी है और राजनीतिक दृष्टिसे वह पञ्जाबमें सर्व प्रधान नगर है। लाहौर एक बड़ा रेलवे जंक्शन भी है। लाहौर छावनीको छोड़कर शहरकी आबादी ढाई लाख है। लाहौरमें मुसलमान अधिक रहते हैं। हिन्दू मुसलमानोंकी अपेक्षा एक तिहाई हैं। लाहौरमें लड़कोंके लिये दस और लड़कियोंके लिये दो कालेज हैं। इसके सिवा वहां अनेक हाई स्कूल भी हैं। लाहौरमें विश्वविद्यालय भी है। दो अंग्रेजी समाचार पत्र प्रति दिन प्रकाशित होते हैं। एक तो नौकरशाही और यूरोपियनोंका समर्थक है और दूसरा राष्ट्रीय हितका पोषक है। इसके सिवा कई दैनिक और साप्ताहिक पत्र देशी भाषाओंमें निकलते हैं। इसीसे पञ्जाबमें सबसे अधिक राजनीतिक जागृति लाहौरमें है। रालटएक्टके सम्बन्धमें तमाम भारतमें जो तीव्र आंदोलन उठा था उसमें लाहौरने भी काफी भाग [illegible]। जिस समय महात्मा गान्धीने सत्याग्रहकी घोषणा की [illegible] किसी नेताने आगे बढ़कर प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर

नहीं किया। सब मनही मन विचार रहे थे कि क्या करना चाहिये। हड़ताल और व्रतके सम्बन्धमें कुछ बात ही दूसरी थी। इन दोनों कामोंके लिये किसी प्रकारकी प्रतिज्ञाकी आवश्यकता न थी। तिस पर भी नेता इस सम्बन्धमें भी अनिश्चित ही थे और वे नहीं समझते थे कि जन साधारण उत्साह दिखायेगा। उन्होंने महत्मा गान्धीका पत्र छपाकर बटवा दिया। जब सरकारको मालूम हुआ कि हड़ताल होगी तो वह घबरायी। ४ अप्रेलको लहोरमें सरकारी हुक्म निकला कि पहले सरकारसे आज्ञा लिये विना कोई जुलूस न निकले और न सभा की जाये। ५ अप्रेलको डिप्टी कमिश्नरने नेताओंसे परामर्श करनेके लिये उन्हें बुलाया। नेता यहां तक राजी थे कि हम सभा नहीं करेंगे यदि सरकार नहीं चाहती है, परन्तु डिप्टी कमिश्नर इन शर्तों पर ही राजी हो गये कि ५ वीं की शाम तक लोगोंको समझाया जाये कि वे हड़ताल कर सकते हैं या नहीं। ६ अप्रैलको इस सम्बन्धमें किसी प्रकारका उद्योग न हो। सभा हो परन्तु उसमें उत्तेजना बढ़ाने वाले व्याख्यान न हों।

६ अप्रेलको लाहोरमें पूर्ण हड़ताल हो गयी। हजारों आदमी जिनमें स्त्रियां और बच्चे भी शामिलथे नदीमें स्नान करनेके लिये गये और लौटते समय उनका जुलूस बन गया। यह जुलूस पुलिस नोटिसके विरुद्ध अवश्य बना था परन्तु वह पूर्ण रूपसे शान्त था। पुलिसने भी किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं किया। जब जुलूस माल सड़ककी ओर पहुंचा तो कहा

गया कि वह पोस्टआफिससे आगे न बढ़ सकेगा। नेता रोंके अनु-रोधसे जुलूस आगे न बढ़कर लौट पड़ा। सर माइकेल ओडायर सबसे कह रहे थे कि पञ्जावमें हड़ताल न होनी चाहिये। उनकी बेचैनीका ठिकाना न रहा जब कि उन्हें मालूम हुआ कि सारी राजधानीमें इतनी व्यापक हड़ताल हुई है। उन्होंने यह भी कहा कि नेताओंको इस हड़तालका फल भोगना होगा। तीसरे पहरको ब्रडला हालमें सभा हुई। हजारों आदमी एकत्र हुए। लाहोरमें पहले ऐसी सभा कभी नहीं हुई थी। सरमाइ-केल ओडायरने खास तोरसे खुफिया पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्टको इस सभामें भेजा था। जो व्याख्यान हुए उनकी पूरी रिपोर्ट की गयी। वे जोरदार अवश्य थे परन्तु उनमें राजद्रोहकी कोई बात खून खराबीके लिये उभाड़ने वाली न थी। ७ और ८ अप्रेलको पूर्ण शान्ति रही ९ अप्रेलको रामनवमी थी। अमृतसरकी तरह लाहोरमें भी यह त्योहार हिन्दू मुसलमानोंके मेलको बढ़ाने वाला साबित हुआ। दोनों जाति वाले प्रेममें एक दूसरेको बिल्कुल ही भूल गये। १० वीं तक शान्ति रही।

सर माइकेल ओडायर अवश्यही अशान्त थे। उन्हें पता लगा कि डा० सत्यपालने महात्मा गान्धीको अमृतसर और स्वामी श्रद्धानन्दने दिल्ली बुलाया है कि वे अपने सत्याग्रहकी व्याख्या करें। उन्हें यह भी पता चला कि महात्मा गान्धी बम्बईसे पञ्जाब और दिल्लीके लिये रवाना भी हो गये हैं। उन्हें एकदम असह्य हो गयी और बड़े लाटसे स्वीकृति
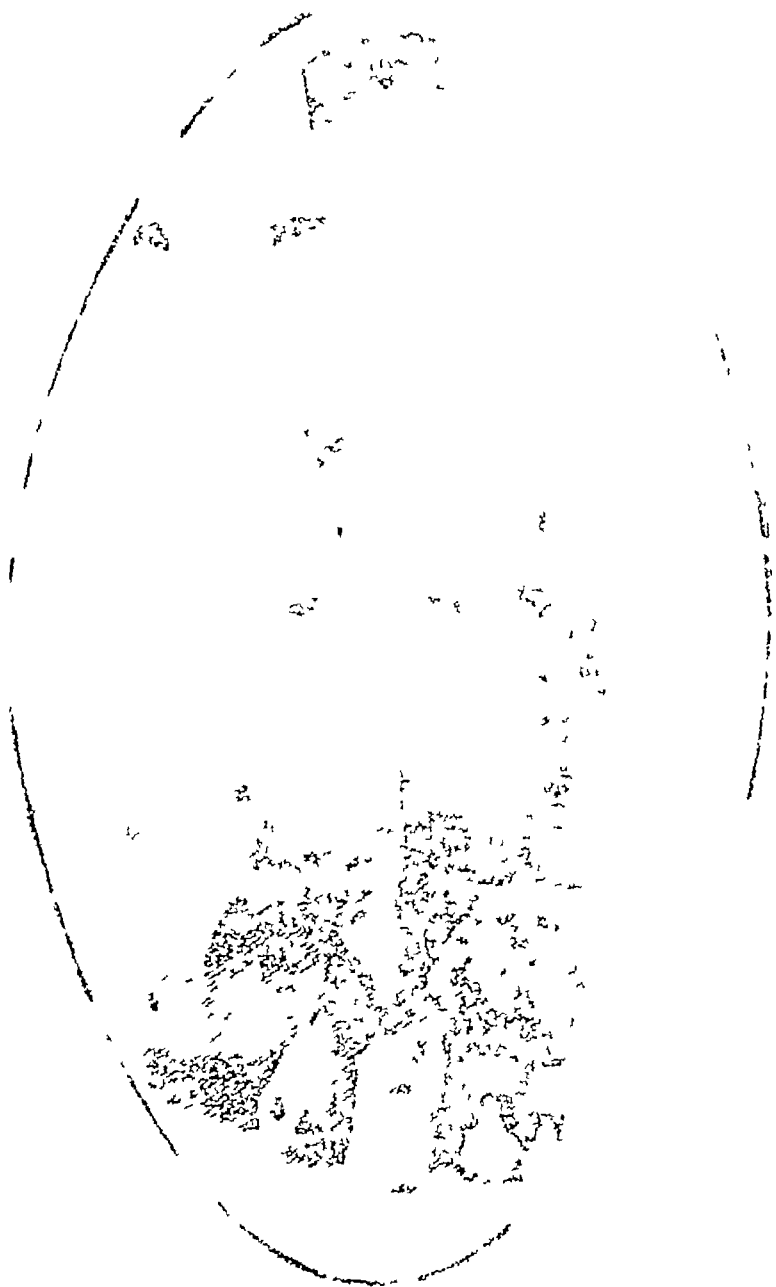
लेकर उन्होंने महात्मा गान्धीको पञ्जाबमें प्रवेश करनेसे रोकना निश्चित किया। पञ्जाबकी सीमामें उनके पहुचते ही वे पहले रेलवे स्टेशनपर ही गिरफ्तार कर लिये गये और बम्बई वापस भेज दिये गये जहांपर वे नजरबन्द किये गये। १० अप्रेलको लाहार खबर पहुची कि महात्माजी गिरफ्तार हो गये और वे नजरबन्द कर दिये गये हैं। तुरन्त ही विना किसीके अनुरोधके दुकानें बन्द होने लगीं। ४ बजेतक कारबार एकदम बन्द हो गया और लोग जुलूस बनाकर माल सड़ककी तरफ रवाना हुए। अनारकली पहुचते पहुचते जुलूस बहुत बढ़ गया। लोगोंको स्मरण था कि ६ अप्रेलको पुलिसने जुलूस माल सड़ककी ओर न बढ़ने दिया था इसलिये अधिकांश मनुष्य फोरमेन क्रिश्चियन कालेजके पास रुक गये, परन्तु तीन चारसो आदमियोंने जिनमें कि बहुतसे छात्र भी थे मालकी तरफ बढ़नेको कहा जिससे गवर्नमेण्ट हाउसमें जाकर महात्मा गान्धीके छुटकारेकी प्रार्थना की जाये। पुलिसको खबर लगते ही एक दल जनताके पीछेसे आया और उसने आगे खड़े होकर लोगोंको रोका। जनता पुलिसकी बात माननेको तैयार न हुई। तुरन्त ही गोली चलानेका हुक्म दिया गया और दो तीन लाशें जमीनमें पड़ी दिखायी दीं। कई आदमी घायल भी हुए। भीड़ लौट पड़ी। पुलिसने मरेहुए और घायल आदमियोंको अपने अधिकारमें किया। राहमें जानेवाले डाक्टरोंको सहायता पहुचानेकी आज्ञा भी न दी। पुलिस भीड़को खदेड़ती चली आयी जबतक कि वह लोहारी

दरवाजेतक न पहुची। पुलिस बलात्से भीडको तितर बितर करना चाहती थी। आधे घण्टेतक बहुत कुछ कहा सुनी होती रही। इस बीचमें पण्डित रामभजदत्त चौधरी अपने मकानसे दौड़े हुए आये और उनसे भीड हटानेको कहा गया। पण्डितजीकी आवाज सब लोगोतक नहीं पहुच रही थी तब वे एक ऊचे स्थानपर खडे होकर समझाने लगे। वे लोगोको समझा रहे थे और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट अधीर हो गये थे। डिप्टी कमिश्नर भी बुला लिये गये थे और वे वहा पहुच चुके थे। चौधरीजी उनसे मिले और कहा कि मुझे लोगोको समझानेके लिये कुछ समय मिलना चाहिये। उन्हें केवल दो मिनट दिये गये और कहा गया कि यदि भीड न हटेगी तो गोली चलायी जायेगी। चौधरीजीने कहा कि भला दो मिनटमें मैं क्या कर सकता हूं। परन्तु उन्हें अधिक समय नहीं दिया गया। चौधरीजी लोगोंको समझाने लगे और लोगोंपर असर भी पड़ा। वे पीछे हटने लगे, परन्तु दो मिनट पूरे हो गये और गोली चलानेका हुक्म दे दिया गया। माल सड़कपर जितने हताहत हुए थे उतने ही यहांपर भी हुए। भीड़ हट गयी परन्तु लोग बहुत दुःखी हुए। दोनों वक्त लोग निहत्थे थे। अमृतसरके समान ही लाहोरमें अधिकारियोंने एक साथ ही गोली दाग दी। गोली दागनेके बाद घायलोंकी मरहमपट्टीको व्यवस्थातक न की गयी। अधिकारियोंने लाशें और घायल मनुष्य भी न लौटाये जिससे और भी क्रुद्ध हुई। इससे ११ वींको भी हड़ताल रही।

नेताओंने लाशें और घायल आदमी लौटानेके लिये अधिकारियोंसे बहुत कुछ कहा परन्तु उनकी एक बात न सुनी गयी। अधिकारी लोगोंको सन्तुष्ट किये बिना ही हड़ताल खतम कराना चाहते थे। ११ अप्रेलको बादशाही मसजिदके सामने सभा भी हुई जिसमें हड़ताल खतम करनेपर विचार हुआ परन्तु कोई फल न निकला। नेता डिप्टी कमिश्नरसे फिर मिले और इस शर्तपर सभा होनी तय हुई कि सभास्थानके पास सैनिक न खड़े किये जायेंगे। डिप्टी कमिश्नर इस बातको अस्वीकार करते हैं परन्तु इस बातके काफी सबूत हैं कि उनकी बात झूठी और पण्डित रामभजदत्तकी बात सच्ची है। बादशाही मसजिदके पास फिर बहुत बड़ी सभा हुई। फिर भी कोई फल न निकला। जब लोग सभाकी समाप्तिके बाद लौट रहे थे तो सैनिकोंने गोली चलायी। फिर कई आदमी हताहत हुए। लोग इसपर इतने नाराज हुए कि फिर जनता नेताओंकी कोई बात सुननेको तैयार न रही। हड़ताल जारी रही और अधिकारियोंका रुख दिन पर दिन बिगड़ता गया। लूटके भयसे लोगोंने मुफ्त लङ्गरखाना अर्थात् भोजनालय खोल दिये। इस तरह १५ अप्रेल आ पहुंची।

१६ अप्रेलको डिप्टी कमिश्नरने पंडित रामभजदत्त चौधरी, ला० दुनीचन्द और ला० हरकिशनलालको अपने बंगलेपर बुलाया और उन्हें गिरफ्तारकर देश निकालेका हुक्म दिया। उनके देश निकालेके बाद ही लाहोरमें मार्शललाकी घोषणा कर दी गयी।

कहा गया कि हड़ताल खतम करानेके लिये ऐसा किया जा रहा है। व्यापारियोंको धमकी दी गयी कि जबर्दस्ती सेनासे तुम्हारी दुकानें खुलायी जायेंगी यदि हड़तालका अन्त न करोगे। लाहोरमे जनताने किसी तरहकी जान मालपर चोट नहीं की थी और वे पूर्णरूपसे शान्तिपूर्वक हड़ताल किये हुए थे। बादशाही मसजिदकी एक सभामे खुफिया पुलिसके एक अफसरके साथ बुरा बर्ताव अवश्य किया गया था परन्तु उसके कारण मार्शल लाकी घोषणा नहीं हो सकती थी। यदि ऐसा होने लगे तो जीवनके प्रत्येक दिन ही मनुष्योंको मार्शललाका सामना करना पड़े। अमृतसर और लाहोरके बीच किसी तरहके सम्बन्धका भी सबूत नही पाया गया। लाहोरके किसी नेताका बाहरके किसी संगठनसे सम्बन्ध भी नहीं साबित हुआ। लाहोरके मार्शलला एरियाके अधिकारी कर्नल फ्रैंक जान्सन थे और उनका अधिकार २६ मई १९१९ तक जारी रहा। उनके कड़े शासनके कष्टोंका अनुभव सभी लाहोरवासियोंने किया।

प्रत्येक दिन रातको घंटी बजती थी जिसे सुनकर सबको अपने अपने घरोंके भीतर हो जाना पड़ता था और आवश्यकसे आवश्यक काम होनेपर भी कोई बाहर नहीं निकल सकता था। कर्नल फ्रैंक जान्सनसे जब हंटर कमेटीके सामने पंडित जगतनारायणने प्रश्न किया था कि लोगोंको घंटीकी आज्ञा देकर क्यों कष्ट पहुंचाया गया तो उन्होंने कहा कि सम्राट्के विरुद्ध लड़ाई छेड़ने- [illegible]। कठिनाई तो सहनी ही होगी। लाहोरकी शान्तिपूर्ण

हड़ताल इन अधिकारियोंकी दृष्टिमें सम्राट्के विरुद्ध लड़ाई थी। कर्नल फ्रैंक जान्सनने इस सूचना की पाबन्दीपर बड़ा जोर दे रखा था कि यदि किसी सैनिकपर बम फेका गया तो बम गिरनेके स्थानके आस पास सौ गज तककी दूरीके सभी मकान इमारत मन्दिरों और मसजिदोंको छोड़कर अधिवासियोंसे खाली कराकर जमीनमें मिला दिये जायेंगे। एक घण्टेके भीतर सबको अपने निवासस्थान त्याग देने होंगे। पहले तो आठ सौ तांगे कर्नलने अपने अधिकारमें किये थे परन्तु पीछेसे वे घटाकर दो सौ कर दिये गये। ये तांगे मार्शललाके अन्त तक कर्नलके अधिकार ही में रहे। भारतीयोंकी मोटरें भी ले ली गयी थीं। रेलकी यात्राके सम्बन्धमें भी कड़ाइयाकी गयी थी। मुफ्तमें भोजन देनेवाले लंगरखाने बन्द कर दिये गये और खाद्य पदार्थोंकी दर बांध दी गयीं। जिनके पास बन्दूकोंके लैसन्स थे वे रद्द कर दिये गये। जो खास राजभक्त थे उनके लैसन्स सरकारके अनुरोधपर रुके। बादशाही मसजिद बन्द करनेकी आज्ञा दी गयी परन्तु वह इसी शर्तपर खोली जा सकी कि उसमें कोई हिन्दू प्रवेश न करने पावेगा। जरूरी अदालतें कायमकी गयीं और स्वयं कर्नल फ्रैंक जान्सनने मामलोंपर विचार किया। २७७ पर म.मा.. चला' और २०१ को दण्ड दिया गया। अधिकसे अधिक दण्ड दो म ..की सजा ३० बेत और एक हजार रुपया जुर्माना था। ६६ आदमियोंके ८०० बेत लगे। जिन आदमियोंके बेत लगते थे वे खुले मैदान लगाये जाते थे। कर्नल फ्रैंक जान्सनने बेतकी सजा को अप

गवाहीमें दयापूर्ण दंड बताया है। उन्होंने कहा कि मैंने जेलोंको भरना उचित नहीं समझा क्योंकि उनमें इतने आदमियों की जगह भी नहीं समझी गयी और दूसरे मैंने यह समझा कि जेलमें तो घरसे भी अच्छा भोजन और आराम मिलता है। बेंत लगानेकी कीमत एक हजार सैनिकोंके बराबर है। कर्नलने व कीलोंके मुंशियों और कर्मचारियोंके सम्बन्धमें खास तौरसे कड़ाइयां की थीं क्योंकि यही लोग राजद्रोहका प्रचार करनेवाले माने गये थे।

बाहरके वकील पञ्जाबमें प्रवेश नहीं कर सकते थे। मि० मनोहरलाल सरीखा राजभक्त मनुष्य वकालतके पेशेमें होनेके कारण गिरफ्तार किया गया। इसीसे पता लगता है कि वकील बैरिस्टरोंको किस प्रकार सन्देहकी दृष्टिसे देखा जाता था। सेण्ट्रलजेलमें उन्हें क्या क्या कष्ट झेलने पड़े इसका पता अन्तमें दिये हुये बयानोंसे लगेगा। कर्नल फ्रैंक जान्सनने दंड देने का एक नया ढङ्ग अपने उपजाऊ दिमागसे निकाला था। वे जिन लोगोंको दंड देना चाहते थे उनकी इमारतों पर नोटिस चिपका दिये जाते थे। यदि नोटिस जरा भी खराब हो जाता तो मकान वालेको दंड दिया जाता था। सार्वजनिक संस्था जैसे स्कूल कालेज होने पर सभीको दंड मिलता था। सनातनधर्म कालेजमें एक नोटिस चिपकाया गया था उसके फटनेपर पांचसौ गिरफ्तार हुए थे। छात्र और प्रोफेसर सभी पकड़े गये। वे कालेजसे किले तक तीन मील पैदल दौड़ाये गये

थे। मईका महीना और लाहोरकी गर्मी थी। दिनकी गर्मीमें वे अपने शिरों पर अपने अपने विस्तरे लपेट पैदल गये थे। दो दिन उन्हें किलेमें बन्द रखकर छोड़ा गया था। कर्नलने हण्टर कमेटीके सामने कहा कि मैं 'इस दडको उस समय उपयुक्त समझता था और अबभी समझता हूं। उसने यह भी कहा था कि अवसर होने पर मैं अपनी आज्ञा कल ही दुहरा सकता हूं। यह जवाब २४ नवम्बर १९१९ को लाहोरकी हुकूमत त्यागनेके ६ मास बाद दिया गया। फ्रैंक जान्सनने छात्रोंको बदमाशीसे दूर रखनेके लिये हुक्म दिया था कि चार वार हर रोज हाजिरी ली जायेगी। सवेरे सात और ग्यारह बजे और तीसरे पहर तीन बजे तथा सन्ध्याको ७॥ बजे समय नियत हुआ था। डाक्टरी पढ़ने वाले छात्रोंको हर रोज १७ मील चल कर यह हाजिरी देनी पड़ती थी। कर्नलसे प्रश्न किये जाने पर उसने कहा कि १७ नहीं १६ मील चलना पड़ता था। तीन हफ्ते तक लगातार छात्रोंको इसी तरह गर्मीमें चलना पड़ा। छात्रोंपर यह दोषारोपण किया गया कि उन्होंने अंग्रेज स्त्रियोंका अपमान किया है यद्यपि कोई सबूत नहीं दिखाया गया और कालेजके प्रिन्सिपलोंको हुक्म दिया कि छात्रोंको दण्ड दें। जब उन्होंने किसी तरह दण्डकी सूची तैयार की तो उनसे कहा गया कि या तो सजा बढ़ाओ या कालेज बन्द करो। इस तरह एक हजारसे भी अधिक छात्रोंको दण्ड दिलाया गया। यह भी आज्ञा दी गयी थी कि मार्गमें दो से

अधिक हिन्दुस्तानी एक साथ चलते न दिखायी दें क्योंकि यदि कोई युरोपियन उन्हें इस तरह चलते देखेगा तो नाराज हो जायेगा और उपद्रव कर बैठेगा। उस उपद्रवकी जिम्मेदारी युरोपियनपर नहीं हिन्दुस्तानियोंपर ही होगी। लाहोरके स्वतन्त्र विचार रखनेवाले पत्रोंको बन्द हो जाना पड़ा। 'ट्रिब्यून' 'पञ्जाबी' उर्दू 'प्रताप' मुख्य थे। 'प्रताप' के सुयोग्य सम्पादकको दण्ड दिया गया और 'ट्रिब्यून' के बा० कालीनाथ राय भी जेल भेजे गये क्योंकि सर माइकेल ओडायरकी दृष्टि उनपर पहलेसे ही पड़ चुकी थी। मार्शल ला कमीशनोंमें जो अन्याय किया गया उसका व्योरा गवाहियोंमें पढ़नेको मिलेगा। जो जज हाईकोर्टमें कानूनी बातों और शिष्टाचारपर ध्यान देते थे उन्होंने मार्शल ला कमीशनोंमें उन सबको ताकमे रख दिया। मार्शल ला कमीशनोंके सामने ६४ पर मामला चला जिनमेंसे केवल ६ छूटे। समरी कोर्टोंके सामने ३५० पर मामला चला और १०२ छूटे। चालीस आदमी पहले तो गिरफ्तार किये गये परन्तु पीछेसे मामला चलाये विना ही वे छोड दिये गये। वे एक एक महीनेतक योंही जेलमें रख लिये गये जैसे कि मि० मनोहरलाल रखे गये। इस तरह लाहोरके एक निर्दयी अधिकारीके शासनकी कड़ाइयोंका सामना जनताको करना पड़ा। मार्शलला की कुछ भी जरूरत न थी और वह बहुत अधिक समयतक जारी रखा गया। उसके अत्याचारोंका अनुभव युरपियनोंको स्मरण रहेगा।

छठा अध्याय

कसूर।

कसूर लाहोर जिलेमें लाहोरसे ४० मीलकी दूरीपर अच्छा शहर है। वह व्यापारी स्थान भी है। आबादी २४ हजार है। ६ अप्रेलको कसूरमें हड़ताल नहीं हुई। १० अप्रेलको भी कुछ नहीं हुआ। १२ को महात्मा गांधीकी गिरफ्तारी और डा० सत्यपाल और किचलूके देश निकालेकी खबर पहुंची। उसदिन तमाम शहरमें हड़ताल रही और सन्ध्याको एक सभा की गया। सभामें कोई ओजनापूर्ण व्याख्यान नहीं हुआ। १२ अप्रेलको पूर्ण हड़ताल रही। अमृतसरकी दुर्घटनाओंका समाचार भी कसूरमें फैल गया था। लोग उत्तेजित हुए और वे एकत्र होकर स्टेशनकी तरफ बढ़े जिसमें वे आग लगाना चाहते थे। उन्होंने एक गोदाममें आग लगायी परन्तु नेताओंने वहां पहुंचकर उसे बुझा दी। सिगनल स्टेशनपर आकर एक ट्रेन ठहरी थी। उसका तेलका डिब्बा खाली करा लिया गया और उन्होंने कुछ युरोपियनोंपर चोट की, परन्तु नेता वहां भी पहुंच गये और युरोपियन बचा लिये गये। ट्रेनमें दो गोरे सिपाही भी सवार थे। स्टेशनपर पहुंच कर उन दोनोंने भीड़पर गोली चला दी और वह उत्तेजित हो गयी। दोनों गोरे उसी समय मार डाले गये। तार

बाद भीड तहसीलकी तरफ बढी और उसमे आग लगा दी। पुलिसने गोली चलाकर भीडको हटाया। कुछ ही घंटे बाद नगरमे पूर्ण शान्ति हो गयी। उत्तेजना किसी विप्लव आन्दोलनके फलस्वरूप तो थी नहीं वह केवल क्षणिक थी। अधिकारियोंने जिसे चाहा बिना किसी प्रकारकी कठिनाईके गिरफ्तार किया। हिन्दुस्तानी सब डिवीजनल अफसरकी जगहपर मि० मार्सडन भेजे गये और १६ अप्रेलको कसूरमें मार्शललाकी घोषणा कर दी गयी। कर्नल मेकरे और कप्तान डवटन दो फौजी अफसर तैनात किये गये। गैर जिम्मेदारी और अत्याचारोंमे इन्होंने अन्य स्थानोंके फौजी अफसरोंको मातकर दिया। मार्शल लाकी घोषणाका प्रथम फल शहरके गण्यमान्य व्यक्तियोंकी गिरफ्तारी थी। ६५ वर्षके बूढे वकील बा० धनपतराय गिरफ्तार किये गये। ४६ दिन वे लाहोरकी सदर जेलमे रहे और छूटते समय तक उन्हें पता न चला कि वे क्यों गिरफ्तार किये गये। दूसरे दिन तीन, तीसरे दिन चार और चौथे दिन चालीस आदमी गिरफ्तार हुए। १७२ गिरफ्तार हुए जिनमेंसे ९७ तो मामला चले बिना ही छोड़ दिये गये ७५ पर मामला चला और ५१ को दंड मिला। जिन नेताओंने रेलवे स्टेशनपर युरोपियनोंकी रक्षाकी थी वे भी गिरफ्तार किये गये। बिना किसी सन्देह या बहानेके नेताओंके मकानोंकी तलाशी ली गयी। १ मार्चको कसूरके तमाम आदमी रेलवे स्टेशनपर बुलाये गये। दोपहरके २ बजे तक सूर्यकी कडी धूपमे शिर बैठाये गये और उन्हें भोजन पानी कुछ भी नहीं दिया

कसूरका ११ वर्षका बालक जिसपर सम्राट्के विरुद्ध लड़ाई
छेड़नेका अभियोग लगाया गया था।

गया। नगर भरको अपमानित करने और लोगोंमें भय पैदा करनेके लिये ही यह कार्यवाहीकी गयी। जब सब लोग स्टेशनपर पहुचे तो शहरमें आदमी भेजे गये कि वे तलाशी ले कि और काई आदमी तो बाकी नहीं रह गया है। इन लोगोंको तलाशीकी धूममे वेचारी स्त्रियो ओर बच्चोंकी क्या दुर्दशा हुई होगी इसका अनुमान आसानीसे किया जा सकता है।

कसूरमें ४० आदमियोंके वेत लगाये गये। कुल ७१० वेत लगे। स्कूलके लडकोंके भी वेत लगे। एक स्कूलके हेडमास्टरने लिखा कि मेरे लडके मेरा कहना नहीं मानते इसलिये सैनिक सहायता भेजी जाये। लडकोको वेतकी सजाका हुक्म हुआ। हेडमास्टरने ६ लड़के भेजे जो वेत खानेमें अयोग्य थे। सब डिवीजनल अफसरसे कहा गया कि दूसरे ६ लडके चुन कर लाओ। उन्हेहृष्ट पुष्ट होनेके कारण ही वेत खाने पडे। कसूरमे ही वेश्याएं बुलायी गयी थीं, जिनसे कहा गया था कि जिनपर निर्दयता पूर्वक वेत पड रहे हैं उन्हें वे देखें। पहरेवालोंने दो आदमियोपर गोलियां चलायीं। एक तो गूंगा था। लोगोंको विना किसी विचारके दण्ड दिये गये। कई साधुओंके मुंहपर कलई पोती गयी। स्टेशनके माल गुदाममें लोगोंसे भारी गाठें उठवायी गयीं। जो लोग युरोपियनोंको सलाम नहीं करते थे उनपर यदि वेत नहीं पड़ते थे तो उन्हे जमीनमें अपनी नाक रगडनी पडती थी। कप्तान डवटनने लोगोंको बाध्य किया कि वे उन्हें अभिनन्दन पत्र दें और एक मुसल्मानको यही दण्ड दिया कि वह उनकी

कसूरमें कविता बनाये। लोगोंको उठा कर चलनेका भी हुक्म दिया गया। जो लोग बगानके पुलोंपर नहीं पहुंचे उनकी सम्पत्ति जब्त हो गयी। इस तरह बहुतसे गरीब आदमी तबाह कर डाले गये। लोगोंको फांसीपर लटकानेके लिये खुले मैदान फांसीके तख्ते लगाये गये थे। शहरके गण्यमान्य व्यक्तियोंको तो दीवालोंपर मार्शल लाके नोटिस चिपकाये गये थे और हुक्म दिया गया था कि यदि वे किसी तरह भी खराब होंगे तो मकान जला दिये जायेंगे।

पट्टी और खेमकरन।

कसूरसे कुछ मील दूर ये दोनों रेलवे स्टेशन हैं। यहांपर भी मार्शल लाके कष्ट लोगोंको उठाने पड़े यद्यपि कर्नल मेकरेके कथनानुसार दोनों स्थानोंमें ज्यादा गड़बड़ नहीं हुई, कई एक स्टेशनपर बदमाशोंने कुछ तार काट दिये थे और स्टेशनका माल लूट लिया था।

गुजरानवाला।

गुजरानवाला जिला पञ्जाबमें मशहूर है और गुजरानवाला शहर महाराजा रणजीतसिंहका जन्मस्थान माना जाता है। लाहोरसे ४२ मील दूर है। गुजरानवालाके दो हिस्से हो गये। एक हिस्सा शेखूपुरा जिलेके आधीन हो गया है, परन्तु इस स्थानमें तमाम जिलेको ही शामिल समझना होगा। गुजरानवालामें १४ अप्रेल तक किसी किस्मकी अशान्ति नहीं

दिखायी दी । "५ अप्रेलको एक सार्वजनिक सभा हुई थी और ६ अप्रेलको पूर्ण हड़ताल मनायी गयी । १४ को फिर हडताल मनायी गयी जो महात्मा गान्धीकी गिरफ्तारी और डा० सत्य-पाल और किचलूके देशनिकालेके प्रतिवाद स्वरूप थी । १४ अप्रेलके सवेरे शहरमें अफवाह फैली कि रेलवे पुलपर एक मरा हुआ गायका बछड़ा लटका हुआ है । यह काम हिन्दू मुसल-मानोंके मेलको नष्ट करनेके लिये किया गया था । बयानोंमें कहा गया है कि पुलिसने यह काम किया था । लोगोंने समझा कि अफसरोंने यह काम कराया है क्योंकि उधर एक मसजिदमें सूअरका मांस पड़ा मिला । दोनों कामोंने लोगोंका विश्वास दृढ कर दिया और जनताकी एक बड़ी भीड़ स्टेशनके पुलकी तरफ बढ़ी । इसी समय एक ट्रेन लाहोरकी तरफसे आयी जो बजीराबाद जा रही थी । १३ अप्रेलके हत्याकाण्डका समाचार एक खानसामाने सुनाया । भीड़ने गाड़ी रुकवानेकी इच्छासे उसपर पत्थर फेंके । भीड़ने गुरुकुलके पुलमें आग लगानी चाही । गुरुकुलवालोंने आग बुझा दी । पुलिसने आग बुझाना उचित नहीं समझा । भीड़ स्टेशनकी दूसरी ओर गयी । वहां पुलिसने उसे आगे बढ़नेसे रोका और गोली चला दी जिससे कई हताहत हुए । शहरमें नेताओंने लोगोंका ध्यान बटानेके लिये एक सभा कर कर दी थी । उस सभामें लोग हताहतोंकी लाशें ले आये । इस पर बड़ी उत्तेजना फैली और स्टेशनकी ओर लोग सभा भङ्ग कर जानेको तैयार हुए ।

पोस्टआफिस, कोर्ट हाउस और रेलवे स्टेशनमें आग लगा दी गयी। पुलिसने लोगोंको जरा भी न रोका। बयानोंसे पता है कि पुलिसने लोगोंको आग लगानेके लिये उत्तेजित किया। कर्नल ओब्रायन गुजरानवाला पहुंचे। लोग उस समय शान्त हो चुके थे। कर्नल ओब्रायनने लाहौरसे मदद मंगायी और दिनके ३ बजे तक हवाई जहाज इत्यादि आ पहुंचे। हवाई जहाजोंसे निरपराध व्यक्तियों पर बम गिराये जाने लगे। जहां पर भी बम गिरे वहांपर कोई सभा नहीं हो रही थी। यद्यपि भीड़ को हटानेके लिये बम गिराना हण्टर कमेटीके सामने आवश्यक बताया गया। खालसा बोर्डिङ्ग हाउसमें कभी सभा नहीं हुई और शहरसे आध मील और स्टेशनसे एक मील दूर [illegible] उस पर भी बम गिराये गये। जो लोग गुजरानवालामें अपने अपने गावोंको लौट रहे थे उन पर भी बम गिराये गये। गुजरानवाला शहरके उसी भागमें बम गिराये गये जहांपर हिन्दुस्तानी आबादी है। १२ आदमीके मरने और २४ के घायल होनेका ब्योरा प्राप्त हो चुका है। यदि ज्यादा आदमी नहीं मरे तो बम गिराने वाले अफसरका कसूर नहीं बल्कि बमोंका है जो फूटे नहीं। १४ अप्रेलको ही बम गिरानेकी जरूरत न थी परन्तु उस दिनके सिवा १५ अप्रेलको भी बम गिराये गये। सर माइकेल ओडायरके प्रस्ताव पर हवाई जहाजोंसे बम बरसाये गये। उन्होंने प्रस्ताव चाहे न भी किया हो परन्तु इस कार्यको पसन्द किया। १५ को गिरफ्तारियां

गुजरानवालाके नेता जो हथकड़ियों समेत

शहरकी सड़कोंपर ाये गये थे।

शुरू हुईं। वकील वैरिस्टर और नेता गिरफ्तार किये गये। दो दो के एक साथ हथकड़ियां डाली गयीं और उन्हें एक जजीरसे बांधकर लाहोर भेजा गया। ऐसे नेता भी पकड़े गये जिन्होंने अधिकारियोंको पूरी मदद दी थी। गुरुकुलके ६५ वर्षके वृद्ध गवर्नर भी गिरफ्तार हुए। उन सबको टट्टी पेशावकी भी आज्ञा नहीं दी गयी। एक नेतासे कहा गया कि जहांपर बैठे हो वहींपर कर लो। नेताओंको कपड़े भी नहीं पहनने दिये गये और वे उसी अवस्थामे खुले डिब्बेमे लाहोर भेजे गये। १६ अप्रेलको मार्शललाकी घोषणा कर दी गयी। गुजरानवालामें भी लोगोंपर बेत पड़े और युरोपियनोंको सलाम करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। गोरे सिपाहियोंको भी युरोपियनोंमे शामिल किया गया था। छात्रोंको वृटिश झंडेको सलाम करनेके लिये हर रोज जाना पड़ता था। ऊंचे दर्जेके आदमियोंको बाजारमे नालियां साफ करनी पड़ीं। शहरमें घंटीभी रातको बजती थी जो रोशनी बुझानेके लिये थी। रेल यात्रा बन्द कर दी गयी थी। स्पेशल अदालतोंमे लोगोंको अन्यायपूर्वक दण्ड दिये गये।

वजीरावाद।

वजीरावाद अच्छा रेलवे स्टेशन है जो गुजरानवालासे २० मील दूर है। यहांपर न तो ३० मार्चको और न ६ अप्रेलको हड़ताल हुई। वैशाखीके बाद बहुतसे गांवोंके लोग वजीरावादमे जमा होते हैं। वजीरावादवाले हड़ताल न करनेके लिये धिक्कारे गये और कहा गया कि तुम्हारी लड़कियोंसे शादी न की जायेगी

१४ अप्रेलको मसजिदमें सभा हुई और १५ को पूर्ण हड़ताल मनायी गयी। कुछ उपद्रवियोंने रेलवे स्टेशनकी ओर जाकर तार काट दिये और पादरी गेबीके मकानमें आग लगा दी जिसमें उनकी अच्छी अच्छी पुस्तकें जलकर खाक हो गयीं। डिप्टी कमिश्नर ओब्रायन १६ को नजीराबाद पहुंचे और गिरफ्तारियां शुरू कीं। १८ अप्रेलको उन्होंने एक दरबार किया जिसमें कहा कि मूर्ख और पागल लोगो, तुम लोगोंने समझा है कि अंग्रेजोंका राज नहीं रहा। याद रखो कि सरकार तुम्हारी जायदाद जब्त कर सकती है और तुम्हारे मकानोंमें आग लगाकर उन्हें खाक कर सकती है। मैं पहले पहल जमीयत सिंह गुप्ताकी जायदाद जब्त करनेका हुक्म देता हूं। दूसरे दिन ही मार्शल ला की घोषणा कर दी गयी। मार्शल ला नोटिस चिपकाये गये और उनकी रक्षाका भार व्यक्तियोंको सौंपा गया। जो युरोपियनोंको सलाम नहीं करता था उसकी पगड़ी उतार ली जाती थी और उसे गर्दनमें बांधकर आदमीको घसीटते हुए बेत लगानेकी जगहपर पहुचाते थे। एक आदमीको एक अफसरके जूते चूमने पड़े क्योंकि उस अफसरने देखा नहीं कि उसने सलाम कर उसका सत्कार किया है। सैनिकोंको मुफ्तमें मक्खन दिया गया और मक्खन बन्द होनेपर फी घरसे एक रुपया वसूल किया गया। जब एकबार जमा किया हुआ रुपया खर्च हो जाता था तो दुबारा जमा किया जाता था। ६७ हजार रुपया हर्जानेके तौरपर वसूल किया गया। लोगोंसे जबर्दस्ती चारपाइयां छीनी

गयी । वजीरावादमें भी घण्टी वजती थी और छात्रोंको यूनियन जेककी सलामीके लिये मीलों धूपमें चलना पड़ता था। सरदार जमीयत सिंह वुग्गाके छोटे छोटे लड़के और पर्दानशीन स्त्रिया मकानके वाहर निकाल दी गयी और उन्हें काफी कपड़ा भी नहीं दिया गया। एक लक्षाधीशका परिवार सड़कोंपर मारा घूमता रहा। ४ मईतक सरदारकी जायदाद जव्तीका आर्डर कायम रहा। सरदारको वतायातक नहीं गया कि उनके विरुद्ध क्या सवूत है। उन्हें कालकोठरीमें भी कुछ दिन रहना पड़ा था। छोटे छोटे लड़कोंको सिखाकर और वदमाशोंकी सहायतासे निरपराध व्यक्तियोंको दण्ड दिया गया।

निजामावाद।

निजामावाद वजीरावादसे एक मील दूर है १८ अप्रेलको लाहोर से गोरे सिपाहियोंसे भरी एक ट्रेन आयी और यह गाव घेर लिया गया। दुकानें लूटी गयीं और गांववाले अपने शिरोंपर माल रखकर ट्रेनतक लाये। सव गाववालोंको थानेमें १५ दिनतक सवेरे ७ वजेसे रातके ८ वजेतक वैठना पड़ता था। एक मुसल्मान वालक गोलीसे मार डाला गया क्योंकि वह अपनी वकरियां चराता हुआ गोरोंका घेरा पार कर गया था। उसकी लाश गोरोंने घसीटकर एक तालावके पास डाल दी। गांवसे ६५ सौ रुपया हर्जानेका वसूल किया गया।

अकलगढ़ ।

अकलगढ़ रेलवे स्टेशन वजीराबाद तालुकेमें आबाद है। ६ अप्रैलको और १४ अप्रैलको यहां हड़ताल मनायी गयी। १५ अप्रैलको तार काट डाले गये। पता नहीं चला कि किसने काटे। अकलगढ़की कोई भीड़ उस तरफ नहीं गयी थी। २० अप्रैलको डिप्टी कमिश्नर यहां पहुंचे और लोगोंसे दो हजार रुपया तारकी मरम्मत करानेके लिये वसूल किया गया। कई आदमी गिरफ्तार हुए और उनपर मामला चला। पन्द्रह पन्द्रह वर्षके दो लड़कोंको एक एक दिनकी सजा हुई। लोग एक दिन डाक बंगलेपर जमा किये गये और रेलवे लाइनसे मशीनगन और अन्य तोपें दागी गयीं। इन बेचारोंसे तोपें दागनेका एक हजार रुपया वसूल किया गया।

रामनगर ।

यह गाव अकलगढ़से पाच मील दूर है। ६ अप्रैल और १५ अप्रैलको यहा भी हड़ताल मनायी गयी। कहा जाता है कि १५ अप्रैलको रामनगरमें सम्राट्का जनाजा निकाला गया और उसे जलाकर उसकी राख नदीमें फेंकी गयी। कांग्रेस कमेटीने पूरी जाच की परन्तु अफवाह झूठी ही मालूम हुई। १५ अप्रैलको बाजारसे कुछ लड़के 'राल्ट बिल हाय हाय' करते हुए निकले बताये गये। रामनगरके कई प्रसिद्ध मनुष्योंको व्यर्थ ही तङ्ग किया गया और जनतामें भय उत्पन्न करनेकी दृष्टिसे ही यह गाव नेताओंका अपमान करनेके लिये चुना गया।

योंपर लोगोंको कड़े दण्ड दिये गए। गरीब आदमियोंका माल जबर्दस्ती उठा लिया गया और एक पैसा भी नहीं चुकाया गया। जो लोग कैद कर लिये गये थे उनके खानेके लिये नम्बरदारोंसे रुपया वसूल किया गया और गांवसे दस हजार रुपयेका हर्जाना भी लिया गया।

चुहड़काना।

यह रेलवे स्टेशन और बाजार है। आसपासके गांववाले अपना सामान यहां बिक्रीके लिये लाते हैं। १३ अप्रेलको यहां हड़ताल रही। १४ अप्रेलको लाहौर और अमृतसरकी खबरोंसे उत्तेजित होकर लोगोंने रेलवे स्टेशनमें आग लगा दी। इसपर फौज और तोपें वहां पहुंच गयीं और बिना किसी विवेकके गोलियां दागी गयीं। मार्शल ला की घोषणाके पहले ही यह कार्यवाही की गयी। सब डिवीजनल अफसर रायसाहब श्रीराम सूदने गोली चलानेका हुक्म दिया। जिस समय गोली चलायी गयी कोई भीड़ भी जमा नहीं हो रही थी। लोग डरकर छिपनेके लिये भाग रहे थे। अन्य स्थानोंकी तरह यहां भी तरह तरहकी कड़ाइयां की गयीं। लोगोंकी फसलें जब्त कर ली गयीं। लोगोंसे झूठे बयान कराये गये और बड़े बड़े आदमियोंको ढूंढ़ ढूंढ़कर तंग किया गया। गांवसे हर्जाना भी वसूल किया गया।

शेखूपुरा।

शेखूपुरा लाहौरसे २५ मील दूर है और उसकी आबादी २५०० के लगभग है। ६ अप्रेलको वहां पूरी हड़ताल रही। १३ तक

पूर्ण शान्ति । लाहोर और अमृतसरकी घटनाओंके कारण १४ अप्रेलको फिर हड़ताल रही। रातको किसीने रेलके तार काट डाले। १६ वींको मार्शल ला की घोषणा कर दी गयी। अन्य स्थानोंकी भांति यहां भी जनताको उसकी कड़ाइयां सहनी पड़ी। एक विशेषता यहांपर की गयी। १० वर्षसे अधिक अवस्थावाले सब आदमियोंको झाड़ू लगाकर एक बहुत बड़ा जमीनका हिस्सा साफ करना पड़ा। सात दिनतक सबको सवेरेसे लेकर शामके ७ बजेतक जांच करानेके लिये जाना पड़ता था। ६० वर्षके बुड्ढे एक लम्बरदार और एक अवसर प्राप्त इन्सपेक्टरको गिरफ्तार किया गया और उसकी जायदाद जब्त कर ली गयी क्योंकि उन दोनोंके लड़के अफसरोंकी जांचके समय शेखूपुरामें नहीं पाये गये। हाईकोर्टको लिखा गया कि वकीलोंकी सनद रद्द की जाये तथा लोगोंसे झूठे बयान लिये गये। वकीलोंकी खास तौरसे बेइज्जती की गयी। उन्हें कमीना और कीड़ा बताया गया। इन्सपेक्टरसे नंगे पैर हथकड़ियों समेत कड़ी धूपमें कवायद करायी गयी। बासवर्थ स्मिथने लोगोंसे कहा कि तुम लोग सुअर और गन्दी मक्खी हो। उन्होंने सबको काला और गन्दा लोग कहकर जमीनपर थूका। लोगोंपर सामूहिक रूपसे जुर्माना कर अनुचित दण्ड दिया गया।

लायलपुर।

लायलपुर शहर लायलपुर जिलेका सदर मुकाम है। इसकी आबादी २५ हजारके लगभग है। यहांसे बाहरको बहुतसा गेहूं

जाता है । ६ अप्रेलको हड़ताल मनायी [illegible] १० ता
शान्ति रही । इसके बाद लाहौर और अमृतसर, समाचार पहु
चनेपर नेताओंके बहुत रोकने पर भी फिर हड़ताल हो गयी पं
अमृतसरके गोरे मजिस्ट्रेट पर गोलियां चलने की खबर सुन गि
जनता विशेष उत्तेजित हुई । हड़ताल बराबर जारी रही, पर
नेताओंने बहुत उद्योग कर १९ तीको भंग की । नगरमें कि
नगरकी अशान्ति पैदा नहीं हुई । लायलपुरसे पास बाहर क
गये परन्तु इस कार्यमें लायलपुर वालोंने भाग नहीं लिया
स्टेशनपर भूसेकी गाड़ी जला दी गयी । इसपर निरपराध आ
पकड़े गये यद्यपि पीछेसे मजिस्ट्रेटने क्षति पूर्तिका दावा रद्द क
हुए अपने फैसलेमें कहा कि किसीने जान बूझकर आग न
लगायी । लायलपुरमें इतनी शान्ति थी कि डिप्टी कमिश्नरके सा
पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टने कहा कि वहां मार्शललाकी कोई जरू
न थी, परन्तु तो भी वहां सैनिक शासन स्थापित किया गया ३
लोग भयभीत किये गये । उन्हें हर तरहसे नष्ट भी कि
गया ।

गुजरात ।

गुजरात ऐतिहासिक स्थान है । इसकी आबादी पास ह
है । वजीराबादसे ६ मील दूर है । ६ अप्रेलको यहांपर
ताल नहीं हुई । १४ को वजीराबाद और लाहौरसे लौटने
लोंने वहांके समाचार देकर दुकानें बन्द करा दीं । १५ व
मिशन स्कूलके हेडमास्टरसे स्कूल बन्द रखनेकी प्रार्थना

गयी । जब वैसा नहीं किया गया तो लड़कोंने पत्थर फेंककर खिडकियोंके शीशे तोड़ दिये । स्टेशनपर भी पत्थर फेंके गये और कुछ कागज जलाये गये । सडकों पर गोली दागी गयी और वे तितर वितर हो गये । कोई हताहत नहीं हुआ । लड़कोंके सिवा हड़तालमें किसी बड़े या जिम्मेदार आदमीने भाग नहीं लिया । तिसपर भी १६ अप्रेलको मार्शललाकी घोषणा कर दी गयी । स्थानीय मनमुटावके कारण अधिकारियोंने गुजरातमें सैनिक शासन स्थापित कराया । डिप्टी कमिश्नरको पता तक नहीं था । जब उन्हें खबर दी गयी तो उन्होंने कहा कि कौनसे गुजरातमें मार्शलला जारी हुआ है । मार्शलला जारी होनेपर अन्य स्थानोंकी भांति निर्दोष और प्रभावशाली आदमी गिरफ्तार किये गये । उनके मकानोंकी तलाशी ली गयी । झूठे मुकद्दमें चलाये गये । दण्ड स्वरूप पुलिस भी रखी गयी और लोगोंसे हर्जाना भी वसूल किया गया ।

जलालपुर जतन ।

यह एक छोटासा गांव गुजरातसे आठ मील दूर है । यहां कपडा अच्छा बुना जाता है । ६ अप्रेलको यहां कोई हडताल नहीं हुई । १५ को सहानुभूति सूचक हडताल की गयी । किसीने रातको एक तार काट डाला । इस छोटेसे अपराधके लिये मार्शललाकी घोषणा कर दी गयी । फिर गिरफ्तारियां शुरू हुईं । बच्चोंको तीन बार हाजिरी देनेके लिये थाने पर जाना पडता था । हरजाना भी वसूल किया गया ।

सातवां अध्याय।

अन्तिम कथन।

अमृतसर, लाहोर, गुजरानवाला, लायलपुर और गुजरात इन पांच जिलोंमें मार्शल ला की घोषणा हुई थी। इन स्थानोंका अलग अलग वर्णन हो चुका है। कांग्रेस जांच कमेटी पूरी जांचके बाद इस नतीजेको पहुंची है कि यदि महात्मा गांधी गिरफ्तार न किये जाते और डा० सत्यपाल किचलूका देशनिकाला न किया जाता तो न तो किसी अंग्रेजकी जान जाती कोई इमारत या जायदादको चोट पहुंचती। पञ्जाब सर-

कारके दोनो अविवेकपूर्ण कामोंने आग लगायी। भारत सरकारको अवश्य ही दोषी ठहराना पड़ेगा क्योंकि उसने जांच न कर पञ्जाव सरकारका समर्थन किया। बड़े लाटने जनताकी ओरसे गये हुए तारों और पत्रोंपर ध्यानतक न दिया। दुर्घटनाके बाद भी वे पञ्जाव न गये। मईमे भी उन्हे दुर्घटनाका पूरा ज्ञान नहीं हुआ और वृटिश सरकारको वे मार्शल ला के अत्याचारोंका ज्ञानतक न करा सके। मि० एण्ड्रूजका पञ्जावमें जानेसे रोकनेमे उनका भी हाथ था। उन्होने पञ्जाव सरकारके चीफ सेक्रेटरी मि० टामसनद्वारा माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीयका अपमान कराया जव कि उन्होंने कौंसिलमे प्रश्नोंकी धूम मचायी। बड़े लाटने मार्शल ला कमीशनोंकी फांसीकी आज्ञाए तक स्थगित न कीं जवतक कि पण्डित मोतीलाल नेहरूके उद्योगसे भारत सचिवने हस्तक्षेप न किया। उन्होंने मालवीयजीको प्रश्न कर प्रकाश डालनेसे भी रोका। इस तरह लार्ड चेम्सफार्डने इतने उच्च पदपर बैठकर भी जनताके हितकी रक्षा न की और इसीसे यह निर्णय करनेके लिये वाध्य होना पड़ता है कि वे वापस वुला लिये जायें।

१—सर माइकेल ओडायरने शिक्षित श्रेणीवालोंकी जो वरावर निन्दा और अविश्वास किया उसके तथा युद्धकालमे रङ्गरूट और आर्थिक सहायता प्राप्त करनेके लिये जो निर्दयता और जवर्दस्तीके ढङ्ग काममे लाये गये और उन्होंने जो प्रान्तीय पत्रोंका मुंह वन्दकर तथा पञ्जावके वाहरके राष्ट्रीय पत्रोंका

प्रान्तमें आना रोक जो [illegible] दमन किया उसके कारण पञ्जाब निवासी उनके शासनसे कुढ़ गये। २—रौलट आन्दोलनने लोगोंके दिलमें घबराहट पैदा कर दी और गवर्नमेण्टकी [illegible] जनताका विश्वास घटा दिया। यह जितना अधिक पञ्जाबमें हुआ उतना कहीं भी प्रचार नहीं हुआ। इसका कारण सर ओडायरका सार्वजनिक आन्दोलनोंको दबानेके लिये भारतरक्षा कानूनका प्रयोग करना था। ३—सत्याग्रह तथा हड़ताल जो उसके पूर्ण रूपकी भांति निश्चित की गयी थी इन दोनोंने जहां तक देश भरमें जान पैदा कर दी वहां पञ्जाबको और अधिक शोचनीय और व्यापक आपदाओंसे बचा लिया क्योंकि लोगोंके उत्पातकी प्रवृतियों और मनोविकारोंका निरोध किया था। ४—रौलट आन्दोलन किसी ब्रिटिश विरोधी भावसे नहीं उठाया और कार्यरूपमें लाया गया जो द्वेषभाव और उत्पातसे बिलकुल ही निर्लेप था। ५—पञ्जाबमें गवर्नमेन्टको उलट पुलट करनेके लिये कोई षड्यन्त्र नहीं था। ६—महात्मा गान्धीकी गिरफ्तारी और नजरबन्दी तथा डा० किचलू और डा० सत्यपालकी गिरफ्तारी और निर्वासन न्याय-सङ्गत कार्य नहीं थे वल्कि भारी सार्वजनिक उद्विग्नताके एक मात्र प्रत्यक्ष कारण थे। ७—अमृतसरमें भीड़ने जो मारकाट शुरू की उसका कारण रेलवे पुलकी भीड़पर फैर करना और ऐसे समयमें लाशों और घायलोंका दिखाई पड़ना है जब क्रोध बहुत ही प्रबल हो गया था। ८—उत्तेजनाका चाहे जो भी

कारण हो उपद्रवी भीड़ोंकी ज्यादतियां अत्यन्त खेदजनक और निन्दनीय हैं। ९—जहांतक जन साधारणको बातें मालूम हैं, मार्शलला जारी करनेकी न्याय्यता प्रगट करनेके लिये उचित कारण नहीं दिखाया गया है। १०—जहा भी मार्शललाकी घोषणा की गयी वहां ही तव की गयी जब पूर्ण रूपसे शान्ति स्थापित हो चुकी थी। ११—यदि यह भी मान लिया जाय कि मार्शलला राज्यकी आवश्यकतासे था तो भी उसका इतने दिनोंतक जारी रखना अनुचित था। १२—पांचो जिलोंमे मार्शललाके अनुसार जो काम किये गये उनमें अधिकांश अनावश्यक निर्दयतापूर्ण और अत्याचारी थे तथा जिन लोगोंके सम्बन्धमें थे उनके भावोंका और पूर्ण निरादर किया गया। १३—लाहोर, अकलगढ़, रामनगर, गुजरात, जलालपुर, जट्टन, लायलपुर और शेखूपुरामे भीड़वालोंकी ओरसे नाम लेने योग्य कोई ज्यादती नहीं की गयी। १४—जलियानवालाबागकी नरहत्या बिलकुल ही निर्दोष और निरस्त्र पुरुषों और बच्चोंके प्रति अत्यन्त अमानुषिक कार्य था जिसकी भयङ्करताका दूसरा उदाहरण आधुनिक ब्रिटिश शासनके इतिहासमे और कोई नहीं है। १५—मार्शलला ट्रिब्यूनल्स और समरी कोर्टस निर्दोष व्यक्तियोंको तङ्ग करनेके साधन बनाये गये थे और उनसे बहुत अधिक परिमाणमें न्यायकी हत्या हुई है तथा न्यायके नामपर सैकड़ों स्त्रियों और पुरुषोंको नैतिक और भौतिक कष्ट पहुचाये गये हैं। १६—पेटके बल रेंगनेका हुक्म तथा अन्य

मनमानी सजायें दिलानी सभ्य शासनके प्रयोग थीं और उनके व्यक्तियोंके नैतिक अधःपातके लिए रक्खी थीं। २७ मार्शल कोर्ट की मजिस्ट्रेटके अधिकारमें निर्दोष व्यक्तियोंको फांसे, कैदों और बदला लेनेके भावसे सजाएं दी गयी पर भिन्न भिन्न स्थानोंपर हजारों व्यक्तिगत पुलिस, जुर्माने तथा इस प्रकारके गैरकानूनी हुक्मसे तथा उपायोंके कार्य नानाप्रकार न्यायशून्य एवं और भी अधिक चोट पहुंचानेवाले थे। २८ मार्शलला सिवाय जो घूसखोरी हुई वह फायदा एक अलग ही जुल्म करता है जो सहानुभूतिपूर्ण शासनमें सहज ही बचाया जा सकता था। २९—जनताके ऊपर जो अन्याय किया गया है उसके बदलेमें न्याय करने शासनको शुद्ध करने और भविष्यमें अफसरोंको ऐसी स्वेच्छाचारिता रोकनेके जो उपाय आवश्यक हैं वे ये हैं—
(क) रालट ऐक्टका रद्द करना। (ख) सर माइकेल ओडा-यरको राज्यके प्रतिष्ठित पदसे अलग करना (ग) जे० डायर कर्नल जानसन, कर्नल ओब्रायन, मि० बोसवर्थस्मिथ, राय साहब श्रीराम सूद और मालिक साहबखाको राज्यके प्रतिष्ठित पदसे अलग करना। (घ) उन निम्न अफसरोंकी घूस-खोरीके कामोंके सम्बन्धमें स्थानिक जाच कराना जिनके नाम हमारे प्रकाशित बयानोंमें आये हैं और उनके अपराधी सिद्ध होनेपर उन्हें बर्खास्त करना। (ङ) वायसराय महोदय का वापस बुलाया जाना। (च) स्पेशल ट्रिब्यूनल्स और समरी कोर्टोंसे दंडित व्यक्तियोंसे वसूल किये हुए जुर्माने

वापस करना नगरोंपर किये हुए जुर्मानेको माफ करना और वसूल किये हुए जुर्मानेकी रकमें लौटा देना तथा प्यूनिटिव पुलिस हटा देना ।

हमारी पक्की राय है कि सर माइकेल ओडायर, जे० डायर कर्नल जानसन, कर्नल ओब्रायन, मि० बोसवर्थस्मिथ, रायसाहब श्रीराम सूद अथा मलिक साहबखा ऐसे गैरकानूनी काम करनेके अपराधी हैं कि वे इस योग्य हैं कि उनपर मामला चलाया जाय। परन्तु हम जानबूझकर ऐसा करनेकी राय नहीं दे रहे हैं, क्यों कि हमारा विश्वास है कि यह अधिकार त्यागनेमें ही भारतको लाभ हो सकता है। इन अफसरोंको बर्खास्त करनेसे भविष्यकी शुद्धिको काफी गारण्टी हो जायगी। हमारा विश्वास है कि कप्तान मेकरे और कप्तान डोवेटन भी कर्नल ओब्रायन और अन्यकी भांति अपने सुपुर्द किये हुए कामोंमें असफल हुए हैं, किन्तु हमने जानबूझकर उनके लिये कोई सरकारी कररवाई की जानेकी राय नहीं दी, क्यों कि हमारे प्रकट किये हुए अन्य अफसरोंकी तरह ये दो अफसर अनुभव प्राप्त नहीं थे और उनकी निष्ठुरता उन अनुभवी अफसरोंकी जितनी पूर्ण और पूर्वचिन्तित नहीं थी।

मोहनदास कर्मचन्द
सी० आर० दास।
अब्बास एस० तैयबजी।
एम० आर० जयकार।

हण्टर-कमेटीकी रिपोर्ट।

हंटर कमेटी।

(डिस आर्डर्स इनक्वायरी)

अध्यक्ष—मान० लार्ड हण्टर, स्काटलैण्डके भूतपूर्व सालिसिटर जेनरल और स्काटलैण्ड कालेज आफ जस्टिसके वर्त्त-मान सेनेटर।

मेम्बर — (१) कलकत्ता हाईकोर्टके जज मान० मि० जस्टिस रेंकिन। (२) भारत सरकारके होम डिपार्टमेण्टके एडी-शनल सेक्रेटरी मा० मि० राइस। (३) पेशावर डिवीजनके कमांडिङ्ग अफसर मेजर जेनरल सर जार्ज वेरो। (४) युक्तप्रदेशीय व्यवस्थापिका सभाके मेम्बर मान० पं० जगत नारायण। (५) युक्तप्रदेशीय व्यव-स्थापिका सभाके मेम्बर मा० मि० स्मिथ। (६) सर चिम्मनलाल हरिलाल सीतलवद वकील हाईकोर्ट। (७) ग्वालियर स्टेटके अपील मेम्बर सरदार साहि-बजादा सुलतान अहमद खां।

सेक्रेटरी—मद्रास गवर्नमेण्टके सेक्रेटरी मा० मि० स्टोक्स। इनके १९१९ की २३ वीं नवम्बरको इस्तीफा दे देनेपर २४ वीं नवम्बरसे भारतीय पुलिसके मि०. होरेस विलियमसन।

लार्ड हण्टरका पत्र

रिपोर्ट पेश करते हुए कमेटीके सभापति लार्ड हण्टरने १९२० की ८ वीं [illegible]को लाहोरमें जो पत्र भारत सरकारके होम डिपार्टमेण्टके सेक्रेटरीको लिखा था, उसका सारांश यह है :-

महाशय, १९१९ की १४ वीं अक्तूबरको इस आशयकी आज्ञा प्रकाशित हुई थी कि भारतसचिवकी स्वीकृतिसे भारत सरकारने "बम्बई, दिल्ली और पंजाबके हालके उपद्रवों, उनके कारणों तथा उनके विरुद्ध काममें लाये हुए उपायोंकी जांचके लिये" एक कमेटी नियुक्त करनेका निश्चय किया। उसमें मुझे कमेटीका अध्यक्ष और मान० मि० जस्टिस रैनिकन मान० मि० राइस, मेजर जेनरल सर जार्ज बैरो, मा० प० जगतनारायण मा० मि० स्मिथ, सर चिम्मनलाल सीतलवद और सरदार साहिबजादा सुलतान अहमद खांको मेम्बर नियुक्त करनेकी भी बात थी। मा० मि० स्टोक्स कमेटीके सेक्रेटरी नियुक्त हुए थे, किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हें १९१९ की १३ वीं नवम्बरको अस्वस्थताके कारण इस्तीफा देना पडा इसलिये २४ वीं नवम्बरको उनके स्थानपर मि० विलियमसन नियुक्त किये गये। कमेटीकी बैठक अक्तूबरमें दिल्लीमें करनेकी बात थी। उसे सर्व-

साधारणके सामने जांच करनेका कहा गया था, पर अध्यक्षको अधिकार दिया गया था कि सार्वजनिक हितकी दृष्टिसे वे जांचकी कोई काररवाई वन्द कमरेमें भी कर सकते थे। जो लोग गवाही देना चाहते थे उन्हें भारत सरकारके होमडिपार्टमेंट शिमलाके द्वारा सेक्रेटरीके पास अपने पूरे नाम, पते और जिन बातोंके सम्बन्धमें वे वयान देना चाहते थे उनका सक्षिप्त विवरण लिखकर भेजनेको कहा गया था और कमेटीको अधिकार दिया गया था कि वह जो वयान सुनना चाहे सुने।

कमेटीकी पहली वैठक दिल्लीमे २६ वीं अक्तूबरको हुई जिसमें निश्चय हुआ कि जो लोग या संस्थाएं गवाही देना चाहें उन्हें एक पत्रपर ये बातें लिखकर सेक्रेटरीको देना चाहिये जो वे सिद्ध करना चाहते हैं और उनमें वे उन बातोंका भी उल्लेख करें जिसकी पुष्टि करनेको वे तैयार हैं। पत्रपर किसी वैरिस्टर, वकील, एडवोकेट या प्लीडरके दस्तखत हों। साथ ही गवाहोंकी एक सूची भी उनके संक्षिप्त विचार सहित पेश की जाय। कमेटी ऐसे लोगो और संस्थाओंकी अर्जियोंपर विचार करनेको तैयार है जो वैरिस्टर या वकीलद्वारा हाजिर होना चाहते हैं। प्रस्तावित कार्य ढङ्गकी सूचना नियमानुसार पत्रोंमें निकलवा दी गयी थी। कमेटीने दिल्लीमे ८ दिन, लाहोरमें २६ दिन, अहमदाबादमे ६ दिन और बम्बईमें ३ दिन गवाहोंके बयान सुने। सर माइकेल ओडायर, जे० हडसन, मि० टामसन और सर उमर हयात खाने वन्द कमरेमे और

कहा है कि, जेलमें पड़े लोगोंसे उनके वकीलोंको परामर्श करनेका उचित सुभीता कर दिया जायगा। लार्ड हण्टरने भी स्वतन्त्र रूपसे ऐसा सुभीता करनेकी राय पञ्जाब सरकारको दी है। इससे अधिक राय देना लार्ड हंटरकी कमेटी ठीक नहीं समझती। पञ्जाब सरकारने मेरी राय स्वीकार की थी और मेरी समझसे और अधिक रियायत कांग्रेस कमेटीके साथ करनेकी आवश्यकता नहीं थी। लाहोरकी किसी बैठकमें हमारे सामने आलइंडिया कांग्रेस कमेटी नही हाजिर हुई। तो भी गैर सरकारी गवाहोंको हमने काफी अवसर दिया और कई गवाहोंने बयान भी दिये और उनकी शिकायतें सुनी गयीं। लाहोरकी जांच खतम होनेपर ३० वीं दिसम्बरको मान० मालवीयका तार मिला कि, राजकीय घोषणाके अनुसार मुख्य नेता छूट गये हैं इसलिये मेरी कमेटी अब पञ्जाब सम्बन्धी प्रमाण हंटर कमेटीके सामने पेश कर सकती है यदि कमेटी यह स्वीकार कर ले कि आवश्यकता होनेपर सरकारी गवाह जिरहके लिये फिर बुलाये जायेंगे। इसी आशयका पत्र मुझे पञ्जाबके कैद किये हुए कई नेताओंसे भी मिला। फिरसे जांच शुरू करना मुझे बिलकुल ही अनुचित जान पड़ा इसलिये मेरे कहनेसे सेक्रेटरीने उत्तर भेजा कि, “कमेटी लाहोरमें ६ हफ्तेसे अधिक समयतक बैठकर चुकी है और वहां गवाहियोंका सुनना खतमकर चुकी है तथा उनके सुने जानेके समय आपकी कमेटीके लिये गवाहोंसे जिरह करनेका मार्ग खुला हुआ था इन कारणोंसे लार्ड हंटरको खेद है

दिल्ली।

३० मई १९१९ को दिल्लीमें पहली दुर्घटना हुई। सत्याग्रहके उपलक्ष्यमें महात्मा गान्धीकी पूर्व घोषणाके अनुसार दिल्लीमे उस दिन व्यापक हड़ताल मनायी गयी। रालट एक्ट के विरोधमें ३० मार्च ही पहले राष्ट्रीय शोक दिवस महात्मा गांधी द्वारा निश्चित किया गया था। पीछेसे ३० मार्चकी जगह ६ अप्रेल निश्चित हुई। दिल्लीमें ३० मार्चको ही हड़ताल मनायी गयी। हड़तालके कारण दिल्लीमें बहुतसे लोग तांगो और मोटरों परसे जबर्दस्ती उतारे गये। कुछ आदमी रेलवे स्टेशन पर भी वहांका कारबार बन्द करानेको पहुंचे। जब स्टेशनके कन्ट्राकृरने दुकान बन्द करनेकी इच्छा प्रकट नहीं की तो वह घसीटा गया। डिप्टी स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० मेथ्यूजका कोट फाड डाला गया। मुठभेड़में दो आदमी गिरफ्तार कर लिये गये। इसपर बड़ी धूम मच गयी। डिप्टी ट्राफिक सुपरिण्टेण्डेण्ट भी धमकाये गये और भीड़ स्टेशनपर से हटायी गयी। वहासे भीड़ निकलकर स्टेशनके बाहर जमा हुई और वहांसे न हटी यद्यपि उससे कहा गया कि कोई आदमी हाजतमें नहीं है। १ बजेके लगभग स्टेशनके पास एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और पुलिस पहुंची। फौज भी बुलायी गयी। दिल्लीसे १५ गोरे गुजर रहे थे वे भी रोक लिये गये। इस तरह अधिकारियोंने भीड़को पूरी तैयारीके साथ हटानेकी चेष्टा की। मोड कोन्स गार्डनकी

तरफ बढ़ी। और फलतः गोली दाग दी गयी जिससे दो तीन आदमी मरे और कई घायल हुए। इसके बाद भीड़ टाउन हालकी तरफ चली, परन्तु यहां भी गोली दागी गयी। इस तरह मरे हुए आदमियोंकी संख्या बढ़कर आठ हो गयी। कई दर्जन आदमी घायल हुए। उसी दिन तीसरे पहरको स्वामी श्रद्धानन्दकी अध्यक्षतामें एक सभा हुई जिसमें चीफ कमिश्नर भी उपस्थित थे। सभा शान्तिपूर्वक हो गयी। जब स्वामीजी सभा स्थानसे लौटे तो उनके साथ बहुतसे आदमी चल पड़े। रास्तेमें कुछ गोरखोंसे मुठभेड़ हो गयी। एक गोरखेकी बन्दूकसे गोली निकल पड़ी और जनता उत्तेजित हुई, परन्तु पीछेसे मामला ठण्डा पड़ गया। ३१ मार्चको बड़ी धूमधामसे शहीदोंके जुलूस निकाले गये। पुलिससे इतनी बड़ी भीड़की मुठभेड़ नहीं हुई। ६ अप्रेलको दिल्लीमें फिर हड़ताल मनायी गयी। जुम्मा मसजिदमें स्वामी श्रद्धानन्दका भाषण हुआ। एक हिन्दू इस मसजिदमें पहले-पहल ही बोलनेको खड़ा हुआ। दिल्लीके हिन्दू मुसलमानोंके अपूर्व प्रेमका इस घटनासे परिचय हो जाता है। ८ अप्रेलको महात्मा गान्धी दिल्ली और पञ्जाब जाते हुए राहमें रोककर गिरफ्तार किये गये। १० अप्रेलको दिल्लीमें फिर व्यापक हड़ताल मनायी गयी। १० अप्रेलसे हड़ताल आरम्भ हुई और वह कई दिनतक जारी रही। १४ अप्रेलको एक सी० आई० डी० इन्सपेक्टर बहुत बुरी तरहसे घायल किया गया। १७ अप्रेलको पुलिस घूम रही थी जिससे लोग भयभीत न रहें और दुकानें खोलें। पुलिसके पीछे

और आदमी दुकानें बन्द करा रहे थे। एक आदमी पुलिसने गिरफ्तार कर लिया इसपर एक हेड कान्सटेबलपर तथा पुलिस दलपर चोट की गयी। पुलिसने गोली चलायी जिससे १८ आदमी घायल हुए जिनमेंसे दो तुरन्त मर गये। १६ अप्रेलको दिल्लीकी हड़ताल समाप्त हो गयी।

१७ अप्रेलको दिल्लीकी नाज़ुक अवस्था देखकर चीफ कमिश्नरने भारत सरकारको लिखाया कि मार्शल ला की घोषणा करनेकी आज्ञा दी जाये। हण्टर कमेटीकी रायमें दिल्लीमें तीनों बार ठीक समयपर ही गोलियां दागी गयीं। किसी स्थानमें जरूरतसे ज्यादा समयतक गोली नहीं चलायीं गयीं। कमेटीकी रायमें महात्मा गान्धी दिल्ली पहुंचकर अपने प्रभावसे जनताको शान्त नहीं कर सकते थे। ३० मार्चके बाद उनकी उपस्थिति ठीक तौरसे भयानक समझी गयी। पुलिससे महात्मा गान्धीकी मुठभेड़ हो जानेपर न जाने क्या भीषण परिणाम होता। दिल्लीमें अशान्तिके समय प्रसिद्ध नागरिक स्पेशल कान्सटेबल भी बनाये गये थे। यद्यपि उनसे किसी तरहका काम नहीं लिया गया, परन्तु हण्टर कमेटीकी रायमें डिप्टी कमिश्नरने व्यर्थ ही यह काम किया।

अहमदाबाद।

अहमदाबाद गुजरातका प्रधान नगर है और उसकी आबादी ४ लाख है। वहां ७८ मिलें हैं जिनमें चालीस हजार आदमी काम करते हैं। अहमदाबादके पास ही वीरमग्राम तथा नडि-

गड़बड़ नहीं हुई। १० वींकी रातको शान्ति रही। ११ अप्रैलके सवेरे खबर फैली कि श्रीमती अनुसूया बाई गिरफ्तार हो गयी हैं इसपर बड़ी उत्तेजना फैली। खबर फैलनेका यही कारण था कि श्रीमती अनुसूया बाई बम्बईसे अहमदाबाद उस गाड़ीसे नहीं लौट सकीं जिससे उनके लौटनेकी खबर थी। प्रेम दरवाजेके सामने फौजका पहरा था। वहांपर बहुतसे मजूर जाकर जमा हुए। सड़कोंपर चारों ओर भीड़ दिखायी देती थी। फौजी आदमी भी तमाम शहरमें फैल गये। लोगोंने उत्तेजित होकर सरकारी इमारतोंमें आग लगाना शुरू की और उनपर गोली चलायी गयी। बम्बई बैङ्कपर भी वे धावा करना चाहते थे परन्तु हटा दिये गये। कई सरकारी इमारतें जला दी गयीं और कई जगह युरोपियनोंपर धावे हुए। दोपहरके बाद बहुत बड़ी संख्यामें सैनिक दिखायी देने लगे। भीड़ने हथियार और बन्दूकें भी छीनीं और सार्जेण्टको जो दुकानमें छिपा हुआ था घसीटकर मार डाला। दो हिन्दुस्तानी मजिस्ट्रेटोंके घर जला दिये गये। वे अपने परिवारोंको लेकर अपनी जान बचा भागे। अहमदाबादमें कई बार सैनिकोंने गोली दागी। ११ वीं की रातको मिलोंके आसपास युरोपियन नहीं रहे और वे शाही बागको चले गये। रातको भी उपद्रव जारी रहा और कई जगह आग लगा दी गयी। रातको बिजली बन्द रहनेसे शहरमें अन्धेरा रहा। बम्बईसे अहमदाबाद जो सैनिक जा रहे थे उनकी ट्रेन राहमें पटरीसे उतार दी गयी और अहमदाबादसे सम्बन्ध रखने-

वीरमग्राम (जिला अहमदाबाद)

११ अप्रेलको यहां वालोंने भी महात्मा गान्धीकी गिरफ्तारी की खबर सुनकर हड़ताल मनायी। मिलोंके मजदूरोंने काम नहीं किया और दुकानें बन्द रहीं। १२ को यहां उपद्रव आरम्भ हुआ। स्टेशन पर युरोपियन ट्राफिक इन्सपेक्टर पर चोट की गयी और वे वेहोश कर दिये गये। उन्हे एक कुलीके कपड़े पहना कर एक इंजिनमें भेज दिया गया और वे वहांसे खरगोदा रवाना कर दिये गये। रेलवे स्टेशनमें भी उपद्रवियोंने आग लगा दी। पुलिस चौकी और पोस्टआफिस भी जला दिया गया। सब इन्सपेक्टरका आफिस भी जला दिया गया। मजिस्ट्रेट मि० माधवलाल कचहरी करते थे। भीड़ने पहरेदारों पर पत्थर फेंके और उसपर गोली चलायी गयी। इसी बीचमें मजिस्ट्रेट डरकर कचहरी छोड़ पीछेकी दीवालसे कूद कर भागे। बहुतसे कर्मचारी भी भागे। मामलतदारके आफिस और पुलिस लाइनमें भी आग लगा दी गयी। एक हेड कान्सटेबिलके मकानमें भी आग लगा दी गयी तथा एक मकानमें भी आग छुआ दी गयी। दोपहरके बाद भीड़ रेलवे स्टेशनकी तरफ फिर गयी और रेलकी पटरियां उखाड़ फेंकी गयीं तथा लकड़ियोंकी पटरियां जला डाली गयीं। माल गुदाम लूट लिया गया। सिगनल स्टेशनमें आग लगायी गयी और सिगनल जला दिये गये।

रेलकी पटरियों पर चोट की गयी जिससे अहमदाबादको सैनिक ट्रेन न जा सके। १२ अप्रेलको फिर रेलवे लाइनपर चोट की गयी। लकड़ीकी पटरियां जलायी गयीं और तार काट डाले गये। पुलिससे कहीं पर मुठभेड़ नहीं हुई और न कहीं ज्यादा उपद्रव ही हुआ। स्पेशल अदालतोंने अपराधियों-को दण्ड दिये। अहमदाबाद और खेड़ा जिलेसे हर्जाना भी वसूल किया गया।

बम्बई शहर।

बम्बईको महात्मा गांधीकी गिरफ्तारीकी खबर १० अप्रेलको मिली और उसीदिन पुलिसको अमृतसर और लाहोरकी दुर्घट-नाओंकी भी खबर मिली। ११ अप्रेलको बम्बईके एक भागमें कुछ अशान्ति उत्पन्न होनेवाली थी और भीड़ जमा हुई थी। बम्बईके पुलिस कमिश्नरने वहां सैनिक भेज दिये। महात्मा गान्धी भी स्वयं वहां पहुंच गये और नगरमें पूर्ण शान्ति हो गयी।

नवां अध्याय।

पञ्जाब।

ऊपर जिन स्थानोंकी घटनाओंका वर्णन दिया गया है, उनके सम्बन्धमें हण्टर कमेटीके सभी सदस्य सहमत थे। अल्पमतवाले हिन्दुस्तानी सदस्य इस बातको माननेको तैयार नहीं कि यदि

पांचो ज़िले।

लाहोर, अमृतसर, गुजरानवाला, लायलपुर और गुजरात इन पाच जिलोंमें मार्शल्लाकी घोषणा हुई थी। अमृतसर जिलेमे खास अमृतसर शहरमें मार्शललाके जारी होने के पहले जलियांवाला हत्याकाण्ड उपस्थित हुआ था। हंटर कमेटीके युरोपियन सदस्य लिखते हैं कि जनरल डायरको पहले उचित था कि भीडको तितर वितर होनेका हुक्म देते। उन्हे यह उचित न था कि भीड़ हटने पर भी गोलिया चलाते रहते। गोली चलानेके पहले जनताको सूचना देनी जरूरी होती है। जनरल डायरने सूचना नहीं दी। अमृतसरमें ऐसी अवस्था उत्पन्न नहीं हुई थी कि विना सूचना दिये ही गोली

चलानी पड़ती। यदि सूचना देने पर भीड़ न हटती तो जनरल डायर गोली चला सकते थे। भीड़ हटने पर भी गोलियां चलाना जारी रख जनरल डायरने भयानक भूल की। इससे स्पष्ट है कि जनरल डायर भीड़ हटानेके लिये नहीं बल्कि पञ्जाबमें अपना नैतिक प्रभाव जमानेके लिये गोलियां बरसानेपर तुले थे। पञ्जाबके लेफ्टीनेण्ट गवर्नर सर माइकेल ओडायरको जब जलियांवाला बागके हत्याकाण्डकी खबर मिली तो उन्होंने जनरल डायरके कार्यका समर्थन किया। हण्टर कमेटीकी रायमें लोगोंका यह कहना ठीक नहीं कि १८५७ के गदरके समान ही पञ्जाबमें गदर हो जाता यदि जनरल डायर जालियांवाला बागमें गोलियां न चलाते क्योंकि यह बात साबित नहीं की जा सकी कि उपद्रव आरम्भ होनेके पहले बृटिश शासनको उलटनेके लिये कोई षड्यन्त्र रचा जा चुका था। हण्टर कमेटीने यह बात स्वीकार की है कि जलियांवाला बागमें ३७६ आदमी मरे जिनमें ८७ आदमी बाहरसे आनेवाले थे और एक हजारसे अधिक घायल हुए।

१५ अप्रेलको लाहोर और अमृतसरमें मार्शललाकी घोषणा की गयी। १३ अप्रेलको पञ्जाबके छोटेलाट सर माइकेल ओडायरने बड़े लाटसे मार्शलला जारी करनेकी आज्ञा मांगी थी। गुजरानवालेमें १६ अप्रेलसे गुजरातमें १९ और लायलपुरमें २४ अप्रेलको मार्शललाकी घोषणा की गयी। २८ मई १९१९ को गुजरातके सिविल एरिया तथा अन्य भागोंसे मार्शलला उठा लिया गया। अमृतसर गुजरानवाला और लायलपुरसे ९ जूनको आधी रातको
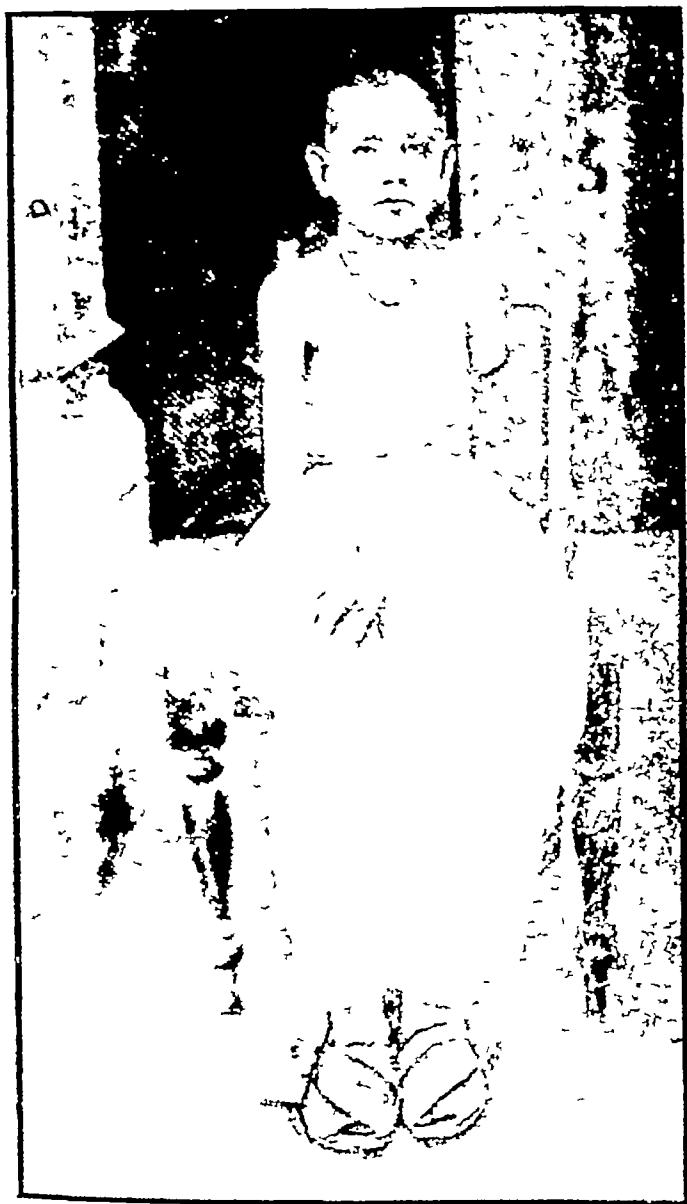
गुजरानवालाका बालक जो हवाई जहाजके
बमसे घायल हुआ।

अल्पपक्षवालोंका मत ।

अल्पपक्षवाले हिन्दुस्तानी सदस्य बहुमतवालोंके घटनाओंके वर्णनसे सहमत रहे, परन्तु उन्होंने उस वर्णनसे जो फल निकाला उसे अल्पपक्षवालोंने न माना। अल्पपक्षवाले इस बातपर सहमत नहीं हुए कि पञ्जाबके उपद्रव किसी खास सङ्गठनसे सम्बन्ध रखनेवाले थे। कोई अधिकारी यह बात साबित नहीं कर सका यद्यपि सबने उसपर जोर दिया। किसीने तो यहांतक कहा कि इन उपद्रवोंका सम्बन्ध बोल्शेविकों और जर्मनोंसे भी है। अल्पपक्षवाले इस बातको भी माननेको तैयार नहीं हुए कि पञ्जाबमें खुल्लमखुल्ला गदरकी अवस्था उत्पन्न हो गयी थी। उपद्रवियोंने किसी स्थानसे हथियार पानेकी कोशिश नहीं की। अमृतसरमें लोग नङ्गे पैर और नङ्गे शिर खाली हाथ डिप्टी-कमिश्नरके बङ्गलेकी तरफ जा रहे थे जब कि उनपर गोली चलायी गयी। सरकार या अंग्रेजोंके विरुद्ध जो कुछ भी उपद्रव हुआ वह क्षणिक था। हड़तालके पहले जनता युरोपियनोंके प्रति

पूर्ण शिष्टता दिखाती थी। १९१४-१५ में पञ्जावमें जो आदमी बाहरसे गदरके भाव लेकर पहुचे थे उनका दमन सरकार ने जनताकी सहायतासे ही किया था। पञ्जावमें यद्यपि कोई सगठित षड्यन्त्र या गदर उपस्थित न था परन्तु पञ्जावके अधिकारियो और सैनिक शासकोने यही समझकर सब काम किये थे। इसी भावसे प्रेरित होकर जनतापर उन्होने तरह तरह की कड़ाइया की। जहा कहीं मार्शलला की घोषणा की गयी वहा उस घोषणाके पूर्व शान्ति हो गयी थी और सैनिक आज्ञाओकी कोई जरूरत न रही थी। यदि सैनिक शासन स्थापित न किया जाता तो जनताको तरह तरहकी असुविधाओका सामना न करना पड़ता। मार्शललाके विनाही काम चल सकता था और शान्ति स्थापित हो सकती थी। जो लोग पकड़े गये थे उनपर जल्दी जल्दी मामला चलानेकेलिये भी मार्शललाकी जरूरत न थी। दण्ड देनेकी इच्छासे मार्शल ला की घोषणा सर्वथा अन्यायपूर्ण है। सर माइकेल ओडायरने कहा है कि जिस समय उपद्रव आरम्भ हुआ पञ्जावमें काफी सेना न थी, परन्तु सेनाकी कमी मार्शल ला की घोषणा कर देनेमें न्यायसङ्गत कारण नही बन सकती। अमृतसरके सिवा सभी स्थानोमें पुलिसने शान्ति स्थापित कर दी थी और अमृतसरके सिवा कहीं भी सैनिकोको गोली चलानेकी जरूरत न पड़ी। थोड़ेसे हथियारबन्द आदमी उपद्रवियोके दलको भगानेमें समर्थ हो गये। मार्शल ला की घोषणासे पांच सौ सैनिक वही काम कर सकते हैं जो उसके बिना दो हजार

हैं। हम लोग इस निर्णय पर पहुचे हैं कि मार्शलला जारी करना न्याय सङ्गत न था और उसे एक वार जारी कर इतने अधिक समय तक रखना और भी बुरा काम हुआ। वह कुछ दिनोंसे अधिक न जारी रखा जाना चाहिये था। जनरल डायर ने गवाहीमें कहा है कि १३ अप्रेलके बाद अमृतसरमें वैरिस्टरों वकीलों और पुलिसने चेष्टा कर शान्ति स्थापित कर दी। उन्होंने यह भी कहा कि मार्शलला रद्द करना मेरा काम न था। मै तो अपने उच्च अफसरोंकी आज्ञाके अनुसार काम कर रहा था। जब उनसे प्रश्न किया गया कि क्या आपकी रायमे मार्शलला जारी रखना जरूरी था। उन्होंने उत्तरमे कहा कि उसे जारी रखनेमे कोई बुराई न थी। क्यो कि उसका उपयोग नर्मीके साथ हो रहा था। शान्ति स्थापन हो चुकी थी और मार्शलला जारी रखना जरूरी न था। २६ अप्रेलको पञ्जाव सरकारने भी घोषणा निकाली थी कि अंग्रेज और हिन्दुस्तानी सैनिकोंकी मददसे अब सब जगह शान्ति स्थापित हो गयी है। वर्तमान कड़ाइयां इसी लिये जारी है जिससे सभी अपराधी काबूमे हो जायें। पञ्जाब सरकारने कहा है कि मार्शलला जारी रखना इसलिये जरूरी था जिससे लोगोंको सरकारकी शक्ति मालूम हो जाये और रेल तारोंपर फिर चोट करनेका किसीको साहस न हो। सरकार अपना रौब बनाये रखनेके लिये इतने जिलोंकी जनताको मार्शलला के कष्टोमें रखे यह बात हमे न्यायसङ्गत नहीं प्रतीत होती।

यह भी है कि पञ्जाबमें ऐसे आदमी न घुसने पायेंगे जो पञ्जाबकी घटनाओंको प्रकाशितकर जनतामे उत्तेजना फैलाये। मार्शलला जारी रहनेसे भारतरक्षा कानूनकी शरण न लेनी पडेगी। मार्शलला जारी रखनेके समर्थनमे कही हुई पञ्जाब सरकारकी यह बात भी यही प्रकट करती है कि अधिकारी अपने रोबके सम्बन्धमे ही विशेष रूपसे चिन्तित हो रहे थे। पञ्जाब सरकारसे १८ और २० मईके तारमे भारत सरकारने कहा था कि गुजरात और लायलपुरमे मार्शलला रद् कर दिया जावे और अन्य स्थानोके सम्बन्धमे भी मार्शलला जारी रखनेकी शर्तकी ओर ध्यान दिया जाये। इसपर पञ्जाबसरकारकी ओरसे उत्तर गया कि मालूम होता है कि मार्शलला जारी रखनेके लिये गदरकी अवस्था रहनेपर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। लेफ्टीनेण्ट गवर्नरकी रायमे यह बात प्रकाशित कर देनी चाहिये कि अफगान युद्धके कारण मार्शल ला जारी है जो युद्ध १५ अप्रेलको मार्शल ला की घोषणा हो जाने बाद आरम्भ हो गया था। किसी जिलेमें गदरकी अवस्था नहीं है यह बात तो ठीक है, परन्तु जो प्रधान बात है उस तरफ ध्यान ही नहीं दिया। हमारी समझमें यह बात नहीं आती कि जब किसी जिलेमें गदरकी अवस्था न थी तो अफगान युद्धका सहारा लेकर मार्शल ला किस तरह जारी रखा जा सकता था। पञ्जाब सरकार गुजरात और लायलपुरसे भी शीघ्र ही मार्शल ला उठा देनेके पक्षमें न थी। भारत सरकारने ३० मईके तारमे लिखा कि वह गुजरातसे तुरन्त ही उठा दिया जाये और लायल-

सकता। इस तरहका कोई भी जुलूस या चार आदमियोंका जमाव गैरकानूनी माना जायेगा और यदि आवश्यकता होगी तो वह अस्त्र शस्त्रके प्रयोगसे भङ्ग कर दिया जायेगा। अमृतसरकी आबादी लगभग एक लाख ७० हजार है परन्तु जनरल डायरने अपनी घोषणा आठसे दस हजार आदमियों को ही ज्ञात करायी। वैसाखी मेलेमें बहुतसे आदमी बाहरसे आये हुए थे इस लिये उन्हें भी जेनरल डायरकी घोषणाका कुछ भी हाल मालूम नहीं था। जनरल डायरको मालूम हो गया था कि जलियावाला बागमें सभा होगी, परन्तु उन्होंने बागके बाहर किसी तरहकी सूचना देनेका प्रबन्ध नहीं किया। सभा होनेकी बात सुन वे गोली चलानेका निश्चय कर बैठें। वे मेशीनगनसे गोली चलाना चाहते थे, परन्तु बागके भीतर तङ्ग रास्तेके कारण मेशीनगनका प्रवेश नहीं हो सकता था इससे वे लाचार रहे। मेंशीनगन वे साथ ले गये थे क्यों कि उन्हें तङ्ग रास्तेका पता न था। यदि उनके पास ५० से भी अधिक सैनिक होते तो वे उन्हें गोलियां चलानेका हुक्म दे देते। उन्होंने १५ हजारसे २० हजारकी भीड़में पहले सूचना दिये बिना ही गोली चलानी शुरू कर दी। लोग सभासे उठकर भागने लगे परन्तु जनरल डायर गोली चलाते रहे। उन्होंने उस समय तक गोली चलायी जब तक कि गोला बारूद खतम न हो गया। ३७९ के मरने और १२ सौ घायल होनेका अनुमान है। जनरल डायरने गोली दागनेके

उ०। हा, मैं कुछ कड़ी बात करना चाहता था।

प्र०। ज्यो ही अपने आदमी पहुचे देखे गोली चलानेका हुक्म दे दिया।

उ०। हां

प्र०। भीड़ वाले बागके दूसरे सिरेसे भाग रहे थे।

उ०। हा

प्र०। आपने उसी जगह गोली चलवायी जहा भीड अधिक दिखायी दी।

उ०। यही बात है।

प्र०—क्या यही बात है।

उ० —हा।

प्र०—आपने यहा तो हम लोगोको बताया है कि लोगोंपर जमा होनेके कारण ही गोली चलायी गयी।

उ० —बहुत ठीक।

प्र० —जब आपको १२ बजकर ४० मिनटपर सभा होनेकी सूचना मिली आप वहां पहुचकर गोली चलानेकी बात तय कर चुके थे।

उ० —मैं तुरन्त गोली चलाना निश्चित कर चुका था। यदि मैं देरी करता तो मुझपर फौजी अदालतमें मामला चल सकता था।

प्र०—यदि रास्ता तङ्ग न होता तो आप मेशीनगनें भीतर लेजाकर गोली चलाते।

फिर आपने ऐसा क्यो किया।

भीड़ पहले हट जरूर जाती, परन्तु सम्भव था कि वह फिर वापस आ जाती और मेरा मजाक उडाती। इस तरह मैं बेवकूफ बनता।

गोली चलाते समय क्या यह बात आपके ध्यानमे नही आयी कि यह भयङ्कर काम करते हुए आप वृटिश राजका बड़ाभारी अहित कर रहे हैं क्योकि इससे असन्तोष और भी बढ़ेगा।

नहीं, इसे तो मैं अपना कर्तव्य समझता था। मै यह समझता था कि जो कुछ मै कर रहा हूं ठीक ही नहीं दया-पूर्ण भी है। मैं यही समझता था कि प्रत्येक समझदार आदमी मेरा काम ठीक बतायेगा।

जब आप गोली चलाना बन्द कर चुके तो क्या आपने निर-हताहतोंके सम्बन्धमें कोई व्यवस्था की। इसकी आवश्यकता नहीं। यह मेरा काम न था। अस्पताल खुले हुए थे। जो चाहता अपना इलाज कराता।

क्या लाशोंके सम्बन्धमें आपने कुछ किया था।

लाशें अन्तिम संस्कारके लिये मुझसे मागी गयीं।

वह तो पीछेकी बात है।

मुझे याद है कि मै ज्यो ही लौटा मुझसे लाशें मागी गयी और मैंने कह दिया— बहुत अच्छा। मेरे दिमागमे यह

वे निरपराध बताकर छोड़ भी दिये गये। इसतरह लोगों-को व्यर्थ ही तङ्ग किया गया। उनकी जमानते लेनेकी भी उचित व्यवस्था नहीं की गयी। कई स्थानोंमें केवल इसी लिये गिरफ्तारियां की गयीं जिससे अच्छा असर उत्पन्न हो। कई प्रतिष्ठित व्यक्ति पहले गिरफ्तार किये गये पीछेसे छोड़ दिये गये। कुल ७८६ आदमी गिरफ्तार किये गये और उनपर कभी मामला ही नहीं चलाया गया। मार्शल ला कमीशनोंने जो दण्ड दिये वे पीछेसे बहुत ज्यादा कम कर दिये गये इससे यही अनुमान होता है कि पहले बहुत ज्यादा कड़ाई की गयी थी।

नवाबियाँ ।

दसवां अध्याय ।

अमृतसर ।

बेलीरामकी धर्मपत्नी हरकुंवरका बयान ।

१० अप्रेलको दिनके ११ बजे मेरा लड़का गुरनदत्त घरसे रेलवे स्टेशनको गया। वह एक सम्बन्धीके यहां होशियारपुर जिलेकी ओर जानेवाला था। जब वह रेलवे पुलसे गुजर रहा था उसे एक गोली लगी। वह दुकानपर लाया गया जहांपर वह गोटा बनाया करता था। डा० ईश्वरदासने कई दिनतक उसका इलाज किया। बुआदित्त कान्सटेबल मेरे लड़केके पास आकर पूछने लगा कि टांग क्यों बंधी हुई है। इसके बाद वह लौट गया और अपने साथ कई कान्सटेबल लाया जिन्होंने मेरे लड़केको खूब पीटा और उसे पुलिस थानेमें ले गये। पीछेसे वह अस्पतालमें भेज दिया गया जहांपर वह १५ दिन रहा। वहांसे कोतवाली भेजा गया वहांपर २२ दिन रहा।

[illegible] मेरी [illegible] सर्वसम्मतिसे, [illegible] [illegible]। मेरा पुत्र [illegible] परिवारका पालन [illegible] करता था। उसकी मृत्युके कारण हम लोग सर्वथा निस्सहाय हो गये हैं।

ला० ज्ञानचन्दके पुत्र ला० मन्दारामका बयान।

दिनके १२ बजे मुझे खबर मिली कि डा० सत्यपाल और किचलूको देश निकाला हुआ है। उस समय लोग अपनी अपनी दुकानें बन्द कर रहे थे। मैं भी उस दिन कोई काम न कर भीड़में शामिल हो गया और हाल बाजार की तरफ गया। वहांसे मैंने बहुतसे आदमी डिप्टी कमिश्नरके बंगलेकी ओर जाते देखे जो नेताओंकी मुक्तिकी प्रार्थना करने जा रहे थे। पुलपर टेम्पके खम्भेके पास मैंने युरोपियन और गोरखे खड़े देखे। एक सिख सज्जन लोगोंसे लौट जानेको कह रहे थे। मैं कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि मेरी जांघमें एक गोली लगी। मेरे चार गोलियां लगीं। मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। मैं अस्पताल भेजा गया और वहां मेरी टांग काट डाली गयी। मेरा चालान भी किया गया था, परन्तु पीछेसे मुझसे कह दिया गया कि मैं छोड़ दिया गया हूं। मेरे एक अन्धी मा है और मेरे लड़के भाईका परिवार है जिसमें चार लड़कियां और एक लड़का है। मेरी [illegible] पूछे बिना काट डाली गयी।

लाला ज्ञानचन्दका बयान।

मैं ट्रंक बेचने वाले एक व्यापारीके यहां नौकर हूं। १० अप्रेलको दिनके ११ बजे मैं अपने घरमें था जब कि मुझे डा० सत्यपाल और किचलूकी गिरफ्तारीकी खबर मिली। मैंने अपनी दुकानमें आकर देखा कि लोग अपनी अपनी दुकानें बन्द कर हाल दरवाज़ेकी तरफ जा रहे हैं। मैं भी रवाना हुआ। हाल बाजारमें किसीने कहा कि डिप्टी कमिश्नरके पास जाकर फरियाद करनी चाहिये। जब लोग पुलके पास पहुंचे तो वहां युरोपियन दिखायी दिये जो घोडे पर सवार थे। भीड़में किसीके पास छड़ी तक न थी। सब लोग नङ्गे शिर थे। जब लोगोंसे वापस चले जानेको कहा गया तो सब बैठकर छाती पीटने लगे। लोग फिर खडे हुए। उनपर गोली चला दी गयी। सब आदमी भागने लगे। मैं भी भागा। दो आदमी घायल होनेके कारण भीडद्वारा डाकृर बसीरके यहां पहुचाये गये। मैं अपने घर लौट आया। ११।१२ अप्रेलको मैं घरसे बाहर नहीं निकला। १३ अप्रेलको मैंने ढिंडोरा पिटते सुना कि ला० कन्हैयालालके सभापतित्वमें जलियावाला बागमें सभा होगी। मैं ३॥ बजे बागमें पहुचा। ४॥ बजे सभाके ऊपर एक हवाई जहाज उड़ता दिखायी दिया। हंसराजने लोगोंसे कहा कि डरकी कोई बात नहीं है। आध घण्टेके बाद मैंने अपने पासके लोग भागते देखे। मैंने गोलियोंकी आवाज भी तुरन्त ही सुनी। गोलिया चलानेके पहले किसी तरहकी सूचना नहीं दी गयी थी। जब मैं

घायल और मरे देखे। मेरी दाहनी आंखमे चोट लगी। एक गोली छातीमे भी लगी। मुझे २५ दिनतक इलाज कराना पड़ा और दाहनी आंख निकलवा देनी पड़ी। जबतक मैं होशमे रहा मैने बहुतसे आदमी मरे और घायल पड़े देखे।

विधवा रतनदेवीका बयान।

मेरा मकान जलियावाला बागके पास ही है। जब गोली चली मै अपने ही मकानमे थी। मैं उस समय लेटी हुई थी। मै तुरन्त ही उठी क्योंकि मेरा पति बागमे गया हुआ था इससे मुझे चिन्ता हुई। मै रोने लगी और अपने साथ दो स्त्रियोको लेकर बागमे गयी। वहा मैने लाशोंके ढेर देखे। मैं अपने पतिको ढूंढने लगी। लाशोको ढूंढते ढूंढते मुझे अपने पतिकी लाश मिल गयी। राहमे मुझे लाशे और खून ही खून दिखायी दिया। कुछ समयके बाद डा० सुन्दरदासके दो लड़के आये और उनसे मैने कहा कि मेरे पतिकी लाश उठानेके वास्ते एक चारपाई चाहिये। दोनो लड़के घर गये और मैंने दोनो स्त्रिया भी भेज दी। इस समय आठ बज गये थे। कोई आदमी अपने घरसे बाहर निकलनेकी हिम्मत नहीं करता था क्यो कि बड़ी बज चुकी थी। मै रोती बैठी रही। ८॥ बजे एक सिख सज्जन आये। और आदमी भी लाशोंके बीच न जाने क्या देख रहे थे। मै उन्हे नहा प पहचान सकी। मैने सिख महाशयसे कहा कि आप मुझे मदद दे जिससे मै अपने पतिकी लाश किसी सूखी जगहमे रखू। यह

अदालत बन्द कर दी। मैं डिस्ट्रिक्ट कोर्टमें जाने लगा परन्तु मुझे पता लगा कि अदालतें बन्द हो गयी हैं। मुझे यह भी खबर मिली कि नेशनल बेंकमें आग लगा दी गयी है। मैं अपने घर पहुंचा और १३ अप्रेलके ११ बजे तक घरमें ही रहा। १३ को मैं जली हुई इमारतें देखनेको निकला। घर लौटने पर मुझे मालूम हुआ कि मार्शललाकी घोषणा कर दी गयी है। शामको मैंने जलियावाला बागमें गोली चलनेकी खबर सुनी। ११ अप्रेलसे २२ अप्रेल तक अदालतें बन्द रहीं। लोग वे रोक टोक गिरफ्तार किये गये। जिस दिन अदालत खुली सब वकील वैरिस्टर जनरल डायरके सामने बुलाये गये। जनरल ने सबके सामने उर्दूमें व्याख्यान दिया। उन्होंने बड़े अपमानजनक ढङ्गसे व्याख्यान दिया। उन्होंने स्पेशल कान्सटेबल बनाये जानेकी भी सूचना दी। हम लोगोंको वेतकी सजा देखनी पड़ी जिसे मैं जन्म भर नहीं भूल सकता। मैंने आदमीको नङ्गे बदन टिकटिकीसे सटा हुआ देखा। उसके खूब जोरसे वेत लगाये गये। जब एकके लग चुके तो उसकी जगह पर दूसरा लाया गया। जब मैं इस भयानक दृश्यको न देख सका तो जरा हट गया। मुझे आदमीकी चिल्लाहट तब भी सुनायी दे रही थी। स्पेशल कान्सटेबलोंके ऊपर लेफ्टनेण्ट न्यूमेन नियुक्त किये गये थे। उनका बर्ताव हम लोगोंके साथ बड़ा बुरा था। वह लोगोंको गालियां दिये बिना भी नहीं चूका। स्पेशल कान्सटेबलोंको

मन्दिर और पिञ्जरापोलपर बैठे हुए कबूतरोंको मारकर खा जाते थे।

अन्धे कहानचन्द नाईका बयान।

मैं २० वर्षसे अन्धा हूं। कूचा कुरीछनमे मैं भोजन किया करता था। १८ अप्रेलको जब मैं अपनी लकड़ीके सहारे रास्ता खोजता हुआ जा रहा था पुलिसमेनोंने मुझे रोका। जब मैंने उनसे प्रार्थना की कि मुझे जाने दीजिये तो उन्होंने कहा कि यदि तुम जाना चाहते हो तो पेटके बल रेंगकर जाओ। मैंने कहा कि मैं दो दिनसे भूखा हूं। इसपर भी मुझेजाने की आज्ञा नहीं दी गयी। मुझे पेटके बल रेंगनेके लिये बाध्य होना पड़ा। थोड़ा दूर चलनेके बाद मुझे ठोकर लगायी गयी। मेरे हाथसे लकड़ी गिर गयी। [illegible] बढ़ा और लोगोंसे मांगनेके लिये [illegible] परन्तु किसीने नहीं दिया क्योंकि सब डरे हुए थे।

पेन्शनर ला० रलियाराम[illegible]का बयान.

मुझे चारा लाना था। मैं स्वेच्छासे कभी नहीं देखा। गोरे ड्योढ़ी पर डटे जाते रहे और नहीं न आनेसे वह कई दिन तक वहां पड़ा रहा। गोरे कुए पर भी डटे जाते थे। अन्तको एक दिन मैं रातको अपने मकानसे अपनी गाय लेकर चला गया और उस समय तक न लौटा जब तक कि गोरोंका पहरा न हट गया। मेरी स्त्री अपनी मांके घर गयी थी।

बेत लगाये गये। वह फिर भी बेहोश हो गया, परन्तु उसे बेहोश देखकर भी गोरे उसके बेत लगवाने चले गये जबतक कि तीस बेत न लग चुके। वह टिकटिकीसे जब अलग किया गया तो उसके खून निकल रहा था और वह बेहोश था। उसके बाद मेला बांधा गया और उसके बेत लगाने शुरू हुए। चारपांच बेत खाकर वह भी बेहोश हो गया। उसे पानी दिया गया और बेत लगाना जारी रहा। मगतूके भी तीस बेत लगाये गये। जब मगतूके बेत लग रहे थे मैं बड़े जोरसे चिल्लाया क्योंकि मुझसे वह भयानक दृश्य देखा न गया और मैं स्वयं बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तो मैंने दं लड़कोंको खूनसे सना देखा। उनके हाथ बांधे गये और जब वे चल नहीं सके तो पुलिसने उन्हें घसीटा। वे किलेको भेजे गये।

गुरनदित्तकी विधवा जमनादेवीका बयान।

मेरा जेठ मेलाराम इस लिये गिरफ्तार किया गया कि उसने मिस शेरवुड पर चोट करनेमें भाग लिया था। वैसाख महीनेके सातवें दिन वह घरसे बाहर घी लेने गया था। जब वह लौटा तो उसने मुझसे कहा कि मुझे सुन्दरसिंह चौधरीने बुलाया है। वह उनके पास गया और कोतवाली भेज दिया गया। वह आठ दिन तक किलेमें रखा गया। इसके बाद वह कूचा कुरछिनमें लाया गया और उसके ३० बेत लगाये गये। जब उसके बेत लगे मैं भी वहां खड़ी थी। और भी बहुतसे आदमी मौजूद थे और सिपाही भी वहां थे। उसके इतनी निर्दयतासे

बेत लगाये गये कि वह बेहोश हो गया। मैं तो रो रही थी और सिपाही हंस रहे थे। और भी पांच लड़कोंके बेत लगाये गये। बेत लग चुकने पर जब मेलाराम नहीं चल सका तो वह घसींटा गया। हमारे बाजारमें आठ नौ दिन तक सिपाहियोंका पहरा रहा। दिनमें कोई बाहर न निकल सकता था। यदि कोई निकलता था तो उसे पेटके बल रेंगना पड़ता था। मेलारामको भी एक दिन पेटके बल रेंगना पड़ा था। मुहल्लेमें सबके दरवाजे बन्द रहते थे और साफ करनेके लिये मेहतर न आता था। गोरे कबूतरोंको मार कर मेरे दरवाजेके सामने एक चबूतरे पर उन्हें भून कर खा जाया करते थे।

कटरा धरमपुराके कूंजड़े अबुल अजीज उर्फ हाजीका बयान।

हड़ताल शुरू होनेके दिनसे दो तीन दिन बाद एक खानसामा मेरे यहां साग खरीदने आया। वह बिना दाम दिये जब चलने लगा तो मैंने उससे कहा कि ऐसा क्यों करते हो। उसने कहा कि तुम जानते नहीं मैं जनरलका खानसामा हूं। मैंने कहा कि जनरलने मुफ्तमें किसीकी चीज लेनेको न कहा होगा इस पर वह शाक फेंक कर मुझे गालियां देने लगा। वह फिर चला गया। मैं समझता हूं कि उसने जनरलसे मेरी रिपोर्ट की। दूसरे दिन ला० दुनीचन्द एम० ए० मेरी दुकान पर आकर पूछने लगे कि क्या मैंने किसी खानसामेको गाली दी है। मैंने कहा,

नहीं। उन्होंने कहा कि झगड़ेके समय क्या कोई और आदमी भी मौजूद था। मैंने कई आदमियोंके नाम बता दिये। जाजा-जीने उन सबसे पूछा तो उन्होंने कहा कि खानसामेने ही गालियां दीं। उसे किसीने गाली नहीं दी। दिनके ३ बजे सब इन्सपेक्टर अजीजुद्दीन ला० दुनीचन्दके मकान पर पहुंचे। मैं उस समय मसजिदमें नमाज पढ़ने गया था। मेरे नौकरने कहा कि सब इन्सपेक्टरने तुम्हें ला० दुनीचन्दके मकान पर बुलाया है। मैं वहां गया और जो बात थी सच सच कह दी। सब इन्सपेक्टरने गवाहोंको बुलाया और उन्होंने मेरी बातकी पुष्टि की, सब इन्सपेक्टर मुझे और गवाह छीनाको अपने साथ पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टके यहां ले गये। वहां मैं गिरफ्तार कर लिया गया और रात भर हाजतमें रहा। दूसरे दिन मैं जनरलकी अदालतमें भेजा गया। वहां छीना भी था। उसने कहा कि हाजीने खानसामाको गालियां दीं। मैंने उससे कहा कि क्यों झूठ बोलकर अपना ईमान खोते हो। इस पर उसने कहा कि मैं लाचार हूं। मुझे अपनी जान बचानी है। जनरलके सवालोंका मैंने ठीक ठीक उत्तर दिया परन्तु मेरे १० बेत लगाये जानेका हुक्म दिया गया और मेरी दुकान १४ दिनोंके लिये बन्द की गयी। बेत खाकर मैं कई दिन बीमार रहा। मेरी दुकान भी १४ दिन बन्द रही।

मुसम्मात लछमन कुंअरका बयान ।

मेरा मकान उसी गलीके पास है जहांपर कि मार्शल लाके दिनोंमें गोरोंका पहरा बिठाया गया था । एक दिन उस गलीमें जनरलने आकर सब लडकोंको बुलाया और कहा सलाम कर भाग जाओ । लड़कोंने वैसा ही किया । इसके बाद गोरोंका पहरा बैठा दिया गया । जिस समय पहरा बैठा हम लोगोंके आदमी बाहर थे । गोरोंने सभी स्त्रियोंको डराना तंग करना शुरू किया । वे सबसे पूंछते थे कि बताओ मिस साहबपर किसने चोट की । मेरे नौकरको भी पीटा गया मैं पर्दानशीन हूं । मैं अपने नौकरोंके सामने भी नहीं निकलती, परन्तु मैं अपने मकानसे बुलायी गयी । मैं पर्दा डालकर पहुंची, परन्तु मुझे हुक्म दिया गया कि पर्दा हटा दो । मैंने डरकर पर्दा हटा दिया । इसके बाद मुझसे पूंछा गया कि मिस साहबपर किसने चोट की । मुझसे कहा गया कि यदि मैं चोट करने-वालेका नाम न बताऊंगी तो मैं सिपाहियोंके हवाले की जा-ऊंगी । मैंने कहा कि मैं किसका नाम झूठ बोलकर दे सकती हूं । जिस समय लोगोंके बेत लगते थे हम लोगोंके दिल उनकी चिल्लाहट सुनकर दहल जाते थे । हम लोगोंको अत्याचार और निर्दयताका नमूना देखना पड़ता था । हम लोगोंके आदमी दफ्तर घर नहीं आये और हम सब स्त्रियोंको अरक्षित अवस्थामें समय बिताना पड़ा । कई दिनतक मुझे न तो भोजन मिला और और न पानी ही मिला ।

ईश्वर कुंअरका बयान ।

जहांपर बेत लगाये जाते थे उस स्थानके सामने ही हम लोगोंका मकान है। जब मैं बेत लगानेका दृश्य नहीं देख सकती थी तो पैठ जाती थी। एक सिक्ख बालकके पहले बेत लगाये गये। पीछेसे वह नङ्गा किया गया। फिर उसके बेत लगाये गये। इसके बाद सभी लड़कोंके नंगे बेत लगाये गये। एक लड़का तीन बार बेहोश हुआ। वह जितनी बार बेहोश हुआ उसे खोलकर उसके मुहमें पानी डाला गया और बेत लगाये गये। यह निर्दयता भयानक थी।

मुसम्मात खेमकुंवरका बयान ।

जिस समय लड़कोंपर बेत पड़े मैं खिडकीसे देख रही थी। लड़कोंके कपड़े उतरवा लिये गये थे। उसे बांधकर उसपर बेत लगाये गये। मैंने लड़केकी चिल्लाहट सुनी थी—अरी मा मर गया। साहब मुझे छोड दीजिये। दस बेत लग चुकनेपर वह छोड़ दिया गया। इसके बाद उसे कुछ चीज खिलायी गयी और फिर उसपर बेत पड़े। वह बेहोश हो गया। साहबके कहनेपर मैंने उसे पीनेके लिये पानी दिया। लड़केके बदनसे खून निकल रहा था। उसके कोई दवा लगायी गयी और फिर उसे कपडे पहना दिये गये। इसके बाद वह हटा दिया गया।

गंगादेवीका बयान ।

गोरोंका पहरा रहनेके कारण हम सब आठ दिनतक अपने ... रहीं। डरके मारे हमने अपने किवाड़ बन्द रखे थे।

यदि हमें शामको खानेको मिल जाता था तो पीनेको पानी नहीं मिलता था। पेतखानेवालोंकी चिल्लाहट हमारे दिलोंके टुकड़े टुकड़े कर देती थी। मेरी लड़की आवाज सुनकर वेहोश हो गयी थी। यदि हम कभी अपनी खिडकियोंसे मुह निकालते थे तो गोरे हमारा अपमान कर देते थे और हमारे मकानोंपर पत्थर फेंकते थे। हम लोगोंको कई दिनतक जल प्राप्त नहीं हुआ।

ब्राह्मणी गंगा देवीका बयान।

चार दिनतक हम लोग अन्न जल विना रहे। चारवर्षकी मेरी लड़की डरके मारे मर गयी। वह बराबर यही चिल्लाया करती थी, मा वे गोरे कबूतरोंको मारने आ रहे हैं। मुझे भी मार डालेंगे। उसे बुखार आ गया। हम लोग मकान छोडकर चले गये परन्तु लडकीका डर नहीं गया और वह आठवें दिन मर गयी। मैंने अपनी आखो लोगोंको पेटकेबल रेंगते देखा। हमारे मकानोंपर पत्थर बरसाये गये। इस बातकी परवा नहीं की गयी कि किसको चोट लगी। मैंने लडकोंको बेत लगते देखे। मैं नहीं बता सकती कि मेरी उन्हे देखकर क्या दशा हुई।

उत्तम देवीका बयान।

गोरोंके डरके मारे हम लोग आठ दिनतक अपने अपने मकान नहीं छोड़ सके। आठ दिनतक शाक भी नहीं खरीदा गया। गर्मीके दिनोंमें हम लोगोंको पानीके विना ही रहना पड़ा। लड़कोंके बेत लगनेपर जब वे बुरी तरहसे चिल्लाते थे तो हमें अपने किवाड़ बन्द कर लेने पडते थे क्योंकि उनका रोना सुना नहीं

भेजा गया। वहापर मैंने बहुतसे आदमी गिरफ्तार देखे। इन्स-पेक्टर अब्दुल्लाने मुझसे कहा कि तुम अपनेको छूटा हुआ समझो। परन्तु कुछ मशहूर आदमी गिरफ्तार कराओ। मैं छोड दिया गया और अपने घर पहुचा। वहांपर फिर गिरफ्तार किया गया। मैं फिर छोड दिया गया, परन्तु फिर तीसरी बार गिरफ्तार हो गया। मुझे थानेमे यहातक पीटा गया कि मुझे पेशाव हो गयी। मेरा पाजामा खुला दिया गया और मैं जूतों और बेतसे पीटा गया। मैंने चिल्लाकर कहा कि आप लोग क्या चाहते हैं। मेरी दाढी हिलायी गयी और मुझसे कहा गया कि सत्यपाल किचलू का नाम दङ्गेके सम्बन्धमे लो। मैंने कहा कि मैंने तो किचलूको अपनी आखसे देखा भी नहीं। इस पर मैं फिर पीटा गया। मैं फिर बेहोश हो गया। मुझे होश आने पर मैं कोतवाली भेजा गया। वहा मैं दिनके ४ बजे तक रहा। वहा भी मैं बुरी तरह-से पीटा गया। इसके बाद मेरे पेशाबके स्थानसे लकडी घुसेड़ी गया। मैं दर्दकी वजहसे बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तो मैंने कहा कि मुझ पर रहम करो। आप लोग जैसा कहेंगे मैं वैसा ही कह दूगा। इस पर रातको मुझे दो कान्स-टेबलोंके साथ घर जानेकी आज्ञा हुई। मैंने घर पहुचकर भोजन किया और कान्सटेबलोंके साथ फिर आनेकी राह ली। पुलिस स्टेशनतक मुझे नमाज पढनेको छुट्टी दी गयी। रातको मैं थानेदारके बरामदेमें नङ्गे फर्शपर सोया। सबेरे मुझसे कहा गया कि क्या तुम्हें कलकी बात याद है। मैंने कहा कि मैं

अपनी जान दे सकता हूं, परन्तु झूठ नहीं बोल सकता। इसपर मुझे खूबही गालियां दी गयीं। मै फिर थाने भेजा गया और वहा झूठा बयान देनेके लिये मुझपर दबाव डाला गया। कहा गया कि यदि ऐसा न करोगे तो फांसीपर लटका दिये जाओगे। फांसीकी धमकी सुनकर मैं डर गया और मैंने झूठा बयान दिया। पुलिस सब इन्सपेक्टर जो बातें लिख रहा था वे मुझसे स्वीकार करा ली जाती थीं। इसके बाद एक अफसर आया और उसने मुझसे प्रश्न किया कि क्या ये तुम्हारे बयान हैं। मैंने कहा नहीं। उसने मुझसे कहा कि क्या यह तुम्हारी सही है। मैंने कहा हां। इस पर उसने मुझे फटकारा और कहा कि बयान देकर बदलते हो। मुझसे कहा गया कि यह मजिस्ट्रेट है। मजिस्ट्रेटने भी मुझे गालियां दीं। उसने मेरे सामने कहा कि किचलूके समान आदमी फांसी पर लटका दिये जाने चाहिये। मैंने झूठे बयान पर सही कर दी और मैं छोड़ दिया गया।

पुलिसने मुझे जिस ढङ्गसे तङ्ग किया उसे अब भी जब कभी मैं याद करता हूं तो यही कहता हूं कि खुदा मेरे दुश्मनोंको भी इतनी तकलीफ न दे। अपना बयान देनेके तीन चार दिन बाद मैं बीमार पड गया। मेरे मुंहसे खून निकला और मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरे शरीरके टुकड़े टुकडे हो गये हैं। बड़े जोरका बुखार आनेसे मैं बेहोश रहा। मेरे रिश्तेदार मेरी जिन्दगीकी आशा ही छोड चुके थे। २० दिनमें मैं अच्छा हुआ परन्तु कम-[illegible] ज्यादा थी। दो आदमी मुझे पकडकर बैठाते थे। इसी

हालतमें एक पुलिसमेन मेरे पास आया और मुझसे कह गया कि तुम्हें थानेमें बुलाया है। मैं चुप रहा। दो दिनके बाद फिर एक कान्सटेबल मुझे बुलानेके लिये आया। मैं उस समय भी कमजोर था। कान्सटेबल मेरी हालत देखकर चला गया। एक दिन फिर एक कान्सटेबल एक कागज लेकर मेरे यहां आया और मेरा नाम जोरसे लेने लगा। मेरे घरवालोंने कह दिया कि मैं बहुत बीमार हूं इससे बाहर नहीं निकल सकता। उसने कहा कि मुझे सही करानी है। वह मुझसे सही करा ले गया कि ११ जूनको पुलिस स्टेशनमें तुम्हें हाजिर होना होगा। दूसरे दिन हुक्म मिला कि ६ मईको ४ बजे थाने पहुंचो क्योंकि १० मईको सब लाहोर जायेंगे। मैंने सही कर दी थी। मैं ६ मईको थानेके लिये रवाना हुआ और थानेमें पहुंचकर मैंने सब इन्सपेक्टर अमीरखांको सलाम किया। उसने मुझे गालियां देकर कहा कि इतनी देरसे क्यों आये। सब लोग स्टेशनपर चले गये हैं। मैं तांगेपर अपने लड़केके साथ स्टेशनकी तरफ दौड़ा। वहां मैं सब इन्सपेक्टरको पा गया। मुझसे टिकट खरीदनेको कहा गया मेरे लड़केने टिकट भी न खरीद पाया था कि गाड़ी छूट गयी। १० मईको पुलिसकी आज्ञानुसार मैं लाहोरमें गवाही देने गया। उस दिन मेरी गवाही नहीं हुई। दूसरे दिन छुट्टी थी। इसीसे मैं अमृतसर वापस चला आया। सब इन्सपेक्टर पुलिसने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हें अपना बयान याद है। मैंने कह दिया कि याद है। मैं १२ मईसे १८ मईतक बराबर हाजिर हुआ और

मुझे हवालात अपना बयान लुकाना पड़ा । १८ तारीको मेरी पेशी हुई । पेशीके पहले मुझसे पुलिसने कहा कि इतनी बात भूलना नहीं । जजोंके सामने जो सच्ची बातें [illegible] उनपर उन्होंने जरा भी ध्यान न दिया और मुझे डराने लगे । उन्होंने मेरी एक भी बात न सुनी और न लिखा । [illegible] बुरा [illegible] गया तो मुझे हुक्म मिला कि इसके लिए [illegible] । मेरे बाहर निकलनेपर पुलिसने मुझे पकड़ लिया और मुझसे कहा गया कि तुम्हारी जान ली जायेगी । मैं [illegible] । इसपर मेरे मुंह पर तमाचा मारा गया । इसके बाद मुझे जाने दिया गया । दूसरे दिन जजोंने मुझसे पांच सौकी जमानत मांगी और मैं पुलिसके हवाले किया गया । पुलिसने मेरे साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया । मैं जमानत देकर अमृतसर लौट आया । पुलिसने मुझे उस दिनसे तङ्ग कर रखा है और मैं उससे तङ्ग आ गया हूं ।

जमींदार हाजी शमसुद्दीनका बयान ।

मेरे अमृतसरमें १६ मकान हैं और मेरे पास जमीन भी है । मार्शललाके दिनोंमें मैं कई बार पुलिस स्टेशनमें बुलाया गया और मेरा भतीजा भी बुलाया गया । एक दिन पुलिसने गुलाम जिलानीको बहुत बेरहमीके साथ पीटा था और उसकी इन्द्रियमें लकड़ी कर दी गयी थी । उसका रोना बड़ा ही हृदय विदारक था । दूरसे उसकी आवाज सुनायी देती थी । बुर्का एक पर्दानशीन औरत बाहर थी । वह इस आवाजको

सुनकर चिल्लाने लगी। पुलिसने उसे मार भगाया। पुलिसने खैरदीनकी इन्द्रियमें भी लकड़ी कर दी। मैंने उसे पेशाब करते देखा। हम लोगोंसे कहा गया कि जो गवाही न देंगे उनके साथ ऐसा ही बर्ताव किया जावेगा। पुलिसको उन दिनों खुदा या इन्सान किसीका भय न था। खैरदीन तो पुलिसके अत्याचारसे दुखी होकर कुछ दिनोंमें मर गया। मैंने डर कर किसी तरह पुलिससे बन्दोबस्त कर लिया और मैं फिर नहीं बुलाया गया।

पुलिससे बुरी तरह पिटते देखा। मुझसे कहा गया कि पुलिस उससे यह बात स्वीकार कराना चाहती है कि मैंने प्लेटफार्म इन्सपेक्टरको कत्ल किया है या वह और किसी दूसरे आदमीका नाम ले दे। वह इसी लिये पीटा गया क्योंकि वह झूठा बयान नहीं देना चाहता था और न किसी निरपराध मनुष्यको ही फसाना चाहता था। वह पेटके बल जमीनपर लेटाया गया और उसके ठोकरें लगायी गयी। उसे हुक्म दिया गया कि वह अपने हाथ चारपाईके पैरोंके नीचे करे जिस चारपाईपर तीन चार आदमी बैठे हुए थे। इसके बाद वह खूब पीटा गया। उसका पेट चोट खानेके कारण फूल गया। मेरा भाई पुलिसके कारण तङ्ग आकर कुएमें कूद पडा और वह कुएसे निकाला जाकर रेलवे थानेमें भेजा गया। मैं उसे देखने गया तो बरामदेमें लेटा पाया। मेरे भाईने कहा कि पुलिसने मुझे इतना तङ्ग किया था कि अत्याचारोंको असह्य समझ मैं आत्महत्या करनेकी इच्छासे कुए में कूदा था। मेरा भाई कई डाक्टरोंका इलाज होनेपर भी आखिरको मर गया।

रेलवे कर्मचारी पूरनचन्दका बयान।

पुलिसने मुझे प्लेटफार्म इन्सपेक्टरकी हत्याके सम्बन्धमें और कई रेलवे कर्मचारियोंके साथ बुलाया था। हम लोग धूपमें खडे किये गये। इसके बाद जमीनमें बिठा कर हम लोगोंसे अपने अपने कान खिंचाये गये। स्कूलके बच्चोंकी तरह टाङ्गोंसे निकाल कर हमने कान खींचे। हम लोग हर रोज पीटे गये

और तरह तरहसे हमारा अपमान किया गया। चार दिनके बाद हम लोगोंमेंसे प्रत्येक आदमी चन्द्रभान वड्डामलके बगीचेमें बुलाया गया और वहा वह नङ्गाकर जमीनमें लेटाया गया। एकएक मोटा सार्जेण्ट उसपर घूँटता था और दूसरा आदमी जूतोंसे पीटता था। जो पिट चुकता था वह २० तीस गज दूर बिठाया जाता था। मेरे बाद चार आदमियोंकी यही दशा हुई। मुझे एक कमरेमें बुलाया गया और वहा मेरे हाथोंपर गर्म जलता हुआ कोयला रखा गया। दो मिनटतक कोयला मेरे हाथमें रहा और मैं बेहोश होने लगा। इसपर कोयला उठा लिया गया और मुझसे पूंछा गया कि सार्जेण्टकी हत्या किसने की। इसके बाद मैं अलग बिठा दिया गया। मैं चार दिन और बुलाया गया। इसके बाद छोड दिया गया। मेरे हाथमे अबतक दाग बना हुआ है।

खपरखाड़ी तहसील अमृतसरके जीवनसिंहका बयान.

मार्शल लाके दिनोंमें जब बैसाखी मेलेके बाद मैं अपने गांवमें लौटकर आया तो मैं थानेमें बुलाया गया। मुझसे कहा गया कि जो ये सात आदमी गिरफ्तार हैं इनके सम्बन्धमें यह बात कहो कि इन लोगोंने रेलवे लाइन तोड़नेके लिये मेरी दुकानपर षड्यन्त्र रचा था। मैंने कहा कि यह बात तो बिलकुल ही झूट है। जब मैंने झूठ बोलनेसे इन्कार किया तो मेरी दाढ़ी नोची गयी। मेरे घूंसे भी लगाये गये। मैं कान्सटेबलोंके सुपुर्द

पुलिससे बुरी तरह पिटते देखा। मुझसे कहा गया कि पुलिस उससे यह बात स्वीकार कराना चाहती है कि मैंने प्लेटफार्म इन्सपेक्टरको कत्ल किया है या वह और किसी दूसरे आदमीका नाम ले दे। वह इसी लिये पीटा गया क्योंकि वह झूठा बयान नहीं देना चाहता था और न किसी निरपराध मनुष्यको ही फसाना चाहता था। वह पेटके बल जमीनपर लेटाया गया और उसके ठोकरें लगायी गयी। उसे हुक्म दिया गया कि वह अपने हाथ चारपाईके पैरोंके नीचे करे जिस चारपाईपर तीन चार आदमी बैठे हुए थे। इसके बाद वह खूब पीटा गया। उसका पेट चोट खानेके कारण फूल गया। मेरा भाई पुलिसके कारण तङ्ग आकर कुएमें कूद पड़ा और वह कुएंसे निकाला जाकर रेलवे थानेमें भेजा गया। मैं उसे देखने गया तो बरामदेमें लेटा पाया। मेरे भाईने कहा कि पुलिसने मुझे इतना तङ्ग किया था कि अत्याचारोंको असह्य समझ मैं आत्महत्या करनेकी इच्छासे कुए में कूदा था। मेरा भाई कई डाक्टरोंका इलाज होनेपर भी आखिरको मर गया।

रेलवे कर्मचारी पूरनचन्दका बयान।

पुलिसने मुझे प्लेटफार्म इन्सपेक्टरकी हत्याके सम्बन्धमें और कई रेलवे कर्मचारियोंके साथ बुलाया था। हम लोग धूपमें खड़े किये गये। इसके बाद जमीनमें बिठा कर हम लोगोंसे अपने कान खिचाये गये। स्कूलके बच्चोंकी तरह टाङ्गोंसे कर हमने कान खींचे। हम लोग हर रोज़ पीटे गये

और तरह तरहसे हमारा अपमान किया गया। चार दिनके बाद हम लोगोंमेंसे प्रत्येक आदमी चन्द्रभान वट्टामलके बगीचेमें बुलाया गया और वहा वह नङ्गाकर जमीनमे लेटाया गया। एकएक मोटा सार्जेण्ट उसपर बैठता था और दूसरा आदमी जूतोंसे पीटता था। जो पिट चुकता था वह २० तीस गज दूर बिठाया जाता था। मेरे बाद चार आदमियोंकी यही दशा हुई। मुझे एक कमरेमें बुलाया गया और वहा मेरे हाथोंपर गर्म जलता हुआ कोयला रखा गया। दो मिनटतक कोयला मेरे हाथमें रहा और मैं वेहोश होने लगा। इसपर कोयला उठा लिया गया और मुझसे पूंछा गया कि सार्जेण्टकी हत्या किसने की। इसके बाद मैं अलग बिठा दिया गया। मैं चार दिन और बुलाया गया। इसके बाद छोड़ दिया गया। मेरे हाथमे अबतक दाग बना हुआ है।

खपरखाड़ी तहसील अमृतसरके जीवनसिंहका बयान.

मार्शल लाके दिनोंमें जब बैसाखी मेलेके बाद मैं अपने गांवमे लौटकर आया तो मैं थानेमें बुलाया गया। मुझसे कहा गया कि जो ये सात आदमी गिरफ्तार हैं इनके सम्बन्धमें यह बात कहो कि इन लोगोने रेलवे लाइन तोड़नेके लिये मेरी दुकानपर षड्यन्त्र रचा था। मैंने कहा कि यह बात तो बिलकुल ही झूट है। जब मैंने झूठ बोलनेसे इन्कार किया तो मेरी दाढ़ी खींची गयी। मेरे घूसे भी लगाये गये। मै कान्स्टेबलोंके सपुर्द

कर दिया गया और उनसे कहा कहा गया कि इसे ठीक कर दो। मैं पेटके बल रेंगाया गया। मुझे अपने हाथ पीठपर लपेटकर रखने पड़े। मैं एक मीलके मैदानमें उस तरह शामको ८ बजेसे ९ बजेतक रेंगाया गया। मेरे ठोकरें भी लगायी गयीं और मेरे बेत लगाये गये। जब कभी मैं एक मिनटको फिर भी रुका या पीठपरसे अपने हाथ उठाये मैं पीटा गया। मेरे खून भी निकलने लगा। प्यास लगनेपर मुझे पीनेके लिये पानी भी नहीं दिया गया। चार दिनके बाद मैं छोड़ दिया गया। आठ दिनके बाद एक और आदमी भी पेटके बल चलाया गया। मैं फिर पकड़ा गया और चार महीने हाजतमें रखा गया। मैं लाचार होकर झूठा बयान देनेको तैयार हो गया। उसका बयान इतना सही था कि सभी अभियुक्त छोड़ दिये गये।

रामबाग दरवाजेकी बलाम्बनका बयान।

मार्शल लाके दिनोंमें मैं अन्य कइयोंके साथ गिरफ्तार की गयी थी। मुझसे कहा गया कि बैंकका लूटा हुआ सब सामान लौटा दो। पत्ता राम्भी और रानीसे भी यही कहा गया। हम लोगोंके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया गया। पुलिसने मुझसे मेरा पाजामा खुलवाया। मेरा [illegible] भी बुलाया गया। सब पुलिसमैन हम लोगोंको नङ्गा देखकर हंसते हुए। रातके दस बजे हमें घर जानेको कहा गया और सबेरे ६ बजे फिर हाजिर होना पड़ा। हम लोगोंकी इन्द्रियमें लकड़ी घुसेड़ी गयी। पांच दिनतक इसी तरह हमें तङ्ग किया गया। हम

लोगोंसे रुपया लेकर हमें छोड़ा गया। मुझसे ४०) रानीसे २०) सालीसे २०) रुकथालन, पन्ना और मेरी बहन गिरोअनको ३०) देने पड़े और लड़कियोंसे भी इसी तरह रकमें ली गयीं।

कटरा अहलूवालियाके १६ व्यापारियोंका सम्मिलित बयान।

मार्शल लाके दिनोंमें हम लोगोंको हर रोज पुलिस स्टेशनमें हाजिरी देनेका हुक्म हुआ था। तमाम दिनमें हमें दो घण्टेकी छुट्टी मिलती थी। हम लोगोंको हुक्म हुआ था कि थानेमें चमो कर्मचारी भेजो जिनमें कि सात आठ वर्षके लड़के भी शामिल थे। हम लोगोंसे कहा गया कि एलायन्स बैंकके मैनेजरको तथा मारनेवालेका नाम बताओ। हम लोगोंको धमकी दी गयी कि न बतानेसे तकलीफ उठानी होगी। जब हम लोग किसीका नाम न बता सके तो कड़ी धूपमें पांच घण्टेतक खड़े रखे गये और जलती ज़मीनपर बैठनेको कहा गया। पन्द्रह दिन पुलिस अफसर सुखासिंह हमारे बाजारमें आये।

नहानेका हुक्म हुआ । जब अपने धर्मकी दृष्टिसे हम लोग ऐसा न कर सके तो हमें भूखा ही रहना पड़ा । गर्मी, भूख और प्यास असह्य थी । आठ बजे हम लोग छोड़े गये । हममें ऐसे बहुतसे आदमी थे जिन्होंने लड़ाईमें काफी चन्दा दिया था और जो कई हजार रुपया इनकम टैक्स देते हैं ।

ग्यारहवां अध्याय ।

लाहोर ।

६० वर्षके ला० गणेशदासका बयान ।

मार्शललाके दिनोंमे म्युनिसिपल मार्केटके सामने मेरी दुकानसे २० कदमके फासले पर वेत लगानेके लिये टिकटिकी लगायी गयी थी । मैंने तीन बार वेत लगते देखा । वेत लगाये जानेका दृश्य बड़ा ही भयानक था । जिन लोगोंपर वेत पड़ते थे वे बड़े जोरसे चिल्लाते थे । उनके कपड़े उतरवा लिये जाते थे और वे टिकटिकीसे बांधे जाते थे । युरोपियन चारों ओर खड़े हो जाते थे और कहते थे कि और मारो । और चोट करो । वेत लगाने वाले जेलसे बुलाये जाते थे । जिसके वेत लगते थे वह वेहोश हो जाता था । एक आदमी वेहोशीकी हालतमें मेरी दुकान पर लाया गया था और मैंने उसे दूध पिलाया था । उसके खून निकल रहा था ।

मियां अलाबक्सका बयान ।

मार्शललाके दिनोंमें मैंने लोगा पर बेत पड़ते देखे थे। वह दृश्य बड़ा ही भयानक था। ६० वर्षके बुड्ढे मुसल्मान कन्ट्राक्टरके भी बेत लगने वाले थे। वह इज्जतदार आदमी एक युरोपियन अफसरके वहां आजाने पर बच गया। पहले दिन जिला मजिस्ट्रेट बेत लगानेके लिये हुक्म दे रहे थे। मैंने बहुतसे अंग्रेजों और अंग्रेज स्त्रियोंको हंसते देखा जब कि लोगों पर बेत पड़ रहे थे। एक नाईके १८ बेत लगाये गये। नाईने बड़े जोरसे चिल्ला चिल्ला कर कहा कि हुजूर मा बाप हैं। गरीबों पर रहम करो। हुजूरका नाई हूं। परन्तु इस रोने चिल्लाने पर कुछ भी ध्यान न दिया गया। जब बेत लग चुके तो नाईके खून बहने लगा। उसके चूतरोंका मास निकल आया और चर्बी भी दिखायी देने लगी। और भी कई आदमियोंके बेत लगे। एक लड़केको भी बेत लगाये गये।

सांगावाला शिराजदीनका बयान ।

ले गये। मुझसे कहा गया कि साहबने लिखा है कि तुमने ताँगा ले जानेसे इन्कार किया। मैंने कहा कि मैंने गवर्नरके डरसे ऐसा किया। मुझसे कहा गया कि तुम्हें युरोपियनको कभी इस तरह तङ्ग न करना था। मुझे इस वेतका दण्ड मिला। मुझे नङ्गा कर दस वेत लगाये गये। जेलके मजूरीने मेरे वेत मारे। आठ दस दिनतक मैं काम नहीं कर सका।

फकीराका बयान।

मुझे आठ वेतकी सजा मिली थी क्योंकि अपने एक मित्रसे मिलकर मैं घर लौट रहा था कि राहमें घण्टी हो गयी। मै गिर-फ्तार कर लिया गया। मैं नङ्गा किया गया और एक लङ्गोटी मेरे बांध दी गयी जिसमें कुछ दवा थी। मेरे हाथ पैर बांध दिये गये थे। जेलके एक पठानने वेत लगाये थे। जिस वेतसे मैं पीटा गया वह पहले किसी दवामें डुबा लिया गया था। वेत खाकर मैं दो महीनेतक बीमार रहा। मैं दो महीने तक चारपाईपर लेटा रहा क्योंकि मुझे बैठनेकी शक्ति न थी। मेरे चूतड़ोंपर वेत लगाये गये थे।

क्लर्क ला० जयचन्दका बयान.

मुझ पर सम्राट्के विरुद्ध युद्ध करनेका अभियोग लगाया गया था और मुझे २० वर्षकी सजाका दण्ड मिला था। एक आदमीने जिसे मैं जानता भी न था यह कह दिया कि मैं भीड़में और मेरे हाथमें एक लकड़ी थी। मैं महात्मा गान्धीकी जय

बोल रहा था। असलमें मैं एक डाक्टरको बुलाने गया था क्यो कि मेरी स्त्रीके लड़का पैदा हुआ था और उसकी हालत खराब थी। तीन दिन तक मैं हाजतमें विना कुछ खाये रहा क्यो कि जो कुछ मुझे दिया गया वह खाने योग्य न था। दण्ड-आजा सुनाये जाने बाद हम लोग ऐसे पिजडोंमें रखे गये जिनमें कोई आदमी खड़ा भी नहीं हो सकता था। २० मईको मैं बहुत बीमार पड़ा। मैं अस्पताल नहीं भेजा गया। मैंने पूंछा कि यदि मैं मर गया तो क्या होगा। मुझे जवाब मिला कि तुम्हारी लाश फेंक दी जायेगी।

मालिक मुहम्मद हुसेनका बयान .

वैसाखीके एक दिन पहले मैं किलेमें अपने भाईके ठेकेके अनुसार लकड़िया देकर घर लौट रहा था। राहमें एक सैनिक अफसरने मेरे हण्टर मार कर कहा कि पीछे हटो। मैंने कहा कि मैं घर जा रहा हूं। इस पर उसने फिर एक हण्टर जमाया। मैंने कहा, हुजूर, हण्टर मत लगाइये। इस पर वह फिर तीसरी बार हण्टर मारनेको तैयार हो गया। मैंने बचावके लिये अपना हाथ उठाया। इस पर मैं गिरफ्तार कर लिया गया।

सात दिन तक जेलमे रखा गया। उस पर यह अभियोग लगाया गया कि तुम यह कहते फिरते थे कि गान्धीजीको छोड़ दो और मुझे गिरफ्तार कर लो।

ला० परसरामका बयान.

मैं साढ़े आठ बजे अपनी भैंस दुहनेको निकला था उसपर मै गिरफ्तार कर लिया गया। मैंने कहा कि ग्वाला नहीं आया। बच्चा दूध मागता है इसीसे मै अपनी भैंस दुहने जा रहा था। मेरे शरीरपर उस समय एक लङ्गोटी ही थी। मै उसी हालतमे तमाम शहरमें घुमाया गया। दूसरे दिन मुझे पाच बेत और दस रुपयेके जुर्मानेकी सजा मिली। मेरे खुले मैदान बेत लगाये गये और मेरा अपमान किया गया। मैंने जुर्माना बढ़ानेको कहा था वह नहीं बढ़ाया गया। मेरा नौकर खिड़कीसे लेम्प दिखा रहा था उस पर दस रुपयेका जुर्माना हुआ। वह ६० वर्षका बूढ़ा है।

आर्य समाजके सेक्रेटरी ला० जगन्नाथका बयान।

१७ अप्रेलको एक सी० आई० डी० का आदमी मेरे पास आया और उसने मुझसे कहा कि आपको बाहर इन्सपेक्टर साहब बुला रहे हैं। मैं बाहर निकला और मैंने पाच ६ कान्सटेबल नंगे संगीन लिये खड़े देखे। उनके साथ एक सब इन्सपेक्टर भी था। मुझसे पूंछा गया कि क्या आप आर्यसमाजके सेक्रेटरी हैं। मेरे हां कहनेपर मैं गिरफ्तार कर लिया गया और उसी

समय मेरे हाथोंमें हथकड़ियां डाल दी गयी। मैं अपने घरपर कोई खबर भी न भेज पाया और पुलिस मुझे पकड ले गयी। अकबर दरवाजेके पास मुझे और भी शहरके इज्जतदार आदमी मिले जिनके हाथोंमे हथकड़िया थीं। एकलड्रा असिस्टेंट कमिश्नर मौलाना बरकत अलीके लगड़े गार्द थे। जो अपनी लकड़ीकी टागसे बड़ी कठिनाईके साथ चल सकते थे। हम लोग नार आफिसमे दो घण्टे तक कड़ी धूपमे खड़े रखे गये। इसके बाद जेलकी तरफ रवाना किये गये। धूप बड़ी कड़ी थी और हम लोगोंका पैदल ही चलना पड़ा। हम लोग जेलकी काल कोठ रियोमें रखे गये जहापर कि फासीपर लटकाये जानेवाले अपराधी रखे जाते है। हम लोगोको लोहेका लोटा गन्दी चटाई और कम्बल दिया गया। हम सबको जिस कोठरीमें रहना पड़ता था उसीमें टट्टी भी जाना पड़ता था। रातभर हमे मच्छड सताते थे। रद्दीसे रद्दी भोजन दिया जाता था। रातभर हमे नीद न आती थी। चार दिनतक मैंने कुछ भी नहीं खाया। क्यो कि कोई चीज खाने लायक नहीं दी गयी। मैं केवल चना चबा लेता था और पानी पी लेता था। मेरी गैरहाजिरीमें मेरे मकानकी तलाशी ली गयी। मेरी माता, स्त्री और बच्चोको बड़ी असुविधा हुई क्यो कि घरमे कोई पुरुष न था। जेलसे मैं फिर कोतवाली लाया गया इसके बाद दो तीन आदमियोकी जमानतोंके बाद मैं छोड दिया गया।

अनारदीन नाईका बयान ।

मार्शल-ला जारी होनेके चार दिन बाद मैं एक शादीमें शामिल होगया था। एक दिन धजा नामकलाकी रस्म अदा की जा रही थी कि एक पुलिस सब इन्सपेक्टर पहुंचा और डांटा। हम लोगोंने दरवाजा खोलनेको कहा। जब हम लोगोंने दरवाजा खोला तो ताराचन्दने पूछा कि भीतर क्या कर रहे थे हम लोगोंने कहा कि ताम्बूल दे रहे थे। इसपर हम लोग थानेमें भेजे गये। लड़केके पिताने कहा कि आप लोग इन्हें छोड़ दीजिये और हमें ले चलिये। ये लोग हमारे मेहमान हैं। ताराचन्दने कहा कि सब लोग थानेमें भेजे जायेंगे। हम लोग २२ आदमी थाने भेजे गये जिनमें कि दूल्हा और उसका पिता भी था। हम सब हाजतमें रखे गये। जब मजिस्ट्रेटके सामने पेशी हुई तो उसने जिस किसीको मजबूत देखा उसे बेत लगानेकी सजा दी। किसीसे जुर्माना वसूल किया गया। किसीसे पूछा भी नहीं गया कि तुमने क्या अपराध किया। केवल ३ आदमी छोड़े गये। दूल्हा और दूल्हाके पिता छोड़े गये। ६ आदमी बेतकी सजा पा गये और १३ को जुर्माना देना पड़ा। ११ वर्षके एक लड़केके दस बेत लगाये गये और १७ वर्षके लड़केके १५ लगे। जो मौलवी शादी कराने गया था उसके २० लगे। जिस समय हम लोग हाजतमें किये गये हमारा सामान पुलिसने छीन लिया था और जब हम लोग छोड़े गये तो आधा सामान भी न मिल गया।

जोजफ जार्विसका बयान .

मार्शल्ला जारी होनेके दूसरे दिन मुझे अपने मालिकके तांगेके साथ दरेंड को जाना पड़ा। मैं वहां देर तक रहा। मेरे घर पर कोई भोजन तैयार करने वाला न था। इस लिये मैं घरके लिये जल्दीमें रवाना हुआ। घर पहुंच कर मैंने रोटी तैयार की और दूध लेनेके लिये बाहर निकला। एक सिपाहीने मुझे पकड़ लिया यद्यपि तोप नहीं दागी गयी थी और मैं थाने रवाना किया गया। रातभर मैं भूखा प्यासा हवालातमें रक्खा गया। मुझे आठ बेतकी सजाका हुक्म हुआ। मैं नंगा किया गया और मेरे एक लंगोटी बान्धी गयी जो किसी दवामें भीगी हुई थी। बेत लगनेसे मेरे खून आ गया। दवाके कारण मेरा घाव फूल गया और मुझे बड़ा दर्द हुआ। और लोगोंके भी मेरी तरह बेत लगाये गये थे। एक आदमी मेरे सामने हो बेत खाकर खड़ा भी न हो सकता था।

रुल्लू घोसीका बयान।

इलामदीन लम्बरदारका बयान ।

१६ अप्रेलको जब मार्शल लाकी घोषणा हुई मैं मसजिदसे नमाज पढ़कर घर लौट रहा था। उस समय नोटिस न टांगी गयी थी परन्तु मैं गिरफ्तार कर लिया गया। मैं रातभर हवालातमें रखा गया। मुझे आठ बेतकी सजाका हुक्म मिला। मैं नङ्गा किया गया और मेरे बेत लगाये गये। पांच बेत खानेपर जब मेरे बड़े जोरका दर्द हुआ तो मैं चिल्लाया और तीन बेतकी माफी पा गया। बेत लगनेसे मेरे घाव हो गये और उनमें मवाद आ गया। २० दिनमें मेरे घाव अच्छे हुए। मेरे साथ और भी कई आदमियोंके बेत लगे। कुछ आदमी इतने बेहोश हो गये कि उन्हें तांगेमें ले जाना पडा।

बैरिस्टर सरदार हबीबुल्लाका बयान .

मै ११ अप्रेलको शीत ज्वरसे बीमार हुआ और अच्छा भी न होने पाया था कि ५ मईको गिरफ्तार कर लिया गया। मै लाहोर सदर जेलकी काल कोठरीमें एक महीने तक रखा गया। मेरे अस्वस्थ होने पर भी मै उसी गन्दी कोठरीमें रखा गया। मेरे साथ जो वर्ताव किया गया वह भयानक था। भोजन बडा खराब था। डाक्टरोंने मुझे जो दवा बतायी थी वह भी मुझे नहीं दी गयी। जूनमें हमलोग एक बारकमें रखे गये और तीसके तीस एक ही साथ रहे। मुझपर डेढ़ महीने तक मामला चला। कोई वकील बैरिस्टर मेरी ओरसे पैरवी नहीं कर

सका। मैं पीछेसे निरपराध बताकर छोड दिया गया। मैं इङ्गलैण्ड जाना चाहता था परन्तु मुझसे कहा गया कि जिन लोगोंका इनसे सम्बन्ध है उन्हें सरकार पासपोर्ट नहीं देना चाहती। मेरे बार बार प्रतिवाद करने पर मुझे २० मितम्बरको पासपोर्ट मिल गया परन्तु वह बहुत ज्यादा देरीमें मिलने के कारण मेरे काम न आया। खुफिया पुलिस मेरे पीछे रहती है। जहां कहीं मैं जाता हूं उसे अपने साथ पाता हूं।

लाला सरदारीलाल वैद्यका बयान.

१७ अप्रेलको मैं अपने दवाखानेमें कुछ बीमार देख रहा था कि दो पुलिसमैनोंने आकर मुझसे कहा कि मेरे साथ चलो। मैं उनके साथ गया और मैंने राहमें और कई पुलिसमैन मेरे लिये राह देखते हुए खडे देखे। मेरे हथकड़िया डाल दी गयी। मेरी गिरफ्तारीका कोई कारण नही बताया गया। हम लोग कुछ देर हाजतमें रखे गये। इसके बाद २५ आदमियोंका लाइन बनाया गया और हम लोगोंका जुलूस निकाला गया। हम लोग तार आफिस पहुचाये गये और वहा धूपमे खडे किये गये। हम लोगोंमें जो बुड्ढे और कमजोर थे वे घबरा गये और उन्होंने बैठ जानेकी आज्ञा मांगी। हम लोग वहासे पैदल जेल भेजे गये। ३-४ आदमी कड़ी धूपमें बहुत घबरा गये। राहमें हम लोगोंको बड़ी प्यास लगा परन्तु पीनेके लिये पानीतक न दिया गया जब-तक कि हम लोग जेल न पहुचे। जेल पहुचने पर हम लोगोंका तलाशी हुई और हम लोग कालकोटरियोंमें बन्द कर दिये

गये । मैं उस कोठरीसे निकाला गया और एक ऐसी कोठरीमें रखा गया जिसमें मच्छर भरे थे । उसमें पीसनेके लिये चक्की भी रखी हुई थी । हमें जो भोजन दिया गया वह खाने योग्य न था । उसी कमरेमें एक मिट्टीका बरतन रखा था जिसमें हमें पाखाना जानेके लिये कहा गया । उस कमरेकी बुरी हालतका कुछ लोग ही अनुभव कर सकते हैं । कुछ दिनके बाद मैं फिर शाहदरा थानेमें भेजा गया और वहां हवालातमें रखा गया । मेरे विरुद्ध कोई सबूत न होने पर मैं छोड़ दिया गया । मुझे जो कुछ कष्ट दिये गये मैंने सह लिये परन्तु मेरी स्त्री जो गर्भवती थी मेरे वियोगसे दुखी होकर मर गयी और छोटे छोटे बच्चे छोड़ गयी ।

ला० तुलारामका बयान ।

मेरी रायमें लाहोरमे मार्शलला जारी करनेके लिये कोई भयानक घटना नहीं हुई थी । लाहोरमें किसी तरहका षड्यन्त्र न था । मार्शललाके भयानक कष्टोंके सम्बन्धमें जितना ही कहा जाये थोड़ा है । रेलकी यात्राका भी नियन्त्रण कर दिया गया था जिससे जनताको बडा कष्ट होता था । मेरा साला उन्हीं दिनों मर गया और मेरी स्त्री अपने घर जाना चाहती थी । मैं उसके लिये आज्ञा भी प्राप्त न कर सका । मार्शललाके कारण बहुतसी शादियां स्थागित कर देनी पडीं । लोगोंके घोडा गाडी और मोटरें सभी छीन ली गयीं । बहुतसे आदमियोंकी तलाशी ली गयी क्योंकि कहा गया कि उनके यहा गाडिया बन्द हैं । पुलिसने भी रिश्वत खायी ।

सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वरका बयान ।

मैं पंजाबके एक प्रतिष्ठित परिवारका मनुष्य हूं। पंजाब [विश्वविद्यालय]का ग्रेजुएट हूं। मैं पत्र सम्पादन करता हूं। मैं [रा]जनीतिक कामोंमें प्रधान भाग लिया करता हूं। एक पत्रका मैं [स्वा]मी भी हूं। रालट बिलके विरुद्ध मैंने दो चार भाषण किये [थे]। लाहोरमें अधिकारियोंने आप ही जटिल अवस्था उत्पन्न की। [उ]से गदरका रूप नहीं दिया जा सकता। १६ अप्रेलको [ला]होरमें जब मार्शल लाकी घोषणा हुई मैं समझ गया था कि मैं गिरफ्तार किया जाऊंगा और मुझे आजीवन काले पानीका दण्ड मिलेगा। मैं अपने मित्रोंके अनुरोधसे प्रकट न हुआ और जूनके अन्ततक लेना और पुलिसको मेरा पता न लगा। मेरी गैरहाजिरीमें मेरे मकान और प्रेसकी तलाशी ली गयी। मेरे आदमी तङ्ग किये गये। अन्तमें मेरा प्रेस बेच दिया गया और मेरा कारबार नष्ट हो गया। नाभा नरेशने मेरे लिये सरकारसे सिफारिश की कि यदि मेरे विरुद्ध वारण्ट हो तो वे रद कर दिये जावें क्योंकि भविष्यमें मैं राजनीतिक काम न करनेकी प्रतिज्ञा कर चुका था।

खियायत न की जानी चाहिये। जितनी कड़ाई की जाये करनी चाहिये। तीसरे पहर उन्हें तार मिला कि मैं दस हजार रुपयेकी जमानतपर छोड दिया गया। एक सिख सब इन्सपेक्टर जमानत देनेवालेका नाम बताने मुझे आया उसपर साहब बहादुर बहुत बिगड़े और बोले कि इन्हें किसी तरहकी मदद न दी जानी चाहिये। ऐसा आदमी जेलमें ही मर जाये तो अच्छा है। पोछे-से अधिकारियोंने मुझे जमानत पर छोडना पसन्द न किया और कहा कि अब अवस्था बदल गयी है। जब नाभा नरेशने मेरे छुटकारे पर फिर जोर दिया तो पञ्जाब सरकारके चीफ सेके-टरी मुझे इस शर्त पर छोड़नेको तैयार हुए कि उनका एक मित्र जो नाभामें कैद है छोड दिया जाये। नाभा नरेश इस बातके लिये तैयार नहीं हुए। तीन हफ्तेके बाद फिर लेफ्टीनेण्ट गव-र्नर पर जोर डाला गया और उन्होंने मेरे छुटकारेकी आज्ञा दे दी। १ सितम्बरसे मेरे सम्बन्धमें और भी अधिक कड़ाई की जाने लगी। ४ सितम्बरको मुझसे कहा गया कि मैं छोडा जा सकता हू यदि मैं प्रतिज्ञा करू कि पाच वर्ष तक किसी प्रकारके राजनीतिक मामलों या समाचार पत्र सम्पादनमें भाग न लूगा। मैंने इस प्रकारका पत्र लिख दिया, परन्तु वह पसन्द न किया गया और मुझसे दूसरा पत्र लिखाया गया। मैंने उसे पसन्द न किया और उस पर अपनी सही न की। मि० अब्दुल अजीजने बीचमें पड कर मुझसे यह लिखा लिया कि अब तक जो आपत्ति-जनक बातें सरकारके विरुद्ध लिखी गयी हैं उनके लिये क्षमा

प्रार्थना की जाती है। जबतक मैं हाजतमें रहा मैं अपने मित्रों और सम्बन्धियोंसे नहीं मिल सका। जिस कमरेमें मैं बन्द था उसमें बड़ी बदबू आती थी। उसी कमरेमें खुली टट्टी थी। वर्षा ऋतु होनेके कारण कमरेमें कीड़े भरे हुए थे। मुझे कोई चारपाई नहीं दी गयी यद्यपि मेरे एक पड़ोसीके साथ यह रियायत की गयी थी। भोजन इतना रद्दी दिया गया कि उसे खाकर मैं पहले बीमार पड़ गया। मुझे अबतक नहीं मालूम हुआ कि मैं क्यों पकड़ा गया था। सरकारको भी मैंने लिखा परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। मैं यह भी नहीं समझा कि गिरफ्तारीके बाद मुझे जमानतपर छोड़नेकी आज्ञा होनेपर भी मैं क्यों नहीं छोड़ा गया। यदि मैं किसी शर्तपर ही छूट सकता था तो इसके लिये एक महीना कैसे लग गया। मैं यही समझता हूं कि सात हफ्तेके लगभग मैं इसीलिये बंद रहा जिससे मि० टाम्सन अपने मित्रको जाया करनेको बदलने छुड़ा सकें।

थे कि अंग्रेजोंका राज नहीं रहा। चले हो जाओ। तुम लोग हमारे मुलाजिम हो। चले हो। तब सब चले हो गये और उन्होंने सबके नाम पढ़कर सुनाये। उनके बाद हम सब जेल भेजे गये। हमें चार मील पैदल धूपमें चलना पड़ा। जेलमें हम लोगोंकी तलाशी हुई। इसके बाद हम सब कालकोठरियोंमें बन्द किये गये। कालकोठरीमें ही टट्टी जानेका प्रबन्ध था। उसमें मच्छड़ भरे हुए थे। रातको चार पांच बार हम लोग जगाये जाते थे। हम लोगोंको धूल और मिट्टी मिला भोजन दिया जाता था। चार दिन तक मैं केवल पानी पीकर ही रहा। पांच दिन के बाद हम लोगोंका फिर जुलूस बनाया गया और हम लोग थानेमें वापस लाये गये। वहां भी हाजतमें रहे और जमानत पर छूटे। पीछेसे मैं बिल्कुल ही छोड़ दिया गया।

पण्डित खुशालचन्दका बयान।

मेरे एक किताबोंकी दुकान है। मार्शलला जारी होनेके दो तीन दिन बाद मैंने एकदिन सबेरे अपनी दुकान खोली। एक लड़का मेरी दुकानसे कुछ चीज खरीद रहा था। इतनेमें दो कान्सटेबल पहुंचे और उन्होंने मुझसे कहा कि हमारे साथ चलो। मुझपर यह अभियोग लगाया गया कि मैंने मार्शललाके नोटिस बिगाड़े हैं। मैं हाजतमें कर दिया गया और मुझे खाने पीनेको कुछ भी नहीं दिया गया। मुझे ज्वर हो गया। दूसरे दिन मेरी पेशी हुई। मैं कुछ कहना चाहता था, परन्तु मुझसे कहा गया कि यदि जबान खोलोगे तो और भी कड़ा दण्ड दिया जायेगा।

मुझे पाच बेत खानेका हुक्म हुआ। बहुतसे आदमियोंके सामने मेरे बेत लगाये गये। पुलिस इन्सपेक्टर बेत लगानेवाले पठानसे कह रहा था कि जोरसे लगाओ। उसी समय एक लड़केने भी बेत खाये थे। यह बात बिल्कुल झूठ थी कि मैंने नागरिकताके नोटिस बिगाड़े थे।

बारहवां अध्याय ।

पारसूर ।

कसूरकी आठ वेश्याओंका सम्मिलित बयान ।

जो २२ से ३० वर्षकी है।

मार्शल लाके दिनोंमें गर्वके तीसरे सप्ताहमें कसूरकी सब वेश्याओंको दिनके ४ बजे रेलवे स्टेशनपर पहुंचनेकी आज्ञा ढोल पीटकर दी गयी जहांपर कि सैनिक अड्डा था। वेश्याओंके साथ बजानेवाले भी बुलाये गये थे। कहा गया था कि जो वेश्या हाजिर न होगी वह गोलीसे मार दी जायेगी। दोपहरके बाद सभी वेश्याएं रेलवे स्टेशनपर पहुंचीं। हममेंसे किसीको भी न मालूम था कि हमें क्यों बुलाया गया। मार्शल ला अफसरका हुक्म बताया गया। सैनिकोंने हमारे मकानोंकी तलाशी ली कि कोई वेश्या घरपर रह तो नहीं गयी है। हम लोगोंने स्टेशन पहुंचकर वहां कप्तान डवटनको दो तीन सैनिक अफसरोंके साथ उपस्थित देखा। हम सब रेलवे प्लेटफार्मके सिगनलके पास खड़ी की गयीं।' इसके बाद एक आदमी बांधा गया और हम लोगोंसे कहा गया कि उसे देखो। कोई पुलिसका अफसर वहां मौजूद न था। जब हमसे बेतोंका दण्ड न देखा गया तो हम सबने अपना मुंह छिपाना चाहा। हमें इसपर धमकी दी गयी कि प्रेम करनेका मजा देखो। पांच आदमियोंको बेत लगाये गये। जब प्रत्येक आदमीके बेत लग चुकते थे तो वह हमारे पास लाया जाता था और हमसे कहा जाता था कि उस खूनसे सने आदमीको देखो। दृश्य न देखा जाता था। जब करमशाहके बेत लगाये

गये तो वह दर्दके मारे बहुत बुरी तरहसे चिल्लाने लगा। हमसे यह दृश्य न देखा गया और हमने अपनी आंखे दूसरी तरफ कर ली। इस पर कप्तान डचटन हमारे बीच आये और हमारा मुंह उस ओर कर दिया। हमसे कहा गया कि तुम पर बेत पड़ेंगे यदि अच्छी तरह न देखोगी। बेत लग चुकने पर हम स्कूलका घर लौटनेको कहा गया। इस भयानक दृश्यको देख कर हमलोग लड़कीके दिलोंको बड़ी गहरी चोट पहुंची और हम स्कूल अब भी इस्पतालमें हैं।

पोलने लगे। उन्होंने मुझसे कहा कि अपने बादशाहका नाम ले मैंने पञ्चमजार्जका नाम लिया। इसपर उन्होंने कहा कि तं बार हर्षध्वनि करो। मैंने वैसाही किया। इस बीचमे गोरे गोरे मेरी दुकानसे कुछ चीजें उठा लीं और उनका दाम भी न दिय कर्नलसे शिकायत करना चाहता था परन्तु मैंने सुना शिकायत करनेवालोंके बेत लगते थे। एक दूसरे अवसर बहुतसे गोरे बाजारसे निकले। उनके निकलते ही 'उठो' 'उ की आवाज सुनायी दी। वे लोगोंको खडे कर उनसे सलाम क रहे थे। हम सबने उठकर उन्हें सलाम किया। सिकन्दर नाम एक आदमी कुछ कम देख सकता था और सुन भी कम सक था। वह सलाम करनेके लिये खडा न हुआ। उस बुड्ढे गोरोंने चोट की। बेचारा गरीब आदमी गिर पडा। वह उठा न था कि एक और सिपाही वहांसे गुजरा और उसने उस दूसरा मुक्का लगाया। इस तरह उस बेचारेके सात आठ मु लगे। उसे पता ही न था कि वह क्यों चोटे खा रहा है। जमीनपर चित पड़ा था।

बा० मस्तरचन्दका बयान।

तीसरे दर्जेके मुसाफिर खानेके पास १७ अप्रेलके लगभग प छ लड़कों पर बेत पडे थे। उनमेसे तीन लड़के १६ वर्षके थे। लड़के करीब करीब नङ्गे करा लिये गये थे। एक रस्से हाथ पैर बांध दिये गये थे। लड़के स्कूलोंके थे और

दण्ड पानेके लिये यों ही चुन लिये गये थे। रेलवे कर्मचारियोंसे बेतकी सजा देनेको कहा गया था। रेलवे कर्मचारियों पर मार न पड़े क्योंकि उनसे उन लोगोंके नाम पूछे गये जिन्होंने स्टेशन पर चोट की थी। कसूरके गण्यमान्य मनुष्योंका नाम लेनेके लिये दबाव डाला गया। मैं असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर था। मुझसे बार बार नाम लेनेको कहा गया। मैंने कहा कि मैं उस समय मौजूद न था। २७ अप्रेलको मैं गिरफ्तार किया गया और लाहोर सदर जेलमें रखा गया। ६ मई तक यहां रह कर मैं कसूर वापस लाया गया। ११ को मैं जमानत पर छूटा। मैं फिरोजपुर और वहांसे पिण्डी बदल दिया गया। इसके बाद मैं नौकरी परसे हटा दिया गया। मैंने २३ वर्ष तक रेलवे कम्पनीकी नौकरी की। उपद्रवके समय मैं स्टेशन पर मौजूद न था। मैं किसी तरहसे अपराधी नहीं साबित हुआ। मैंने कसूरके मशहूर आदमियोंका नाम न लिया इसीसे मैं नौकरी परसे हटा दिया गया।

खोलने लगे । उन्होंने मुझसे कहा कि अपने बादशाहका नाम लो । मैंने पञ्चमजार्जका नाम लिया । इसपर उन्होंने कहा कि तीन वार हर्षध्वनि करो । मैंने वैसाही किया। इस बीचमें और गोरोंने मेरी दुकानसे कुछ चीजें उठा लीं और उनका दाम भी न दिया।

कर्नलसे शिकायत करना चाहता था परन्तु मैंने सुना कि शिकायत करनेवालोंके वेत लगते थे । एक दूसरे अवसरपर बहुतसे गोरे बाजारसे निकले । उनके निकलने ही 'उठो' 'उठो' की आवाज सुनायी दी । वे लोगोंको खडे कर उनसे सलाम करा रहे थे । हम सबने उठकर उन्हे सलाम किया । सिकन्दर नामक एक आदमी कुछ कम देख सकता था और सुन भी कम सकता था । वह सलाम करनेके लिये खडा न हुआ । उस बुड्ढेपर गोरोंने चोट की । वेचारा गरीब आदमी गिर पडा । वह उठा भी न था कि एक और सिपाही वहांसे गुजरा और उसने उसके दूसरा मुक्का लगाया । इस तरह उस वेचारेके सात आठ मुक्के लगे । उसे पता ही न था कि वह क्यों चोटें खा रहा है । वह जमीनपर चित पड़ा था ।

बा० मस्तानचन्दका बयान ।

तीसरे दर्जेके मुसाफिरखानेके पास १७ अप्रेलके लगभग पांच छ लड़कों पर वेत पडे थे । उनमेंसे तीन लड़के १६ वर्षके भी थे । लड़के कमर तक नङ्गे करा लिये गये थे । एक रस्सीसे हाथ पैर बांध दिये गये थे । लड़के स्कूलोंके थे और वे

दण्ड पानेके लिये यों ही चुन लिये गये थे। रेलके कर्मचारियोंसे बेतकी सजा देनेको कहा गया था। रेलवे कर्मचारियों पर भी बेत पडे क्योंकि उनसे उन लोगोंके नाम पूंछे गये जिन्होंने स्टेशन पर चोट की थी। कसूरके गण्यमान्य मनुष्योंका नाम लेनेके लिये दबाव डाला गया। मैं असिस्टेण्ट स्टेशन मास्टर था। मुझसे बार बार नाम लेनेको कहा गया। मैंने कहा कि मैं उस समय मौजूद न था। २७ अप्रेलको मैं गिरफ्तार किया गया और लाहोर सदर जेलमे रखा गया। ६ मई तक वहां रह कर मैं कसूर वापस लाया गया। ११ को मैं जमानत पर छूटा। मैं फिरोजपुर और वहासे पिण्डी बदल दिया गया। इसके बाद मैं नौकरी परसे हटा दिया गया। मैंने २३ वर्ष तक रेलवे कम्पनीकी नौकरी की। उपद्रवके समय मैं स्टेशन पर मौजूद न था। मैं किसी तरहसे अपराधी नहीं साबित हुआ। मैंने कसूरके मशहूर आदमियोंका नाम न लिया इसीसे मैं नौकरी परसे हटा दिया गया।

१६ वर्षके छात्र अलाउद्दीनका बयान।

१७ अप्रेलको रेलवे स्टेशनपर सब लडके बुलाये गये थे क्योंकि एक अंग्रेज स्त्री और दो साहब किसीको पहचानना चाहते थे। जब वे न पहचाने गये तो सब वापस भेज दिये गये। लडके सवेरे साढ़े आठ बजे स्कूलसे रवाना हुए थे और स्टेशनसे १० बजे लौटकर आये। २२ अप्रेलको फिर कुछ मजबूत लडके बुलाये गये और तीनके बेत लगे। इसके बाद

और लड़कोंके भी बेत लगाये गये। अफसरोंने बेत लगानेके पहले कहा था कि कोई ६ मजबूत लड़के चुन लो और उनके बेत लगाओ। २६ अप्रेलको स्कूलोंके लड़के स्टेशनपर बुलाये गये। १ मईको वे फिर बुलाये गये। उस दिन शहरके तमाम आदमी वहां मौजूद थे। उस दिन आठ और नौ वर्षके दो लड़के गिरफ्तार किये गये। २३ मईको मेरे स्कूलके आठ बेतकी सजाके लिये चुने गये। नानकचन्दके १० और मेरे हाथमे १० बेत लगे। ६ लड़कोंके ६ ६ बेत लगे और वे एक सालके लिये स्कूलसे निकाल दिये गये। दो लड़के लाहोर जेल भेज दिये गये। वे पीछेसे कसूर बुलाये गये और रेल्वे स्टेशनपर हेडमास्टरद्वारा उनपर बेत लगवाये गये।

मौलवी अब्दुलकादिर वकीलका बयान।

कसूर एक प्रसिद्ध व्यापारी नगर है। इस नगरमे कम राजनीतिक जागृति है। यहा पहले हड़ताल तो न मनायी गयी थी, परन्तु पीछेसे लोग लज्जित किये गये इसीसे हड़ताल हुई। १६ अप्रेलको कसूरमे मार्शललाकी घोषणाकी गयी। मेरी रायमें उसकी जरा भी जरूरत न थी। १६ अप्रेलको मैं भी गिरफ्तार कर लिया गया। मुझे अबतक भी नहीं मालूम हुआ कि मैं क्यों गिरफ्तार किया गया। रेल्वे स्टेशनपर शहरवालोंको कड़ी धूपमे घण्टों बैठना पड़ा और युरोपियनोंको सलाम करनेके लिये वाध्य होना पड़ा। जो सलाम न करता था उसे जमीनमे अपनी नाक [illegible] पड़ती थी। लड़कोंको बेतकी सजा भोगनी पड़ी। जो

लड़का मजबूत दिखायी दिया उसे बिना किसी अपराधके बेत खाने पड़े।

म्युनिसिपल कमिश्नर शेख अमीनुद्दीनका बयान।

हम लोगोंको सवेरे ५ बजेसे शामके ६ बजे तक रेलवे स्टेशन पर उपस्थित रहना पड़ता था। हम लोगोंको बार बार धमकाया जाता था कि तुम्हारे मकान धूलमें मिला दिये जायेंगे और बच्चे मार डाले जायेंगे। हम लोगोंको नोटिस बांटने और चिपकाने पड़ते थे। शहरके बहुतसे आदमी जूतोंसे पीटे जाते थे। उन्हें धूपमें खड़ा होना पड़ता था। इज्जतदार आदमी इसी बहानेसे हाजतमें रखे जाते थे कि उन्होंने तलाश करनेमें ढिलाई की। गोरे शहरमें आकर लोगोंको पीटते थे और सामान लूट ले जाते थे। सैकड़ो आदमी पीटे गये और उनका अपमान किया गया। व्यभिचारिणी स्त्रियोंकी शिकायत पर भले आदमियोंके बेत लगाये गये। लड़कों पर भी बेत पड़े। किसीको नहीं मालूम कि वे क्यों पीटे गये। एक दिन पांच घण्टे तक सारा शहर स्टेशन पर रहा और पीछेसे सब आदमी वापस भेज दिये गये। सब आदमी धूपमें बिठाये गये। पानी भी पीनेको नहीं दिया गया और न भोजनका ही कुछ प्रबन्ध था। सब डिस्ट्रिक्ट अफसरने रालट एक्टकी प्रशंसा की और जिसने इस प्रशंसामें भाग न लिया उसे गालियां दी गयी। मालवीयजी और गांधीजीको भी गालियां दी गयीं। खुलेआम फांसी लगानेका प्रबन्ध किया गया था। घोषणा की गयी थी

कि अपराधी फांसीपर [illegible] जायेंगे। [illegible] कर्मचारी कई प्रकारसे तंग किये गये। चौधरी [illegible] रामनरायनको इसी लिये [illegible] कि उसने [illegible] को न फंसाया। बहुतसे नाम गिरफ्तार किये गये और उनसे मालगुदाममें काम लिया गया। बहुतसोंको नमकसे भरे डिब्बे खाली करने पड़े। एक मुसलमान नम्बरदार [illegible] खड़ा किया गया था और उसके शिरपर बेवकूफोंकी टोपी रखी गयी थी। कप्तान डवटनने तबलेकी जोड़ी मंगाकर उस आदमीको नाचनेका हुक्म दिया था। एक साधूके शिरपर पानीसे भरा घड़ा रखा गया और वह बांधकर धूपमें खड़ा किया गया। वह तमाम दिन खड़ा रहा। उसके गलेमें एक रस्सा पड़ा था। उससे कहा गया था कि शामको तुम्हारी फांसी होगी। १६ अप्रेलको स्टेशनके पास एक गूंगा और बहरा आदमी गोलीसे मार दिया गया। मैंने उसकी लाश पहचानी थी। उसने घण्टीकी आज्ञा न मानी थी। जूनमें मार्शल लॉ उठाया गया।

ला० राधाकिशनका बयान.

मार्शललाके दिनोंमें कप्तान डवटनका पेशकार अमरनाथ था। वह मन्दिरके पुजारी जगन्नाथका मित्र था। मैं मन्दिरकी एक दुकान भाड़ेपर लिए हुए था। मुझसे कहा गया कि हिन्दू सभाको भाड़ा न देकर मन्दिरके पुजारीको दिया जावे। जब मैंने ऐसा नहीं किया तो मैं और दुकानदारोंके साथ पेश किया गया। [illegible] हम सबको देखकर कहा कि तुम लोग बदमाश हो।

हम लोगोको वेतकी सजाका हुक्म हुआ। अन्तमे साहवने हम लोगोसे कहा कि तुम जगन्नाथको भाडा क्यो नही देते। हम लोगोंने कहा कि हमे कोई आपत्ति नही जिसका अधिकार हो ले ले। इसपर हम लोगोको हुक्म हुआ कि जगन्नाथको भाड़ा दो। एक दिन जब मै स्टेशनपर हाजिरी देनेके लिये अपने घरकी स्त्रियोको अकेला छोड गया हुआ था १४ गोरे मेरे मकानमें तलाशी लेनेके लिये घुस पडे। एक दिन मैंने स्टेशन प्लेटफार्म पर सेठ रामनिवास अग्रवालकों पेटके वल चलते देखा था। एक साहव उनका पीछा कर रहा था। मुझे मालूम हुआ कि सेठजीने साहवको सलाम न किया था इसीसे पेटके वल रेङ्गनेको आज्ञा दी गयी। एक दिन मैं फिरोजपुर जानेके लिये स्टेशन पर गया। साहवने मुझे वुलवाया और कहा कि तुम लोगोंसे क्यों कहते हो कि मैंने जबर्दस्ती भाड़ा दिलाया। तुमने स्वेच्छा पूर्वक तो दिया था। मैंने कहा कि मैंने तो हुक्मके अनुसार अदा किया था।

ला० दौलतरामका बयान

मेरे एक भाई था जिसका नाम सुन्दरदास था। उसकी अवस्था ६२ वर्पकी थी। मार्शल ला अफसरने उसे एक महीनेका दण्ड दिया था। पांच वेतकी सजाका भी हुक्म हुआ था। पहले २० वेतकी सजा दी गयी थी परन्तु पीछेसे वीसकी जगह पाच वेतका हुक्म रहा। डाक्टरने कहा था कि वह वेतकी सजा खानेमे सर्वथा असमर्थ है। जेलकी सजा भी योग्य वह न

बनाया गया। मैं उन्हे लाहौरकी सदर जेलमें देखने गया परन्तु मुझे मुलाकात करनेकी आज्ञा नहीं मिली। २८ जूनको उनके छुटकारेका दिन था। मैं उसी दिन जेलमें गया। जेलवालोंने कहा कि तांगा ले आओ क्योंकि तुम्हारा भाई मरनेवाला है। मैं एक तांगा लाया। मैं अपने भाईको उसपर सवार कराकर लाहौर अस्पतालमें ले गया। वह अस्पताल पहुंचकर उसी दिन मर गया।

जीवन फकीरका बयान।

मैं मौजा पड़पड़का रहनेवाला हूं। नेपालमें मेरी स्त्री कसूर अपने पिताके पास गयी थी। वहांसे वह कल्लो वेश्याके यहां चली गयी। जब मुझे पता लगा तो मैं कसूर पहुंचा और अपनी स्त्रीसे लौट चलनेको कहा। उसने मेरे साथ चलनेसे इन्कार किया और मुझे गालियां दीं। मैं उसके पाससे चला आया और अपने दो तीन दोस्त लेकर उसके पास पहुंचा। मैं उसे वापस ले आया, परन्तु घर आनेके दो तीन घण्टे बाद वह फिर गायब हो गयी। वह मार्शलला अफसरके पास गयी और उसने मेरा तथा मेरे दोस्तोंका नाम लेकर कहा कि इन लोगोंने मेरे साथ व्यभिचार किया है। मैं अपने गांवसे हथकड़ियां पहनाकर कसूर लाया गया। मेरे मित्र भी गिरफ्तार किये गये। मुझे ३० बेतकी सजाका हुक्म हुआ। २५) जुर्माना भी हुआ। बेत खाते समय मैं बेहोश हो गया। जब मुझे होश हुआ तो मैंने पानी मांगा परन्तु मुझे पानी न दिया गया। मुझे वेश्याओंके सामने बेत

खाने पड़े और जुर्मानेकी रसीद न मिली। बेत लगनेके एक दिन पहले मैं स्टेशन पर कप्तान डाटनके सामने बुलाया गया जहां पर मेरी स्त्री भी मौजूद थी। कप्तानने मेरी स्त्रीसे पूछा कि मैं कौन हूं। उसने मुझे अपना पति बताया और मैंने उसे अपनी स्त्री बतायी। और कुछ पूछे बिना ही मैं हवालातमें भेज दिया गया। किसीकी गवाही नहीं ली गयी। गोरोंने बेत लगाये थे।

माखनसिंहका बयान।

बैसाखके महीनेमें मैं तथा मेरे परिवार वाले सोये हुए थे। सूर्योदयसे चार घण्टा पहले कुछ गोरोंने हमें जगाया। मैं तुरन्त ही गिरफ्तार कर लिया गया और मैं बाहर सड़क पर बिठाया गया यद्यपि मेरे पास कोई कपड़ा न था और उस समय जाड़ा था। गोरोंने मेरे मकानको घेर रखा था। और तीन आदमी मेरी तरह गिरफ्तार किये गये और बाहर सड़क पर बिठाये गये। सूर्योदय होनेपर मैं अपने घर भेजा गया और वहां मेरे मकान की तलाशी हुई। निहालसिंहके मकानकी भी तलाशी हुई। उनकी स्त्री और बच्चे मकानसे बाहर निकाल दिये गये। तलाशीसे कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली। मैं अपने गांवसे कसूर लाया गया। गोरे नंगी सङ्गीन और भरी बन्दूकें लिये हुए मेरे साथ थे। राहमें मुझे खाने पीनेको कुछ नहीं दिया गया और न टट्टी पेशाबकी ही आज्ञा दी गयी। कसूरमें मेरी पगड़ी उतार ली गयी और मैं नंगे शिर धूपमें बिठाया गया। रात होते ही

मियां मुबारकअलीका बयान ।

मुझे मार्शललाके दिनोंमे १५ बेत खानेकी सजा मिली थी। डाकृरने मुझे बेत खानेमें असमर्थ बताया परन्तु साहबने कुछ भी ध्यान नहीं दिया । जब मेरे बेन लग रहे थे मैंने पानी मांगा परन्तु मुझे नहीं दिया गया । मुझसे कहा गया कि रोजेके दिन होनेके वजहसे किसीको पानी न दिया जायेगा । मुझे वेश्याओंके सामने बेत खाने पडे थे । मुझे नहीं मालूम कि मेरे क्यों बेत लगाये गये।

पट्टी निवासी पण्डित देवराजका बयान .

२१ अप्रेलको मुझे कर्नलने बुलाया। कर्नल और डिप्टी कमिश्नरने मुझसे पूंछा कि क्या मैं आर्यसमाजी हूं। मैंने कहा नही। पुलिस मुझे हाजतमें ले गयी। २२ अप्रेलको मैं स्पेशल ट्रेनसे अमृतसर भेज दिया गया। अमृतसर पहुचनेपर रेल्वेके अफसरोंने हम लोगोंके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। हम लोगोंको गालियां दी गयीं और धक्के भी लगाये गये। इसके बाद हम लोग मोटरमें सवार कराकर कम्पनी बाग भेजे गये जहांपर क फौजी अदालत बैठी हुई थी। हम लोगोंको खानेको कुछ

नहीं दिया गया और न टट्टी पेशावकी ही आज्ञा हुई। शामको हम लोगोंके हथकड़ियां पहनायी गयी और जेल भेज दिये गये। राहमे पुलिस अफसरने हम लोगोंसे कहा कि यदि लाइनसे बाहर हुए तो गोलीसे मार दिये जाओगे। जेलमे हम लोग एक बारकमे भूखे बन्द कर दिये गये। २३ वींको हमे टट्टी पेशावके लिये बाहर निकाला गया और भोजन भी दिया गया। जब हम लोग खानेको बैठे जमादार हमारे पास आया और उसने कहा कि पट्टीमें जो गिरफ्तार किये गये हैं उनके दारोगाके सामने चलना होगा। इसलिये हम लोग कुछ न खाकर दारोगाके पास गये। हम लागोंके पैरोंमें बेड़ियां डाल दी गयीं। हमें एक जञ्जीरसे बाधा गया जिसमे पांच भङ्गी भी बंधे थे। हम लोगोंको खड़े होकर पेशाब करनेकी आज्ञा मिली और सबके सामने ही ऐसा करना पड़ा। मैं ऐसी काल कोठरीमें चार कैदियोंके साथ रखा गया जो केवल एक कैदीके लिये थी। हम लोगोंको बहुत बुरा भोजन दिया जाता था। कभी जला हुआ होता था और कभी कच्चा होता था। भङ्गियोंके साथ खानेके लिये कभी कभी हमें चने भी दिये जाते थे। जेलके दारोगाने हम सब लोगोंके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। वह गालियां देनेके सिवा जूतोंसे भी पीट दिया करता था। मैं एक महीने तक अमृतसर जेलमें रहा। २३ मईको कसूर भेजा गया। वहा हम लोगोको हथकड़िया पहनायी गयी और हम लाग रेलवे स्टेशनसे थानेको पैदल ही भेजे गये। जिस कमरेमें हम लोग

रखे गये वह बड़ा गन्दा था और छोटा पन्द्रहकी जगह खान पान के लिये ही काफी था। इससे हम लोगोंका जीवन असह्य हो गया था। २७ तारीखको हम लोग निरपराध बताकर छोड़ दिये गये। इस तरह हम लोग अकारण ही ३१ दिन तक बन्द रहे हमारे साथ पशुओंके समान बर्ताव हुआ।

बालस्वरूप किसानका बयान।

पट्टीमें रालट एक्टका विरोध करनेके लिये एक सभा हुई थी। मैंने सत्याग्रह पर व्याख्यान दिया था। कृष्णाश्रममें मैं २६ या २७ अप्रेलको गिरफ्तार किया था। दूसरे ही दिन मैं अमृतसर लाया गया और वहां मेरा तरह तरहसे अपमान किया गया। मैं चौदह आदमियोंके साथ एक छोटेसे कमरेमें बन्द किया गया। उस कमरेमें इतनी भीड़ थी कि हम लोग जब बैठते थे तो हमारे कपड़े उन बर्तनोंसे छू जाते थे जिनमें टट्टी थी। गिरफ्तारीके २४ घण्टे बाद मुझे भोजन दिया गया। न तो मुझ पर मामला चला और न मेरा बयान ही लिया गया। लाहौर जेलमें मैं पीटा गया था।

तुलसीराम भल्लाका बयान।

२८ अप्रेलको मेरे पास एक आदमीने आकर कहा कि तुम्हें पुलिस इन्सपेक्टरने बुलाया है। इसी बीचमें पुलिस इन्सपेक्टर कई कान्सटेबलोंको साथ लिये हुए मेरे पास आये। मुझसे कहा गया कि उतर कर आओ और सिपाहियोंके बीच खड़े हो। मैंने ही किया। मैं थानेको भेजा गया और वहां हाजतमें रखा

गया। मुझसे पुलिस इन्सपेक्टरने कहा कि यदि तुम पांच ६ आदमियोंके झूठे नाम लिखा दो और मुझको भी रुपया दो तो तुम छोड़ दिये जाओगे। मैंने कहा मैं न तो किसीको फंसाना चाहता हूं और न रिश्वत ही देना चाहता हू। मैंने कहा कि मेरा चाचा और भाई निरपराध होनेपर गिरफ्तार कर लिये गये हैं इससे आप मुझे भी पकड़कर चाहे जहा ले जा सकते हैं। मैं कसूर भेजा गया और फिर वहांसे लाहोर भेजा गया। मैंने तरह तरहके कष्ट भोगे। ५ जूनको मैं प्रमाणाभावमे छोड दिया गया।

मौल्वी महीउद्दीन अहमदका बयान।

१२ अप्रेलको दङ्गेके दिन मैं अपने घरके भीतर रहा। १६ को मेरे पिता गिरफ्तार किये गये। २० को मैं और मेरा भाई रेलके स्टेशनपर बुलाया गया। हम लोग नीच जातिवालोंके बीच लाइनमें खड़े किये गये। उसी समय कई अंग्रेज और अंग्रेज स्त्रियां आयीं। हम लोगोंको कई आदमियोंने पहचाननेके लिये देखा परन्तु किसीने सनाख्त न की, एक रेलवे पाइण्टमेनने बड़ी हिचकिचाहटसे हमपर अंगुली उठायी। इसपर मैं गिरफ्तारकर लिया गया और मेरे हथकड़ियां डाल दी गयीं। मैं अपने पिताके साथ तहसीलकी हवालातमें भेज दिया गया। वहां मैं १७ दिन बन्द रखा गया। हम लोग कई बार रेलके स्टेशनपर हथकड़ियां पहनाकर लाये गये। ७ मईको मे जमानतपर छोड़ा गया। २५

मईको मेरी जमानत रद्द कर दी गयी। मुझसे कहा गया कि मुझपर मामला न चलाया जायेगा।

तेरहवां अध्याय।

गुजरानवाला।

ला० नन्दरामका बयान।

मैं जिला कांग्रेस कमेटीका मेम्बर हूं। अमृतसर कांग्रेसकी सफलताके लिये मैंने प्रचारका काम अन्य लोगोंके साथ किया था। ६ अप्रेलको गुजरानवालामें हड़ताल करनेका निश्चय हुआ था। १३ अप्रेलको वैसाखीका दिन था और उस दिन मेरे लड़केकी सगाईकी रस्म अदा होनेवाली थी। दीवान मङ्गलसेन अपनी स्त्रीके साथ मेरे यहां आये हुए थे क्योंकि उन्हींकी मार्फत शादी ठीक हुई थी। मैं भी उनके घरपर गया था और वहांसे लौट आया। १४ को शहरमें हड़ताल हुई। उसदिन एक सभा भी हुई जिसमें पूर्ण शान्ति रही। सवेरे मैंने सुना कि स्टेशनके पास कई इमारतोंमें आग लगायी गयी है। दिनके २ बजे मैंने शहरके ऊपर हवाई जहाज उड़ता देखा। इसके बाद मुझे खालसा स्कूलके ऊपर दो हवाई जहाज उड़ते दिखायी दिये। लड़कोंपर बम गिराये गये। मैंने बमको फटते देखा और धुंआ भी उठता

सकती है। मुझसे कहा गया कि गुरुकुलके ब्रह्मचारियोंका नाम लो। एक बयान लिखा गया जिसमें गुरुकुलके मैनेजर फसाये गये थे। मैंने बयान पर सही नहीं की उस पर मुझे गालियां दी गयीं। इसके बाद मैं भगा दिया गया। मैं एक दिन अमृतसर गया हुआ था। वहांसे मैं पुलिसके कहने पर तार द्वारा बुलाया गया। मैं अमृतसरसे लाहोर चला गया था। वहांसे मैं टम-टम पर गुजरानवाला पहुंचा। मुझसे कहा गया कि अपने चचेरे भाई केशरसिंहको उपस्थित करो नहीं तो हथकड़िया पहननी होंगी। मैंने कहा कि मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं। हम लोग केसरसिंहके मकान पर गये। वहा पर उसकी माता बाहर बुलायी गयी क्यो कि पुलिसमैनने ताला बन्द करनेको कहा। उस दिन केसर सिंहकी बहिन बहुत बीमार थी। पुलिससे प्रार्थना की गयी कि केसर सिह अभी छोड़ दिया जाये। पुलिसमैनको रिश्वत दी गयी और उसने लिख दिया कि केसर सिह पहाडोंकी तरफ भाग गया है। मार्शल लाके दिनोंमे मेरी दुकानके सामने बेत लगानेका प्रबन्ध किया गया था। एक सिखको नङ्गा किया गया था उसके चूतड़ोंपर एक कपड़ा बाधकर उसके बेत लगाये गये थे। जब कभी उसके जोरसे बेत लगते थे वह 'वागुरू' 'वागुरू' चिल्लाता था। मैंने १३ बेत गिने थे। एक गोरेने बताया कि वह रातको घूम रहा था इसीसे उसपर बेत पड़ रहे हैं। कहा जाता है कि वह रातको पानी पीनेके लिये बाहर निकला था।

बिहारीलालका बयान ।

मैंने मण्डीके ऊपर हवाई जहाज उड़ते देखे थे। वे बहुत नीचे उड रहे थे। बम भी बरसा रहे थे। मैंने यह भी सुना कि बमके कारण एक धोबीका लड़का मर गया। कुछ आदमी घायल भी हुए। १६ अप्रेलको मैं गिरफ्तार किया गया। मैं दो महीने जेलमें रहा। मुझ पर मामला चला और मैं निर्दोष बता कर छोड़ दिया गया। जब मैं जेलमें था मैंने रामसिंह और मुहम्मद मुनीर पर बेत पड़ते देखे। मुझे मालूम हुआ कि उन्होंने साहब को मोटरमें बैठा देख सलाम न किया था इसीसे उन्हें बेत की सजा भोगनी पड़ी।

रायसाहब सरदारी लाल वकीलका बयान ।

१५ अप्रेलको कर्नल ओब्रायनने मार्शल लाके अनुसार म्युनिसिपल कमिश्नरोंको आज्ञा दी थी कि सब रेलवे स्टेशनपर पहुचो। वहा उन्होंने,सबसे कहा कि ये आर्यसमाजी, कीड़े मकोड़े हैं। ये बदमाश गवर्नमेण्टका मुकाबला करते हैं। जिस समय मार्शल लाकी घोषणा हुई गुजरानवालेके सभी गण्यमान्य मनुष्य उपस्थित थे। सब लोगोंको जमीनपर बैठकर मार्शल लाकी घोषणा सुननी पड़ी।

ला० शिवनाथका बयान ।

मार्शल लाके दिनोंमे मैं गुजरानवालामें ही था। मैंने पुलिस द्वारा गोली भी चलती देखी थी। शहरमे अफवाह गर्म थी कि

पुलिसने ही लोगोंको आग लगानेके लिये उत्तेजित किया। मैंने शहरपर हवाई जहाज भी उड़ते देखे थे। कोई नहीं जानता था कि उनसे बम बरसाये जायेंगे। सब यही समझते थे कि लोगोंको डरानेके लिये ही वे उड़ रहे हैं। उन्होंने कई जगह बम गिराये। शहरके बीचोंबीच बम गिरे। एक बम धर्मशाला और एक पुराने बाजारपर गिराया गया। मैंने एक आदमीको बमसे घायल देखा। मार्शल लाकी घोषणा ढोल पीटकर की गयी थी। गोरोंने तमाम शहरका पहरा दे रखा था। अंग्रेजोंको सलाम करनेका हुक्म जारी किया गया था। जो सलाम नहीं करता था वह पीटा जाता था। कई लोगोंको मैंने दुकानदारोंको सलाम न करनेके कारण पीटता देखा। गोरे या तो जबर्दस्ती दुकानोंसे चीजें उठा ले जाते थे या बहुत कम दाम देते थे। लोगोंको जबर्दस्ती सेनामें भर्ती करनेके कारण ही असन्तोष उत्पन्न हुआ। मैंने बहुतसे आदमी तहसीलदारके सामने रोते और छाती पीटते देखे क्योंकि उनके लड़के उनकी इच्छाके विरुद्ध भर्ती कर लिये गये थे। सब लोग उनपर सहानुभूति दिखाते थे परन्तु कोई कुछ न कर सकता था।

गुरुकुलके गवर्नर ला० रलियारामका बयान ।

६ अप्रेलको शहरमें शान्तिपूर्ण हड़ताल रही। १४ अप्रेलको फिर हड़ताल मनायी गयी। स्टेशन पर एक ट्रेन पर पत्थर फेंकते देख मैंने गुरुकुलके हेडमास्टरसे सब दरवाजे बन्द करने· था। सब लड़के और अध्यापक भीतर रखे गये।

दुकानदार मथुरादास और मंगल सिंहका बयान।

मेरी दुकान गुरदित्तमल अमीनचन्दकी दुकानके पास है। एक दिन मैं सबेरे ८॥ बजे अपनी दुकानको आ रहा था। मैंने उपर्युक्त दुकानके चौकीदारकी लाश खूनसे सनी पड़ी देखी। अफवाह थी कि गोरोंने उसे मार डाला है। पुलिसके सामने मैंने ऐसा ही बयान दे दिया। गोरोंने हमारे बाजारमें घूमकर कवायद की थी। गोरोंने हम सब बाजारवालोंसे नालियां साफ करायीं। उनके पास बन्दूकें थीं इससे लोग उनका हुक्म मानते थे। मुझे भी नाली साफ करनी पड़ी।

अल्लादित्तका बयान।

१४ अप्रेलको मैं गुजरानवालाके मालगुदाममें अपने रिश्ते-दारोंको देखने गया था जिनके सम्बन्धमें मैंने तरह तरहकी अफ-वाहें सुनी थीं। जब मैं घर लौट रहा था मैं अचानक गिर पड़ा और २ मिनट तक बेहोश रहा। जब मुझे होश आया तो मुझे एक बड़ा घाव दिखायी दिया। जब मैं आगे बढ़ा तो मुझे १२ से १५ वर्षके चार लडके मरे दिखायी पड़े और दो आदमी घायल मिले। मैं अस्पताल भेजा गया और वहां मेरा पैर काटा गया ४॥ महीनेमें जख्म भरा। मुझे मालगुदाममें धूम मचानेके कारण दो वर्षकी सजा भी हुई थी। ५ अगस्त १९१९ को मैं छोड़ दिया गया।

गयी। शहरमें हुक्म हुआ कि जो कोई ५ बजेके पहले और शामको ८ बजेके बाद अपने घरसे बाहर दिखायी देगा वह गोलीसे मार दिया जायेगा। प्रत्येक हिन्दुस्तानीको युरोपियनको सलाम करना होगा। यदि ऐसा न किया जायगा तो सजा मिलेगी। सलामके समय बटन खुले न हों और जो सवारीपर हो वह नीचे उतर पड़े और खुला छाता न रखे। कमांडिंग अफसर सुबह शाम शहरमें घूमनेके लिये घोड़ेपर सवार होकर निकलता था। उसके साथ तीन चार आदमी रहते थे। जो सलाम न करता था उसे दण्ड दिया जाता था। सलाम न करनेवालेकी पगड़ी उतार ली जाती थी और वह उस पगड़ीके सहारे घोड़ेसे बांध दिया जाता था। इस तरह घोड़ेके साथ उसे भी भागना पड़ता था। वह साहबके सीमेमें बेतोंकी सजा पाता था। ३० बेततक लगते थे। यदि कोई इज्जतदार आदमी होता था तो उसे एक सौ रुपया जुर्माना देना पड़ता था। म्युनिसिपल कमिश्नरोंने गोरोंके खानेके लिये शहरसे मक्खन एकत्र किया। जिस घरमें गाय होती थी उससे एक छटांक और जिसमें भैंस होती थी उससे दो छटांक लिया जाता था। इस तरह २८ सेर मक्खन पहले दिन एकत्र किया गया। दो दिन इसी तरह हुआ। इसके बाद चेचककी बीमारी फैलनेसे मक्खन बन्द कर दिया गया। प्रत्येक घरको फिर एक रुपया हररोज देना पड़ता था। इस तरह सात हजार रुपये जमा किये गये। बहुतसे लोग बीचमें ही रुपया हजम कर गये। वजीराबादसे ६० हजार

रुपया हर्जानेके तौर पर लिया गया । ज़िससे हर्जाना लिया गया उसेरसीद्तक नहीं दी गयी । डिप्टी कमिश्नरके भयसे कोई शिकायत भी न कर सका । पुलिसने लड़कों और बदमाशोंके कहने पर लोगोंको बुलाया और जांच की । इस तरह निरपराध आदमी फंसाये गये । मार्शलला उठ जाने पर भी पुलिसने लोगोंको तङ्ग किया । गांवमें एक नामके ज़ितने आदमी मिले पुलिसने गिरफ्तार किये और कुछ रुपया लेकर पीछे उन्हें छोड़ दिया ।

सरदार जमीयतासिंहके पुत्र सरदार पुरुषोत्तमका बयान.

अप्रेलके प्रथम सप्ताहमें मेरे पिता करांची गये थे । वहांसे वे १० अप्रेलको लौटे । मेरे पिता जम्मू जानेवाले थे परन्तु वैसाखी मेलेके कारण रुक गये । मेरे पिताको कुछ आदमी १४ अप्रेलके दिन मसजिदकी सभाके लिये बुलाने आये और उन्होंने वहां पहुंच कर लोगोंके कहनेपर रालट बिलके विरुद्ध भाषण किया । उन्होंने हड़तालके पक्षमें अपनी राय न दी, परन्तु हड़तालका निश्चय हो गया । १४ या १५ अप्रेलको रातको मेरे पिताको डिप्टी कमिश्नरका नोटिस मिला कि अपने हथियार लेकर तहसील पहुंचो । मेरे पिता बन्दूक लेकर तहसील पहुंचे । वहां उन्हें हुक्म मिला कि लोगोंको उपद्रव करनेसे रोको । मेरे पिताने डाक बंगलेके पास जाकर भीड़ हटायी और इसके बाद वे घर वापस चले आये और फिर जम्मू चले गये । १६ अप्रेलको

शहरमे गिरफ्तारिया हुई । पुलिसने मेरे मकानकी तलाशी ली और मेरे सामने घरकी स्त्रियोंको गालिया दी। कहा गया कि तुमने जमीयत सिहको छिपा दिया है । तीन दिनतक हम लोग फटकारे गये। मैने कहा भी कि मेरा पिता जम्म गया है, परन्तु मेरी बात न मानी गयी और मुझे पुलिस कई थानोमे उनकी खोजमे ले गयी। २१ अप्रेलको डिप्टीकमिश्नरने हुक्म दिया कि मेरे पिताकी सारी जायदाद जब्त हो गयी। इसके बाद पुलिसको हुक्म मिला कि हम लोगोंको मकानसे बाहर निकाल दिया जाये। मकानमें उस समय चार औरते और ६ बच्चे थे। वे सबके सब मकानसे निकाल दिये गये। किसीको पहननेके लिये काफी कपडा न दिया गया। जो कपड़ा जिसके बदनपर था उसीके साथ वह निकाल दिया गया। कुछ लडके नगेही मकानके आगनमे खेल रहे थे। इस तरह एक लक्षाधीशका परिवार विना किसी मकान या आवश्यक वस्तुके सड़कोंपर मारा फिरता दिखायी दिया। किसीके पास एक पैसा भी न था। एक दयालु पड़ोसीने हमे रात को शरण दी। हमलोग सरकारको काफी इनकमटेक्स देते हैं और मेरे पिताने महासमरमे सरकारी लोन भी खरीदा था। इसके सिवा कई सरकारी सस्थाओको दान दिया था। जब मेरे पिताको वारण्टकी खबर लगी तो वे सीधे गुजरानवालामें पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टके सामने पहुचे। उनके हथकड़िया डाल दी गयीं और वे हाजतमें कर दिये गये। यद्यपि मेरे पिताने अपनेको [illegible]लको पुलिसके हवाले कर दिया था परन्तु जायदाद जब्त

करनेकी आज्ञा ४ मई तक रद न की गयी। १ जूनको पुलिसने लाहोरके लिये चालान किया परन्तु सरकारी वकीलने कहा कि कमीशनके सामने यह मामला न जाना चाहिये। पुलिसकी ओरसे गवाही कमजोर वतायी गयी। इसके वाद चालान वापस कर दिया गया और मेरे पिता गुजरानवाला वापस लाये गये। वहा वे हाजतमे रखे गये। मामलेमें वहुतसी गैरकानूनी वातें काममें लायी गयीं। इसके वाद डिप्टी कमिश्नरने मेरे पिताको डेढ सालकी कड़ी कैद और एक हजार रुपयेके जुर्मानेकी सजा दे दी। मेरे पिता जुर्माना न देकर ६ महीनेकी सख्त सजा भोगनेको तैयार थे परन्तु उनकी इच्छाके विरुद्ध जुर्माना वसूल कर लिया गया। गुजरानवाला जेलमें मेरे पिताके साथ जैसा वर्ताव किया गया वह एक राजनीतिक कैदीके उपयुक्त न था। मेरे पिता ६२ वर्षके वूढ़े हैं और वड़े कमजोर हैं। उनकी आखोंमें पीड़ा भी रहती है। मार्शललाके अन्य अपराधी जिनकी अवस्था ६० वर्षसे अधिक थी १७ सितम्वरको छोड दिये गये परन्तु मेरी प्रार्थनाओं पर कुछ भी ध्यान न दिया गया। मेरी दुकानसे हजार रुपयेसे अधिक हर्जाना भी वसूल किया गया। मार्शललाके दिनोमे सव लोगोंको युरोपियनोको उठ कर सलाम करनेका हुक्म दिया गया था। जो मक्खन लिया गया उसका कभी दाम न दिया गया। स्कूलके लड़कोंको लाइन वान्ध कर डाकवङ्गलेपर दिनमें तीन वार हाजिरी देनेके लिये जाना पड़ता था। गर्मीकी वजहसे लड़कोंको पैदल चलनेमें वड़ा कष्ट हुआ।

आर्यसमाजके प्रेसिडेण्ट श्रीयुक्त प्रियतमदासका बयान .

१४ अप्रेलको मैंने हड़तालके सम्बन्धमें भाषण किया था। १५ को तमाम शहरमें हड़ताल रही। तहसीलदारने मुझे बुलाया और हड़तालका कारण पूछा। मैंने कहा कि बाहरसे जो आदमी आये हैं उन्होंने हड़ताल चाही है। यहांतक धमकी दी गयी है कि यदि हड़ताल न की जायेगी तो दुकानें लूट ली जायेंगी। मैं अपने घर चला गया। इसके बाद मुझे खबर मिली कि उपद्रवियोंने आग लगा दी है। १५ को जो सभा हुई उसमें रालटबिलका विरोध किया गया। १६ को मैं गिरफ्तार किया गया और गुजरानवाला जेल भेजा गया। २ जूनतक मैं यहां रखा गया। इसकेबाद मैं लाहोर भेजा गया और वहांसे फिर गुजरानवाला लाया गया। पुलिसने मेरे गवाहोंको धमका दिया था इससे मैंने मुकद्दमेकी पेशीके दिन न तो गवाह पेश किये और न वकील ही खड़ा किया। पुलिस इन्सपेक्टरकी मुझसे दुश्मनी थी क्योंकि उसपर मैंने फौजदारी मामला चलाया था। मुझे दो वर्षकी सजा हुई। एक हजारका जुर्माना भी हुआ। मेरे लड़कोंने वर्तन और कपड़े बेचकर जुर्माना अदा किया। हम लोग जिस समय बेड़ियों समेत लाहोर भेजे गये बहुतसोंके खून निकल पड़ा था। गुजरानवालामें हमें बड़ी कठिनाईसे पीनेके लिये पानी मिला।

ला० ठाकुरदासके पुत्र ला० दीवानचन्दका बयान।

मार्शल ला जारी होनेके दूसरे दिन मै अपनी दुकानपर बैठा हुआ था। दो मोटरें मेरी दुकानके सामनेसे निकलीं जिनपर पांच सैनिक अफसर सवार थे। मैंने उन्हें सलाम किया। उनका ध्यान उस समय मेरी तरफ न था। दो दुकानोंके बाद मोटरें खड़ी हुईं। मैं बुलाया गया, और मुझसे कहा गया कि तुमने सलाम क्यों नहीं किया। मैंने कहा कि मैंने तो किया है। आपने मेरी तरफ देखा नहीं। इसपर उन्होंने मुझे एक मोटरमें बिठा लिया। एक और आदमी भी इसी तरह बिठाया गया। हम दोनों डाक बंगलेपर पहुचाये गये। वहां हम दोनोंको पांच पांच बेत खाने पड़े। पन्द्रह दिनके बाद मैं थानेमें बुलाया गया और मेरा नाम पता लिख लिया गया तथा मेरे अंगूठेकी निशानी भी करा ली गयी। मैं फिर दुबारा बुलाया गया और कई आदमियोंके साथ मेरे अंगूठेकी निशानी ली गयी।

ला० ईश्वरदासके पुत्र ला० दीवानचन्दका बयान।

५ मईको मैं गुजरानवालासे वजीराबाद लौट आया। मैं शामको ५ बजे तीन और आदमियोंके साथ एक तांगेमें बैठा हुआ लौट रहा था। मार्शलला अफसर एक मोटरमें हम लोगोंके पीछे आ रहा था। मेरे तांगेसे पास मोटर खडीकी गयी। ज्योंही मोटर खडी हुई हम सब तांगेपरसे उतरे और साहबको सलाम किया। उसने कहा कि मैंने तुमको सलाम करते नहीं देखा। मैंने कहा हुजूर, मैं तो सलाम कर चुका हूं। उसने मेरा नाम लिख लिया

और मुझे हुक्म दिया कि मैं डाक बङ्गलेपर हाजिर होना। मैं डाक बङ्गलेपर गया और मुझे पांच बेत खानेकी सजा हुई। मैंने प्रार्थनाकी कि मुझपर बेत न पड़े। तब मुझे पांच सौ रुपया जुर्माना देनेका हुक्म हुआ। मैंने अदा कर दिया।

म्युनिसिपल कमिश्नर शेख मुहम्मद हुसैनका बयान।

वजीराबादमें ६ अप्रेलको हड़ताल नहीं मनायी गयी क्योंकि यहा विशेष राजनीतिक जागृति नहीं है। डा० सत्यपाल वजीराबादके निवासी हैं। १२ को उनकी गिरफ्तारीकी खबर महात्मा गाधीकी गिरफ्तारीके साथ वजीराबाद पहुची। १३ अप्रेलको मैं गुजरानवालासे वजीराबाद पहुचा। लोगोंको हड़ताल न मनानेपर लज्जित किया गया। बाहरसे भी बहुतसे आदमी आये हुए थे। १५ को हड़ताल मनायी गयी। उसी दिन शामको सात आठ बजेके करीब तहसीलदारने सब म्युनिसिपल कमिश्नरोंको बुलाया। मैं जरा देरसे पहुचा। १६ को मै फिर डिप्टी कमिश्नरद्वारा बुलाया गया। मुझसे कहा गया कि तुमने पादड़ीके मकानमे आग लगाकर बडा बुरा काम किया। मेरे हथकडिया पहना दी गयीं। मैंने पूंछा कि ऐसा क्यो किया जा रहा है। मुझसे कहा गया चुप रहो मत बोलो। मैंने कहा कि मैं इन्साफ चाहता हू। इसपर कहा गया कि चुप रहो नहीं तो गोली मार दी जायेगी। अमरचन्द भी बुलाया गया और उसे भी हथकड़िया पहना दी गयीं। इसके बाद हम लोग सिपाहियोंसे घेर लिये

गये और हमारे आगे पीछे मेशीन तोपे कर हम लोग सारे शहरमें घुमाये गये और अन्य २ आदमी गिरफ्तार किये गये। हम लोग शामको गुजरानवाला जेलमें भेज दिये गये। वहां हमें अपने घरका भोजन पानेका हुक्म नहीं दिया गया और न कपड़ा बदलनेकी ही आज्ञा दी गयी। ३० अप्रेलको मुझसे सरकारी गवाह बननेके लिये कहा गया।

१ जूनको हम लोग लाहोर भेज दिये गये। इसके बाद वहांसे फिर लौटा दिये गये। लौटनेके बाद हम लोग इतने छोटे कमरेमे रखे गये कि हमें तमाम रात खड़ा रहना पड़ा। ६ जूनको हमें गवाह पेश करनेका हुक्म दिया गया। हमें यह भी नहीं बताया गया कि हमने क्या अपराध किया। ९ जूनको हमारा मामला पेश हुआ। उस दिन हमारे गवाह भी नहीं बुलाये गये। मामला सवेरे ही चलने लगा और गवाह साधारण समयपर उपस्थित हुए। फिर उनके बयान ही नहीं लिये गये। हमारे वकीलोंको पैरवी करनेकी आज्ञा नहीं मिली। दो घण्टे मामला चलने बाद फैसला सुना दिया गया। इस बीचमें ८० गवाहोंके बयान भी ले लिये गये। चारको दो वर्ष और एकको ६ महीनेकी सजा दे दी गयी। ९ जून मार्शल लाकी अन्तिम तारीख थी इसीसे इतनी जल्दी की गयी। जेलमें हम लोगोंको तरह तरहके कष्ट भोगने पड़े। गुजरानवाला स्टेशन पर हम सब तीस आदमी एक छोटेसे डिब्बेमें भर दिये गये थे। पुलिसके पहरेदार भी इसी डिब्बेमें बैठे थे। इससे हम

लोगोंका दम घुटने लगा। एक आदमी बेहोश भी हो गया। इस पर हम लोग उस डिब्बेसे निकाल लिये गये और हमें कोयलोंके ढेरोंपर सोनेको कहा गया। मैं अब छूट गया हूं। अधिकारी मुझपर इतने नाराज थे कि जब एक मामला उन्हें कमजोर दिखायी दिया तो मुझपर दूसरा मामला चला दिया गया। मेरे विरुद्ध डिप्टी कमिश्नरने शिकायत की और लिखा कि मैं म्युनिसिपल कमिश्नरीसे वञ्चितकर दिया जाऊं। उनकी सिफारिश पर मैं वञ्चितकर दिया गया।

हकीमरायका बयान .

५ जूनको मुझसे कहा गया कि डिप्टी कमिश्नरने हुक्म दिया है कि वह आदमी गिरफ्तार कर लिया जाये जिसका आर्य्य समाजसे सम्बन्ध हो। इसीसे मेरी खोज की जा रही है। मैंने थानेदारको एक सौ रुपया देकर सन्तुष्ट किया। इसके बाद कहा गया कि पुलिस इन्सपेक्टर मुझे गिरफ्तार करेंगे। मैंने रुपया न रहनेपर एक हेण्डनोट लिख दिया। मुझसे कहा गया मार्शल लाके दिनोंमें आप वजीराबादमें न रहें। मैंने ऐसाही किया। मार्शल ला उठ जानेपर मैं वजीराबाद लौटा। मुझे पीछे पता लगा कि शहरके बहुतसे आदमियोंसे पुलिसके एजेण्टोंने रुपया वसूल किया।

गोपालसिंहका बयान .

६ जूनको मैं गुजरानवालाके डिप्टी कमिश्नरके सामने पेश था। मैं व्यर्थ ही गिरफ्तार किया गया। मुझे

एक घण्टा भी अपना बयान देनेके लिये न दिया गया। मुझसे निरपराध मनुष्योंको फंसानेके लिये कहा गया था परन्तु मैंने साफ इन्कार कर दिया। मुझे तीन महीनेकी सजा और दो सौ रुपयेके जुर्मानेका दण्ड मिला था। फैसला सुनाये जानेके एक घण्टा पहले मुझे मेरा अपराध बताया गया। गवाहोंके बयानतक नहीं लिये गये। मेरी गैरहाजिरीमे मेरी स्त्रीसे जबर्दस्ती जुर्माना वसूल कर लिया गया। मुझसे हर्जाना भी लिया गया।

निजामाबाद।

६० वर्षके बूढ़े अब्दुल्लाका बयान।

निजामाबादमें दो कान्सटेबलोंने दो आदमियोको ठोकर मारकर नीचे गिरा दिया था। एककी तो गर्दन दबायी गयी और दूसरेके चूतड़ोंपर जूते पड़े। चूतडोंपरका कपड़ा हटा दिया गया था। उनसे कान्स्टेबल कह रहे थे कि लूटका माल लौटाओ। थानेदार भी मौजूद था। आदमी कह रहे थे कि हमने कुछ नहीं लूटा। १२ अप्रेलके आसपास जब कि मै मिर्जा विहार बेगके कुएं की ओर जा रहा था मैने देखा कि गोरे सिपाही २० वर्षके नव जवान लड़के जवाहर गोली दाग रहे हैं। वह भी कुए की तरफ जा रहा था। लड़केसे गोरोंने ठहरनेको कहा था। वह डरके मारे न ठहरा और भागा। भागनेपर उसके कन्धे मे गोली लगी और वह तुरन्त मरकर गिर पड़ा। गोरे उसकी लाश २० कदम घसीटकर ले गये। उसकी गर्दनकी

चारों ओर पगड़ी बांधकर वह घसीटा गया। गोरे लाशको झाड़ीके पास छोड़ आये। लड़केके पास कुछ खानेकी चीजें थीं वे गोरोंने खायीं। लड़केके पास दस रुपयेका एक नोट भी था वह भी उन्होंने छीन लिया। यह भयानक दृश्य देखकर मैं डेराको लौट आया। तुरन्त ही दस पन्द्रह गोरे बन्दूकें लिये डेरामें आये और मुझे पासमें ही मिर्जाके मकानमें घसीट ले गये। खास दरवाजा भीतरसे बन्द था इस लिये एक सिपाही दूसरे सिपाहीके कन्धेपर चढ़कर दीवालसे भीतर कूद गया और उसने दरवाजा खोल दिया। इस बीचमें और सिपाही भी इधर उधर धूम मचाने लगे। बहुतसे दीवालोंसे चढ़कर छतपर पहुंच गये। इसके बाद दो तीन गोरे मिर्जाके जनाने घरके दरवाजेको अपनी बन्दूकोंके सिरोंसे तोड़ने लगे। मुझे अपनी जानका खतरा दिखाई दिया इससे मैंने भीतरके आदमियोंको जोरसे बुलाना शुरू किया कि दरवाजा खोल दो। दरवाजा खुलनेके पहले ही एक गोरेने जोरसे धक्का लगाया और दरवाजा खुल जानेसे मिर्जाकी एक बूढ़ी दाई गिर पड़ी जो दरवाजा खोल रही थी। गोरोंने कहा कि खानेको दो। मैं जनानेमें नहीं घुस पाया इस लिये मुझे नहीं मालूम कि वहां क्या हुआ। वे भीतर एक घण्टे तक रहे और लम्बरदार मिर्जा अल्ताफअलीको पकड़कर एक मोटरमें बिठाकर ले गये। इस दिनसे यहांका प्रत्येक आदमी जो १२ वर्षसे अधिक उम्रका था वजीराबादके सदर थानेमें बुलाया जाता था और

हममेंसे प्रत्येकसे पुलिस पूछा करती थी कि डाक बंगला जलानेवालेका नाम बताओ। तमाम दिन कड़ी धूपमें हम सबको वहां रहना पड़ता था और शामको वापस आना पड़ता था।

अल्ताफअली लम्बरदारका बयान।

मैं इस गावका लम्बरदार हूं। वजीराबादसे जो लोग आये थे उनके भयसे यहां १० अप्रेलको कुछ हड़ताल हुई थी। मुझे उन दिनों बुखार रहता था। १६ अप्रेलको मिर्जा मुबारकअली मेरे सामने गिरफ्तार किये गये थे। पहले मैं भी गिरफ्तार किया गया था परन्तु पीछेसे छोड़ दिया गया। १८ अप्रेलको एक स्पेशल सैनिक गाड़ी लाहोरकी तरफसे आकर इस गांवके सामने खड़ी हो गयी। गाव घेर लिया गया और गांवकी सोधमें एक मेशीनगन बिठायी गयी। मेरे आदमी सरकारी हुकमसे रेलवे लाइनकी रक्षा कर रहे थे। सिपाहियोंने उनसे बन्दूकें छीन लीं। गोरे मेरे मकानके जनाने घरमें दीवालोंसे कूदकर घुस आये। जनाने घरमें सभी स्त्रियां पर्दानशीन थीं। उन्होंने हाथ जोडकर गोरोंसे दयाके लिये प्रार्थना की और कहा कि हम लोग बे कसूर हैं। मैं बीमारीकी हालतमें बाहर निकला। मुझसे अफसरने कहा कि हमें दो मन आटा दो टीन घी और कुछ आलू चाहिये। जो दुकानें सामने पड़ीं उनसे यह सामान दाम दिये बिना ही ले लिया गया। मुझे वे रेलपर वजीराबाद ले गये। मेरे सामने एक विद्यार्थी पीटा गया। उसकी उम्र १७ वर्षकी थी। वह भी वजीराबाद पहुचाया गया। मैं पुलिसके हवाले कर दिया

गया। तमाम दिन हम सबको सदर थानेमें हाजिर होना पड़ता था और खानेको कुछ न मिलता था।

अकलगढ़ ।

दीवान निरंजनदासका बयान ।

६ अप्रेलको यहां अपने आपही हड़ताल हुई थी। सभामें उसी दिन रालट एक्टकी निन्दा की गयी थी। सरकारसे एक्टको रद्द करनेकी प्रार्थना की गयी थी। १४ अप्रेलको फिर अपने आप हड़ताल हुई। महात्मा गान्धीकी गिरफ्तारीकी खबर सुनकर लोगोंने हड़ताल की थी। उस दिन कुछ लड़के स्टेशनकी तरफ 'रालट बिल हाय हाय' कहते हुए आये थे। १५ अप्रेलको एक तार कटनेकी खबर मिली। डिप्टी कमिश्नरने इसके लिये गांववालोंपर यह जुर्माना किया कि वे शहरसे नहरके पुलतक मोटरकी सड़ककी मरम्मत करा दें। उसी दिन रुपया वसूल करनेका हुक्म दिया गया। इसके दो तीन दिन बाद गिरफ्तारियां शुरू हो गयीं। २३ अप्रेलको घुड़सवारोंने घूमकर गिरफ्तारियां कीं। चार आदमियोंका उसी दिन चालान किया गया। ११ मईको तमाम गांववाले थानेमें बुलाये गये और आम सड़कपर बिठाये गये। इसके बाद थानेदारने तमाम गांववालोंको बदमाश बताया और कहा गया कि तुम लोग अपनी बेटियोंके साथ भी नाजायज सलूक रखते हो। १६ मईको लोगोंको डरानेके लिये डाक बंगलेपर एक मेशीन तोप दागी गयी। लोगोंसे जबर्दस्ती रुपया छीन लिया गया। झूठी गवाहियां दिलवायी

यीं और निर्दोष आदमी तङ्ग किये जाने बाद पीछेसे छोड दिये
थे ।

संगला ।

बालमुकुन्द व्यापारीका बयान ।

मेरा सात वर्षका भतीजा ईश्वरदास एक हिन्दी पाठशालामें पढ़ता था । मार्शल लाके दिनोंमें सब लडकोंको दिनमें चार बार हाजिरी देनी पडती थी । इससे मेरा भतीजा भी जाया करता था । गर्मीके मौसममें सब लडके धूपमें खडे रखे जाते थे । मेरा भतीजा कई दिन हाजिरी देने गया । इसके बाद बीमार पड गया । जब वह घर लौटा करता था बडा उत्तेजित रहता था और गर्मीके कारण बराबर पानी पीता जाता था । ३ मईको उसे हैजा हो गया और ७ मईको मर गया । मेरा दूसरा भतीजा भी बीमार पड गया था परन्तु वह बच गया । पहला भतीजा इसीसे मर गया कि उसे कडी धूपमें खडा होना पडा जो उसे असह्य हो गया ।

सरदार सन्तसिंहका बयान ।

मेरा लडका हरिसिंह अपने सम्बन्धियोंके साथ सङ्गलामें कफनका कपड़ा खरीदने आया था जब कि मार्शल ला उठ चुका था । लौटते समय उसने बहुतसे आदमियोंका जमाव नहरके पुलपर देखा । हरिसिंहने नहरमें नहानेवाले कमाडिङ्ग अफसरको न देखा । उसकी घोडी जमाव देखकर भागी । कमांडिंग

अफसर घोड़ेपर सवार होकर उसके पीछे दौड़ा। मैं भी पीछे दौड़ा। थोड़ी देरमें मैंने साहबको लौटते देखा। मैंने उसे सलाम किया। साहबने पूछा कि यह कौन लड़का था। मैंने जवाब दिया कि मेरा लड़का है। बाकी अपने आप ही जमावको देखकर भाग गयी थी। मुझे हुक्म दिया गया कि जबतक अपने लड़केको हाजिर न करोगे घोड़ी नहीं लौटायी जायेगी। मैंने कहा कि हम लोग अपने भाईकी लड़की और लड़केके लिये कफ़न खरीदने आये हैं जिनकी लाशें घरमें पड़ी हैं। साहबने एक बात भी न सुनी। मुझे पैदल ही अपने गांवको जाना पड़ा और मैं अपने लड़केको लाया। रातके ८॥ बजे वह साहबके हवाले किया गया। साहबने उसे फौजी अदालतके सपुर्द कर दिया और मेरी घोड़ी लौटा दी। दूसरे दिन डाकृरने मेरे लड़केकी परीक्षा की और उसके पाच बेत लगवाये।

बसन्तराम मेवाफरोशका बयान।

१६ मईको मैं सरायमें थानेदारद्वारा बयान देनेके लिये बुलाया गया। मैं तमाम दिन वहां रखा गया। २५ आदमी और भी पुलिस हाजतमें रखे गये। गिरफ्तारीके समय हम लोगोंको टट्टी पेशाबकी भी आज्ञा न मिलती थी जबतक कि हम कुछ दाम न खर्च करते थे। हम लोग हर रोज दो रुपया दिया करते थे। २३ मईको मैं बुरी तरह पीटा गया क्योंकि मैंने झूठी गवाही देनेसे साफ इन्कार कर दिया था। मैं तमाम बाजारमें घसीटा गया और थाने पहुचाया गया। मुझपर एक

तीन दिनतक मुझे लगातार धूपमें पड़ा रहना पड़ा जिससे मैं बहरा हो गया।

लच्छमनदास हलवाई, लालचन्द, जीवनमलका बयान।

मार्शल लाके दिनोंमें सराय फौजी अफसरोंका हेडक्वार्टर बनी थी। जबतक वे वहां रहे उन्होंने एक भी मुसाफिरको नहीं घुसने दिया। हम लोगोंके पास सरायका ठेका है। इस लिये हमें घाटा सहना पड़ा। अफसर हमारी दुकानोंसे सामान लेते थे इससे हमें रातदिन हाजिर रहना पड़ता था। यदि हम जरासी देरके लिये गैरहाजिर होते थे तो हमें गालियां सुननी पड़ती थीं। आखिरको हम लोग दुकानमें ही रहने लगे और वहींपर सोते भी थे। एक दिन रातके समय हम लोगोंके पास एक सिख नौकर आया और उसने डिप्टी साहबके लिये दूध मांगा। मैं दुकानमें बत्ती जलाकर दूध देनेके लिये गया। इसपर हम दोनों लालचन्द और जीवनमल गिरफ्तार कर लिये गये। हम लोगोंने कहा कि रोशनीके बिना किस तरह दूध दिया जा सकता था। यदि हम लोग दूध न देते तो भी गिरफ्तार किये जाते। हमारी बातपर कुछ ध्यान न दिया गया और मार्शल ला अफसर हमें अपने साथ कर ले गये। इसी बीचमें हम लोगोंका बड़ा भाई पाससे उठकर आया और वह भी गिरफ्तार कर लिया गया। हम लोग पुलिसके हवाले किये गये और कहा

गया कि इन्हे थानेमे वन्द रखना। दो दिन हाजतमें रहकर तीसरे दिन हम लोग जमानतपर छूटे। पाच दिनके वाद हम लोग फिर वुलाये गये और हमपर पचास पचास रुपया जुर्माना किया गया। हमें पाच पाच वेतको सजाका भी हुक्म मिला। हमारा भाई लक्ष्मनदास तो डाक्टरोंके कहनेपर वेतकी सजासे मुक्त कर दिया गया परन्तु उसका जुर्माना दूना कर दिया गया। हम लोगोंके जिस समय वेत लगे हम लोग विल्कुल ही नङ्गे कर दिये गये थे और हमारे चूतडोंपर वेत लगाये गये थे।

डा० करमसिंह नन्दाका बयान।

मार्शल ला जारी होनेपर मुझे हर रोज हाजिरी देनी पडती थी। इस कारण मुझे अपना दवाखाना वन्द करना पडा। एक दिन हम सव दोपहरकी कडी धूपमें खड़े किये गये और हमें खाने पीनेके लिये कुछ नहीं दिया गया। वहुतसे आदमी वेहद गर्मीसे वेहोश हो गये। मैं भी वेहोश हो गया। शामको हम सब १८० आदमी पुलिस हाजतमे रखे गये। हम सबको भूखे प्यासेही रातको हाजतमे सोना पडा। ६ दिनतक हम सव हाजतमें वन्द रखे गये। अन्तमे हमलोग किसी प्रकारके प्रमाणके अभावमें छोड़ दिये गये। हम लोगोंके साथ व्यर्थ ही ज्यादती की गयी। झूठी गवाहीपर मुझे धूपमें खडा रहना पडा और हाजत की तकलीफ भोगनी पडी। गर्मीके दिनोमें इतने ज्यादा कैदियोंके लिये पानी तक का कोई प्रवन्ध न किया गया था। इससे वहुतसे आदमी वीमार पड गये। कुछ आदमियोंके स्वास्थ्यपर गर्मीका इतना

भयानक प्रभाव पड़ा कि वे स्वस्थ ही नहीं हुए। अधिक गर्मीके कारण मैं भी बीमार पड़ गया था और मेरा दिमाग चकराने लगा था। मुझे बहुतसे डाक्टरोंका इलाज कराना पड़ा। मेरा रुपया भी ज्यादा खर्च हुआ। मैंने सरकारके बहुतसे कामोंमें मदद देकर सार्टीफिकेट पाये, परन्तु मैं उनसे कुछ भी लाभ न उठा सका। मेरे साथ बड़ा अन्याय किया गया। मैं बिना किसी अपराधके गिरफ्तार किया गया और मुझे हथकड़िया पहननी पड़ीं।

करतारसिंह, गेंदासिंह, ठाकुरसिंह, फौजदारसिंह वजमदारसिंहका बयान।

७ ८ मईको सवेरे ६ बजे कुछ गोरे सिपाही हमारे गांवमें आये। हम लोग गिरफ्तार कर लिये गये और हमें कपड़ा पहननेको भी आज्ञा नहीं दी गयी। हम लोगोंके हाथ रस्सियोंसे पीछेकी तरफ बांधे गये। हाथ बांधते हुए गोरोंने गेंदासिंहकी अंगूठी उतार ली। इसपर हम चारोंने अपनी अंगुलियोंमेंसे जो कुछ था सब निकालकर छिपा लिया। हम लोगोंके कपड़े उतरवा लिये गये थे इससे हमें जाड़ेमें बड़ा कष्ट सहना पड़ा। उस समय वर्षा भी हो रही थी। हम लोगोंपर गोरोंने गर्म चाय छोड़ी और मांसकी हड्डियां भी हमारे धर्मका ख्याल न कर हमारे ऊपर फेंकीं। जो लोग हमसे मुलाकात करने आते हमारे लिये भोजन लाते थे वे डराये जाते थे और उन्हें

सङ्गीन भी दिखाये जाते थे। पांच दिन हम लोग थानेमें रखे गये। इसके बाद छोड़ दिये गये। हमें गिरफ्तारीका कारण भी नहीं बताया गया। हमारी फसलोंको गिरफ्तारीके कारण बड़ी हानि पहुची।

मानसिंहका बयान।

मार्शल ला के दिनोंमें मेरे बेटे अर्जुनसिंहको भी हाजिरी देनेके लिये जाना पड़ता था जो एक हिन्दी पाठशालामें पढता था और जिसकी उम्र पाच छः वर्षके लगभग थी। वह धूपमें खड़ा किया जाता था। दो दिन लगातार हाजिरी देने बाद वह बीमार पड गया। मैंने बहुत चाहा कि मेरा लड़का हाजिरी देने न जाये परन्तु हुक्म था कि यदि लड़का हाजिरी देने न पहुचेगा तो उसका बाप कैद कर लिया जायेगा इससे मैं डरकर उसे हाजिरी देनेको भेजता रहा। लड़का चार पांच दिन हाजिरी देने गया। लड़के घण्टे दो घण्टे धूपमे खड़े रखे जाते थे। एकदिन मेरा लड़का शामको ४ बजे लौटा और डरकर बोला कि साहब लोगोको पकड़ रहा है। वह बहुत डरा हुआ था। डाक्टर बुलाया गया और लड़का दस बजे मर गया। हम लोगोंके चार घरोंमें यही एक लड़का था। लडका धूप और गर्मीके कष्टसे ही मर गया। लड़कोंको दिनमें बार बार हाजिरी देने जाना पड़ता था।

हाफिजाबाद ।

सरकारी पेन्शनर सरदार मेवासिंहका बयान ।

१९०५ में पेन्शन लेकर मैं हाफिजाबादमें स्थायी रीतसे निवास करने लगा। कर्नल ओब्राइनने इस जिलेमें रङ्गरूट भर्ती करनेमें बड़ी निर्दयता दिखायी। रङ्गरूट हाफिजाबादकी तहसीलमें लाकर रखे जाते थे। उनके रिश्तेदार बाहर खड़े रोया करते थे। पुलिस कान्सटेबल उन्हें बुरी तरह पीटा करते थे। स्त्रियां बराबर रोकर कहा करती थीं कि लाट मर गया जो हमारी बात नहीं सुनी जाती। रङ्गरूट भर्ती करनेवाले धनी आदमियोंको रङ्गरूट दाम लेकर दिया करते थे और धनी आदमी उन रङ्गरूटोंको सरकारके हवाले कर देते थे। धनी आदमियोंको रङ्गरूट न देनेपर फी रङ्गरूट तीन सौ रुपया देना पड़ता था। जिलेदार रङ्गरूट भर्ती करने वालोंसे रङ्गरूट छीनकर धनी आदमियोंके नामसे उन्हें दर्ज करा देते थे और फिर उन धनियोंसे जुर्मानेका रुपया लेकर अपनी जेबें गरम करते थे। जो आदमी बेचारी विधवाओंका रोना सुनता था वह आंसू बहाये विना न रहता था। यही अत्याचार अशान्तिका कारण था। और भी कड़ाइयां की गयी थीं। २१ अप्रेलको मैं विना किसी वारण्टके गिरफ्तारकर लिया गया। २२ को जिला मजिस्ट्रेटकी सहीसे वारण्ट तैयार किया गया। मैं दो दिनतक हाफिजाबादकी हवालातमें रखा गया जो बहुत ही गन्दी थी। एक ही ... २३ आदमी भर दिये गये थे। उनमें मुश्किलसे चार

सौ रुपया जुर्माना कर दिया गया। पुलिसने मेरी दया प्रार्थनाकी अर्जीकी भी सुनाई न होने दी। पुलिसने लोगोंको धूम मचानेसे रोका नहीं बल्कि उन्हें उल्टी सहायता पहुंचायी। पुलिस यदि अपना कर्तव्य पालन करती तो कभी दङ्गा न होता। सार्वजनिक सम्पत्तिको यद्यपि कुछ रुपयेकी ही हानि पहुंचायी, परन्तु गावसे ६ हजारका जुर्माना वसूल किया गया। पुलिसका भी व्यय देना पडा जिससे जनताको बडा कष्ट पहुचा।

ला० रूपचन्द चोपडाका बयान।

डिप्टी कमिश्नर कर्नल ओब्राइनने लडाईके दिनोंमें गुजरानवाला जिलेसे रंगरूट पानेमें बडी कड़ाई की। हाफिजाबाद आनेपर उन्होंने कहा 'मैं लूंगा, मैं लूंगा, मैं लूंगा।' लोग पीटे जाने लगे और उन्हें तरह तरहसे तङ्ग किया गया। जिन समाचारपत्रोंमें शिकायतें छपीं उनको पञ्जाबमें आनेसे रोका। १७ अप्रेलको मैं एक गावसे हाफिजाबाद लौटा। उस समय किसी तरहकी अशान्ति न थी परन्तु १६ अप्रेलको अचानक मार्शल लाकी घोषणा कर दी गयी। २१ अप्रेलको कई इज्जतदार आदमी पकडे गये। ३० अप्रेलको कर्नल ओब्राइनने हाफिजाबाद पहुंचकर ऐसी धूम मचवायी कि लोग बुरी तरहसे भयभीत हो गये। लाला मथुरादास तहसीलदार अच्छे आदमी होनेके कारण बदल दिये गये। मुंसिफ भी बदले गये और जिलादार बर्खास्त किये गये। पुलिस अफसर भी बदले गये। ३० अप्रेलकी रातको मुनादी पिटायी गयी कि डिप्टी कमिश्नरका हुक्म है कि जो पागबन्द हैं सुबह

वालेसे कहा गया कि इसे ठीक करो। मुझे उसने झूठ बोलनेके लिये फुसलाया। मैं तैयार न हुआ। मुझसे कहा गया कि जो आदमी हाजतमें हैं उन्हींका नाम ले दो। मैंने कहा कि मुझे परमेश्वरके सामने जवाब देना होगा। मैं झूठ नहीं बोल सकता। मैं लड़कोंका नाम ले रहा था और मुझसे बताये हुए नामोंको लेनेके लिये कहा जा रहा था। अन्तमें नागे वालेने डिप्टी साहबसे कहा कि यह आदमी तैयार नहीं होता। डिप्टी साहबने मुझे बुलाकर गालियां दीं और कहा कि इसे हथकड़िया पहनाओ। सन्तरीने मुझे समझाया कि लामूशाह नागरका नाम ले दो तो छोड़ दिये जाओगे। मेरे हाथोंमें आध घण्टे तक हथकड़िया रहीं और मैं पीटा गया। मैं हाजतमें भेजा गया। मुझसे डिप्टी साहबने कहा कि अब भी समय है। यदि न मानोगे तो जेल भेज दिये जाओगे। इन धमकियोंके बाद मेरी हथकड़िया खोल दी गयीं। डिप्टी साहबने मुझे अपनी बगलमें कुर्सी देकर कहा कि अपनी रक्षा करो। एक पुराना सन्तरी भी मुझे समझाने लगा परन्तु मैं झूठ बोलनेके लिये तैयार न हुआ। डिप्टीने मेरे एक तमाचा लगाया और जो कुछ मैंने बोला न लिखा। वे यही कहते रहे कि जो नाम बताये गये हैं उन्हींका लो। मैं फिर भी तैयार न हुआ। मैं यही कहता रहा कि कुछ हिन्दू मुसलमान लड़कोंने मेरा सामान लूटा है। डिप्टी बहुत नाराज हुए और मुझे बाहर निकाल दिया। मुझे दूसरे दिन हाजिर होनेके लिये हुक्म दी दिनके बाद मैं फिर बुलाया गया। थानेदारने

फिर मुझपर दबाव डालना शुरू किया। इसके बाद १३,१४ १५ अप्रेलको मैं सरकारी गवाह बनकर लाहोर गया। मेरे लौटनेपर मैं चार दिनतक पुलिस इन्सपेक्टरके बंगलेमें बिठाया गया। शामको घर जाकर मुझे सवेरे लौटनेका हुक्म दिया गया था। अन्तमें लाचार होकर मैंने एक हिन्दूका नाम ले दिया जिससे मेरी कुछ अनबन थी। इसपर मैं छोड़ दिया गया। दस बारह दिनके बाद मैं फिर बुलाया गया। सब इन्सपेक्टरने मुझे पीटा जब कि मैंने उसके बताये हुए नाम न लिये। अन्तमें डि-प्टीको एक सो रुपया देकर मैं छुटकारा पा गया। मैं लाहोर गवाही देने गया। मेरे लौटनेपर डिप्टी कमिश्नरने हाफिजाबादका दौरा कर कई आदमी गिरफ्तार किये। मार्शल ला उस समय उठा दिया गया था। ईश्वरकी कृपासे मैं बच गया। जो आदमी पकड़े गये उन्हें दण्ड दिया गया।

वेजीरामकी विधवा निहाल देवीका बयान।

मेरा लडका दयाल सिंह १४ अप्रेलको सवेरेकी गाड़ीसे वजीराबाद वैसाखी मेला देखनेके लिये गया था। वह १५ अप्रे-लकी शामको वापस चला आया। दूसरे दिन एक पुलिस कान्सटेबल आया और उसे बुलाकर थानेमें ले गया। पुलिसने उसे धमकाकर झूठी गवाही देनेके लिये कहा। उसने कहा कि मैं तो हाफिजाबादमे उस दिन था ही नहीं। मुझे मालूम नहीं कि यहा क्या हुआ इससे मैं गवाही कैसे दे सकता हूं। जब वह एक हफ्तेतक तङ्ग किया गया तो अन्तमें लाचार हो वह झूठी

गवाही देनेके लिये तैयार हो गया परन्तु पीछेसे फिर उसने इन्कार कर दिया। फिर वह गिरफ्तार कर लिया गया। लाहो-रमें फौजी अदालतने उसे आजीवन कालेपानीका दण्ड दे दिया। मेरा लडका ही सहारा था क्योंकि मैं विधवा हूं। मेरा लडका सब तरहसे निरपराध था। उसकी अवस्था केवल १८ वर्षकी है। उसका बहुत अच्छा चालचलन है। मैंने अपने लडकेसे जो कुछ सुना वही इस बयानमें कहा है।

हेडमास्टर ला० गंगारामके पुत्र रामसहायका बयान।

६ अप्रेलको देशकी इच्छानुसार हाफिजाबादमें पूरी हड़ताल मनायी गयी। एक सभा भी की गयी थी जिसमें कुछ समयके लिये मैं उपस्थित हुआ था। उसमें रालट बिलका शान्तिपूर्ण ढङ्गसे विरोध किया गया था। १४ अप्रेलको फिर हडताल मनायी गयी जब कि लाहोर-अमृतसरकी खबरें हाफिजाबाद पहुचीं। १५ को फिर हडताल रही और तहसीलपर चोट हुई। २१ अप्रेलके पहले दो तीन गिरफ्तारियां हुईं परन्तु उस तारी-खको बहुतसी गिरफ्तारिया की गयीं। मैं भी उसी दिन गिरफ्तार किया गया था। पहले दिन हम लोग जेलकी कालकोठरीसे न तो बाहर निकाले गये और न बाहर टट्टी पेशाब करनेकी आज्ञा मिली। कालकोठरीमें पहलेकी टट्टी और पेशाबकी भयकर बदबू [illegible] रही थी। हम लोगोंको भी उसीके भीतर जाना

पड़ा । २३ को हमलोग कालकोठरीसे निकाले गये और गुज-रानवाला जेल भेजे गये। मेरी अनुपस्थितिमें मेरे मकानकी तलाशी ली गयी। उस समय घरमें मेरे दो छोटे भाई, मेरी स्त्री, माता और बहन थी। पुलिसको कोई फंसानेवाली चीज नहीं मिली। वह केवल तीन किताबें उठा ले गयी जो महात्मा गान्धी और लो० तिलकके जीवनचरित्र और मि० दासकी बनायी हुई एक पुस्तक थी। १५ दिनके बाद मैं फिर हाफिजाबाद जेलको लौटाया गया। मुझपर सरकारी गवाह बननेके लिये दबाव डाला गया। मुझे धमकी दी गयी कि तुम फांसीपर लटका दिये जाओगे और तुम्हारी जायदाद भी जब्त कर ली जायेगी या तुम्हें जिन्दगी भरके लिये कालेपानीका दण्ड होगा। मैंने अपने पिता और धर्म-शिक्षकसे सलाह ली और यह बात तय की कि सत्यसे ही काम लिया जायेगा। मुझसे पुलिसने कहा कि कह देना कि नेताओंने खून-खराबीमें भाग लिया या नहीं इस बातको मैं जानता ही नहीं। मैंने बयानमें नेताओंका जिक्र ही नहीं किया यद्यपि मैं जानता था कि उन्होंने किसी तरहकी खूनखराबीमें भाग नहीं लिया। २१ मईको हम लोग फिर हा-फिजाबाद लाये गये। वेश्याएं और निम्न श्रेणीके लोग हम सब-की सनाख्त करने आये। इस बार हम लोग जेलमें जगह न रहनेसे बाहर आफिसके कमरोंमें रखे गये थे। हम सबको रात दिन हथकड़ी पहने रहना पडता था। दलके दल एक साथ ही टट्टी जाया करते थे और एक दूसरेको नङ्गा देखते थे। दो

दो आदमियोंको एक साथ हथकड़िया पहनायी गयी थीं और दोनोंको उसी अवस्थामें एक साथ ही टट्टी जाना पड़ता था। रातको हम लोग हथकड़ियां पहनकर ही सोते थे। २३ अप्रेल को मैं एक हजारकी जमानतपर छोड़ा गया। चार दिन बाद डिप्टी कमिश्नरने मुझे बुलाया और कहा कि तोबा करो। मैं निरपराध था परन्तु मैंने वैसा ही किया। मैं सरकारी गवाह बनाया गया था।

हुकुम देवीका बयान।

मेरा लड़का देशराज इस समय जेलमें है। उसका यही कसूर था कि उसने सरकारी गवाह बननेसे साफ इन्कार कर दिया। इसपर वह मार्शल लाके दिनोंमें गिरफ्तार कर लिया गया। जिस दिन वह पकड़ा गया उसी रातको पुलिस इन्सपेक्टरका एक कान्सटेबल मेरे पास आया और उसने कहा कि तुम अपने लड़केको वापस पा सकती हो यदि दो हजार रुपया दो। मैं बड़े चक्करमें पड़ी क्योंकि इतनी बडी रकम कहा मिल सकती थी। जब मैं रुपया न दे सकी तो मेरे लड़केका चालान कर दिया गया। मुझसे कहा गया कि यदि रुपया दे दो तो तुम्हारे लड़केका चालान न हो। मैं कुछ न कर सकी और मेरे लड़केको जिन्दगी भरकी सजाका दण्ड मिल गया। पीछेसे वह घटा कर एक वर्षका ही कर दिया गया।

खालसा हाईस्कूलके विद्यार्थी हरनामसिंहका बयान।

१४ अप्रेलको हड़ताल मनायी गयी थी। उसदिन एक छोटा लड़का काला झण्डा लेकर निकला था। और भी बहुतसे छोटे छोटे लड़के उसके पीछे थे। बशीर अहमदने स्कूलमें आकर लड़कोंको पहचाना। उसने लड़कोंके साथ बेहुदा मजाक किया। मैंने बशीर अहमदके विरुद्ध रिपोर्ट कर दी और उसे हुक्म मिला कि वह स्कूलमें न घुसने पाये। अनायतुल्ला उसका ससुर है। उसने मेरे विरुद्ध शिकायत की और मैं अन्य दो छात्रोंके साथ गिरफ्तार कर लिया गया। मैं काफी सबूत देकर छुटकारा पा गया परन्तु पीछेसे झूठी गवाही देनेके लिये बुलाया गया। मैंने कहा कि मैं सच बोलूंगा। इसपर मुझे गालियां दी गयीं और मुझे अपने धर्मके विरुद्ध तमाखू पिलायी गयी। तमाम दिन मुझे धूपमें खड़ा रहना पड़ा। हेडमास्टरके विरुद्ध गवाही देनेके लिये मुझसे कहा गया परन्तु मैं तैयार न हुआ। मुझे कालेपानी भेजनेकी धमकी दी गयी। कई आदमी छोड़ दिये गये जिन्होंने सरकारी गवाह बनना स्वीकार किया।

रामनगर।

ला० गोविन्दसहायका बयान।

६ अप्रेलको रामनगरमें भी हड़ताल मनायी गयी। १५ अप्रेलको न तो कोई हड़ताल ही हुई और न बादशाहका जनाज़ा

ही निकाला गया। ६ मईको गिरफ्तारियोंकी धूम मची। १७ मईको डिप्टी कमिश्नर रामनगर पहुंचे। कई आदमी उनके हुक्मसे गिरफ्तार किये गये। ११ जूनको हम लोग छोड़ दिये गये जब कि हम लोगोंने अपनी नाकसे जमीनपर लकीरें खींचीं। इस तरह हमसे तोबा कराकर हमे छोड़ा गया।

अली अकबरखांका बयान।

१५ अप्रेलको रामनगरमें हड़ताल नहीं हुई। कुछ लड़के शामको 'हाय हाय रालट बिल' करते हुए नदीकी तरफ गये थे। लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ जब कि कहा गया कि रामनगरमें बादशाहका जनाजा निकालकर जलाया गया। रामनगरमें ऐसी कोई बात नहीं हुई। रामनगरका मामला आपसकी दुश्मनीके कारण ही खड़ा किया गया।

रामनगरके मामलेके सरकारी गवाह भगवानदासका बयान.

नदीके किनारे बादशाहका कोई जनाजा नहीं जलाया गया। लड़के 'हाय हाय रालट बिल' करते हुए शहरको लौटे। २४ अप्रेलको मलिक साहबखां रामनगर आये और वे चार रईसोंको अकलगढ़ अपने साथ ले गये। उन्होंने बालमुकुन्दको धमकाया कि यह मार्शल लाका ज़माना है। तुम गोलीसे मारे जा सकते हो। ... अपना कसूर पूछा इसपर वे और भी बिगड़े।

लोगोंसे झूठा बयान देनेके लिये कहा गया। जब वे तैयार न हुए तो उनको अपमानित किया गया। ६ मईके सवेरे एक सरकारी गवाह मेरी दुकानपर मुझे बुलाने आया। मैंने सब इन्सपेक्टरके पास पहुचकर वहा १५।१६ आदमी गिरफ्तार देखे। थानेदार मुझे एक तरफ ले गया और मुझसे बोला कि बादशाहका जनाजा जलानेका मामला तैयार किया गया है तुम्हें गवाही देनी होगी। मैंने कहा कि मैं नहीं दे सकता। इसपर मुझे धमकाया गया कि तुमको जेल जाना पड़ेगा। मुझपर फिर भी दबाव डाला गया परन्तु मैंने इन्कार किया। इसपर मेरे हाथोंमें हथकड़ियां डाल दी गयीं। मुझे खाने पीनेको कुछ नहीं दिया गया। अन्तमें लाचार होकर मैं गवाही देनेके लिये तैयार हो गया। एक बार मैं फिर अकलगढ़ बुलाया गया और मेरा अपमान किया गया। किसीने कह दिया था कि मैं गवाही न दूंगा। इसके बाद मेरी गवाही ली गयी। जब मैं सच्ची बातें कहने लगा तो मैं धमकाया गया। मुझे अपने अंगूठेकी निशानी उस बयानपर करनी पड़ी जो अफसरोंने तैयार किया था। १७ मईसे २१ मई तक मैं पुलिसकी देखरेखमें रखा गया। २२ को मुकद्दमा पेश हुआ। एक लिखा हुआ बयान डिप्टी कमिश्नरके सामने पढ़ा गया और कहा गया कि यह इस आदमीका बयान है। मैं उसका विरोध डरके मारे न कर सका डिप्टी कमिश्नरने मुझसे कुछ नहीं पूछा और उस बयानको स्वीकार कर लिया। वास्तवमें न कोई जनाजा निकाला गया था

और न दफ्तर जलाया ही गया था। आपसकी दुश्मनीसे झूठा मामला खड़ा किया गया। मैं यह बयान किसीके फुसलानेसे नहीं दे रहा हूं।

चुहारकाना।

टोडरमलका बयान।

११ अप्रेलको यहां मसजिदमें हिन्दू मुसलमानोंकी सभा हुई थी। ईश्वरसे प्रार्थना की गयी था कि रालट एक्ट रद्द कर दिया जाये। १२ अप्रेलको सब दुकानें बन्द रहीं। सरकारके विरुद्ध कोई बात सभामें नहीं कही गयी। १५ अप्रेलको रेलवे लाइनपर कुछ उपद्रवियोंने चोट की और स्टेशन जला दी। मेशीन तोप आयी और वह दागी गयी। एक मोची तुरन्त मर गया और कई आदमी घायल हुए। एक और मेशीनगन आयी और उसने चुहारकाना गांवकी तरफ गोले बरसाये। चार पाच गोरे सिपाही गांवकी तरफ रवाना हुए। कई आदमी मरे और कई घायल हुए। २८ अप्रेलको मैं सियालकोटमें गिरफ्तार कर लिया गया। वहांसे चुहारकाना लाया गया और फिर लाहोरकी जेलको रवाना किया गया। २३ मईको मार्शल ला कमीशन द्वारा छोड़ दिया गया। सनाख्तके समय मि० वासवर्थ स्मिथ कहा करते थे कि मैं सिर्फ बड़े आदमी ही चाहता हूं। ये गन्दी मक्खियां हैं। मैं साधारण आदमी नहीं चाहता।

हवेलीरायका बयान ।

फकीरचन्द मेरा चचा है। एक दिन वह घरपर कुछ चीजें बेच रहा था। २ बजेके करीब शहरमें ट्रेन आयी। सब कोई कह रहा था कि स्टेशनमें आग लग रही है। मैं घर गया और फकीरचन्दसे कहा कि माल बेचना बन्द करो। हम लोगोंने किवाड़ बन्द कर लिये और भीतर बैठ गये। १२ बजे लाहौरकी तरफसे एक गाड़ी आयी और दो तीन बार मेशीनगन दागी गयी। मैं डरके मारे घर छोड़कर चला गया और फकीरचन्द अपने गांव चला गया। दस बारह दिनके बाद सरदार करतार सिंह एक हवलदारके साथ आये और पूछने लगे कि फकीरचन्द कहा है। मैंने कहा कि वे बोतला गये हैं। मुझे उसे लानेका हुक्म हुआ और बिना किसी गवाही या सबूतके उसे एक सालकी कड़ी सजाका हुक्म दे दिया गया। फकीरचन्दको पहले सेनामें भर्ती करनेके लिये बहुत कहा गया था परन्तु वह भर्ती न कराया गया। उसकी जगहपर तीन सौ रुपया खर्चकर एक दूसरा आदमी भर्ती कराया गया था। दस पन्द्रह दिन मेरा घर और दुकान बन्द रही और मुझे दूसरोंके यहां जाकर भोजन करना पड़ा। मण्डीकी बहुतसी दुकानोंकी तलाशी ली गयी। गोरोंने लोगोंको तरह तरहसे तङ्ग किया। वे दुकानोंमें घुसकर जो चाहते थे उठा ले जाते थे।

---

६० वर्षके गनपतमलका बयान .

१५ अप्रेलको स्टेशन जलायी गयी। उसी दिन खबर लगी कि गोरे मेशीन तोपें ले आये हैं। वे रातको ११-१२ बजे दागी गयीं। लोगोंको भय हुआ कि तमाम गांव जलेगा इसलिये वे डरकर मकान छोड़कर भागे। १६ अप्रेलको मेशीनगनें गांवकी सीधमें पास ही लगायी गयीं और दागी गयीं। गोरे गावमें घुसे और छिपे हुए लोग डरकर भागने लगे। इसी समय मेशीन तोपें दागी गयीं। तीन आदमियोंके गोली लगी। मेशीनगनसे बहुत देरतक गोलिया चलीं और लोग इधर उधर भागते रहे। १७ अप्रेलको भी तोपें दागी गयीं और लोग घायल हुए। जो लोग दरवाजे बन्दकर छिपे हुए थे वे भयभीत किये गये। गोरोंने सङ्गीनोंसे उनके किवाडोंमें छेद किये। वे मकानोंमें घुस पडे और सब सामान बाहर निकाल दिया। स्त्रियोंको गालियां दी गयीं। उनसे कहा गया कि यदि अपने आदमियोंको हाजिर न करोगी तो मार पडेगी। फौजने खेतोंपर भी धावा किया और गेहूंकी सारी फसल नष्ट हो गयी। १८-१९ अप्रेलको लंगडा साहब मि० वासवर्थ स्मिथने गावमें चक्कर लगाया और सब लोगोंको दरबारमें हाजिर होनेका हुक्म दिया। उन्होंने कहा कि हाजिर न होनेसे घर जला दिये जायेंगे और जायदाद जब्त कर ली जायेगी। दरबारमें जो लोग नहीं पहुचे उनकी स्त्रियां बुलायी गयीं और उनसे कहा गया कि अपने आदमियोंको हाजिर करो। यदि न करोगी तो तुम्हारे मकानोंमें आग लगा दी जायगी

और जमीन जब्त कर ली जायेगी। जो गैर हाजिर थे उनके भाई पिता गिरफ्तार किये गये। जो हाजिर थे उन्हें खेतमें जाकर गेहू काटनेसे मना किया गया। पटवारीको हुक्म दिया गया कि वह देखे कि कोई आदमी खेत काटकर अपने पशुओंका पेट तो नहीं भरता। इस तरह पशु इधर उधर मारे फिरे और फसल नष्ट हो गयी। इसके बाद बहुतसे आदमी गिरफ्तार हुए और कैद किये गये। कोई आदमी कुछ भी न कह सकता था। जो कहता था उसे मुंह बन्द रखनेका हुक्म मिलता था। कहा जाता था कि तुम मक्खी हो। चुप रहो। माशल लाके कारण गोरोंने हम लोगोंको बहुत सताया। वे जो चीज चाहते थे उठा ले जाते थे। हमारे बकरे, मुर्गियां, दूध सभी कुछ छीन ले जाते थे। पुलिसवाले आकर बिछौने ले जाते थे। मेरा लड़का दो वर्ष पहले थानेदारने पकड़ लिया था। वह उसे सेनामें भर्ती करना चाहता था परन्तु मैंने दो सौ रुपये एक दूसरे आदमीको देकर अपने लड़केकी जगह उसे भर्ती करा दिया।

उजागरसिंह बढ़ईका बयान।

वैसाखके १२ वें या १३ वें दिन मैं बन्दहोक अपनी आखोंके लिये दवा खरीदने गया था। मैं वहां गिरफ्तार कर लिया गया। मुझे १० बेतकी सजाका हुक्म मिला। मैं एक पेड़से बांधा गया और मेरे दोनों हाथ पेड़से लपेटे गये। मेरे पैर एक रस्सेसे बांधे गये और रस्सा पेड़की जड़में बांधा गया। फिर मुझपर

बेत लगाये गये। जब पाच बेत लग चुके तो साउयने कहा कि नये सिरेसे बेत लगाओ, क्योंकि हलकी चोट लगी है। इस तरह मेरे दो दर्जनके लगभग बेत लगे। मेरे घाव हो गये। जिस सम्बन्धीके यहां में ठहरा था वह गिरफ्तार किया गया और उसको तीन महीनेकी जेलकी सजा दी गयी। मैं एक हफ्ते तक हाजतमें रखा गया। इनके बाद मेरा चालान कर दिया गया। जब कोई मुझे न पहचान सका तो मैं छोड दिया गया। महात्मा गान्धीने इस आदमीके चूनडपर दाग देखे थे।

शेखूपुरा ।

गोसाई मायाराम वकीलका बयान ।

६ अप्रेलको यहा पूरी हडताल रही। उस दिन सभा भी की गयी थी जिसमे सरकारी कर्मचारी भी रिपोर्ट लेनेके लिये उपस्थित थे। रिपोर्टमें बताया गया कि सभा शान्तिपूर्ण थी और व्याख्यान उत्तेजनाजनक न थे। १४ अप्रेलको फिर हडताल रही। लाहोरकी घटनाओंके कारण यह हडताल हुई थी। उपद्रवियोंने १४-१५ अप्रेलकी रातको तार काट डाले। किसीने उन्हें न देख पाया। मैं १५ अप्रेलको ही शेखूपुरा लौटा था। मेरे लौटने बाद शेखूपुरामें किसी तरहकी गडबड़ नहीं हुई। १६ वींके सवेरे अचानक ही डिप्टी कमिश्नर, सबडिवीजनल अफसर तथा गोरे सैनिकोंने भरी बन्दूकों और नङ्गे सङ्गीनोंके साथ धावा कर दिया और गिरफ्तारियोंकी धूम मचा दी।

१५ इज्जतदार आदमी पकड़े गये। हम लोग बाजारमें और सड़कोंपर घुमाये गये। इसके बाद बाजारमें गन्दे स्थानपर बिठाये गये। यदि किसीने बैठना स्वीकार न किया तो वह जबर्दस्ती बिठाया गया। गोरे सिपाही हंसते थे और वे राहपर हम लोगोंको अंग्रेजीमें गालियां देते रहे। सबेरे गिरफ्तारियां होनेसे हम लोग काफी कपड़ा भी नहीं पहने हुए थे। किसीके बदनपर केवल कमीज और धोती थी। हम लोगोंको कपड़े मंगानेका हुक्म नहीं दिया गया। स्टेशनपर हम लोग पहुंचाये गये और वहां भी हमें जमीनपर बैठना पड़ा। ६ आदमी लाहोर भेजे गये और बाकी शेखूपुराकी हाजतमें रखे गये।

हम लोग जब ट्रेनमें रवाना किये गये तो हमें डिब्बेमें नीचे फर्शपर बिठाया गया यद्यपि बैठनेके लिये बेञ्चें भी थीं। सरदार बूटासिंहने उसी दिन जुलाब लिया था। वे पेशाबके लिये आज्ञा मांगते ही रह गये परन्तु उन्हें न दी गयी। जब हम सबने एक साथ प्रार्थना की तो सिपाहियोंने कहा कि क्या वह हजम नहीं कर सकता। हम सबको जो कष्ट उठाना पड़ा वह असह्य था। हम लोग दोपहरको रेलवे स्टेशनपर पहुंचे और उसी समय हाजतमें कर दिये गये। हम लोग एक कमरेमें रखे गये जिसमें टट्टी पेशाबकी भयङ्कर बदबू आ रही थी। लाहोरमें सरदार बूटा सिंहको दो घण्टे बाद पेशाब करनेकी आज्ञा दी गयी। हाजतमें [illegible] पहले हम लोगोंकी टोपियां, पगड़ियां और चश्मे छीन लिये गये। सिपा[illegible] अपनी पगड़ियोंको शिरपरसे [illegible] दे[illegible]

बड़े दुखी हुए । हम लोगोंको बताया भी नहीं गया कि हमारा क्या अपराध है। लाहोरमें हम लोग भूखसे व्याकुल हो रहे थे परन्तु पुलिसने हमें कुछ नहीं दिया। ३ बजे हम लोग लाहोरकी सदर जेलको भेजे गये। जेलके भीतर हम लोगोंको एक बरामदेमें बिठाकर हथकड़ियां पहनायी गयीं। जेलमें हमें मालूम हुआ कि अवसर प्राप्त पुलिस इन्सपेक्टर सरदार गौहरसिंह जेलमें बन्द हैं क्योंकि उनके दो लड़के गिरफ्तार नहीं किये जा सके। शामको वे न जाने किसके हुक्मसे छोड़ दिये गये। ४० दिनतक हम लोग कालकोठरियोंमें बन्द रखे गये। २६ मईको हम लोग लाहोरकी जेलसे निकाले गये और शहरमें हथकड़ियों समेत घुमाये गये। इसके बाद छोड़ दिये गये। जेलके कष्ट वास्तवमें असह्य थे। जेलका भोजन पशुओंके अनुकूल था मनुष्योंके खाने योग्य न था। हम लोग दिन भरमें एक घण्टेके लिये कालकोठरियोंसे निकाले जाते थे। कभी कभी यह एक घण्टा भी न मिलता था।

ला० उशनकराय वकीलका बयान।

मैं ६ वर्षसे वकालत कर रहा हूं। मैं दो गावोंका पुश्तैनी जमीदार हूं। मेरे पास काफी जायदाद है। ६ अप्रेलको शेखूपुरामें अपने आप हड़ताल मनायी गयी। १४ अप्रेलको फिर हड़ताल मनायी गयी। इसके बाद किसीने तार काट दिये। मैंने अधिकारियोंको शान्तिस्थापनमें पूरी मदद दी। १६ अप्रेलको मै अचानक गिरफ्तार कर लिया गया। मुझे अपना दरवाजा बन्द न [illegible] या कपड़े पहननेकी आज्ञातक न दी गयी। मैं गन्दी

जगहमें विठाया गया। मैं वैठना न चाहता था परन्तु अपमानित करनेकी गरजसे मैं जवर्दस्ती विठाया गया। हम लोग लाहोर भेजे गये और वहां दो घण्टेतक हाजतमें रखे गये। हाजत मनुष्योंके योग्य न थी। उसमे वड़ी भयानक वदवू आ रही थी। उसमें टट्टी पेशाव भी पड़ी थी। हाजतके वाहर हम लोगोंके जूते और पगडिया छीन ली गयीं। सिखोंने पगडियां उतारनेका घोर विरोध किया। किसीके विरोधपर कुछ भी ध्यान नही दिया गया। तमाम दिन हमें भोजन भी नहीं दिया गया। हम लोगोंके हथकडियां पहनायी गयीं और दो दो आदमी एक साथ रखे गये। जेलमें हमें शामको भोजन दिया गया। हम लोगोंपर वड़ा कडा पहरा रखा गया। हम लोग ४० दिनतक कालकोठरियोंमें रहे। हमे नहीं मालूम हुआ कि हम किस अपराधपर हाजतमें रखे गये। हम लोग शेखूपुरामें एक मजिस्ट्रेटके सामने छोडे गये। मेरी लम्बरदारी बिना कारण ही छीनी गयी और मेरी अपील न सुनी गयी। वकीलोंके चालचलनकी जांच उनकी गैरहाजिरीमें की गयी। वे उस समय जेलोंमें थे।

सरदार बूटासिंहका वयान ।

मैं ३० वर्षका हूं। मैंने वारलोन भी खरीदा था। मैं जिलेकी युद्धसमितिका मेम्वर भी था। मैंने २५ आदमी भर्ती कराये थे। शेखूपुरामें ६ और १४ अप्रेलको हड़ताल मनायी गयी। १६ अप्रेलको मैं दवा खाकर अपनी चारपाईपर लेटा हुआ था। मैं गिरफ्तार कर लिया गया। हमलोग २५ गोरोंके पहरेमें रखे गये

जिनके पास बन्दूकें थीं। हमलोग शहरमें घुमाये गये और अपने गाववालोंके सामने गन्दी जगहमें बिठाये गये। इसके बाद हम लोग दूनी तेजीसे रेलवे स्टेशन पहुंचाये गये। राहमें हम लोगोंका मजाक उड़ाया गया और हम लोग लाठीसे पीटे गये। मैं बीमारीके कारण सबके साथ तेजीसे नहीं दौड़ सकता था। लाहोर जाते समय मुझे पेशाब करनेकी आज्ञा नहीं दी गयी। ४० दिनतक हम लोग कालकोठरियोंमें रखे गये। शेखूपुरा लौटते समय मेरे हाथ एक चौकीदारकी पगडीसे दूसरे वकीलके हाथोंसे बाधे गये। इसके बाद हम लोग छोड़े गये।

अलमुद्दीन वकीलका बयान।

मेरा अपमान करानेके लिये ही रायसाहब श्रीराम सूदने मुझे गिरफ्तार कराया। उनके कोर्ट इन्सपेक्टरने मुझसे यह बात कही। मैं चालीस दिनतक जेलमें रखकर छोड़ा गया। राय साहब श्रीराम सूदकी अयोग्यतासे ही सब उत्पात हुआ। वे उपद्रवके समय अपने परिवार समेत शेखूपुरासे किलेको चले गये थे और वहा कोई आदमी न जा सकता था। सरदार गौहरसिंह केवल दुश्मनीके कारण गिरफ्तार किये गये। दङ्गेके दिन वे शेखूपुरामें भी न थे।

सरदार गौहर सिंहका बयान।

मैं पेन्शन पानेवाला पुलिस इन्सपेक्टर हू। मैंने ३८॥ वर्ष नौकरी की। मैं ६२ वर्षका हू। २२ मईको मैं हथियार

चला गया था और ११ अप्रेलको वहासे लौटा। मैं नहीं कह सकता कि इस बीचमें क्या हुआ। १६ अप्रेलको मेरे तीन लड़कोंकी खोज की गयी। उस समय वे घरमे न थे। मैं उसी समय गिरफ्तार कर लिया गया और सदर जेलको रवाना किया गया। राहमें मुझे बड़ा कष्ट दिया गया। मैं अपने तीन लड़कोंके बदलेमे पकड़ा गया था। शामको मैं लाहोरमे छोड़ दिया गया। घर लौटनेपर मुझे अपने घरका ताला बन्द मिला। मेरे घरवाले और पशु उससे निकाल दिये गये थे। दो लडके गिरफ्तार हो गये थे। वे दोनों अपने आप ही गिरफ्तारीके लिये पहुच गये थे। तीसरा लड़का भी उपस्थित हो गया था। मेरे आनेके पहले ढोल पिटवाकर घोषणा करा दी गयी थी कि मैं अपनी फसल न काटूं। यदि काटूं तो या तो गोलीसे मार दिया जाऊं या कैद कर लिया जाऊंगा। मेरी जायदाद भी जब्त होनेको थी यदि मेरे लड़के पकडे न गये। मेरे लडकोंकी जायदाद जब्त करनेके अतिरिक्त यह आज्ञा दी गयी थी। आठ दिन मेरा घर बन्द रखा गया। इसलिये हम लोगोंको इधर उधर मारा मारा फिरना पड़ा। खेतों और घरकी चारों तरफ पुलिसका पहरा बिठा दिया गया था। पूरी देखरेख न होनेसे हमारी फसलकी बड़ी हानि हुई। १७ मईको मैं फिर गिरफ्तार किया गया और ३० को छोड़ दिया गया। मैं नहीं जानता कि मुझे यह कष्ट क्यों दिया गया। मेरे हथकड़ियां डाली गयीं और इसी हालतमें मैं तमाम शेखूपुरामें घुमाया गया। थानेके सामने जो दरबार हो रहा था उसके

सामनेसे में निकाला गया और चारो तरफ कड़ी धूपमे घुमाया गया। डिप्टी कमिश्नरने मेरे प्रति बड़ा बुरा वर्ताव किया। उन्होंने मुझे गालियां दी। बिना किसी सूचनाके मेरी लम्बरदारी छीन ली गयी और मेरी पेन्शन भी बन्द कर दी गयी। मेरे दोनों लड़कोंको पुश्तैनी नौकरीसे हटा दिया गया। वे पुलिस अफसर थे।

ज्ञानचन्दका बयान ।

१६ अप्रेलको १३ आदमी गिरफ्तार किये गये। सरदार गोहरसिंह तथा अन्य आदमियोंके मकानोंकी तलाशी ली गयी। मेरे मकानकी भी तलाशी ली गयी क्योंकि वह उनके पास ही था। १४ मईको हकीमशाह कान्स्टेबलने आकर मुझसे कहा कि राजासाहबने मिस्री मगायी है। जब मैं नीचे आया तो उसने कहा कि तुमको थानेदार साहबने थानेमें बुलाया है। मैं उसके साथ गया। उस समय मैं कपड़ा भी अच्छी तरह नहीं पहने हुए था। थानेमें मुझसे पांच सौ रुपया मांगे गये। न देनेपर मैं तमाम रात मैदानमें खड़ा रखा गया। चार चौकीदार पहरा लगाये खड़े थे। मैं यदि बैठनेकी तैयारी करता तो वे मारनेको तैयार हो जाते। १५ अप्रेलको मैं तमाम दिन तङ्ग किया गया और शामको हाजतमें दे दिया गया। मुझपर मामला चला और मैं चार वर्षकी कड़ी सजा पा गया जो अपीलमें रद्द हो गयी। ...ने ...क जेलमें रहना पड़ा और एक सौ रुपया जुर्मानेका

देना पड़ा। यह कष्ट मुझे इसीलिये भोगना पड़ा कि मैं सरदार गौहरसिंहका रिश्तेदार था।

सरदार प्रीतमसिंह वकीलका बयान।

१६ अप्रेलकी शामको शेखूपुरामे मार्शल लाकी घोषणा की गयी। सब-डिवीजनल अफसर रायसाहब श्रीरामसूदने घोषणा पढ़ी थी। उन्होंने कहा कि मुझे अधिकार है कि यदि तुम लोग दुबारा हड़ताल करो तो तुम्हें गोलीसे मार दूं। उन्होंने कई इज्ज-तदार आदमियोंकी ठोढ़ीमें अपनी लकड़ीसे चोटें कीं। स्कूलके लड़कोंको दिनमें दो बार हाजिरी देनेके लिये उपस्थित होना पड़ा जिनमें पांच वर्षके भी बालक शामिल थे। अप्रेलके अन्तमें बहुतसे गोरे और हिन्दुस्तानी सिपाही मेशीन तोपों समेत शहरमे सरका-रकी ताकत बतानेके लिये घूमे। लोगोंको एकत्रकर कहा गया कि जो कोई सरकारके विरुद्ध काम करेगा वह इन तोपोंका निशाना बनाया जायेगा। तोपोंके गोलोंसे छिदे हुए लोहेकी चद्दरोंके टुकड़े सबको दिखाये गये। इसके बाद सब लोग धूपमें एकत्र किये गये जिनमें और वकील भी शामिल किये गये जो पकड़े नहीं गये थे। वकील अन्य आदमियोंसे अलग किये गये और दो कता-रोंमे खड़े किये गये। सामनेकी कतारमें वे वकील खड़े किये गये जिन्होंने ६ अप्रेलकी सभामे भाग नहीं लिया था और पिछली कतारमे सभामें भाग लेनेवाले खड़े किये गये। मि० बासवर्थ-स्मिथने वकीलोंको ओर खास इशारा करते हुए अपना व्याख्यान शुरू किया। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तानके आदमियोंने वकील

कमीना है। उन्होंने सरकारके विरुद्ध बलवा किया और भोले जमींदारोंको अपने जालमें फसाया। मुझसे उन्होंने कहा कि तुम्हारा पिता स्कूल मास्टर था और तुमने लाहौरके क्रिश्चियन कालेजमें शिक्षा पायी। तुम फिर सरकारके विरुद्ध आन्दोलनमें कैसे भाग लेने लगे। उन्होंने मुझे अन्य वकीलोंके सामने छोटा कीड़ा बताया। उन्होंने सब लोगोंके सामने सरदार गोहरसिंहको नङ्गे पैर नङ्गे शिर हथकड़ियों समेत घुमाया। उन्होंने कहा कि गोहरसिंह सरकारका नमकहराम नोकर है। उसके तीन लड़के जेल भेजे गये हैं। सरकार उसकी पेन्शन जब्तकर उसे बर्मा भेजेगी। उन्होंने फिर सब लोगोंसे कहा कि तुम लोग गन्दी मक्खी हो, तुम सुअर लोग हो। उन्होंने जमीनपर थूककर कहा कि काला लोग, गन्दे लोग, सब एक रङ्गका। सबने दुकानें बन्दकर सरकारके विरुद्ध बलवा किया। उन्होंने कहा कि तुम लोग कभी वकीलोंकी बातमें न आना। वे हमेशा धोखा दिया करते हैं। २८ मईको मि० बासवर्थ स्मिथ राजा फतहसिंहके मकानमें ठहरे हुए थे। वहां सब आदमी ढोल पिटवाकर बुलाये गये और उनसे बागमें झाड़ू दिलायी गयी। शहरके इज्जतदार आदमियोंको भी झाड़ू लगानी पड़ी। नेता बुलानेपर भी वहां नहीं गये थे।

ला० ठाकुरदासका बयान।

शेखूपुरामें मि० बासवर्थ स्मिथने इज्जतदार लोगोंसे भी एक बगीचा साफ कराया। उन्हें मेहतरोंका काम करना पड़ा।

मुझे कुछ आदमियोंका काम देखनेका हुक्म दिया गया था। मि० वासवर्थ स्मिथने एक तोवागाह बनानेके लिये भी कहा था और मुझसे कहा था कि तुम्हें एक हजार रुपया देना होगा।

पन्द्रहवां अध्याय।

लायलपुर।

ला० वोधराज वकीलका बयान।

मैं २२ वर्षसे वकालत कर रहा हूं। मैं लायलपुरकी जिला कांग्रेस कमेटीका अध्यक्ष हूं। मैं पञ्जाब नेशनल बेङ्कका डाइरेक्टर भी हूं। ६ अप्रेलको लायलपुरमें हड़ताल हुई थी और सम्राट्से प्रार्थना की गयी थी कि रालट विल रद्द किया जाये। १३ अप्रेलको महात्मा गान्धीकी गिरफतारीकी खबरसे लायलपुरमें फिर हड़ताल हो गयी। १५ अप्रेलके २ बजेतक हड़ताल जारी रही। १७ अप्रेलको सरकारी बालमें कारखानेकी चिनगारी गिरनेसे आग लग गयी। किसी उपद्रवीने आग नहीं लगायी थी। मार्शल ला जारी करनेकी कोई जरूरत न थी। २२ अप्रेलको मैं अन्य दो वकीलों तथा ६ इज्जतदार आदमियोंके साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफतारीके समय सारा शहर घेर लिया गया था और मेशीन तोपें रख दी गयी थीं। गिरफ्तारियोंका मतलब यही था कि जिन्होंने सभाओंमें भाग लिया वे अपमानित किये जायें। हम लोगोंको गिरफतारीका कोई कारण नहीं बताया गया।

हम लोगोंकी जमानतें यह कहकर मञ्जूर न की गयीं कि भयानक अभियोग लगाया जानेवाला है। हम लोग १६ जूनतक हाजतमें रहे और भारतरक्षा कानूनके अनुसार चार सालकी कड़ी सजा और एक सौ रुपया जुर्मानेका दण्ड दिया गया। २४ जूनको हम लोग लाहोर भेजे गये। हम लोगोंको साधारण अपराधियोंके समान हथकड़ियां पहनायी गयीं। हम लोग अदालतमें १० बजेसे ७ बजेतक खड़े रखे गये और हमें अपने खर्चपर भोजन भी नहीं दिया गया। लोगोंको यह भी नहीं मालूम हुआ कि हमारा क्या अपराध है। कोई कागज पत्र भी नहीं दिखाया गया। हम लोग जेलतक मीलों पैदल ही भेजे गये। बेड़ियां भारी होनेके कारण पैरोंसे खून भी निकलने लगा। अपील करनेपर हम लोग निर्दोष बताये गये। कांग्रेस और आर्यसमाजसे सम्बन्ध होनेके कारण मैं तङ्ग किया गया। पञ्जाबके अधिकारी शिक्षित मनुष्योंसे बहुत जलते हैं।

ला० भगतराम वकीलका बयान।

२२ अप्रैलको मैं गिरफ्तार किया गया। मुझे नहीं बताया गया कि मैंने क्या अपराध किया है। अदालतमें हम लोग हथकड़ियां पहनकर ही दिनभर खड़े रहे और दण्ड पानेपर लाहोर जेल पैदल भेजे गये। हमारे पैरोंसे खून बहने लगा। जेलमें हम लोगोंको हथकड़ियां बेड़ियां पहनकर ही सोना पड़ता था। लायलपुरमें किसी तरहका षड्यन्त्र या गदर न था, परन्तु ही मार्शल ला जारी किया गया।

ला० गोपालदासका बयान .

मैं तारघरमें चपरासीका काम डेढ़ वर्षसे करता हू। मैं एक तार कमाडिङ्ग अफसरको देकर जब लौटने लगा तो मैं वापस बुलाया गया। मुझसे कर्नलने कहा कि तुमने सलाम क्यो नहीं किया। मैंने कहा कि मैं तो सलाम कर चुका हू। कर्नलने कहा कि नहीं तुमने सलाम नही किया। इसपर मेरा नाम पता लिख लिया गया। २७ को मैं गिरफ्तार किया गया। मुझे पाच वेत खानेका हुक्म दिया गया। मैं नङ्गा किया गया तब मेरे वेत लगाये गये। इसके बाद मैं छोड दिया गया।

ज्ञानसिंहका बयान .

मैं मार्शल लाके दिनोंमें गिरफ्तार किया गया क्योकि पुलिससे मेरी अदावत थी। मैंने कोई अपराध नहीं किया था। मुझे २ साल ७ महीनेकी कड़ी सज़ा मिली। मेरे विरुद्ध जो गवाह पेश किये गये वे या तो बदमाश थे या पुलिससे मेरे विरुद्ध मिले हुए थे।

सोहनलाल ठेकेदारका बयान।

मैं रातको सोया हुआ था। चार बजेके लगभग डिप्टी कमिश्नर तथा पुलिस अफसरोंने पिस्तौल दिखाकर मुझसे खडे हो जानेको कहा और मैं गिरफ्तार कर लिया गया। कई गांवोंको घेरकर बहुतसे आदमी राहमें पकडे गये। दिनके २ बजे गोरोंके पहरेमें हम लोगोंको टट्टी-पेशाबकी आज्ञा मिली। इसके बाद

हम लोग लायलपुरको पैदल ही रवाना किये गये। लायलपुरमें मै पुलिस हाजतमें बन्द किया गया और बाकी जेल भेज दिये गये। १५ दिनतक मैं हाजतमें रहा। इसके बाद मुझपर झूठी गवाही देनेके लिये दबाव डाला गया परन्तु मैंने साफ इन्कार कर दिया। २२ मईको मैं छोड़ दिया गया। तीन चार महीने बाद हुक्म हुआ कि मेरा मकान जब्त कर लिया गया है। मेरे मामा और मेरे भाईका मकान भी जब्त होनेकी सूचना दी गयी। इस तरह हम लोग व्यर्थ ही दूसरोंके भड़कानेपर तङ्ग किये गये हैं।

लाहोर छावनीके भूतपूर्व स्टेशनमास्टर खुशीराम शर्माका बयान.

२६ अप्रेलको मुझे लायलपुरसे तार मिला था कि तुम्हारे चारों लड़के गिरफ्तार कर लिये गये और कोतवाली भेजे गये हैं। मैं लायलपुर रवाना होनेकी तैयारी कर रहा था कि मैं भी १ मईको लाहोरमें गिरफ्तार कर लिया गया। तीन दिन तक मैं हाजतमें रखा गया। भयङ्कर बदबूके कारण मुझे बहुत कष्ट उठाना पड़ा। २६ अप्रेलको मेरे मकानकी तलाशी भी ली गयी। ६ मईको मैं बड़ी कठिनाईसे अपने लड़कोंको छुड़ा सका। ईश्वर और मैं ही जानता हूं कि उन्हें छुड़ानेमें मुझे कितना कष्ट उठाना पड़ा। मुझे और मेरे लड़कोंको नजरबन्दीका भी हुक्म मिला था। वह हुक्म जूनमें रद किया गया। १४ जुलाईको

कि मैं नौकरीपरसे हटा दिया गया हूं। मुझे

पता लगा कि पुलिसने मेरे विरुद्ध शिकायत की। मुझे अबतक नहीं मालूम है कि मैं नौकरीपरसे क्यों हटाया गया। मुझे साढे बारह सौ रुपये भी नहीं दिये गये हैं यद्यपि मैंने कई बार इसके लिये लिखा।

गंगासिंह सन्तासिंह श्यामसिंहका बयान ।

मार्शल लाके दिनोंमें हम लोगोंके गावके विरुद्ध कुछ हमारे दुश्मनोंने यह खबर फैलायी कि गांवमें सरकारके विरुद्ध षड्यंत्र रचा गया है। वास्तवमें ऐसा कोई षड्यंत्र न था। २३ अप्रेलको गोरे सिपाहियोंने हमारा गांव घेर लिया और एक मेशीनगन लगा दी गयी। गांववाले अपनी गर्दनोंमें कपडा वांधकर हाथ जोडे हुए उपस्थित हुए। १३ आदमी गिरफ्तार किये गये। थाने-दारने धमकाकर झूठे गवाह खड़े किये और लोगोंका चालान किया। गवाह तमाम दिन धूपमें खडे किये गये और उन्हें कीडोंके छेदोंपर खडा किया गया। गांववाले निरपराध होनेपर भी दण्ड पा गये।

बनवारीलाल तम्बोलीका बयान .

मेरा बडा भाई २६ अप्रेलको थानेमें बुलाया गया। जब मैं रातको अपने भाईके लिये खाना कपडा ले गया तो मेरे लाठियां मारी गयी। मैंने दूसरे दिन थानेमें जाकर वहांका दरवाजा बन्द देखा। खिडकीसे झांकनेपर मुझे लोग धूपमें खडे दिखाई दिये। मैं बाहर चार घण्टेतक खडा रहा। मुझे गालियां भी सुननी पड़ी। मेरे भाईका चालान कर दिया गया यद्यपि उसका कोई

अपराध न था। मुझसे १०) लिये गये परन्तु वे मेरे भाईको कभी नहीं मिले।

देवदत्तका बयान।

२०, अप्रेलको हम पांच भाई थानेमें बुलाये गये। मेरा सबसे छोटा भाई जो आठ नौ वर्षका था बीमार था। हम लोगोंने पुलिससे कहा कि हमें मत सताओ परन्तु हम लोग बुरी तरहसे धमकाये गये। हम लोगोंने बीमार भाईको एक कपड़ेसे लपेटा और उसे थाने ले गये। हम लोगोंकी प्रार्थनापर हमारा छोटा भाई लौटा दिया गया, परन्तु हम सब हाजतमें रख लिये गये। हम लोगोंने थानेमें एक तांगावालेको देखा जिसे एक अंग्रेज पकड़ लाया था क्योंकि उसने साहबको सलाम नहीं किया था। तांगावालेको पांच बेतकी सजाका हुक्म मिला। एक तारवाला चपरासी भी पकड़कर लाया गया था जो रातभर टट्टीके अन्दर बन्द रखा गया। उसके भी पांच बेत लगे थे। एक साहब एक दिन सनाख्तके लिये आया और एक सिखको देखकर बोला कि यह आदमी वहां मौजूद था। इसपर पुलिसवालोंने कहा कि यह हमारा थानेदार है। इसके बाद साहबने मेरी तरफ इशारा किया। मैंने कहा मैं नहीं था। इसपर उसने मुझे धमकाया और कहा चुप रहो। जेलमें बहुतसे आदमी भर दिये गये यद्यपि सब चिल्लाते थे कि हम लोग निर्दोष हैं। लोगोंको झूठी गवाही देनेके लिये कहा गया। ११ जूनको हम सबको नजरबन्दीकी आज्ञा मिली।

पण्डित भूरामलका बयान।

लायलपुरमें मार्शल लाकी घोषणा होनेके दो तीन दिन बाद मैं एक गावसे सवेरे लौट रहा था। राहमें अधिक विलम्ब हो जानेके कारण मैं सन्ध्या करने लगा। मैं प्राणायाम चढ़ाये हुए था। एक आदमीने आकर बड़े जोरसे मुझसे कहा कि खड़े हो और अपने कपड़े पहनो। मैंने पूछा कि क्या बात है। मैंने कहा कि मुझे अपनी सन्ध्या पूरी कर लेने दो। मैं उसे पूरी न कर सका और मैं जबर्दस्ती खींचा गया और मुझे कपड़े पहनाये गये। मैं गोरे सिपाहियोंके खीमेमें भेजा गया और वहासे हाजतमें किया गया। हाजतमें मैं ११ बजेसे ३ बजेतक रहा। उस समयतक मुझे कुछ भी खानेको न मिला। हाजतकी गन्दगी वर्णन करने योग्य नहीं। टट्टी बड़ी ही गन्दी थी। मैं हाजतके भीतर पानी भी न पी सका यद्यपि मैं बहुत ही प्यासा था, क्योंकि पुलिसने मुझे बाहर न निकाला। अन्तमें शामको मैं बाहर निकाला गया और मैंने थोडासा भोजन किया। शामके बाद मैं रातभर हाजतमें रहा। मच्छरोंने रातभर सोने नहीं दिया। सवेरे मेहतरने टट्टी साफ की परन्तु बदबू बनी ही रही। दूसरे दिन मैं साहबके सामने पेश किया गया और मुझपर १०) जुर्माना किये गये। साहबने जुर्मानेका कारण पूछा। मैंने कहा कि मुझे नहीं मालूम। इसपर पासमें खड़े साहबने कहा कि तुमने मुझको सलाम नहीं किया। मुझसे उसी समय जुर्माना वसूल कर लिया गया।

सरकारी स्कूलके छात्र रामलोकका बयान ।

२५ अप्रेलको दो पुलिस कान्स्टेबल मेरे मकानपर आये और बोले कि डा० सत्यपाल यहींपर कैद हैं। तुम्हें वे बुलाते हैं। मैं उनके साथ कोतवाली गया। वहां मैं रोक लिया गया। गर्मीके दिनोंमें मैं नीचे जमीनपर बिठाया गया। इसके बाद मुझपर झूठी गवाही देनेके लिये दबाव डाला गया। मैं उसके लिये तैयार न हुआ। मैं तीन हफ्ते तक गिरफ्तार रहा और मुझे तरह तरहकी गालियां सुननी पड़ीं। इसके बाद मुझपर सड़कमें धूम मचानेका अभियोग लगाया गया। मुझे अपने गवाह पेश करनेका भी मौका न दिया गया और मैं जेलमें एक हफ्तेतक साधारण कैदीकी तरह रखा गया। इसके बाद मैं लाहोर भेजा गया। वहां जेलमें मुझे हर रोज १२ सेर अन्न पीसना पड़ता था। इसके बाद मुझे पानी खींचनेका काम दिया गया। फिर मुझे क्लर्कका काम सौंपा गया और अन्तमें छोड़ दिया गया। अब मैं न तो स्कूलमें भर्ती हो सकता हूं और न मेरे पास सार्टीफिकेट ही है। न मुझे शिक्षा ही मिल सकती है और न किसी किस्मकी नौकरी ही प्राप्त हो सकती है। मेरे माता पिता वृद्ध तथा निर्धन हैं।

विष्णुदास सुनारका बयान।

६ अप्रेलको मैंने भी अपनी दुकान बन्द रखी थी। उस दिन एक आदमी सवेरे अपना दूध बेचनेको लाया परन्तु उसे किसीने भी नहीं खरीदा। जब वह आदमी अपना दूध न बेच सका तो लोगोंसे पूछा कि जनताकी सेवा करनेवाला वह सुनार

कहा है। वह मेरे पास आया। उसने मुझे अपना दूध और एक रुपया चीनी खरीदनेके वास्ते दिया। उसने कहा कि तुम लोगोंकी सेवा करते हो। मेरे दूधसे लस्सी बना लोगोंको बांट देना। मैंने दूध और रुपया ले लिया और अपने पाससे और दो रुपया मिलाकर जब चीनी खरीदने जा रहा था तो और आदमियोंने भी एक दो रुपये दिये। इस तरह मैंने ज्यादा दूध और ज्यादा शक्कर खरीदकर लस्सी तैयार करायी। उस समय १०-११ बज गये थे। मैंने ड्यूटीपर तैनात थानेदारसे पूछा कि क्या मैं पुलिसवालोंको भी लस्सी पिला सकता हूं। उसने आज्ञा दे दी और मैंने सर्वसाधारण और पुलिसको लस्सी पिलायी। जब मैं पुलिसवालोंको लस्सी दे रहा था तो उसी समय पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट वहां पहुच गये और उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं पुलिसमेनोंको क्या दे रहा हूं। मैंने कहा कि मैंने सबके लिये लस्सी बनायी है वह अपने इन भाइयोंको भी दे रहा हूं। साहबने यह बात पसन्द की और कहा कि अगर भोजन मिले तो इन लोगोंको भोजन भी दो। ये लोग भूखे प्यासे हैं। किसी आदमीने लड्ढामल शराफसे कहा कि आप उदार आदमी हैं। पुलिसवालोंके भोजनका प्रबन्ध कर दीजिये। लाला लड्ढामलने पुलिस और सर्व साधारणको रोटियां बांटीं। २ बजेके करीब उसी दिन मुझे खबर मिली कि मेरे भाईका सात आठ दिनका लड़का मर गया है। ८ बजे हम लोग उसको निपटाकर वापस लौटे और लोग धैर्य देने आये। १० बजे मैं

सोया । दूसरे दिन मैंने बाजारमें हड़ताल जारी देखी । मैंने जब लोगोंसे हड़ताल जारी रखनेका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि बैसाखीके दिन हमारे भाई गोलीसे मारे गये हैं इससे हड़ताल जारी रहेगी । इस लिये १४ अप्रेलको मुझे भी अपनी दुकान बन्द रखनी पड़ी । उस दिन हड़ताल खतम करनेके लिये सभा की गयी । लोगोंने कहा कि अमृतसरमें हमारे आदमी मरे हैं इससे अभी पूरा हाल जाने बिना हम हड़ताल नहीं खोल सकते । इसके बाद ईदगाहमे भीड़ जमा हुई । १५ को भी हड़ताल रही । लोगोंने कहा कि गोरोंने सिख युवतियोंकी कृपाणें अमृतसरमे छीनी हैं इससे घृणा प्रकट करनेके लिये हम लोग हड़ताल किये हुए हैं । उन्होंने कहा कि हिन्दू, मुसलमान, सिख और मेहतर सबकी लड़कियां समान हैं इससे अवश्य हड़ताल रहनी चाहिये । १६ अप्रेलको हड़ताल खुल गयी और सबने अपनी अपनी दुकानें खोल दीं । २२ अप्रेलको तमाम शहर गोरोंने घेर लिया और मैं इन्सपेक्टरके पास बुलाया गया । जब मैं घण्टाघर पहुचा तो मुझे वहा बहुतसे इज्जतदार आदमी और वकील जमा दिखाई दिये । मैं भी उन्हींके बीच कर दिया गया । इसके बाद हम सब घेर लिये गये और जेल भेजे गये जहांपर सब बन्द कर दिये गये । वकीलोंने कहा कि हम लोग किस जुर्ममें पकड़े गये हैं इसपर डिप्टी कमिश्नरने उन्हें कोई धारा बतायी । उन्होंने कहा कि इस धाराके अनुसार हम लोग जमानतपर छूट सकते हैं, परन्तु कहा

गया कि जमानतपर छोड़नेका हुक्म नहीं है। हम लोग बीस पचीस दिनतक जेलमें रखे गये। मुझे सड़कपर धूम मचानेके अपराधमें तीन महीनेकी सजा दे दी गयी। आठ सौ रुपयेका जुर्माना भी हुआ। जेलमें मुझे व्यर्थ ही कष्ट दिया गया। मैं सर्वथा निरपराध था। लायलपुर लोडर केसमें मुझे ६ महीनेकी सजा व्यर्थ ही दी गयी। मैंने पहले कई बार सरकारकी सेवा की थी परन्तु उसपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया।

ला० चिन्तराम थपरका बयान।

२२ अप्रेलको लोग सोकर भी न उठे थे कि शहर चारों तरफसे घेर लिया गया और मेशीन तोपें लगा दी गयीं। १२ आदमी गिरफ्तार किये गये। मैं भी गिरफ्तार किया गया और जेल भेजा गया। जेलमें ही हम लोगोंको वारण्ट मिला। हम सब अलग अलग कालकोठरियोंमें रखे गये। भोजन इतना खराब था कि मैं दो दिनतक पानीपर ही अपना जीवन निर्भर किये रहा। जब अदालतमें हम लोग पेश किये गये तो हमारे हाथोंमें हथकड़ियां थीं। हम लोगोंको बैठनेकी भी आज्ञा नहीं दी गयी। मैं सब कष्ट दृढ़तापूर्वक सहता गया। मुझे सरकारी गवाह बनानेकी चेष्टा की गयी। मुझे फांसी और कालेपानीकी धमकी दी गयी। मुझसे जब ज्यादा धमकी बर्दाश्त न हुई तो मैंने कहा कि मैं निरपराधोंकी जानें लेकर अपनी जान नहीं बचाना चाहता। अन्तमें मैं सम्राट्के विरुद्ध लडाई छेड़नेके अभियोगमें फंसाया गया। मजिस्ट्रेटने जरा भी दया नहीं

दिखायी । जब उनसे कहा गया कि इन अभियुक्तपर दया दिखायी जाये क्योंकि इसके छोटे छोटे बच्चे हैं तो उसने उत्तर दिया कि अमृतसरमें जो अंग्रेज मारे गये उनके बच्चोंका क्या होगा। मजिस्ट्रेटने हर तरहसे हम लोगोंको अपमानित किया। १० को मजिस्ट्रेट फैसला सुनानेवाले थे परन्तु ६ की रातको मार्शल ला उठा दिया गया। मजिस्ट्रेटको इससे बड़ा दुःख हुआ। उनके सामने फिर मामला साधारण मजिस्ट्रेटकी हैसियतसे पेश हुआ। इस समय भी कानूनी कार्यवाही नहीं की गयी। मजिस्ट्रेटने सबको जेलकी सजा दे दी। मुझे डेढ़ वर्षकी सजा मिली। दण्डकी आज्ञा हो जानेपर हम लोग लाहौरकी सदर जेलको भेजे गये। स्टेशनसे जेलतक हम लोगोंको कड़ी धूपमें हथकड़ियों और बेड़ियों समेत चलना पड़ा। बेड़ियोंके कारण हमारे पैरोंमें खून बह निकला। जेलमें हमें बड़ा कष्ट उठाना पड़ा।

बैरिस्टर ला० रामदास छोकरेका बयान .

२६ अप्रेलको मार्शल ला जारी होनेके दो दिन बाद मैं नजर बन्द किया गया था। जबतक मार्शल ला जारी रहा मैं नजर बन्द रखा गया। जब कभी मुझे बाहर जाना पड़ा मुझे बाहर जानेकी आज्ञा लेनी पड़ी। इसमें मुझे बड़ा अपमान सहना पड़ता था। मेरे आफिसमें जो मार्शल लाके नोटिस चिपकाये जाते थे उनकी मुझे रक्षा करनी पड़ती थी। मेरा आफिस मेरे घरसे आध मील दूर होनेपर भी मुझे नोटिसोंकी रक्षाकी रात दिन चिन्ता रखनी पड़ती थी।

अतिरिक्त गवाहियां ।

सोलहवां अध्याय।

अमृतसर।

डा० सैफुद्दीन किचलूका बयान।

मैं केम्ब्रिज विश्वविद्यालयका ग्रेजुएट, वैरिस्टर और दर्शन शास्त्रका डाक्टर यानी आचार्य हूं। पांच वर्ष इङ्गलैण्डमें रहकर मैंने राजनीतिमें भाग लिया। १६१२ में भारत लौटा था। १६१५ में मैं रावलपिण्डीसे अमृतसर आया। तबसे मैं अमृतसरमें ही हूं और देशकी राजनीतिमें पूरा भाग लेता हूं। जनतामें मैंने पूरी जागृति देखी, परन्तु नेताका अभाव देखा। उपाधिधारी आपसमें लड़कर हिन्दू मुसलमान वैमनस्य बढ़ाते रहे। इस अवस्थाको असह्य समझकर मैंने म्युनिसिपल कमेटीमें जनताके सच्चे प्रतिनिधि भेजनेपर जोर दिया। मैं पिछले चुनावमें चुना गया। बहुतसे कमिश्नर ऐसे चुने गये जो जनताके सच्चे प्रतिनिधि थे और अपना कर्तव्य पालन करना चाहते थे। मैंने म्युनिसिपल कमेटीकी पहली बैठकमें अध्यक्ष-पदके लिये एक हिन्दू कमिश्नरका नाम सामने रखा। अबतक डिप्टी कमिश्नर ही अध्यक्ष हुआ करता था। सरकार द्वारा चुने हुए मेम्बरोंने डिप्टी कमिश्नरके लिये प्रस्ताव किया और वे तीन वोटसे

अध्यक्ष चुन लिये गये। पहली बार ही कमेटीमें एक गैर-सरकारी सदस्यका प्रस्ताव किया गया था। अफसरोंको यह बात बड़ी बुरी मालूम हुई। अमृतसरकी अञ्जुमन इस्लामिया कुछ टाइटिल धारियोंके अधिकारमें थी। वे स्वार्थके सामने कौमकी भलाई न देखते थे। मैं उसका मेम्बर बन गया, परन्तु मैं प्रबन्ध करनेवाली कमेटीमें न लिया गया। इस्लामिया स्कूलके छात्रोंकी तरफसे मैं प्रबन्ध कमेटीमें भेजा गया। मैंने स्वार्थी लोगोंकी कलई आम सभाओंमें खोलनी शुरू कर दी। इसपर खुशामदियोंने मेरी निन्दाका प्रस्ताव पास किया। वे मुझे कमेटीसे अलग न कर सके क्योंकि वे जानते थे कि जनता मेरे साथ है। कुछ लोगोंने मुझे तङ्ग करनेका इरादा किया। पुलिसके पास एक लड़का सिखाकर भेजा गया कि किचलूने मुझे बम बनाना सिखाया है और वे अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानसे निकालना चाहते हैं। मेरी पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टसे मुलाकात हुई और उन्होंने सारा हाल बताया। उन्होंने कहा कि मैंने लड़केकी बातपर विश्वास नहीं किया, क्योंकि मैं जानता था कि आपकी कुछ लोगोंसे दुश्मनी है। अमृतसरमें ही नहीं, तमाम पञ्जाबमें चापलूसोंकी बात चला करती थी और अफसरोंको जनताकी असली इच्छाका पता ही न लगता था। पञ्जाब सरकार लोगोंकी ऊंची इच्छाओंका विरोध किया करती थी। रोबकी रक्षाके लिये बड़ा कड़ा शासन किया जाता था। भारतरक्षा कानूनका उपयोग ... किया जा रहा था और अखबारोंकी दम घोटी जाती

थी। रङ्गरूटों और वारलोनके लिये सरकारने बड़ी कड़ाई की। मेने कुछ मित्रोंके साथ अमृतसरमें प्रान्तीय कानफरेन्सका जल्सा कराया। बैरिस्टर ला० दुनीचन्दकी अध्यक्षतामें अगस्त १९१८ मे जल्सा हुआ। उन्होंने अपने भाषणमें सरकारके कडे शासनकी निन्दा की और इस बातपर भय प्रकट किया कि पञ्जाब -सरकार सर माइकेल ओडायर सरीखे लाटकी मातहतीमें है। इस कानफरेन्सका बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। लोग निडर होकर राजनीतिमे भाग लेने लगे। अमृतसरवालोंमे यहांतक जोश पैदा हो गया कि उन्होंने काग्रेसको अमृतसरमे बुलानेकी तैयारी की। दिल्लीकी काग्रेसमें मेरे द्वारा निमन्त्रण दिलाया गया। वह स्वीकार भी हो गया। हम लोगोने अमृतसर लौटकर कार्य आरम्भ किया। एक स्वागत समिति बनी जिसके एक हजार सदस्य थे। डा० सत्यपाल भी आन्दोलनमें शामिल हो गये। जब हम लोग काग्रेसके प्रचारकी तैयारी कर रहे थे रालट बिल पास हो गया और सत्याग्रह आन्दोलन छिड गया। उस आन्दोलनमे मैने और डा० सत्यपालने पूरा भाग लिया। मैंने लाहौर, अमृतसर, मुल्तान और जलन्धरमे सभाओमे भाषण किया। सभाओमे चालीस हजारतक उपस्थिति हुई। हड़ताल भी मनायी गयी और जलियावाला बागमे ३० हजार आदमियोकी सभा हुई। स्त्रियोंने भी उपवास रखकर आन्दोलनसे सहानुभूति दिखायी। २९ मार्चकी रातको पञ्जाब सरकारने डा० सत्यपालको आज्ञा दी कि वे किसी सभामे भाग न ले। ३० मार्चकी सभामें लोगोंको

उत्तेजित न करनेकी इच्छासे हमने यह सूचना न सुनायी। मैं सभाका अध्यक्ष चुना गया था। पण्डित कोटूमल, स्वामी अनुभवानन्द और मि० दीनानाथके भाषण हुए थे। व्याख्यानोंमें कोई गैरकानूनी या उत्तेजनाजनक बात नहीं कही गयी। किसी प्रकारकी अशान्ति भी नहीं देखी गयी। ८ अप्रेलको मुझे तथा ३० मार्चके वक्ताओंको सभाओंमें व्याख्यान न देनेकी आज्ञा मिली। हम लोगोंने सरकारी आज्ञाका पालन किया। इसके पहले डिप्टी कमिश्नरसे मेरी बात हुई थी और मैंने उनसे कह दिया था कि हम लोग आन्दोलनकर वृटिश साम्राज्यके अन्दर स्वराज्य पाना चाहते हैं। मैंने उनसे यह भी कहा था कि कुछ लोगोंसे मेरी दुश्मनी है। वे सरकारी अफसरोंके पास पहुंचकर उनके दिमाग मेरी तरफसे खराब कर रहे हैं। मैंने उनसे कहा था कि यदि मेरे विरुद्ध खुफिया या किसी राजभक्तसे कोई शिकायत हो तो आप मुझसे उसकी सत्यताके सम्बन्धमें पहले सफाई ले लें।

६ अप्रेलको अपने आप फिर हड़ताल हुई। ९ अप्रेलको रामनवमी थी। मुसलमानोंने उसमें उत्साहपूर्वक भाग लिया। उस दिन भी किसी प्रकारकी अशान्ति उपस्थित नहीं हुई। १० अप्रेलको मैं डा० सत्यपालके साथ धर्मशाला भेज दिया गया। हम लोग उसी दिन शामको धर्मशाला पहुंचे। दो तीन दिनके बाद हम दोनों आदमी अलग कर दिये गये। यहां मुझे खुफियावालोंने बहुत तङ्ग किया। डिप्टी कमिश्नरने

खर्चेके लिये मुझे एक सौ रुपये उधार दिये। इसके बाद मेरी डाकपर सेन्सर बिठाया गया। इसके बाद जिस मकानमें मैं ठहरा था उसपर पुलिसका पहरा किया गया। इसके बाद डा० सत्यपाल और मुझको दफा १२४ एके अनुसार गिरफ्तार किया गया और हम दोनों हाजतमें किये गये। हम लोग फिर लाहोरकी सदर जेलमें लाये गये और वहा हमारी हथकडियां खोली गयीं। मैं एक बहुत ही गन्दी कालकोठरीमें रखा गया। वह बहुत गर्म थी और उसमें मच्छर भरे हुए थे। मुझे गन्दे कम्बल और चटाई दी गयी। उस कोठरीमें न तो कोई चारपाई थी और न कुर्सी मेज थी। मैं जमीनपर ही सोया करता था और जेलका भोजन किया करता था। पहले दिन कुछ अंग्रेज मुझे देखने आये। वे मुझे देखकर आनन्द लूटने आये थे। मैंने उनसे कहा कि अभी मैं अपराधी साबित नहीं हुआ। मेरे साथ इतना बुरा बर्ताव क्यों किया जाता है। उन्होंने कहा कि सरकारका यही हुक्म है। मुझे सवेरे नहानेके लिये १० मिनटको बाहर निकाला जाता था। मैं डेढ़ महीनेतक कालकोठरीमें रखा गया। पहले जो जेलका अधिकारी था वह अंग्रेज था। वह मेरे साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया करता था। मेरी ओरसे जो पैरवी करनेवाले थे वे मुझसे परामर्श करना चाहते थे, परन्तु जेलके अधिकारीने अपने सामने बात करनेको कहा। इसलिये मैं अपने वकीलको अच्छी तरह सलाह भी न दे सका। सुप्रीम-

इसके बाद एक हिन्दुस्तानी जेलर आया और उसने मुझे काल कोठरीसे हटाकर एक दूसरे कमरेमें रखा। मुकदमा [illegible] उन्हींसे मामला चलाया गया। जजने बराबर पक्षपातसे काम लिया। जो गवाह मेरे पक्षमें कुछ कहते थे वे धमकाये जाते थे। मेरे वकीलोंसे कहा जाता था कि आप सियासतके तौरपर यहां उपस्थित हैं। वे गवाहोंसे अच्छी तरह जिरह भी न कर सकते थे। हमारे वकीलोंके साथ पुलिस बहुत बुरा बर्ताव करती थी। जजने इस तरह बर्ताव किया मानो वह स्वयं मामला चलाने-वाला है। हम लोग अदालतमें हथकड़िया पहनाकर उपस्थित किये गये थे और उसी हालतमें जेल वापस भेजे गये। जब मुझे दण्डकी आज्ञा मिल गयी मैं लाहोर सदर जेलके युरो-पियन वार्डमें रखा गया। मै दरी और कालीन विभागका निरीक्षक बनाया गया था। जेलरका वर्ताव मेरे साथ अच्छा रहा। इसके लिये उसे सरकारी विभागसे फटकार भी सुननी पडी। जब यह बात मालूम हुई कि लाहोरमे हण्टर कमेटी हम लोगोकी गवाही लेना चाहती है तो मैं, ला० दुनीचन्द, डा० बशीर और दीवान मङ्गलसेन माटगोमरी जेलको रवाना कर दिये गये। हम लोग जिस इमारतमे रखे गये उसको बाहरी दरवाजा रात दिन बन्द रखा जाता था। हमसे कोई आदमी मुलाकात न कर सकता था। और कैदी भी हमसे नहीं मिल सकते थे। हम लोगोंने इच्छा प्रकट की कि हम हण्टर [illegible] सामने गवाही देना चाहते हैं तथा अपने मामलेको

गयीं । पञ्जाबके लाट लोगोंकी जागृतिसे अप्रसन्न थे। वे पञ्जाबके सबसे बड़े शासक थे। दमन, दबाव और भयप्रदर्शन उनके प्रधान गुण थे। प्रान्तके शिक्षित मनुष्योंसे वे जला करते थे। वे उन्हें हमेशा कोसा करते थे। व्यवस्थापिका सभामें माननीय मालवीयजीका अपमानकर उन्होंने सभी शिक्षित पञ्जाबियोंको क्रुद्ध किया। विरोध यहांतक बढ़ता गया कि पञ्जाबके लाट राजनीतिक आन्दोलन करनेवालोंपर सदा ही दांत पीसकर उन्हें गालियां देने लगे। वे वक्ताओंका मुंह बन्द करने और लेखकोंको दण्ड देनेमे पीछे न रहे। इस बीचमें कुछ स्थानीय प्रश्न भी उपस्थित हो गये थे। प्लेटफार्म टिकटका आन्दोलन इनमे विशेष रूपसे उल्लेखनीय है।

डेढ़ सौ वर्षके बृटिश शासनके बाद यदि यह आन्दोलन उठाना पडे कि स्टेशनपर भारतीयोंको पैसा खर्चकर जानेकी आज्ञा दी जाये तो यह शासकोंके लिये लज्जाकी ही बात है। अमृतसर स्टेशनपर सभी गोरे विना कुछ खर्च किये वेरोकटोक जा सकते थे, परन्तु प्रतिष्ठितसे प्रतिष्ठित हिन्दुस्तानी पैसा देनेपर भी अपने मित्रों और सम्बन्धियोंको छोड़नेके लिये भीतर नहीं जा सकता था। हिन्दुस्तानी इस बातसे बहुत नाराज थे। मैंने आन्दोलन आरम्भ किया। यह आन्दोलन न तो सरकारके ही विरुद्ध था और न युरोपियनोंके विरुद्ध था। रेलवे अधिकारियोंके अन्यायके विरुद्ध आन्दोलन था। मामला आपसमें निपटा लिया यह कहना सरासर अन्याय है कि यह आन्दोलन राज-

द्रोहपूर्ण था या स्टेशन सुपरिण्टेण्डेण्टकी हत्यासे सम्बन्ध रखता था या किसी प्रकारके षड्यन्त्रका एक अङ्ग था।

दूसरा आन्दोलन महंगीके सम्बन्धमे उठा था। हजारों परिवार भूखों मर रहे थे। चीजोंकी दर बहुत चढ़ गयी थी और आवश्यक चीजें दुर्लभ हो गयी थीं। सरकारी अफसरोंको इस सम्बन्धमें होनेवाली सभाएं भी आपत्तिजनक प्रतीत हुईं। सरकारने इनकम टैक्स बढ़ा दिया था और विशेष कर बिठा दिया था जो चीजोंको और भी महंगी बनानेवाला था। अशान्तिका एक यह भी कारण था। लोगोंको हर तरहसे तङ्गकर वारलान वसूल किया गया था और फाटकेबाजीने व्यापारियोंको नष्ट कर दिया था। इसी समय लड़ाई वन्द हो जानेपर सरकारसे इनामकी आशा की जा रही थी। लोगोंको बडी निराशा हुई जब कि घोर विरोध होनेपर भी रालट विल पास कर दिया गया। लोग पहलेसे ही भारतरक्षा कानूनके कारण भयभीत हो चुके थे। सैकड़ों इज्जतदार आदमी उसके कारण नजरबन्दी और देशनिकालेकी आज्ञा पा चुके थे। बहुतसे अखबारोंके साथ कड़ाई की गयी थी। लोगोंपर अच्छी तरह मामला चलाये विना ही उन्हें फांसी और कालेपानीके दण्डकी आज्ञा दे दी गयी थी। इसीसे लोग रालट एक्टकी भयङ्करताका परिचय पा गये थे।

कहा जाता है कि मैंने तथा अन्य वक्ताओंने लोगोंको एक्टका उल्टा अर्थ समझाया और बहुतसी बातें विल्कुल ही न समझायी। यह कहना सरासर झूठ है। इतने वडे एक्टकी सभी

ओंका ज्ञान लोगोंको कैसे कराया जा सकता था। कोई आदमी यह नहीं साबित कर सकता कि इनकी प्रधान बातें नहीं बतायी गयी थीं। अमृतसरमें ३० मार्चको हड़ताल रखनी तय हुई थी। २९ मार्चको रातके ११ बजे मुझे सरकारी हुक्म मिला कि आप भारतरक्षा कानूनके अनुसार किसी सभामें भाग नहीं ले सकते। ३० मार्चको हड़ताल हुई और एक सार्वजनिक सभा की गयी, परन्तु लोगोंको सरकारी आज्ञा नहीं बतायी गयी जिससे वे उत्तेजित न हों। सफल हड़ताल और सभाके कारण सरकारका क्रोध और भी बढ़ गया। सभामें जो कोई बोला उसे नजरबन्दी-की आज्ञा मिली और वह सार्वजनिक सभामें भाग लेनेसे रोका गया। स्वामी अनुभवानन्द जो इस नगरमें सर्वथा अपरिचित थे वे भी सरकारी कड़ाईमें आ गये और उन्हें असुविधा उठानी पड़ी। लोग हमें निर्दोष समझते थे इसलिये हम लोगोंपर की हुई सरकारी कड़ाई उन्हें कभी पसन्द न आ सकती थी, परन्तु हम लोगोंने अपमान इसी लिये सह लिया कि धीरे धीरे वायु मण्डल ठीक हो जायेगा।

६ अप्रेलको फिर हड़ताल मनायी गयी। किसीपर किसीने जरा भी दबाव नहीं डाला। सरकारने बुद्धिमानीका काम नहीं किया जो आनरेरी मजिस्ट्रेटों और म्युनिसिपल कमिश्नरों-को अपनी ओरसे लोगोंको फुसलानेके लिये नियुक्त किया। पुलिसकी ताकत भी व्यर्थ ही दिखायी गयी। यदि सरकार [illegible] न करती तो किसी तरहकी गड़बड़ न मचती। पञ्जाबके

लाटका क्रोध व्यर्थ ही बढ़ गया और उन्होने बडा बुरा व्याख्यान कौंसिलमें दिया। यह जलेपर नमकका काम कर गया। लोगोका धैर्य नष्ट हो गया, परन्तु तब भी शान्ति रखी गयी। रामनवमीका त्योहार बड़ी धूमके साथ मनाया गया। उस दिन हिन्दू मुसलमानोंका प्रेम देखकर अधिकारी और भी जल गये। उस मेलको अधिकारियोंने गदरका सङ्गठन बताया और सरकारका अपमान समझा। इसके विरुद्ध यह मेल पञ्जाबके लिये लाभदायक था, क्योंकि पहले सरकारको दोनो जातियोमें मेल रखनेके लिये बड़ी कोशिश करनी पड़ती थी। सरकारको इस मेलका स्वागत करना था। सरकारने व्यर्थ ही मेलको सन्देहकी दृष्टिसे देखा। सरकारी दिमागका पता इसीसे लग जाता है कि हमपर एक अभियोग यह भी लगाया गया था कि रामनवमीके दिन हम लोगोने पुलिसकी सहायता न लेकर सरकारका सामना किया। कुछ लड़के जुलूसमें सिपाहियोंकी पुरानी वर्दी पहनकर निकले थे। इसको सरकारके विरुद्ध खुल्लमखुल्ला युद्ध बताया गया। इन लड़कोंको नवयुवक तुर्क बताया गया। यह ऐसी बात है जिसपर गम्भीरतापूर्वक विचार करना ही व्यर्थ है। लोग बिलकुल ही शान्त थे। उन्होने डिप्टी कमिश्नर आदि अधिकारियोका पूरा सम्मान किया। राहमें उनके सामने राजभक्तिसूचक गीत गाये। एक लाख आदमियोकी भीड़ने जरा भी गर्मी नहीं दिखायी। १० अप्रेलको मैं डिप्टी कमिश्नरके बंगलेपर बुला-

गया। वहां डा० किचलू भी पहुंच गये। दोनोंको भारतरक्षा कानूनके अनुसार हुक्म मिला कि अमृतसर छोड़कर चले जाओ। हम लोगोंकी मोटरके पास मेशीनगनसे लदी मोटर साथ रखी गयी। गाड़ियां बड़े जोरसे दौड़ायी गयीं। ८ बजे हम लोग धर्मशाला पहुंचे। हमारे पास न तो कोई कपड़ा था और न एक पैसा ही था। राहमें पानी बरसनेसे हमारे कपड़े भींग गये थे। अमृतसरमें गर्मी पड़नेके कारण हमारे शरीरोंपर इस ठण्डी जगहमें गर्मऋतुके ही कपड़े थे। एक वकील मित्रने पुलिस अफसरकी स्वीकृतिपर हमें सब चीजें दी थीं परन्तु पीछेसे उसे भी इस खातिरदारीके लिये दण्ड भोगना पड़ा। धर्मशालाके डिप्टी कमिश्नरने हम लोगोंके साथ बड़ा बुरा वर्ताव किया था। हमारे पास जो कोई मिलने आता था वह डराया धमकाया जाता था। हम लोगोंकी डाकपर सेन्सर बिठाया गया और निवासस्थानपर कड़ा पहरा रहने लगा। मुझे घूमने फिरनेकी स्वतन्त्रता थी, परन्तु जब मैंने देखा कि मुझसे मिलनेवाले लोग तङ्ग किये जाते हैं तो मैंने सबसे मिलना छोड़ दिया। डा० किचलू और मेरे बीच बातचीत नहीं हो सकती थी और न हम एक दूसरेको पुलिस अफसरको दिखाये बिना पत्र ही लिख सकते थे। हम दोनों एक दूसरेसे कई सौ मीलके फासलेपर मालूम होते थे। ६ मईको मैं डाकृर किचलूके साथ दफा १२४ ए के अनुसार गिरफ्तार कर लिया गया। हम [illegible] तलाशी ली गयी और पुलिसने सब चीजें छीन लीं।

इसके बाद कड़े पहरेके साथ लाहोर भेजे गये। हम लोग बैल-गाड़ीमें बिठाये गये। गाड़ीके ऊंचा नीचा गिरनेसे हम लोगोंके शरीरमें दर्द हो गया। पठानकोटमें हम लोग रेलपर एक बन्द डिब्बेमें बिठाये गये और लाहोर भेजे गये। हम लोग हथकड़ियों समेत सदर जेल भेजे गये। वहां हम दोनों अलग अलग कालकोठरियोंमें रख दिये गये। वह कोठरी बड़ी भयानक थी। गर्मीके मौसममें उस कोठरीमें सोना बड़ा ही दुःखदायी था और खासकर उस हालतमें जब कि उसीमें पेशाब करनेके लिये जाना पड़ता था। मैं बहुत थोड़े समयके लिये कोठरीसे बाहर निकाला जाता था। जेलमें मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाता था। जेलर जहांतक उससे बनता था मेरा रहना असह्य बनाया करता था। हमारे लिये हर तरहकी बेइज्जती साधारण समझी जाती थी। मुझे ऐसे कम्बल और चटाईयां दी गयी थीं कि उनकी बदबू किसी तरह न सही जाती थी। मुझे शारीरिक और मानसिक कष्ट देनेकी पूरी कोशिश की गयी। मैं किस अभियोगपर इन कष्टोंको सह रहा था यह मुझे बताया भी नहीं गया। २ जूनको हम लोग स्पेशल कमीशनके सामने उपस्थित किये गये। हम लोगोंको अभियोग सुनाये गये। मुझे अपने ऊपर लगाये हुए अभियोगोंको सुनकर आश्चर्य ही नहीं हुआ बड़े जोरकी हंसी भी आयी, क्योंकि ऐसा कोई भयानक अभियोग न था जो मुझपर न लगाया गया हो। प्लेटफार्म टिकटके लिये मैंने जो

आन्दोलन किया था वही सबसे बड़ा अपराध बनाया गया। मुझपर आग लगाने, हत्या करने, डकैती, राजद्रोह, बलवा और सम्राट्के विरुद्ध युद्ध छेड़नेका अभियोग लगाया गया। अदालतमें मेरे साथ जो कड़ाईका बर्ताव किया गया उसका मैं वर्णन ही नहीं करना चाहता। जजका रुख सर्वथा प्रतिकूल था। वे बड़े पक्षपातसे काम ले रहे थे। जो बयान हमारा अपराध कम कर सकते थे वे कभी दर्ज ही नहीं किये गये। मार्शल लाके शासनकी कड़ाई तथा पुलिसके अत्याचारोंने लोगोंको निस्सार कर दिया था। कोई आदमी ऐसा न मिलता था जो हिम्मतके साथ अपने दिलकी बात कह दे। हमारे गवाह धमकाये गये। वे हमारे विरुद्ध बयान देते थे परन्तु खर्चा हम लोगोंको चुकाना पड़ता था। हमारा मामला बड़े निरंकुश ढङ्गसे चलाया गया। हाँ बाहरसे कोई वकील खड़ा करनेकी आज्ञा नहीं दी गयी। जो वकील हमारी ओरसे खड़े किये गये उनका बड़ा अपमान किया गया। हमारी धारणा है कि न्यायकी परिपाटी कायम रखनेके लिये ही हास्यजनक ढङ्गसे मामले चलाये गये थे। हम लोग इन ढङ्गोंको देखकर अनुमान कर चुके थे कि हमें क्या दण्ड मिलेगा। ५ जुलाईको हमें फैसला सुननेका हुक्म मिला। हम लोग हथकड़िया पहनकर फैसला सुनने गये। अफसरोंने भयभीत होकर सेना और पुलिसका बड़ा कड़ा प्रवन्ध कर रखा था। हम लोग जिस मार्गसे गये उसकी दोनों ओर फौजका पहरा था। हमारे ... साथ बड़े बड़े पुलिस अफसर थे। हम लोगोंको फैसला

सुनाया गया । कुछ तो छोड दिये गये । सातको जीवनभरके कालेपानीका दण्ड मिला । दो को तीन वर्षकी कड़ी सजा मिली । डा० बशीरको फांसीका हुक्म हुआ । इस फैसलेको सुनकर हम सबको बड़ी हसी आयी । हम लोगोको किसीसे बात करनेका हुक्म नहीं दिया गया । हम लोग जेलमें जीवनभरके कालेपानीका दण्ड पाकर घुसे इससे हमपर बडा कडा पहरा रखा गया । जेलमें जो कष्ट उठाने पड़ते हैं उनका वर्णन व्यर्थ है । मैं अस्पतालमें काम करता था । जेलरके आनेके पहले हम लोगोंको घण्टों उनकी राह देखनेके लिये खडा रहना पडता था । मैंने बहुत कुछ कहे जाने पर भी दया प्रार्थना नहीं की क्योंकि मैं इस प्रकारकी प्रार्थनाओंपर कोई विश्वास न रखता था । मैं जानता ही था कि पक्षपातके कारण मुझे दण्ड दिया गया है ।

जब मैं जेलमें था मुझसे कहा गया था कि हण्टरकमेटीके सामने गवाही दो । मैं गवाही देनेको तैयार था, परन्तु मैं चाहता था कि सरकारी गवाहोंसे मुझे जिरह करनेका मौका दिया जाये । जब मुझे मालूम हुआ कि ऐसा न होगा तो मैंने चुप रहना उचित समझा । जब मैं छुटकारा पा गया तो मैंने हण्टर कमेटीको लिखा कि मेरी गवाही ली जाये और उन सरकारी कर्मचारियोंको मेरे सामने उपस्थित किया जाये जिनसे मैं जिरह करना चाहूं । मेरी यह प्रार्थना स्वीकार न की गयी इससे मैं हण्टर कमेटीके सामने उपस्थित न हुआ । सत्याग्रह आन्दोलनकी व्यर्थ ही निन्दा की गयी है और सब ज्यादतियोंको

सम्बन्धमें व्यर्थ ही बताया गया है। जिन लोगोंने हड़ताल म-नायी थी वे सत्याग्रही नहीं कहे जा सकते। किसी प्रकारकी ज्यादतीका सम्बन्ध सत्याग्रह या सार्वजनिक सभाओंसे नहीं बताया जा सकता। लोगोंने हम लोगोंके देशनिकालेकी आज्ञा सुनकर ही शान्ति भङ्ग की। वे डिप्टी कमिश्नरसे प्रार्थना करने जा रहे थे परन्तु उन्हें ऐसा करनेका मौका न दिया गया। यदि लोग ज्यादतीपर तुले होते तो दर्जनभर सिपाही दस हजारकी भीड़को कभी न हटा सकते और स्वयं सुरक्षित भी न रहते अफसरोंकी मूर्खताके कारण निहत्थोंपर गोली चली। इसीसे जनताने उत्तेजित होकर ज्यादती की। अशिक्षित लोगोंने जब अपने .निरपराध भाइयोंको गोलियां खाकर मरते देखा तो उनकी उत्तेजना बढ़ गयी। इससे जनताकी ज्यादतीका असली कारण अफसरोंकी बेवकूफीके काम थे। यदि हड़तालोंके कारण उपद्रव हुआ तो ३० मार्च और ६ अप्रे-लको क्यों न हुआ। अफसरोंकी जिम्मेदारी न बताकर राज नीतिक कार्यकर्ताओंको जिम्मेदार ठहराना सरासर भूल है। गदरकी बात तो बिलकुल ही बनावटी है। लोग गदर करनेका विचार ही न रखते थे। कुछ भूले भटके लोगोंने यदि ज्यादतीकी तो इसका यह मतलब नहीं कि सभी लोग ज्यादती करनेपर तुले हुए थे। १० अप्रेलको सरकारने पुलिस और फौजका पहरा हटा दिया था और अधिकारियोंके कथनानुसार नगर नगरवा-सी प्रबन्धमें था परन्तु किसी प्रकारकी ज्यादती नहीं

है। बैंके मौजूद थी और इमारतें भी मौजूद थीं, परन्तु कहीं
किसीने एक तिनका भी न उठाया। जो अधिकारी जनताके
कार्योंके विरुद्ध काम करनेपर तुले हुए थे उन्हींके दिमागोंमें गदर
स्थान पाये हुए था। किसी प्रकारका षडयन्त्र भी मौजूद न था।
खुफिया पुलिसवालोंकी झूठी रिपोर्टोंपर ऐसी बात कहना
नादानी है। हम लोगोंने न कभी कोई षड्यन्त्र रचा और न उसके
रचनेकी हमें अभिलाषा ही थी। हमने सब काम खुले मैदान दिन
दहाड़े किया। हम लोगोंने लोकमत तैयार किया और रालटएक्ट्-
के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला आन्दोलन उठाया। हम लोगोंने कभी कोई
काम छिपकर नहीं किया। हम लोगोंने कानूनके भीतर रहकर ही
काम किया। हम लोग अब भी कानूनी ढङ्गसे आन्दोलन करनेके
पक्षमें हैं। यदि हम लोग खुले मैदान आन्दोलनकर अपने
कार्योंको न चला सकेंगे तो भय है कि कुछ अधीर मनुष्य गैरका-
नूनी और अवाञ्छित ढङ्गसे भी काम करने लग जायें। यह
बात बिल्कुल झूठ है कि हम लोगोंने सीमान्तपर उपद्रव करनेके
लिये या अफगानिस्तानके अमीरको भारतमें अंग्रेजोंके विरुद्ध
लड़नेको बुलानेके लिये अपने आदमी भेजे थे। पर मुझे
[illegible] है कि वृटिश न्यायालयमें ऐसा अभियोग सुना गया।
मुझे इसने बड़ा आश्चर्य हुआ। यह अभियोग ऐसे मनुष्य
[illegible] लगाया गया जो एक साधारण मनुष्य था और जिसे
सब बातें सिखलायी गयी थीं तथा जिसके बयानमें
[illegible] झूठ भरा हुआ था। मैं इस सम्बन्धमें अधिक नहीं

कहना चाहता क्योंकि कोईभी बुद्धिमान मनुष्य यह बात न मानेगा कि हम लोगोंके कारण किसी तरह अफगान युद्ध हुआ। मैं यह बात दावेके साथ कह सकता हूं कि मैं उन मनुष्योंमें से हूं जो भारतमें किसी विदेशी शासनको स्वीकार करनेवाले नहीं। यदि भारतको अब भी विदेशी शासनकी आवश्यकता है तो मेरा विश्वास है कि वर्तमान सम्बन्ध सर्वोत्तम है। कोई भी सार्वजनिक कार्यकर्ता बुद्धि रखता हुआ इस प्रकारकी मूर्खता पूर्ण बातोंमें नहीं पड़ सकता। गुफिया पुलिसने ही ये सब बातें खड़ी की हैं जिसका काम यही है कि लोगोंके सम्बन्धमें हमेशा झूठी बातोंका प्रचार किया जाये। क्या सरकार महा समरमें हिन्दुस्तानियोंकी राजभक्तिका परिचय पाकर भी इस प्रकारकी निर्मूल बातें सुन सकती है। वृटिश साम्राज्यकी रक्षाके लिये हम लोगोंने जो उपाय किये क्या उन्हें ध्यानमें रखकर सरकार इस विचारको माननेके लिये तैयार है। मैंने लड़ाईके समय घायलोंकी रक्षाके लिये स्वय कमीशन प्राप्त किया था। घरमें हम लोगोंका जो भी मतभेद रहे परन्तु वाहरी दुश्मनको हम लोग कभी वृटिश साम्राज्यपर चोट न करने देंगे। हमपर व्यर्थके अभियोग लगाकर हमारे भावोंपर चोट करनी है। जो अफसर व्यर्थकी बातें सामने रखकर बुरे भाव उत्पन्न कराते हैं सरकार उन्हें शीघ्र ही हटा दे तो अच्छा है। मुझे जो तकलीफें जेलमें उठानी पड़ीं उनका वर्णन अनावश्यक है। मैं एक बातका जिक्र करना चाहता हूं। मेरे पिता गिरफ्तार कर पांच हफ्ते-

तक जेलमें रखे गये। उनका केवल यही अपराध था कि वे मेरे पिता थे। एक बूढ़े आदमीको दांत न रहनेपर सूखे चने चाबने पड़े और उसे ओढ़ने बिछानेके लिये कपड़ेतक न दिये जायें तथा उसे तरह तरहके कष्ट और अपमानोंका सामना करना पड़े यह किसी सभ्य सरकारके योग्य बात नहीं है। खासकर उस हालतमें जबकि पिताजी सब तरहसे निर्दोष थे और उनपर जो अभियोग लगाये गये थे सब निर्मूल थे। उन्हें बड़ा कष्ट उठाना पड़ा जिससे उनका स्वास्थ्य खराब हो गया और उन्हें आर्थिक हानि भी सहनी पड़ी। उन्हें मेरी गिरफ्तारीका भी बड़ा दुख रहा। मेरे मकानकी तलाशी ली गयी। मेरे जान पहचानवालोंको तङ्ग किया गया और मेरे परिवारके सामने तरह तरहकी रुकावटें डाली गयीं। मैं हृदयसे चाहता हूं कि पिछली सभी बातें भुला दी जायें और ऐसी चेष्टा की जाये कि बृटिश साम्राज्यमें भारतका पद ऊंचा हो। अंग्रेजोंके हाथ यह ईश्वरीय कार्य है जिसे यदि वे पूरा कर दिखायें तो सबका कल्याण हो।

लाहोर.

ला० हरकिशनलाल बी० ए० बैरिस्टरका बयान।

पञ्जाबका शासन २५ वर्षसे अधिक कालसे ऐसे अधिकारियोंके हाथमें रहा है जिनके विचार बड़े ही सङ्कीर्ण हैं। जो लोग हुकूमत कर रहे हैं उनका बर्ताव बनावटी और नाराजी पैदा करनेवाला रहा है। आपसमें एक दूसरेका सन्देह भी

है। पञ्जाबके आदमी अन्य प्रान्तवालोंकी तरह अपने कष्टोंको दूसरोंको सुनाते नहीं रहे इससे अधिकारी चिढ़ते हैं जब वे किसीको उन कष्टोंको वर्णन करते हुए सुनते हैं। जिन लोगोंने सार्वजनिक आन्दोलनमें भाग लिया वे अंग्रेजोंके दुश्मन कहलाये और सरकारसे कोसों दूर रखे गये। युरोपियन अफसरोंको खुश करनेके लिये उनके भावोंका प्रचार करनेवाले पञ्जाबमें बढ़ रहे हैं जो अपनी उन्नति इस प्रकारके काम करते हुए करना चाहते हैं। अधिकारियों और कष्ट पीड़ितों तथा कष्ट पीड़ितोंके नेताओंके बीच दिनपर दिन भेदभावकी ऊंची दीवाल खड़ी होती जा रही है। १९०७ में जब ला० लाजपतरायको देशनिकालेकी आज्ञा मिली थी तो उस समय मैंने अधिकारियों और जनताके बीच मेल पैदा करनेकी पूरी कोशिश की थी। उस समयके लाट सर लुईडेन अक्सर कहा करते थे कि जनताके प्रतिनिधियोंके बाबत अफसरोंमें बड़े बुरे भाव फैल रहे हैं इससे मुझे बड़ी कठिनाई पड़ती है। मैं अफसरोंकी निगाहमें खास तौरसे खटकता था क्योंकि पञ्जाबके अस्थायी लाटके कथनानुसार मैं स्वदेशीका बड़ा भारी स्तम्भ माना जाता था। मैं कई स्वदेशी कारबारों और संस्थाओंसे सम्बन्ध रखता था। मेरा कई राजनीतिक संस्थाओंसे भी बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध था।

जिस समय सर माईकेल ओडायर पञ्जाबके लाट बनकर आये मैं [illegible] अधिकारियों और युरोपियन व्यापारियोंकी [illegible] खटक रहा था। पहली बार उन्होंने मुझपर यह

नाराजी दिखायी कि मुझसे मुलाकात तक न की जबकि मैंने तीन बार उनसे मुलाकात करनेकी प्रार्थना की। प्यूपिल बेङ्क के लिकोडेटरने भी सिफारिश की थी परन्तु कोई फल न हुआ क्योंकि हिन्दुस्तानी बेङ्ककी रक्षाका सवाल था। दूसरी बार उन्होंने यह नाराजी दिखायी कि मुझे करेन्सी कमेटीके सामने गवाह बनकर उपस्थित न होने दिया जबकि उनके पूर्व लाटने मुझे गवाही देनेके लिये लन्दन बुलाया था। उन्होने कई बार मेरे व्यापारके विरुद्ध अन्दोलनमें मदद दी। प्यूपिल बेङ्कके विरुद्ध उन्होंने खास तौरसे भाग लिया। इसीसे वह बेङ्क ६ सितम्बर १९१३ को बन्द कर देनी पड़ी। मुझे तकलीफमें डालनेके लिये भी पूरी कोशिश की गयी। अफसरोंने पूरी कोशिश की कि बेङ्क फिर न खुल सके। मैंने बहुत कहा कि बेङ्क खुल सकती है परन्तु कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। बेङ्कने सबका रुपया वापस कर दिया और ब्याज भी चुकाया परन्तु उसकी इतनी अच्छी अवस्था होनेपर भी वह फिर न खोली जा सकी। इस बेङ्कके फेल होनेसे और कई छोटी छोटी बेङ्कें फेल हो गयीं। सर माइकेल ओडायरकी अनुदारताने एक उपयोगी स्वदेशी कार-बार नष्ट करा दिया। इण्डस्ट्रियल कमीशनके सामने गवाही देनेके लिये पञ्जाब सरकारने जब मुझपर बड़ा दबाव डाला तो मुझे अपनी इच्छाके विरुद्ध गवाही देनी पड़ी। इस गवाहीसे मैं पञ्जाबके लाटकी निगाहमें और भी ज्यादा खटकने लगा और यही कारण है कि बिना किसी कारण मुझे देशनिकालेकी आज्ञा

प्राप्त हुई ।। झूठी गवाहियोंके आधारपर मुझे दण्ड दिया गया। इंगलेण्डको जो डेपुटेशन काग्रेसकी ओरसे भेजा जानेवाला था उसका एक सदस्य मैं भी चुना गया था। सर माइकेल ओडा-यरको यह बात बहुत बुरी लगी। जलन्धरमें १६१६ में जब प्रान्तीय राजनीतिक कानफरेन्स होनेवाली थी उसका अध्यक्ष भी मैं ही चुना गया था जो लाटके दिलको दुखानेवाली बात थी। उन्हे यह भय हो गया कि मैं उनके कड़े शासनकी सब कलई खोल दूंगा। सेनामें भर्तीके सम्बन्धमे उन्होने जो कड़ाई की थी उसके सम्बन्धमें उन्हें विशेष भय था। मेरे साथ जो कड़ाई की गयी उसका यही कारण हो सकता है कि मुझपर लाटकी पहलेसे ही कड़ी दृष्टि थी क्योंकि मैंने खास कारणोंसे रालट एक्ट इत्यादिके सम्बन्धमें भाग लिया ही न था। अप्रेलमे दङ्गा हुआ प-रन्तु मार्चमे ही एक डिवीजनके कमिश्नरने एक रायबहादुरसे कहा था कि सरकारके पास काफी सबूत हैं जिनके आधारपर दुनी-चन्द और रामभजदत्त फसाये जा सकते हैं, परन्तु हरकिशनलाल के सम्बन्धमें पूरा सबूत नही है। मेरे या मेरे मित्रोंके विरुद्ध वास्त वमे मामलेके समय कोईसबूत पेश नहीं किया गया तीनोंको बन्द किया गया यद्यपि बहुतसे खास आदमी उसी मामलेमें फसाये जा सकते थे। ११ अप्रेलसे १४ अप्रेल तक मैंने बराबर यही चेष्टा की कि हड़ताल खतम हो जाये। ३ अप्रेलको मैं डिप्टी कमिश्नरके बुलाने पर उनसे मिलने नही गया था परन्तु ११ अप्रेलको मैं

। मैं किसी तरहकी भ्रान्ति नहीं उत्पन्न करना चाहता

था। १५ अप्रेलको मैंने अपनी गिरफ्तारीके बाद बड़े लाटके पास तार भेजा था कि पञ्जाब सरकार मेरे द्वारा अपनी कलई खुलती देख मुझे हटा रही है। मैंने अपने वकील पण्डित मोती-लाल नेहरू द्वारा भारत सचिवको भी सब बातें तार द्वारा बतायीं परन्तु कोई फल न हुआ। तारोंमें मुझे दस हजार रुपये खर्च करने पड़े। मामलेमें बारह हजार और अपीलमें भी बहुतसा खर्च करना पड़ा। कारबारमें तीन लाख रुपयेकी हानि हुई। यह हानि कुछ भी नहीं जबकि उस मानसिक कष्टका ध्यान आता है जो मुझे और मेरे प्रेमी जनोंको मेरी गिरफ्तारीके कारण उठाना पड़ा।

ला० दुनीचन्द बैरिस्टर तथा म्युनिसपल कमिश्नर का बयान।

लाहौर षड्यन्त्रके मामलेमें मैं भी एक अभियुक्त था। मुझे मार्शल ला कमीशनद्वारा आजीवन कालेपानीका दण्ड और जायदाद जब्तीका हुक्म मिला था। पीछेसे तीन वर्षकी कड़ी कैद रह गयी। इसके बाद सम्राट्की घोषणापर मैं बिलकुल ही छोड़ दिया गया। मैं २० वर्षसे प्रान्तकी राजनीतिमें प्रधान भाग ले रहा हूं। सर माइकेल ओडायरके शासनमें प्रान्तकी बड़ी बुरी दशा रही। उन्होंने बड़े कड़े ढङ्गसे शासन किया। यद्यपि वे अपनेको किसानोंका हितैषी बताया करते थे परन्तु वास्तवमें उन्होंने उनके हितका कोई काम नहीं किया। शिक्षित आदमियोंपर तो वे

सदा जलते ही रहते थे। शिक्षित मनुष्योंकी उच्च आकांक्षाओंसे उनको कोई सहानुभूति न थी। बड़ी कौंसिलमें उन्होंने जो अनुदार विचार प्रकट किये वही भाव वे सदा अपने दिलमें रखते थे। उनका शासन यद्यपि शुरूसे ही भारत विरोधी था, परन्तु लड़ाईके समय उन्होंने रंगरूट भर्ती करने और रुपया एकत्र करनेमें बड़ी बेरहमी दिखायी। यद्यपि स्वेच्छासे सेनामें भर्ती होनेकी आज्ञा थी परन्तु उन्होंने अपने प्रतिनिधियोंद्वारा लोगोंको जबर्दस्ती सेनामें भर्ती कराया। मुझे ऐसे बहुतसे मामलोंका ज्ञान है। मुझे यह भी मालूम है कि बहुतसे गावोंमें लोगोंको खाना और नींद हराम हो गयी थी क्योंकि उन्हें बदमाशोंका भय रहता था जो सरकारी अफसरोंसे मिले रहकर प्रान्तमें बड़े जोरकी भर्ती करा रहे थे। सर माइकेल ओडायर सभाए इत्यादि न होने देते थे और समाचारपत्रोंको दमन करनेपर तुल गये थे। जब कभी मैं सभाओंकी सूचना निकालता था मेरे सामने इतनी रुकावटें डाली जाती थीं कि कोई दूसरा आदमी सभाओंको न करता। मुझसे कईबार कहा गया कि अमुक आदमियोंको बाहरसे बोलनेके लिये बुलाया जाये और अमुकको नहीं। प्रान्तीय कौंसिलके जो मेम्बर राजनीतिक कानफरेन्समें शामिल हुए थे वे इतने धमकाये गये कि वे भविष्यमें सार्वजनिक सभाओंमें आनेसे डरने लगे।

मार्शल ला इत्यादिके बारेमें यही कहा जा सकता है कि सब जड़ सर माइकेल ओडायर ही थे। १९१७ की अग

तसर प्रान्तीय कानफरेन्समें मैंने यह बात आगे सोचकर कह दी थी कि इस अत्याचारीका शासन अवश्य ही उपद्रव खड़ा करेगा। रालट कमेटीके सामने गवाही देते हुए भी मैंने यह बात कह दी थी। अमृतसरमें डा० सत्यपाल और किचलूके देश निकालेकी जो अन्यायपूर्ण आज्ञा निकाली गयी उसके कारण वहां अशान्ति उत्पन्न हुई। महात्मा गान्धीके विरुद्ध आज्ञा निकालनेसे लाहोरमें अशान्ति हुई। अमृतसरमें भीडने जो ज्यादती कीउसकी मैं निन्दा करता हूं। जलियांवालाबागमें निरपराधोंका जो खूनबहाया गया उसके लिये सर माइकेल ओडायर ही जिम्मेदार हैं क्योंकि वह हत्याकाण्ड चाहे उनकी स्वीकृति और ज्ञानसे न भी हुआ हो परन्तु पीछेसे उन्होंने उस काण्डका समर्थन किया था। सरकार हड़तालके विरुद्ध न थी क्योंकि डिप्टी कमिश्नरने यह बात कही थी कि ६ अप्रेलको कोई आदमी हड़ताल करनेके लिये बाध्य न किया जाये यद्यपि ४ अप्रेल या उसके बाद ऐसा कहा जा सकता है। नेताओंने ६ अप्रेलके बाद कभी भीड़ करनेकी आज्ञा नहीं दी और शान्तिरक्षाके लिये अधिकारियोंको पूरी मदद दी। ६ अप्रेलको रामनवमीके दिन हिन्दू मुसल्मानोंने आपसमें मेल दिखाया, परन्तु यह कहना भूल है कि यह मेल सरकारके विरोधमें दिखाया गया था। ६ अप्रेलके बाद लोग हड़ताल न करना चाहते थे यदि उन्हें महात्मा गान्धीकी गिरफ्तारीकी खबर न मिलती। ११ अप्रेलको मैंने पञ्जाबके लाट और बड़े लाटको तार भेजा था कि मार्शल

सडकपर जो गोली दागी गयी है वह अन्यायपूर्ण कार्य हुआ है और आपको बीचमें पड़ना चाहिये। १२ अप्रेलको लोग दुकानें खोलनेके लिये तैयार हो गये थे यदि शहरसे फौजका पहरा हटा दिया जाता, परन्तु सरकार इसके लिये तैयार न हुई। इसपर भी सन्ध्याको हम लोगोंने सभा की और निश्चय किया कि सब दुकानदार बिना किसी शर्तके दुकानें खोल दें। जनताको इस निश्चयके बारेमें सूचना दी गयी परन्तु उसपर किसीने ध्यान न दिया। इसपर हम लोगोंने डिप्टी कमिश्नरसे प्रार्थना करनेका निश्चय किया कि वे लाट साहबसे कहें कि जनताको सन्तुष्ट करनेके लिये नर्मीसे काम लिया जाये। हम लोगोने उनसे प्रार्थना की। डिप्टी कमिश्नरने कहा कि आप लोगोंने जो कहा है उसे मैं लाट साहबसे अवश्य कहूंगा परन्तु आप जानते हैं कि वे शेर हैं। शेर भी कभी कभी अपने बच्चेको चाटता चूमता है इसलिये सम्भव है कि वे भी कुछ नर्मी दिखा दें। उन्होंने यह भी कहा कि लाट साहब जो जवाब देंगे वह मैं आपलोगोको बुलाकर बता दूंगा। दूसरे दिन मैं ला० हरकिशनलाल और अन्य आदमी लोगोंसे दुकान खोलनेके वास्ते कहने जा रहे थे कि हमें पत्र मिला कि डिप्टी कमिश्नरने आज सवेरे १० बजे किसी कामसे आपको बुलाया है। इस पत्रको पाकर मैं उनसे बङ्गले पर मिलने गया और,वहां मैं गिरफ्तार कर केम्बेलपुर रवाना कर दिया गया।

हाईकोर्टके वकील पण्डित रामभजदत्त चौधरीका बयान।

भारतरक्षा कानूनकी अन्यायपूर्ण धूमने लोगोंके दिलोंसे वृटिशन्यायकी प्रशंसाके भाव दूरकर दिये थे। सब इस अन्यायी कानूनके रद्द होनेकी राह देख ही रहे थे कि इसी बीचमें उन्हें मालूम हुआ कि एक नया कानून और जारी होनेवाला है जो भारतरक्षा कानूनकी सभी कार्यवाही भारतमें स्थायी बना देगा। रालट एक्टसे पञ्जाबके लाट अवश्य ही लाभ उठायेंगे इस बातने लोगोंके दिलोंमें घबराहट पैदाकर दी क्योंकि सब जानते थे कि शिक्षित मनुष्योंसे सर माइकेल ओडायर खास तौरसे जलते हैं। यही कारण है कि पञ्जाबने भयभीत होकर रालट बिलके विरुद्ध बड़े जोरका आन्दोलन उठाया। मैंने भी इस नये कानूनका पूरा विरोध करना निश्चय किया क्योंकि मैंने अपने अध्ययनसे यह नतीजा निकाला कि हिन्दुओंने इस प्रकारके कड़े कानून बनाकर ही अछूत जातियोंकी वर्तमान दुरवस्था उत्पन्न कर दी। मैंने अपने मित्रोंका दिल खोलकर साथ दिया और कई विरोध सभाएं करायीं। ४ फरवरीको जो विरोध सभा हुई उसके सभापति माडरेटोंके सरदार ला० मनोहरलाल हुए थे। सरकारको साफ सूचना दी गयी कि यद्यपि हम लोग लड़ाईके समय चुप रहे परन्तु इस कानूनसे तमाम पञ्जाबको बड़ी भारी हानि पहुंचेगी, इसलिये हम उसका घोर-विरोध न्याय सङ्गत उपायोंसे

करनेका निश्चय कर चुके हैं। हम लोगोंने करार किया था कि धमकिया पाकर भी हम आन्दोलनको बन्द करनेवाले नहीं। तमाम पञ्जाबमें सभाएं की गयीं। सरकारको अपनी दमननीतिके विरुद्ध यह आन्दोलन उठते देख जरा भी भय न हुआ। ६ मार्चको सभा की गयी जिसमें निश्चय हुआ कि यदि सरकार न माने तो सत्याग्रह किया जाये।

१८ मार्चको भारतव्यापी विरोध होनेपर भी राल्टबिल पास किया गया। इसपर महात्मा गांधीने घोषणाकी कि ३० मार्चको तमाम भारतमें हडताल की जाये। पीछेसे ३० मार्चकी जगह ६ अप्रेलको हड़तालकी घोषणाकी गयी। लाहोरके अधिकारी हडतालके विरुद्ध न थे क्योंकि कहा गया कि ६ अप्रेलको किसीसे दुकान खोलने या बन्द करनेके लिये न कहा जाये। जो ऐसा करे वह दण्ड पाये। ६ अप्रेलको जो सभा होनेवाली थी यह भी नेता बन्द रखना चाहते थे परन्तु उसके सम्बन्धमें अधिकारियोंने कोई आपत्ति न की। कहा गया कि शान्तिपूर्ण ढङ्गसे सभाकर ली जाये। ६ अप्रेलको तमाम लाहोरमें अपने आप ही हडताल हुई। हम लोगोंने अपना प्रतिज्ञाके अनुसार उसमें किसी तरहका भाग नहीं लिया। पुलिसने एक खराब काम किया। उसने २ अप्रेलको सूचना निकाली कि लेसन्सके बिना किसी तरहका जमाव या जुलूस न हो। इस तरह हम लोग हजारों बेकार आदमियोंको ६ अप्रेलको काममें न लगा सके। लोगोंने सबेरे कीर्तन किया और वे जुलूस बनाकर 'राल्टबिल हाय हाय'

चिल्लाते हुए निकले। कुछ मुसलमानोंके माथोंपर भस्मके तिलक लगे थे इसे किसी गुप्त कार्यका सूचक चिन्ह बताया गया है, परन्तु ऐसी कोई बात न थी। तिलक दोनों जातियोंके बीच पूर्ण मेल ही प्रकट कर रहा था। हड़ताल या जुलूसके बारेमें कोई गुप्त उद्देश्य न था। जब पुलिसने इस जुलूसको रोका तो नेताओंने भीड़ हटानेमें अधिकारियोंको पूरी मदद दी। मुझे इस जुलूसका पता शामको लगा जब कि मैं सभामें उपस्थित हुआ। तमाम दिन उसका मुझे कुछ ज्ञान ही न था। सभामें भीड़ बहुत ज्यादा हुई इससे कई सभाएं सभाभवनके बाहर भी करनी पड़ीं। हम लोगोंने पहलेसे ही इस आशंकासे अधिकारियोंकी आज्ञा बाहर सभाएं करनेके लिये ले ली थी। सभामें मैंने लोगोंसे कहा कि हड़ताल हमलोग बहुत पुराने जमानेसे करते आये हैं जब कि हमें किसी अन्यायके विरुद्ध अपना क्षोभ प्रकट करना होता है। हमें शान्तिपूर्वक कार्य करना चाहिये। किसी तरहकी ज्यादती या खूनखराबीसे काम न लेना चाहिये। सभामें जो पुलिस अफसर आये उनके साथ पूरी खातिरदारीका बर्ताव किया गया। मामलेके समय ही मैंने सुना कि सभामें कहा गया कि उन्हें कुर्सियां न दी जायें और उनके आगमनपर धिक्कारध्वनि हुई। सभा शान्तिपूर्वक समाप्त हुई और ६ अप्रैलतक शान्ति रही। रामनवमीके दिन हिन्दू मुसलमानोंने सब भेदभाव त्यागकर बड़ा प्रेम दिखाया। पुलिस और अन्य सरकारी अफसरोंकी खातिरदारी की गयी।

जुलूसमें दो जगह सभाएं भी हुईं जिनमें किसी तरहके उत्ते जनाजनक व्याख्यान नहीं हुए। सरकारी अफसर जो साथ थे उन्हें धन्यवाद भी दिया गया। माल मण्डीपर मैं भीड़ हटाने पहुंचा था जबकि पुलिस गोलियां दागनेपर तुली थी। मेरे समझानेपर भीड़के आदमी बैठने लग गये परन्तु पुलिस अफसरने कहा कि मुझपर किसीने ऊपरसे चोट की उससे मैंने गोली ऊपरकी तरफ दागी है। मैंने कहा कि आपके कहांपर चोट आयी है उन्होंने अपनी कलाई दिखायी परन्तु उसपर चोटका कोई निशान न था। इसी बीचमें डिप्टी कमिश्नर भी आ गये। उन्होंने गोली चलानेका हुक्म दे दिया। मैं उनकी तरफ उन्हें समझा नेको दौड़ा। उन्होंने मुझे दो मिनट दिये। दो मिनटके पहले ही गोलियां दाग दी गयीं यद्यपि मैं भीड़में लोगोंको उनका फैसला सुना रहा था। कई आदमियोंके पीठपर चोट आयी। लोगोंको लाशें लौटानेमें देर की गयी। लोग नाराज होकर हड़ताल खतम करनेके लिये तैयार न हुए यद्यपि हम सबने हड़ताल खुलानेकी पूरी चेष्टा की। हम लोगोंने एक कमेटी बनायी थी जो शान्ति स्थापनके लिये थी। इस कमेटीको मामलेके समय क्रान्तिकारी कमेटी बताया गया। डिप्टी कमिश्नरने शहरसे फौजका पहरा उठा देनेकी प्रतिज्ञा की थी परन्तु उन्होंने उस प्रतिज्ञाका पालन नहीं किया। मैंने उन्हें बार बार स्मरण कराया परन्तु उन्होंने अन्तमें यही कहा कि मैं लाट साहबसे सलाह करूंगा। इसके बाद हमें धमकी दी

। कि यदि हड़ताल खतम न की जायगी तो मार्शल लाकी
णा की जायेगी । डिप्टी कमिश्नरने इस सम्बन्धमें कानून
कर सुनाया परन्तु मैंने कहा कि स्थिति ऐसी नहीं कि यह
नून काममें आ सके । मेरे इस उत्तरको सरकारके विरोधका
दिया गया । इसके बाद मैं गिरफ्तार कर भारतरक्षा
नूनके अनुसार देरा गाज भेज दिया गया । मुझे मार्शल
कमीशनने आजीवन कालेपानीका दण्ड और जायदाद जब्तीका
म दिया । पीछेसे मैं छोड़ दिया गया । मैं यह बात दावेके
थ कह सकता हू कि मार्शल ला कमीशनो द्वारा इसीलिये
ड दिया गया जिससे तमाम पञ्जाब भयभीत हो जाये ।
जनीतिक आन्दोलन भी दबानेकी प्रबल इच्छा थी क्योंकि
न्तका शासन सर माइकेल ओडायर सरीखे स्वेच्छाचारी
धिकारीके हाथमें था ।

सरकारके किसी भी कामने वृटिश शासनको भारतमें इतनी अधिक चोट नहीं पहुचायी जितनी कि मार्शल लाने पहुचायी है । यदि वृटिश सरकार दस बार भी दुश्मनसे हार जाये तब भी उसकी उतनी हानि नहीं हो सकती जितनी हानि मार्शल लाने की है । हम पञ्जाबियोंका दृढ़ विश्वास था कि वृटिशन्याय कायम है, परन्तु अब वह विश्वास बिल्कुल ही उठ गया । मेरी रायमें सर माइकेल ओडायरसे बढ़कर अंग्रेजोंका भारतमें कोई दुश्मन नहीं हो सकता । हवाई जहाजोंसे बम गिरानेकी कोई जरूरत न थी । नेक लज्रान्सनका यह भय सर्वथा निर्मूल था कि ...

मकानोंकी छतोंसे उनके सैनिकोंपर बम बरसाये जाते यदि वे हवाई जहाज न उड़ाते। शहरमें बहुत कम आदमी बन्दूकें रखते हैं और जिन लोगोंके पास हैं वे इतने नादान हैं कि अपने भाइयोंपर ही गोलियां दागना पसन्द करेंगे, परन्तु सरकारके सैनिकोंपर कभी गोलियां नहीं चला सकते। सैनिक अफसरोंकी कही हुई इस बातका मुझे ज्ञान नहीं कि अप्रेलसे ६ महीने पहले लाहोरमें बम गिरनेसे सैनिकोंके चोट पहुंची थी। यदि यह बात सच भी मान ली जाये तो इसका यह अर्थ नहीं कि कोई आदमी आसमानसे बम गिराये तो सभी उसके साथी मान लिये जायें। क्या एक पक्षीके बोलनेसे मौसमकी तबदीली मान ली जाती है। यदि बम गिरा था तो लाहोरका कोई आदमी क्यों नहीं पकड़ा गया। मुझे अपने नगरवासियोंके सम्बन्धमें किसी तरहका सन्देह नहीं। सैनिक अफसरोंने अपने कार्यके समर्थनमें जो दलील पेश की है वह डूबते हुए मनुष्यके लिये तिनकेके सहारेके ही समान है।

ला० गोवर्द्धनदासका बयान।

मैं आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीका मेम्बर हूं। ६ मार्चको मैंने रालट एक्टके विरुद्ध भाषण किया था। पञ्जाब सरकारने मार्शल ला जारी होनेपर पञ्जावकी चारों ओर घेरा डाल दिया था। बाहरवालोंको यहांका पूरा पता न लगता था और बाहरके पत्रोंका प्रवेश रोक दिया गया था। मैंने पञ्जाबके सम्बन्धमें प्रान्तोंके पत्रोंमें आन्दोलन उठाया। मैं १२ मईको गिर-

फ्तार किया गया और १६ मईको लाहोर पहुचा। ४ दिन तक अनारकली पुलिसकी हाजतमें रखा गया। इसके बाद में जेलमें भेज दिया गया। २६ 'मईको मैं जेलसे फिर पुलिस हाजतमें लाया गया और वहा ४-५ जून तक रखा गया। लाहोर लौटनेपर मुझसे सरकारी अफसरोंने कहा कि तुम तमाम भारतमें घूमकर पञ्जाब-सरकारको बदनाम करते रहे। मैंने कहा कि मैंने सर माइकेल ओडायरके काले कामोंपर प्रकाश डालनेके सिवा और कोई काम नहीं किया। इसपर मुझसे कहा गया कि तुम लोग राजभक्तिशून्य हो। मैंने उत्तरमें कहा कि मैं तो आप लोगोंके समान ही राजभक्त हूं। इसपर कहा गया कि तुम अपने मित्र गान्धीकी तरह ही राजभक्त हो। मैंने कहा कि गान्धीजीके बारेमें आप इस तरह कोई बात न कहें। मलिक उमर हयात खाने मेरे सामने कहा था कि अगर मुसल्मानका राज होता तो यह शख्स तोपसे उड़ा दिया जाता। मैं इसपर चुप न रह सका और मैंने कहा कि मलिक साहब, भाग्यवश यह बात नहीं है। हम लोग बृटिश राजमें रहते हैं और आप गवर्नर नहीं हैं। इसपर वे चुप चाप चले गये। खुफिया पुलिसके इन्सपेक्टर जनरलने मुझसे कहा कि क्या तुम वही आदमी हे जो १९०७ में दण्ड पा गया था। मैंने कहा जी हा, परन्तु मैंने चोरी बदमाशीके कारण दण्ड न पाया था जिसके कारण मैं लज्जित होऊं। मैंने राजनीतिक अपराधपर दण्ड पाया था। उन्होंने कहा कि इस बार ६ महीनेकी नहीं

१० वर्षकी सजा मिलेगी। मैंने कहा कि मैं उसकी परवा नहीं करता। शरीर आपका है, परन्तु आत्मा मेरी है।

भूतपूर्व डिप्टी कमिश्नर दीवान बहादुर राजा नरेन्द्रनाथ एम० ए०का बयान।

११ अप्रेलको मैंने पञ्जाबके लाटको सलाह दी थी कि जनताके प्रेमी नेता बुलाये जायें और उनका सहयोग प्राप्त किया जाये। सर माइकेल ओडायरको यह बात पसन्द न आयी। उन्होंने कहा कि नेताओंके सम्बन्धमें कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिये। १५ और १६ अप्रेलके बीच लाहौरमें मार्शल लाकी घोषणा की गयी। मेरी समझमें यदि घायल और लाशें लौटा दी जातीं तथा नेताओंका देशनिकाला न होता तो शान्ति बनी रहती। मार्शल लाने जो काम किया वह नेता ही हड़तालके सम्बन्धमें कर देते। अन्तर यही था कि उन्हें दो एक दिनका विलम्ब होता।

बैरिस्टर मि० सन्तानमका बयान।

मैं लाहोरमें १९११ से बैरिस्टरी कर रहा हूं। १ अप्रेलको हाईकोर्टके मैदानमें एक पार्टी हुई थी जिसमें पञ्जाबके लाट उपस्थित थे। उन्होंने बातचीतमें कहा था कि मैं अमृतसरके बदमाशोंको देखूंगा। उनका डा० सत्यपाल और किचलूकी तरफ ही इशारा था। ६ अप्रेलको हर तरहसे उत्तेजना बढ़ानेवाला सामान होनेपर भी किसी तरह शान्ति भङ्ग नहीं हुई। १० । लाहोरमें महात्मा गान्धीकी गिरफतारीकी खबर फैली।

उस दिन माल सड़कपर जो भीड़ पहुंची उसे मैंने शान्त देखा। कुछ युरोपियन उस समय गाड़ियोंमें सवार होकर निकले थे। भीड़ने गाड़ियोंको बड़ी अच्छी तरहसे निकल जाने दिया। जिन लोगोंपर गोली चलायी गयी वे माल सड़कपर डा० सत्यपाल या किचलूके बारेमें कुछ नहीं बोल रहे थे।

१५ अप्रेलको लाहोरमें मार्शल लाकी घोषणा की गयी जिसे मैंने बड़े आश्चर्यके साथ सुना, क्योंकि लोगोंने न तो सरकारी मालपर चोट की थी और न युरोपियनोंकी जानमालपर ही चोट की गयी थी। लोग मार्शल लाको अनावश्यक और अन्यायपूर्ण समझते थे। परन्तु उन्हें मालूम न था कि उसका क्या अर्थ है। लोग यही समझते थे कि जबर्दस्ती हड़ताल भङ्ग करायी जायेगी, परन्तु कोड़ोंकी मार और गिरफ्तारियोंकी धूमने उनकी आखें खोल दीं। वे बहुत घबरा गये। जब शान्त और प्रभावशाली लोग गिरफ्तार हुए तो लोगोंको ज्ञात हुआ कि न्याय और कानूनका शासन उठ गया और अत्याचारका शासन स्थापित हो रहा है। मार्शल लाकी घोषणाके तीन चार दिन बाद कुछ लड़के आपसमें बात करते हुए बाइस्किलोंसे उतरे हुए खड़े थे। एक गोरा घुड़सवार उनके पास पहुंचा और उनपर बेत बरसाने लगा, तब मुझे मालूम हुआ कि मार्शल ला क्या चीज है। मैंने ज्यादा बाहर निकलना छोड़ दिया और युरोपियनको देखकर मैं इधर उधर हो जाता था। मुझे कैदियोंके झुण्ड मार्शल ला अदालतोंके सामने देखकर तरस आता था

क्योंकि उनकी रक्षा होनी कठिन हो गयी थी। उनपर बड़े बड़े भय कर अभियोग लगाये गये थे। जो लोग पैसेवाले थे वे भी अपनी रक्षा न कर सकते थे, क्योंकि कोई वकील बैरिस्टर उनकी ओरसे इस भयसे न खड़ा होता था कि न जाने उनपर किस दिन मुकद्दमा चला दिया जाये। बहुतसे वकील उसकार अल-वाइयोंकी पैरवी न करना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने राजनीतिक आन्दोलनमें भाग लिया था जो सरकारकी आंखोंमें चुभनेवाली बात थी। सरकार पैरवी करनेवालोंको राजद्रोही समझती थी और सब लोग विपत्तिमें पड़ते हुए डरते थे। मियां मुहम्मद शफीने पैरवीके लिये कागज-पत्र लेकर भी पीछेसे उन्हें लौटा दिया, क्योंकि सरकारी अफसरने उनसे कहा कि सरकार इस कामको पसन्द नहीं करती।

मेरा भी अनुभव है कि पुलिस उस समय जो चाहती कर सकती थी और वह पैरवी करनेवालोंको क्रोधकी दृष्टिसे देखती थी। मैं ला० हरकिशनलाल आदिके मामलेके सम्बन्धमें जब शिमला गया तो खुफिया पुलिसने मेरे मकानको घेरना शुरू कर दिया। मेरे परिवारके लोग डराये गये और मैं भी खुफिया पुलिसकी निगाहमें खटकने लगा। अभी हालहीमें उन लोगोंने मेरा पीछा छोड़ा है। पञ्जाबके अन्याय और अत्याचारकी कलई न खुले और बाहर आन्दोलन न उठे इसीसे बाहरके वकीलोंका प्रवेश रोक दिया गया था। रणस्थलमें जब सैनिकोंपर मामला
है तो खास अधिकार रखनेवाली फौजी अदालतें

ही पेशाबको जाया करता था। न तो भोजन करनेका ही समय मिलता था और न कोई आराम ही कर सकता था। हर रोज कई लड़के बेहोश होकर गिर पड़ते थे। हाजिरीके समय गोरे हम लोगोंको बन्दूकें लेकर घेर लिया करते थे। हम लोग गाड़ियोंपर न जा सकते थे और न छाते ही ले जा सकते थे। दिनमें हम लोग इतने थक जाते थे कि शामको परीक्षाके लिये पढ़ भी नहीं सकते थे। हममेंसे कई छात्र कालेजसे निकाले गये और कईकी छात्रवृत्तियां बन्द कर दी गयीं।

सत्रहवां अध्याय।

कसूर।

मौलवी गुलाम मुहीउद्दीन वकीलका बयान।

१६ अप्रेलको मैं गिरफ्तार किया गया। मैं २३ आदमियोंके साथ थानेकी हाजतमें रखा गया। सब आदमी एक ही कमरेमें रखे गये। हम सब उसी कमरेमें टट्टी पेशाबको जाया करते थे। हम लोग जब रेलवे स्टेशनपर सनाख्तके लिये जाते थे तो हमारे हाथोंमें हथकड़ियां पडी रहती थीं और हम लोग पैदल ही चलाये जाते थे। एक बार हाजतसे मेरे निकलनेपर एक गोरेने मेरी इशारा करते हुए कहा कि मै इस आदमीके सम्बन्धमें खास

कर अपनेको मालामाल बनानेमें कोई कसर न उठा रखी। विचारशील मनुष्य यहांतक कहनेके लिये बाध्य हुए कि इस प्रकारके अत्याचारकी अपेक्षा जबर्दस्ती सैनिक भर्तीकी आज्ञा निकालनी ठीक थी। सबकी यही राय थी कि जबर्दस्ती भर्ती का नियम इतना कड़ा न होता जितना कि अधिकारियोंका अत्याचार था। रंगरूट भर्ती करनेकी इच्छासे जिलेका शासन भी न्यायको ताकमें रखकर किया जाता था। गुजरानवालाके रंगरूटोंके केन्द्रोंमें सेकडों स्त्रियां रोती चिल्लाती खडी रहा करती थीं। भर्तीके लिये चारो ओर आदमियोंकी खोज रहा करती थी। गाववाले अफसरोंको देखकर भयभीत हो जाते थे और भाग पड़ते थे। बहुतसे लोग गन्नोंके खेतोंमें जाकर छिपते थे जिन्हें कुत्तों और खासी लोगोंकी मददसे बाहर निकाला जाता था। बहुतसे आदमी बडे तडके ही अपने घरोंमें पकड़ लिये जाते थे। लोगोंपर दफा १०७ और ११० के अनुसार बड़ी वेरहमीके साथ मामले चलाये जाते थे। भारत-रक्षा कानून-के अनुसार अधिकारी हर एक कामको राजद्रोही बता सकते थे। गरीबसे गरीब आदमियोंको जबर्दस्ती लडाईमें चन्दा देना पड़ता था। जो लोग कचहरीमें मुकद्दमोंके लिये जाते थे उनसे भी चन्दा वसूल किया गया। इसपर लोग कम मुकद्दमें करने लगे तब आय कमती होते देख अदालतोंमें चन्दा लेना [illegible] गया।

६ अप्रेलको ठीक तौरसे गुजरानवालामें हड़ताल मनायी गयी यद्यपि पुलिसने लोगोको हर तरहसे उत्तेजित किया। ६ अप्रेलके बाद पूर्ण शान्ति हो गयी और साधारण रूपसे कारबार चलने लगा। डिप्टी कमिश्नरके इशारेपर अधिकारी इस हड़-तालसे बहुत चिढ़ गये। यह भी धूम मचायी गयी कि डिप्टी कमिश्नरको पूरा अधिकार मिला है कि वे जिस नेताको चाहे देशनिकालेकी आज्ञा दें। यह बात बड़े मार्केकी है कि पुलिस पता ही न लगा सकी कि किसने मरे हुए जानवर लटकाये हैं। इससे लोगोंका यह सन्देह सर्वथा निर्मूल नहीं कहा जा सकता कि इस घृणित कार्यमें पुलिसका हाथ था। जिसने लाशोका प्रदर्शन कराया वास्तवमें वही गुजरानवालाके उपद्रवके लिये जिम्मेदार ठहराया जायेगा। गुजरानवालामें उपद्रवके कारण बहुत ही कम हानि हुई होती यदि पुलिस आग बुझानेको तैयार हो जाती। आग दो दिनतक जलती रही परन्तु उसे बुझानेकी कोई चेष्टा न हुई। जिस समय डिप्टी कमिश्नर कर्नल ओब्रा-इन गुजरानवाला पहुंचे उन्हें एक भी उपद्रवी न मिला। इससे स्पष्ट था कि उपद्रव शान्त हो गया था परन्तु इसपर भी हवाई जहाज बुलाकर शहरपर बम बरसाये गये। जहापर अधिक आबादी थी वहींपर बम गिराये गये। हवाई जहाजोंसे बम बरसानेका समर्थन करनेके लिये यह बात कही गयी कि युरोपि-यनोकी जानोंपर सकट था। गुजरानवालाके आसपासके गा-वोंमें भी बम गिराकर जनताकी हानि की गयी। डिप्टी

कर अपनेको मालामाल बनानेमें कोई कसर न उठा रखी। विचारशील मनुष्य यहांतक कहनेके लिये बाध्य हुए कि इस प्रकारके अत्याचारकी अपेक्षा जबर्दस्ती सैनिक भर्तीकी आज्ञा निकालनी ठीक थी। सबकी यही राय थी कि जबर्दस्ती भर्ती का नियम इतना कड़ा न होता जितना कि अधिकारियोंका अत्याचार था। रङ्गरूट भर्ती करनेकी इच्छासे जिलेका शासन भी न्यायको ताकमें रखकर किया जाता था। गुजरांनवालाके रङ्गरूटोंके केन्द्रोंमें सैकड़ों स्त्रियां रोती चिल्लाती खड़ी रहा करती थीं। भर्तीके लिये चारो ओर आदमियोंकी खोज रहा करती थी। गांववाले अफसरोंको देखकर भयभीत हो जाते थे और भाग पड़ते थे। बहुतसे लोग गन्नोंके खेतोंमें जाकर छिपते थे जिन्हें कुत्तों और सांसी लोगोंकी मददसे बाहर निकाला जाता था। बहुतसे आदमी बड़े तड़के ही अपने घरोंमें पकड़ लिये जाते थे। लोगोंपर दफा १०७ और ११० के अनुसार बड़ी बेरहमीके साथ मामले चलाये जाते थे। भारत-रक्षा कानून-के अनुसार अधिकारी हर एक कामको राजद्रोही बता सकते थे। गरीबसे गरीब आदमियोंको जबर्दस्ती लड़ाईमें चन्दा देना पड़ता था। जो लोग कचहरीमें मुकद्दमोंके लिये जाते थे उनसे भी चन्दा वसूल किया गया। इसपर लोग कम मुकद्दमें करने लगे तब आय कमती होते देख अदालतोंमें चन्दा लेना [illegible] गया।

६ अप्रेलको ठीक तौरसे गुजरानवालामें हड़ताल मनायी गयी यद्यपि पुलिसने लोगोंको हर तरहसे उत्तेजित किया। ६ अप्रेलके बाद पूर्ण शान्ति हो गयी और साधारण रूपसे कारवार चलने लगा। डिप्टी कमिश्नरके इशारेपर अधिकारी इस हड़-तालसे बहुत चिढ़ गये। यह भी धूम मचायी गयी कि डिप्टी कमिश्नरको पूरा अधिकार मिला है कि वे जिस नेताको चाहे देशनिकालेकी आज्ञा दें। यह बात बड़े मार्केकी है कि पुलिस पता ही न लगा सकी कि किसने मरे हुए जानवर लटकाये हैं। इससे लोगोंका यह सन्देह सर्वथा निर्मूल नहीं कहा जा सकता कि इस घृणित कार्यमें पुलिसका हाथ था। जिसने लाशोंका प्रदर्शन कराया वास्तवमें वही गुजरानवालाके उपद्रवके लिये जिम्मेदार ठहराया जायेगा। गुजरानवालामें उपद्रवके कारण बहुत ही कम हानि हुई होती यदि पुलिस आग बुझानेको तैयार हो जाती। आग दो दिनतक जलती रही परन्तु उसे बुझानेकी कोई चेष्टा न हुई। जिस समय डिप्टी कमिश्नर कर्नल ओब्रा-इन गुजरानवाला पहुंचे उन्हें एक भी उपद्रवी न मिला। इससे स्पष्ट था कि उपद्रव शान्त हो गया था परन्तु इसपर भी हवाई जहाज बुलाकर शहरपर बम बरसाये गये। जहांपर अधिक आबादी थी वहीपर बम गिराये गये। हवाई जहाजोंसे बम बरसानेका समर्थन करनेके लिये यह बात कही गयी कि युरोपि-यनोंकी जानोंपर सकट था। गुजरानवालाके आसपासके गा-वोंमें भी बम गिराकर जनताकी हानि की गयी। डिप्टी

कमिश्नरने मुझसे बातचीतमें कहा था कि यह दु:खकी ही बात है कि ज्यादा आदमी न मारे जा सके। गिरफ्तारियां भी बड़े बुरे ढङ्गसे की गयीं। इज्जतदार आदमी अचानक ही पकड़ लिये गये और उनके सुखकी कोई व्यवस्था न की गयी। मैं डिप्टी कमिश्नरसे मिलने जा रहा था। उसी समय राहमें पकड़ लिया गया और मुझे हथकड़ियां पहना दी गयीं। ला० मेलाराम वकील नंगे बदन थे, वे यों ही गिरफ्तार कर लिये गये। दीवान मङ्गलसेनने चश्मा लगानेकी आज्ञा मांगी परन्तु वह न दी गयी। जब उनके बच्चे गिरफ्तारीके समय रोने-चिल्लाने लगे तो आवाज सुनाई दी कि उन्हें गोलीसे मार दो। डिप्टी कमिश्नरने पुलिस अफसरसे कहा कि आपने गोली क्यों न दागी जब कि वे भागना चाहते थे। यह बात उन्होंने यों ही बिना किसी कारणके कह दी। अफसरोंने बहुत बुरी गालियां दीं। सब गिरफ्तार आदमी पैदल रेलवे स्टेशनपर पहुचाये गये और वहां कड़ी धूपमें खड़े किये गये। उन्हें पानी पीनेकी भी आज्ञा न दी गयी। रेलवे स्टेशनसे सब आदमी हथकड़ियों समेत तमाम बाजारों और सड़कोंसे घुमाये गये। बूढ़े आदमियोंकी दुर्दशाका वर्णन नहीं हो सकता। एक जगह दीवान मङ्गलसेनकी धोती खुल गयी। उसे पहननेके लिये उन्हें समय न दिया गया। वे धोतीको हाथमें पकड़कर चले। दो मील सबको दौड़ाया गया और फिर दूसरे मार्गसे सब वापस लौटाये गये। सब कैदी कोयलेके एक डिब्बेमें खाली फर्शपर बिठाये गये। वह डिब्बा इञ्जिनसे

जोड़ा गया जिसका मुंह डिब्बेकी तरफ था। इस तरह सब आदमियोंके बदन और कपड़े धुआं लगनेसे एकदम काले हो गये।

लाहोर जाते समय कैदियोंको बड़ा कष्ट भोगना पड़ा। एक आदमीने पेशाब करनेकी आज्ञा मांगी परन्तु वह न दी गयी और उसे जहांपर बैठा था वहीं पेशाब करनी पड़ी। इसके बाद उसे पेशाबपर बैठनेकी आज्ञा दी गयी। उसने जब जरासी आनाकानी की तो सङ्गीन दिखाकर उसे धमकी दी गयी और उसे आज्ञाके अनुसार कार्य करना पड़ा। रातके ९ या १० बजे सब आदमी बुरी तरहसे जख्मी होकर लाहोर सदर जेल पहुंचे। जब वे लोग डिब्बेसे उतारे गये तो उन्हें एक साथ ही कूदना पड़ा क्योंकि सब जंजीरसे एक साथ बंधे थे। जेलमें सब कालकोठरियोंमें रखे गये जो बड़ी गन्दी थीं। इसके बाद वे फिर गुजरानवाला पहुंचाये गये और राहमें उन्हें पहलेकी तरह ही सब कष्ट भोगने पड़े। सबको अपने हाथोंसे नलोंसे पानी लेकर चुल्लूमें भरकर पीनेको कहा गया जब कि एकका हाथ दूसरेके हाथसे बंधा हुआ था। उन्हें कड़ी धूपमें अपना बिस्तर शिरपर या बगलमें लेकर पैदल चलना पड़ा। स्टेशन प्लेटफार्मपर वे धूलमें पड़े रहे और रातभर रखे गये। गुजरानवालेसे वे फिर लाहोर लाये गये और उन्हें फिर सभी कष्टोंका सामना करना पड़ा। एक छोटेसे कमरेमें ३५ आदमी बन्द रखे गये जो इतिहासके 'ब्लेकहोल' से

हालतमें कम न था। जिस कमरेमें वे बन्द थे उसीमें एक दूसरे कमरेसे बडी भयानक बदबू आ रही थी। जब सबको दण्ड मिल गया तो सब कालकोठरियोमें रखे गये और उन्हें ऐसा भोजन दिया गया जो भोजनके नामसे पुकारा ही नहीं जा सकता। लोगोंसे बडी कड़ी मिहनत ली गयी। किसीको चक्की चलानी पडी। किसीको कोल्हू चलाना पड़ा।

दीवान संगलसेनका बयान।

गुजरानवालाके डिप्टी कमिश्नर कर्नल ओब्राइनने सैनिक भर्ती और वारलोनके वारेमें बडी कडाई की। वे शिक्षित मनुष्योंके प्रति बराबर घृणा प्रकट करते रहे। डिप्टी कमिश्नर कहा करते थे कि राल्ट एक्ट्का विरोध करना मूर्खता है। सरकार कोई गैरकानूनी काम नहीं चाहती। वे सार्वजनिक सभा करनेपर भी असन्तुष्ट होते थे। ६ अप्रेलको अफसरोंने पूरा दबाव डाला कि हडताल न हो परन्तु उस दिन व्यापक हड़ताल मनायी गयी। महात्मा गांधीकी गिरफ्तारीकी खबर सुनकर लोगोंने फिर हडताल मनायी। इस हड़तालका दङ्गेसे कोई सम्बन्ध न था। लोगोंको काममें लगाये रखनेके लिये ही सभाएं की गयी थीं। उनमें कोई व्याख्यान उत्तेजनाजनक न दिया गया था।

१५ अप्रेलको लोगोंको भयभीत करनेके लिये गिरफ्तारिया आरम्भ हुईं। जो कोई इज्जतदार आदमी घरके वाहर दिखाई दिया वही गिरफ्तार किया गया। जिन लोगोंने सभाओंमें भाग [illegible] भी गिरफ्तार किये गये। जो गिरफ्तार किये गये

उन्हें दुहरी हथकड़िया पहनायी गयी। हिन्दू मुसलमान एकता-का मजाक उड़ानेके लिये एक हिन्दू और एक मुसलमान एक साथ ही गिरफ्तार किया गया। जब मैं गिरफ्तार हुआ मैं केवल एक कुर्ता और धोती ही पहने हुए था। मैं चश्मा भी न लगा पाया। जब मैंने चश्मा लगानेकी आज्ञा मागी तो मुझसे कहा गया कि आप कितावें पढ़ने नहीं जा रहे हैं। मुझे ला० मेहारास और लाभसिंहके साथ हथकड़िया पहननी पड़ीं। मेरे दोनों वच्चोंके रोनेपर उन्हे गोलीसे मारनेकी धमकी दी गयी। मेरा आठ वर्षका लड़का वोला कि लो गोली मारो मैं सामने खड़ा हू। हम लोगोंको स्टेशनपर कड़ी धूपमें खड़ा रहना पड़ा। वहा छाया भी थी परन्तु उससे हम लोग लाभ न उठा सके। स्टे-शनपर अफसरोंने मेरा मजाक उड़ाकर कहा कि यह छोटासो प्राणी जोरदार व्याख्यान देनेवाला था। इसके कदकी तरफ देखो। लाहोर रेलवे स्टेशनपर हम लोग खाली डिब्बेसे निकालकर सामान ढोनेवाली मोटरमें विठाये गये जिसकी खिड़किया वन्द थीं और जिसके ऊपर हवाई जहाज उड़ रहा था। हम लोगोंको जेल पहुचनेपर वडी वुरी तरहसे मोटरपरसे उतारा गया। कई आदमियोंके चोट लग गयी। जेलमें हम लोग घुटनेके वल वैठाये गये। हम लोगोंके नाम पुकारे गये। जो 'हाजिर जनाव' न करता था उसका वड़ा अपमान किया जाता था और उससे जवर्दस्ती यह शब्द कहाया जाता था। हम लोगोंकी अच्छी तरह तलाशी ली गयी। हमारे जूते भी तलाशीसे न वचे। हम लोग

अलग अलग कालकोठरियोंमें बन्द किये गये। एक दूसरेसे बातचीत न कर सकें इसके लिये दो आदमियोंकी कोठरियोंके बीच दो दो कोठरिया खाली रखी गयीं। कोठरिया एकदम ही अन्धकारमय थीं और उनमें मच्छर भरे हुए थे। दोपहरको हम लोगोंको दो कच्ची रोटिया दी जाती थीं। उसी समय हमारी हथकड़िया भी खोली जाती थीं। हम लोगोंको गालिया भी सुननी पड़ती थीं। हम लोगोंपर बड़े हास्यजनक ढङ्गसे मामला चलाया गया। सैकड़ों आदमी एक साथ ही विचारके लिये उपस्थित किये जाते थे और मामला बहुत जल्दी खतम कर दिया जाता था। मुझे आजीवन कालेपानीका दण्ड मिला जो पीछेसे दयापूर्वक घटाकर दो वर्षके लिये कर दिया गया।

ला० अमरनाथ वकीलका बयान ।

मैं १६ वर्षसे वकालत कर रहा हूं और जिला कांग्रेस कमेटीका मेम्बर हूं। मैं आर्यसमाजका अध्यक्ष और गोपाल गौशालाका उपसभापति हूं। ३० मार्चको गुजरानवालामें हड़ताल नहीं मनायी गयी। ५ अप्रेलको विरोध-सभा करनेका निश्चय किया गया था। डिप्टी कमिश्नरने नेताओंको बुलाकर धमकाया और कहा कि यदि सभाके कारण किसी प्रकारकी अशान्ति हुई तो आप लोग ही जिम्मेदार ठहराये जायेंगे। ६ अप्रेलको गुजरानवालामें शान्तिपूर्ण हड़ताल मनायी गयी। अधिकारियोंको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई और उन्होंने इसे बड़ा भारी अपमान समझा। वे बदला लेनेकी बात

सोचने लगे। डिप्टी कमिश्नर सदा ही वडे घमण्डके साथ कहा करते थे कि मैं लाट साहवका दाहना हाथ हूं। ७ अप्रेलसे कोई राजनीतिक चर्चा नहीं हुई परन्तु १४ अप्रेलको फिर अपने आप ही हड़ताल हो गयी, क्योंकि महात्मा गान्धीकी गिरफ्तारीकी खवरसे सव लोग असन्तुष्ट हुए। उसी दिन लोगोंको वड़े सवेरे अमृतसरके हत्याकाण्डकी खवर लगी। इस खवरसे लोग वड़े उत्तेजित हो गये। इसी वीचमें लोगोंको खवर लगी कि एक मरा हुआ गायका वछडा पुलसे लटक रहा है। लोगोंने इसे पुलिसका काम वताया और उपद्रव कर डाला। उसी दिन शहरमें हवाई जहाज आये और लोगोंपर वम वरसाने लगे। २० पौण्डका एक वम लोगोंने उसके न फटनेपर कुएमें डाल दिया। जन दो कमरोंमें अस्पतालमें घायल मनुष्य पहुचे उनमें रक्तकी वाढ़ आ गयी थी। वहुतसे आदमी अङ्गहीन हो गये। हवाई जहाजोंपर रखी हुई मेशीन-तोपोंसे भी गोले वरसाये गये। १५ अप्रेलको गिरफ्तारियोंकी धूम मची। मैं भी पकडा गया। सडकोंपर गिरफ्तार हुए आदमियोंका अपमान किया गया तथा लाहोर भेजनेमें सवको वडा कष्ट दिया गया। जेलमें हम लोगोंके साथ वडा वुरा वर्ताव किया गया। १७ जूनको मुझे फांसीका हुक्म दिया गया। उस दिनसे ३ जुलाईतक मैं और भी भयङ्कर कालकोठरीमें रखा गया। १७ दिनतक मैं जीवित रहकर भी मृत्युका अनुभव करता रहा। मैं एक भी दिन कालकोठरीसे वाहर

न निकाला गया। कालकोठरीमें ही मैंने सुना था कि मेरी पतोहू और छोटे छोटे बच्चे पुलिसने घरके बाहर निकाल दिये हैं। बच्चोंको खाना कपड़ा भी अपने साथ रखनेकी आज्ञा न दी गयी। उन्हें तमाम रात सड़कोंपर ही घूमना पड़ा। पड़ोसियों और रिश्तेदारोंको धमकाया गया कि यदि उन्हें अपने घरोंमें रखोगे तो मार्शल लाके अनुसार फल भोगना होगा। जेलमें हमें तेलका शाक खाना पड़ा जिससे ज्वर और इनफ्लुएञ्जा आ गया। बहुतसे कफसे पीड़ित हो गये। जाड़ेके दिनोंमें हम लोगोंकी कोठरियोंकी खिड़कियां हटानेका विचार हुआ था परन्तु हम लोगोंकी प्रार्थनापर वह विचार काममें न लाया गया। २४ दिसम्बरको राजकीय घोषणाके अनुसार हम लोगोंके कष्टोंका अन्त हुआ।

संगला हिल।

हरिश्चन्द्र वर्माका बयान।

सङ्गला हिलमें मैंने दो गोरोंको देखकर तुरन्त ही सलाम किया था। इसपर भी एक पठानने मुझे रोका और कहा कि साहब को सलाम क्यों नहीं किया। मैंने कहा कि मैंने सलाम किया है। इसपर मेरे चारपांच बेत लगाये गये। मेरे एक हण्टर भी जमाया गया। इसके बाद गोरे चले गये और मैं भी रवाना हुआ।

हाफिजाबाद ।

ला० गुरदासराय आनन्द वकीलका बयान ।

१६ अप्रेलको हाफिजाबादमें मार्शल लाकी घोषणा की गयी थी। डिप्टी कमिश्नरने हाफिजाबाद पहुंचकर वकीलोंको धमकाया। उन्होंने कहा कि मार्शल लाके अनुसार तमाम शहर तोपोंसे उड़ाया जा सकता है। ३० अप्रेलको शहरके ३० बड़े बड़े आदमी बुलाये गये। जो बुलाये गये उनमेसे दो साहूकार पकड़े गये। मुझसे झूठी गवाही देनेके लिये कहा गया परन्तु मैं तैयार न हुआ। ४ मईको मैं अपने भाईके साथ गिरफ्तार कर लिया गया। हम लोग फौजी पहरेके साथ गुजरानवाला भेजे गये और वहां जेलमें रखे गये। हाफिजाबादमें हम दोनोंकी सनाख्त वेश्याओं और कञ्जरों द्वारा करायी गयी। हम दोनों भाई एक साथ जञ्जीरमें बंधे रहते थे इससे जब एक टट्टी पेशाबको जाता था तो दूसरेको भी साथ ही रहना पडता था। गुजरानवाला रेलवे स्टेशनपर एक तीसरे दर्जेके डिब्बेमें हम चालीस आदमी एक साथ भर दिये गये और पुलिसने डिब्बेका ताला लगा दिया। गर्मीकी वजहसे एक आदमी बेहोश हो गया। और आदमी भी बेहोश होनेवाले थे परन्तु डाक्टर बुला लिया गया और हम लोग डिब्बेसे निकाल लिये गये। हम लोग रातभर कोयलोंके ढेरपर पडे सोते रहे क्योंकि गाडी सवेरे छूटनेवाली थी। लाहोरमें हम लोग जेलतक पैदल भेजे गये और हमें अपने सम्बन्धियों और मित्रोंके सामने अपमानित किया गया।

मनियांवाला ।

भगतसिंह, वूटासिंह और करतारसिंहका बयान ।

१८ या १६ अप्रेलको जब मैं अपने बेटेके साथ खेतमें गेहू काट रहा था स्टेशनकी तरफसे गोलियां चलायी गयीं। एक गोली मेरे पाससे निकली। इसपर सब इधर उधर भागने लगे और बहुतसे पेड़ोंमें जाकर छिप गये। गोरे गावमें गोलिया चलाते हुए घुसे थे। जब मैं गावमें गया तो किसीको न पाया क्योंकि सब डरके मारे भाग गये थे और पेड़ोमें जा छिपे थे। पटवारीने कहा कि इस आदमीका लड़का भी उपद्रवमें शामिल था। मैंने कहा कि यह क्या जुल्म है। मेरा लड़का तो घरपर ही न था। इसपर मुझसे कहा गया कि चुप रहो नहीं तो गोली मार दी जायेगी। इसके वाद मुझसे और कई आदमियोंसे झूठी गवाही देनेको कहा गया। हम लोगोंको पुलिसने पकड़कर एक रुपया फी आदमी वसूलकर भोजन दिया।

भागसिंह जाटका बयान ।

जब सब गांववाले बुलाये गये तो मैं भी उनके साथ गया था। मुझको तमाम दिन पेटके बल धूपमें पडा रहना पड़ा। मुझे गालियां भी दी गयी। मेरे चूतड़ भी खोल दिये गये और मेरी काछ भी खोल दी गयी थी जिसे मैं टट्टी जानेके सिवा अपने धर्मके अनुसार कभी नहीं खोल सकता। हम लोगोंसे कहा गया था कि यदि स्टेशनका माल न लाओगे तो तुम्हारे घरोंकी स्त्रिया

भी बुलायी जायेंगी और वे नङ्गी की जायेंगी और तुम्हारे साथ यहा लिटायी जायेंगी।

११५ वर्षके अतरासिंहका बयान।

मैं ३० वर्षसे मनियांवालाका लम्बरदार हूं। जब मै अपने मकानके दरवाजेपर खड़ा था मैंने गोरोंको गावकी तरफ गोलियां चलाते हुए आते देखा था। मुझपर भी उन्होंने गोली चलायी थी परन्तु मैं भीतर भाग गया जिससे गोली मेरे नही लगी। मैं घरसे बाहर निकला और हाथ जोड़कर मैंने साहबोंसे कहा कि हमलोग तो आपकी रैयत हैं हमपर आप क्यों गोलिया चलाते हैं। गांवकी स्त्रिया और बच्चे डरकर मकानोंसे खेतोंमें भागकर जा छिपे थे। मेरे मकानकी तलाशीकी आज्ञा हुई थी। तलाशीमें वे अल्मारी तोड़कर दस रुपयेका एक नोट, लेम्प, स्त्रियोंका जूता जोड़ा तथा कलमदान उठा ले गये। इसके बाद मैं एक घोड़ेपर बिठाकर स्टेशन पहुंचाया गया और वहां सैनिक ट्रेनमें बैठा दिया गया। मै धावनसिह स्टेशनपर एक गोरेके पहरेमें रखा गया। गवाहोंके झूठे बयानोंपर मेरी लम्बरदारी छीन ली गयी। मैं लाहोरकी जेलमें रखा गया और फिर धावनसिह स्टेशनपर लाया गया। वहापर छोड दिया गया।

लेहनासिंहका बयान।

मि० बासवर्थ स्मिथने मेरे गावमें आकर तमाम स्त्रियोंको डेरामें जमा किया। मैं खूब पीटा गया। मुझसे झूठी गवाही

देनेको कहा गया। मार खानेके कारण मैं बेहोश हो गया। मि० वासवर्थ स्मिथ मुझे एक कान्सटेबलके हवाले कर स्त्रियोंकी तरफ चला गया।

तेजासिंहका बयान।

मि० वासवर्थ स्मिथने हमारे गावमें आकर सब स्त्रियोंको एकत्र किया और उनके मुहंपरसे पर्दा हटाकर उन्हें गालियां सुनायीं। उन्होंने उन्हें मक्खिया, गदही, चुड़ेलें कहकर पुकारा। उन्होंने धमकाकर कहा कि पुलिसवाले तुम लोगोंके दामन खोलेंगे। उन्होंने सबके ऊपर थूंका और कहा कि जब तुम अपने आदमियोंके साथ सो रही थीं तो उन्हें विस्तरोंपरसे उठकर क्यों जाने दिया।

मीरन, जीवन, मालन, प्रेमकुंअर आदि स्त्रियोंका सम्मिलित बयान।

हम सबको गांवसे और इधर उधरसे बुलाकर स्कूलके पास एकत्र किया गया। हमें हुक्म मिला कि मुहंपरसे पर्दा हटाओ। हमें गालियां दी गयीं और कहा गया कि यह बात कहो कि भाई मूलसिहने सरकारके विरुद्ध व्याख्यान दिया। मि० वासवर्थ स्मिथने हमारे ऊपर थूंका और गालियां दीं। उन्होंने हमें लकड़ीसे पीटा। हम लोगोंको कान पकड़कर कतारमें खड़ा होना पड़ा। हमसे कहा गया—मक्खियो, यदि तुमको हम गोलीसे मारें तो तुम क्या कर सकती हो।

मंगल जाटकी विधवा गुरदेवीका बयान ।

मार्शल लाके दिनोंमें एक दिन मि० वासवर्थ स्मिथने गांवके तमाम आदमियोंको एकत्र किया जिनकी अवस्था आठ वर्षसे अधिक थी। जब सब आदमी गांवके बाहर कई मीलकी दूरीपर जा बैठे तो वे हमारे गांवमें दौडे हुए आये और उन्हें जो स्त्री राहमें मिली उसको अपने साथ किया। गावकी गलियोंमें जाकर उन्होंने सब स्त्रियोको मकानोंके बाहर लकड़ियोंकी मारसे निकाला। हम सबको गावके डेरेके पास खड़ा किया। स्त्रियां हाथ जोडकर खडी हो गयीं। उन्होंने कई-को लकड़ीसे मारा और कईके ऊपर थूक दिया। उन्होंने बहुत बुरी गालिया सुनायीं। मेरे भी दो बार चोट लगी और मेरे मुंहपर थूंका गया। स्त्रियोंके मुंहपरसे साहबने अपनी लकड़ीसे सब पर्दे हटा दिये। सबको उन्होंने सुअरकी बच्ची, गदही, कुत्ती और मक्खिया कहा। उन्होंने कहा कि जब तुम सब अपने खसमोंके साथ एक ही चारपाईपर सोयी हुई थी तो उन्हें उपद्रव करनेके लिये क्यों जाने दिया। अब तुम नङ्गी की जाओगी और पुलिस तुम्हारी वेइज्जती करेगी। उन्होंने टागोंके भीतरसे हाथ कराकर सबको कान पकड़कर खड़े रहनेका हुक्म दिया। जब हम लोगोंके आदमी मौजूद न थे हमारे साथ ऐसा वर्ताव किया गया। इस बयानका समर्थन गावकी आठ अन्य स्त्रियोंने भी किया जो भिन्न भिन्न अवस्था की थीं।

सिंगरसिंहकी माता माई गवनका बयान ।

मेरा लड़का पकड़ा गया और उसे दो सालकी कड़ी सजा और एक सौ रुपयेके जुर्मानेका दण्ड मिला । पीछेसे दो वर्षकी जगह ६ महीनेका दण्ड रह गया । हम सब अपने लड़केकी मिहनतपर ही अपना जीवन निर्भर रखते थे । वही हमें रोटियां देता था। उसके पकड़ जानेसे हम सबको बड़ी मुसीबत हुई और हमारी जमीन जोती न जा सकी । बैसाखके पांचवें दिन गांवमें गोलियां चलायी गयीं जिससे आदमी डरकर भागे । एक साहब घोड़ेपर सवार होकर गांवमें आया और गांवकी बूढ़ी स्त्रियोंसे कहने लगा कि क्यों हमने गोलियां चलाकर अच्छा काम किया । जब बुढ़ियोंने हां न की तो उसने अपनी लकड़ीसे सबको मारा और गाली दी । उसने सब स्त्रियोंको पंक्ति बनाकर खड़ा किया । जिन स्त्रियोंके मुंह पर पर्दे थे वे हटा दिये गये और वे भी लकड़ियोंसे पीटी गयीं ।

माही जाटके पुत्र सरदारखांका बयान ।

बैसाख महीनेमें तहसीलदार हमारे गांवमें आया था। घोषणा की गयी कि सवेरे सब लोग डेरेमें हाजिर हों । बहुत कम लोग हाजिर हुए, क्योंकि भय था कि कहीं सेनामें भर्ती होनेके लिये बाध्य न किये जायें । दूसरे दिन लोगोंसे कहा गया कि गुजरानवालामें हाजिर हो । वहां लोगोंको तह-पिटवाया और कहा कि ज्यादा रङ्गरूट लाओ। लो

गोंकी दाढ़ियां खींची गयीं और उन्हें जूतोंसे पीटा गया। उन्हे टांगोंसे अपने हाथ निकालकर कान भी खींचने पड़े। एक गांवमें अली गोहर पीटा गया, क्योंकि उसने रङ्गरूट नहीं दिये। वह जूतोंसे दोपहरसे रातके ६ बजेतक पीटा गया। वह किसी तरह छिपकर रातको भाग निकला। हमारे गांवके दो आदमी तहसीलदारने बुलाये। उनसे कहा गया कि अपने लड़के भर्ती कराओ। जब वे तैयार न हुए तो उन दोनोंकी दाढ़ियां एक साथ बांधी गयीं और जमीनमें एक खूंटी गाड़कर उससे वे बांधी गयीं। इस तरह दो घण्टेतक दोनों आदमी खड़े रखे गये। इसके बाद उनके मुंह काले किये गये और पुलिस कान्सटेबलके साथ उन्हें घर घर भीख मांगनेका हुक्म दिया गया। लोगोंने इस अत्याचारसे डरकर २६ रङ्गरूट दे दिये। मैंने अपने दो भाई दिये। तहसीलदारने दो तीन स्त्रियां बुलायीं और उनसे कहा कि तुमने अपने आदमी छिपा रखे हैं। उसने धमकाया कि गांवकी सब स्त्रियां बुलायी जायेंगी और वे तुम्हारा अपमान करेंगी। उसने बड़ी बुरी गालियां सुनायीं। लोगोंके पशु कई दिनतक भूखे प्यासे बन्द रखे गये।

भगतसिंह अरोड़ाका बयान।

लड़ाईके दिनोंमें मुझे रङ्गरूट भर्ती करनेके लिये रुपया देनेकी आज्ञा हुई थी। मैंने ढाई सौ रुपयेमें
कर दिये परन्तु पीछेसे दाम बहुत बढ़ गया था

वालोंको चन्दा जमा करना पड़ा। हम लोगोंको बराबर धम काया जाता था कि यदि रङ्गरूट न दोगे तो तुम गिरफ्तार किये जाओगे। लोग जमीनपर लिटाये जाते थे और फिर उनपर जूतों की मार पड़ती थी। उनकी दाढ़ियां खींची जाती थीं और एक दूसरेके मुंहपर तमाचा मारनेका हुक्म दिया जाता था। वारलोन एकत्र करनेमें भी खूब कड़ाई की गयी। एक साहूकारको सभासे उठकर जूतोंके बीच बैठनेका हुक्म दिया गया मार्शल लाके दिनोंमें तमाम गाव हाजिरीके लिये बुलाया जाता था। हम लोगोंने जब झूठी गवाही न दी तो गालिया सुननी पड़ीं। चुहारकानामें एक गोरे मजिस्ट्रेटने लोगोंके सामने महात्मा गान्धीको गन्दी मक्खी बताया। लोगोंको बीस पचीसके झुण्ड बनाकर एक साथ ही दण्डकी आज्ञा सुनायी गयी किसीको अपनी जबानसे एक अक्षर भी बोलनेका हुक्म न था।

शरमसिंह जाटका बयान.

हमारे गांव लोगड़में लड़ाईके दिनोंमें बड़ा अत्याचार हुआ। एक भङ्गीसे मुझपर और मेरे चचेरे भाईपर झूठा मामला चलवाया गया। अदालतमें मजिस्ट्रेटने मुझसे कहा कि यदि तुम अपने भाईसे उसके दोनों लड़के सेनाके लिये दिला दो तो यह मामला उठा दिया जायेगा, क्योंकि मामला इसी गरजसे चलाया गया है। हमें जेल भेजनेकी धमकी दी गयी। जब गांवकी ओरसे . दे दिये गये तो हमलोग छोड़ दिये गये, क्योंकि

असलमें हमारे विरुद्ध कोई बात न थी। मजिस्ट्रेट और थानेदारने हमारे गांवमें आकर चार आदमी जबर्दस्ती पकड़ लिये और उन्हें गांववालोंके सामने खूब ही पीटा। कहा गया कि तुम सेनामें भर्ती होना स्वीकार करो। उनपर चोरीका मामला चलानेकी धमकी दी गयी। अन्तमें वे पिटकर लाचार हो गये और उन्होंने सेनामें भर्ती होना स्वीकार कर लिया। दो आदमी तुरन्त ही रवाना किये गये। एक आदमीकी बूढ़ी मां रोती हुई अपने बेटेके साथ चली गयी। उसपर भी मार पड़ी परन्तु उसने पीछा न छोड़ा। तब भर्ती करनेवाले अफसरने उसके लड़केको छोड़ दिया, क्योंकि बुढ़ियाने कहा था कि मैं यहींपर अपनी जान दे दूंगी। चारों ओर लोग डराये जाते थे और जो जिसे चाहता था पकड़ लिया करता था। लोग डरके मारे रातको गन्नेके खेतके बीच सोया करते थे, क्योंकि सवेरे मकानोंमें घुसकर लोग उन्हें पकड़ ले जाते थे। लोगोंसे जबर्दस्ती रुपया भी वसूल किया गया। जो न देता था सिपाही उसकी दाढ़ी खींचते थे। स्त्रियां डरके मारे अपने खाने-पीनेके बर्तन जमीनके अन्दर छिपा दिया करती थीं क्योंकि बर्तनोंको बेच डालनेके लिये कहा जाता था। लम्बरदारोंको भोजन करनेकी छुट्टी भी न मिलती थी। उन्हें अफसरोंके साथ घूमना पड़ता था। गरीब आदमियोंने अपने बर्तन बेचकर चन्दा दिया।

भाइ ईशरसिंहका बयान.

रातको पुलिस धावाकर लोगोंको नामें जानेके लिये गिरफ्तार किया करती थी। नौजवान आदमी डरके मारे खेतोंमें छिपकर रात काटते थे। पहलू नामक एक आदमी जाडेमें छिपा रहा इससे वह बीमार होकर मर गया। पुलिसने लम्बरदारोंसे कह रखा था कि जितने नौजवान आदमी मिलें सबपर दफा ११० के अनुसार मामला चलाया जावे। इस तरह पुलिस जिसे चाहती थी पकड़ लिया करती थी। एक वार पुलिसने करतारसिंहको पकडना चाहा जो एक सुन्दर नवयुवक था। आधीरातको उसपर धावा किया गया। नवयुवक उसी समय जाडेमें नंगे वदन भाग निकला और उसे शीतज्वर हो गया। इससे उसकी मृत्यु भी हो गयी। गिरफ्तारीके पहले यह नवयुवक एक महीनेतक एक छप्परके नीचे सोता रहा जो मेरा था।

नन्दासिंहका वयान.

मैं अपने गांववालोंके साथ धावनसिह रेलवे स्टेशनपर गया था और वहां तमाम दिन विना कुछ खाये पिये रहा। यदि स्त्रियां हमारे लिये भोजन ले जाती थीं तो उनसे एक रुपया फी आदमीके हिसावसे वसूल किया जाता था। १० वर्षसे अधिक उम्रके सभी आदमी धूपमें विठाये गये। मेरे भाईने हाथ जोडकर कहा कि मैं निरपराध हूं। इसपर वह खूब ही पीटा गया। वह वांधा गया। सतरू चौकीदारको हुक्म हुआ कि

उसके १२ बेत लगाये। मि० वासवर्थ स्मिथ वहा खड़े थे। उन्होने कहा कि अगर आदमी मर जाये तब भी कुछ परवा नहीं। मेरा भाई जब वेहोश हो गया तो उसके मुंहमें पानी डाला गया और वह होशमें लाया गया। इसके बाद थानेदारने उसे गिरफतार कर लिया। इस घटनासे सब गाववाले डर गये और फिर कोई जरा भी न बोलता था।

गुजरात.

वैरिस्टर हरगोपालका बयान।

१४-१५ अप्रेलको गुजरातमें हड़ताल रही, क्योंकि कुछ लड़कोंने आकर लोगोंको ऐसा करनेके लिये तैयार किया। झेलमसे ७० सैनिक जरूरतके लिये बुलाये गये थे। दुकानें बन्द रहनेके कारण उन्हें खाने-पीनेका सामान न मिल सका। १५ अप्रेलको ही शहरमें कुछ उपद्रवियोंने थोड़ासा दङ्गा किया। कुछ लड़के गिरफ्तार कर लिये गये। २० अप्रेलको मैं भी पकड़ा गया। अधिकारियोंकी नाराजीके कारण ही मैं गिरफतार किया गया। १६ अप्रेलको गुजरातमे डिप्टी कमिश्नरकी इच्छाके विरुद्ध मार्शल लाकी घोषणा हो गयी थी। मार्शल लाके वाद पुलिसका राज कायम हो गया। मेरे और कई इज्जतदार आदमियोंके मकानोंकी तलाशी हुई। हम लोग लाहोरकी सदर जेलको भेजे गये। वहा हम लोग छोटी छोटी कोठरियोंमे बन्द किये गये। हम लोग टट्टी पेशाबके लिये भी बाहर न निकाले

जाते थे। मुझपर जब मामला चलाया गया तो मैं छोड दिया गया और मेरे विरुद्ध जो गवाहियां थीं ईर्षाके कारण दी हुई बतायी गयीं। मैंने पञ्जाब सरकारसे आज्ञा मागी कि जिन लोगोंने मुझे तङ्ग किया है उनपर मामला चलानेकी आज्ञा दी जाये परन्तु मुझे आज्ञा न मिली।

जलालपुर जट्टन.

सियासतके एडीटर मि० हबीबका बयान।

मैं यह बात अच्छी तरह अनुभव कर चुका हू कि पञ्जाबमें कोई स्वतन्त्र विचारका पत्रसम्पादक कुशलपूर्वक नहीं रह सकता। सर माइकेल ओडायरने बाहरी पत्रोंका पञ्जाब प्रवेश रोक दिया था क्योंकि उनमें सैनिक भर्तीकी बुराइया छपा करती थीं। मार्शल ला मेरे गावमे भी जारी किया गया था और मैं पकड़ा गया था, परन्तु राजकीय घोषणा होनेपर छोड़ा गया। हाजतमें हम लोगोंके साथ बहुत बुरा वर्ताव किया गया। हम लोगोंके स्वास्थ्यपर जरा भी ध्यान न रखा गया

मालकवाल.

रलवे गार्ड बाबू नसीरुद्दीनका बयान।

एक मुसल्मान रेलवे फायरमेन मेरे सामने बुलाया गया था और पुलिसने उससे पूंछा था कि रेलकी पटरियां किसने जब वह किसी आदमीका नाम न बता सका तो वह

खूब पीटा गया। वह हथकड़ियों समेत धूपमें खड़ा किया गया और उसे खानेको कुछ भी न दिया गया। एक वार उसे पानी भी न दिया गया। उसकी वहन उसके लिये खाना लायी थी परन्तु वह भगा दी गयी। उसे गालियां दी गयीं। पुलिसने दिनभर आदमीको टट्टी पेशावके लिये भी न जाने दिया और शामको उसे थोड़ासा पानी दिया गया। उसे पेशाव करनेकी भी आज्ञा दी गयी। रातभर उसकी दोनों टागें एक दूसरी टाङ्गसे फासलेपर रखी गयीं और उसे इसी हालतमें खड़ा रहना पड़ा। उसकी टाङ्गोंके वीच एक चारपाई कर दी गयी थी जिससे टागें कभी पास ही न आ सकें। आदमी जव कभी रोता-चिल्लाता था तो उसपर वेत पड़ते थे। हम कई आदमी इस आदमीके पास पड़े हुए थे। हम लोगोंके लिये उसकी दुर्दशा देखकर सोना कठिन हो गया। सवेरा होते ही वह आदमी फिर धूपमें खडा किया गया। उसे पीनेको पानी भी न दिया गया। जव वह धूपमें खड़ा था उसे पीटा भी जाता था। इस तरह दोनों दिन उसपर खूब मार पड़ी। रात होनेपर फिर उसे पहली रातकी तरह खड़ा होना पड़ा। दूसरे दिन शामको मैंने चोरीसे उसे खानेको दे दिया था। तीसरे दिन सवेरे पुलिसने उसे कुछ खानेको दिया परन्तु अगले दो दिनतक उसके साथ पहले के समान ही वर्ताव किया गया। चार दिनतक वह आदमी जरा भी न सो सका। यह आदमी आखिरको मर गया। उसकी मृत्युसे पहले उसके मुंहसे खून गिरने लगा था।

मैंने मालकवालके रेलवे थानेपर पुलिसका दूसरा अत्याचार भी देखा । ४७ वर्षका एक आदमी बड़ी बेरहमीके साथ पीटा गया। वह दो दिनतक कड़ी धूपमें खड़ा रखा गया और उसे खाने पीने को कुछ भी न दिया गया। रातको भी उसपर अत्याचार किया गया। राजाराम और एक छात्रपर भी पुलिसने अत्याचार किया और सरकारी गवाह बनानेमें कोई कसर न उठा रखी। मैंने यह भी सुना कि एक दूसरे फायरमेनको पुलिसने इतना तङ्ग किया कि वह अन्तमें मर ही गया।

ला० गंगाराम सुनारका बयान ।

२१ अप्रेलको मालकवालमें मार्शल लाकी घोषणा की गयी थी। मियानीमें मेरा लड़का अध्यापक था। अदावतके कारण उसपर मामला चलाया गया। २२ मईको मेरा दूसरा लड़का भी गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों लड़कोंको तमञ्चा दिखाकर झूठी गवाही देनेके लिये वाध्य किया गया। जब उन्होंने गवाही देनेसे इन्कार किया तो उनका चालान कर दिया गया। मेरी दुकानपर मार्शल लाके नोटिस चिपकाये गये थे और मुझे उनकी रक्षा करनी पड़ती थी। मेरे लड़कोंका कोई कसूर न होनेपर भी उनका चालान किया गया। पुलिसने मुझे वहुत तङ्ग किया।

ला० गंगाराम दुकानदारका बयान

२७ अप्रेलको मुझे १२ नोटिस मिले थे जिनकी रक्षा दिन करनी पड़ती थी। मैं वृद्धावस्थाके कारण बड़ा

कष्ट भोगता रहा। जो अफसर या अंग्रेज मिलता था वह मुझसे कड़ा वर्ताव करता था और मुझे सलाम करनेके लिये बाध्य करता था। एक दिन डिप्टी कमिश्नरने मुझे अपने बंगलेपर बुलाकर कहा कि क्या यह बात सच है कि तुमने कहा है कि उनके साथ गुरु गोविन्दसिंहके लड़कोंकी तरह वर्ताव हो रहा है। मैंने कहा कि हां ऐसा कहा है। इसपर उन्होंने मुझसे कहा कि तुम गोलीसे मार दिये जाओगे और तुम्हारे लड़कोंको फांसी दे दी जायेगी। मैं बहुत डर गया। थानेदार और तहसीलदारने मुझे बहुत गालियां सुनायीं और मुझे जमीनपर अपनी नाक रगड़नी पड़ी। मार्शल लाके दिनोंमे मैं निर्धन हो गया

रेलवे गार्ड बा० सन्तरामका बयान।

उपद्रवके दिनोंमे चालीस आदमी पुलिसने गिरफ्तार किये जिनमें १६ निरपराध रेलवे कर्मचारी भी थे। हम लोगोंपर यह दोष लगाया गया कि तुम लोगोंने उपद्रवके पहले मेलके बारे- में व्याख्यान सुने थे। गिरफ्तारीके बाद हम लोग हर तरहसे तङ्ग किये गये। ६ क्लर्क पहले एक सप्ताहतक जेलमें रखे गये, फिर दो माहतक गुजरातमे और २५ दिन लाहौरकी जेलमें रहे। जेलमें ८ आदमी बिना मामला चले ही छोड़ दिये गये और सात मामलेके बाद छोड़ दिये गये। हम लोग निरपराध बताकर छोड़ दिये गये परन्तु रेलवे कम्पनीने हमें फिर नौकरीमें नहीं लिया। मैंने जो अत्याचार देखे उनका भी वर्णन कर देना चाहता

हूं । जूरा नामक फाइरमेन तमाम रात खड़ा रखा गया । उसके दोनों हाथ हथकड़ियोंसे पीठपर बंधे थे । उनकी दोनों टांगें अलग रखी गयीं । जब कभी थक जानेके कारण वह जगह बदलता था तो उसपर कोड़े पड़ते थे । यह इसी लिये किया गया जिससे वह यह कह दे कि मैंने रेलकी पटरियां उखाड़ी थीं। सरवार नामक फाइरमेनके साथ भी ऐसा ही वर्ताव किया गया।

शण्टर तज्ञाके साथ भी ऐसा ही बुरा वर्ताव किया गया और उसके बाल उखाड़ लिये गये । सीनियर गार्ड बा० बिहारीलालके मुंहपर बड़े जोरका तमाचा मारा गया क्योंकि उन्होंने कहा कि मैंने व्याख्यान देनेवालोंको दावत नहीं दी । वह कड़ी धूपमें खड़ा रखा गया । जबतक सेनाध्यक्ष रहे प्रत्येक दुकानदारको उनपर पङ्खा करना पड़ता था । रेलवे कर्मचारी जबतक हाजतमें रहे दो दोको एक साथ हथकड़ियों समेत रहना पड़ा । रेलवे इन्सटीट्यूटमें जो युरोपियन हैं उनके सामने हम लोग हथकड़ियों समेत उपस्थित किये गये थे ।

मोतीराम गुसाईंका बयान ।

मार्शल लाके दिनोंमें मेरे साथ बहुत बुरा वर्ताव किया गया मेरे घरसे जितनी चारपाइयां गयीं वे न लौटायी गयीं और जो माल दुकानसे गया उसको रसीद रहनेपर भी दाम नहीं दिये गये । मेरे मकानपर मार्शल लाका नोटिस भी चिपका दिया गया था और मुझसे कहा गया था कि यदि नोटिस खराब होगा ... दिया जायेगा । हम लोगोंको पंखा भी खींचना पड़ता

था। हम लोगोंको मिट्टी भी खोदनी पडती थी। जब कभी हम लोग इन्कार करते थे तो पीटे जाते थे। मैं २० दिन हाजतमें रहा क्योंकि विना किसी कारण मेरा चालान कर दिया गया था। मेरी गैरहाजिरी में मेरे मकानकी तलाशी ली गयी।

फजल, करीम दर्जी, लक्ष्मीदास, रामप्यारा आदिका बयान.

मार्शल लाके दिनोंमें जब मालिकवालमें सेना आयी तो उसके साथ तीन अफसर थे जिनमें एक डाक्टर था। हम लोग पीटे गये और हमें गालियां दी गयीं। तहसीलके चपरासीने हम लोगोंको दुकानोंपरसे घसीटकर बाहर निकाला। हम लोग सेनाके अध्यक्षके पास गये जहांपर सबको पङ्खा खींचना पड़ा। हम लोग जोडे बनाकर जाते थे और एक आदमीकी बारी तीन चार दिन-तक रहती थी। यदि हम लोग पङ्खा खींचनेमें जरा भी सुस्ती करते थे तो हमें गालिया सुननी पड़ती थीं और हमपर मार भी पडती थी। हमें मिहनतके लिये कुछ न दिया जाता था। राम-दिसको अफसरकी टट्टीसे जबर्दस्ती पाखाना उठाना पडा था।

जलन्धर।

बैरिस्टर भगतरामका बयान।

जलन्धर शहरमें किसी तरहका उपद्रव नहीं हुआ यदि हड़-तालको उपद्रव न बताया जाये। परन्तु अधिकारियोंने हड़तालको ही बड़ा भयानक समझा और उसे स

विरुद्ध बताया। प्रत्यक्षमें तो वे यही कहते रहे कि दुकानें बन्द करनेपर हमें कोई आपत्ति नहीं। शहरके नेता हर तरहसे अधिकारियोंको सहयोग प्रदान करनेके लिये तैयार थे। जलन्धरमें ६ और ११ अप्रेलको हडताल हुई और दोनों दिन शान्तिपूर्वक समाप्त हो गयी। अधिकारियोंका रुख बदल गया जब कि अमृतसर तथा आसपासके स्थानोंमें मार्शल लाकी घोषणा की गयी। अधिकारी सभी नेताओंके विरुद्ध होकर काम करने लग गये। पञ्जाब प्रान्तीय कानफरेन्सकी स्वागत-समितिके सदस्य तरह तरहसे डराये धमकाये जाने लगे। हिन्दू और मुसल्मानोंके बीच वैर पैदा करानेकी चेष्टा हुई। जिन व्यापारियोंने राजनीतिमें भाग ले रखा था उनके कारबारको हानि पहुचानेकी चेष्टा की गयी। इसपर कुछ नेता डिप्टी कमिश्नरसे मिले, परन्तु उन्हें उनका रुख सर्वथा विपरीत दिखाई दिया। डिप्टी कमिश्नरने कहा कि मैं उसी समय प्रसन्न हो सकता हू जब कि एक सूचना-पत्र निकालकर नेता यह बात कहें कि लाहोर अमृतसर और अन्य स्थानोंमें जो मार्शल लाकी घोषणा हुई है वह ठीक हुई है। जनता मार्शल लाकी घोषणा सर्वथा अन्याय पूर्ण समझती थी। इससे सूचना पत्र प्रकाशित करना सम्भव न था। इसके बाद डिप्टी कमिश्नरने दमनके लिये तैयारी की। एक व्यापारी मिट्टीके तेलका एजेण्ट था। डिप्टी कमिश्नरने अग्रेज कम्पनीको लिखा कि इस आदमीको एजेण्ट न रखा कम्पनीने बहुत प्रतिवाद किया, परन्तु अन्तमें उसे नया

एजेण्ट नियुक्त करना पडा। व्यापारीका यही अपराध था कि वह स्वागत समितिका सदस्य था । इसी तरह और भी व्यापारियोको तरह तरहकी कडाइयाकर हानि पहुचायी गयी। एक स्कूलका सम्बन्ध विश्वविद्यालयसे तुडा दिया गया क्योकि डिप्टी कमिश्नरकी रायमे स्कूलकी प्रबन्धकारिणी कमेटीके सदस्य राजनीतिमे अधिक भाग लेते थे। यह बात भी कही गयी कि स्कूलमें भारतकी प्राचीन सभ्यताकी बड़ी प्रशंसा की जाती है इससे लडके बृटिश राजसे स्वाभाविकरूपसे घृणा करने लग जाते हैं। आनरेरी मजिस्ट्रेट काजी महबूब आलमकी जागीर जब्त कर ली गयी। उनका यह अपराध था कि ६ अप्रेलकी सभामें उन्होंने एक प्रस्तावका समर्थन न कर दिया था। आनरेरी मजिस्ट्रेटने कहा कि मैं जब लाहोर गया तो पञ्जाबके लाटसे मिला। उन्होंने हडतालका हाल पूछा। मैंने कहा कि हड़ताल पूरी थी और शान्ति भी रही। सर माइकेल ओडायरने कहा कि शान्ति क्यो रही। मैंने कहा मि० गाधीके आत्मबलके प्रभावसे। इसपर लाट साहबने अपना घूंसा उठाकर कहा कि रायजादा साहब, यह बात याद रखिये कि गाधीके आत्मबलसे बढ़कर और दूसरा बल भी है जो अधिक प्रभावशाली है।

विभिन्न गवाहियां ।

मालकवालके अध्यापक गुलाममुहम्मदका बयान।

मैं एक उर्दू स्कूलका अध्यापक हूं। मार्शल लाके दिनोंमें मुझे स्कूलके सभी छात्रोंको एकत्र करनेकी आज्ञा दी गयी थी। लडकोंको अंग्रेजी झण्डेकी सलामी करनी पड़ती थी। जब स्कूल बन्द हो गया था तब मुझे ऐसा करानेका हुक्म हुआ था इस लिये मुझे घर घर जाकर अध्यापकों और छात्रोंको सूचना देनी पडी। मैं समयसे दो मिनट देरमें लडकोंको लेकर पहुंचा क्योंकि मेरे पास घडी न थी इसपर मुझे २५) जुर्माना अदा करना पडा। ६ वर्षसे कम अवस्थाके लडकोंको भी सलाम करनेको जाना पडता था।

कुन्दनलालका बयान।

(गुजरात जिला निवासी)

मेरा पिता मर गया है और माता जीवित है। अप्रेलमें मैं एक रिश्तेदारसे मिलनेके लिये गुजरात गया था। १५ अप्रेलको मैं औरोंके साथ स्टेशनपर तमाशा देखनेके लिये गया। इसके बाद मैं एक खेतमें टट्टी होने चला गया। वहां मैंने गोलियां दगनेकी आवाज सुनी। डरके मारे मैं खेतमें ही बैठा रहा। वहां मैं पकड़ लिया गया और मेरे हाथोंमें हथकडियां डाल दी गयीं। इसके बाद मैं शहरमें लाया गया। मैं हाजतमें रखा गया और इसके बाद जेलमें भेज दिया गया। मैं दूसरे दिन छोड़ दिया गया, परन्तु पीछेसे फिर पकड लिया गया जब कि कुछ अभियुक्त

लाहोरकी सदर जेलको रवाना किये गये। मैं लाहोरकी जेलमें ६ दिन रखा गया। मैं और अभियुक्तोंके साथ ही लाहोर गया था। हम लोगोंके हाथमें हथकड़िया पड़ी हुई थीं। मुझे बहुत बुरा भोजन दिया गया और कालकोठरीमें रखा गया जहा मुझे वडा कष्ट दिया गया। नवें दिन मैं कमीशनके फैसलेपर छोड दिया गया।

गुजरातके सेठ चिरागदीनका बयान .

मैं सौदागर हूं और १६ वर्षसे म्युनिसिपल कमिश्नर भी हूं। मैं आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हूं। मेरे पास कई सरकारी सनदें और तमगा है। मैंने लड़ाईमें २५० रंगरूट दिये थे और बहुतसा वार-लोन भी जमा कर दिया था। मार्शल ला जारी होनेपर मेरी आन-रेरी मजिस्ट्रेटी छीन ली गयी। मैं म्युनिसिपल कमिश्नर भी न रखा गया। मुझे नहीं मालूम कि किस कारणसे मेरे साथ यह कड़ाई की गयी। मेरा विश्वास है कि मेरे दुश्मनोंके प्रभावसे ही मुझे यह अपमान सहना पड़ा।

ला० रामचन्द्र टण्डनका बयान .

गुजरातमें दो दल हैं। एक दलने पुलिसकी मददसे मार्शल लाके दिनोंमें दूसरे दलवालोंको खूब तङ्ग कराया। मैं दूसरे दलका था इससे मेरी म्युनिसिपल कमिश्नरी छीन ली गयी। मार्शल लाकी कोई जरूरत न थी। उसकी घोषणासे लोगोंको बड़ा कष्ट ... गुजरातको पुलिसका अधिक व्यय भी चुकाना पड़ा जो ... गयी थी।

लायलपुरके अमरनाथ मेवाफरोशका बयान।

२५ अप्रेलको मैं थानेमें बुलाया गया। वहां और भी बहुतसे आदमी थे जो एक दूसरेसे बातचीत न कर सकते थे और न एक दूसरेको देख ही सकते थे। हमारे पासमें थानेदार हाथमें पिस्तौल लिये हुए खड़ा था। हम लोग इस हालतमें १२ दिनतक बिठाये गये। इसके बाद हम लोग चकझमिया पहुचाये गये। वहां एक चौधरीको बुलाकर उससे कहा गया कि जो आदमी मौजूद हैं उनमेंसे किसीका नाम तार काटनेके सम्बन्धमें ले दो। जब वह तैयार न हुआ तो कहा गया कि तुम्हें भी हथकड़ियां पहननी होंगी। इसपर उसने कह दिया कि इन्हीं आदमियोंने तार काटे थे। हम लोग गाव गावमें मार खाते हुए लायलपुर पहुचाये गये। रातभर हम लोग हाजतमें रहे। हम लोगोंकी टांगोंके बीच चारपाई थी और हमारे हाथ ठीक सीधे रखे गये थे। यदि हम लोग जरा भी इधर उधर होते थे तो बुरी तरह पीटे जाते थे। हम लोगोंको दण्ड भी दिया जाता था और कभी कभी मिठाइयां देकर समझाया भी जाता था।
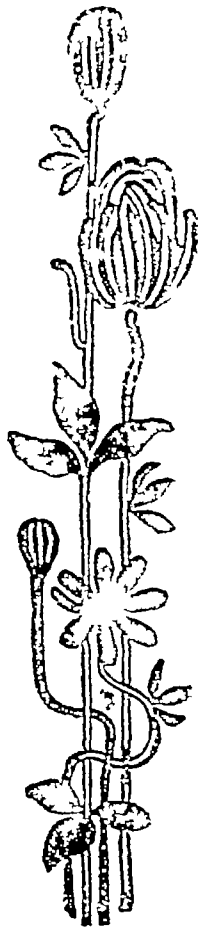
पुस्तकोंपर सम्मतियां ।

कलकत्ता कांग्रेसके अध्यक्ष ला० लाजपतराय ।

मेरी रायमें भारतमें वृटिश शासनके इतिहासमें वृटिश साम्राज्यको इतनी अधिक हानि और किसीने नहीं पहुचायी जितनी कि सर माइकेल ओडायरने पहुचायी हैं। उनके बराबर वृटिश जातिके यशपर किसीने कलङ्क भी नहीं लगाया। पञ्जाबका हत्याकाण्ड प्रान्तीय नहीं, राष्ट्रीय दुर्घटना थी। हमारा पौरुष, राष्ट्रीय गौरव, तथा राष्ट्रीय अस्तित्व इसीपर निर्भर करता है कि हम सदाके लिये ओडायरी नीति और कार्योंको इस भूमिसे विदा कर दें। जबतक ऐसी दुर्घटनाएं बन्द करनेके लिये हमें पक्का आश्वासन न मिल जाये तबतक हम कैसे चुप हो सकते हैं। यदि वृटिश शासक हमें स्वाधीनता और सम्मान दिये विना जानमालकी रक्षाकी गारण्टी देना चाहते हैं तो हमें ऐसी गारण्टी न चाहिये। स्वाधीनताके विना जीवन नहीं और स्वराज्यके विना स्वाधीनता नहीं।

मजूरदलका विरोध ।

१ मई सन् १९२० को लन्दनमें ३ लाख मजूरोंकी उपस्थितिमें प्रस्ताव पास किया गया कि यह सभा भारतमें निरस्त्र पुरुषों और स्त्रियोंपर बम बरसाने और गोली चलानेकी निन्दा करती है और चाहती है कि भारतीय शासनमें तुरन्त सुधार किये जायें और भारतीयोंको अपना शासन आप करनेका अधिकार दिया जाये।

वैरिस्टर मि० नार्टन ।

अभियुक्तोंको आज्ञा नहीं दी गयी कि वे जिस वैरिस्टरको चाहें अपने मामलेकी पैरवीके लिये नियुक्त करें। मैं पूछता हू
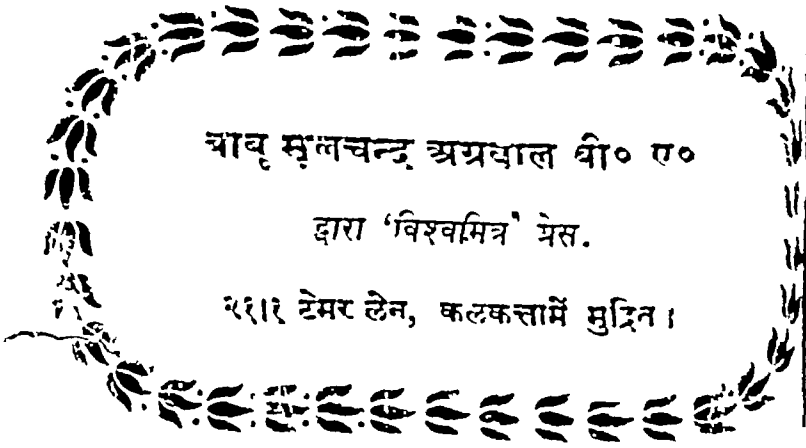
कि वायसराय या कमाण्डिङ्ग अफसरको क्या अधिकार था कि उन्होंने अभियुक्तोंको अपनी इच्छानुसार वकील बैरिस्टर खड़ा करनेसे रोका। गवर्नमेण्टने उनके लिये वकील चुन दिये इसे कौन न्यायोचित कहेगा।

'डेली हेरल्ड।'

लन्दनके मजूर—दलके सुप्रसिद्ध पत्र 'डेली हेरल्ड' ने जलियांवाला हत्याकाण्डके सम्बन्धमें अपनी राय प्रकट करते हुए लिखा कि अमृतसरमें जो नरहत्या हुई वह आश्चर्यजनक और मूर्च्छा उत्पन्न करनेवाली है। जनरल डायरने जो कहानी कही है उससे भयङ्कर और अपवित्र कहानी पहले कभी नहीं कही गयी। भारत, मिश्र तथा आयर्लैण्डमें जो कड़ाइयां हुई हैं यदि वे ही जर्मनोंने बेलजियममें की होती तो हम क्या कहते। क्या जर्मन सैनिकताकी हारका यही मतलब हुआ कि उसीकी तरह अत्याचारी नीति अन्यत्र विजय प्राप्त कर रही है। मि० माटेग सैनिक अत्याचार करनेवाले सभी आदमी भारतसे बुला लें। मारे हुए भारतीयोंके परिवारोंको पेन्शनें दें।

'नेशन'।

विलायतके प्रसिद्ध पत्र 'नेशन' ने अपनी राय देते हुए लिखा कि जनरल डायरका नाम भारतकी सन्तान वर्षों तक नहीं भूल सकती और न वह उस घृणाको ही कम कर सकती है जो वह डायरके देशवासियोंपर स्वभावतः प्रकट करेगी।

बाबू मूलचन्द अग्रवाल बी० ए०

द्वारा 'विश्वमित्र' प्रेस.

२१।१ टेमर लेन, कलकत्तामें मुद्रित।

हमारे भाग्य-विधाता ।

इंगलैंड में एक ज़माना था, जबकि एक ओर तो वहां की राष्ट्रीय मेशीन तैयारी पर पहुंच रही थी और दूसरी ओर रोमन कैथलिक और प्राटेस्टेन्टों में लड़ाई झगड़े हो रहे थे। यह नहीं कहा जा सकता कि उन लड़ाई-झगड़ों में दोनों सम्प्रदाय एक दूसरे के साथ सुविचार तथा न्याय से काम ले रहे थे, यहां तक कि रोमन कैथलिक लोगों को बहुत दिनों तक अपने बहुत से अधिकारों से वञ्चित रहना पड़ा था। और आज भी यद्यपि किसी सम्प्रदाय विशेष का महत्व स्थापित होने के कारण अन्य सम्प्रदायों के साथ अन्याय होता है तथापि झगडों भी इन जड़ों से अब कोई हानि नहीं होती। इस का कारण केवल यह है कि वे सभी अपने ऊपर शासन करने के काम में एक हो गये है। एक दिन वह भी था कि इङ्गलैंड और स्काटलैंड में पूरा पूरा विरोध था, क्योंकि दोनो की भाषा, भाव, रुचि तथा प्रथा एक दूसरे से भिन्न थी, परन्तु आज उनमें विरोध का नाम नहीं। क्यों ? केवल इस लिए कि आत्म-शासन में दोनों का हाथ बराबर है; सम्पद और विपद में दोनों की शक्तियां मिलकर काम करती है। यही एक कारण है कि स्काच और अंग्रेज़ों के धर्म्मों में भेद होते हुए भी, रोमन कैथलिक और प्राटेस्टेएट में अनेक्य होते हुए भी, राष्ट्रतंत्र के मैदान में दोनों क़दम मिला कर ही चलते हैं। यदि इनके सिर पर एक तीसरा पक्ष पूर्णतय: स्वतन्त्र होकर इन्हें अपने इशारे पर चलाता तो क्या कभी भी इन दोनों में मेल हो सकता था ? आयरलैंड के साथ आजतक ग्रेटब्रिटेन का मेल पूरे तौर पर क्यों नहीं हुआ—अधिकारों [illegible] मानता ही के कारण।

यह बात माननी पड़ेगी कि हमारे देश में हिन्दू और मुसलमानों में विरोध-भाव की एक कठिन समस्या है। जहां सत्य से आंख चुराई जाती है वहीं अपराध होते हैं, और जहां अपराध होते हैं वहीं दण्ड है। जब धर्म्म एक आध्यात्मिक बात न होकर केवल बाहरी तथा ऊपरी आचार-विचार की बात हो जाती है, तब उसके बराबर अशान्ति फैलाने वाली कोई दूसरी बात संसार में नहीं होती। "डागमा" अर्थात् शास्त्रमत और धर्म्म को बाह्य दृष्टि से देखने के कारण योरप का इतिहास खून से रँगा हुआ है। यदि अहिंसा को आप अपना धर्म्म समझते हैं, तो कर्मक्षेत्र में यह एक दु:साध्य आदर्श होते हुए भी अच्छा आदर्श माना जा सकता है और चेष्टा करने से इसका पालन भी सम्भव हो सकता है। परन्तु यदि धर्म्म के नाम पर आप तो किसी प्रकार के पशु का वध करें, और फिर उन आदमियों पर खड्ग प्रहार करें जो अपने धर्म्म के लिए दूसरे प्रकार के जानवरों को मारें, तो इस प्रकार के काम को अत्याचार के सिवा और कुछ भी नहीं कहा जा सकता। हमारी यह आशा है कि हमारा देश सदैव आचार-प्रधान न रहेगा। यह भी आशा है कि यदि हमारा राजनैतिक आदर्श हिन्दू और मुसलमानों को एक ही राजनैतिक आदर्श पर चल कर अधिक सच्चा हो सकता है तो हृदयों की यह एकता बाहरी अन्तर को तुच्छ बना देगी। यहां हमें यह देखना है कि तीसरा पक्ष जो तमाशबीन की हैसियत रखता है, क्या कर रहा है?

के एक ज़मीदार से कहा—"अपने घर का झगड़ा तो तुम बन्द कर ही नहीं सकते और स्वराज्य के लिए मुँह पसारे फिरते हो !" मालूम नहीं, जमींदार ने क्या जवाब दिया। सम्भव है, उसने लम्बा सलाम करके कहा हो-"हां, हुजूर, आप बहुत ठीक कहते हैं, सचमुच ही हम लोग स्वराज्य पाने के योग्य नहीं। ईश्वर के लिए इस उपद्रव को शान्त कीजिए।" वह बेचारा जानता था कि स्वराज्य तो अभी समुद्रपार का स्वप्न है, परन्तु कप्तान साहब तो सामने ही खड़े हैं और हंगामा भी खोपड़ी पर मचा हुआ है। मैंने उक्त अंग्रेज़ को उत्तर दिया—"क्षमा कीजिए, हिन्दू मुसलमानों का यह झगड़ा स्वराज्य की आधीनता में नहीं, हुआ। अक्षमता का कलङ्क लगाये जाने पर, जान पड़ता है, निरस्त्र ज़मींदार ने कप्तान साहब के सिपाहियों की ओर देख कर ठंडी सांस भरी होगी। उपाय किसी अन्य के हाथ में, और प्रतिकार करे कोई अन्य। हथियार किसी दूसरे के हाथ में और लड़े कोई दूसरा—ऐसी हास्यास्पद बात मैंने कभी नहीं सुनी। स्वदेशी-आन्दोलन के ज़माने में, केवल जमालपुर ऐसे दूर देशों से ही नहीं, वरन् कलकत्ता के केन्द्र-बड़े बाजार-में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अत्याचार किया था। यह बात केवल शासितों के माथे पर ही नहीं, शासकों के माथे पर भी कलंक का टीका लगाती है। हां, ऐसी घटना यदि हैदराबाद, बड़ौदा अथवा मैसूर में हुई होती तो कप्तान साहब की बात का उत्तर देना शायद कठिन होता।"

हमारी शिकायत यह है, कि काम करने की ज़िम्मेदारी हमारे हाथों में नहीं। हमारे शासक हमारी ज़िम्मेदारी अपने हाथों में लिये हुए हैं। यह

घुन हमारे देश को अन्दर ही अन्दर पोला किये डालता है। हमको प्रति दिन असहाय तथा अशक्त बना रहा है। हमारी इस दीन हीन, अवस्था को देख कर शासक हमें खरी-खोटी सुनाते हैं। यद्यपि खुले तौर पर हम उनकी बात का उत्तर नहीं दे सकते परन्तु हृदय में जो शब्द हम व्यवहार करते हैं वह कदापि साधुवाद नहीं कहे जा सकते। यदि काम करने की शक्ति हमारे हाथ में होती तो उसको क़ायम रखने के लिए हिन्दू तथा मुसलमान दोनों कटिबद्ध रहते, दोनों का एक लक्ष्य होता और दोनों मिल कर काम करते। इस प्रकार काम करने से भारतवर्ष में अंग्रेज़ी राज्य की नींव केवल बहुत दिनों के लिए ही नहीं, सदैव के लिए दृढ़ हो जाती। किन्तु यदि ऐसा हो कि इतिहास का पृष्ठ उलटने पर अंग्रेज इन करोड़ों आदमियों को, अपने 'सुशासन' के लगातार शोषण को भांति छोड़ कर चल दें, विशेषतः ऐसे समय में, जब कि भारत के पड़ोसी उन्नति का ऊंचा आसन पाते जा रहे हैं, तब इन दीन-हीन मनुष्यों का खून किस की गरदन पर होगा—जिनकी जेबें खाली पड़ी हैं, जिनके हाथों में तलवार नहीं, जिनके मुँह में ज़बान नहीं,

परन्तु एक जिम्मेदारी रखने वाली प्रजा नहीं। इसी कारण हमारा ऐक्य भाव केवल एक ढोंग है। यह शासन हमको मिलाता नहीं—केवल एक कतार में खड़ा करता है। इसी लिए तो ज़रा सा धक्का लगने ही हमारी खोपड़ियां आपस में टकराने लगती हैं। हमारा एका जड़ तथा अकर्म्मक है, चैतन्य और सकर्म्मक नहीं। यह एक ही भूमि पर सोते हुए मनुष्यों का एका है, एक ही पथ पर चलते हुए मनुष्यों का एका नहीं। इस एके पर गर्व करने या प्रसन्न होने का कोई कारण नहीं। सात सात बार झुक कर हम उसकी प्रशंसा के गीत भले ही गा लें परन्तु यह हमें ऊपर उठाने वाली चीज नहीं। पुराने जमाने में हमारा सामाजिक संगठन ऐसा था कि वह हमें अपने कर्तव्य—अपने उद्देश—के लिए सचेत करता रहता था। इसमें संदेह नहीं कि उस समय हमारा क्षेत्र बहुत संकीर्ण था। हम अपने जन्मग्राम को ही जन्मभूमि माना करते थे। परन्तु उस संकीर्ण क्षेत्र में भी हर एक आदमी अपनी जिम्मेदारी समझता था—धनी अपने धन की, ज्ञानी अपने ज्ञान की। जिसे जो अधिकार था उस पर आस पास वालों का दावा रहता था। जिम्मेदारी और उद्योग से भरे इस जीवन पर मनुष्य हर्ष मना सकते हैं और गर्व कर सकते हैं। परन्तु हमारी ज़िम्मेदारियां हमारी समाज से निचोड़ ली गईं। अब केवल सरकार हमारा विचार करती है, हमारी रक्षा करती है; हमें शान्ति तथा दण्ड देती है, हमारे हिन्दू अहिन्दू होने का निर्णय करती है, नशेबाजों के लिए शराब इत्यादि का प्रबंध करती है, और, जब किसी ग्रामीण को चीता खा जाता है तब मैजिस्ट्रेट साहब और उनके गोरे यारों को शिकार खेलने का सुअवसर देती है।

ह्मण अब भी दक्षिणा हथियाते हैं, परन्तु शिक्षा नहीं देते। ीदार लगान वसूल कर लेते है, किन्तु देते कुछ नहीं। आदमी छोटों से अपना सन्मान करा लेते हैं, किन्तु टों की रक्षा नहीं करते। हमारे समारोह अधिक खर्चीले गये हैं, परन्तु उनसे गार्हस्थ्य सुख की वृद्धि होना रुक है, वे अब निरा दिखाव या लीक पीटने की चीज रह े है। जातियो में खींचा-तानी जोरो से हो रही है। प्रत्येक ाति अपने को ब्रह्मा का सपूत और अन्य जाति को कपूत ार पतित समझती है। पण्डित पुजारियों के पोथी पत्रों नाक में वैसा ही दम है। संक्षिप्त यह, कि हमारी समाज पी गाय ने, जिसका चारा हमें वैसा ही देना पड़ता है, दूध ना ता बन्द कर दिया परन्तु लातें फटकारना नहीं छोड़ा।

इस बात पर बहस नहीं कि इस समय हमारी जो यवस्था बाहर से हुई है वह पहिले की व्यवस्था से अच्छी है ा नहीं है? यदि मनुष्य कंकड पत्थर के टुकडे होते तब तो ह प्रश्न महत्व का था कि उनको किस प्रकार क्रमबद्ध किया ाय जिससे कि वे अधिक उपयोगी हो सके। परन्तु मनुष्य नुष्य है। उनको जीवित रहना, फलना-फूलना तथा अपनी न्नति करना पडेगा। इसी कारण यह बात मानना ही पडेगा कि देश-सम्बन्धी बातों से देश के लोगों को अलग रख कर नकी सचेष्टता को दबाये रखना और इस प्रकार उनके आनन्दमय जीवन का दमन करना केवल अन्याचार ही नहीं, ाजनीति के विरुद्ध भी है। हम जो अधिकार चाहते हैं वह से अधिकार नहीं है जिनके द्वारा हम किसी पर अत्याचार र सकें या जिनकी हम शेखी बघारें। हम ऐसे अधिकार नहीं ाहते जिनसे हम संसार के सुख का नाश कर सके। हमारी

इच्छा यह भी नहीं कि हम युद्ध में नर-हत्या करने के लिए शैतान की सी ताकत पा जाय। पश्चिमी संसार हमारे लिए घृणा से 'डरपोक' हिन्दू का नाम व्यवहार करता है, उसको ग्रहण करने के लिए हम तय्यार हैं। शासक 'आध्यात्मिक हिन्दू" कहकर हमारी जो दिल्लगी उडाया करते हैं उससे हम जीवनपर्यंत कुछ भी दुःख नहीं मानेंगे। हम जो कुछ चाहते हैं, जो कुछ मांगते हैं, वह केवल यह, कि हमें अपने देश की सेवा करने के लिए स्वाभाविक अधिकार मिलें। अपने हाथों में हम जिम्मेदारी की वह बागडोर लेना चाहते हैं जिसके बिना हमारा देश उन्नति के मार्ग से भटक कर अवनति के गहरे गार में जा रहा है। केवल यही एक बात है जिसके कारण हमारे हृदय में दुख की असह्य ज्वाला भड़का करती है।

इसी लिए हमारे नवयुवक देश-सेवा के लिए आगे बढ़ रहे हैं। निरापद शांति की गरम भट्टी में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि मनुष्य की सबसे बडी जरूरत आगे बढने, उन्नति करने, की ज़रूरत है। बड़े लक्ष्य के प्रति आत्मोत्सर्ग करके दुख सहना, यही आगे बढने का चिह्न है। महान जातियों के इतिहास में यह गति सफलता और असफलता की ऊँची नीची भूमि को तय करती हुई दिखाई पडती है। हम ऐसे राजनीति पङ्गुओं से भी इतिहास का यह मनोहर दृश्य छिपा नहीं रह सकता। इसीलिए नवयुवकोंके लिए, विशेषतः ऐसे नवयुवकों के लिए, जिनके हृदयों में प्राकृतिक उत्तेजना है, जिनके हृदय बड़ों के उपदेश तथा इतिहास की शिक्षा से पूर्ण हैं, जबरदस्ती निश्चेष्ट बनाया जाना मृत्यु से अधिक है। किन्तु, केवल कभी कभी, बाढ़ अथवा अकाल

के अवसर पर काम करने से मनुष्य की आन्तरिक शुभ चेष्टाओं का विकास नहीं हो सकता। उनका विकास विविध रूप से नित्यकर्म में होता है अन्यथा दवी की दवी रह जाने से निराशा के कारण ऐसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे देश कष्ट पा रहा है। इसी लिए यह देखा जाता है कि आदर्श रखने वाले और उनके अनुसार काम करने वाले लोगों ही पर हाकिमों का प्रबल सन्देह रहता है। जो लोग स्वार्थी तथा बेईमान हैं, उदासीन और निश्चेष्ट रहते हैं, उनके लिए आजकल का खुफिया-विभाग सबसे अधिक निरापद है। ये ही लोग इनाम पाते हैं, इन्हीं की उन्नति होती है। निःस्वार्थभाव से पराया भला चाहने वालों को अपना उद्देश समझाना कठिन हो रहा है। सन्दिग्ध अफसरों के इस प्रश्न का उत्तर कोई क्या दे सकता है कि बड़े कामों में तुम्हारे टाँग अड़ाने की क्या जरूरत है? जब तुम नौकरी करके चैन से खा, पी और मौज उड़ा सकते हो तब फिर क्या कारण है कि तुम अपने पास से खर्च करके दर दर-भर मौत लेते फिरते हो।

अधिकारीगण चाहे जो कुछ कहें, परन्तु हम पूछते हैं कि वह सुरंग—जहाँ रोशनी नहीं, शब्द नहीं, विचार नहीं, छुटकारे का कोई उपाय नहीं, क्या यही मार्ग सरकार के लिए सुपथ है? तुम देश की कर्मण्यता को बिना सोचे विचारे दफन कर दे सकते परन्तु क्या इस प्रकार तुम उसकी प्रेतात्मा का नाश कर सकते हो? देश की नौकरी लालसा को भद्रता का रूप देने का यत्न करना न तो अच्छा ही है और न बुद्धिमत्ता ही।

ऐसे ही उत्पात के समय समुद्रपार से खबर आई

इच्छा यह भी नहीं कि हम युद्ध में नर-हत्या करने के लिए शैतान की सी ताक़त पा जांय। पश्चिमी संसार हमारे लिए घृणा से 'डरपोक' हिन्दू का नाम व्यवहार करता है, उसको ग्रहण करने के लिए हम तय्यार हैं। शामक आध्यात्मिक हिन्दू" कहकर हमारी जो दिल्लगी उड़ाया करते हैं उससे हम जीवनपर्यंत कुछ भी दुख नहीं मानेंगे। हम जो कुछ चाहते हैं, जो कुछ मांगते है, वह कव यह है कि हम अपने देश की सेवा करने के लिए स्वाभाविक अधिकार मिलें। अपने हाथों से हम जिम्मेदारी की वह बागडोर लेना चाहते हैं जिसके बिना हमारा देश उन्नति के मार्ग से भटक कर अवनति के गहरे ग़ार में जा रहा है। केवल यही एक बात है जिसके कारण हमारे हृदय में दुख की असह्य ज्वाला भड़का करती है।

इसी लिए हमारे नवयुवक देश-सेवा के लिए आगे बढ़ रहे हैं। निरापद शांति की गरम भट्टी में मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि मनुष्य की सबसे बड़ी ज़रूरत आगे बढ़ने, उन्नति करने, की ज़रूरत है। बड़े लक्ष्य के प्रति आत्मोत्सर्ग करके दुख सहना, यही आगे बढ़ने का चिह्न है। महान जातियों के इतिहास में यह गति सफलता और असफलता की ऊँची नीची भूमि को तय करती हुई दिखाई पड़ती है। हम ऐसे राजनीति पङ्गुओं से भी इतिहास का यह मनोहर दृश्य छिपा नहीं रह सकता। इसीलिए नवयुवकों के लिए, विशेषतः ऐसे नवयुवकों के लिए, जिनके हृदयों में प्राकृतिक उत्तेजना है, जिनके हृदय बड़ों के उपदेश तथा इतिहास की शिक्षा से पूर्ण हैं, जबरदस्ती निश्चेष्ट बनाया जाना मृत्यु से अधिक है। किन्तु, केवल कभी कभी, बाढ़ अथवा अकाल

के अवसर पर काम करने से मनुष्य की आन्तरिक शुभ चेष्टाओं का विकास नहीं हो सकता। उनका विकास विविध रूप से नित्यकर्म में होता है अन्यथा दबी की दबी रह जाने से निराशा के कारण ऐसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे देश कष्ट पा रहा है। इसी लिए यह देखा जाता है कि आदर्श रखने वाले और उनके अनुसार काम करने वाले लोगों ही पर हाकिमों का प्रबल सन्देह रहता है। जो लोग स्वार्थी तथा बेईमान हैं, उदासीन और निश्चेष्ट रहते हैं, उनके लिए आजकल का खुफिया-विभाग सबसे अधिक निरापद है। ये ही लोग इनाम पाते हैं, इन्हीं की उन्नति होती है। निःस्वार्थभाव से पराया भला चाहने वालों को अपना उद्देश समझाना कठिन हो रहा है। सन्दिग्ध अफसरों के इस प्रश्न का उत्तर कोई क्या दे सकता है कि बड़े कामों में तुम्हारे टाँग अड़ाने की क्या जरूरत है? जब तुम नौकरी करके चैन से खा, पी और मौज उड़ा सकते हो तब फिर क्या कारण है कि तुम अपने पास से खर्च करके यह दर्द-सर मोल लेते फिरते हो।

अधिकारीगण चाहे जो कुछ कहें, परन्तु हम पूछते हैं कि यह सुरंग—जहां रोशनी नहीं, शब्द नहीं, विचार नहीं, छुटकारे का कोई उपाय नहीं, क्या यहां मार्ग [illegible] के लिए सुपथ है? तुम देश की कर्मण्यता को बिना सोचे विचारे दफन कर दे सकते परन्तु क्या इस प्रकार तुम उसकी प्रेतात्मा का नाश कर सकते हो? [illegible] की भीतरी लालसा को भद्रता का रूप देने का यत्न करना न तो अच्छा ही है और न बुद्धिमत्ता ही।

एक ही उत्पात के समय समुद्रपार से खबर आई

कि स्वराज्य का एक मसविदा तय्यार किया जा रहा है। हमने सोचा कि उच्च पदाधिकारियों के समझ में अब यह बात आ गई है कि केवल दमननीति से ही काम नहीं चल सकता, कुछ उदारता भी चाहिए। यह देश हमारा देश है, केवल इस लिए नहीं कि हम इसमें उत्पन्न हुए हैं, वरन् इस लिए भी कि हमारी तपस्या और हमारी कमाई पर उसका दावा है। यदि इस भाव को अनुभव करने में यहां के लोगों को उत्साहित किया जाय, तभी अंग्रेजी राज्य यहां अटल हो सकता है। इतने बड़े देश को अशक्त, अयोग्य तथा राजनीति-व्यवस्था से अलग रखना एक बड़ी गलती है, क्योंकि जरूरत पड़ने पर सहायता देने में वह बेकार सिद्ध होगा और उसका भार असह्य हो जायगा। साथ ही कम-ज़ोर से कमजोर की भी प्रतिकूलता नौका के उस छोटे छिद्र के तुल्य है जो शान्त वायु में तो कोई हानि नहीं पहुंचा सकता परन्तु तूफान आने पर, जब सब मल्लाह डांड और पतवार में लगे हों, उस नौका को डुबा सकता है। उस समय दांत किटकिटाना और पुलिस की लाठियाँ हानि-कारक ही सिद्ध होंगी। समय पर एक छोटे सूराख को मरम्मत कर देने से आगे चल कर बड़े नुकसान से बचाव रहता है—यह एक सिद्धान्त है, जिसे, मैं समझता हूँ, अंग्रेजी राजनीतिज्ञ भी जानते हैं। वे इसे अवश्य जानते हैं-यदि जानते न होते तो स्वराज्य की चर्चा ही क्यों उठाते? किन्तु मनुष्य-स्वभाव का निकृष्ट भाग अन्धा होता है। वह सारा महत्व वर्तमान काल ही को देना चाहता है, भविष्य की कुछ खबर नहीं लेता। सत्य और यथार्थ बात कहने को वह दुर्बलता और भावुकता समझता है।

भावी आशाओं के आनंद में फूल कर, भारतवर्ष अंग्रेज़ी राजा के इस प्रकार के शत्रु को बहुत साधारण समझता है। हिन्दी-अंग्रेज़ (एंग्लो-इण्डियन), सरकारी अफ़सर अथवा सौदागर होने के कारण भारत के इतने निकट आ गया है कि वह उसे स्पष्ट नही देख सकता। इस निकटता के कारण ही उसे अपना प्रताप तथा अपनी दौलत समेटाना ही सर्वोपरि दिखाई पडता है, और ३० करोड दुखी हिन्दुस्तानी तो उसे केवल छाया रूप में अस्पष्ट और अस्तित्वहीन दिखाई पडते हैं। इसी लिए हमें भय है कि वह वरदान जिससे भारतवर्ष कुछ आत्मशक्ति लाभ कर सकता, हमारे पास क्षीण तथा खण्डित होकर पहुँचेगा। कदाचित वह रास्ते ही से नष्ट हो जाय, और भारत-भाग्य की मरु भूमि में पडे हुए अनेक साधु संकल्पों के रक्त-मांस-हीन ढांचों में मिल जाय। एंग्लो-इण्डियन ताकत के नशे में अ[illegible] हो रहा है। उसके और भारत के बीच में हाकिमी प्रणाली की इतनी तहें जमी हुई हैं कि वह भारतीय समाज के पास नहीं फटक सकता। उसके लिए हिन्दुस्तान एक सरकारी अथवा व्यापारी दफ्तर है। उधर समुद्र-पार बैठे हुए उन अंग्रेज़ों से उसका रक्त-मांस का सम्बन्ध है जिनके हाथ में हमारी किस्मत का सांचा है। उनके हाथ में उसका [illegible] उनके कान के पास उसका मुंह है। उनकी कौंसिलों में उसके लिए कुर्सी खाली रहती है, और राजनीति-नाट्य शाला के [illegible]गृह में उसका प्रवेश है। वह सदैव इंगलैंड आता [illegible] है [illegible]र वहां के लोगों से अपने विचार प्रकट करता है। वह अपने सफेद बालों की कसम खाकर और अपने [illegible] की दुहाई देकर कहता है—'मैंने ही भारत-

साम्राज्य को उन्नति की चोटी पर पहुचाया है।" यह कह कर यह अपने लिए ख़ास जगह चाहता है। इस आकाश-भेदी अभिमान के नीचे हमारी भाषा, हमारी आशा, हमारे अस्तित्व का पता कहां? हमें तो कोई अंग्रेज ऐसा नहीं दिखाई पड़ता जिसकी निगाह उन सरकारी दफ्तरों की दीवार फांद कर हम तीस करोड मनुष्यों तक पहुँच सके! वह दूर बैठा हुआ अंग्रेज़ जो योरप के स्वतन्त्र जलवायु में पला है, यदि हिन्दुस्तान को स्वार्थ का परदा उठा कर और आंख फाड़ कर देखता है तो एंग्लो-इण्डियन उसे ऐसा करने से रोकता है। वह कहता है कि यदि असली दृश्य देखना चाहते हो तो नीचे की धुँधली वायु के द्वारा देखो, ऊपर की निर्मल वायु के द्वारा देखा हुआ दृश्य असली दृश्य नहीं होगा। दूर बैठे हुए अंग्रेज़ का भारत-शासन में हस्ताक्षेप करना उस की दृष्टि में मदाखलत बेजा का अपराध है। इस कारण हिन्दुस्तानी को यह सदैव याद रखना चाहिए कि उस पर वे बड़े अंग्रेज़ शासन नहीं करते जिनके विषय में वह सुना करता है। उस पर वे अंग्रेज शासन करते हैं जिनका मनुष्यत्व, बहुत दिनों तक भारतीय सरकारी दफ्तरों के तेजाब में रखने से गल चुका है'—वे असली मनुष्य नहीं नक़ली मनुष्य है—वे केवल किसी ख़ास मतलब के लिए मनुष्यत्व का ढोंग रचे हुए हैं।

फ़ोटोग्राफ़िक केमरे को हम नक़ली आंख कह सकते हैं। वह खूब स्पष्ट देखता है किन्तु पूरा दृश्य नहीं देखता। वह केवल उतना ही अंश देख सकता है जितना उसके [illegible] है। जो उसके सामने नहीं उसको नहीं देख सकता। [illegible] हम कहते हैं कि केमरा अन्धा होकर देखता है।

प्राकृतिक आंख के पीछे (अर्थात्, उसका रखने वाला) जीता जागता मनुष्य मौजूद है, इस लिए किसी आंशिक प्रयोजन में वह चाहे कितना ही असम्पूर्ण क्यों न हो परन्तु मनुष्यों के परस्पर व्यवहार में वह सम्पूर्ण है। हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने आंख के स्थान में हमें कैमरा नहीं दिया। किन्तु हा! उसने भारत-शासन में, हमें यह क्या दे दिया? बड़ा अंग्रेज़ जो वास्तविक मनुष्य है, हमारे दुर्भाग्य से समुद्र-पार रहता है, और यदि वह यहां आता भी है तो आने के पहिले मसलहत की कैंचो में से गुज़र कर अपनी मनुष्यता का तीन चौथाई भाग काट कर पीछे छोड़ देता है, और इस प्रकार छोटा अंग्रेज बन कर वह यहां आता है। इस कटे हुए भाग में उसकी वह शक्ति निकल जाती है जो स्वयं उसे और दूसरों को आदमी बना सकती है। यह लङूरा (Expurgated) अंग्रेज़ यह बात नहीं समझता कि हम उसके ऐसे कीमती और सडकाले कैमरे पर पूर्णतयः न देख सकने का इलजाम क्यों लगाते हैं? इसका कारण यह है कि उसकी काट-छांट के समय उसकी कल्पना-शक्ति पर भी कैंची फिर गई!

इंग्लैंड के अनाथाश्रम के रहने वाले क्या दुखित रहते हैं, क्यों सदैव भाग निकलने की फ़िक्र में लगे रहते हैं? इस लिए कि अनाथाश्रम (Work House) न तो पूर्ण घर ही है और न घर का अनाथ ही। वह एक कटा हुआ आश्रय देता है। आश्रय निस्सन्देह आवश्यक है, परन्तु मनुष्य, मनुष्य होने के कारण घर चाहता है, अर्थात, घर आवश्यक वस्तुओं के साथ बहुत सी अनावश्यक वस्तुएं भी पाये बिना जीवित नहीं रह

सकता । इसी कारण जब उसे ये चीजें नहीं मिलतीं तब वह भाग निकलने की चेष्टा करता है । अनाथाश्रम का अध्यक्ष उनकी इस अकृतज्ञता को ताज्जुब और गुस्से की निगाह से देखता है और उनके दुख को डंडे से दबाने की चेष्टा करता है । क्योंकि वह पूरा आदमी नहीं, उसको पूरी दृष्टि प्राप्त नहीं । यह छोटा आदमी समझता है कि मनुष्य केवल आश्रय के लिए ही अपनी आत्मा दूसरे के हाथ बेच सकता है ।

बड़े अंग्रेज़ का स्पर्श हिन्दुस्तान से नहीं । इन दोनों के बीच में छोटा अंग्रेज़ घुसा हुआ है । हमारे लिए बड़ा अंग्रेज़ केवल साहित्य और इतिहास में है, और बड़े अंग्रेज़ के लिए भारत केवल दफ़्तरों और बहीखातों में । दूसरे शब्दों में, भारत उसके लिए एक मुल्की नक्शा है जिससे, आमदनी, खर्च, बाहर माल जाना, बाहर से माल आना, पैदाइश-मौत, पुलिस की संख्या, जेलखानों, रेलवे लाइन की लम्बाई तथा कालिजों की ऊँचाई का पता लगता है। किन्तु सृष्टि कुछ आकाश भर देने वाले अङ्कों की सूची नहीं है, और न इन अंकों की अपेक्षा कोई बड़ा हिसाब हिन्दुस्तानी दफ्तर के किसी डिपार्टमेण्ट द्वारा किसी भी आदमी के पास पहुँचता है ।

इस बात के विश्वास करने में चाहे जितनी ही बाधाएं क्यों न हों परन्तु फिर भी हमारे देश के लोगों को यह मानना ही पड़ेगा कि वह जाति जो "बड़ी अंग्रेज जाति" कहलाती है, भूगोल के किसी टुकड़े पर अवश्य मौजूद है। ताकतवर के साथ कमज़ोर जो नाइन्साफ़ी करता है वह कमज़ोरी का और भी पता देती है—ऐसी कमज़ोरी

में बचे रहने में ही हमारा गौरव है। यह बात क़सम खाकर कही जा सकती है कि ये बड़े अंग्रेज सिर से पैर तक मनुष्य हैं। यह भी निश्चित है कि जिस धर्म्म-बल द्वारा संसार की बड़ी जातियां बड़ी बनी हैं, अंग्रेज भी उसी धर्म-बल द्वारा बड़े बने हैं। यह बात किसी प्रकार भी नहीं मानी जा सकती कि ये तलवार या थैली के बल से बड़े बने हैं। इस बात में कुछ भी सार नहीं कि कोई जाति केवल इस लिए बड़ी बन सकी कि वह ख़ूब रुपया कमाना और ख़ूब लड़ना जानती है। इस बात के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं कि मनुष्यत्व में बड़ा हुए बिना कोई भी बड़ा नहीं हो सकता। न्याय, सत्य और स्वाधीनता इन अंग्रेजों के आदर्श हैं। यह आदर्श उनके साहित्य तथा इतिहास में अनेक प्रकार से प्रकाशित हैं, और वर्तमान महायुद्ध में भी यही आदर्श उन्हें शक्तिमान बनाये हुए हैं।

यह बड़ा अंग्रेज स्थिर नहीं है, वह आगे बढ़ रहा है—उन्नति कर रहा है। वह केवल अपने साम्राज्य और व्यापार ही में मस्त नहीं है, वह अपने शिल्प, साहित्य, दर्शन, विज्ञान, धर्म और समाज को भी आगे बढ़ा रहा है। वह यूरोपीय सभ्यता के विराट यज्ञ में प्रधान आहुति डालने वालों में से है। वर्तमान महायुद्ध से उसने एक अच्छी शिक्षा प्राप्त की है। बलिदान के उदार वैराग्य की अवस्था में नए मनुष्य का इतिहास फिर नये सिरे से पढ़ रहा है। उसने देखा है कि अपमानित मनुष्यत्व के विरुद्ध स्वजातीय अभिमानजनित [illegible] खड़े करने में कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसने समझा है कि जो अपनी जाति [illegible] ईश्वर है, और

उसकी पूजा में नर-बलि देना उसके क्रोध की आग को भडकाना है। यदि यह बात वह आज नहीं समझा तो एक दिन वह अवश्य समझेगा कि जहां हवा की गहराई कम होती है वही तूफान का केन्द्र होता है, क्योंकि चारों ओर की गहरी हवा उसी ओर दौडती है। इसी प्रकार जो देश कमजोर होता है उसी की ओर ताकतवर देश दौडते हैं। उसी को हडप करने के लिए आपस में कटते-मरते हैं। ऐसे देश में मनुष्य अकड़ कर आज़ादी के साथ नहीं चल सकते। उन्हें दिन बदिन ढीले पड कर मनुष्यता से हाथ धो लेना पड़ता है। ऐसी जगह शैतान का राज्य हो जाता है और वहा वह बैठ कर ईश्वर की कमजोरी पर मजाक उडाता है। हम कहते हैं कि बडे अंग्रेज को इस बात के जानने की बडी ज़रूरत है कि बालू के ऊपर किले नहीं बन सकते, एक की शक्ति-हीनता पर दूसरे की शक्ति स्थिर नहीं रह सकती।

किन्तु छोटा अंग्रेज आगे नहीं बढता। जिस देश को उसने ज़ञ्जीरों में जकड दिया है, उसके साथ ही वह स्वयं भी जकड गया। उसके जीवन के एक ओर आफिस है और दूसरी ओर ऐशो-आराम। जिस ओर आफ़िस है उस ओर के कई करोड मनुष्यों को वह साम्राज्य के राजदंड अथवा व्यापार के मानदंड से हांका करता है, और जिस ओर ऐशो-आराम है, वह हमारे लिए उतना ही अदृश्य है जितना कि चांद के पीछे का भाग। तथापि वह अपने अनुभव को वर्षों की संख्या से नापता है। भारत में अंग्रेजी राज्य की नींव पडने के समय उसने कुछ काम अवश्य किया था परन्तु उसके

२ बहुत दिनों से वह साम्राज्य और वाणिज्य की एकी

चकाई इन्द्रियों के पहरा देने और चखने में लगा है। निरंतर जागते की चक्की पीसते रहने से वह सांसारिक बुद्धिमत्ता का बहुत सा हिस्सा पा गया है। अपने आफिस के काम नियमानुसार चलने को वह संसार की सब से बडी महत्व-पूर्ण बात समझता है। कमजोर मनुष्यों से रात दिन व्यवहार करने के कारण उसके हृदय में यह बात जम गई है कि जिस प्रकार वह वर्तमान काल का स्वामी है उसी प्रकार वह भविष्य काल का विधाता भी है। वह केवल इतना ही कह कर संतुष्ट नहीं होता कि "हम भारत में आये हैं", वरन् वह आगे यह भी कहता है कि, "अब हम यहां जम गये।"

बडे अंग्रेज की उदारता पर विश्वास करके हमारे देश के लोगों ने छोटे अंग्रेज की बातों का उत्तर आंख से आंख मिला कर देना आरम्भ कर दिया है। वे यह नहीं सोचते कि छोटे अंग्रेज़ का जोर साधारण जोर नहीं है। उनको यह नहीं मालूम कि कभी कभी पुरोहित जी के मान-भञ्जन का मूल्य ईश्वर के दिये हुए वरदान से भी बढ जाता है। छोटे अंग्रेज का ज़ोर समझाने के लिए एक उदाहरण देखिए। मान लीजिये, कि एनी बीसेन्ट अपराधिनी हैं, किन्तु बड़े अंग्रेज ने उन्हें क्षमा दे दी है। इस बात पर छोटा अंग्रेज़ आज भी बेतरह बिगड रहा है। उसने पार्लामेंट की दीवारें हिला दी हैं। वह क्षमा करने के अपराध को कभी नहीं भूल सकता, किन्तु निर्विचार शासन देने में वह किसी की नहीं सुनता। वह कहता है कि जब सज़ा दे दी गई तब अपराध सिद्ध हो गया। जो इसमें मीन मेख निकालते हैं वे

नहीं देखा कि वरदान देने में भारत-सरकार के ऊंचे विभाग को याग देते देखकर एग्लो-इण्डियन घृणा से हँस कर पूछता है-ऐसी कौन सी आफत आई कि सरकार घबराने लगी, ऐसी कौन सी मुसीबत पड़ी कि वज्रपात करने वाला विभाग पानी बर्साने के लिए तय्यार हो रहा है? और, जब हमारे विद्यार्थियों के झुण्ड के झुण्ड क़ानून के खिलाफ़ रसातल को भेजे जाते हैं तब यही व्यक्ति मुँह बनाकर कहता है कि, उपद्रव इतने बढ़ रहे हैं, देश की दशा इतनी बिगड़ गई है कि अगरेज़ी राज्य को हार माननी पड़ी और विवश हो कर कानून के ख़िलाफ़ काम करना पड़ा। अर्थात्, मारने के समय जो भय सत्य है मरहम लगाने के समय वही भय झूठा है-क्या नहीं, मारने में क्या लगता है? मरहम लगाने में तो टके ख़र्च होते हैं। किन्तु यह बात भी है कि मारने का ख़र्च कभी कभी मरहम लगाने के खर्च से बढ़ भी सकता है। तुम तो यह समझ रहे हो कि भारत के इतिहास का वह भाग जो भारतवासियों से सम्बन्ध रखता है आगे न बढ़कर भँवर की तरह एक ही स्थान पर चक्कर मारता हुआ नीचे को जा रहा है। और जब एक दिन आफ़िस से बाहर आने पर तुम देखते हो कि स्रोत तुम्हारे नक़शे की लकीर पार करके आगे बढ़ रहा है तब तुम गला फाड़ कर कहते हो-"इसे रोको, इसे बाँधो, इसे नेस्त नाबूद करदो!" उस समय स्रोत रास्ता न पाकर नीचे की ओर जाता है और तुम उसके छिपे हुए जलाधार का प्रवाह रोकने के लिए देश की छाती फाड़ते हो।

के विरुद्ध कुछ दिन हुए मैंने एक पत्र लिखा था। इस पर एंग्लो-इन्डियन पत्रों ने मुझको 'बेहूदा बकने वाला' और गरम दल का (Extremist) कहा था। पर चूंकि ये हजरात मुफ़्त में अफसरी के दावेदार बने बैठे हैं इस लिए मैंने उनके आक्रमणों को क्षमा कर देना ही उचित समझा। किन्तु हमारे वे देशवासी जो मेरे पद्यों को नीरस और गद्यों को सारहीन समझते हुए भी कभी कभी मेरे लेखों को पढ़ लिया करते हैं यह बात भली भांति जानते होंगे कि स्व-देशी-आन्दोलन से लेकर आज तक मैं बराबर जोशीली बातों के विरुद्ध लिखता रहा हूं। मैं बराबर यही एक बात रटता आया हूं कि अन्याय से प्राप्त किया हुआ उद्योग आगे चल कर कभी भी अच्छा फल नहीं ला सकता, क्योंकि पापों का ऋण अन्त में सदैव वज़नी ही हुआ करता है। इसके सिवा चाहे वह अंग्रेज हो अथवा हिन्दुस्तानी, मैं कभी भी किसी के लांच्छन की परवाह नहीं करता। मेरी यह दृढ़ धारणा है कि जोशीले काम सदैव भयानक होते हैं। मैं उसे भला, बा-क़ायदा या साफ़ नहीं कह सकता। यह तो वही बात हुई कि किसी स्थान पर शीघ्र पहुंचने के लिए सीधी राह छोड़कर कुराह पर जाना। मैंने अपने देशवासियों से लगातार यह बात ज़ोर के साथ कही है और इसी प्रकार उसी ज़ोर के साथ मैं यह भी कहने का दावा करता हूं कि यह जोशीले काम चाहे उसे सरकार अपनी नीति ही क्यों न समझे वैसे ही बुरे हैं जैसे बुरे कि वे हमारे देशवासियों के लिए हैं। सम्भव है क़ानून के उच्च मार्ग के सहारे निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचने के लिए सीधी राह की अपेक्षा अकसर कुछ चक्कर खाकर जाना पड़े। किन्तु छोटे रास्ते से जाने के लिए बेलजियम

की छाती पर चढ़ कर जाने का सा जोशीला कार्य कभी भी उपयुक्त नहीं कहला सकता। पुराने ज़माने में कम दिन की राह मे गुजरने की बात बहुत पाई जाती है। उसका "सिर काट लाओ"—यह उलझी हुई गांठ के खोलने की सहल तरकीब होती थी। यूरोप को इस बात का घमंड है कि उसने गिरह को न काट कर उसे खोलने की बात मालूम की है क्योंकि पहिली रीति से अधिक हानि की सम्भावना रहती है। सभ्यता की कुछ ज़िम्मेदारियां ऐसी भी हैं जिनका न्याययुक्त पालन करना उसके लिए संकट तथा दुख, दोनों समय, में ज़रूरी है। शक्ति मे एक अनिवार्य दारुणता, जो सभ्य-समाज में ग्रहण की जा सकती है, तब होती है जब उसे न्याय तथा विचार की छलनी में छान कर द्वेष, क्रोध तथा पक्षपातहीन कर लिया जावे, अन्यथा एक लट्ठबाज़ की लाठी और न्याय-दंड में कोई भेद नहीं रह जाता। हम यह मानते हैं कि समय बड़ा कठिन है। हमको इस बात की लज्जा है कि हमारे देश के कुछ युवकों ने देशोन्नति के विचार से बाधाओं को हटाने के मिस अनुचित साधनों का प्रयोग किया है। हमें इस बात की लज्जा और भी अधिक है कि कर्तव्य-नीति से धर्म्म-नीति को अलग रखने की शिक्षा हमें पश्चिम से ही प्राप्त हुई है। राजनीतिक-छलियों द्वारा स्वीकृत राजनीति के गुप्त और प्रकाश्य झूठ तथा गुप्त और प्रकाश्य चोरियां, वहां—पश्चिम में, सोने मे मिलाने वाली धातु समझी जाती हैं—क्योंकि इनके बिना सोना कड़ा नहीं होता। इस प्रकार हमको यह सबक़ मिला है कि स्वार्थ के साथ परमार्थ मिला कर धर्म्म के राग अलापना मूर्खता, दुर्बलता तथा कोरी भावुकता है। हमको यह भी मालूम

कराया गया है कि सभ्यता में असभ्यता की पुट देकर उसे कड़ा करने की आवश्यकता है और धर्म्म में अधर्म्म मिला कर उसे अधिक उपयोगी बनाने की जरूरत है। ऐसा करने से हमने केवल अधर्म्म ही को सहन नहीं किया है वरन् अपने गुरू की वीभत्सता के सामने भी अपने घुटने टेके हैं। अपने हृदय, बल तथा धर्म्म के ज़ोर पर अपने गुरूदेव से ऊँचे खड़े होकर आज हम यह कहने का साहस नहीं रखते कि 'अधर्म्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति। ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति।' अर्थात्, अधर्म्म के द्वारा मनुष्य बढ़ता है, अधर्म्म में वह अपना कल्याण देखता है और अधर्म्म से अपने शत्रुओं का नाश करता है, किन्तु अन्त में वह खुद भी जड़ से नाश हो जाता है। इसी लिए हम कहते हैं कि पश्चिम के उपदेशों के सामने हमारी धर्म्म-बुद्धि ने इस बुरी तरह से मात खाई है कि हम अत्यन्त लज्जित हैं। बड़ी आशा थी कि देश में जब देश-भक्ति का सूर्य उदय होगा तब उस समय हमारे में जो अधिक महत्वशाली पदार्थ है वह पूर्णतयः प्रकाशित होगा, हमारी युग-सञ्चित भूलें अपनी अँधेरी कोठरी छोड़ कर निकल भागेंगी, नैराश्य की चट्टान तोड़कर आशा का श्रोत फूट निकलेगा। हमारी जागृत शक्तियां हमारे लिए निराशा के ऊपर एक एक क़दम चलकर रास्ता बनावेंगी और अकृत्रिम प्रीति तथा आनन्द द्वारा निष्ठुर आचार के भार को दूर करके हमारे देशवासी आपस में मिलकर खड़े होंगे। किन्तु, हा! हमारे भाग्य ने हमारे साथ यह क्या दग़ा किया? देश-भक्ति का सूर्य उदय हुआ, परन्तु उसके प्रकाश ने क्या दिखलाया-चोरी डकैती और गुप्त खून!

क्या हमारी प्रार्थनाओं को सुन कर देवता हमारे सामने इसी लिए प्रकट हुआ है कि पापों की भेंट से हम उस की पूजा करें ? क्या उसी प्रकार की भीरुता, अकर्मण्यता और विश्वास-हीनता ने, जिस से कि राजनैतिक भिक्षा-वृत्ति को हम ने सारे रोगों की औषधि समझा था इसी लिए प्रार्थना-पत्र की लेखन-कला में अपने को निपुण बनाया था जो अब शीघ्र उद्धार के लिए राजनैतिक अपराध करा रही है ? ऐसा कोई चौराहा नहीं जहां ठगी और वीरता मिलती हों। यूरोप में ऐसा सम्मेलन भले ही देखा जाता है परन्तु ईश्वरीय गणना से उस की सड़कों के पत्थर अभी तक ठीक नहीं माने गये हैं। हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि भले ही सारा संसार तुरन्त के लाभ को ही सब कुछ मान बैठे, परन्तु भारतवर्ष में इस विश्वास का प्रचार न हो। यदि इस के बिना हम राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त कर सकें तो बहुत अच्छा है, नहीं तो कम से कम हम इस से भी बड़ी स्वाधीनता के मार्ग को राजनैतिक असत्यों के रोड़ों द्वारा बाधायुक्त तो न बनायें।

परन्तु एक बात हम को न भूलनी चाहिए, और वह यह कि यदि देशभक्ति की जागृति, प्रेम की रोशनी में, हम ने चोरी डकैती इत्यादि दृश्य देखे हैं तो साथ ही हम ने वीरों की भी झलक देखी है। आत्म-त्याग की ऐसी दैवी शक्ति, जैसी कि आज कल है, हम ने अपने नवयुवकों में पहले कभी नहीं देखी थी। ये सब अन्य सांसारिक झगड़ों को छोड़ कर, विचित्र भक्ति के साथ अपना जीवन मातृभूमि के चरणों पर अर्पित करने के लिए आगे बढ़े हैं। यह ऐसा दुर्गम भक्ति-मार्ग है कि जिस में केवल सरकारी नौकरी न मिलने और

राजसम्मान प्राप्त न होने की खाइयां ही नहीं वरन्, आत्मीय स्वजन के विरोध की खटकें भी हैं। आज यह देख कर हृदय पुलकित हो रहा है कि ऐसे भयानक पथ पर जाने वाले नौ-जवानों की कमी नहीं। ऊपर से मांग आई और ये लोग कमर कस कर तैय्यार हो गये। दूसरे भाग्यशाली देशों में, जहां देश-सेवा तथा जन-सेवा के अनेक चौड़े रास्ते चारों ओर फैले हुए हैं वहां यह दृढ संकल्प, आत्मविसर्जनशील, विषय-बुद्धिहीन तथा कल्पना-प्रबल युवक ही देश की सब से बड़ी सम्पत्ति समझे जाते हैं। आत्मघात करने वाले शचीन्द्र का अन्तिम पत्र पढने से यह बात मालूम हो सकती है कि यदि यह युवक इन अंग्रेजों के देश में, जिन्होंने इसे सजा दी, पैदा हुआ होता तो वह एक गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत कर के अधिक गौरव सहित मरता।

पहले और अब भी, चाहें तो राजा अथवा उस के मातहत ऐसे युवकों को पैरों से मसल कर देश को शक्तिहीन बना सकते हैं। ऐसा करना काफ़ी आसान है। किन्तु, जहां तक हमें मालूम है न तो यह सभ्यता है और न अंग्रेजियत ही। जो निरपराध और बड़े हैं, जो उत्साह के क्षणिक विकारों के कारण रास्ता भूल गये हैं, जो किसी कारणवश नीचे गिर गये और जो थोड़ा सा सहारा पाते ही फिर ऊपर उठ कर अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं, ऐसे युवकों को सन्देहमात्र पर सदैव के लिए मसल देना—उन्हें बेकार कर देना—मानव-जीवन को फ़िज़ूल बरबाद कर देने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? देश के बालकों तथा युवकों को खुफिया पुलीस के हाथों में दे देना कहां की राजनीतिज्ञता है? यह तो वैसी ही बात है कि रात में गाय, भैंसों को खेत

खाने के लिए छोड़ देना और जब कि खेत का स्वामी हाहाकार कर रहा हो उस समय स्वयं यह सोच कर नाचना कि आज एक अंकुर भी न बचेगा !

सब से अधिक सर्वनाश की बात तो यह है कि जिस अंकुर पर पुलिस का दांत लग गया वह फिर न फूलता है न फलता है, क्योंकि उनके दांत में ज़हर है। मैं एक ऐसे लड़के को जानता हूं जिसकी बुद्धि, विद्या तथा चरित्रादि सब बातें अच्छी थीं। यह सच है कि पुलिस के हाथों में पड़ कर वह छूट अवश्य गया परन्तु आज कल वह बरहमपुर के पागलख़ाने में है! मैं क़सम खाकर कह सकता हूं कि अंग्रेजी राज्य को उसके द्वारा कोई हानि न पहुंचती और इसके विपरीत हमारे देश का उससे बड़ा लाभ पहुंचता।

कुछ दिन हुए मेरे शांतिनिकेतन के लड़के बीरभूमि ज़िला स्कूल में परीक्षा देने गये हुए थे। पुलीस ने उन सबके नाम लिख लिये। नाम लिखने का कारण हमें मालूम नहीं क्योंकि एक तो उनकी चालें गुप्त और दूसरे उनका रेकर्ड भी गुप्त! उनको इससे अधिक कुछ करने की आवश्यकता भी नहीं, क्योंकि केवल इतने ही से लड़कों की आत्माओं पर ओस पड़ गया समझिये। जिस प्रकार सांप के खाये हुए फल को कोई नहीं खाता इसी प्रकार खुफिया पुलीस के चपेट में आये हुए आदमी से कोई बात-व्यवहार नहीं रखता। बंगाली पिता, जिस पर अविवाहित कन्या का भार असह्य हो जाता है, और जो बूढ़े, रोगी, बदसूरत, बदचलन पुरुष को भी अपनी कन्या देने से नहीं हिच-किचाता, वह पिता भी खुफिया पुलीस की [illegible] हुए पुरुष से दूर भागता है! यदि वह व्यापार

व्यापार नहीं चलता ! वह भिक्षा मांगता है तो हमारे हृदय में उसके प्रति दया-भाव होते हुए भी हम उसे भिक्षा देते डरते हैं ! जिस अच्छे काम मे वह हाथ डालता है वह नष्ट होजाता है ! खुफिया पुलिस महकमें के अफसर भी आखिर रक्त मांस के आदमी है, क्रोध तथा द्वेषहीन महापुरुष नहीं । जिस प्रकार हम लोग गुस्से या घबडाहट में रस्सी को सांप समझ बैठते है इसी प्रकार वे भी समझ लेते है । हरएक आदमी पर सदेह और अविश्वास करना उनका पेशा ठहरा, इस कारण रात दिन ऐसा करने से यह बात उनके स्वभाव में दाखिल हो जाती है । जरा से सदेह को भी कार्य-रूप में परिणत करना उनकी पालिसी है, क्योंकि उन पर कोई अकुश नहीं । उनके चारों ओर के आदमी भय से निस्तब्ध और उनके पीछे छोटा अंग्रेज या तो उदासीन है या उत्साह-दाता । जहां स्वाभाविकता ही नहीं बल्कि क्रोध है और अधिकार भी सीमाबद्ध नहीं, वहां यदि कार्य-प्रणाली गुप्त और विचार-प्रणाली विमुख हो तो ऐसी ही जगह को क्या छोटा अंगरेज धर्म्मक्षेत्र अथवा साधुनीतिक्षेत्र समझता है ? मेरी समझ में तो वह ऐसा नहीं समझता । हां, वह यह समझता है कि गडबड़ी मिटाने का यह सरल उपाय है जैसा कि जर्मनी ने सोचा है कि अन्तर्जातीय कानून और दया धर्म्म को ठुकरा देने ही से युद्ध सरलतापूर्वक जीता जा सकता है, क्योंकि वहां भी छोटा जर्मन बड़े जर्मन पर अधिक प्रभावशाली है । "इसका सिर काट लाओ"—यह राजनीति थोडे दिनों चाहे भले ही चल जाय परन्तु सदैव नहीं चल सकती । जो नीति सदैव भली है वह, वह नीति है जिसके लिए बड़े अंग्रेज अनेक बार लडे है और

जर्मनी की घृणित विरुद्ध नीति से जल कर आज नवयुवक बड़े अंग्रेजों के दल के दल लड़ाई में प्राण देने के लिए जा रहे हैं।

मेरा यह दृढ़ लक्ष्य रहा है कि शान्तिनिकेतन विद्यालय के लड़कों को विश्व-मानव इतिहास का सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाय, वह ज्ञान विकसित तथा जातीय घृणारहित हो! इसी लिए मैंने इस शुभ कार्य में अंग्रेजों को अपना जीवन-दान देने से नहीं रोका। किन्तु हम अस्वाभाविक जीवन व्यतीत करते हैं, हमारा वर्तमान क्षेत्र और भावी आशाएं संकीर्ण हैं। हमारी अन्तर्विहित शक्तियों का विकास क्षीण तथा बाधाग्रस्त है। बड़े बड़े उद्धत पयमानों के साये में दबा हुआ हमारा संकीर्ण क्षेत्र ऐसा छोटा और खराब फल पैदा करता है जो संसार के बाज़ार में तुच्छ और कमक़ीमत समझा जाता है और यह छोटापन हमारा स्वभाव बताया जा कर हमारे लिए यह साया कल्याणकारी समझा जाता है। इस अवस्था पर जो अपवाद लाना है उसके ऊपर देशवासी मन ही मन कुढ़ते हैं। इसी कारण भय-द्वेष रहित आध्यात्मिकतायुक्त लाछुनों का उपदेश आज कल आदर नहीं पाता। तथापि हमारा विश्वास है कि इन बाधाओं के होते हुए भी शांतिनिकेतन विद्यालय के लिए हमारी चेष्टाएं निष्फल नहीं हुई हैं, क्योंकि मार्ग चाहे कितना ही कन्टकपूर्ण क्यों न हो यदि उच्चतम सत्य देशवासियों के सामने लाया जाता है तो वह इतने हृदयहीन नहीं हैं कि उसे ठुकरा दें—हमारे आधुनिक लड़के भी ऐसा नहीं करते। अपने चरित्र की इस विचित्रता पर हम पञ्जाब के छोटे लाट के कथन से सहमत हैं। किन्तु कभी कभी ऐसे दुर्योग हो जाते " -

अत्यंत भले बंगाली लडके भी इस उच्चतम सत्य से मुह फेरने लगते है। क्योंकि दूसरी ओर से नीचतम बातें उनका ध्यान आकर्षित करने लगती हैं। हमारे शान्तिनिकेतन विद्यालय में दो छोटे लडके है जिनके माता पिता की अवस्था अच्छी थी और वे स्कूल के खर्च नियमानुसार दिया करते थे। कुछ दिन हुए उनके घर के तीन आदमी एक साथ नजरबन्द कर दिये गये। लडके अपना खर्च नहीं चला सकने और उन्हें स्कूल के फड का सहारा लेना पडा है। लडकों को केवल अपनी निस्सहाय तथा दरिद्र स्थिति पर ग्लानि ही नहीं वरन् वह उस विपद् का हाल भी जानते हैं जो उनके घर पर पडी है। उनके पिता पर मेलेरिया का अक्रमण हुआ, माता व्याकुल होकर इस बात के लिए जमीन आसमान एक कर रही है कि उसका पति अधिक स्वास्थ्यकर स्थान में रक्खा जाय। ये ही सब चिन्तायें बालकों को कष्ट दे रही है। इस विषय पर न तो वे बालक कुछ कहते है और न हम। किन्तु जिस समय ये लडके सामने आते है उस समय धैर्य की बात, प्रेम की बात, नित्य धर्म्म के प्रति निष्ठा की बात, ईश्वर के प्रति विश्वास की बात, कहते हुए हमारा गला रुधता है, उस समय वे हंसते हुए कुटिल मुख आँखों के सामने आते हैं जो पंजाब के लाट की तरह सात्विकता के अतिशैय्य का मज़ाक उडाते हैं। इस प्रकार दुश्मन के साथ दुश्मन की ठोकर से चिगारियां निकल रही है, और बङ्गाल के प्रत्येक भाग में मनुष्य दुख से बाहरी खेद को अन्त करण के भंडार में संचित कर रहे है। अधिकारियों के अदृश्य मेघ से सहसा जो वज्रपात होते हैं उनसे मरती है अनाथ रमणियां और असहाय बच्चे! क्या हम इनको योद्धा (Combatants) नहीं

कह सकते। यदि पूछो कि इस दुष्ट समस्या की जड़ कहां है तो कहना होगा कि स्वाधीन शासन के अभाव में। हम अंग्रेजों से बहुत दूर हैं। उनके एक विद्वान भ्रमणकारी ने कहा है कि चीनी और जापानी उसे हमसे अधिक निकट दिखाई पड़े। जान पड़ता है हम अपनी आध्यात्मिकता के कारण ही उनसे इतने दूर हैं। हमारी आध्यात्मिकता उन्हें पसंद नहीं। मनुष्यों में इससे बड़ा मूलगत अभेद और क्या हो सकता है? सर्वोपरि बात तो यह है कि वे हमारी भाषा नहीं जानते, हमसे मिलते जुलते नहीं। जहां इतना दूरत्व, मेलजोल की इतनी कमी वहां सतर्क सन्दिग्धता एक मात्र नीति होनी ही चाहिए। वहां स्वार्थी और चतुर, जो अवैतनिक जासूसी को अपनी उन्नति का साधन समझे हुए हैं, शासनतन्त्र के प्रत्येक छिद्र को झूठ और झूठ से भी अधिक भयकर अर्द्ध सत्य के विष से भर रखते हैं। जो स्वार्थ की अपेक्षा आत्म-गौरव को अधिक समझते, जो अपनी उन्नति से देश की उन्नति को अधिक महत्व देते हैं वह जब तक पुलिस के शिकार न बनें उस समय तक शासन-व्यवस्था से दूर रहने की चेष्टा करते हैं।

आती है, जब भाग्य-हीन देश की कष्ट-सञ्चित शुभ चेष्टाएं खुफिया के एक इशारे में ढेर हो जाती हैं, उस समय भी दूसरे पक्ष के 'डिनर', सुख-निद्रा और भोग-विलास को कोई धक्का नहीं पहुंचता। मैं यह बात क्रोध से नहीं कहता, यह सब स्वाभाविक है। ब्यूरोक्रेसी, उन अधिकारियों का समूह है जो विधाता की सृष्टि—मनुष्य लोक—में काम नहीं करती वरन् अपनी अलग सृष्टि रच कर उस पर राज करती है। स्वाधीन देश में यह 'ब्यूरोक्रेसी' सर्वप्रधान नहीं समझी जाती, इसी कारण इसके सूराखों से मनुष्य ऊपर उठ सकता है। पराधीन देशों के लिए इसमें कोई सूराख नहीं छोड़ा जाता। जब हम ऊपर उठने के लिए इसमें सूराख ढूंढ़ने की चेष्टा करते हैं तब इसकी छोटी बड़ी शाखा उप-शाखा समूह के दोनों ओर ऐसा तहलका डालती हैं कि उस समय हम इस तहलके की लपेट में आ जाने के डर से चुपचाप बैठ रहने ही में अपना कल्याण समझते हैं। तथापि मैं अपनी पहिली और आखिरी बात कहे रखता हूं, कि कोई बलवान जाति किसी अस्वाभाविकता को संगीनों की नोक पर क़ायम नहीं रख सकती। बोझ बढ़ जाता है, हाथ थक जाते हैं और विश्व की भाराकर्षण शक्ति उसे भूमि पर ले आती है।

तब स्वाभाविकता क्या है? यही कि शासन-प्रणाली चाहे जैसी हो, पर वह शासितों के सन्मुख उत्तरदायी रहे। और, जिससे कि बदले में, शासन-तन्त्र में लोगों का ममत्व रहे। ग़ैर-जिम्मेदार और ऊटपटांग शासन होने से उसके प्रति लोगों का औदासीन्य भाव बुरी तृष्णा में अवश्य परि-णत होगा क्योंकि ऐसे शासन में उनका कोई हाथ नहीं।

और ऐसी वितृष्णा को दमन करने की चेष्टा करने वाले उसे विद्वेष में बदल देते हैं। इसी प्रकार समस्या की गांठ उलझती ही जाती है।

अंग्रेज (British Nation) इस देश में वर्तमान युग-सत्य के दूत होकर आये हैं। जिस समय की जो बड़ी विश्व-सम्पद है वह नाना आकार में नाना उपायों द्वारा सब देशों में अवश्य पहुंचेगी। जो उस सम्पद के पहुचाने वाले हैं, यदि वे ही बेईमानी करें तो वह धर्म के अभिप्राय को नष्ट करके दुख पैदा करते हैं और तब वे उस आग को नहीं दबा सकते जिसे वे खुद सुलगा रहे हों। जो कुछ भी उन्हों ने देने की डींग मारी है वह उन्हें देना ही पड़ेगा क्योंकि वह दान उनका दान नहीं है वह समय का-युग का-दान है, वे तो केवल हरकारा मात्र हैं। अस्वाभाविकता यह है कि अपने इतिहास में वे जिस सत्य पर प्रकाश डालते हैं, अपने शासन में वे उसी सत्य को अंधेरे में छिपाये रखने की चेष्टा करते हैं। किन्तु वे अपनी प्रकृति के अंश को दूसरे अंश द्वारा धोका नहीं दे सकते। यदि छोटा अंग्रेज़ बड़े अंग्रेज़ को सदैव अपने स्वार्थ में फांसे रखकर अपना मतलब गांठना चाहता

और पश्चिम को एक स्थान पर आये हुए शताब्दियां हो गईं, परन्तु उनमें मानव सम्बन्ध अभी तक स्थापित नहीं हो पाया ! पश्चिम पूर्व पर शासन करेगा परन्तु उसे आत्मीय कदापि नहीं बना सकता। पूर्व की चहार-दीवारी टूट गई, पश्चिम उसके गुदाम में आ घुसा, परन्तु अपना यह राग अलापना न छोड़ा कि " पूर्व पश्चिम कभी नहीं मिल सकते ।" क्या इस अस्वाभाविकता का दुखदायी पत्थर इसी प्रकार अटल रहेगा ? यदि इसका कोई स्वाभाविक प्रतिकार न हो तो ऐतिहासिक दुःखांत नाटक के पांचवें अंक पर परदा गिर जायगा।

भारत के गत इतिहास का दु:खांत नाटक भी इसी प्रकार रचा गया था । हमने भी मनुष्यों को पास रखते हुए दूर हटाते रहने की चालें खेली हैं। जिन अधिकारों को अधिक मूल्यवान समझा उनको हमने भी अपने ही लिए रक्खा और दूसरों को उनकी हवा भी न लगने दी। हमने भी नित्य-धर्म्म को स्वधर्म्म का बड़ा नाम देकर मनुष्य जाति का अपमान किया है। किन्तु शास्त्र-विधि का इतना कठिन बंधन होते हुए भी हम इस अस्वाभाविकता को अपने इतिहास के अनुकूल नहीं बना सके । जिसमें हमने अपना बल समझा था उसमें हमारी कमज़ोरी निकली। इसी कारण शताब्दियां होगईं कि हम अपने ही लगाये हुए ज़ख़्म से आपही मरे जा रहे हैं। वर्तमान स्थिति चाहे जैसी हो, परन्तु मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि पूर्व और पश्चिम अवश्य मिलेंगे। इसके लिए हमें भी कुछ करना है। यदि हम छोटे बन कर डरेंगे तो अंग्रेज भी हमें छोटे कर डरायेंगे। छोटे अंग्रेज़ का समस्त बल

हमारी छोटी शक्ति पर है। परन्तु वह भावी युग पृथ्वी पर आ रहा है जब कि अस्त्र के विरुद्ध निरस्त्र को खड़ा होना पड़ेगा। उस समय जीत उस आदमी की न होगी जो मारना जानता है, वरन् जीत उसकी होगी जो मरना जानता है। उस समय में दुख देने वाले का पराभव होगा और दुख सहने वाले का गौरव। उस युग में मांसपेशियों के साथ आत्मा की शक्ति का संग्राम होगा और आदमी यह दिखावेगा कि अब वह पशु नहीं रहा, वह प्राकृतिक निर्वाचन के नियमों से ऊपर उठ गया है। इस बड़े सत्य को प्रमाणित करने का भार हमारे ऊपर है।

यदि पूर्व और पश्चिम मिलेंगे तो किसी बड़े आदर्श पर—अनुग्रह पर नहीं, तोपों से लदे हुए कुछ जंगी जहाज पर नहीं। हमें मृत्यु की सहायता करनी होगी तभी मृत्युंजय हमारी भी सहायता करेंगे। यदि हम में शक्ति न पैदा होगी तो अशक्त के साथ शक्तिवान का मेल कभी नहीं हो सकता। ऐसा मेल, जिस में एक पक्ष का आधिपत्य हो मेल, नहीं वरन् सब से बड़ा विच्छेद है। जिस साम्राज्य-संगठन की इमारत में हम केवल ईंट और चूने के सदृश हैं, वह हमारा साम्राज्य नहीं हो सकता।

सत्य के लिए, न्याय के लिए, दुख सहने की शक्ति होनी चाहिए। संसार में कोई ताकत ऐसी नहीं है, जो दुख सहने की शक्ति को, त्याग की शक्ति को, धर्म की शक्ति को, भेंट के बकरे की तरह, जंजीरों में बांध कर रख सके। वह शक्ति हार कर जीतती है, मर कर अमर होती है।

... .

मैं जो कुछ कहना चाहता हूं वह यह है कि चुपके चुपके जुर्म लगा कर सजा दे देने की नीति ने मेरे बहुत से देशवासियों के हृदयों में ये स्वाभाविक विचार उत्पन्न कर दिये हैं कि उनमें से बहुत से बे-कसूर हैं। जेलखानों, और कुछ दशाओं में, काल-कोठरी में क़ैद करना सर्वसाधारण को पेशबन्दी की अपेक्षा बदले का मज़ा अधिक देता है। इससे भी अधिक बात यह है कि जिम्मेदार आदमी चाहे यह बात न मानें कि कैदी को जेल से छूटने के पश्चात् भी पुलीस के सदैव पीछे लगे रहने से कोई कष्ट पहुंचता है किन्तु यह बात उन लोगों के हृदय से पूछी जाय जो इस कष्ट में भाग लिया करते हैं। इस नीति को स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि लोगों के हृदय में एक हौल समा गया है, जिसके कारण निरपराध अपनी उन्नति करने अथवा समाज की सेवा करने में अशक्त से हो गये। ऐसी अस्वाभाविक दशा में हम लोगों को उन लोगों के साथ अपना अभ्यस्त सम्बन्ध रखना कठिन हो गया है जिसे हम अच्छी तरह नहीं जानते, क्योंकि यह डर लगा रहता है कि कहीं हम लोग भी सर्वव्यापक संदेह के शिकार न बन जॉय।
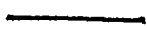
अब भी उतना ही दर्द से भरा हुआ है जितना कि उस समय था, जब कि कांग्रेस का नामोनिशान भी न था। लड़कपन ही से इन बातों के आदी होने के कारण अब हम इन में कुछ अस्वाभिकता अनुभव नहीं करते, कोई विचित्रता नहीं पाते, और यह सच है कि जिस में विचित्रता नहीं होती उसके लिए चिंता ही क्या? इसी कारण हमारे मन में भी कोई चिन्ता उत्पन्न न हुई। किन्तु जिस प्रकार कि लेख के किसी शब्द के नीचे लकीर खिंचे होने से आँख हठात् उस पर रुक जाती है, उसी प्रकार अपनी गली की जलाशयता के नीचे ट्राम की दुहरी लाइन देख कर मेरे मन पर भी वैसा ही धक्का पहुंचा जैसा कि मेरी गाड़ी के पहिया को। इधर वर्ष आरम्भ हुआ उधर ट्राम-लाइन की मरम्मत भी जारी हुई। न्याय-शास्त्र कहता है कि जिसका आरम्भ है उसका शेष भी है, परन्तु ट्राम वालों के अन्याय-शास्त्र में शेष नहीं—उनकी मरम्मत का कभी अन्त ही नहीं होता। इसी कारण जब चितपुर रोड के जलश्रोत के साथ जलश्रोत का द्वंद युद्ध देख कर हृदय जलने लगा तब मैंने सोचा कि हम लोग इसे सहन क्यों करते हैं?

सहन न करने से काम बनता है और सहन करने के लिए इंकार करने से काम और भी अच्छा बनता है—यह बात चौरंगी (यूरोपियन मुहल्ला) के देखने से अधिक स्पष्ट हो सकती है। एक ही शहर और एक ही म्यूनिसिपेलिटी-भेद केवल इतना ही है कि वे लोग सहन नहीं करते और हम करते है। यदि चौरंगी में तीन चौथाई से भी अधिक ट्राम लाइन होती और उसकी कभी अन्त न होने वाली मरम्मत इसी प्रकार चाल से चला करती, तो मुझे विश्वास है कि, ट्राम

यूरोपियन ऐनक लगाने पर भी सुझाई नहीं देती। मनुष्य के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि कर्तृत्व का अधिकार ही मनुष्य का अधिकार है। जिस देश में यह बात मंत्रों, श्लोकों तथा विविध विधानों द्वारा दाब दी गई हो वह देश सब से बड़ा गुलामों का कारखाना है। जिस देश में मनुष्य अपने को आचार विचार की जंजीरों में जकड़े हुए हैं, जिस देश में भटक जाने के डर से रास्ता तोड़ दिया जाता है, जहां के आदमी धर्म्म की आड़ लेकर आदमी को नीचा दिखाया करते हैं, वह देश एक ऐसा बड़ा कारखाना है जिसमें केवल गुलाम तय्यार किये जाते हैं। हमारे मौजूदा अधिकारयुक्त मालिक भी यही बात कहते हैं कि, "तुम योग्यता नहीं रखते, तुम भूलें करोगे—अतएव तुम्हारे हाथों में कर्तृत्व देने से काम नहीं चल सकता है।" मनु और पाराशर की यह आवाज अंग्रेजी गले से बिल्कुल बेसुरी निकलती है, इसलिए हम जो उत्तर देते हैं वह उनके लिए अधिक सुरीला है। वह उत्तर यह है कि, "भूलें करना इतना हानिकारक नहीं है जितना कि स्वाधीन कर्तृत्व का हाथ में न होना। भूलें करने की स्वाधीनता ही सत्य का मार्ग दिखाती है।"

एक बात और है। हम शासकों को यह याद दिला सकते हैं कि यह सच है कि आज तुम कर्तृत्व की मोटर गाड़ी चला रहे हो, किन्तु एक दिन रात को, जब तुम पारलामेण्ट के छकड़े पर सवार हो कर चले थे तब खाइयों और गड्ढों पर पड़ कर पहियों से जो चरखचूं की आवाज़ निकली थी, कहो, क्या वह आवाज तुम्हारे कानों में जय-ध्वनि का मजा नहीं देती थी? पार्लामेण्ट ने दाहिने बांए धक्के खा कर अपने की लकीरें बनाई हैं, आरम्भ से ही उसे स्टीम रोलर

द्वारा लेस की हुई पक्की सड़क नहीं मिली थी। कभी राजा, कभी गिर्जा, कभी जमींदार, कभी शराबियों के स्वार्थ का प्रश्न उठता था। क्या वह एक समय नहीं था जब कि मेम्बर जुरमाने और सजा के डर से पार्लामेण्ट में हाज़िर होते थे? और, गलतियों की बात जो कहो तो आयर्लेंड और अमेरिका के पुराने सम्बन्ध से लेकर आज 'डार्डिनेल्ज़' और 'मेसोपोटामिया' की घटनाओं तक, न जाने कितनी ग़लतियां गिनाई जा सकती हैं। भारत-विभाग में की हुई भूलों की संख्या भी कम नहीं है। परन्तु उनके विषय में यहां कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। अमेरिका के राष्ट्र-तंत्र में कुबेर देवता के मुसाहब जो कुकर्म करते हैं वह भी सामान्य नहीं हैं। 'ड्रेफस केस' में फ्रांस की सैनिकता के अन्याय पर जो प्रकाश डाला गया था उसमें भी तो शत्रुओं की अर्थ-शक्ति ही का हाथ था। यह सब कुछ होते हुए भी इस बात का किसी को संदेह नहीं है कि आत्म-कर्तृत्व की स्वतन्त्रता के वेग में मनुष्य, भूलों द्वारा ही भूलों का सुधार करता हुआ ऊपर को उठता है।

प्राण-नाश से भी अधिक अमङ्गलकारी है। अतएव भूल-चूक की आशंका रहते हुए भी हमें स्वराज्य मिलना चाहिए। हम गिरते पड़ते आगे बढ़ेंगे, किन्तु ईश्वर के लिए हमारे गिरने-पड़ने पर दृष्टि रख कर, हमारा आगे बढ़ने का रास्ता बन्द मत करो। यह हमारा उत्तर, एकमात्र सत्य उत्तर है।

यदि कोई ज़िद्दी आदमी शासकों को इस उत्तर से तंग करता रहे तो वह सरकार द्वारा नज़रबन्द कर दिया जा सकता है। किन्तु, इधर अपने देशवासियों की ओर से उसे शाबाशी मिलती है! और यदि ठीक यही उत्तर हम अपने समाजकर्त्ता को दें और कहें कि, "तुम कहते हो कि यह कलियुग है जिसके कारण कि हमारी बुद्धि मन्द है और स्वतंत्र छोड़ देने से ही हम से भूलें होती हैं अतएव शास्त्र को शिरोधार्य करने ही में कल्याण है, तो ऐसे अपमान की बात हम नहीं मानते।" फिर क्या पूछना? हिन्दू जाति के अगुओं की आँखें मारे क्रोध के लाल हो जाती हैं और सामाजिक बन्धन की आज्ञाएं जारी हो जाती हैं। जो लोग राजनीतिक आकाश में उड़ने के लिए पर फटफटाते हैं वेही सामाजिक चहारदीवारियों में ही हमारे पैरों में जंजीरें डालने लगते हैं। पर असली बात तो यह है कि एक ही पतवार नौका को दाहिने और बांए दोनों ओर खेने का काम देता है। एक मूल कथा है जिसको समझने से समाज में भी मनुष्य सच्चा होता है और राष्ट्र-व्यापार में भी। इसी मूल कथा की धारणा के कारण ही चौरंगी और चितपुर में इतना अन्तर है। चितपुर ने यह समझ रक्खा है कि ऊपर के अफ़सरों के ही हाथों में सब कुछ है, इसी लिए वह खाली पड़ी है। चौरंगी कहती है कि, "यदि हमारे हाथों

स त्कृत न होता तो हमारे हाथ हाथ ही न होते।" उसका विश्वास है कि हमारे हाथ इसी बाहुबल से पूर्णतः स्वतन्त्र रहते हैं और इसी लिए वह संसार को अपने हाथ में लिये हुए है। पर चितपुर ने संसार खो दिया क्योंकि उसका अपना विश्वास जाता रहा और अब वह अधखुली नशीली आंखों में निवृत्त मार्ग और शांति का पाठ पढ़ रहा है।

यदि हम अपने घर के बने हुए अधम नियमों ही को सब से बड़ा समझें तो हमें अवश्य आंख बन्द करके बैठ जाना परमावश्यक है। क्योंकि आंख खोल कर देखने से हम विश्व के नियमों से मुंह नहीं मोड़ सकते। ताक़त, दौलत तथा स्वतन्त्रता और दुनियाँ से छुटकारा, इन विश्व-नियमों पर प्रभुत्व जमा लेना ही तो उपहार है—इसी निश्चित उसूल पर आधुनिक यूरोपीय सभ्यता की नींव जमी हुई है और इसी पर चल कर उसने इतनी बड़ी स्वतन्त्रता पाई है।

न मानने के जबानी दाखलों से कुछ बनता बिगड़ता नहीं। असली बात यह है कि हम लोगों में अन्धविश्वास बहुत है और इसी के कारण हमारा अन्तःकरण जर्जरित हो रहा है। इस कायरता की दीवार एक चराचरव्यापी भय के ऊपर है। अखण्ड विश्व-नियमों द्वारा प्रकाशित अखण्ड विश्व-शक्तियों को न मान कर हजारों तरह के काल्पनिक भयों से हम बुद्धि को विदा कर चुके हैं। भय के मारे बैठे हुए कहते हैं-"कुछ ही क्यों न हो! अपने से क्या मतलब?" बहुत ठीक—भय ऐसी ही चीज है।

यही बात हम अपने शासकों में भी देखते हैं। राज्यशासन के किसी एक छिद्र से भी भय घुसा कि वे पाश्चात्य स्वधर्म भूलकर उन्हीं नियमों का गला रेतने लगे जिन नियमों से कि उनकी शक्तियां इतनी दृढ़ रूप से जमी हुई हैं। बस, एक शान को किरकिरी न होने देने की धुन में न्याय तथा रक्षा का खून होने लगता है, और ईश्वरीय नियमों को ललकार कर यह बात सोची जाती है कि यदि आँसू 'काले पानी' (Andamans) में भेज दिये जांय तो मिरचों की धूनी मनोरम हो सकती है। बस, यही तो एक बात है कि जिससे पता चलता है कि विश्व-विधान पर उनका कितना अविश्वास और अपने विधान पर कितना गहरा विश्वास है! इस का मूल कारण है छोटा भय अथवा छोटा लाभ। अथवा फिर उसे काम निकालने की छोटी चालाकी ही समझ लीजिए। हम भी अन्ध भय को दाब में आकर मनुष्य-धर्म्म को तिलाञ्जलि देने के लिए कमर कसे रहते हैं। डर से [illegible] कर हर एक के सामने घुटने टेकने के लिए तय्यार [illegible]। इसी लिए हम-चाहे जीव-विज्ञान पढ़ें, चाहे वस्तु-

विज्ञान और चाहे राष्ट्रतन्त्र की परीक्षा ही क्यों न पास कर लें—परन्तु "हमें मालिक की इच्छा से ही काम"—हमारा यह भाव पिंड नहीं छोड़ता। यदि दस आदमी मिल कर कोई काम करते हैं तो वह किसी एक आदमी की बपौती हो जाती है, न जाने कहाँ से ख़्वाहमख़्वाह "मालिक" आ टपकता है। हमारी समझ में उस का एकमात्र कारण यह है कि हम, खाना-पीना, उठना-बैठना, शादी-ग़मी सब "मालिक" की आज्ञा से ही करते हैं!

यदि हम कहें कि ब्राह्मण के लोटे का पानी गन्दा है—पीने योग्य नहीं, और एक शूद्र के लोटे का पानी निर्मल है और वह पीने के भी योग्य है, तो लोग कहेंगे कि बेहूदा बकना है, क्योंकि यह बात "मालिक" के सिद्धान्त से उलटी है। यदि हम कहें कि, "उलटी है तो हुआ करे हम इसे नहीं मानते," तो हुक्का-पानी बन्द, ब्याह-शादी बन्द, यहाँ तक कि मरने पर कोई श्मशान में ले जाने वाला तक न मिले! आश्चर्य तो यह है कि जो लोग जीवन की सामान्य बातों में ऐसी निष्ठुरता काम में लाकर उसे समाज के लिए उपयोगी बनाते हैं वे ही राजनीतिक स्वतन्त्रता मांगते समय ज़रा भी नहीं शरमाते। एक दिन उपनिषद् ने यह ईश्वरीय बात कही गई थी कि—"याथातथ्यतोऽर्थान् व्यादधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः—"अर्थात्, उस का विधान यथातथ्य है, वह नित्य है, वह प्रति मुहूर्त्त बदलने वाला नहीं। इस लिए उस नित्य विधान का हम प्रत्येक ज्ञान द्वारा समझ कर कर्म द्वारा अपना बना सकते हैं। क्योंकि जिस विधान में नित्यता है वह कभी नाश नहीं हो सकता—वह बाधाओं को अवश्य हटायगा। इस विधान का ज्ञान ही विज्ञान है। इसी विज्ञान

के बल पर आज यूरोप कह सकता है कि वह मेलेरिया का नाम मिटा देगा, ज्ञान तथा अन्न का अभाव मनुष्य के घर में नहीं घुसने देगा और राष्ट्र-तंत्र में व्यक्ति-स्वातन्त्र्य के साथ साथ विश्व-कल्याण का भी गठबन्धन कर देगा।

भारत भी एक दिन यह समझ चुका है कि अविद्या ही बंधन है और ज्ञान ही मुक्ति, तथा सत्य के मिलने ही में हमारा परित्राण है। सत्य असत्य का अर्थ क्या है ? अपने को अलग--थलग समझना ही असत्य है। और सर्वभूत के साथ आत्मा का संयोग समझना सत्य है। आज यह बात समझ में आना कठिन है कि इतना बडा सत्य किस प्रकार हृदयस्थ हुआ, किस प्रकार जाना गया। ऋषियों अर्थात् तपस्वी ग्रहस्थों का समय व्यतीत हो गया और उनके पश्चात् बौद्ध सन्यासियों का युग आया। भारत ने जिस महा सत्य को पाया था वह जीवन के व्यवहारिक पथ से हटा दिया गया, और सन्यास ही में मुक्ति का रहस्य बताया गया।

इस प्रकार विद्या और अविद्या में एक प्रकार का मेल हुआ और दोनों के बीच में एक परदे की दीवार चुन दी गई। इसी कारण सामाजिक जीवन में चाहे जितनी धर्म्म अथवा कर्म सम्बन्धी संकीर्णता क्यों न हो, आचार विचारों में चाहे जितनी मूढता क्यों न हो, परन्तु उच्चतम सत्य की ओर से उसका कोई प्रतिवाद नहीं होता—समर्थन ही होता है। पेड के नीचे बैठा हुआ ज्ञानी कहता है—"जो मनुष्य अपने को सर्वभूत में और सर्वभूत को अपने" में लय देखता है वही सत्य का जानने वाला है। यह सुनते ही संसारी भक्तिपूर्वक उसकी झोली भर देता है। दूसरी ओर गृहस्थ में बैठकर कहता है कि—"जो सर्वभूत को अपने

से अलग नहीं रख सकता उसका धोबी, नाई वन्द !" ज्ञानी यह सुन कर उसे आशीर्वाद देता है कि "बच्चा चिरजीव"। इसी कारण इस देश के सामाजिक जीवन का अधःपतन हुआ, क्योंकि वरायनाम।सत्य से होशियार करने वाला कोई नहीं। यही कारण है कि सैकड़ों वर्षों से हम अपमान सह रहे हैं-पददलित हो रहे हैं। परन्तु यूरोप में यह बात नहीं। वहां सत्य केवल ज्ञान में ही नहीं, व्यवहार में भी है। वहां राज्य अथवा समाज में जो कुछ भी दोष होता है उसकी जांच सत्य के प्रकाश में होती है और सत्य ही की सहायता से समाज द्वारा उसका संशोधन किया जाता है। इसी लिए वह सत्य जो शक्ति और साथ ही मुक्ति देता है, उस पर सब का बराबर अधिकार होता है, वह सबको आशा का संदेश देता है—साहस दिलाता है। उनका विकास तन्त्र-मंत्र की कोठरी में नहीं छुपाया जाता, वह खुले मैदान, सबके सामने, बढता है और दूसरों को बढ़ने में सहायता पहुँचाता है। सैकडों वर्षों से हम लोग जो अपमान सहते आ रहे हैं उसका परिणाम यह हुआ कि हम लोग पराधीन हो गये। शरीर में जिस स्थान पर दर्द होता है हाथ वहीं पड़ता है, इसी प्रकार हमारी दृष्टि अपने यूरोपीय शासकों की राष्ट्र-व्यवस्था पर ही पडी। हम अन्य सब बातें भूल कर केवल यह कहते हैं कि, "हमारी सरकार को हमारी इच्छा से भी कुछ सरोकार रखना चाहिए। केवल नियमों और कानूनों को, चाहे हम उन्हें पसन्द करें अथवा न करें, ऊपर से टपका देना ठीक नहीं। कर्तृत्व का समस्त भार हमारे सिर पर लाद देने से हम चल नहीं सकते, उसे ऐसे ठेले में रक्खो जिसे हम ढकेल कर ले जा सकें।" आज संसार

तन्त्रता की अन्धी हुक्मबरदारी से अपना पिंड छुड़ाया, जिन्होंने अपना आदर करना सीखा। किन्तु रूस ऐसा नहीं कर सका, इसी लिए वहां की समाज लाबारिस खेत की तरह अनेक अफ़सरों के कांटों का जंगल हो रही है। वहां की समाज ने पियादे से लेकर पण्डित तक के सामने घुटने टेक टेक कर अपना मनुष्यत्व खो दिया।

यह बात याद रखने योग्य है कि धर्म और धर्म-तन्त्रता एक चीज़ नहीं। वह एक दूसरे के प्रति आग और राख के समान हैं। जब धर्म पर धर्मतन्त्रता गालिब आ जाता है, तब वह उस नदी की तरह हो जाता है जिस में कि रेती पड गई हो। ऐसी नदी का जल रुक जाता है और वह मरुभूमि के तुल्य हो जाती है। और जब मनुष्य इस अचलता पर घमंड करता है तब 'कोढ में खाज' वाली कहावत चरितार्थ होती है।

धर्म कहता है कि यदि मनुष्य का आदर न करो तो अपमानित तथा अपमानकारी दोनों का भला नहीं होता, किन्तु धर्मतंत्रता कहती है कि यदि मनुष्य का निर्दय भाव से निरादर करने की विस्तृत नियमावली का पालन न किया जाय तो वह धर्मभ्रष्ट कहलाता है। धर्म का मत है कि जो जीव को निरर्थक कष्ट देता है वह अपनी ही आत्मा का खून करता है। किन्तु, धर्मतंत्रता की राय है कि चाहे जितना कष्ट क्यों न हो जो पिता-माता अपनी व्रतधारिणी विधवा कन्या के मुख में पानी डालते हैं वे पाप के भागी होते हैं। धर्म का खयाल है कि अनुताप और भले कामों से पाप कट जाते हैं, किन्तु धर्मतत्रता कहती है कि ग्रहण के दिन गंगा· करने से अकेला उसका ही नहीं बल्कि उसके चौदह

पीढ़ियों तक का उद्धार हो जाता है। धर्म का विचार है कि पहाड़ और समुद्र-पार करके संसार देखने से मन का विकास होता है, किन्तु धर्मतन्त्रता सिखाती है कि यदि समुद्र-पार करोगे तो नरक की खैर नहीं। धर्म का यह कथन है कि जो मनुष्य सच्चा मनुष्य है वह चाहे जिस जाति का हो, पूजनीय है, धर्मतंत्रता का कहना है कि केवल ब्राह्मण ही पूजनीय है; चाहे वह कितना ही कुकर्मी क्यों न हो ! संक्षिप्ततः धर्म स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाता है और धर्मतन्त्रता गुलामी का सबक देती है।

विश्वास, चाहे वह अन्ध ही क्यों न हो, एक शोभा रखता है। कोई कोई विदेशी इस देश में आकर इस शोभा की व्याख्या करते है। इस विश्वास को वे उस दृष्टि से देखते है जिस दृष्टि से कि चित्रकार टूटे-फूटे मकान की केवल चित्र-योग्यता को देखता है किन्तु वास-योग्यता नहीं देखता। स्नान-पर्व पर मैंने यात्रियों को, जिन में अधिकांश स्त्रियां होती है, बारीसाल से कलकत्ते आते देखा है। उस अपमान और कष्ट का कहना ही क्या है जो उन्हें इस यात्रा में स्थान २ पर उठाना पड़ता है। किन्तु, इस अपमान और कष्ट से उत्पन्न हुई व्याकुलता में भी सौन्दर्य है। किन्तु, शोक! हमारे देश के धर्मधर्मी ने इस अन्ध-विश्वास के सौन्दर्य को ग्रहण नहीं किया। उसने इसका उन्हें कुछ पुरस्कार नहीं दिया—हाँ, सजा जरूर दी। दुख बढ़ता ही गया। इन स्त्रियों ने इस विश्वास और भक्ति के बाड़े में जिन बच्चों को मनुष्य बनाया है वह इस लोक की समस्त वस्तुओं के सामने सिर झुकाते है और परलोक की छायाओं से थर्राते है। इनका काम केवल यह है कि अपने मार्ग में कांटे बिछाना और

उन्नति करने के नाम से अपनी विघ्न बाधाओं की संख्या को निरन्तर बढ़ाये रहना। इस सज़ा का कारण यह है कि ईश्वर ने हमे जो सब से बड़ी सम्पद् आत्मत्याग की दी है हमने उसे इस बुरी तरह से खर्च किया कि अब हम बिलकुल खुक्ख हो गये। मैं ने अपनी आंखों से देखा है कि जिस रास्ते से हजारों स्त्री-पुरुष स्नान का पुण्य लूटने जा रहे हैं उसी रास्ते के किनारे एक कराल काल के गाल में समाने वाला मनुष्य भूमि पर पड़ा दम तोड़ रहा है परन्तु, उसकी ओर कोई आंख उठाकर भी नहीं देखता—क्यों? इसलिए कि न जाने वह किस जाति का आदमी है—छूने योग्य है अथवा नहीं आत्म-त्याग के दीवालिया तथा मनुष्यत्व के दीवालियों के और क्या लक्षण होते हैं? इन पुण्य लूटने की आकांक्षा रखने वालों का विश्वास देखने में तो कितना सुन्दर है पर वास्तव में देखिये तो वह है बिलकुल सारहीन। जो अंधविश्वास उन्हें पुण्य लूटने के लिए तीर्थ-स्थान पर ले जाता है वही अन्ध-विश्वास उन्हें एक मरते हुए अपरिचित व्यक्ति की सेवा से बाज रखता है! ईश्वर इस अप्राकृतिक शैली (अन्धविश्वास) का आदर नहीं करता, क्यों कि इससे उसके अमूल्य दान का अपमान होता है।

गया-तीर्थ में देखा गया है कि स्त्रियां विद्याहीन तथा चरित्रहीन पण्डों को रुपये देकर उनके पैर पूजती हैं। उस समय उनकी भक्ति-विह्वलता एक भावुक की आंखों के लिए सुन्दर दृश्य है। परन्तु यह श्रद्धा उन्हें सत्य और दया के मार्ग पर क्या एक कदम भी आगे बढ़ाती है? उत्तर में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने जो कुछ दिया वह —ो पवित्र समझ कर ही दिया; यदि उनका ऐसा

विश्वास न होता तो वह रुपया इस प्रकार क्यों नष्ट करतीं, उसे अपने ही काम में न लातीं ? यह ठीक है। परन्तु, इनको न देने और अपने काम में लाने से उन्हें एक लाभ यह होता कि वह अपने इस कार्य को धर्म समझ कर भ्रम में न पड़तीं, उनका मन मोह के दासत्व से मुक्त रहता। मन की इस स्वतन्त्रता की कमी के कारण देश की शक्तियां बाहर नहीं निकलने पातीं। क्योंकि जो आंख बन्द करके चलने का अभ्यस्त है वह आंख खोल कर चलने से डरता है। गुलामों की तरह जो केवल मालिक की आज्ञा पर प्राण देना जानता है वह चाहे अपना मालिक आप बन जाय पर तब भी सत्य और न्याय के लिए प्राण देने में हिचकिचाता है। यही कारण है कि आज हमारे ग्रामों में अन्न, जल, स्वास्थ्य तथा शिक्षा की कमी है। "देहातियों में आत्मशक्ति जगाये बिना उनका उद्धार होना कठिन है"—यह सोच कर मैंने एक गांव में अपना कल्याण आप ही करने की शक्ति जागृत करनी चाही। एक दिन गांव के एक मुहल्ले में आग लगी, आस पास कहीं पानी की बूंद तक नहीं थी। वहां के लोग खड़े होकर हाय हाय करने के अतिरिक्त और कुछ न कर सके। मैंने उनसे कहा कि यदि तुम लोग बिना मजदूरी लिए कुंआ खोदो तो ईंट चूना इत्यादि का खर्च मैं देता हूं। उन्होंने सोचा-"खूब, मजदूरी करें हम, खून पानी करके कुआ हम खोदें और पुण्य अन्य लूटें—यह बड़े सियाने !" कुंआ नहीं खुदा, जल-कष्ट ने पीछा न छोड़ा और आग तो वहां की मेहमान ही बनी हुई है।

देहातों की इस अटल दुर्दशा का कारण यही है कि पुण्य के प्रलोभन बिना कोई काम ही नहीं हो पाता।

और इस अभाव को या तो ईश्वर पूरा करे या पुण्य की खोज में घूमने वाला कोई तीसरा व्यक्ति। यदि पुण्य का उम्मीदवार न आवे तो लोग प्यासे मर जाना स्वीकार करेंगे, किन्तु अपने हाथों से एक बालिश्त भर ज़मीन न खोदेंगे। परन्तु मैं इन देहातियों को दोष नहीं देता, ये बिचारे क्या करें, यहां तो धर्म्मतन्त्रता रूपी राक्षसी ने इन्हें वह घूटी पिला दी है कि इन बिचारों की आंख ही नहीं खुलती। किन्तु आश्चर्य तो उस समय होता है कि जब हम अपने शिक्षित नवयुवकों, कालेज के तरुण छात्रों, को इस बुढिया का गुण-गान करते देखते हैं। भारत को सनातन धात्री की गोद में देखकर यह फूले नहीं समाते। कहते हैं- "आहा! इससे ऊंची जगह अब और क्या हो सकती है? इस स्थान से उतर कर भूमि पर पैर रखना बड़ी भूल है- बस हम सनातन बुआ की गोद में बैठे रहें और यहीं कोई माई का लाल हमारे हाथों में स्वराज्य का राजदण्ड पकड़ा दे!"

दुःख, दुर्भिक्ष, रोगादि जितने भी यमदूत हैं वे सब हमारा ही घर ताकते हैं। जिस प्रकार शेरों और डाकुओं से बचने के लिए हमारे पास बन्दूक का लाइसेन्स नहीं, उसी प्रकार हिन्दू समाज के धुरन्धरों की कृपा से इन राक्षसों से बचने के लिए भी हमारे पास सामाजिक बंदूक का लाइसेन्स नहीं। इनके भगाने की बंदूक ज्ञान, विचार तथा बुद्धि है। बुढिया के भक्त कहते है कि, "क्यों, तुम्हारे पास ये बंदूकें नहीं हैं? तुम भी साइंस पढ कर इन्हे मार भगा सकते हो। फिर अपनी रक्षा क्यों नहीं करते? मना किसने किया?" बहुत ठीक। बेशक कहना अतिशयोक्ति होगी कि हमारे पास अपनी रक्षा

का कोई उपाय नहीं। किन्तु उस युक्ति के व्यवहार में क्या हर प्रकार की रुकावटें नहीं डाली जाती? हम अपने गंडे-तावीज़, शास्त्र-पुराण, पंडे-पुरोहित आदि से इतने घिरे हुए हैं कि उन्हें क्या कर चलने में डाकुओं तथा शेरों की अपेक्षा अना याल की बन्दूक का अधिक डर रहता है।

बहुत लोग कहते हैं इस देश के दुख तथा दारिद्रय का मूल कारण यह है कि यहां के शासन का सम्पूर्ण भार विदेशियों पर है। इस बात को विचार करके देखना चाहिए। अंग्रेजी राजनीति का मूल तत्व है राष्ट्रतन्त्र के साथ प्रजा की शक्तियां का योग करना। हम से यह बात छिपी नहीं कि इस मूल तत्व ने सदैव एकतरफ़ा आधिपत्य की छाती पर मूंग दली है। यही बात हम सरकारी स्कूलों में बैठ कर पढ़ते हैं और परीक्षा पास करते हैं। हम से यह ज्ञान कोई भी छीन नहीं सकता।

हमारी कांग्रेस तथा लीग की नींव भी इसी मूल तत्व पर स्थिर है। जिस प्रकार यूरोपीय साइंस पर सब का अधिकार समान है इसी प्रकार अंग्रेजी राष्ट्रतंत्र भारत की प्रजा तक पहुंचना अपना धर्म समझता है। एक, दस, या पांच सौ अंग्रेज यह कह सकते हैं कि यूरोपीय विज्ञान को हिन्दुस्तानी छात्रों तक न पहुंचने देना चाहिए, किन्तु वही विज्ञान उनको मुंह मारते हुए कहता है कि-'आओ, मुझ तक पहुंच कर शक्ति-लाभ करो, मैं रंग और देश का विचार नहीं करता। मेरे लिए सब बराबर हैं।' इसी प्रकार पांच सौ अथवा पांच हजार अंग्रेज मंच अथवा प्रेस से चिल्लायें कि हिन्दू जातियों के मार्ग में बाधायें डालो, उन्हें स्वराज्य तक न

पहुँचने दो, तो इन लोगों की इस बात पर भी नाक-भौं सिकोड़ते हुए अंग्रेज़ी राजनीति पुकार कर कहती है—"आओ, तुम्हारा रंग चाहे जैसा हो, तुम्हारा देश चाहे कोई हो, आओ भारत शासनतन्त्र में अपना अधिकार प्राप्त करो।"

हमें मालूम है कि हमारे लिए एक कड़ा उत्तर हो सकता है और वह यह कि अंग्रेजी सिद्धांत हमारी इच्छा को कोई चीज़ नहीं समझते। जिस प्रकार कि प्राचीन ब्राह्मणों ने यह स्थिर कर लिया था कि उच्च ज्ञान तथा धर्म-कर्म में शूद्रों का अधिकार नहीं—यह बात भी ठीक वैसी ही है। परन्तु ब्राह्मणों ने अपनी स्थिति मज़बूत बना ली थी। जिनको उन्होंने बाहर से पंगु बनाना चाहा, पहले उनका मस्तिष्क पंगु किया। शूद्र ज्ञान से वञ्चित रहने के कारण स्वतंत्र धर्म-कर्म से भी वञ्चित रह गये इसी लिए उनका सिर अपने आप ही ब्राह्मणों के सामने झुकता रहा। किन्तु अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तानियों के लिए ज्ञान-भंडार का द्वार बिलकुल ही बन्द नहीं कर दिया—और यही आज़ादी का द्वार है। अधिकारीगण इस के लिए अवश्य अफसोस करते होंगे और धीरे २ विद्यालयों के दरवाजे और खिड़कियां बन्द करने का अवसर ताक रहे होंगे, किन्तु उनको यह बात याद रखना चाहिए कि सुविधा के लिए अपने मनुष्यत्व को आघात पहुँचाना, आत्महत्या करना है।

यदि हम आशा देवी का यह संदेश खूब मज़बूती से पकड़ सकें कि हमारे अधिकार अंग्रेज़ों के मनोविज्ञान में छुपे हुए हैं तो इसके लिए दुख सहना और त्याग करना हमारे सरल हो जाय। यदि हम अपनी अभ्यस्त दुर्बलता के बोल उठें कि—"हमें तो मालिक की इच्छा से ही काम

है", तो वह विकट नराश्य आता है जिस का दो सूरतें हैं,—या तो यह कि गोपन-चक्र चला कर उपद्रव मचाने की फिक्र करें या घर के कोने में बैठ कर कानाफूसी करें कि "अमुक लाट साहब बड़े भले आदमी हैं, अमुक व्यक्ति यदि भारत-सचिव रहेगा तो हमारी ख़ैर नहीं, यदि मार्ले साहब हमारे भारत-सचिव हो जावें तो हमारे भाग्य फिर जाय नहीं तो बेमौत मरे-इत्यादि, इत्यादि"। अस्तु। मनुष्यत्व का अविश्वास न करना चाहिए। यह बात माननी ही पड़ेगी कि अंग्रेज़ी राज्य में शक्ति ही बडी चीज़ नहीं वरन् जिस नीति पर वह जमी है वह उससे भी बडी है। इस में संदेह नहीं कि हम प्रति दिन इसकी विरुद्धता देखेंगे। हम देखेंगे कि स्वार्थ-परता, क्षमता-प्रियता, लोभ, क्रोध, भय तथा अहंकार की लीला चल रही है। किन्तु मनुष्यत्व के ये शत्रु हमें तभी नीचा दिखा सकेंगे जब कि वे हमारे हृदय में भी उसी प्रकार के भाव काम करते तथा हमें छोटी २ बातों से भयभीत होते पावेंगे, जब कि क्षुद्र लोभ में वे हमें फँसा हुआ देखेंगे और साथ ही हम में एक दूसरे के प्रति घृणा तथा अविश्वास का भाव देखेंगे। परन्तु जहां हम बड़े हैं, वीर हैं, जहां हम में आत्मत्याग का भाव है, वहाँ हमारा मिलन बड़ा और अच्छाई ही से होगा। वहां अन्य पक्ष वाले शत्रु की मार खाकर भी हम विजयी होंगे—बाहर से न सही, किन्तु हमारा अन्तः-करण अवश्य विजयी होगा।

हम यदि दब्बू हों, क्षुद्र हों तो अपने शासकों की नीति को बिगाड़ कर शत्रु को प्रबल करेंगे। जहां दो पक्ष मिल कर काम करते हैं वहां उन दोनों की शक्तियों का योग ही उत्कर्ष-शक्ति है और उनकी दुर्बलता का योग ही चरम-दुर्बलता है।

जिस दिन अब्राह्मणों ने हाथ जोड़ कर अपनी अधिकार-हीनता स्वीकार की थी उसी दिन ब्राह्मणों के लिए अधःपतन की खांई खुदना आरम्भ हो गई थी। जिस प्रकार सबल दुर्बल के लिए एक बड़ा शत्रु है उसी प्रकार दुर्बल भी सबल के लिए एक बड़ा दुश्मन हो सकता है।

एक सरकारी ऊँचे ओहदेदार ने एक बार मुझ से पूछा-"तुम लोग सदैव पुलीस के अत्याचारों की शिकायत किया करते हो, मैं बजात खुद तुम्हारी इस बात का अविश्वास नहीं करता, किन्तु तुम लोग प्रमाण क्यों नहीं देते?" यह ठीक है, हमारे देश में कोई एक ऐसा प्रबल और हिम्मत वाला दल होना चाहिए जो अन्याय का प्रमाण ढूंढ़ २ कर उसको लोक-उजागर करता रहे। हम जानते हैं कि पुलीस का चौकीदार एक साधारण आदमी नहीं, बरन्, एक जबरदस्त ताक़त का प्रतिनिधि है, जिसको बदनामी से बचाने के लिए वह ताकत हजारों रुपये खर्च कर देती है। इस प्रकार वह ताक़त हम से कहती है कि—यदि मार खाते हो तो चुपचाप मार खा लेना ही तुम्हारे लिए अधिक स्वास्थ्यकर है। शान, हमारी प्राचीन परिचित शान! इसी के हाथों में तो हमारे काम हैं, यह कविकङ्कण की चण्डी और बेहुला काव्य की 'मनसा' है,-न्याय धर्म्म इत्यादि के खून से इस की पूजा करनी पड़ेगी नहीं तो हम कुचल दिये जांयगे, मसल दिये जांयगे। हमें शान को इस प्रकार प्रणाम करना चाहिए:-

या देवी राज्यशासने 'शान' रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥

किन्तु, यही तो अविद्या है, यही माया है। स्थूल आंखों से देखी हुई बात सदैव सत्य नहीं होती। सत्य यह

है कि हमारा और सरकार का घनिष्ठ सम्बन्ध है-यह सत्य समस्त राज पुरुषों से भी बडा है। यह सत्य अंग्रेजी राज्य की ताकत है। और, इसी सत्य में हमारा बल भी छिपा हुआ है। यदि हम भीरु हैं, यदि हम अंग्रेज़ी आदर्श पर श्रद्धा नही रखते तो पुलीस अवश्य हम पर अत्याचार करेगी और कोई मेजिस्ट्रेट हमारी रक्षा नहीं कर सकेगा। 'शान'-देवी सदैव नरबलि मांगती रहेगी और अंग्रेज़ी शासन अंग्रेज़ों के ऐतिहासिक धर्म्म का प्रतिवाद करता रहेगा।

इसके उत्तर में हम से यह कहा जा सकता है कि पारमार्थिक दृष्टि से यह बात मानी जा सकती है कि राष्ट्र-तन्त्र में शक्ति की अपेक्षा नीति ही बडी है, किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से इस बात के मानने में हानि है—दुःख है।

मेरा उत्तर है-"हानि है तो होने दो, किन्तु ज्ञान द्वारा स्वीकार किये हुए सत्य को व्यवहार में लाओ।

किन्तु तुम्हारे देशवासी भय अथवा लोभ से सत्य के विरुद्ध गवाही देंगे।"

"देने दो किन्तु तुम तो सत्य पर दृढ रहो?"

"परन्तु तुम्हारे ही देशवासी प्रशंसा अथवा पुरस्कार के लाभ में फँसकर पीछे से तुम्हारा सिर तोड देंगे।

'तोड देने दो-किन्तु हमें सत्य पर निष्ठा रखनी चाहिए।"

'तुम इतनी आशा रखते हो?"

'हां, इतनी ही आशा। इस से रत्ती भर भी कम नहीं।'

यदि हम अपने शासकों से बडी चीज़ मांगे तो हमें अपने देशवासियों से उसकी अपेक्षा अधिक बड़ी चीज

मांगना पड़ेगी-अन्यथा हमारी पहिली प्रार्थना का कुछ फल न होगा। हम यह जानते हैं कि सब मनुष्य बलवान नहीं हैं, उन में बहुत से कमजोर भी हैं। किन्तु सदैव सभी देशों में ऐसे मनुष्य जन्म लेते रहते हैं जो अपने देश के सच्चे प्रतिनिधि बनकर अपने देश का कष्ट अपने ऊपर रख लेते हैं, जो विघ्न-बाधायें हटाकर अपने देशवासियों के लिए आगे बढ़ने का मार्ग साफ करते हैं जो समस्त विरुद्धताओं के मुकाबले में भी मनुष्यत्व पर श्रद्धा करते हैं और निराशा के घोर अन्धकार में भी धैर्यपूर्वक सूर्योदय की प्रतीक्षा करते हैं। वे अविश्वासियों के हँसने पर कान न देकर ज़ोर के साथ कहते हैं-"स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्" अर्थात् केन्द्र-स्थल में यदि जरा सा भी धर्म बाकी रहता है तो परिधि के समस्त भय समूहों को जड़ उखाड़ देता है। राजनीति-शास्त्र में यदि कोई भी महत्वपूर्ण सिद्धांत है तो हम उसी के आगे सिर झुकायेंगे-भय के आगे नहीं, कदापि नहीं।

कल्पना कीजिए कि मेरा बालक बीमार है। मैं एक यूरोपियन डाक्टर को अधिक फीस देकर बुलाता हूं। वह आता है और ओझा-सोखा की भांति मन्त्र-तन्त्र द्वारा रोग हटाने की चेष्टा करता है। यह देखकर क्या मैं उससे यह न कहूंगा कि-'देखिये साहब, मैंने आपको झाड-फूंक करने के लिए नहीं बुलाया है, चिकित्सा करने के लिए बुलाया है।' इस पर डाक्टर अगर आंखें लाल-पीली करके यह कहने लगे कि, "अजी, हम तो डाक्टर हैं जैसा ठीक समझेंगे, करेंगे।" तो उस समय यदि कलेजा न थर्रा उठा तो क्या मैं यह नहीं कहूंगा कि-"जिस विज्ञान ने आपको डाक्टर

बनाया है वह विज्ञान आप से भी बड़ा है और मैंने आपको इसी विज्ञान द्वारा चिकित्सा करने के लिए बुलाया है न कि झाड़-फूँक के लिए। उस समय चाहे वह मेरे मुँह पर घूसा मारे और फीस जेब में रख कर चल दे, किन्तु जब वह अकेला अपनी गाड़ी में बैठकर अपने व्यवहार की आलोचना करेगा तब वह लज्जित अवश्य होगा। इसी लिए मैं कहता हूँ कि जो बात अंग्रेज़ों की बात नहीं, केवल उनके अमलों (अधिकारियों) की बात है, यदि उस बात पर हम कान न दें, तो आज हम अपने ऊपर विपत्तियाँ ला सकते हैं, किन्तु कल अवश्य हम अपना दुःख दूर कर सकेंगे।

जरा सोचिये तो सही, कि भारत में अंग्रेज़ी राज्य के डेढ़ सौ वर्ष व्यतीत होने पर भी आज हम यह अजीब उपदेश सुनते हैं कि बंगाल को अपने पड़ोसी मद्रास प्रांत के दुःखों पर आँसू बहाने का अधिकार नहीं। पर हमारा तो अबतक यही खयाल था कि अंग्रेज़ी शासन में मद्रास, बंगाल, बम्बई सब भीतर और बाहर से एक होते जा रहे हैं—और यह गौरव अंग्रेज़ी साम्राज्य के मुकुट का कोहनूर है। बेलजियम और फ्रांस के दुःखों को अपना दुःख समझ कर अंग्रेज़ युद्ध में प्राण दे रहे हैं, समुद्र के पश्चिम ओर जब यह नीति काम में लाई जा रही है, तब पूर्व की ओर यह नीति कबतक चलेगी, कि मद्रास के सुखदुःख में बंगाल को दखल देने का अधिकार नहीं।' क्या हम इस प्रकार की डपट मानने के लिए तय्यार हैं? क्या हम यह नहीं जानते कि कहने को तो यह डपट चाहे जितनी प्रचण्ड हो परन्तु इसके पीछे घोर लज्जा छिपी हुई है!

हमें अधिकारियों के इस अन्याय की गोपनीय लज्जा और अपने साहस का मेल मिलाना चाहिए। इंगलैण्ड

भारत से प्रतिज्ञाबद्ध है। अंग्रेज यहां यूरोपीय सभ्यता के प्रतिनिधि बन कर आये थे। उस सभ्यता का सन्देश ही अंग्रेजों की प्रतिज्ञा है। इसी बात को हम महत्त्व देंगे। हम उन्हें यह बात कदापि न भूलने देंगे कि वे भारत को टुकड़े टुकड़े करने ही के लिए समुद्र पार से यहां नहीं आये हैं।

जिस जाति ने कोई बड़ी सम्पद पाई वह अन्य देशों को दान करने ही के लिए पाई है। यदि वह कृपणता करे तो वह अपने ही को वञ्चित करेगी। यूरोप की प्रधान सम्पद, विज्ञान और मनुष्य के अधिकार हैं। ईश्वर ने भारत के लिए यही उपहार देकर अंग्रेजों को समुद्र पार भेजा। शासकों को यह बात याद दिलाते रहने का भार हमारे ऊपर भी है क्योंकि जबतक प्रत्येक पक्ष अपना कर्तव्य न पालन करते रहेंगे तबतक विकार उत्पन्न होने तथा भूल-चूक की अधिक सम्भावना है।

अंग्रेज अपने इतिहास को दुहाई देकर यह कह सकते हैं कि, "स्वराज्य की यह सम्पद हमने बड़ी मेहनत और मशक्कत तथा लड़ाई झगड़ों के पश्चात् पाई है।" मैं इसे स्वीकार करता हूं। संसार की हरएक अग्रगामी जाति ने किसी विशेष सत्य को बड़े कष्ट परिश्रम तथा त्याग से ही प्राप्त कर पाया है, किन्तु उसे, जो उसका अनुकरण करता है, परिश्रम पूर्वक उतने ही लम्बे और बीहड़ रास्ते के तय करने की आवश्यकता नहीं। अमेरिका में मैंने देखा है कि बङ्गाली छात्र बहुत थोड़े दिनों में मशीनें बनाना सीख जाते हैं। उन्हें बटलोही से लेकर स्टीम इञ्जिन तक के समस्त ऐतिहासिक विवरण सीखने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यूरोप को जिन चीजों

को पुख़्तगी पर लाने में अनेक युगों की वर्षा तथा धूप की आवश्यकता पड़ी उन्हीं चीजों को जापान ने अपनी भूमि में जड़ से पल्लव तक चुटकी बजाते ही रोप दिया। इसी लिए यदि हमारे चरित्र तथा अभ्यास में स्वराज्य के लिए कुछ कमी हो तो हमे अपना कार्य बहुत शीघ्र प्रारम्भ करने की अधिक आवश्यकता है। यदि हम यह समझ बैठे कि किसी व्यक्ति विशेष में कुछ भी नहीं है तो सचमुच उस में हम कभी भी कुछ नहीं पा सकते। आत्म-कर्तृत्व का सुयोग देकर हमारी शक्तियों के लिए रास्ता साफ कर दो—यदि उसे विघ्न-बाधाओं से पूर्ण तथा दरवाजे बन्द रख कर उसे उन्नति न करने दोगे और इस प्रकार उसे संसार की दृष्टि में हेय बनाये रक्खोगे तो समझ लो कि इससे बढ कर और दूसरा पाप नहीं हो सकता।

इतिहास में जब प्रातःकालीन आभा का उदय होता है तब प्रकाश क्रमशः पूर्व से ही नहीं फैलता वरन् एकदम से चारों ओर फैल जाता है। यदि जातियों की उन्नति एक एक इञ्च करके होती तो महाकाल को भी हार मानना पड़ती। यदि यह बात सत्य मान ली जाती कि मनुष्य पहले योग्य बन कर तब आकांक्षा करे तो पृथ्वी की कोई भी जाति स्वाधीनता के योग्य न बन सकती।

आज पश्चिम जन-सत्ता पर नाज़ कर रहा है। इस लिए पश्चिम से अब तक भरे हुए कूड़े को हम कुरेदना नहीं चाहते। यदि कोई शक्ति उच्च स्वर से यह कहती कि जब तक पश्चिम में यह कूडा भरा पडा है तब तक उसे जनसत्ता के अधिकार नहीं मिल सकते तो बीभत्सता तो रहती ही परन्तु साथ ही उस कूड़े के साफ़ होने की सम्भावना भी नष्ट हो जाती।

इसी प्रकार इसमें सन्देह नहीं कि हमारी समाज तथा हमारी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में भी कलङ्क है। यह बात इच्छा होने पर भी हम छिपा नहीं सकते। किन्तु तोभी हमें अपना स्वामी आप बनना चाहिए। यह कोई कारण नहीं है कि यदि एक कोने में प्रकाश कम है तो हम दूसरे कोने में भी प्रकाश न करें। मनुष्य का महोत्सव जारी है, किन्तु किसी देश के चिराग़ रौशन नहीं हैं-तथापि महोत्सव उन्नति ही पर है। यदि हमारा चिराग़ कुछ दिनों से बुझ गया है तो यदि हम उसे इङ्गलेंड के चिराग़ से फिर रौशन करलें तो क्या हरज है? इस बात पर नाक-भौं सिकोड़ना अच्छा नहीं समझा जा सकता क्योंकि इस से तुम्हारी (इङ्गलैण्ड) शुहरत कम होना तो दूर किनार उस से संसार के प्रकाश में एक संख्या की वृद्धि और हो जायगी। महोत्सव का देवता आज हमें पुकार रहा है। क्या पुजारी को यह अधिकार हो सकता है कि वह हमें भीतर जाने से रोक सके?—वह पुजारी जो धनी यजमान को देखकर फूल जाता है, जो धुप्पल ख़बर पाकर केनाडा और आस्ट्रेलिया का स्वागत करने के लिए स्टेशन तक दौड़ा जाता है। यह व्यवहारिक भेद-भाव अब आगे नहीं चल सकता। इस लिए कि, उत्सव का देवता सब कुछ देख रहा है। यदि अन्तर्यामी अन्दर से लज्जा के स्वरूप में नहीं निकलता तो वह बाहर से क्रोध-रूप में अवश्य दिखाई देगा।

किन्तु हमारी आशाएँ अंग्रेजों के साथ भी हैं और अपने साथ भी। मुझे बंगाल के आदमियों पर बड़ा भरोसा है। मुझे विश्वास है कि हमारे सदैव माँगी हुई नक़ाब से काम लेने पर

राजी न होंगे। हम उन अंग्रेज महात्माओं को जानते हैं जो अपने देशवासियों द्वारा अपमानित होकर भी अंग्रेजी इतिहास-वृक्ष का अमृत फल भारतवासियों तक पहुंचाने के लिए उत्सुक हैं। हमें उन भारतीयों—सच्चे भारतवासियों-की भी जरूरत है जो विदेशियों की घुड़की या त्योरी तथा निज देशवासियों की फबतियों का मुकाबला कर सकें और जो निष्फलता के गढ़ों में गिर कर भी मनुष्यत्व प्रकाशित करने के लिए व्यग्र रहें। भारत के जागृत तथा जरा-विहीन भगवान् आज हमारी आत्मा का आह्वान कर रहे हैं—उस आत्मा का जो अपरिमेय, अपराजित है, अमृत लोक में जिसका अनन्त अधिकार है, तथा वह आत्मा, जो अन्ध-प्रथा तथा प्रभुत्व के अपमान से, मिट्टी में मिली हुई है। आघात पर आघात, वेदना पर वेदना देकर वह पुकार रहे हैं, 'आत्मानम्-विद्धि'—अपने को जानो।

ओ अकाल जरा जर्ज्जरित, आत्म-अविश्वासी भीरु, असत्यभाराक्रान्त मूढ़-आज क्षुद्र ईर्षा तथा द्वेष को ले कर आपस में छोटी मोटी बातों को ले कर लड़ने झगड़ने का समय नहीं। अब तुच्छ आशा तथा मामूली पदों पर कंगालों की की तरह टूट पड़ने का समय गया। आज उस मिथ्या अहंकार में डूबने का दिन नहीं रहा जो केवल हमारे घर के कोनों में लालित-पालित हो सकता है, किन्तु संसार के सामने सिर नहीं उठा सकता। दूसरों पर इलजाम लगा कर सुघड़ भलाई धारण करना नामर्दों का काम है। हमारे अनेक युगों के संचित पापों के भार ने हमारे मनुष्यत्व को कुचल दिया—हमारे अन्तःकरण को स्तब्ध कर दिया। अब समय आ गया है कि हम उनका बोझ उतार कर फेंक दें। आगे बढ़ने की

प्रबलतम बाधाएं हमारे पीछे हैं। हमारा भूतकाल सम्मोहन बाण से हमारे भविष्य पर आक्रमण कर रहा है, उस की गर्द ने नवयुग के प्रभात सूर्य को मलिन कर दिया और नवयुवकता की सकर्मण्यता को धुंधला कर दिया। आज ममताहीन बल द्वारा हमें अपनी पिछली बाधाओं से मुक्ति-लाभ करना होगा, तभी आगे बढ़ने वाले महत् मनुष्यत्व के साथ मिल कर हम अपने को लज्जा से बचा सकेंगे। वह मनुष्यत्व मृत्युञ्जयी है, चिरजागरूक है, चिरस्वच्छागरत है। वह विश्वकर्म्मा का दाहिना हाथ है, वह ज्ञान ज्योतिपूर्ण सत्य के पथ का यात्री है, युग युग के नव नव तोरण द्वारा और जिस की जयध्वनि उच्छ्वासित होकर देश देशान्तर में प्रतिध्वनि हो रही है।

वर्षाऋतु की जलधारा के समान बाहरी दुख हम पर बरसते रहे हैं, इन दुखों के भोगने से हम में जो तामसिक गन्दगी पैदा होगई है, आज उसको धोने की आवश्यकता है, उसके प्रायश्चित्त करने की जरूरत है। उसका प्रायश्चित्त कहां है ? उसका प्रायश्चित्त अपने ही में है, दुख सहने की शक्ति में है। यह दुख ही पवित्र होमाग्नि है, इसी आग में तुम्हारे पाप भस्म होंगे, मूढ़ता भाफ बन कर उड़ जायगी और जड़ता राख होकर मिट्टी में मिल जायगी। प्रभु-तुम दुर्बल आत्माओं के प्रभु नहीं हो। हम में जो सबल आत्मा है, अमर है, जिनमें प्रभुत्व, ऐश्वर्य है, तुम उन्हीं के प्रभु हो तुम उन्हीं को अपने राज-सिंहासन की दाहिनी ओर बिठाओ। हमारी दुर्बल आत्माओं को लज्जित होने दो, गुलाम को तिरस्कृत होने दो और मूढ़ों को लाञ्छित होकर हम से के लिए अलग हो जाने दो।

देवी जोन

अर्थात्

स्वतंत्रता की मूर्ति।

देवी जोन

अर्थात्

स्वतन्त्रता की मूर्ति ।

[श्रीयुत् नगेन्द्रकुमार गुह राय द्वारा लिखित प्रसिद्ध बंगला पुस्तक 'फ़रासीसी वीराङ्गना' का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादिका,

श्रीमती बाला जी ।

प्रकाशक,

शिवनारायण मिश्र,

'प्रताप' कार्यालय—कानपुर ।

द्वितीय संस्करण ।] १९७५ [मूल्य छः आने ।

देवी जोन।

प्रथम संस्करण—अक्टूबर १९१७ मूल्य ॥)

द्वितीय संस्करण—जून १९१८ मूल्य ।=)

[देवी जोन की अन्तिम उक्ति]

भगवन् ! कर के शिरोधार्य्य संकेत तुम्हारा,
मैंने अत्याचार, क्रूरता को ललकारा।
अब पार्थिव तन यदपि अग्नि में फुंक जावेगा,
पर आत्मा का काम न इस से रुक जावेगा॥

पराधीनता, दासता का मुँह दिखलाना नहीं।
मेरे दुखिया देश को भूल कहीं जाना नहीं॥

विषय-सूची।

उपक्रमणिका।

वह अत्यन्त भयानक समय था जब कि काल-चक्र ने देवी जोन को फ्रांस की रक्षा के लिए आगे बढ़ने को निमन्त्रित किया था। फ्रांस की शस्य-श्यामला भूमि विदेशीय विजेताओं के पैरों तले रौंदी जा रही थी। स्वाधीनता का सूर्य्य फ्रांस से विदा मांगता हुआ क्षितिज की ओर धँसा जा रहा था, और उसके साथ नीचे धँसे जा रहे थे फ्रांस के उन पुत्रों के हृदय जो विदेशियों की सत्ता के प्राबल्य के सामने अपना और अपनों का नामो-निशां बिलकुल मिटता हुआ स्पष्टतया देख रहे थे। फ्रांस ऐसा देश नहीं था जिसने शताब्दियों पहिले से स्वतन्त्रता को नमस्कार कर लिया हो। उसकी भूमि नहीं जानती थी कि विदेशियों के अंकुश और विजेताओं के अत्याचार क्या होते हैं? फ्रांसीसी माता ने स्वप्न में भी ख़याल न किया था कि उसी की कोख का जाया हुआ पुत्र इंग्लैंड का विजेता बन कर उसके ऊपर गर्व और दर्प एवं लोभ और मत्सरता की दृष्टि फेंकना उचित समझेगा, और वैसा ही करना अपनी सन्तति को सिखा जायगा। परन्तु, जो नहीं सोचा गया था, वही हुआ। फ्रांस का ज़मींदार इंगलैंड का राजा बन बैठने पर 'ज़मींदार' बना रहना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझने लगा। फ्रांस के राजा के सामने रैयत की हैसियत से घुटने टेकना उसके लिए कठिन और हेय हो गया। धीरे धीरे 'जिसकी लाठी उसकी भैंस

के अनुसार, राजभक्ति और राज्यनिष्ठा के उन सारे सिद्धान्तों को तिलांजलि देते हुए, जो समय के साथ रुप बदलना और करवटें लेना खूब जानते हैं इंगलैंड के राजा, जो फ्रांस के ज़मींदार थे, फ्रांस के राज सिंहासन के दावेदार बन गये। पुरानी दुनियां की बातों में कोई निरालापन न था। आज न्याय और प्रजा-सत्ता के इस युग में आघात प्रतिघात के रहस्यों को न जानने वाले कानों को उस समय की बातें कौतूहलजनक जान पड़ेंगी, परन्तु चलती-फिरती आँखें भी उन्हें देख कर आश्चर्य से चमत्कृत होती हैं, इसमें बहुत सन्देह है। इंगलैंड के राजा का बलपूर्वक फ्रांस का राजा बन बैठने के लिए हाथ पैर मारना कोई विचित्र बात न थी। इंगलैंड की उस समय चढ़ती कला थी, और फ्रांस पर बुरे दिन मण्डला रहे थे। बहुत पँचातानी हुई। अपने घरों और चूल्हों की रक्षा के लिए फ्रांस के वीरों ने रण देवी को रक्तांजलि अर्पण करने में कोई कमी नहीं की, परन्तु समय के हेर-फेर ने या पाप-कार्यों के भार ने या संसारिक अन्वय द्वारा, यों कहिये, कि योग्य और युक्तिवान नेताओं और उचित और तात्कालिक साधनों की कमी और शिथिलता ने अन्त में फ्रांस की बात बिगाड़ दी, और 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की।' इतने पर भी हीनता को चैन न मिला, फ्रांस के दुर्भाग्य से और जीती जागती देशभक्ति के क्रम-दोष से इस कोढ़ में खाज उत्पन्न करने के लिए फ्रांस में विभीषणों की कमी न थी। और इस प्रकार, अन्त में सारे परिश्रमों से थकित और विगलित हो कर, फ्रांस की भूमि ने विदेशियों के सामने सिर झुका दिया। वे मस्तक नत हो गये जिनके हृदय झुके हुए न थे, वे हृदय पैरों तले पड़ गये जो रौंदे जाने पर कण कण तो हो गये परन्तु जिन्हों ने त्राण के लिए हाथ न पसारा। वि-

जेताओं का विजयशंख देश में गूँज उठा। विभीषणों के कण्ठ इस गूँज को प्रतिध्वनि के लिए खुल पड़े। फ्रांस का अधि-पति चार्ल्स देश के किसी तंग-तारीक कोने में सिर छिपाने के लिए, इधर उधर, भटकने लगा। उस समय फ्रांस की जो हालत थी, उसका अनुमान आप कदापि नहीं कर सकते। पराधीनता के बंधनों में शताब्दियों से जकड़ा हुआ व्यक्ति—स्वतन्त्रता और स्वाभाविक विकास और मानपूर्ण सत्ता से विहीन जन—उस पीड़ा, उस लज्जा, उस विपत्ति को क्या जाने जो उस देश या उस जाति पर छा रही है जो स्वाधी-नता की उपासक हो, जिसने स्वाधीनता का सुख भोगा हो, जिसने स्वाधीनता के लिए रक्त बहाया हो, परन्तु, ज़बर्दस्त विजेता के लोहहस्त द्वारा जिसके हृदय की सारी लालसाओं का गला घोंट दिया गया हो।

ऐसे ही समय पर जोन का क़दम आगे बढ़ा था। फ्रांस उस आघात से, चारों शाने चित्त पड़ा था जो विजेताओं ने विजय के जोश और रोष में उसके हृदय और शरीर पर लगाया था। फ्रांसीसियों के हृदय जल रहे थे परन्तु उनमें दम बाक़ी न था कि सिर उठाते। निराशा उनके चारों ओर भयंकर गति से नाच रही थी। फ्रांस के गाँव गाँव में त्रास समा गया था! निराश, डरे और दबके हुए हृदय देश भर में बिखरे हुए थर थर काँप रहे थे, और आर्तनाद का करुणाजनक स्वर आगामी पतन और नाश की सूचना बन बन कर, सिमट कर, खड़ी होने वाली कार्य्य-शक्ति की रही सही सत्ता का भी विनाश कर रही थी! ऐसे अवसर पर एक अबला का पददलितों के उद्धार के लिए आगे बढ़ना निस्संदेह समय की सजीव रसिकता का एक अत्यन्त ज्वलन्त उदाहरण है! जोन के सच्ची होने में किसी को

संदेह नहीं था। उसकी देशभक्ति तपा हुआ खरा सोना थी। परन्तु दीन हीन फ्रांस उस समय भी देशभक्ति के भावों से शून्य नहीं हो गया होगा। क्या उस समय उस भूमि में ऐसे हृदय न थे जो अपनी सच्ची जननी की रक्षा के लिए अपनी जान हथेली पर लिये फिरते? जरूर रहे होंगे। जोन अत्यन्त धार्मिक थी। ईश्वर पर उसका अटल विश्वास था। हम विश्वास नहीं कर सकते कि, यदि देश-रक्षा के लिए ईश्वर का अटल विश्वास एक आवश्यक गुण है या था तो वह उस समय फ्रांस देश से बिल्कुल उड़ गया होगा! धार्मिक आत्मायें एक नहीं, अनेकों रहीं होंगी। जो जो गुण जोन में थे वे औरों में भी अवश्य रहे होंगे। परन्तु जो बात औरों में नहीं थी और जो बड़ी ही विशिष्ट मात्रा में जोन में मौजूद थी वह था उसका इस बात पर अटल विश्वास कि मैं ही विदेशियों के पंजे से स्वदेश को मुक्त करूंगी, और मेरे द्वारा फ्रांस एक बार फिर स्वाधीन होगा। यह विश्वास था जिसने जोन रूपी साधारण कमज़ोर और साधन-हीन बाला से इस अत्यन्त भयंकर और निराशापूर्ण अवसर पर वह काम करा लिया जिसकी विरुदावलि कवियों ने गाई और कवि आगे भी गावेंगे, जिसकी महत्ता देशभक्तों ने स्वीकार की और वे आगे भी स्वीकार करेंगे और, जिसकी उच्चता, शुद्धता और पवित्रता का लोहा अन्त में उन लोगों ने भी माना जो उसके शत्रु थे और आज जो उसके शत्रुओं के वंशज हैं! जोन का विश्वास उन सभी को, जो निराशा के दलदल में फँसे हुए हैं, एक ज़बर्दस्त संदेश भेजता है। वे उसे ग्रहण करें या न करें, यह उनकी इच्छा! संसार का कोई काम अटल विश्वास के बिना नहीं हो सकता! सिद्धान्तों की कतर-ब्योंत और उलट-पलट आप को शारीरिक यश और सुख का भागी बना सकता

हैं, परन्तु उस लक्ष्य पर दृष्टि रखते हुए, यदि आप अपनी गति स्थिर नहीं रख सकते—आप अटल विश्वास को, अपने हृदय में दृढ़ता के साथ धारण नहीं कर सकते—तो दुर्भाग्य है आप के कार्य्य का, क्योंकि वह पूर्ण आहुति तक कदापि नहीं पहुँचेगा। समय की टेढ़ी चालों और विपत्ति की कुटिल टेवों से घबड़ाये हुए पथिक! कठिनाइयां वह समझदार जन्तु नहीं हैं जो तुम्हारी बन्दर-भभकी से भाग जाँय या तुम्हारा पीछा छोड़ दें। तुम उनसे निस्तार तभी पा सकते हो जब तुम इतना बल प्रकट करो कि तुम उनके सींग पकड़ कर उन्हें दूसरे मार्ग पर लगा दो। और, यह काम किसी शून्य हृदय से नहीं हो सकता! इसके लिए हृदय में अपने भावी विकास और सफलता और अपने मार्ग की शुद्धता और अनिन्द्यता पर पूर्ण—अटल—उसी प्रकार अटल विश्वास होना चाहिए, जैसा जोन को अपने काम और अपने देश के भविष्य के विषय में था!

सन्देहयुक्त हृदय जोन के मुक़दमे की ओर उंगली उठावेंगे। जोन ने कहा था—मुझे अपने देश के उद्धार के लिए ईश्वर से आज्ञा मिली। कहा जाता है, उसने देव-दूतों के दर्शन किये थे और उन्हीं के द्वारा उसे देश के शत्रुओं के मार भगाने का आदेश मिला था। जब किसी विभीषण के कारण जोन अपने शत्रुओं के हाथ पड़ गई और जब अनेक क़ैद-यन्त्रणाओं के सहने के पश्चात् उसका मुक़दमा—न्याय का मखौल हम उसे ठीक ठीक कह सकते हैं—हुआ था तब उस बेचारी को केवल इसी बात पर बहुत तंग किया गया था। इसी पर वह झूठी, जादूगरिनी, अधार्म्मिक इत्यादि सिद्ध की गई थी और अन्त में उसके अन्यायी और पक्षपाती न्यायकर्ताओं ने इसी दोष पर उसे जिन्दा जला दिया था। अधिक साहस-

पूर्ण और मनुष्योचित रीति यह होती कि उस पर यह दोष—यद्यपि स्वदेश-रक्षा के लिए लड़ना संसार के किसी भी न्याय-विधान से अपराध नहीं माना जा सकता—लगाया जाता कि उसने अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाये और जन-संहार किया। परन्तु धर्म के ठेकेदार और उसके सिद्धान्तों के लाल-बुझक्कड़ों ने धर्म्म की दुहाई दे दे कर घोर अधर्म्म करना ही उचित समझा! निःसन्देह जोन ईश्वर-सन्देश के विषय में कोई सफाई न दे सकी। हमें इस बात पर फतवा देने की आवश्यकता नहीं कि उसे वहां इस बात की सफाई देनी चाहिए थी या नहीं। हम किसी प्रकार से भी यह नहीं कह सकते कि उसे अपने विश्वासानुसार देवादेश मिला ही न था, या उसे देव-दूत दिखाई ही न पड़े थे। बुद्धि की कसौटी पर रख कर हम इतना ही कह सकते है कि, जोन की बुद्धि इतनी प्रबल न थी जितनी उसकी भावुकता! परन्तु, भावुकता ही वह शक्ति है जिसका संसार पर प्रभुत्व है, और जो, हर्बर्ट स्पेन्सर ऐसे शुष्क दार्शनिक के मत से भी, सदा मनुष्यों पर अपना सत्ता रखेगी। फिर, क्या जोन की गति में कहीं भी और कभी दो-रंगी चाल छिपी हुई थी? क्या उसने उस देश के लिए—जिसके उद्धार का उसे 'सन्देश' मिला था—कुछ उठा रक्खा था? क्या उसने रत्ती भर भी स्वार्थ को अपने पास फटकने दिया था? क्या उसने कभी विभीषणों और शत्रुओं के प्रलोभनों को एक क्षण के लिए भी लालच भरी दृष्टि से देखा था? क्या परीक्षा के समय वह अपने स्थान से रत्ती भर हिल गई थी? इन और ऐसे प्रश्नों का उत्तर हमें केवल एक ही मिलता है, और वह इतना स्पष्ट है कि उससे

"... करने वाले, हिचकिचाहट में पड़े रहने वाले मनुष्य के

हृदय को बल मिलना चाहिए और बलवान हृदयों को शुभ और शुद्ध सदेश!

कहा जाता है, आज संसार में स्वाधीनता और प्रजा-सत्ता के युग की दुंदुभि बज रही है। कहा जाता है, कोने कोने में इस युग की विजय-ध्वनि व्याप रही है! शुभ सम्वाद है! हम नम्रता के साथ इस युग का स्वागत करते हैं। उस की पौ जब हमारे आंगन में फटेगी तब हमारे हृदय तक उसके सन्मान के लिए उठ कर खड़े होंगे। उस जीवन-प्रभा का यहां अभी प्रसार नहीं है, परन्तु उसके प्राण-विमोहन मन्त्र के महात्म्य को हम सुन रहे हैं। हमारे शरीर यहा है, परन्तु हमारी आँखें और हमारे कान वहां हैं जहां प्रभु युग अपनी पूरी कलाओं में अपनी लीला दिखा रहे हैं! यह मोहन-भाव इन आगामी पन्नों में भी हमें एक मोहिनी मूर्ति के दर्शन कराता है। जोन की पवित्र मूर्ति, स्वाधीनता और प्रजा-सत्ता की जाज्वल्यमयी अवतरिणिका नहीं तो और क्या है? देवी जोन स्वाधीनता की अधिष्ठात्री थी, क्योंकि वह फ्रांस को अपनी शक्ति से विहीन नहीं देख सकती थी। देवी जोन प्रजा-सत्ता की साक्षात मूर्ति थी क्योंकि विदेशियों से पददलित प्रजाजनों का आर्त-क्रन्दन उसे स्थिर न रख सका और उसने अपनी सत्ता की स्थापना के लिए अपना चरण आगे बढ़ा दिया। देवी जोन स्वाधीनता और प्रजा-सत्ता की मिश्रित और उच्च और उदार स्फूर्त्ति थी क्योंकि उसके लक्ष्य में देश के उद्धार के सिवा पराई श्री के हस्तगत करने या हिंसा के वश विदेशियों के सताने का भाव तनिक भी नहीं था! १५वीं शताब्दी की जोन का ध्येय इतना शुद्ध और उच्च था कि २० वीं शताब्दी के सभ्य देश उसके चरणों में बैठ कर अपने मुंह से

दिन रात निरन्तर निकलते रहने वाले स्वाधीनता और जन-सत्ता के भावों की कुछ विशेष शिक्षा ले सकते हैं।

परन्तु, हम भारतीयों की दृष्टि में महत्ता की यह महा मूर्ति इस से भी अधिक भव्य और भावुकतापूर्ण वेश में उपस्थित होती है। हम उस में वह बात देखते हैं जो संसार ने उस में नहीं देखी और जो संसार के श्री-विमुग्ध देश देख भी नहीं सकते। यह बाला जोन की सुकुमार मूर्ति नहीं है जो हमारे मन को आकर्षित करती है। वीर-पूजा अच्छी चीज है, परन्तु जोन हमारे लिए उस प्रकार की कोई देवी या देवता नहीं है जिस प्रकार की देवी या देवता उसके देश वाले उसे अन्त में समझने लगे। वीरता क़दर करने के योग्य गुण है परन्तु यह युद्ध-वेश भूषा से भूषित विदेशियों के विरुद्ध अपने देशवालों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करने वाली वीर-बाला जोन की मूर्ति नहीं है जो हमारे मन में समाई हुई है। धर्मनिष्ठा और विश्वास सद्जीवन की नींवें हैं, परन्तु यह पेड़ों के नीचे, एकान्त कोनों में दबकर, नक्षत्रों के धुन्धले प्रकाश में देवदूतों के दर्शन करने और ऊंचे उठे हुए नेत्रों के साथ, देश के उद्धार के निमित्त ईश-प्रार्थना करने वाली जोन नहीं है जो हमारे मन पर अधिकार किये हुए है। सताये जाने वाले लोग करुणापूर्ण हृदय के विचार और सम्बन्ध के पात्र हो सकते हैं, परन्तु अपने कृतघ्न राजा से उपेक्षित और शत्रुओं द्वारा सताई जाने वाली जोन हमारी दया और करुणा की भिक्षा नहीं माँगती। हम जोन के उस रूप पर मुग्ध हैं जिसकी कल्पना हमें जोन को 'माता' के नाम से सम्बोधन करने के लिए प्रेरित करती है। शारीरिक मातृत्व कोई बड़ी वस्तु नहीं है, और कौन कह सकता है कि सन्लग्नता और छीना-झपटी के इस युग में शारीरिक मातृत्व की धारणा करने

वाली अनेकानेक ललनायें अपने कृत्यों के विषय में अवहेलना और गुरुतर अपराध की अपराधिनी नहीं हैं। परन्तु जोन स्त्री जाति—'माता की जाति'—की सच्ची प्रतिनिधि थी। स्वाधीनता और जन-सत्ता के मधुर भावों की भौमिक सीमा ईर्षा और पाप की जननी है। परन्तु एक ऐसी सुमाता की भांति, जो दूसरे बच्चों की नज़र बचाकर अपने बच्चों को इस लिए मिठाई नहीं खिलाती कि उन में स्वार्थ पैदा हो जायगा, माता जोन ने स्वाधीनता और प्रजा के उद्धार के लिए काम करते हुए भी शत्रु सेना के सभी वन्दी सैनिकों पर—उन शत्रुओं पर जो पूरी निरंकुशता के साथ उसके देश पर चढ़ दौड़े थे—तनिक भी जोर जबर्दस्ती न करने दी। जोन की शीतल स्नेह-छाया में न केवल उन्हीं को आश्रय मिला जो उसके भाई-बन्धु थे, बल्कि उन्हें तक वहां शरण मिली जो उस के खून के प्यासे थे और जो उसके विरुद्ध तलवार उठा चुके थे। जोन के विजय की स्मृति से हृदय में आनन्द की तरंगें उतनी नहीं उठतीं जितनी कि उसके मुसीबत के दिनों की याद से। क्या गजब की दृढ़ता और धैर्य था! मानसिक और शारीरिक यन्त्रणाओं ने क्या बाक़ी उठा रक्खा? परन्तु, माता के विशाल हृदय में विषाग्नि न प्रज्वलित हुई। चुटकी बजाते उस छोटे से शरीर का अन्त कर दिया गया, परन्तु उस विशाल हृदय की छाप अन्यायियों के लाख मिटाये भी न मिटी। शहीद का खून रंग लाया। दबी हुई राष्ट्रध्वनि फ्रांस भर में गूंज उठी, और उस के मुक़ाबले में कृतघ्नता, अधर्म और अन्याय की एक न चली। फ्रांसीसी राष्ट्र ने एक स्वर से स्वाधीनता की इस देवी की जय बोली, उसकी समाधि पर श्रद्धा और आदर के पुष्प चढाये, और उसके जन्म-स्थान की मट्टी तक का आदर किया। आज भी उस का नाम फ्रांस के लिए जादू

है। आज उसकी गणना पूजनीय संतों की श्रेणी में है और उस की समाधि के पास से गुजरने वाले फ्रांसीसी उसके यश के गीत उत्साह के साथ गाते निकलते हैं। धन्य है यह वीर-पूजा! समय था कि हम में भी ऐसी ही मातायें थी। पद्मिनी और दुर्गावती,लक्ष्मी बाई और चांद बीबी सदृश वीर मातायें माता जोन की समकक्षा थी। जब वे थी तब भारत के गौरव के दिन थे। आज वे नहीं हैं, आज भारत के वे दिन भी नहीं। ईश्वर करे, भारत की उर्वरा भूमि फिर वे दिन देखे! वे दिन लद गये जब राष्ट्रों के भाग्य का निपटारा केवल रण-क्षेत्रों में हुआ करता था। विविध क्षेत्रों में राष्ट्रीय अस्तित्व के दांव लगे हुए हैं। अन्तिम विजय पाने के लिए सभी स्थलों और सभी विभागों में दृढ और वीर आत्माओं की संरक्षकता की आवश्यकता है। सन्तोष की बात है कि वीर पुरुषों की कमी मिटती जाती है। परन्तु जब तक वीर देवियां आगे नहीं बढ़ेंगी, वीर बालायें दृढता और धैर्य्य की साक्षात मूर्ति बन कर अपने विमल बल से काम करने वालों के मन को संस्कृत और उत्साहित न करेंगी, जब तक वीर मातायें देश के उमंगों से भरे बच्चों को प्रलोभनों से बचाने और उद्देश-सिद्धि के लिए पवित्रता और त्याग का सदेश देने का काम करने के लिए आगे न बढ़ेंगी, जब तक वीर भगिनी सत्साहस और सद्उद्देश से प्रेरित हो कर भ्राता को जीवन-संग्राम-क्षेत्र में जाने के लिए उत्साह प्रदान न करेंगी, जब तक वीर माता, उस वीर राजपूत माता की भांति जो अपने पुत्र को कमर में तलवार बांध कर उसे विजय आशीर्वाद देती हुई रण-क्षेत्र भेजती थी, पुत्र को वर्तमान कठिन मार्ग में पग रखने का आदेश न देगी, और, जब तक वीर पत्नी दृढ हृदय के साथ, उस वीर राजपूतनी की भांति

जिसकी रण में आते हुए अपने पति की अन्तिम भेंट इन शब्दों के साथ समाप्त होती थी कि 'विजय ले कर ढाल लिये हुए या फिर ढाल की पीठ पर लद कर ही आना' पति को सत्सग्राम में विजयी बनने के लिए उत्साहित न करेगी—तब तक वे कठिन समस्यायें जो आज हमारे सामने हैं, तनिक भी हल न होंगी और देश का कल्याण न होगा। और वह उसी समय होगा जब इस भूमि में जोन सदृश वीर माताओं और वीर देवियों का अवतरण हो, और जब इस देश के निवासी हम और आप, सभी, अपनी उन चलती फिरती धरोहरों को, जो हमें ललनाओं के रूप में मिली हुई हैं, केवल निर्बल और बेदम बच्चों की जनने की मशीन ही न समझ कर उनको अपने महान् उद्देश के समझने और उसके लिए किये जाने वाले त्याग को सराहने और उसके करने के योग्य बनावें। ईश्वर करे, वह दिन भारत में शीघ्र आवे।

'प्रताप' कार्य्यालय,
कानपुर।
जन्माष्टमी १९७४

गणेश शंकर विद्यार्थी।

देवी जोन

अर्थात्

स्वतंत्रता की मूर्ति

माँ की गोद में।

(१)

जन्म।

फ्रांस देश में 'लोरेन' नाम का एक प्रान्त है। उस में 'डुमरेमि' एक गांव है। यहीं, सन् १४१२ ईसवी में, एक किसान के घर 'जोन आफ आर्क' का जन्म हुआ। वह समय फ्रांस की पराधीनता का समय था। फ्रान्स के उत्तर-पश्चिम प्रदेश में, 'केले' से ले कर 'बोर्दो' तक तथा 'पेरिस' और 'रायन' नगर में अंग्रेज़ों की विजय-ध्वजा फहरा रही थी। पञ्चम हेनरी उस समय इंग्लैंड के राजसिंहासन पर आसीन था। उद्धत अंग्रेज़ सिपाही जहां तहां बड़ा उपद्रव करते थे। उनके अत्याचार से फ्रांसीसी प्रजा जर्जरित हो गई थी। नार

देवी जोन

अर्थात्

स्वतंत्रता की मूर्ति

माँ की गोद में।

(१)

जन्म।

फ्रांस देश में 'लोरैन' नाम का एक प्रान्त है। उस में डुमरिम एक गांव है। यहीं, सन् १४१२ ईसवी में, एक किसान के घर, 'जोन आफ आर्क' का जन्म हुआ। वह समय फ्रांस की पराधीनता का समय था। फ्रान्स के उत्तर-पश्चिम प्रदेश में, 'केले' से ले कर 'बोर्दो' तक तथा 'पेरिस' और 'रायन' नगर में अंग्रेज़ों की विजय-ध्वजा फहरा रही थी। पञ्चम हेनरी उस समय इङ्गलैंड के राजसिंहासन पर आसीन था। उद्धत अंग्रेज़ सिपाही जहां तहां बड़ा उपद्रव करते थे। उनके अन्याचार से फ्रांसीसी प्रजा जर्जरित हो गई थी। मार्

ज़ुल्म और ज़बर्दस्ती के, लोग घबरा कर हिंस्र जन्तुओं से पूर्ण पर्वतों और जङ्गलों में छिप रहे थे! गांव और घर के बजाय ऐसे भयानक स्थानों में रहना उन्हें अपनी रक्षा का एक मात्र उपाय देख पड़ता था। प्रजा बड़ी दुखी और व्याकुल थी। उसकी मृत्यु का पूर्व लक्षण सा दिखाई देने लगा था। ऐसे समय में इस वीर ललना ने जन्म लेकर अपने अगणित देश-बन्धुओं का पराधीनता की यंत्रणाओं से उद्धार कर दिया। १६ वर्ष की ही कुमारावस्था में जोन ने स्वाधीनता के पुनरुद्धार का बीड़ा उठाया। उस समय उसका देश दासत्व शृङ्खला से पूरी तरह जकड़ा हुआ था। उसने अपनी ग्राम-जननी के स्नेह-स्निग्ध हृदय से समर-क्षेत्र के लिए बिदा माँगी। और, रण-रञ्जित तथा गौरव हुंकार-पूर्ण समर-भूमि में आ धमकी! अपने दुखी देशवासियों की दरिद्रता देख कर उसका हृदय टूक टूक होता था। वह भगवत्-प्रेम और साथ ही साथ स्वदेश-प्रेम की ज्वलन्त मूर्ति थी। जिस जोन को सत्याभिमानी वर्त्तमान ईसाई जाति के पूर्वजों ने जीते जी चिता में जलाकर पशु-प्रकृति का परिचय दिया था उसी वीराङ्गना का अलौकिक चरित्र नाना प्रकार की शिक्षाओं से परिपूर्ण है। अस्तु, उस वीराङ्गना के कर्मपूत जीवन में जहाँ एक ओर भगवत्-प्रेम और स्वदेश-प्रेम का मधुर समावेश होने से अभावनीय और अपूर्व शक्ति की क्रीड़ा दिखाई पड़ती है, वहां दूसरी ओर मातृ-हृदय में पुरुषोचित दृढ़ता, संकल्प साधन में तत्परता, विपद् काल में धैर्य और सहनशीलता तथा सुख-दुःख, सम्पद्-विपत और हर्ष-विषाद में भगवान् पर अटल विश्वास भी दिखलाई देता है।

(२)

वंश--परिचय।

जोन के पिता का नाम था-'जेकोयेस आर्क'। वह एक सामान्य कृषक था। जोनकी माँ, 'इसाबेला', बड़ी ही धर्मपरायण और कर्तव्यनिष्ठ स्त्री थी। पुण्य-भूमि रोम का दर्शन करके उसने 'रोमी' उपाधि प्राप्त की थी। उस समय रोम ईसाइयों का प्रधान तीर्थ माना जाता था। वहां पर बहुत से धर्मवीरों की समाधियां थीं। इस लिए जो रोम हो आता था वह पुण्यात्मा कहला कर सम्मानित होता था और 'रोमी' नाम की धार्मिक उपाधि से भूषित किया जाता था। जोन के तीन भाई और एक बहिन थी। उनमें जोन सब से छोटी थी। जीन फिरेन्ज़ा, जीन गार्सन, जीन पेटिट, जीन केलविन आदि कई एक ईसाई-धर्मावलम्बी साधु उस समय फ्रांस देश में अत्यन्त विख्यात थे। जोन के धर्म-प्राण माता-पिता ने, इन साधु पुरुषों के पवित्र नामानुसार ही, कन्या का नाम 'जोन' रक्खा। जोन के ग्रामवासी उसे जेहानेट (Jehanette) और फ्रांस के जनसाधारण जिहान (Jehanne) के नाम से पुकारते थे। उसका एक और भी नाम था—'कुमारी ला पुसेल'। बहुत से लोग उसे 'जोन आफ आर्क' और 'जियान डीआर्क' भी कहते हैं।

बाल्य—काल।

जिस परिवार में जोन का जन्म हुआ, वह 'आर्क' नाम से परिचित था। इसी आर्क-परिवार में जोन अपने धर्म-प्राण और पुण्य-शील माता-पिता की गोद में लालित-पालित हुई। उस के माता पिता का

चरित्र गठन

जीवन बड़ा ही सरस और पवित्र था। ऐसे पुण्य संसर्ग में रह कर जोन ने शैशव अवस्था से ही भगवान् के चरणों में आत्म-समर्पण करना सीख लिया था। वह कभी अपने पिता के साथ खेत में जाती, कभी भोजन बनाने में माता की सहायता करती और कभी माँ के पास बैठ कर शिल्प-कार्य सीखती थी। माता के मुख से बाइबिल का धर्मोपदेश और प्राचीन वीर पुरुषों के आत्मोत्सर्ग की आश्चर्यजनक कहानियाँ सुन सुन कर उसके हृदय में स्वार्थत्याग का आदर्श बद्धमूल हो गया था। ज्यों ज्यों वह बड़ी होती गई, उसने देखा कि उद्धत-प्रकृति विदेशी सैनिकों के अमानुषिक अत्याचार से फ्रांस के समस्त नर-नारी पीड़ित होते जा रहे हैं तब उसके करुण हृदय में व्याकुलता का सञ्चार होने लगा।

सशस्त्र और उद्धत अंगरेज़ सिपाहियों के अत्याचार से डर कर जब पास के असहाय ग्रामवासी उसके घर में आश्रय पाने की प्रार्थना करते थे तब जोन उनको यत्नपूर्वक आश्रय देती और विपद् से उनकी रक्षा करती थी। एक समय उसकी वासभूमि, डुमरिम ग्राम, पर भी मदोन्मत्त उच्छृङ्खल सैनिकों ने आक्रमण किया। तब आत्म-रक्षा के लिए सबको जङ्गल में आश्रय लेना पड़ा था। जब सैनिक ग्राम से चले गये तब वे लोग लौट आये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि गाँव के धर्म-मन्दिर और अधिकांश घर जला दिये गये हैं और ग्राम नष्टप्राय तथा जनशून्य हो गया है। इस शोचनीय दृश्य को देख कर जोन के हृदय पर बड़ी कड़ी चोट लगी। जोन स्वभाव से ही दयावती और कोमल हृदया थी। पर-सेवा करना उसे अच्छा लगता

धर्मनिष्ठा और

पर-सेवा

था। जिस समय उसे मालूम होता कि कोई ग्रामवासी
बीमार है उसी समय वह उसके पास जाकर उसकी
सेवा-सुश्रूषा करती। भगवान् में उसकी अटल भक्ति और
स्वधर्म में प्रगाढ़ श्रद्धा थी। पाश्चात्य देशों में ऐसी श्रद्धा
साधारणतः बहुत कम देखने में आती है। वह ईश्वरोपासना
को अपना प्रधान कर्त्तव्य समझती थी। इसीसे वह धर्म-
मन्दिरों में उपासना तथा अन्यान्य धर्म--विषयक अनुष्ठानों
में साग्रह योग देती थी। उस समय ग्राम में कोई विद्यालय
नहीं था, इसी लिए वह विद्या-शिक्षा से वञ्चित रही। किन्तु
जिस भक्ति से ईश्वर प्राप्त होता है तथा मनुष्य सच्चरित्र
होकर आदर्श जीवन व्यतीत कर सकता है उस भक्ति-तत्व
को वह शैशव-काल में ही माता से प्राप्त कर चुकी थी।

वह एकान्त रहना पसन्द करती थी। घर के पास
हरे मैदान में बैठ कर खुले विशाल नीलाम्बर, दूर-स्थित
अभ्रभेदी पर्वतमाला तथा तरु-लता-परिशोभित निर्जन वन-
भूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य को देख कर वह बहुत ही
आनन्द अनुभव करती थी। पर उसके माता-पिता को
उसका यह निर्जन-वास अस्वाभाविक मालूम होता था।
इस अल्प-वयस में उसके इस एकान्त अनुराग और सांसा-
रिक विषयों से उदासीनता को देख कर वे उसका
तिरस्कार करते थे। वे इस बात की यथासाध्य चेष्टा
करते थे कि जोन विवाह कर के सांसारिक सुख की
अधिकारिणी हो सके। जोन के असामान्य रूप-लावण्य और
पवित्र चरित्र की विमल प्रभा और विनय स्वभाव ने ग्राम-
वासी युवकों के हृदय को स्वभावतः अपनी ओर आकर्षित

कर लिया। अनेक युवकों ने उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया, परन्तु उसने किसी की न मानी। पुण्यवती 'मेरी' (Virgin Mary) का सा आजीवन कौमार-व्रत पालन करने की इच्छा उसने प्रकट की। किन्तु इससे भी उसकी रक्षा न हुई। एक युवक ने उसको पाने की इच्छा से अन्ध होकर 'टौल' (Toul) के धर्म-विचारालय में उसके विरुद्ध अभियोग चलाया। उसने कहा कि जोन ने मेरे साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा की है, पर अब वह उसका पालन नहीं करती। इस अभियोग की ख़बर पाकर लोग अवाक् रह गये। उन्होंने कहा—जोन तो बड़ी मृदुल-प्रकृति, शान्ति-प्रिया और सुशीला है। वह इसका प्रतिवाद किसी प्रकार न कर सकेगी। लाचार होकर अब उसे गृहस्थ-धर्म अपनाना ही पड़ेगा। उसे अपनी उदासीनता भी छोड़ देनी पड़ेगी और आप ही संसार में उसकी आसक्ति हो जायगी। परन्तु उनका यह ख़याल ग़लत निकला। जोन ने विचारालय में उपस्थित होकर दृढ़ता-पूर्वक विचारक से कहा—"मेरे विरुद्ध जो अभियोग चलाया गया है वह बिलकुल मिथ्या और बनावटी है। मैंने कभी किसी के साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा नहीं की।" विचारक को उसकी इस सरल उक्ति पर विश्वास हो गया। उसने अभियोग उठा दिया। अब क्या था, जोन का जीवन-स्रोत एकदम बदल गया। उसका सङ्कल्प दृढ़तर हो गया। पतित स्वदेशवासियों के उद्धार की इच्छा को अब वह किसी तरह भी न दबा सकी। किन्तु, मनुष्य जब किसी महान् उद्देश की सिद्धि के लिए कठोर साधना में तत्पर होता है तब उसके सामने बहुत से विघ्न आ जाते हैं। दुर्बल-चित्त व्यक्ति उन्हें देख डर जाता है। परन्तु जो संयमी, दृढ़चित्त और

ईश्वर-निष्ठ होते हैं वे सब प्रकार के विपद्-जाल को काट कर अपने लक्ष्य--पथ पर बढ़ते ही चले जाते हैं; और, मेघ-मुक्त सूर्य की तरह, द्विगुण प्रभा से मण्डित होकर जगत् को प्रकाशमय करते हैं ।

(३)

फ्रांस देश की तत्कालीन राजनैतिक अवस्था ।

सन् १४१५ ई० में इङ्गलैन्ड के राजा, पञ्चम हेनरी, ने 'एगिन कोर्ट' के युद्ध में फ़रासीसियों को परास्त किया । इस के दो साल बाद फिर फ्रांस पर आक्रमण करके उसने नार्मेंडी का विजय किया । उस समय फरासीसी राजाओं में घोर आत्मविद्रोह फैला हुआ था । इस आत्म-विद्रोह में 'बर्गन्डी' का सरदार 'जान' (John, Duke of Burgundy) एक पक्ष का नेता था । वह राजकुमार चार्ल्स डफिन् और अन्यान्य फरासीसी नेताओं के सामने मारा गया । इससे उसका पुत्र फिलिप बड़ा क्रुद्ध हुआ । उसने पितृ-हत्या का बदला लेने के लिए स्वदेश और स्वजाति के स्वार्थ पर पदा-घात करके अंगरेज़ों के साथ मित्रता करली । इसका फल यह हुआ कि इधर तो फरासीसियों की शक्ति घट गई और उधर अंगरेजों की शक्ति बढ़ गई ।

फ्रांस का राजा उस समय छठा चार्ल्स था । वह अंग-रेज़ों की इस वर्द्धित और मिलित शक्ति को दमन न कर सका । अन्त में, सन् १४२० ई० को, इंगलैण्डाधिपति पञ्चम हेनरी के साथ सन्धि--सूत्र में बँध गया । सन्धि के अनुसार फ़रासीसी राजा की कन्या, कैथरीन, के साथ इंगलैंड-नरेश का विवाह हो गया और फ्रांस-नरेश के न रहने पर वही फ्रांस का भावी

कर लिया। अनेक युवकों ने उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया, परन्तु उसने किसी की न मानी। पुण्यवती 'मेरी' (Virgin Mary) का सा आजीवन कौमार-व्रत पालन करने की इच्छा उसने प्रकट की। किन्तु इससे भी उसकी रक्षा न हुई। एक युवक ने उसको पाने की इच्छा से अन्ध होकर 'टौल' (Toul) के धर्म-विचारालय में उसके विरुद्ध अभियोग चलाया। उसने कहा कि जोन ने मेरे साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा की है, पर अब वह उसका पालन नहीं करती। इस अभियोग की ख़बर पाकर लोग अवाक् रह गये। उन्होंने कहा—जोन तो बड़ी मृदुल-प्रकृति, शान्ति-प्रिया और सुशीला है। वह इसका प्रतिवाद किसी प्रकार न कर सकेगी। लाचार होकर अब उसे गृहस्थ-धर्म अपनाना ही पड़ेगा। उसे अपनी उदासीनता भी छोड़ देनी पड़ेगी और आप ही संसार में उसकी आसक्ति हो जायगी। परन्तु उनका यह ख़याल ग़लत निकला। जोन ने विचारालय में उपस्थित होकर दृढ़ता-पूर्वक विचारक से कहा—"मेरे विरुद्ध जो अभियोग चलाया गया है वह बिलकुल मिथ्या और बनावटी है। मैंने कभी किसी के साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा नहीं की।" विचारक को उसकी इस सरल उक्ति पर विश्वास हो गया। उसने अभियोग उठा दिया। अब क्या था, जोन का जीवन-स्रोत एकदम बदल गया। उसका सङ्कल्प दृढ़तर हो गया। पतित स्वदेशवासियों के उद्धार की इच्छा को अब वह किसी तरह भी न दबा सकी। किन्तु, मनुष्य जब किसी महान् उद्देश की सिद्धि के लिए कठोर साधना में तत्पर होता है तब उसके सामने बहुत से विघ्न आ जाते हैं। दुर्बल-चित्त व्यक्ति उन्हें [illegible]र डर जाता है। परन्तु जो संयमी, दृढ़चित्त और

ईश्वर-निष्ठ होते हैं वे सब प्रकार के विपद्-जाल को काट कर अपने लक्ष्य-पथ पर बढ़ते ही चले जाते हैं, और, मेघ-मुक्त सूर्य की तरह, द्विगुण प्रभा से मण्डित होकर जगत् को प्रकाशमय करते हैं ।

(३)

फ्रांस देश की तत्कालीन राजनैतिक अवस्था ।

सन् १४१५ ई० में इङ्गलैन्ड के राजा, पञ्चम हेनरी, ने 'एगिन कोर्ट' के युद्ध में फ़रासीसियों को परास्त किया । इस के दो साल बाद फिर फ्रांस पर आक्रमण करके उसने 'नार्मंडी' का विजय किया । उस समय फरासीसी राजाओं में घोर आत्मविद्रोह फैला हुआ था । इस आत्म-विद्रोह में 'बर्गन्डी का सरदार 'जान' (John, Duke of Burgundy) एक पक्ष का नेता था । वह राजकुमार चार्ल्स डफिन् और अन्यान्य फरासीसी नेताओं के सामने मारा गया । इससे इसका पुत्र फिलिप बड़ा क्रुद्ध हुआ । उसने पितृ-हत्या का बदला लेने के लिए स्वदेश और स्वजाति के स्वार्थ पर पदाघात करके अंगरेज़ों के साथ मित्रता करली । इसका फल यह हुआ कि इधर तो फ़रासीसियों की शक्ति घट गई और उधर अंगरेजों की शक्ति बढ़ गई ।

फ्रांस का राजा उस समय छठा चार्ल्स था । वह अंगरेजों की इस वर्द्धित और मिलित शक्ति को दमन न कर सका । अन्त में, सन् १४२० ई० को, इंगलैण्डाधिपति पञ्चम हेनरी के साथ सन्धि-सूत्र में बंध गया । सन्धि के अनुसार फ़रासीसी राजा की कन्या, केथरीन, के साथ इंगलैंड-नरेश का विवाह हो गया और फ्रांस-नरेश के न रहने पर वही फ्रांस का भावी

उत्तराधिकारी बनाया गया। इससे उत्तर-फ्रांस के अधिकांश प्रदेश इंगलैंडाधिपति के अधिकार में आगये। किन्तु, राजकुमार डफिन ने, दक्षिण--फ्रांस में, अंगरेज़ों के विरुद्ध सिर उठाया और पितृ--सिंहासन का दावागीर हुआ। तब डफिन को दमन करने के लिए इंग्लैंड--नरेश ने फरासीसियों के विरुद्ध फिर युद्ध-यात्रा की। किन्तु इसी समय सन् १४२२ ई० में, पतीस वर्ष की उम्र में, उसकी मृत्यु होगई। फ़रासीसी राजा चार्ल्स भी दामाद की मृत्यु के दो ही महीने पीछे मर गया। इसके बाद इंग्लैंडाधिपति का शिशु-पुत्र हेनरी (छठा हेनरी) इंग्लैंड और फ्रांस के सिंहासन पर अधिष्ठित हुआ।

छठे हेनरी का सिंहासन-मारोहण

इस शिशु--पुत्र का चाचा, बेडफ़ोर्ड का सरदार (Duke of Bedford) उसका अभिभाविक हो कर राज्य का शासन करने लगा। डफिन बड़ा दुर्बल चित्त था। वह दक्ष और चतुर शासनकर्ता बेडफ़ोर्ड की शक्ति खर्व न कर सका। इधर फ़रासीसियों ने भी सच्चे हृदय से उसका पक्ष समर्थन न किया। क्योंकि उसकी माँ इसायेला (Isabella) के चरित्र पर जनता को सन्देह हो गया था। सब की यह धारणा थी कि डफिन चार्ल्स का पुत्र नहीं है। इसी प्रकार और भी नाना कारणों से राज्य की अवस्था अतिशय शोचनीय हो गई। भूस्वामियों में आत्म-विद्रोह फैल गया। उद्धत सैनिक-गण एक के बाद दूसरे गाँव में लूट-पाट और मार-कूट करने लगे। इसका फल यह हुआ कि अधिकांश प्रदेशों ने अंग्रेज़ों दासत्व स्वीकार कर लिया। फ्रांस की इस तत्कालीन का वर्णन करते हुए प्रसिद्ध फ़रासीसी इतिहास-

फ्रांस राज्य की शोचनीय अवस्था

लेखक लामर्टाइन (Lamartine) ने एक स्थल पर कहा है कि " Thus the King seeking in vain his subjects amongst his people; the people vainly seeking their king in the monarchy; the Frenchman fruitlessly looking for his country in France; such was the state of the Nation " अर्थात्—राजा ने देखा कि जनसाधारण में अपनी प्रजा कहने के लिए कोई नहीं, जनता ने देखा कि स्वेच्छाचार शासन के बाहुल्य से राजा कहने के लिए कोई नहीं और फ्रांस-वासियों ने देखा कि फ्रांस में अपना स्वदेश कहने के लिए कुछ भी नहीं—ऐसी दुर्दशा देश की उस समय थी।

(४)

देववाणी और स्वर्गीय दूत का साक्षात्।

स्वदेश की ऐसी घृणित बन्धन-दशा और दैन्य-पीड़ित तथा पतित स्वदेशवासियों की यन्त्रणा जोन के लिए असह्य हो उठी। जन्मभूमि का यह हीन चित्र उसके हृदय में प्रतिफलित होने लगा। किस प्रकार स्वदेश का दासत्व दूर हो सकता है और किस उपाय से विदेशियों के अत्याचार से स्वदेशवासी छुटकारा पा सकते हैं, यही बात वह दिन रात सोचने लगी। वह निर्जन वन में बैठ कर भगवान् से व्याकुल हृदय होकर करुण प्रार्थना करती थी और मन ही मन चिन्ता करती थी—' क्या भगवान् इस पतित देश का उद्धार नहीं करेंगे ? क्या वह निपीड़ित स्वदेशवासियों का दुःख दूर नहीं करेंगे ? क्या निरीह स्वदेशवासी सदा ही इस पूति-गन्धमय दासत्व-नरक में आकण्ठ निमज्जित रहेंगे ? क्या भगवान् इनके लिए मुक्तिदाता नहीं भेजेंगे ?"

एक दिन की बात है। ग्रीष्मकाल का समय था। सन्ध्या के समय धर्म-मन्दिर के आगे के मैदान में दिव्य आभामय एक आलोककिरण अकस्मात् उसकी दृष्टि में पडी और एक क्षण के बाद ही उस ओर से यह देववाणी सुनाई पड़ी—

स्वर्गीय दूत की आदेशवाणी

"जोन, तू पवित्र चरित्रा हो और भगवान् पर भरोसा कर।" यह सुन कर उसको बड़ा आश्चर्य मालूम हुआ। इसके बाद भी फिर एक बार उसको ऐसी ही देववाणी सुनाई पड़ी थी। उस समय वह चौदह या पन्द्रह साल की थी। इस घटना के बाद फिर दो स्वर्गीय दूत दिव्य वस्त्र-भूषणों से भूषित होकर उसको सशरीर दिखाई दिये। उन्होंने कहा—"जोन, डफिन की सहायता के लिए युद्ध में प्रवृत्त हो और पतित स्वदेश का उद्धार कर।" जोन विस्मय-पूर्वक उनकी ओर देख कर भय से कहने लगी—"मैं अबला हूं—किस प्रकार से युद्ध किया जाता है, यह मैं नहीं जानती।" दूत ने उत्तर दिया—"केथरिन् और मार्गरेट स्वयं तुझे सहायता देंगी।" जोन ने ये बातें बड़े ध्यान से सुनी। कहते हैं कि इसके बाद कई बार उसे स्वर्गीय दूत के दर्शन मिले थे। दूतों के अन्तर्धान होने पर वह अश्रुपूर्ण नेत्रों तथा आवेगपूरित कण्ठ से चिल्ला कर कह उठती थी—"मुझे भी अपने साथ ले चलो।

जोन ने जो देववाणी सुनी थी वह भगवद्वाणी थी, जिस स्वर्गीय दूत के दर्शन किये थे वह भगवद्दर्शन था। पश्चिमी जगत् में लोग इसे विश्वास योग्य नहीं मान सकते, किन्तु पूर्वी जगत में इस बात पर सहज ही विश्वास किया जा सकता है। मनुष्य के लिए भगवान् का दर्शन सम्भव है, यह बात जड़वादी पाश्चात्य सहज में विश्वास नहीं कर सकते,

भगवद्दर्शन सम्भव है किन्तु हमारे भारतवर्ष में एक साधारण व्यक्ति भी इसे अभ्रान्त सत्य जानता है कि व्याकुल-चित्त होकर भगवान् को पुकारने से उसका दर्शन अवश्य मिलता है। भोग-वासना त्याग करके एकाग्रचित्त से साधना करने से मनुष्य की अविद्या दूर होजाती है, उसका अन्तर्निहित ब्रह्म जग उठता है, वह अपनी आत्मा में ही भगवान् का दर्शन पाता है। बहुतों का विश्वास है कि जोन के स्वर्ग-दूत-दर्शन और देववाणी-श्रवण की बात निर्मूल तथा विकार-ग्रस्त मस्तिष्क की काल्पनिक कहानी मात्र है।

मन्त्र-दीक्षा।

(१)

साधन-पथ के विघ्न और उनका दूरीकरण।

जोन के स्वर्गीय दूत से साक्षात् करने की बात बहुत दिनों तक छिपी न रही। धीरे धीरे यह बात उसके माता-पिता के कानों तक पहुँची। सरल और श्रद्धालु माता के हृदय में यह बात सहज ही अङ्कित हो गई, किन्तु उसके पिता ने उस पर विश्वास न किया। वह अतिशय धर्मपरायण होने पर, और इस प्रकार की घटना की सम्भावना का क़ायल हो कर भी, कन्या की बात पर विश्वास न कर सका। उसने कन्या को तिरस्कार कर के कर्कश-स्वर से कहा-"यदि मैं कभी तेरे मुँह से युद्ध की बात सुनूंगा तो मुझे मार डालूंगा। पिता की इस प्रकार रूद्रमूर्त्ति देख और प्रतिकूल बात सुन कर जोन का कोमल हृदय चिन्तित हो गया। एक ओर पिता का कठोर आदेश और दूसरी ओर पराधीना स्वदेश-जननी का आकुल आह्वान—इस परस्पर-विरोधी भाव के अनवरत घात--प्रतिघात में उसका करुण हृदय व्यथित और क्षुब्ध होने लगा। उसने देखा कि जैसे पिता का आदेश पालन करना मेरा कर्त्तव्य है

पिता का प्रतिकूल मत और जोन का उपाय-निर्धारण

इसे ही लाखों स्वदेश-वासियों की दुर्दशा दूर करने के लिए आत्मोत्सर्ग करना भी मेरा कर्तव्य है। बल्कि यह पिछला कर्तव्य ही उसको गुरुतर बोध होने लगा। बहुत चिन्ता करने के बाद वह इस सिद्धान्त पर पहुंची कि पिता के आज्ञा-पालन की अपेक्षा देश-रक्षा की आवश्यकता और गुरुता अधिक है इस लिए उसने स्वदेश-जननी का आह्वान सुनना ही अच्छा समझा।

घर छोड़ना और चाचा के यहाँ शरण लेना।

किन्तु, पिता की आज्ञा की उपेक्षा करके प्रकट रूप से युद्ध में जाना उसके लिए असम्भव था। अतएव उसने कौशल से घर छोड़ने का सङ्कल्प किया। एन्ड्रू लैक्ज़र्ट (Audie Laxait) नामक उसका एक चाचा था। उसकी स्त्री बीमार हो गई थी। अतएव वह चाची की सेवा करने के लिए, पिता की आज्ञानुसार चाचा के घर गई। उसके चाचा का हृदय बड़ा ही उदार था। इसलिए जोन ने अपना महान् सङ्कल्प उससे कह सुनाया। उसने ऐसे सरलता के साथ अपने विचार प्रकट किये कि उसका चाचा सुनकर मुग्ध हो गया। जोन सी युवती को इस प्रकार विपद-पूर्ण पवित्र व्रत ग्रहण करते देख कर वह अतिशय प्रसन्न हुआ और यथासाध्य सहायता करना भी स्वीकार किया। इस प्रकार एक बहुदर्शी बुद्धिमान् और वृद्ध आत्मीय का आश्रय पाने से जोन की आशा और उत्साह सौगुने बढ गये। जोन ने अपने चाचा से अनुरोध किया कि आप वेकुलियर्स (Vaucouleus) के शासनकर्ता बौड्रीकोर्ट (Baudricourt) के पास जाइए और उसको यह शुभ सङ्कल्प जनाइए। किन्तु उस अनुरोध का फल जोन के लिए उलटा हुआ। उस घमण्डी हाकिम ने कृषक-बालिका

की इस पवित्र इच्छा को उन्मत्त का प्रलाप कह कर उपेक्षा की और 'लेकजर्ट' से कह दिया कि—'अपनी भतीजी को समझा बुझा कर उसके पिता के पास भेज दीजिए।" जोन का चाचा वेचारा भग्नमनोरथ होकर घर लौट आया और जोन से सब हाल कह सुनाया।

चाचा के मुँह से घमण्डी शासनकर्त्ता का प्रतिकूल मत सुन कर जोन कुछ चिन्तित अवश्य हुई, किन्तु मुहूर्त्त-मात्र के लिए भी वह निराश न हुई। उसने सङ्कल्प किया कि मैं स्वयं उसके पास जाकर अपनी इच्छा प्रकट करूंगी और उनका मत बदलने की कोशिश करूंगी। चाचा को साथ लेकर वह पैदल ही 'वेकुलियर्स' को रवाना हुई। रास्ते में कभी स्नेहमयी माँ का स्नेह सम्भाषण, कभी करुणामय पिता का निःस्वार्थ करुण व्यवहार, कभी भाई बहिनों का प्रीति-व्यवहार और कभी अपने ग्राम का शान्तिमय चित्र याद आ आ कर उसे आकुल करने लगा। किन्तु क्षण ही भर बाद वन्दनीय स्वदेश-जननी की अश्रुसिक्त, विषादमयी मुखच्छवि याद आने पर सब मोह नष्ट हो जाता और हृदय में अभिनव उत्साह का सञ्चार हो जाता था। जब वह नगर में पहुंच गई तब उसने एक जगह ठहर कर अपने चाचा के द्वारा शासनकर्त्ता के पास अपने आने का समाचार कहला भेजा। शासनकर्त्ता बालिका का इस प्रकार अध्यवसाय देख कर अतिशय विस्मित हुआ और उससे भेंट करने की इच्छा प्रकट की। जोन ने शासनकर्त्ता के सामने पहुंचते ही यथोचित शिष्टाचार-पूर्वक अभिवादन किया। उस निरक्षर कृषक-बालिका का विनय-नम्र शिष्टाचार और दिव्य सुन्दर शरीर

वेकुलियर्स की यात्रा

शासनकर्त्ता व साथ मालात [illegible] मीन

देख कर शासनकर्त्ता का भाव बदल गया। उसने जोन से पूछाः—

"तुम किस लिए मुझ से मिलना चाहती हो?"

"मैं भगवान् के नाम से राजा को यह सम्वाद देने आई हूं कि वे इस धर्म-युद्ध में पीछे न हटें।"
शासनकर्त्ता ने कहाः—

"राजा के कामों में मेरा कुछ भी अधिकार नहीं। वह मेरे मतामत पर निर्भर नहीं करता।"

"यह राज्य डफिन् के निज का नहीं है। भगवान् ही इसके अधिकारी हैं। किन्तु भगवान् की इच्छा है कि डफिन् राज्य-भार लेकर न्यायपूर्वक राज्य-शासन करे। शत्रु-पक्ष की ओर से बहुत से वाधा-विघ्न रहने पर भी उसे राजसिंहासन मिल जायगा। रीम्स् (Rheims) नगर में उसका राज्याभिषेक-उत्सव सम्पन्न करने के लिए ईश्वर ने मुझे आदेश दिया है।"

शासनकर्त्ता बालिका की इन तेजपूर्ण बातों को सुन कर आश्चर्यान्वित होगया। इस विषय को अति गुरुतर समझ कर उसने प्रधान धर्मयाजक से परामर्श किया। तत्पश्चात् धर्मयाजक को साथ लेकर वह जोन के पास गया। वहां पहुंच कर धर्मयाजक ने धर्मशास्त्र के अनुसार यथारीति उसकी परीक्षा ली। परीक्षा के बाद उसे विश्वास हो गया कि जोन अवश्य ही "ईश्वरानुगृहीता" है—अवश्य ही ईश्वर-प्रेरणा इसे हुई है। यह घटना शीघ्र ही सारे नगर में फैल गई और नगरवासी उसे देखने के लिए आने लगे।

शासनकर्त्ता ने जोन-सम्बन्धी सब बातें अपने अफ़सर ड्यूक आफ लोरैन (Duke of Lorraine) को लिख भेजी और जोन को भी उसके पास भेज दिया।

जोन जिस समय ड्यूक से मिलने गई उस समय ड्यूक बहुत बीमार था। वह जोन की बालिका-सुलभ सरलता और पुण्य-प्रदीप्त मुख को देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। जोन वास्तव में ईश्वरादेश से देशोद्धार में लगी है कि नहीं इसकी परीक्षा भी उसने ली। जोन से बात-चीत करते समय उसकी अलौकिक क्षमता को देख कर ड्यूक उस पर बहुत भक्ति करने लगा। जोन "ईश्वरानुगृहीता" है, इस बात पर उसको विश्वास हो गया। इसके बाद जोन ड्यूक से विदा हो कर फिर वेकुलियर्स नगर को लौट गई।

ड्यूक के साथ साक्षात

राजा डफ़िन ने भी यह सब हाल सुना। इधर जोन की बातों का समर्थन करके कई एक सम्भ्रान्त व्यक्ति तथा कुलीन प्रतिष्ठित महिलाओं ने भी राजा के पास एक आवेदन-पत्र भेजा। इससे राजा का ध्यान विशेष रूप से इस ओर आकर्षित हुआ। उस समय राज सभा का अधिवेशन चीनन् नगर में होता था। जोन राजा के साथ साक्षात करने के लिए वहां बुलाई गई।

ये सब बातें जब उसके आत्मीय जनों ने सुनीं तब वे 'वेकुलियर्स' में आकर उसे युद्ध में जाने से रोकने की कोशिश करने लगे। किन्तु जोन किसी प्रकार सङ्कल्प-च्युत न हुई। वह उनको नम्रता के साथ सान्त्वना देकर कहने लगीः—

कर्तव्य ज्ञान और आत्मीय स्वजनों के अनुरोध की [illegible]ना

"जन्म-भूमि की सेवा करना ही मेरा परम कर्तव्य है। उस महान कर्तव्य के सामने आप लोगों की स्नेह-ममता तुच्छ है। इसी लिए मैं कर्तव्य-भ्रष्ट नहीं हो सकती।" उसकी इस प्रकार की बातें सुन कर आत्मीय जन बड़े दुखी हुए। इसी प्रकार मातृ-भूमि की कल्याण-कामना के लिए आत्मीय जनों के हृदय में वज्राघात करके, उनके आजन्म-स्नेह ममता को तुच्छ जान कर और पार्थिव सुख को तिलाञ्जलि देकर जोन ने निर्भीक चित्त से मृत्यु को अपना क्रीड़ा-सहचर बना लिया।

सैनिक-जनोचित वेश-भूषा से सज्जित होकर और कमर में चमकती हुई तलवार लटका कर जोन घोड़े पर सवार हो 'चीनन्' नगर की ओर रवाना हुई। उसको 'चीनन्' तक पहुँचाने के लिए कई एक घुड़सवार उसके साथ गये। 'वकुलियर्स' से 'चीनन्' ४५० मील दूर है। सारा रास्ता बड़ा ही विपद्-पूर्ण है। वहाँ पहुंचने के लिए अंगरेज़ों के प्रदेश और दुर्गम पर्वतों को पार करना पड़ता था! जोन इन सब को पार करके कोई दो सप्ताह बाद 'चीनन्' में पहुंच गई।

वहाँ ठीक समय पर वह राज-दरबार में उपस्थित हुई। अतुल ऐश्वर्य-पूर्ण दरबार-गृह को देख कर वह स्तम्भित हो गई। उसकी परीक्षा करने के लिए राजा पहले से ही भेष बदल कर मन्त्रियों और अनुचरों के बीच में विराजमान थे। क्योंकि उन्हों ने सोचा था कि यदि जोन ने सचमुच भगवान्
चीनन् के राज का दर्शन किया है तो वह उनको अवश्य
दरबार में पहचान लेगी। राज-सभा में एकत्र विपुल ऐश्वर्य-शोभित राजपुरुषों में से जोन ने राजा को पहचान

लिया और राजा के सामने घुटने टेक कर अभिवादन किया और 'राजा' कह कर उसको सम्बोधन किया। छद्मवेशी राजा ने इसमें बाधा देकर कहा—"मैं तो राजा नहीं हूं।" जोन इससे विचलित न हो कर कहने लगी:—"महामहिमान्वित डफिन्! विश्व-सम्राट परमेश्वर की देववाणी आप को सुनाने आई हूं। परमात्मा का आदेश है कि आप निडर होकर, वीरों की तरह, रीम्स् (Rheims) नगर की ओर अग्रसर हों। वहां आप का राज्याभिषेक उत्सव सकुशल सम्पन्न होगा।"

जोन राजा को ज़रा भी पहचानती न थी। तिस पर भी इतने आदमियों में उसने मुझे किस प्रकार पहचान लिया—यह सोचकर राजा को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। इस घटना से जोन पर उनके हृदय में श्रद्धा और विश्वास का सञ्चार होने लगा। उन्हें निश्चय हो गया कि जोन अवश्य ही "दैवी-शक्ति-सम्पन्न" है। किन्तु राज्य के हितैषी, धार्मिक और शिक्षित पुरुषों का मतामत लिए बिना जोन को युद्ध में भेजने का साहस उन्हें न हुआ। इस लिए जोन को पोटियर्स (Poitiers) नगर में उन्होंने भेज दिया।

वहां महासभा (Parliament) का एक अधिवेशन हुआ। राज्य के बहुदर्शी, शास्त्रज्ञ, धर्मयाजक, विख्यात राजनीतिज्ञ, विश्वविद्यालयों के प्रतिभाशाली अध्यापक और अन्यान्य सम्भ्रान्त व्यक्ति सभा में उपस्थित हुए। जोन उस सभा में सम्मिलित मनीषियों के सामने गई। वे उससे नाना प्रकार के प्रश्न करने लगे। एक ने पूछा—"जोन तुमने कहा था कि परमेश्वर फ्रान्स को दासत्व से मुक्त करेंगे। यदि ऐसा ही है तो सेना की क्या आवश्यकता?

पोटियर्स की महासभा

बिना युद्ध किये ही देश का उद्धार हो सकता है।" इस प्रश्न से जोन तनिक भी विचलित न हुई। उसने तेजपूर्ण स्वर से उत्तर दियाः— 'मनुष्य कर्मकर्ता है और परमेश्वर फलदाता। हम लोग सशस्त्र सेना लेकर युद्ध करेंगे तो परमेश्वर हम लोगों को विजय-गौरव से गौरवान्वित करेंगे।" जोन की इस प्रकार युक्तिपूर्ण और ओजस्विनी वाणी सुनकर सब लोग बड़े प्रसन्न हुए। किन्तु सेगुइन (Seguin) नामक पोटियर्स-विश्वविद्यालय के एक अध्यापक को जोन के 'भगवद्दर्शन" की बात पर विश्वास न हुआ। उसने जोन से प्रश्न किया :—

"तुमने जो स्वर्गीय वाणी सुनी उसका स्वर किस प्रकार का था?" जोन इस प्रश्न को सुन कर कुछ विरक्त हुई। उसने तीव्र स्वर से उत्तर दिया —"वह स्वर आपके कण्ठ-स्वर से अधिक मधुर और सुन्दर था।" जोन से इस प्रकार उत्तर पाकर अध्यापक धैर्यहीन हो गया। उसने फिर कहाः— "यदि तुम सचमुच ही ईश्वर-प्रेरित हो तो कोई करामात दिखाओ तब जानें।" यह सुनकर जोन ने दृढ़तापूर्वक कहा :— "करामातें दिखाने के लिए मैं यहाँ नहीं आई हूं। सेना देकर मुझे अरलिन्स-नगर में भेज दीजिए। बस अरलिन्स का उद्धार ही मेरी 'ईश्वरीय-शक्ति' का प्रमाण होगा।"

इस प्रकार तर्क-वितर्क और आलोचना आदि के बाद सभ्यगण जोन के अनुकूल हुए। उसके लिए भगवान् का दर्शन असम्भव नहीं है यह बात उन लोगों ने मान ली और उसे

महासभा के सभ्यों का अनुकूल मत

युद्ध में भेजने को राज़ी हो गये। जोन के सम्बन्ध में राजा के पास ये तीन मन्तव्य उन्होंने लिख भेजे :—

(१) ईसाई धर्म में जोन की प्रगाढ़ श्रद्धा और अचल भक्ति दिखाई पड़ती है ।

(२) वह ईश्वर का आदेश पाकर देशोद्धार में लगी है, इसमें अविश्वास करने की कोई बात नहीं है। क्योंकि विधाता की कृपा से सभी कुछ सम्भव है।

(३) जन्मभूमि के उद्धार के लिए रमणी भी पुरुष-वेश में युद्ध करने की अधिकारिणी है।

(२)

राजाज्ञा और युद्ध--यात्रा।

पोटियर्स की पार्लामेंट का इस प्रकार अनुकूल मन्तव्य पाकर राजा अतिशय आनन्दित हुए। उन्होंने सारे राज्य में एक घोषणा-पत्र प्रचारित किया—"फ्रांस देश को विदेशियों की दासत्व-शृङ्खला से मुक्त करके राजा को फ्रांस के सिंहासन पर अधिष्ठित करने के लिए कुमारी 'जोन आफ आर्क' को ईश्वर का आदेश मिला है—यह बात वह स्वयं कहती है। राजा ने स्वयं इस कुमारी की परीक्षा ली है और उसके चरित्र के सम्बन्ध मे प्रकट और अप्रकट रुप से अनुसन्धान किया गया है। उससे ज्ञात हुआ कि वह पुनीत चरित्र, धर्मपरायण, ईश्वरनिष्ठ, सरल हृदय और सत्यवादिनी है। राज्य के प्रसिद्ध धर्मशास्त्रज्ञ, राजनीतिवित् और प्रतिभाशाली अध्यापकों ने मिल कर इस कुमारी की परीक्षा ली है और उसके सम्बन्ध में अनुकूल मत प्रकाश कर के उसको युद्ध में भेजना स्वीकार किया है। विशेषत. इस [कु]मारी के जन्म-वृत्तान्त और जीवन के कार्य्य-कलाप के

डफ़िन का घोषणापत्र

सम्बन्ध में नाना प्रकार की अलौकिक घटनाओं की बात सुनाई पड़ती है। इसीलिए राजा उसको युद्ध में भेजना चाहते हैं। राजा को विश्वास है कि उससे राज्य का अशेष कल्याण होगा।'

जनसाधारण इस घोषणापत्र को पढ़ कर अतिशय आनन्दित हुए।

कई एक उच्चपदस्थ समर-तत्ववेत्ता वीर पुरुष जोन को प्रतिदिन युद्ध-विद्या की शिक्षा देने लगे। थोड़े दिनों में ही असियुद्ध, भाला चलाना, व्यूह-रचना और समर-नीति सम्बन्धी सब विषयों मे जोन निपुण हो गई। तदनन्तर वह युद्ध में जाने के लिए प्रस्तुत हुई। उसने सारा शरीर सफेद वर्म्म-चर्म्म से ढक लिया। उसकी कमर में एक ओर पाँच 'क्रूस' चिह्नित शाणित कृपाण * और दूसरी ओर लोहे का सुतीक्ष्ण कुठार लटक रहा था। हाथ मे वह इष्ट देवता ईसामसीह का नामाङ्कित और श्वेत-पद्म-चिन्हित पताका लिए थी। इसी प्रकार विचित्र रण-रङ्ग-वेष से सज्जित हो तथा काले घोड़े पर सवार होकर बहुसंख्यक सेना के साथ वह ब्लोइस (Blois) नगर की ओर रवाना हुई। वहाँ हजारों नर-नारियों ने मिल कर उसका सादर स्वागत किया। भगवान् के चरणों के स्पर्श से पवित्र वीरा ङ्गना के शुभागमन से पराधीन प्रजा का निराश हृदय आशा के नवीन आलोक से उद्भासित हो उठा। पराजित और दुखी

[margin note: ...-वेश में युद्ध-...त्रा]

सेना-दल में नवजीवन का सञ्चार हो आया। सब कहीं आनन्द और उत्साह की तरङ्गें उठने लगीं।

जोन ने पहिले सैनिकों के चरित्र-संशोधन की ओर ध्यान दिया। उसकी आज्ञानुसार सेना में जुआ खेलना और अश्लील आमोद-प्रमोद बन्द हुआ। सैनिक जिसमें ईश्वरोपासना में नियम-पूर्वक योग देकर धर्मपरायण हो जायें— ऐसा नियम कर दिया। इस प्रकार जोन के स्वर्गीय माधुर्य-पूर्ण पवित्र चरित्र के पुण्य प्रभाव से सेना में युगान्तर उपस्थित हो गया। उनकी निद्रित आत्मा को जगा कर मातृ-यज्ञ में आत्माहुति देने के लिए वह शिक्षा देने लगी और बहुत दिनों की जड़ता को दूर कर के वहाँ के शिथिल प्रवाह को उसने वेगवान कर दिया।

सैनिकों का चरित्र-संशोधन

युद्ध-क्षेत्र।

(१)

अरलिन्स नगर के उद्धार की तैयारी।

सन् १४२८ ई० के अक्टूबर महीने में अंगरेज़ों ने अरलिन्स नगर घेर लिया था। यह नगर लॉयर नदी के उत्तरी किनारे पर है और एक सुरक्षित सेतु के द्वारा नदी के दूसरे तट से सयुक्त है। सेतु का एक ओर एक छोटा सा दुर्ग है। नगर-वासियों को इस क़िले के पास से ही आना जाना पड़ता था। क्योंकि यही नगर का प्रवेशद्वार था। फ़रासीसी लोगों के बहुत बाधा देने पर भी अंगरेज़ों ने बहुत कोशिश करके अक्टूबर महीने के शेष भाग में इस क्षुद्र दुर्ग पर अधिकार कर लिया। कुछ ही दिनों में नगर के पास कई स्थानों में भी उनका आधिपत्य जम गया।

अंगरेज़ों द्वारा अरलिन्स नगर का घिराव और वहाँ उनकी दृढ़ शक्ति-स्थिति।

इस प्रकार प्रतिकूल अवस्था होने पर भी जोन ने अरलिन्स नगर के उद्धार के लिए सन् १४२९ ईसवी के अप्रेल महीने में ब्लोइस नगर से अरलिन्स नगर की ओर यात्रा की। जाते समय उसने फ़रासीसी सैन्याध्यक्ष 'डुनियस' की भेजी हुई सेना से कहा—'जिस रास्ते अरलिन्स

[illegible]-थान।

नगर जल्द मिले उसी रास्ते मुझे ले चलो। किन्तु सैनिक उसे अपने अध्यक्ष के बताये हुए रास्ते से ले गये। जोन ने नगर मे पहुँच कर देखा कि उसे उस पुल को पार कर के जाना पड़ेगा जो अंगरेज़ों के अधिकार में है। वह समझ गई कि सैनिक उसे धोखा देकर इस रास्ते लाये हैं। इससे वह सैनिकों पर बड़ी नाराज हुई किन्तु अनुसन्धान के बाद जब उसे मालूम हो गया कि 'डूनियस' की आज्ञानुसार सेना उसे विपरीत रास्ते से लाई तब 'डूनियस' पर वह बड़ी क्रोधित हुई। 'डूनियस पहले से ही दुर्ग की चहारदिवारी पर चढ़ कर जोन के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। जोन को सेनासहित नदी के किनारे पहुँचते देख वह चहारदिवारी से उतर कर एक छोटी नाव द्वारा नदी के दूसरे किनारे पहुँचा। जोन के पास पहुँच कर उसने आदर-पूर्वक अभिवादन किया। तब जोन नाराज होकर पूछने लगी.—"आपने क्यो मुझे इस रास्ते से लाने के लिए अपने सैनिकों को आदेश दिया था?' इसके उत्तर मे डूनियस ने विनीत भाव से कहाः—"यह रास्ता सब से निरापद है। इसलिए मैंने अन्यान्य सेना-नायकों के परामर्शानुसार इस प्रकार आदेश दिया था।" जोन अधिकतर असन्तोष प्रकाश कर कहने लगीः—"तब क्या भगवान के आदेश से आप लोगों के आदेश का गुरुत्व अधिक है?"

डूनियस के साथ वादानुवाद

दूसरे दिन (२९ अप्रेल को) जोन ने ससैन्य विना किसी विघ्न-बाधा के नगर में प्रवेश किया। अंगरेज़ों ने करके ही उसे किसी प्रकार बाधा नहीं दी। नगर में

प्रवेश करते ही पहले वह धर्म्म-मन्दिर में गई और वहाँ ईश्वरोपासना की। इस के बाद उसने सारे नगर में भ्रमण किया।

जोन का अरलिन्स नगर में प्रवेश

उसके आने से नगरवासियों के हृदय में आशा का सञ्चार होने लगा। बहुत से लोग उसका दर्शन करने और उसकी अमृतमयी उपदेश-वाणी सुनने के लिए आने लगे। हजारों नर-नारियों ने जय-ध्वनि करके नगर की निर्जीवता दूर करदी। वृथा रक्तपात कर के पृथिवी को कलुषित करना और अनर्थक नरहत्या करके अशान्ति की सृष्टि करना जोन की प्रकृति के विरुद्ध था। इस लिए उसने बहुत उपाय किया कि अंगरेज़ बिना रक्तपात किये फ्रान्स छोड दे। उसने अंगरेजों के शिविर में इस मर्म्म का एक पत्र भेजा —

अंगरेज़ शिविर में पत्र-प्रेरणा

"इंगलैंड के अधीश्वर और उनके अधीन भूस्वामी तथा सैन्याध्यक्षगण! मैं भगवान् के आदेश से स्वदेशोद्धार के कार्य में प्रवृत्त हुई हूँ। अतः आप लोगों से विनय-पूर्वक अनुरोध करती हूँ कि आप लोग किसी प्रकार की गड़बड के बिनाही फ्रान्स परित्याग कर दीजिए। और, सैनिकगण! तुम्हें भी सृष्टि-स्थिति-प्रलय-कर्ता विश्व-विधाता के नाम पर कहती हूँ कि तुम लोग भी किसी प्रकार की अशान्ति न कर के स्वदेश लौट जाओ। हे राजन्! मैं आप से फिर विशेष रूप से कहती हूँ कि यदि इसका अतिक्रम होगा तो जानिएगा कि आप लोगों को इसका उपयुक्त प्रतिफल भोगना पड़ेगा। हां, यदि आप शान्ति रखने की इच्छा रखते हैं तो हम आप के साथ खुशी से सन्धि कर लेंगे और आप लोगों का सादर स्वागत करेंगे।"

अंगरेज़-शिविर में जब यह पत्र पढ़ा गया तब अंगरेज़ कर्मचारियों में विषम उत्तेजना फैल गई। उन्हों ने जोन के पत्र को अपमान-सूचक समझा। जो पत्र-वाहक अंगरेज़-शिविर में पत्र लेकर गया था उसके साथ उन लोगों ने नाना प्रकार का दुर्व्यवहार किया और उसे ज़ंजीरों से बाँध कर कारागार में बन्द कर दिया। अंगरेजों के इस प्रकार के व्यवहार से जोन को बड़ा दुःख हुआ। किन्तु उसने धैर्य न छोड़ा। फ़रासीसी दुर्ग के पास ही अंगरेज़ों का एक शिविर था। यह देख कर जोन दुर्ग के शिखर पर चढ़ गई। अपने पत्र-लिखित प्रस्ताव को स्वयं जोर जोर से कह कर उसने अंगरेजों को सुना दिया। इससे अंगरेज़ों में कोई भावान्तर नहीं हुआ, बल्कि उनमें और उत्तेजना फैल गई। सर विलियम ग्लैस्डेल (Sir William Glasdale) नामक एक अंगरेज़ सेनानायक ने उसके उत्तर में अत्यन्त हीन-जनोचित अभद्र-भाषा में जोन का तिरस्कार किया *। यह देख जोन ने अंगरेज़-कर्मचारियों के व्यवहार पर दुःख प्रकाश किया। जो हो, इस घटना से युद्ध अनिवार्य हो गया। जोन दूसरा कोई उपाय न देख कर युद्ध की तैयारी में लग गई।

अंगरेजों की उत्तेजना और नीतिविरुद्ध कार्य

अंगरेज सेनापति का अभद्र भाषा प्रयोग

---

* Here Glasdale overwhelmed her with abuse calling her cowherd and prostitute (Michelet's History of France, Translated by G. H. Smith Vol ... page 127)

(२)

अरलिन्स के उद्धार की सूचना—युद्धारम्भ ।

६ मई सन् १४२६ ईसवी को जोन को ख़बर मिली कि अगरेज़ी सेना की एक नई कुमुम नगर की ओर आ रही है। यह संवाद पाकर जोन ने सेनापति डूनियस को विशेष रूप से सावधान कर दिया और यह कह दिया कि नगर के पास सेना के आते ही मुझे ख़बर दे दीजिएगा। इसके पहिले कई दिनों तक युद्ध की तैयारी में अविश्रान्त परिश्रम करने के कारण वह बहुत थक गई थी। अतएव वह विश्राम करने के लिए अपने कमरे में चली गई और थोड़ी ही देर में सो गई। इस अवसर पर डूनियस ने सेना तथा अन्याय सेनानायकों को साथ लेकर 'सेन्टलुप' नाम के एक क़िले (Bastile dest Loup) पर आक्रमण किया। यह क़िला अगरेज़ों के अधिकार में था। इधर जोन सहसा जाग पड़ी और उसी समय उठ कर उसने अपने नौकर से कहाः—"अस्त्र-शस्त्र जल्दी लाओ। मालूम होता है, युद्ध-क्षेत्र में मेरा जाना बहुत ज़रूरी है।" इस प्रकार व्यस्त होकर जब वह युद्ध-साज में सज रही थी तब सहसा नगर के तोरण-द्वार पर बहुत ही कोलाहल सुनाई पड़ा। उसी समय वह घोड़े पर सवार होकर उधर चल दी। वहाँ जाकर उसने देखा कि अंगरेज़ प्रबल पराक्रम से युद्ध कर रहे हैं और फ़रासीसी उनके आक्रमण को सहन न कर सकने के कारण भाग रहे हैं। फ़रासीसियों की यह दुर्दशा देखकर जोन के कोमल हृदय में बरछी सी लगी और उसके प्रदीप्त मुखमंडल पर कालिमा सी छागई। किन्तु इससे वह कुछ भी विचलित न होकर भागे हुए सैनिकों को इकट्ठा

करने और उत्साह देकर उनको उत्साहित करने लगी। जोन की उत्तेजनामयी वाणी सुनकर फरासीसी सैनिक रणोन्माद से उन्मत्त हो गये। वे फिर अमित तेज से अंगरेजों पर आक्रमण करने लगे। जोन विपुलवाहिनी, अर्थात् सेना के आगे रह कर, उसका परिचालन करने लगी। तरंग के सामने तृण नहीं ठहर सकता—उसी तरह जोन की सेना के प्रभाव से अंगरेजी सेना तितर बितर हो गई। वीर्यवती वीराङ्गना के बलपूर्वक आक्रमण से अंगरेज़ पराजित हुए। शीघ्र ही फरासीसी सेना ने अंगरेज अधिकृत दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

युद्ध में जयलाभ और दुर्ग-अधिकार

जोन की असामान्य रण-निपुणता और अद्वितीय सैनापत्य का परिचय पाकर योद्धागण स्तम्भित हो गए। किन्तु जोन के इस प्रकार अकल्पित जय-लाभ करने पर कई एक यशोलिप्सु और स्वार्थी व्यक्ति उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देखने लगे। जोन को फिर युद्ध करने का अवसर देने से उनके यश की हानि हो सकती है, इस डर से सेनापति डूनियस ने जोन से सन्धि का प्रस्ताव उठाकर कहा कि अब अंगरेज़ों के विरुद्ध समरपरिषद् (Council of war) के सभ्य और कुमुक भेजना नहीं चाहते। जोन ने उसके उत्तर में कहा—'आप लोग परिषद् लेकर रहिए। मैं अपना कर्तव्य पालन करती जाऊँगी। कल के युद्ध के लिए सेना को तैयार होने दीजिए, मुझे अभी बहुत काम करना है।"

फरासीसी योद्धाओं में ईर्ष्या का सञ्चार

दूसरे दिन (मई की ७ तारीख़ को) जोन सवेरे ही से उठ कर समर-आयोजन में लग गई। उसने बहुत सी सेना लेकर अगरेज़ों के एक दूसरे सुरक्षित दुर्ग पर आक्रमण किया। पहले दिन युद्ध में जोन ने जो अद्भुत वीरत्व और अलौकिक साहस दिखलाया था उससे हीनशक्ति और हतोद्यम फरासीसी सैनिकों के हृदय में अपूर्व बल आगया था। इसी से ७ तारीख के युद्ध में उन्होंने विपक्ष दल को पराजित करने के लिए अतुल विक्रम दिखलाया। किन्तु अगरेज जाति एक वीर जाति है। वह रण में निपुण, साहस में दुर्जय और अध्यवसाय मे अटल है। वे भी फ़रासीसी लोगों के आक्रमण को विफल करने के लिए प्राणपण से युद्ध करने लगे। अंगरेज सेनापति ग्लैसडेल वीरोचित पराक्रम के साथ सेना का सञ्चालन करने लगा। तलवारों की झङ्कार बल्लमों का सङ्घर्ष, वीरों के धनुष की टङ्कार, छोड़े गये शरसमूहों के सन् सन् शब्द, घोड़ों की हिनहिनाहट, आहतों का मर्मभेदी आर्त्तनाद और रणोन्मत्त सैनिकों के विकट चीत्कार से समरभूमि का दृश्य भयानक हो गया। दोनों ओर बड़े जोर शोर की मार-काट होने लगी।

द्वितीय युद्ध—भीषण [illegible], जोन आहत, [illegible]

मन्त्र का साधन !

(१)

अरलिन्स का उद्धार ।

बहुत दिनों तक इसी प्रकार घोर संग्राम होने पर भी अंगरेजों ने आत्मसमर्पण न किया—यह देखकर जोन ने दुर्ग में प्रवेश करना चाहा । वह एक सीढ़ी की सहायता से क़िले की दीवार पर चढ़ गई । इसी समय सहसा शत्रु की ओर का एक बाण उसकी गरदन में आकर विंध गया । वह बेहोश होकर दुर्ग की खाई में गिर पड़ी । यह देख कर अंगरेज सैनिक उसे पकड़ने को दौड़े । किन्तु फ़रासीसी सैनिकों के बाधा देने पर वे आगे न बढ़ सके ।

जोन के क्षत-स्थान अर्थात् ज़ख़्म से निरन्तर रक्तधार बहने लगी । दुःसह यन्त्रणा के कारण वह अपने आँसू न रोक सकी । यद्यपि इससे उसकी रमणी-सुलभ दुर्बलता प्रकट हुई किन्तु थोड़ी ही देर में वह होश में आगई और उस पर जो गुरुतर कर्तव्य-भार था वह उसे याद हो आया । वह अपनी दुर्बलता के लिए लज्जित हुई और उसी समय अपने ही हाथ से बिद्ध शर को निकाल कर क्षत-स्थान पर औषध लगादी । [illegible]के बाद वह बैठकर ईश्वरोपासना करने लगी । उपासना [illegible]स्त होते ही वह फिर युद्ध में तत्पर होगई ।

सेनापति डूनियस दुर्ग-विजय की कोई आशा न देखकर रणक्षेत्र परित्याग करने का परामर्श देने लगा। जोन ने इस कापुरुषोचित परामर्श को न सुना। उसने दूने उत्साह से अंगरेजों पर आक्रमण किया। अब अंगरेजी सेना अधिक देर न ठहर सकी। शीघ्र ही फ़रासीसियों ने उन्हें पराजित करके दुर्ग पर अधिकार कर लिया। अंगरेज़ सेनापति ग्लेस्डेल ज्यों ही अपने अनुचरों को लेकर लॉयर नदी (Loire) के पुल पर से भागा आ रहा था त्योंही सहसा गोला लगने से पुल टूट गया और हतभाग्य सेनापति अपने साथियों सहित नदी में गिर कर मर गया। यह शोचनीय दृश्य देख कर कोमल-हृदया वीराङ्गना अपने आँसू न रोक सकी। इस युद्ध में अंगरेज़ी सेना के कोई आठ हज़ार और फ़रासीसी सेना के लगभग सौ सैनिक मारे गये।*

ता० ८ मई को अर-लिन्स नगर बन्धन मुक्त हुआ

पहले दिन के युद्ध में हार होने के कारण अंगरेज़ों ने कोई और उपाय न देखकर आठ तारीख को दल-बल सहित अरलिन्स नगर छोड़ दिया। इस प्रकार महा-प्राण वीराङ्गना ने दुर्दमनीय साहस, अतुलनीय वीरत्व और असामान्य रण-कौशल से अंगरेजों द्वारा अवरुद्ध नगर का पुनरुद्धार किया। अरलिन्स नगर के मुक्त होते ही नगरवासी आनन्दित होकर जोन को हार्दिक धन्यवाद देने लगे। किन्तु उसने भगवान् की कृपा को

* An ancient chronicler says —"The English lost 8000 or 9000 men, the French only 110 or 120 which shows clearly that it was the work of the Most High" (The Patriot Martyr Page 38)

ही सारी सफलता का कारण बतलाया। जोन भगवान् पर सदा दृढ विश्वास रखती थी। आनन्द में वह कभी भगवान् की दया को न भूलती थी। अरलिन्स नगर के मुक्त होने पर जोन के उपदेश के अनुसार ईश्वरोपासना का विशेष प्रबन्ध किया गया। बहुत से स्त्री-पुरुष उस उपासना में कृतज्ञता-पूर्वक सम्मिलित हुए। उपासना के बाद एक बड़ा भारी जलूस निकला और उसने सारे नगर में भ्रमण किया। अरलिन्स के उद्धार के बाद वीराङ्गना जोन 'अरलिन्स की कुमारी' (Maid of Orleans) के नाम से विख्यात हुई।

(२)

बाद का युद्ध और चार्ल्स का राज्याभिषेक।

व्यर्थ समय नष्ट करना अनुचित समझकर जोन ने फिर सेना सहित ब्लॉयस (Blois) नगर की ओर यात्रा की और वहां से टूर्स (Tours) नगर को गई। उस समय सम्राट् डफ़िन इसी नगर में था। वहाँ सम्राट ने जोन की सादर अभ्यर्थना की। जोन ने सम्राट् डफ़िन से अंगरेजों के विरुद्ध और कई एक युद्धों में सहायता करने के लिए कहा और रीम्स नगर में जाकर राजपद पर अभिषिक्त होने के लिए अनुरोध किया। किन्तु कापुरुष डफ़िन ने अमित तेजपूर्ण वीराङ्गना के वीरत्व का पूरा परिचय पाकर भी इस प्रस्ताव को पहले अस्वीकार किया। परन्तु जोन द्वारा नाना प्रकार के अनुनय-विनय किये जाने पर उसका मत बदला। तब उसने एलेङ्कन के डयूक (Duke of Alencon) के नेतृत्व में एक दल सेना जोन की सहायता के लिए दी। जोन इस नई सेना को लेकर अरलिन्स नगर को लौट गई। वहाँ से वह

कर उसने दस मील दूर जार्गो (Jargeau) नामक स्थान में फिर अंगरेज़ों पर आक्रमण किया। दोनों ओर से घोर संग्राम होने लगा। अंगरेज़ी सेना साफोक के ड्यूक (Duke of Suffolk) के अधीन रहकर प्राणपण से युद्ध करने लगी। किन्तु जोन थी पूत-चरित्रा वीराङ्गना। उसकी अव्याहत शक्ति के सामने अंगरेजी सेना भला क्या कर सकती थी? पुण्य-सलिला भागीरथी की प्रवाह सम तरङ्गों में ऐरावत जिस प्रकार वह जाते हैं जोन के दल-बल के आगे उसी तरह अंगरेज़ी सेना भाग खड़ी हुई। साफ़ोक का सा तेजस्वी सेना-पति जोन के हाथ में वन्दी होगया।

'जार्गो' में युद्ध—अंगरेज सेनापति बन्दी, फरासिसियों की जीत

जार्गो (Jargeau) में अंगरेज़ों को पराजित कर के जोन ससैन्य बोगेंसी (Beaugency) नामक स्थान में गई और वहां के दुर्ग पर सहज ही अधिकार कर लिया।

बोगेंसी में अंगरेजों को पराजित और उनके दुर्ग पर अधिकार

इस के बाद १८ जून (सन् १४२९ ई०) को पेटे (Patay) नामक स्थान में दोनों पक्षों का एक भीषण सङ्घर्ष हुआ। तपस्विनी वीर ललना के दुर्जय पौरुष और दीप्त-तेज से अंगरेजों की वीर्य-वह्नि तेजहीन हो गई। इस बार भी उनकी हार हुई। टेलबट सा रण-निपुण और प्रतिभावान सेनापति भी वन्दी हो गया और फास्टल्फ (Fastolfe) सा साहसी और पराक्रमशाली योद्धा भी रण में पीठ दिखा कर भाग गया।

पटे में युद्ध और फरासिसियों की जीत

अरलिन्स के उद्धार के लिए जो पहला युद्ध हुआ था उसमें बहुत से अंगरेज़ फ़रासीसियों के हाथ से बचने के

लिए, भेष बदल कर, धर्म-याजक बन गये थे। उन्नत-हृदया वीराङ्गना ने उनको सादर आश्रय दिया और इस भय से कि सैनिक उन पर कहीं अत्याचार न करें उसने उनको अपने वास-भवन में यत्नपूर्वक रख लिया। *

जोन के हृदय का महत्व, आश्रित और पराजित शत्रु के साथ सद्व्यवहार और विपन्न के साथ सहानुभूति

दूसरे युद्ध में अंगरेज़-सेनापति ग्लैसडेल और उन के अनुचर भागते समय जब नदी में डूब गये थे तब उस शोचनीय दृश्य को देख कर जोन ने विपक्ष शत्रुओं के लिए शोक प्रकाश किया था। इसके सिवा जब युद्ध रुक जाता था तब जोन निहत व्यक्तियों के लिए रोती थी। आहतों की सेवा वह स्वयं करती थी और उनके क्षत-स्थानों पर पट्टी बाँध देती थी। मरणोन्मुख व्यक्ति को सान्त्वना देकर उसके आत्मा को शीतल कर देती थी ‡। आश्रित और पराजित शत्रु के प्रति ऐसा सद्व्यवहार, विपन्न के प्रति ऐसी समवेदना और आहतों की परिचर्य्या में ऐसा यत्न—सच्चे वीर धर्म का कैसा सुन्दर दृष्टान्त, महत्व का कैसा मनोरम निदर्शन और स्वभाव-कोमल तथा सेवा-परायण रमणी-हृदय का कैसा अनुपम चित्र है!

पैटे नाम के ग्राम में युद्ध होने के एक ही महीने बाद डफ़िन के राज्याभिषेक का आयोजन किया गया। रीम्स नगर

* (Michelet's History of France, Translated by G H. Smith; Vol II Page 127)

‡ Lamartine's "Memories of Celebrated characters." Vol II Page 92.

राज्याभिषेक के लिए निश्चित हुआ; किन्तु उस समय भी वह नगर शत्रुओं के अधिकार में था। रीम्स के प्रधान धर्म-याजक (Archbishop of Rheims), राजमन्त्री, सभासद्-वर्ग और कई सहस्र सैनिकों को लेकर डफ़िन बड़े समारोह से रीम्स की ओर रवाना हुआ। वीराङ्गना के अपूर्व युद्ध-जय और वीरत्व की बात देश भर में फैल चुकी थी। इसलिए रास्ते के जो स्थान शत्रुओं के अधिकार में थे उन सब ने सहज ही उसकी अधीनता स्वीकार करली। १६ जुलाई १४२६ ई० को राजा अपने दलबल सहित निर्विघ्न रीम्स् नगर में पहुच गया। दूसरे दिन, रविवार को, रीम्स के प्राचीन

अभिषेक—उत्सव

धर्म-मन्दिर में राज्याभिषेकोत्सव आरम्भ हुआ। डफ़िन राजकीय पोशाक पहन कर वेदी के पास गया। उसने घुटने टेक शपथ ग्रहण की कि राज्य में सुविचार और सुशासन की प्रतिष्ठा, ईसाई धर्म की मर्यादा की रक्षा और प्रजा की सुख-शान्ति की वृद्धि पर मेरा सदा ध्यान रहेगा। ऐसी प्रतिज्ञा करने के बाद वह सम्मिलित जनसमूह की विपुल जयध्वनि के साथ राजमुकुट से भूषित किया गया। उसका नाम 'सप्तम चार्ल्स' हुआ। इस नाम को धारण करके वह फ्रांस के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। अभिषेक के समय जोन अपनी ईसा की नामाङ्कित और श्वेत पद्म-चिह्नित पताका हाथ में लिए हुए राजा के बगल में खड़ी रही। अभिषेक की

उत्सव [illegible] की समाप्ति पर राजा के प्रति जोन का सम्मान-प्रदर्शन

रस्म समाप्त होजाने के बाद वह राजा के सम्मान के लिए हाथ की पताका को झुका कर तथा घुटने टेक कर बैठ गई। तब उपस्थित जन-मण्डली की दृष्टि उसकी ओर गई और सब लोग उसकी उपदेश-वाणी सुनने के लिए उत्सुक होगये। जोन का

हृदय भर आया। वह अवरुद्ध पर उच्चस्वर से कहने लगी—
'राजन्, जिसके अलङ्घनीय आदेश से रीम्स् नगर में आपके
राज्याभिषेक का आयोजन किया गया है, आज उस मङ्गलमय
परमेश्वर की इच्छा पूर्ण हुई! आज से आप यथारीति राजपट
पर अधिष्ठित हुए और फ़रासीसी जाति सब विषयों में आप
के आज्ञाधीन रहेगी।"

(३)

पेरिस नगर का युद्ध और पतन का पूर्वाभास।

लगातार कई युद्धों में जय प्राप्त करने से जोन का यश
चारों ओर फैल गया। सेना उसकी आज्ञा के अनुसार चलने
लगी और राजा की भक्ति भी उस पर अधिक होगई।
इस अवस्था मे जोन, इच्छा करते ही, सम्मानसूचक
उच्च-राज-पद पर अधिष्ठित होकर अपना प्रभुत्व
यथेष्ट स्थापित कर सकती थी। किन्तु व्यक्तिगत
स्वार्थ के लिए उसने देशोद्धार का पवित्र-व्रत उद्यापन नहीं
किया। इसी लिए उसने प्रभुत्व और सम्मान पाने की इच्छा
को हृदय मे कभी स्थान नहीं दिया। तथापि राजा ने कृतज्ञता
के चिह्न-स्वरूप उसके जन्म स्थान डुमरिम ग्राम को सब
प्रकार के राज-कर से मुक्त कर दिया।

जोन का निष्काम कर्म

अरलिन्स नगर को दासत्व के नाग-पाश से मुक्त
करके और राजा को फ्रान्स के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करने
लेकर जोन कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हुई थी। अब उसके

अवसर ग्रहण की अनुमति-प्रार्थना और राजा का असम्मति ज्ञापन

व्रत का उद्यापन हो गया। यह देखकर उसने अपने गाँव में जाकर माता-पिता के साथ रहने की अनुमति राजा से माँगी। किन्तु राजा ने इस प्रस्ताव को किसी प्रकार स्वीकार न किया। क्योंकि वे जानते थे कि जोन की अनुपस्थिति में सेना में उत्साह-हीनता और शिथिलता आजायगी। विशेषत. इस समय, जब कि उसने पेरिस नगर पर आक्रमण कर के अंग्रेजों को वहाँ से निकाल देने का सङ्कल्प किया था। जोन की अनुपस्थिति में उसकी इस इच्छा का पूर्ण होना कठिन था। इसी लिए जोन के नाना प्रकार से अनुरोध करने पर भी राजा ने उसे न जाने दिया। किन्तु जोन अपने मन में समझ चुकी थी कि भगवान् ने उस पर जो कर्त्तव्य-भार डाला था वह पूर्ण हो गया। विशेषत. और नये कार्य में व्रती होने के लिए भगवान् की प्रेरणा उसने अनुभव नहीं की। तथापि अनिच्छा होने पर भी राजा के अनुरोध से उसे फिर युद्ध में जाना पड़ा।

पेरिस में युद्ध और जोन का पराजय

ता० ८ सितम्बर (सन् १४२६ ई०) को जोन ने पेरिस नगर पर आक्रमण किया। यह तारीख़ ईसाइयों का एक पर्व दिन था। तथापि राजा की आज्ञा अवहेलना न करना चाहिए, यह सोच कर, अपनी इच्छा न होने पर भी, उसने इस काम में हाथ लगाया। अंगरेज़ों ने फ़रासीसियों के आक्रमण से पेरिस नगर की रक्षा करने के लिए पहिले ही से विशेष प्रबन्ध कर रक्खा था। जोन ने वीरोचित पराक्रम के साथ युद्ध किया। पर उन्हें जीत न सकी। अंगरेज़ों का आक्रमण सहन न कर सकने

के कारण उसके अधिकांश सैनिकों ने पीठ दिखा दी। तथापि जोन ने पराजित होकर लौट जाने की अपेक्षा रण-क्षेत्र में मर जाना ही उचित समझा और वह थोड़ी सी सेना लेकर दृढ़ता के साथ युद्ध करने लगी। इधर फ़रासीसी सेना-नायक ड्यूक आफ एलेंकन जय की कोई आशा न देख कर और, जोन शीघ्र ही शत्रु के हाथ में पड़ जायगी, यह जान कर, उसको बलपूर्वक युद्ध-क्षेत्र से हटा लेगया।

इस युद्ध में प्राय. पन्द्रह सौ सैनिक आहत हुए थे। जोन पर यह अपराध लगाया गया था कि इस भीषण रक्त-पात का कारण यही है। जातीय पर्व्व के दिन पेरिस नगर पर आक्रमण करके ईसाई-धर्म की अवहेलना उसने की—यह दोष उस पर बिलकुल अन्याय पूर्ण लगाया गया था।* वास्तव में, न्यायत. और धर्मत, वह निर्दोष थी। जोन आज तक किसी भी युद्ध में पराजित न हुई थी। अपने जीवन के इस प्रथम पराजय से वह अत्यन्त दुखित हुई और भावी मङ्गल का पूर्वाभास पाकर बहुत घबराई।

---

* This was contrary to the advice of Pucelle; her voice warned her to go no further than St Denys

Fifteen hundred men were wounded in this attack, which she was wrongfully accused of having advised . .(Michelet's History of France, Translated by Smith. Vol II Page 132)

(६)

अन्तिम युद्ध—जोन शत्रु के हाथ में।

पेरिस नगर के युद्ध में पराजित होने के कारण जोन के हृदय में जो दारुण आघात लगा था उसे वह पल भर के लिए भी न भूल सकी। आत्म-अपमान की वह जघन्य स्मृति प्रति मुहूर्त उसके कोमल हृदय को क्षत-विक्षत करने लगी। पेरिस से लौट कर वह बर्गेस (Bourges) नामक स्थान में गई और जाड़े भर वहीं रही। वसन्त-ऋतु के प्रारम्भ में जोन ने फिर सेना इकट्ठी करके और शत्रुओं द्वारा घिरे हुए कम्पियन (Compiegne) नामक नगर के उद्धार के लिए यात्रा की। सन् १४३० ई० की २३ मई को उसने ससैन्य नगर में प्रवेश किया। इसके बाद उसने अपने स्वाभाविक बल-वीर्य और पराक्रम के साथ शत्रु के दुर्ग पर आक्रमण किया। कुछ देर तक युद्ध करने के बाद जोन के सैनिक शत्रु के आक्रमण को सहन न कर सके और भाग खड़े हुए। जोन भागी हुई सेना को लौटा लाई और फिर कतारें बाँध करके युद्ध करने लगी। किन्तु, फ़रासीसी सैनिक इस बार भी प्राण-भय से भीत होकर भाग खड़े हुए।

कम्पियन का अन्तिम युद्ध, जोन की पराजय और शत्रु के हाथ में जोन

जोन दूसरी बार भी सेना को उत्साह देकर लौटा लाई। अन्त में जय की कोई आशा न देखकर उसने सेना को युद्ध-क्षेत्र छोड़ देने की आज्ञा दे दी। आज्ञा मिलते ही सैनिक भाग गये। जोन भी कई एक शरीर-रक्षकों को लेकर युद्ध-क्षेत्र छोड़ने जा रही थी कि सहसा शत्रु-सेना ने उसको

घेर लिया। जोन और उसके अनुचर असीम पौरुष के साथ शत्रु के आक्रमण को व्यर्थ करने लगे। अकस्मात् शत्रु-पक्ष के एक सैनिक ने जोन को बलपूर्वक घोड़े पर से खींच कर नीचे गिरा दिया। परन्तु वह उसी समय उठ कर खड़ी हो गई और आत्म-रक्षा के लिए निडर होकर अस्त्र चलाने लगी। अब शत्रु-पक्ष के दल आकर उस पर टूट पड़े। आत्म-रक्षा करना सम्भव न देख कर जोन ने शत्रु-पक्ष को सहायता देने वाले एक देश-द्रोही फ़रासीसी (Bastard of Vendome) के हाथ में आत्म-समर्पण कर दिया। इस देश द्रोही ने उसको ड्यूक आफ वर्गंडी के प्रधान सेनापति कौंट लिगनी के हाथ में अर्पण कर दिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये दोनों ही जोन के स्वजातीय और स्वदेशवासी देशद्रोही थे। बहुत लोगों का अनुमान है कि जोन के पक्ष के कई एक नीच सेनानायकों ने उसकी विमल-कीर्ति से जल कर शत्रुओं से घूस लेकर उसको पकड़ा दिया था।

———:०:———

कारागार में ।

(१)

कारा-कहानी ।

जोन बन्दी हो गई । उसकी स्थूल-देह अलवर्चो सुदृढ़ कारागार में बाँध कर रक्खी गई, किन्तु उसका हृदय किसी प्रकार भी विचलित न हुआ—दीन न हुआ । उसका स्वर्गीय तेज और अलौकिक बल-वीर्य एक मुहूर्त के लिए भी कम न हुआ । सच्चे वीर-धर्मानुसार जोन के प्रति सद्व्यवहार करना ही शत्रुओं को उचित था । किन्तु उन्हों ने इस प्राचीन नीति का उल्लङ्घन करके उसको साधारण बन्दियों की श्रेणी में रक्खा *। कारागार में, क़ैदी की दशा में, जोन के साथ जैसा व्यवहार किया गया था, उसको छल, बल और कौशल से जिस प्रकार कष्ट दिया गया था, वह नितान्त नीतिहीनता, नृशंसता और कापुरुषता का परिचायक है। सन् १४३० की २३ मई को जोन शत्रु के हाथों में पड़ी थी। पर उसके दूसरे वर्ष, १४३१ की जनवरी में, उसका विचार आरम्भ हुआ और ३० मई को समाप्त हुआ था । अर्थात्, उसको पूरे एक वर्ष तक जेल की यन्त्रणायें भोगनी पड़ी थीं ।

* [रा]ज-धर्म से बहिर्भूत—कार्य—जोन को साधारण बन्दी रूप में गिनना और उसके साथ दुर्व्यवहार करना

कम्पियन (Compiegne) के युद्ध में पराजित होकर बन्दी होने के बाद से ही जोन सेनापति काउन्ट डी लिग्नी (Count de Ligny) के देख-रेख में रक्खी गई थी। यह सेनापति लक्जेमबर्ग (Luxemburg) के राजा के अधीन एक जमींदार था। अतएव अंगरेज़-प्रभुओं को खुश करने के लिए उसने जोन को उक्त भूपति को समर्पण करने का सङ्कल्प कर लिया। लिग्नी की स्त्री को जब उसका यह घृणित सङ्कल्प मालूम हुआ तब उसने अपने पति से उस पाप-पथ को छोड़ देने के लिए नाना प्रकार की अनुनय विनय की; यहाँ तक कि वह पति के चरणों पर गिर कर नितान्त कातर भाव से जोन की मुक्ति-भिक्षा माँगने लगी। किन्तु इस अन्तःपुर-चारिणी ललना के हृदय में जो उच्च भाव था वह पापिष्ठ लिग्नी के हृदय को स्पर्श भी न कर सका। लिग्नी विदेशियों के पास आत्मविक्रय कर के स्वदेश और स्वजाति को एकदम भूल चुका था। उसके स्वार्थ-वधिर कानों में स्त्री की एक बात भी स्थान न पा सकी। उसने ड्यूक आफ लक्ज़ेमबर्ग के हाथ जोन को समर्पण कर ही दिया। परन्तु उस सहृदय अंगरेज सामन्त ने बन्दी शत्रु-रमणी के साथ किसी प्रकार का भी बुरा व्यवहार नहीं किया। वह जोन को अपने ब्यूरेवर (Beaurevoir) नगर के महल में ले गया। वहाँ उसके परिवार की महिलाओं ने उस पर अतिशय सम्मान और सौजन्य प्रकाश किया। उनके अनुरोध से जोन ने सैनिक वेश परित्याग करके भद्र

फरासीसी रमणी का महत्व और स्वदेश-प्रेम का ज्वलन्त चिह्न, स्वामी की देश-द्रोहिता के पाप से रक्षा की चेष्टा और जोन की मुक्ति-भिक्षा

अंगरेज सामन्त का भद्र व्यवहार और अंगरेज महिलाओं की सहृदयता

महिला के योग्य वस्त्र धारण किये। दुर्वृत्त सैनिकों से आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए ही वह पुरुषोचित वेश में रहती थी।

कुछ समय तक इसी तरह रहने से जोन का हृदय स्वदेश-वासियों के लिए अतिशय चञ्चल हो उठा। वह हृदय के आवेग को न रोक सकी। उसने एक रोज़ चुपके से महल की दीवार फाँद कर भागने की चेष्टा की। किन्तु ज़मीन पर गिरने और चोट लगने के कारण उसकी वह चेष्टा व्यर्थ हुई। वह फिर महल में लाई गई। थोड़े दिनों में ही लक्ज़ेमबर्ग के हितैषियों के यत्न और सेवा से वह अच्छी हो गई। इस घटना के बाद लक्ज़ेमबर्ग के सामन्त ने जोन को अपने पास रखना निरापद न समझा, इसलिए उसको ड्यूक आफ बर्गंडी के पास भेज दिया। ड्यूक के आदेशानुसार स्कार्प (Scarpe) नदी के तटस्थ आरा (Arras) नगर के सुरक्षित कारागृह में जोन बन्द की गई। कुछ दिन बाद वह आरा से क्रोटॉय (Crotoy) नामक स्थान में भेज दी गई।

की भागने की-शिश और उसका ब्यूरवर नगर से हटाया जाना

इसके पश्चात् जोन साधारण वन्दियों की तरह रोमन नगर के दुर्ग में लाई गई। बहुत से सिपाही उसके साथ थे। जिस राजपथ से उसे लिवा लेगये—वह आदमियों से भरा हुआ था। उसे हथकड़ी या बेड़ी पहनाई गई थी। अशिक्षित और चरित्रहीन सैनिकों के अधीन रहना होगा, यह सोचकर वह फिर पुरुष-अनोचित वेश में रहने लगी। यहाँ पर काउन्ट लिग्नी, (Count de Ligny) अर्ल आफ् वार्विक (Earl of Warwick) और एक दूसरे सम्भ्रान्त अंगरेज़ को साथ ले

कर जोन से भेंट करने गया था। जोन को बन्धन-दशा में देख कर, लिग्नी ने मजाक से कहा:—"जोन, मैं तुमको कारा-मुक्त करने आया हूँ। किन्तु तुम प्रतिज्ञा करो कि अब हमारे विरुद्ध कभी अस्त्र धारण न करोगी।" बन्दी वीराङ्गना इस परिहास को सहन न कर सकी। तिरस्कार-पूर्ण स्वर से निडर होकर उसने उत्तर दिया:—

कारागार में जोन से परिहास

"आप मेरा उपहास कर रहे हैं। मुझे कारामुक्त करने का आप को अधिकार नहीं है, और न वैसी इच्छा ही। मैं अच्छी तरह से जानती हूँ कि अंगरेज़ मेरा प्राण-नाश करेंगे। उनकी धारणा है कि मेरी मृत्यु से फ्रान्स उनके हाथों में आ जायगा। किन्तु उनकी यह आशा व्यर्थ होगी। अगरेज़ संख्या में यदि लाख गुणा भी बढ़ जाय तथापि फ्रान्स उनकी अधीनता स्वीकार न करेगा।"

बन्धन-दशा में होने पर भी जोन का वीरोचित उत्तर और इस से अंगरेज प्रभु की धैर्य-च्युति तथा प्राणनाश की चेष्टा

जोन की ऐसी वीरोचित बात लिग्नी के साथ आये हुए एक अंगरेज़ को असह्य हो गई। वीर-श्रेष्ठ अंगरेज़ भूपति क्रोध से उन्मत्त होकर सर्वाङ्ग शृङ्खलित, निराश्रय जोन की छाती में खून की प्यासी छुरी भोंकने को उद्यत होगया *। किन्तु अर्ल आफ़ वार्विक ने उसके इस कापुरुषोचित काम में बाधा डाली। इसके सिवा कारागार के सामान्य प्रहरी तक भी उस के साथ बुरा व्यवहार करते थे।

प्रसिद्ध अंगरेज़ इतिहास-लेखक टर्नर (Turner) ने जिस मर्मभेदी भाषा में जोन की कारा-यन्त्रणा का विवरण लिखा है, वह भी सुन लीजिये:—

* (See Michelet's History of France Trans-by Smith Vol II Page 145)

"Her feet and legs were fettered to a strong chain, which traversed the end of her bed, and was locked to a large piece of wood, five feet long. Another chain was fastened around the middle of her thin and spare body, so that she could not move from her place. A cage of iron was sworn to have been made for her, in which she was fastened by the neck, feet and hands, from the time of her arrival at Rouen to the first day of her trial."*

अर्थात्, उसके दोनों पैर सुदृढ़ लोहे की जञ्जीर से बँधे हुए थे। पाँच फुट लम्बे एक बड़े भारी लकड़ में यह जञ्जीर बंधी हुई थी। यह जञ्जीर इतनी लम्बी थी कि जोन के बिछौने के एक ओर से दूसरी ओर तक पहुँच जाती थी। और एक जञ्जीर से उसका दुर्बल शरीर, बीच में इस तरह बँधा था कि वह हिल-डुल न सके। एक लोहे का पिंजरा भी उसके लिए बनाया गया था। रायन नगर में आने के समय से विचार-प्रारम्भ के प्रथम दिन तक, उसको उस पिंजरे के भीतर गर्दन और हाथ पाँव बँधे हुए रहना पड़ा था।

जोन जिस समय शत्रु के हाथ में इस प्रकार असहनीय जेल के कष्ट भोग करती हुई अपनी प्राण-शक्ति खो रही थी, उस समय अकृतज्ञ और निकम्मा राजा चार्लस् निश्चेष्ट भाव से दिन गिना रहा था। जिसके कठोर साधन-बल और

---

* See Farmer's History of England Vol. II, Page 593

विजयिनी शक्ति के प्रभाव से चार्लस् खोये हुए राज्य को पुनः अपने अधिकार में ला सका था और जिसके अलौकिक वीरत्व और जीवन व्यापी संग्राम के फल से वह राजसिंहासन पर अधिष्ठित हुआ था, उसी वीराङ्गना के उद्धार के लिए उसने किसी भी प्रकार का यत्न न किया। उसकी इस अक्षम्य अकृतज्ञता के दारुण इतिहास ने उसको सदा के लिए काले रङ्ग में चित्रित कर रखा है।

(२)

विचार--प्रहसन।

विचार की पहिली तयारी

जोन जब रोयन नगर के कारागार में शारीरिक और मानसिक यन्त्रणायें सहन करती हुई दिन पर दिन शरीर-क्षय कर रही थी उसी समय शत्रु लोग उसके नाश का उपाय ढूंढने में लगे हुए थे। अब उन्हो ने जोन के विचार-कार्य्य की ओर ध्यान दिया। सामरिक विचारालय में उसका विचार होने से उसको प्राण-दण्ड की आज्ञा न मिलती। क्योंकि युद्ध करते हुए जो व्यक्ति शत्रु-द्वारा पकड़ा जाता है वह वीर-धर्मानुसार सब सभ्य जातियों के निकट अवध्य है. किन्तु जोन की अपूर्व रण-निपुणता और अलौकिक शक्ति का परिचय पाकर अंगरेज बहुत डर गये थे। उसके सदृश असाधारण बुद्धिशालिनी शत्रु-पक्षीय रमणी को जीवित रखना उन लोगों ने किसी प्रकार निरापद न समझा। इस लिए उसका अस्तित्व तक मिटा देने की इच्छा से उसको [illegible] की चेली' और 'प्रचलित धर्म के विरुद्ध आचरण करने

वाली' कह कर विचार के लिए, धर्मयाजकों के हाथमें सौंप दिया।

उस समय कचन् (Cauchon) नाम का एक फ़रासीसी बोवेय (Beauvais) नगर के धर्ममन्दिर का अध्यक्ष (Bishop) था। स्वार्थ-सिद्धि के लिए उसने विदेशियों के हाथ अपने आप को बेच डाला था। वह स्वदेश और स्वजाति को भूल गया था। उसने जोन के विरुद्ध डाकिनी-वृति या जादूगरनी (Witchcraft)'का अभियोग चलाना, अगरेज़ों के अनुग्रह पाने का एक अच्छा उपाय समझा। कचन् की सहायता पाने से अगरेज़ों की सङ्कल्प-सिद्धि का पथ सरल हो गया। जोन तब तक भी बर्गंडो के ड्यूक के अधिकार में थी। इसलिए फ्रान्स के धर्मसम्बन्धी-विचारालय के 'प्रधान प्रतिनिधि' (Vicar General or Inquisition) ने २६ मई (अर्थात्, जोन के पकड़े जाने के तीन दिन बाद ड्यूक के पास इस मर्म का एक पत्र लिख भेजा कि —"जोन नाम की जो स्त्री आप के पास कैद है हमारा विश्वास है कि, वह प्रचलित धर्म की विरुद्धाचारिणी है। इसलिए पवित्र धर्म-शासन (Holy Inquisition) की ओर से, धर्म और न्याय के नाम पर, हम आप से अनुरोध करते हैं कि विचार करने के लिए उसे यहाँ भेज दीजिए।"

कचन की कृतघ्नता

यह कहना अनावश्यक है कि इंग्लंड के कार्डिनल (Cardinal of Winchester) के आदेशानुसार ही वाईकर ने उक्त पत्र लिख भेजा था। किन्तु ड्यूक (Duke of Burgundy) वाईकर के पत्र के अनुसार कार्य करने को राजी न हुआ। तब पेरिस-विश्वविद्यालय के अधिकारिय

ने जोन को विचारार्थ धर्माधिकारी (Inquisitor) के हाथ में समर्पण कर देने के लिए अलग एक पत्र भेजा। पेरिस नगर उस समय अंगरेजों के आधीन था। इसलिए प्रधान प्रधान लोग उनके मुँह देख कर कार्य करने के लिए विवश थे। ड्यूक अंगरेज़ों के साथ नाना प्रकार के स्वार्थ-मन्त्र से जकड़े रहने के कारण विश्वविद्यालय के अधिकारियों के आदेश की उपेक्षा न कर सका। इधर देश-द्रोही कचन् ने भी इंगलैंडाधिपति, छठे हेनरी, के पास इस प्रकार का अभिप्राय प्रकट किया कि जोन उसके इलाक़े में पकड़ी गई है। इस लिए जोन का विचार-भार मैं स्वयं लेना चाहता हूँ।

हेनरी यह पत्र पढ़ कर खुश हो गया। १२ जून (सन् १४३० ई०) को उसने विश्वविद्यालय को लिख भेजा कि:—

राजाज्ञा, कचन् और नाइकर के हाथ में विचार का भार।

"जोन के विचार का भार वोवेय नगर के धर्माध्यक्ष कचन् और पवित्र धर्म-शासन के प्रतिनिधि को सौंपा गया।" जिस समय जोन के विचार के सम्बन्ध में इस प्रकार आदेश प्रचारित हो रहा था उस समय अंगरेज़ों के अधिकृत और भी दो नगर फ़रासीसियों के अधिकार में हो गये। इंग्लेंड का कार्डिनल (Cardinal of Winchester) यह अशुभ लक्षण देख कर अत्यन्त चिन्तित हुआ। उसने प्रकट किया कि फ़रासीसी राजा चार्लस् एक ऐन्द्रजालिक-शक्ति-सपन्न स्त्री की सहायता से राजपद पर अभिषिक्त हुआ है। फिर उसको सभ्य-जगत् के सामने हीन करने के लिए, वह अधिक आडम्बर के साथ इंग्लेंड के राजा छठे हेनरी के राज्याभिषेक की तैयारी करने लगा।

२ दिसम्बर (सन् १४३० ई०) को इंगलैंडाधिपति हेनरी ने पेरिस नगर में प्रवेश किया । वहाँ उसका राज्याभिषेक-उत्सव मनाया गया । जोन के विचार होने में देर देख कर राजा हेनरी ने उस विचार में शीघ्रता करने के लिए फिर आज्ञा दी । यह आदेश पाकर। बिशप (Cauchon) दूने उत्साह से विचार की तैयारी में लग गया । जोन के निष्कलङ्क चरित्र पर दोष लगाने के लिए उसके जन्मस्थान डुमरिम ग्राम में एक जासूस भेजा गया । किसी किसी ऐतिहासिक का कहना है कि उसके विरुद्ध झूठे गवाह बनाने के लिए अन्यान्य स्थानों में भी जासूस भेजे गये थे -। मुर्दे-गांध जैसे सड़े मुर्दे ढूढने के लिए चारों ओर घूमते फिरते है, ये जासूस भी वैसे ही नाना स्थानों में घूमने लगे । किन्तु वे कहीं पर भी जोन के विरुद्ध प्रमाण संग्रह न कर सके। जहाँ कहीं ये जासूस जोन की चर्चा उठाते वहीं के लोग इस विपद में जोन के प्रति सहानुभूति प्रगट करते थे। यहाँ तक कि कोई कोई उसके सद्गुणों का वर्णन करते करते रोने लगते और कोई कोई तरह तरह से उसकी प्रशंसा किया करते थे ।

-But, as in the greatest judicial investigation in History, it was necessary to obtain false witnesses, in order to accomplish the object in view so the enemies of the maid were in some difficulty to procure such evidence as would incriminate her. (The Patriot martyr—Page 85)

(३)

विचार-आरम्भ।

सन् १४३१ ई० की ९ जनवरी को जोन का विचार आरम्भ हुआ। धर्माध्यक्ष कचन् और धर्म-शासन के प्रतिनिधिगण विचारासन पर बैठे। आठ बहुदर्शी व्यवहार-विशारद व्यक्ति (Lawyers) तथा अन्य कई एक सम्भ्रान्त व्यक्ति विचार-कार्य की सहायता के लिए विचारालय में उपस्थित थे। जोन को 'डाकिनी' और 'प्रचलित धर्म की विरुद्धाचारिणी' कह कर अभियुक्त करने के लिए प्रधान न्यायाधीश कचन् ने जितने प्रमाण सङ्ग्रह किये थे, उपस्थित व्यक्तियों में से अधिकांश के मतानुसार वे काफी नहीं समझे गये। तब कचन् ने और कोई उपाय न देखकर दूसरी बैठक के लिए अपने मेल के कई एक व्यक्तियों को विचार-कार्य में सहायता देने के लिए मनोनीत किया। जिनके साथ उसका मत न मिलता था तथा जो उसकी स्वेच्छार-पूर्ण विचार-प्रणाली में बाधा डालने की कोशिश करते थे उन सब को उसने हटा दिया।

इस प्रकार सिद्धि-पथ के कन्टकों को दूर कर के, विचार के सब उपकरण अच्छी तरह सज जाने के बाद, [illegible]वरी को जोन विचारालय में लाई गई। उस दिन [illegible] में कचन् ने जोन से अनुरोध किया कि विचारों

द्वारा उपस्थित किये गये प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर दो।
विचारक जोन से जिरह करने लगे। उत्तर में जोन ने कहा:—
"आप लोग मुझसे क्या प्रश्न करेंगे यह मैं नहीं जानती।
सम्भव है, आप लोग ऐसा कोई प्रश्न करें जिसका उत्तर मैं
न दे सकूँ।" अन्त में वह दैववाणी के सिवा और सब
विषयों के सम्बन्ध में ठीक २ उत्तर देने को राजी हुई।
विचारकों ने कह दिया कि यदि उसका सिर भी काट डाला
जाय तो भी वह दैववाणी के विषय में कुछ नहीं कहेगी।
जोन की इस प्रकार दृढ़ता देख कर भी कचन् दैववाणी के
विषय में सच सच कहने के लिये उसे तङ्ग करने लगा।
इसके बाद २२ और २४ तारीख़ की बैठकों में भी वह इस
विषय में फिर तङ्ग की गई। किन्तु वह पहले की तरह अटल
रही। विचारकों के पूछने पर उसने कहा कि वह १९ वर्ष
की है। तत्पश्चात् जोन ने ज़ंजीर से बाँधी जाने पर उसे जो
यन्त्रणायें हुईं उनका हाल विचारकोंसे कहा। उत्तर मिला
कि,— 'तुमने भागने की कोशिश की थी, इसी लिए लाचार
होकर तुमको शृङ्खलाबद्ध रखना पड़ा।" जोन ने निडर
होकर उत्तर दिया:—"मैंने भागने की चेष्टा की थी, यह सत्य
है। पर ऐसा करना किसी भी क़ैदी के लिए अनुचित
नहीं है।"

चौथे दिन की बैठक में जोन ने समस्त सङ्कोच त्याग
कर के यह स्पष्ट स्वीकार कर लिया कि उसने यथार्थ में
दैववाणी सुनी थी। किन्तु दैववाणी ने उसको क्या आदेश
दिया था, यह पूछने पर जोन ने कहा:—"मैं सब बातें
प्रकाशित नहीं कर सकती। आप लोगों के प्रश्नों का उत्तर
देने की अपेक्षा स्वर्गीय दूत को असन्तुष्ट करने से मैं अधिक

डरती हूं। मेरी प्रार्थना है कि इस विषय में मुझसे कुछ न पूछा जाय।" यह सुन कर कचन् ने कहा कि:—"क्या सत्य कहना पाप है?" जोन ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया कि, "स्वर्गीयदूत ने मुझे जो आदेश दिया था वह आप लोगों के लिए नहीं, किन्तु राजा के लिए था।" वह हृदयावेग को संभाल न सकी और कहने लगी—"मैं ईश्वर के पास से आई हूं, यहाँ मेरा कोई प्रयोजन नहीं है। मैं जिसके पास से आई हूं उसके पास मुझको भेज दीजिए। आप लोग कह रहे हैं कि आप मेरे विचार-कर्त्ता हैं। सोचिए तो, कि आप लोग क्या कर रहे हैं। मैं सचमुच ही देव प्रेरिता हूं। अतएव, सच जानिए आप लोग अपनी इच्छा से ही विपद्ग्रस्त हो रहे हैं।"

जोन की तेजस्विता

जोन के इस तेजस्विता-पूर्ण वाक्य को सुन कर अभिमानी विचारक अतिशय उत्तेजित हो उठे। अत्यन्त हीन-प्रकृति के लोगों की तरह जोन से अन्याययुक्त जटिल प्रश्न करने लगे। वे पूछने लगे:—"जोन, क्या तुम विश्वास करती हो कि तुम्हें देवानुग्रह प्राप्त हुआ है?" इस प्रश्न के उत्तर में "हां" या "ना" कहना दोनों ही विपज्जनक था। क्योंकि "ना" कहने से यह सिद्ध होता कि जोन देवानुग्रह से वञ्चित है। अतएव वह किस प्रकार से अपने को 'देवानुग्रह-प्राप्त' कह कर प्रचार कर सकती थी? "हां" बोलना भी जोन के लिए कठिन था। क्योंकि इस पाप-प्रलोभन-पूर्ण जगत में नितान्त दाम्भिक के सिवा और कोई दृढ़ता के साथ नहीं कह सकता कि "मुझे देवानुग्रह प्राप्त हुआ है।" विशेषतः ईसाई समाज में अपने को देवानुगृहीत कह कर प्रचार करना अति-

विचारकों के अन्याय्य प्रश्न और जोन का सदुत्तर

गय निन्दनीय माना जाता है। किन्तु जोन ने इससे कुछ भी विचलित न हो कर सच्चे ईसाई की तरह उत्तर दियाः—"यदि मुझे देवानुग्रह न मिला हो तो मैं प्रार्थना करती हूँ कि ईश्वर कभी मुझे उससे वञ्चित न रक्खें ।" उसने और भी कहाः— 'अहा ! यदि मैं सत्य ही देवानुग्रह से वञ्चिता हूँ, तो मेरी सी घोरतर पापीयसी इस जगत में और कौन होगी ? किन्तु यदि मुझ में पाप होता तो निश्चय मैं देववाणी न सुन पाती। मेरी बस यही इच्छा है कि मेरी तरह वह सबको सुनाई पड़े।" जोन के इस प्राज्ञोचित उत्तर से विचारकों की उत्तेजना और विक्षेप सौगुना बढ़ गये। उन्हों ने हतबुद्धि होकर बहुत देर तक विचार-कार्य स्थगित रक्खा।

इसके बाद उन लोगों ने दूनी सरगर्मी के साथ विचार-कार्य आरम्भ किया और जोन का सर्वनाश करने के लिए प्रश्न पर प्रश्न करने लगे । इस प्रकार चौथे दिन की बैठक भी समाप्त हुई।

पाँचवें दिन के अधिवेशन में विचारक जोन से नितान्त नीच भाव से प्रश्न करने लगे । जोन को "शैतान की शिष्या" प्रमाणित करने के लिए उस से कई एक अनुचित प्रश्न किये गये। विचारकों ने पूछाः—'क्या तुम निश्चय-पूर्वक कह सकती हो कि तुमने जो मूर्ति देखी थी वह यथार्थ ही स्वर्गीय दूत की थी ?"

विचारकों की नीति-हीनता का निदर्शन—[illegible]

जोन ने प्रतिउत्तर में निर्भय होकर कहा—"जितना स्थिर और पूर्ण विश्वास मुझे ईश्वर पर है उतना ही दृढ़

विषय में भी है।" इसके बाद उसकी पताका आदि के सम्बन्ध में उस से कई एक प्रश्न किये गये।

प्रश्न—"क्या तुमने सैनिकों से यह नहीं कहा था कि मैं जिस प्रकार की पताका व्यवहार करती हूं वह शुभ फलदायिनी है?"

उत्तर—"नहीं, मैंने केवल यह कहा था कि वीरों की तरह अंगरेज़ों का सामना करो, मैं तुम्हारा अनुसरण करूंगी।"

प्रश्न—"अच्छा जो लोग तुम्हारे हाथ, पैर और परिच्छद को चूमते थे वे किस उद्देश से तुम्हारे पास आते थे?"

उत्तर—"वे अपनी इच्छा से ही आते थे। क्योंकि मैंने कभी उनका कोई अनिष्ट नहीं किया था। बल्कि जहां तक बन पड़ा है मैंने उनकी सेवा की है।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि कचन् के मनोनीत 'एसेसरों' मे से भी किसी किसी ने ऐसे आवान्तर प्रश्नों का प्रतिवाद किया था। किन्तु इस प्रतिवाद का कोई फल न हुआ; बल्कि इसका उलटा असर पड़ा। विचारालय में इन विरुद्ध-वादियों को जोन के अनुकूल मन्तव्य प्रकाश करने का अवसर देना कचन् ने उचित न समझा। उसने शीघ्र ही उन को पदच्युत कर दिया। इसके बाद, १० से १७ मार्च तक, जो कई एक बैठकें हुईं उनमें कचन् ने अति अल्प लायक 'एसेसरों' के साथ एक गुप्त कमरे में विचार किया। विचार का स्थान भी बदल दिया गया था। पहिले रॉयन के राजकीय महल में ही विचार हुआ करता था। किन्तु, अब, कचन के आदेशानुसार, वहीं की जेल के भीतर ही

विचार के लिए जगह ठीक की गई। वहाँ जनसाधारण के आने की मनाही हो गई। विचार-घर का दरवाज़ा बन्द करके जोन से नाना प्रकार के सङ्गत और असङ्गत प्रश्न किये गये।

१७ मार्च के बाद जो बैठकें हुईं उनमें विचारकों ने जोन से पूछाः—"माता-पिता की आज्ञा बिना घर छोड़ना क्या तुम्हारे लिए उचित था ?"

उत्तर—"वे मुझे क्षमा करेंगे। मैंने भगवान् का आदेश पालन किया था। इसलिए माता-पिता के आपत्ति करने पर भी घर छोड़ना मेरे लिए अनुचित न था। क्योंकि भगवान् की ऐसी ही आज्ञा थी।"

प्रश्न—"क्या जातीय पर्व-दिन को पेरिस नगर पर आक्रमण करना उचित था ?"

उत्तर—"अवश्य ही जातीय पर्व का पालन करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।"

प्रश्न—"बोवेय नगर के महल से तुम क्यों कूद पड़ी थी?"

उत्तर—"मैंने सुना था कि कम्पियन नगर के आबाल-वृद्ध वनिता सब बिना विचार के ही मार डाले जायँगे, और यह भी मालूम हुआ था कि मैं भी अंगरेजों के हाथ बेच डाली जाऊँगी। इस लिए उनके अधीन रहने की अपेक्षा मैंने मरना ही उचित समझा था।"

प्रश्न—"तुम जो अंगूठी पहनती थीं, क्या उसमें कोई ऐन्द्रजालिक शक्ति थी ? युद्ध-क्षेत्र में तुम बार बार उसे क्यों देखती थीं ?

उत्तर—"क्योंकि उसमें प्रभु ईसामसीह का नाम लिखा था।"

इसी तरह के नाना प्रकार के प्रश्न करके भी विचारक जोन को अपराधिनी प्रमाणित न कर सके। बाद में, यह प्रश्न किया गया कि तुम धर्म्ममन्दिर के अधिकारियों के सामने आत्म-समर्पण करने को राज़ी हो या नहीं? जोन ने इसके उत्तर में कहा:—"मैंने भगवत्-प्रेरित हो कर सब काम किये हैं। इस लिए मैं अपने समस्त कामों के लिए उसी के सामने आत्म-समर्पण करती हूं।" विचारकों ने फिर पूछा.—"और, धर्म्ममन्दिर के अधिकारियों के सामने ?"

प्रतिउत्तर में उसने कहा.—"मैं और कोई उत्तर न दूंगी।" जोन के इस प्रकार के उत्तर से विचारालय में बड़ी गड़बड़ी मचगई। विचारकों और एसेसरों में मतभेद होने लगा। एक एसेसर ने यह मत प्रकट किया कि जोन एसेसरों में मतभेद केवल एक ईश्वर के सिवा पोप बिशप आदि धर्म्मयाजकों में किसी को भी नहीं मानती। अन्य एक व्यवहार-विशारद व्यक्ति ने कहा—इस प्रकार से अभियुक्ता बालिका को किसी वकील के परामर्श लेने के अधिकार से वञ्चित रखना बहुत ही न्याय-विरुद्ध कार्य्य हुआ है। अन्य दो धर्म्मयाजकों ने यह राय दी कि जोन का विचार स्वयं धर्मगुरु पोप की देख-रेख में होना उचित है। जोन की भगवान् में आत्म समर्पण की उक्ति से उन्होंने यह समझा कि जोन सचमुच ही पोप को आत्म-समर्पण कर चुकी है। और इसी हेतु इस प्रकार का मनतव्य प्रकाश कर के जोन को, सङ्केत द्वारा, यह बतला देना कि उसका विचार स्वयं पोप के सम्मुख हो सकता है, उन्होंने अपना कर्तव्य समझा. और, यद्यपि असामी के साथ गुप्त-भाव से मिलना या असामी को किसी प्रकार का उपदेश देना उस समय नियम के विरुद्ध

प्रेसरों का सन्यास और कचन का क्रोध

था, तथापि, कचन् की अन्याय-पूर्ण विचार-प्रणाली के मूल में कुठाराघात करना आवश्यक समझ कर, उन्हों ने नियम के विरुद्ध कारागार में जाकर जोन को पोप के पास विचार-प्रार्थना करने का उपदेश दिया। उसके दूसरे दिन, पेशी होने के पहले ही, जोन ने पोप के पास यथाविधि विचार के लिए प्रार्थना की। कहना न होगा कि इस बात से कचन् को बहुत क्रोध हुआ और उसने उसी समय कारागार के पहरेदारों को बुलाकर पूछा कि "क्या कोई जोन से मिलने आया था?" कचन का क्रोध देख कर उन दोनों धर्मयाजकों और उक्त व्यवहार-विशारद सज्जन ने विचारालय में आना उसी दम से छोड़ दिया और प्रसेसरी का पद भी त्याग दिया। उनके पद-त्याग के साथ ही साथ सुविचार की जो सामान्य आशा थी वह भी जाती रही।

इधर कचन् ने जिहान् लोहियार नामके एक विख्यात और विज्ञ व्यवहार-जीवी अर्थात् वकील (Lawyer) को विचार सम्बन्धी सब कागज़-पत्र दिखाये। उस व्यक्ति ने सब कागज़-पत्रों को पढ़ कर कचन् के प्रतिकूल मत प्रकट किया और उसकी विचारपद्धति भी दोषयुक्त बतलाई। ऐसे प्रसिद्ध व्यवहार-जीवी सज्जन के इस प्रकार प्रतिकूल मत देने पर भी कचन् चुप न बैठ सका। जोन ने अब तक विचारकों के पूछे गये प्रश्नों के जो उत्तर दिये थे उन सब के आधार पर, एक कूट-बुद्धि व्यवहार-जीवी की सहायता से, कचन् ने कई एक अभियोग तैयार कर लिये। कचन् के मनोनीत कितने ही नये प्रसेसरों ने भी जोन के विरुद्ध राय प्रकट की। इसलिए उसकी सङ्कल्प-सिद्धि में विशेष बाधा न पड़ी।

इसके बाद, 'ईस्टरपर्व' के पूर्व सप्ताह में, जोन बीमार हो गई। इस सप्ताह के रविवार को धर्ममन्दिर की उपासना में योग देने के लिए उसका हृदय अतिशय व्याकुल हो उठा। किन्तु वह उस पर्वदिन में भी पाषण-प्राचीर-वेष्टित अर्थात् पत्थर के परकोट से घिरे हुए अन्धकारमय कारागार की निर्जन कोठरी में बन्द रक्खी गई। रविवार के बाद सोमवार भी बीत गया, तथापि कारागार का दरवाज़ा न खुला। फिर मङ्गलवार को वह विचारालय में लाई गई। इस दिन की बैठक में कचन् ने उसके अभियोग का सारा विवरण पढ़ सुनाया। विचारकों ने उसके पुरुष-वेश के सम्बन्ध में कहा कि, "जो अपनी जातिगत वेश-भूषा और आचार-व्यवहार त्याग देता है वह धर्मानुसार दोषी और ईश्वर की दृष्टि में घृणित है।' जोन ने रमणी होकर भी अपनी जातीय वेशभूषा त्याग कर पुरुषोचित वेश धारण किया है—यही विचारकों के निकट सब से बड़ा अपराध था। विचारकों के इस सिद्धान्त से उस समय की सामाजिक अवस्था शिक्षित व्यक्तियों की सङ्कीर्णता और धर्म-शास्त्र के मूल तत्वों की ओर उनकी उदासीनता, अच्छी तरह प्रकट होती है। जोनने विचारकों की इस उक्ति पर पहले तो कुछ न कहा। परन्तु पीछे से इसका यथार्थ उत्तर देने के लिए उसने एक दिन की मुहलत माँगी। किन्तु वह प्रार्थना स्वीकृत न हुई। तब जोन ने कहाः—"मैं ठीक नहीं कह सकती कि मैं इस वेश को कब तक त्याग सकूँगी।'

जोन पुरुष-वेश परित्याग करने को राज़ी क्यों न थी, यह बात वह रमणी-सुलभ-लज्जा के कारण विचारकों के सामने न कह सकी। पर असल बात यह है कि कारागार में उस के साथ नाना प्रकार के निष्ठुर व्यवहार किये गये थे।

उनका कुछ विवरण कारा-कहानी में लिखा जा चुका है। इसके सिवा तीन असभ्य सैनिक-पुरुष उस पर पहरा देने के लिए रात दिन उसके कमरे में तैनात रहते थे।

इधर जोन अधिक बीमार हो गई। बीमारी ही की दशा में ईस्टर के दिन उसने और सब खाने की चीजों के साथ साथ बिशप का भेजा हुआ मछली का एक टुकड़ा भी खा लिया था। इससे वह और भी अधिक बीमार हो गई और उसकी अवस्था शोचनीय हो पड़ी। कितने ही लोगों का अनुमान है कि बिशप ने इस क्लेशदायक विचार-भार से बचने की आशा से जोन को मछली के साथ विष दे दिया था। किन्तु अर्ल आफ वार्विक (Earl of Warwick) ने यह संवाद सुन कर कहा कि हम उसको कभी इस प्रकार से मरने न देंगे। जैसे हो सके उसको अच्छा करना ही होगा। खैर, अर्ल की कोशिश और विज्ञ चिकित्सकों की सहायता से जोन किसी तरह बच गई।

विष-प्रदान से जोन के प्राणनाश की चेष्टा

जोन धीरे धीरे अच्छी होने लगी। किन्तु वह इतनी दुर्बल हो गई थी कि बिछौने पर से सिर उठाने में भी उसे तकलीफ होती थी। इस अवस्था में १८ अप्रेल (सन् १४३१) को जोन जब रोग-क्लिष्ट-शरीर और अवसन्न-मन से निर्जन कारागार के एक कोने में पड़ी थी तब हृदयहीन विचारक वहाँ आकर उसको अपराध स्वीकार कराके आत्मसमर्पण करने के लिए फिर तङ्ग करने लगे। क्योंकि धर्मद्वेषिणी प्रमाणित करने से उसको सहज ही में प्राण-दण्ड दिया जा सकता था। किन्तु जोन

[illegible] की अन्यायपूर्ण [illegible] और नव विचारणा

पूर्ववत् ही दृढ़ता रक्खे रही। वह किसी प्रकार से भी अपने को धर्मद्वेषिणी स्वीकार करने को राज़ी न हुई। तब उन्होंने क्रोध से जोन को भय दिखला कर कहा,—'यदि तुम हमारे आदेशानुसार काम करने को राज़ी न होगी तो तुम्हें नाना प्रकार का कष्ट दिया जायगा और धर्मद्वेषिणी कह कर हम लोग तुम्हारा परित्याग कर देंगे।" रुग्णा बालिका ने क्षीण कण्ठ से दृढ़ता के साथ उत्तर दिया,-मैं सच्ची ईसाई हूं यथा-विहित ईसाई-धर्म में दीक्षित हुई हूँ और सच्चे ईसा-भक्त की तरह मृत्यु को आनन्द से आलिङ्गन करूँगी।

इसके बाद दो मई को फिर एक धर्मयाजक उसके पास आया और उससे धर्ममन्दिर के अधिकारियों के सामने आत्म-समर्पण करने के लिए कहा। जोन ने इस बार भी दृढ़ता के साथ उत्तर दिया कि, "जो स्वर्ग और मृत्युलोक का विधानकर्त्ता है,मैंने केवल उसीके सामने आत्म-समर्पण किया है।' धर्मयाजक ने इससे अधीर होकर कहा — तो हमलोग

शत्रुओं की धमकी जोन की निर्भीकता

भी तुम्हें जीते जी जलाकर मार डालेंगे। जबतक तुम्हारे शारीरिक दण्ड की व्यवस्था न की जायगी तबतक तुम हम लोगों के कथनानुसार काम न करोगी।" फिर ११ मई को वे लोग कारागार में गये और पहले का सा भय दिखला कर कहने लगे,—"जोन, अब भी रास्ते पर आ जाओ ! जल्लाद बुलाया गया है· अब की तुम्हें यथार्थ में कष्ट भोगने पड़ेंगे। जोन ने कुछ भी न डर कर वीरोचित ओजस्विता के साथ कहा —"भगवान ही मेरे जीवन का एकमात्र नियंता है। मेरा सारा दारोमदार उसी पर है। आप लोग यदि मेरे शरीर के टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे तो भी मैं कुछ न बोलूँगी।' जोन के ऐसे वीरोचित उत्तर

से कचन् की सारी चेष्टायें विफल हुईं। इधर पेरिस नगर के विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने, इस विचार का प्राथमिक विवरण पढ कर, जोन के प्रतिकूल मत प्रकाश किया और कचन् की विचार-पद्धति की प्रशंसा की। विश्व-विद्यालय के अधिकारियों से अनुकूल मत पाकर कुटिल-मति विचारकों और पसेसरों ने जोन को जीते जी जला देने का ही निश्चय किया। किन्तु, इस से भी उनके अंगरेज़-प्रभु विशेष सन्तुष्ट न हुए। क्योंकि जोन से एक स्वीकारोक्ति लिखाकर तथा उस से उसको धर्मद्वेषिणी प्रमाणित करके प्राणदण्ड देना, और फ़रासीसी राजा चार्ल्स ने एक धर्मद्वेषिणी बालिका के नेतृत्व में युद्ध किया और विजय प्राप्त किया है—यह कहकर उसको सभ्य जगत के सामने हीन बनाना ही उन लोगों का प्रधान उद्देश था। इसी लिए अंगरेज़ों ने जोन से स्वीकारोक्ति लिखाने के लिए एक और चतुर धर्मयाजक को उसके पास भेजा। किन्तु जोनने उससे भी कहा—"यदि मुझे अग्निकुण्ड में भी फेंक दोगे तो भी जो कुछ कह चुकी हूँ उसी पर दृढ रहूंगी।"

इस प्रकार जोन के विषय में कोई अन्तिम मीमांसा न होते देखकर इङ्गलैंड का कार्डिनल (Cardinal of Winchester) अस्थिर हो उठा। इधर जनसाधारण की सहानुभूति जोन के साथ धीरे धीरे बढ़ रही थी। इस लिए कार्डिनल ने खुली जगह में सर्वसाधारण के सामने विचार समाप्त करने का निश्चय किया। इसके लिए २३ मई को रोयन नगर के एक प्रसिद्ध धर्ममन्दिर के पास एक बहुत बड़ा मैदान ठीक किया गया। कार्डिनल स्वयं वहां उपस्थित था। विचारक, धर्म्म-याजक, पसेसर और व्यवहार-जीवियों

अर्थात् वकीलों के सिवा और भी बहुत से लोग विचार-कार्य्य देखने के लिए वहाँ जमा हुए थे। विचार आरम्भ होने के पहिले, कचन् के पक्ष के एक मनुष्य ने, जोन के पास जाकर कहा—"जोन, अब भी समय है। हम लोगों के उपदेशानुसार यदि तुम केवल एक स्वीकारोक्ति पर हस्ताक्षर कर दोगी तो हम तुमको निश्चय ही अंगरेज़ों के हाथ से मुक्त करके धर्म्ममन्दिर की देख-रेख में रख देंगे।" धर्म्म-मन्दिर में रहने को मिलेगा, यह सुन कर वह राजी हो गई। किन्तु वह लिखना न जानती थी इस लिए उन लोगों के दिये हुए कागज़ पर उसने अपने हाथ से एक 'क्रूस' चिह्न अङ्कित कर दिया। अंगरेज़ों की इच्छा पूर्ण हुई। परन्तु जोन ने जिस आशा से स्वीकारोक्ति की थी वह शीघ्र ही स्वप्न में परिणत हो गई। प्रधान विचारपति कचन् दण्डाज्ञा सुनाने के लिए उठ कर खड़ा हुआ और कहने लगा—'जोन जिस कारागार से आई हो वहीं लौट जाओ और अपने पाप के प्रायश्चित्त-स्वरूप मृत्यु तक अनुताप से दिन बिताओ।" यह प्रतारणा—अर्थात्, विश्वास-घात-पूर्ण दण्डाज्ञा सुन कर जोन बड़ी निराश हुई। जिन पशु-प्रकृति सामरिक कर्मचारियों के हाथ से आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए उसने नितान्त अनिच्छा से इस प्रकार स्वीकारोक्ति की थी फिर उन्हीं के आधीन रह कर दिन बिताने होंगे, यह जान कर उसने उसी समय अपनी स्वीका-रोक्ति लौटा ली इससे सैनिकों में बड़ी उत्तेजना फैली और विचारकगण भी बड़ी कठिन समस्या में पड़ गये। अतएव उस

जोन की स्वीकारोक्ति

विचारकों का विश्वासघात और जोन का स्वीकारोक्ति-प्रत्याहार

दिन विचार का कार्य रोक दिया गया और जोन कारागार में भेज दी गई।

उस रोज़ रात को जोन जब मरदाने कपड़े उतार और रात के कपड़े पहन कर अपने कमरे में सोने चली गई तब कर्मचारियों ने सलाह करके उसके मरदाने कपड़े हटा कर शत्रुओं का नया षड्यन्त्र वहाँ जनाने कपड़े रख दिये। इसीलिए दूसरे दिन उसको विवश होकर जनाने कपड़े पहिनने पड़े। दूसरे दिन फिर जनाने कपड़े हटा कर उन लोगों ने वहाँ मरदाने कपड़े रख दिये। सवेरे उठ कर उसने देखा कि वे कपड़े वहाँ नहीं है। तब फिर उसने मरदाने कपड़े पहन लिये और पुरुष-वेश मे रहने लगी। इस से उनकी अभीष्ट-सिद्धि का पथ सरल हो गया। क्योंकि ईसाई-धर्म्मशास्त्रानुसार ऐसा व्यवहार बहुत दूषित और प्राणदण्ड के योग्य है। इसी लिए दूसरे दिन धर्माध्यक्ष कचन्, धर्माधिकरण के प्रतिनिधि और अन्यान्य एसेसर कारागार में जोन से मिलने गये। उन्हें देख कर जोन ने कहा—"दूसरा कपड़ा न मिलने से मै फिर पुरुष-वेश में हूँ। मैं अब भी यह वेश छोड़ने को तैयार हूँ। मुझे इस कारागार से धर्म्ममन्दिर में भेज दीजिए।" किन्तु उसकी इन बातों पर विचारकों ने कुछ भी ध्यान न दिया।

अग्नि-कुण्ड में जोन।

(१)

विचार का अन्त और प्राण-दण्ड की आज्ञा।

२९ मई को कचन् ने यह घोषणा की कि कल धर्म-द्वेषिता के अपराध में जोन का जीवित शरीर अग्निकुण्ड में जला दिया जायगा। रौयन नगर के एक पुराने बाज़ार में वध-स्थान निश्चित किया गया। ३०मई को सबेरे ९बजे जोन रमणी-वेश में वध्य-भूमि में लाई गई। वहाँ तीन-मञ्च बनाये गये थे। एक पर इंगलेंड का राजसिंहासन प्रतिष्ठित था, दूसरे पर धर्माध्यक्ष कचन्, धर्माधिकरण के प्रधान प्रतिनिधि, एसेसर और धर्मयाजकगण बैठे थे। तीसरा मञ्च जलने वाली लकड़ियों के ढेर से प्रस्तुत किया गया था। उस पर एक लम्बी लकड़ी के साथ वीर बालिका जोन खड़ी की गई थी। सारा शरीर उसका ज़ञ्जीर से जकड़ा हुआ था। उसके सिर पर एक लकड़ी के टुकड़े में 'स्वधर्म-त्यागिनी, अधर्म-द्वेषिणी, मूर्तिपूजक' आदि शब्द लिखे हुए थे।

एक पुरोहित ने पहले यथारीति उपासना करके जोन से कहा:—"जाओ जोन, शान्ति से यह लोक त्याग करो। स्वधर्म-त्यागिनी हो, इस लिए हम लोग तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते।" जोन ने घुटने टेक और दोनों हाथ जोड़

कर कुछ देर तक ईश्वर की आराधना की। इसके बाद वह उपस्थित जनता को लक्ष्य करके कहने लगीः—"आप लोग मेरी आत्मा के कल्याण के लिए भगवान् से प्रार्थना कीजि-एगा।' उसने ऐसे आवेग से ये शब्द कहे कि उसके शत्रु भी अपने आँसू न रोक सके। देश-द्रोही कचन् के निर्लज्ज नेत्रों से भी कई बूँद आँसू के टपक पड़े। इसके बाद उसने आँसू पोछ कर दण्डाज्ञा सुनाईः—"तुमने शैतान द्वारा परिचालित हो कर अपकर्म्म किया है। इसलिए हम लोग तुमको 'स्वधर्म-त्यागिनी' समझ कर प्राण-दण्ड की आज्ञा देते हैं।"

अन्तिम दृश्य।

——:o:——

वीरांगना का आत्मत्याग।

वीर–बालिका ने मृत्यु को अनिवार्य जान कर भगवान् पर अपने को छोड़ दिया और एक 'क्रूश—दण्ड' माँगा। एक अंगरेज़ ने अपने हाथ की छड़ी से एक 'क्रूश' बनाकर उसको दे दिया। जोन उसे आशीर्वाद की तरह भक्ति के साथ हृदय में धारण करके मृत्यु के लिए तैयार हो गई। इधर दोपहर हो गई। मध्याह्न की कड़ी धूप से समस्त पृथिवी उत्तप्त हो उठी। इसी समय जोन लकड़ियों के जिस ढेर पर खड़ी थी उसमें 'सैनिकों की' आज्ञानुसार घातक ने आग लगा दी। देखते ही देखते अनल-शिखा ने संहार–मूर्ति धारण करके वीराङ्गना का शरीर स्पर्श किया। जोन पहले तो शङ्कित होकर पानी पानी कह कर चिल्ला उठी। किन्तु दूसरे ही क्षण में उसने वह दुर्बलता त्याग दी। उसके हृदय में एक नवीन बल का सञ्चार हो आया। मानवी देवी के समान बोल उठीः—"निश्चय ही मुझे धोखा नहीं हुआ, जो वाणी मैंने सुनी थी वह सत्य ही भगवद्वाणी थी।" मुहूर्त भर में विश्व-ध्वंशी अनल–शिखा ने क्षण–जन्मा देव–बाला के पुण्य–[illegible]र को भस्मीभूत कर दिया।

उपसंहार।

(१)

आत्मोत्सर्ग का फल।

तपस्विनी वीराङ्गना जन्मभूमि को 'स्वर्गादपिगरीयसी' समझ कर पूजती थी, स्वजाति को प्राणों से भी अधिक प्रेम करती थी और देवता की तरह राजा की भक्ति करती थी। स्वदेश, स्वजाति और सम्राट् के हित के लिए उसने जीवन के उषाकाल में ही स्वाधीनता देवी के मङ्गलमय मन्दिर में हँसते हुए आत्मदान किया। उस आजन्म-पवित्र वीर-ललना के अपाप-स्पर्श देह की पवित्र रुधिर धारा से देवी का मन्दिर रञ्जित हुआ। बहुत दिन की जमा हुई पाप कालिमा धुल गई और पराधीनता की मलिनता दूर हो गई। विधाता के इङ्गित से उसने जो महाव्रत ग्रहण किया था उसे उसने भोग-वासना त्याग कर तथा पार्थिव स्नेह के बन्धनों को छिन्न करके पूरा कर दिया। अरलिन्स नगर को विदेशी दासत्व-शृङ्खला से मुक्त और सम्राट को राज-सिंहासन पर प्रतिष्ठित करके जन्मभूमि की स्वाधीनता का पथ सरल कर देना ही उसके जीवन

(हाशिये पर: वीराङ्गना के चरित्र की आलोचना)

का वृत था । यही उसके लिए विधाता की आदेश-वाणी थी। उसने निष्काम और निःस्वार्थ भाव से उस स्वर्गीय आदेश का पालन किया। वह जीवित अवस्था में ही जन्म भूमि को बहुत कुछ शृङ्खला-मुक्त देख गई।

डि-फ्लावी नाम के एक अर्थपिशाच देश-द्रोही की विश्वासघातकता और षड्यन्त्र के कारण जोन शत्रुओं के हाथ में पड़ गई थी। बहुत दिन तक नाना प्रकार की तक-

स्मृति पूजा में बाधा, चिता-भस्म का नदी में फेंका जाना

लीफें सहने के बाद वह आग में फेंकदी गई। उसका नश्वर शरीर अनल कुण्ड की ज्वाला-मयी शिखा से भस्मीभूत हो गया। ऐसा न हो कि वीराङ्गना की स्मृति-पूजा करके फ़रासीसी जाति फिर कहीं स्वदेश-प्रेम से सजीव हो उठे इस डर से इङ्गलैंड के एक प्रधान धर्माध्यक्ष (Cardinal of Winchester) के आदेशानुसार जोन की चिताभस्म भी नदी में फेंक दी गई। जिस अमिततेजा वीर-ललना की अलौकिक वीर्यवत्ता से अंगरेज़ों की वीर्यवह्नी तेजहीन हो गई थी, जिसकी उत्तेजना से फ़रासीसी जाति जीवित हो उठी थी, जिस के आत्मत्याग की महिमा से मण्डित दृष्टान्त के बदौलत विश्वजगत स्तम्भित होगया था, उस शत्रु-रमणी की स्मृति का शेष-निदर्शन तक पृथिवीतल से विलुप्त करना ही अंग-रेज़ों ने उचित समझा। इसी लिए वीराङ्गना के पवित्र श्मशान-क्षेत्र की भस्मराशि की पुण्य स्मृति का अन्तिम चिह्न भी उन्होंने

आदर्श जीवन की स्मृति लोप नहीं होती

न रहने दिया। किन्तु चिता-भस्म के साथ साथ यदि आदर्श जीवन की स्मृति लोप होती तो जगत में आत्म-त्याग का फल ही व्यर्थ होता।

इङ्गलैंड के ही एक चिन्ताशील मनीषी ने आत्म-त्याग की महिमा कीर्तन करते हुए कहा है:—"The martyr may perish at the stake, but the truth for which he dies may gather new lustre from his sacrifice The partriot may lay his head upon the block, and hasten the triumph of the cause for which he suffers The memory of a great life does not perish with the life itself but lives other minds *"

अर्थात्, धर्म-प्राण साधु प्राण-दण्ड से नष्ट हो सकते है, किन्तु जिस सत्य के लिए वे प्राण त्यागते हैं वह इस आत्मोत्सर्ग के प्रभाव से नव-प्रभा से मण्डित हो जाता है। देशभक्त वीर खड्ग के नीचे अपना सिर दे सकता है, किन्तु जिस उद्देश-साधन के लिए वह यन्त्रणा सहता है, वह इस प्रकार शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है। किसी महापुरुष की स्मृति उसके जीवन के साथ साथ कभी लुप्त नहीं होती, किन्तु अन्य हृदयों में वह सदा बनी रहती है।

(२)

ग्रीस की स्वाधीनता-प्राप्ति

फरासीसी जाति के परवर्त्ती २२ वर्षों के इतिहास की आलोचना करने से पाश्चात्य विद्वान की इस ज्ञान-पूर्ण उक्ति

* See Duty by Smiles, chapter V Page 94

फ्रान्स का परवर्ती २२-
सालों का मन्तिम
विवरण

की सत्यता प्रमाणित होती है। जोन ने फ्रांस के भिन्न भिन्न नगरों का शत्रुओं से उद्धार करके और अङ्गरेज़ों के प्रधान प्रधान सेनापतियों को युद्ध में पराजित करके जन्मभूमि के पवित्र अंग से दासत्व-शृङ्खला को बहुत कुछ तोड़ दिया था, परन्तु विदेशियों को वह वहाँ से एक दम न निकाल सकी थी; क्योंकि समस्त देश को दासत्व-मुक्त करना उसका विधाता-निर्दिष्ट-वृत न था। वह केवल स्वाधीनता-देवी के मङ्गलमय मन्दिर की प्राणप्रतिष्ठा करके स्वजाति की मुक्ति का पथ निष्कण्टक कर जाने के लिए ही ईश्वरादिष्ट होकर कर्म-क्षेत्र में अवतीर्ण हुई थी। उस समय भी फ्रांस पर अंगरेज़ों का बहुत कुछ अधिकार था। नार्मेंडी, पेरिस और पैंटेज आदि प्रधान प्रधान शहरों में उस समय भी अंगरेजों की तूती बोल रही थी। इसके सिवा वे जगह जगह क़िले बनाकर बचे-खुचे अधिकारों की रक्षा दृढता से करने की कोशिश करते जाते थे किन्तु विधि के विधान से वह चेष्टा व्यर्थ हुई। उस जातीय दुर्दिन में भी फ्रांस में राजा, प्रजा और सामन्तों (Dukes) में अन्तर्विप्लव का अन्त न हुआ था। किन्तु वीराङ्गना के आत्मोत्सर्ग के बाद ही, अर्थात् सन् १४३१ से १४५० तक, ९ सालों के अन्दर ही, फ्रान्स के राजनैतिक-गगन मे विधाता की कृपा से अमन-चैन की वायु बहने लगी। इस के फल से फ़रासीसियों का पारस्परिक मनोमालिन्य दूर हो गया। फ्रांस के सामन्तगण घरेलू झगडे भूल गये और राजा के

फरासीसियो का मेल
अंगरेजों को पेरिस
निकाल देना

साथ आकर मिल गये। समस्त फ़रासीसी जाति ने इस जातीय दुर्योग में फिर आलोक का पता पाया। विच्छिन्न देशवासियों के

इस शुभ-मिलन के फल से अंगरेज़ पेरिस नगर से निकाल दिये गये। फ्रांस-राज्य के एक प्रसिद्ध नगर से उनका आधिपत्य सदा के लिए लुप्त हो गया । फ्रांस के राजनैतिक गगन में उदीयमान स्वाधीनता-सूर्य्य की ज्योतिर्मय किरणों से इङ्गलंड की परराष्ट्रीय प्रभुत्व-प्रभा मलिन होने लगी ।

इस जातीय मिलन के बाद से राज्य में सभी प्रकार के कल्याणों का सूत्रपात हुआ। इसके बाद सन् १४४० से १४५३ तक फरासीसी राजा सप्तम चार्ल्स ने राज्य की सब प्रकार की उन्नतियों पर ध्यान दिया । उसने शासन-विभाग और सामरिक-विभाग में तरह तरह के सुधार किये। इस सुधार के बल से राज्य-कार्य्य क्रमबद्ध हो गया और फ्रान्स की शक्ति बढ़ गई। इस लिए और अधिक दिनों तक अङ्गरेज़ वहां न टिक सके। उनकी शक्ति क्रमशः क्षीण होती गई और सन् १४५३ ई० में वे देश से बिलकुल निकाल दिये गये। फ्रान्स के पैरों से विदेशी दासत्व की बेड़ियां निकल गईं । देवी जोन आत्मोत्सर्ग द्वारा पतित स्वदेशवासियों में जो अक्षय शक्ति का सञ्चार कर गई थी उसी के फल से फ्रान्स स्वाधीनता देवी के मङ्गल-मन्दिर में प्रतिष्ठित हुआ और फ्रान्स राज्य पराधीनता के नाग-पाश से मुक्त होकर अपूर्व स्वर्गराज्य में परिणत हो गया तथा फरासीसी जाति में देवोचित सौभाग्य का सूर्य उदय हुआ।

(३)

देवी की स्मृति--पूजा।

सन् १४२६ ई० में देवी जोन जब शत्रुओं द्वारा कारागार में बन्द थी तब फ्रांस के राजा और प्रजा इतने मोहाविष्ट थे कि उन्होंने वीराङ्गना की मुक्ति के लिए किसी प्रकार की चेष्टा न की थी। पतित जाति के इस प्रकार मोहावेश और राजा की इस प्रकार उदासीनता के दृष्टान्त इतिहास में कम नहीं है। जो हो, स्वाधीनता-प्राप्ति के साथ ही साथ फ्रांस के अधिवासियों और राजा चार्ल्स ने स्वर्गगत वीरांगना की स्मृति-पूजा का आयोजन और व्यवस्था नाना प्रकार से करके पूर्वकृत पापों का प्रायश्चित कर लिया।

वीर बाला की मृत्यु के १६ साल बाद (१४४६ में) चार्ल्स जब रोयन नगर को अंगरेजों के दासत्व से मुक्त करके एक प्रकार निरापद हो गया तब उसने सब से पहले उन नृशंस विचारकों के पापानुष्ठान का आमूल वृतान्त संग्रह करने के लिए एक प्रतिनिधि नियुक्त किया उस समय जो लोग उस विचार-कार्य में सम्मिलित थे उन सब की साक्षी ली गई। इसके बाद इस अनुसन्धान का लिखित विवरण अनेकानेक विद्वान और बहुदर्शी व्यवहार-जीवी सज्जनों को दिखलाया गया और उनके मतामत पूछे गये। विज्ञ व्यक्तियों ने अच्छी तरह परीक्षा करके वीराङ्गना-सम्बन्धी विचार-पद्धति को दोषयुक्त बत- और उस नृशंस दण्डाज्ञा को न्याय-विगर्हित तथा कहा। राजा चार्ल्स इस प्रकार अनुकूल मत

राजा की कर्तव्य-परायणता, वीरांगना की निर्दोषिता

पाकर चुप न रहा। उसने सर्वसाधारण के सामने पूत-चरित्रा वीराङ्गना को निर्दोष प्रमाणित करना आवश्यक समझा और इसी लिए प्रधान प्रधान धर्मयाजकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। अन्त में सन् १४५६ ईसवी की ७ जुलाई को, राज्य के प्रसिद्ध प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ याजकों और मन्दिरों के अध्यक्षों ने रॉयन नगर के धर्ममन्दिर में एक होकर इस प्रकार घोषणा की:—जोन के विरुद्ध लगाया हुआ धर्मद्वेषिता और पैशाचिक वृत्ति का अभियोग मिथ्या, विचार-पद्धति भ्रान्ति तथा शठता-मूलक, और, दण्डाज्ञा न्याय-विरुद्ध हुई है। इसके सिवा लोगों ने वीराङ्गना को समर्पण कर के देश-द्रोहिता का परिचय दिया था और जिन लोगों ने उस नृशंस विचार-कार्य्य में सहायता कर के घोरतर पापानुष्ठान किया था उनको भी उन्होंने देश-द्रोही बताया।

रॉयन नगर के जिस मन्दिर में बैठकर शत्रुओं ने उस वीराङ्गना पर दण्डाज्ञा का प्रचार किया था आज २६ साल बाद, उसी मन्दिर में फ्रांस के प्रसिद्ध धर्मयाजकों ने मिलकर उसे न्याय-विरुद्ध सिद्ध और प्रकट किया।

यह पहले कहा जा चुका है कि वीर्यवती वीराङ्गना ने अलौकिक साधना के बल से अरलिन्स नगर को पराधीनता के नागपाश से मुक्त करके सारे फ्रान्स की स्वाधीनता का पथ निष्कन्टक कर दिया था। अतएव उसके देशवासियों ने कृतज्ञता के निदर्शन स्वरूप उसकी वृद्धा जननी के पालन-पोषण के लिए एक वृत्ति देना स्थिर किया। सन् १४३८ में इस वृत्तिदान का

बन्दोबस्त हुआ, जिसे वह मरणपर्यन्त सुख से भोगती रही। इसके बाद १४५८ईसवी में ज्वराग्रस्त माता के मरजाने से वह वृत्ति बन्द कर दी गई। इस के सिवा फ्रान्स के अधिवासियों ने नाना स्थानों में वीराङ्गना की मूर्त्तियाँ प्रतिष्ठित करके उसकी स्मृति-पूजा की। रायन नगर के जिस स्थान पर वह अनलकुण्ड की ज्वालामयी शिखा से भस्मीभूत की गई थी, देव-बाला के पदरज-पूत उस पवित्र श्मशान-भूमि में उसकी स्वर्गगत-आत्मा के सन्मान के लिए सन् १४५६ ईसवी में एक पत्थर का बना हुआ 'क्रुशदण्ड' स्थापित किया गया। अब उसे हटा कर वहाँ पर उक्त देवी की एक पत्थर की मूर्ति स्थापित की गई है। आज तक वह पवित्र श्मशान भूमि 'देवी जोन' के नाम से विख्यात है।

ता० ८ मई का उत्सव

सन् १४२६ की ८ मई को वीराङ्गना ने अरलिन्स नगर को विदेशी दासत्व-शृङ्खला से मुक्त किया था। नगरवासी परलोकगत वीरबाला के स्मरण के लिए हरसाल उसी दिन उत्सव करते हैं और धर्ममन्दिर में विशेष रूप से उपासना होती है तथा प्रसिद्ध वक्ता सुललित भाषा में वक्तृता देकर वीराङ्गना का महात्म्य कीर्त्तन करते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में फ्रान्स के धर्ममन्दिरों के अध्यक्षों और याजकों में यह मत प्रबल हुआ कि देवी जोन 'साधु' (Saints) श्रेणी में अङ्कित की जाय इस लिए सन् १९०३ ईसवी में एक प्रस्ताव यथारीति उठाया गया। दूसरे साल की ६ जनवरी को वीराङ्गना को प्रकाश्य घोषणा के द्वारा 'साधु' पदवी प्रदान की गई*। इसके

*See Encyclopaedia Britannica, Vol. XV. venth edition.

सिवा फ्रान्स की सेना में वीरांगना की पवित्र स्मृति आज तक पूजित हो रही है। सशस्त्र सैनिक जोन के जन्म ग्राम के पास से जाते आते हुए ससम्मान अभिवादन करके तेजस्विनी वीर ललना की स्वर्ग-गत आत्मा का अभिनन्दन करते है। वीर पूजा की कैसी सुन्दर पद्धति है ! पूज्यों की स्मृति अर्चना का कैसा मनोज्ञ निदर्शन है !

फरासीसी सेना में वीराङ्गना की स्मृति-पूजा

(४)

वीरांगना के सम्बन्ध में मनीषियों के मतामत ।

अब हम चिन्ताशील मनीषियों के मतामत की आलोचना करके पुस्तक समाप्त करेंगे। यद्यपि जोन इंगलैंड की शत्रु थी और अंगरेज़ों को युद्ध में पराजित करके इंगलैंड की शक्ति को नष्ट कर चुकी थी। तथापि अनेक चिन्ताशील और लब्धप्रतिष्ठ अंगरेज़ लेखकों ने इस शत्रु-रमणी के प्रसङ्ग की पक्षपात-हीन आलोचना करके, सत्य-प्रियता और उदारता का परिचय दिया है। जिन मनुष्यों के मतामत की आलोचना की जा रही है उनमें विश्व-विश्रुत कवि शेक्सपियर के सिवा अन्य सबने देवी जोन के प्रति उपयुक्त सम्मान प्रदर्शित किया है। टर्नर (Turner) ग्रीन (Green) आदि इतिहास-लेखक पक्षपात रहित होकर उस समय का विवरण लिख गये है। चिन्ताशील मनीषी स्माइल्स् (Smiles) ने वीराङ्गना जोन सम्बन्धी घटना का वर्णन श्रद्धा के साथ लिख कर सहृदयता का परिचय दिया है। इंगलैंड का प्रसिद्ध कवि सूदे (Southey) इस वीर ललना के महान् गुणों से मुग्ध होकर

अंग्रेज़ लेखकों की सहृदयता

प्रसिद्ध अंगरेज कवि 'सदे की उक्ति'

निरपेक्ष और उदार भाव से उसकी महिमा वर्णन कर गया है। वह अपने 'जोन-ऑव-आर्क' नाम के काव्य-ग्रन्थ की भूमिका में लिखता है :—

"It has been established as a necessary rule for the epic that subject should be national. To this rule I have acted in direct opposition and chosen for the subject of my poem the defeat of the English. If there be any readers who can wish success to an unjust cause I desire not their approbation."

अर्थात्, "महाकाव्य की रचना के सम्बन्ध में एक ऐसा नियम सा चल पड़ा है कि काव्य के वर्णित विषय जातीय भाव के परिपोषक होने चाहिए। मैंने बिल्कुल इस नियम के विरुद्ध आचरण किया है और 'अंगरेजों का पराजय' ही मैंने अपने काव्य का वर्णनीय विषय मनोनीत किया है। यदि पाठकों में ऐसा कोई हो जो केवल इसलिए ही कि उसका स्वदेश किसी न्यायविरुद्ध कार्य्य में लगा था जानकर उस अन्याय उद्देश की सफलता की इच्छा कर सकता है, तो मैं उसके मत का अनुमोदन या प्रशंसा नहीं करता।" अंगरेज कवि का यह कथन महानुभवता का परिचायक है, इसमें सन्देह नहीं। इसके सिवा उक्त काव्य-ग्रन्थ के अनेक स्थलों में उसने देवी की भूरि भूरि प्रशंसा की है और उसको ईश्वर प्रेरित (Missioned maid) ईश्वरीय प्रतिनिधि स्वीकार किया है।‡ अन्य एक लेखक, इंगलैंड के एक प्रसिद्ध मासिक पत्र

‡ See Robert Southey - Joan of Arc Book II 38 & Book III Page 50

में वीराङ्गना के चरित्र की आलोचना करते हुए कहा गया है कि जोन ने जिस प्रकार अलौकिक वीरत्व और तेजस्विता का परिचय देकर स्वदेश को दासत्व-मुक्त किया है वैसा दृष्टान्त इतिहास में विरला ही मिलेगा। आज तक संसार में क्या स्त्री, क्या पुरुष, कोई भी इस प्रकार कार्य्य-साधन नहीं कर सका। आज जो फरासीसी जाति, जातीय भावों से ओतप्रोत होकर एक पराक्रान्त जाति में गठित देख पड़ती है उसकी जड़ में इस देवी के महान् जीवन की पवित्र स्मृति वर्त्तमान है। * एक प्रसिद्ध जर्मन कवि देवी जोन के जीवन की आलोचना करते हुए कहता है—

गद्य के सामयिक पत्र [illegible] की आलो- [illegible]

'Who thirst now for thy blood will worship thee.' अर्थात्, आज जो तुम्हारे रक्तपान के लिए लालायित हो उठे हैं एक दिन वही तुम्हारी पूजा करेंगे। कवि की भविष्यद्वाणी सचमुच सफल हुई है। जिस अंगरेज़ जाति के पूर्वज एक दिन देवी के रक्तपात से पृथिवी को कलंकित करने के लिए लालायित हो रहे थे, उन्हीं के वंशजों ने उसके जीवन की आलोचना करते हुए उसकी स्मृत पूजा की है। किन्तु

---

* "Never in the history of the world, has such a task been accomplished by any other mortal being man or woman It was her spirit and the memory of her life that her countrymen created a nation." (Joan of Arc by [illegible] Parker, in the English illustrated Magazine [illegible] August 1908)

पहले ही कहा जा चुका है कि महाकवि शेक्सपियर ने इस जगत्पूज्य देव-बाला की अवमानना की है। उसने अपने एक नाटक के कई स्थलों पर देवी जोन को 'भूष्टा', 'पिशाच-सिद्धा' आदि जघन्य शब्दों से सम्बोधित किया है।

शेक्सपियर द्वारा ग्लानि-सूचक भाषा का प्रयोग

जोन के सदृश पवित्र आत्मा धार्मिक और साधु वीराङ्गना के प्रति इस प्रकार की भाषा का प्रयोग कवि की सङ्कीर्णता या उदारता का बोधक हुआ है, इसका निर्णय करना कठिन नहीं है। कहना न होगा कि इस प्रकार के द्वेषपूर्ण वाक्यों से आदर्श-जीवन की स्मृति मलिन होना तो दूर की बात है किन्तु अधिक उज्वल हो जाती है। फरासीसी विद्वानों में भी प्रसिद्ध इतिहास-लेखक लेमर्टाइन और 'मिचेलेट' ने वीराङ्गना की पवित्र जीवन-कथा श्रद्धा के साथ लिख कर सच्चे स्वदेश-प्रेम का परिचय दिया है। 'मिचेलेट' ने एक स्थान पर लिखा है कि—

फरासीसी इतिहासज्ञों का मत

Yes, Whether considered religiously or patriotically, Jeanne Darc was a Saint

अर्थात्, धार्मिक या स्वदेशहितैषिता, जिस किसी भ[ाव] से देखा जाय, जोन आव् आर्क 'साधु' (Saint) कह[ने] के योग्य है। हमारे भारतीय लेखकों ने भी उसे 'फ्रांस की

देवी' आदि कह कर सम्बोधित किया है। 'एक भारतीय लेखक ने तो उसके देश-प्रेम की तुलना महात्मा बुद्ध के विश्व-प्रेम से की है। *

सच है, आदर्श जीवन की स्मृति कभी लुप्त नहीं होती। यही कारण है कि देश विदेश, पृथिवी की समस्त सभ्य जातियों में, देवी जोन की स्मृति पूजित होती आ रही है। धन्य देवी जोन! धन्य तेरा स्वदेश-प्रेम! धन्य तेरी राजभक्ति! धन्य तेरा भगवत्-प्रेम! तेरी साधना सफल हुई है। किशोर अवस्था में जिस महाव्रत को ग्रहण करके तू कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हुई थी यौवन के पूर्व ही उसका उद्यापन करके अमरलोक को प्रस्थान कर गई। भाग्यवान है वह माँ—जो तुझे गर्भ में धारण करके पवित्र हुई; महान् है वह जाति—जिसने

---

* China in Asia and France in Europe, are the two countries that have best known how to make the public spirit into religion. This is the fact that made Joan of Arc a possibility. A peasant girl in a remote village could brood over the sorrows of her country till she was possessed by the feeling that there was much pity in Heaven for the fair realm of France. An idea like this was like the compassion of a Buddha, and nowhere but in France could it have been applied to the country. (Nation making—in Karmayogin Vol 1 No 36)

तुझे 'अपना' कहने का गौरव पाया, धन्य है वह श्मशान-भूमि—जिसकी धूलि के कणों के सङ्ग तेरी पुण्य-स्मृति जड़ित है; और पवित्र है उस नदी का जल—जिसके सङ्ग तेरे चिता की राख सदा के लिए घुल गई है।

समाप्त।

गणेश शङ्कर विद्यार्थी द्वारा 'प्रताप' प्रेस, कानपुर में मुद्रित

प्रताप कार्य्यालयकी कुछ पुस्तकें।

जेलके अनुभव (म० गांधी लिखित)	।≈)
डेवीजोन अर्थात् स्वतंत्रता की मूर्ति	।≈)
भारत के देशी राष्ट्र	।।।)
राष्ट्रीय वीणा	।।)
युद्ध की कहानियां	।)
जर्मन जासूस की राम कहानी	।)
हमारा भीषण ह्रास	≡)
भीष्म नाटक	।≈)
कृष्णार्जुन युद्ध (नाटक)	।)
कृषक क्रन्दन	/)।।
दादाभाई नौरोजी	≈)।।
रानाडे की जीवनी	≈)।।
स्वराज्य पर मालवीय जी	।)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्रनाथ	।)
कलकत्ते मे स्वराज्य की धूम	।)
स्वराज्य-साहित्य-माला	

मेनेजर, प्रताप कार्य्यालय, कानपुर।

वन्दे मातरम्

हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला का ११ वाँ ग्रन्थ

स्वतन्त्रता की झन्कार ।

प्रथम भाग

[भारत के राष्ट्रीय कवियों की देश-भक्ति पूर्ण कविताओं का संग्रह]

संग्रहकर्ता और प्रकाशक

जीतमल लूणिया

हिन्दी साहित्य मन्दिर
आगरा

मिलने का पता—
हिन्दी साहित्य मन्दिर, इन्दौर

प्रथम बार] सितम्बर १९२१ [मूल्य ॥)

पहिले इसे अन्त तक ज़रूर पढ़ लीजिये।

हिन्दी भाषा में राष्ट्रीय साहित्य की बड़ी कमी है। इस अभाव को पूरा करने के लिये हम राष्ट्रीय पुस्तकें प्रकाशित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु इस कार्य्य में देशबन्धुओं की सहायता की बड़ी आवश्यकता है। अतएव निवेदन है कि कम से कम इस "नवयुग ग्रन्थमाला" के आप स्थायी ग्राहक होकर हमारी सहायता कीजिये। स्थायी ग्राहकों में नाम दर्ज कराने के लिये केवल एक दफा आठ आने आपको भेजने पड़ेंगे परन्तु इससे आपको कितने लाभ होंगे सो सुनिये।

स्थायी ग्राहक होने से अपूर्व लाभ एकबार पढ़ जाइये।

(१) 'नवयुग ग्रन्थमाला' से प्रकाशित सब पुस्तकें पौनी कीमत में मिलेगी।

(२) हमारे यहाँ से जो पुस्तकें निकलें उनमें से आप को जो पसन्द हो ले, न पसन्द हो, न लें। कोई बन्धन नहीं।

(३) हमारे यहाँ सब जगहों की हिन्दी की सब प्रकार की उत्तम पुस्तकें भी मिलती हैं इनमें से आप जो पुस्तकें हमारे यहाँ से मँगावेंगे, प्रायः उन सब पर एक आना रुपया कमीशन दिया जावेगा।

(४) हमारे यहाँ जो नई पुस्तकें आवेंगी उनकी सूचना बिना पोस्टेज लिये ही घर बैठे आपको देते रहेंगे।

अब आप सोचिये कि स्थाई ग्राहक बनने से आपको सदा के लिये कितना लाभ होता रहेगा और कई आठ आने आपके बच जावेंगे।

क्या अब भी आप स्थाई ग्राहक न होंगे?

अब हमें पूर्ण आशा है कि आप अति शीघ्रही स्थाई ग्राहकों में नाम लिखावेंगे और हमारी प्रकाशित की हुई पुस्तकों में से जो आपको पसन्द हों साफ़ नाम लिखकर शीघ्र-आर्डर कृपा करेंगे।

अब तक ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

(१) दिव्य जीवन—विषय नाम से ही प्रकट है। मूल्य ।।।)

(२) प्रेस० विलसन और संसार की स्वाधीनता। स० मू० ॥-)

(३) सर जगदीश चन्द्र बसु और उनके आविष्कार। सचित्र मूल्य ॥-)

(४) चित्रांगदा (लेखक—कवि सम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर) सचित्र मूल्य ।=)

(५) शिवाजी की योग्यता—(ले० तरुण भारत एम० ए० एल० टी०) यह पुस्तक बड़ी महत्व की है। ज़रूर मँगाइये। मूल्य ।-)

(६) नागपुर की कांग्रेस—इसमें कांग्रेस का सब हाल सिल-सिलेवार दिया गया है। कोई बात छूटने नहीं पाई है। देशनेताओं के प्रायः सभी व्याख्यान दिये गये हैं जिनका पढ़ना प्रत्येक भारतवासी के लिये आवश्यक है। इसके अलावा जितने दूसरे जलसे हुए थे उनका भी इसमें वर्णन दे दिया गया है। दो चित्रों सहित मूल्य ।।।)

(१०) नवयुवको! स्वाधीन बनो—अर्थात् नवयुवकों को भारत माता की स्वाधीनता के लिये बलिदान होने की पुकार। इसमें अंग्रेजों के अत्याचारों को न सहने वाले और ७४ दिन उपवास कर अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिये प्राण गंवाने वाले आयरिश वीर मेक्सविनी का सचित्र जीवन चरित्र, लो० तिलक, म० गांधी ला० लाजपतराय आदि अनेक देश नेताओं के चुने हुए और स्वतन्त्रता का सीधा मार्ग बताने वाले जोशपूर्ण संदेश भी दे दिये गये हैं। इसे तुरन्त मँगवाइये। सचित्र मूल्य केवल ॥)

(इसके आगे अन्त के पृष्ठ अवश्य देखिये)

सूची।

विषय	पृष्ठाङ्क

स्वतन्त्रता की झङ्कार।

धर्म-युद्ध।

उठो बन्धुगण उठो वेगि अब धर्म युद्ध करना होगा।
पूज्य देश के व्यथित हृदय की विषम पीर हरना होगा॥
बाल वृद्ध सब इस औसर में स्वार्थ त्याग करना होगा।
कृषक अछूत कुलीन सभी को एक साथ चलना होगा॥१॥
स्वेच्छाचार निरकुशतासे ताल ठोक भिड़ना होगा।
देश जाति के लिये प्रेम से उचित तुम्हें मरना होगा॥
अनाचार अधर्म अनीति से पंड पंड ड़रना होगा।
सत्य धर्म की तरी बना कर दुखसागर तरना होगा॥२॥
गांधीजी की पावन आज्ञा को प्रमुदित सिर धरना होगा।
छोटे बडे सभी को उरों में शुद्ध भाव रखना होगा॥
देश निकासा सुली चढ़ाना कष्ट बहुत सहना होगा।
स्वतन्त्र हुये बिन नहीं हटेंगे प्राणों पर दृढ रहना होगा॥३॥
लाख डरायें लाख सतायें कभी नहीं डरना होगा।
सत्याग्रह की वेदी पर डट कर व्रत स्वदेशी धरना होगा॥
सदियों पीछे पडे रहे हैं अब आगे बढ़ना होगा।
राष्ट्रीय मंदिर में सबको ही हा, एक पाठ पढ़ना होगा॥४॥
भाषा भेष विदेशी तज कर देशी को गहना होगा।
हिंदू मुसलमान दोनों को ही एक साथ बहना होगा॥
देशी खाना देशी पीना देशी का गाना होगा।
नाच रंग अरु खेल तमाशा देशी का बाना होगा॥५॥

देशी रोना देशी हंसना देशी का सपना होगा।
सोते और जागते निशिदिन देशी व्रत अपनाना होगा॥
जालियां तपो भूमि में नूतन मठ रचना होगा।
हिंद हिंद हिंद देश का महामंत्र जपना होगा॥६॥
पराधीन अब नहीं रहेंगे दास वृत्ति तजना होगा।
इसीलिये तो असहयोग का साज आज सजना होगा॥
बढे चलो विजय होवेगे ईश्वर आस सदै होगा।
सफल मनोरथ होंगे होंगे इसमें ना संशय होगा॥७॥

असहयोगी की प्रतिज्ञा।

मातृभूमि की सेवा का अब व्रत भारी करना होगा।
चले तीर तलवार तोप पर तनिक नहीं डरना होगा॥
धर्म हेतु बलिदान चढ़ेंगे हँसी खुशी मरना होगा।
पाप शक्ति से लडने को अब 'असहयोग' करना होगा॥ १॥
सहनशीलता कवच हमारा शान्ति अहिंसा व्रत होगा।
ऐसे धर्म युद्ध में जाना किसे नहीं अभिमत होगा॥
आत्मिक-बल का पाठ जगत् भर को अब हम सिखला देंगे।
दिव्य तेज से असुर शक्ति को अति नीचा दिखला देंगे॥२॥
हाथों में हथकडी पड़ी हो रखड़ी उन्हें बतावेंगे।
पड जावे बेडी पैरों में जरा नहीं घबरावेंगे॥
तीर्थ समझ कर भक्ति भाव से कारागृह में जावेंगे।
जयमाला की तरह गले में फांसी भी लगवावेंगे॥ ३॥
मुंह से उफ तक नहीं करेंगे भालों पर चढ़ जावेंगे।
पीछे क़दम नहीं रक्खेंगे जीते जी जल जावेंगे॥

मातृभूमि के लिये हिमालय के हिम में गल जावेंगे।
असहयोग व्रत से तथापि हम कभी नहीं टल जावेंगे॥ ४॥
ज्वालामुखि से क्षुब्ध हुई यह भूमि केन्द्र से हट जावे।
क्रूर ग्रह से दबकर दिनकर का प्रताप भी घट जावे॥
वृत्र केतु के प्रबल कोप से गगन भले ही फट जावे।
असहयोग व्रत से न टलेंगे चाहे यह शिर कट जावे॥ ५॥
मन्त्र जपेंगे हम स्वतन्त्रता का फिर रुह फुंक जावेगी।
मुर्दों से भी वक्र काल की कुटिल कला चुक जावेगी॥
कुण्ठित होकर अत्याचारी खड्ग स्वयं रुक जावेगी।
सुभग अहिंसा के चरणों में हिंसा ही झुक जावेगी॥ ६॥
नौकरशाही के घमण्ड को जब कर देंगे चकना चूर।
'जन्मसिद्ध अधिकार' प्राप्त कर हम होंगे सुख से भरपूर॥
जन्मभूमि जननी के दुस्सह दुःखों को कर देंगे दूर।
जन्म सफल तब ही समझेंगे असहयोगि सेना के शूर॥ ७॥
उन पर सुरगण मुदित हृदय हो दिव्य सुमन बरसावेंगे।
विजय दुन्दुभी बजा बजा कर बार बार हर्षावेंगे॥
अन्तरिक्ष में शान्ति-पताका भारत की फहरावेंगे।
जय असहयोग! जय स्वतन्त्रते! जय भारतमाता गावेंगे॥ ८॥

वन्दे मातरम्।

हम भारतीयों का सदा है, प्राण वन्देमातरम्।
हम भूल सकते हैं नहीं शुभ तान वन्देमातरम्॥
देश के [illegible] अश्रुजल से बन सका यह खून है।
नाड़ियों में हो रहा संचार वन्देमातरम्॥

स्वाधीनता के मंत्र का है सार वन्देमातरम्।
हर रोम से हर बार हो उच्चार वन्देमातरम्॥
घूमती तलवार हो सरपर मेरे परवा नहीं।
दुश्मनो देखो मेरी ललकार वन्देमातरम्॥
धार खूनी खञ्जरों की बोथरी हो जायगी।
जब करोड़ों की पडे झंकार वन्देमातरम्॥
टांग दो सूली पै मुझको खाल मेरी खींच लो।
दम निकलते तक सुनो हुङ्कार वन्देमातरम्॥
देश से हम को निकालो भेज दो यमलोक को।
जीत लें संसार को गुञ्जार वन्देमातरम्॥
चौंकते हो क्यों भला सुन मंत्र वन्देमातरम्।
चीरकर देखो कलेजा तत्र वन्देमातरम्॥
मृत्युशय्या पर मुझे उल्लास होगा तभी।
प्राण यदि छूटें हिलाते तार वन्देमातरम्॥

साधु संदेश।

संदेशा पूज्य गांधी का, सभी को हम सुना देंगे।
अगर है देश सोया तो, उसे अब हम जगा देंगे॥
तजो निद्रा उठो भारत! खडा हो न्याय पर डटके।
जुल्म अन्यायों के अब, यहाँ पर हम मिटा देंगे॥
बहाया खून जलियाँ में, हमारे बाल बूढ़ों का।
स्त्रियों की इज्जतें ली हैं, मजा इसका चखा देंगे॥
तजेंगे मोह कौंसिल का, न लेंगे पद गुलामी के।
सुसेवा मातृ भूमि की कर, उसे उन्नत बना देंगे॥

तजो स्कूलें तथा कालीज, हटा दो त्यों वकालत को।
स्वदेशी वस्त्र भूषा का, सबक सब को पढ़ा देंगे॥
अदालत में न पाओ दुख, करो पञ्चायतें जारी।
मिटे अन्याय जल्दी से, प्रथा ऐसी चला देंगे॥
लड़ाई से न कुछ मतलब, न शस्त्रों की ज़रूरत है।
भभकती आग को हम अब, सुधा-रस से बुझा देंगे॥
कृष्ण, बुध, वीर राणा का, तथा ईसा महम्मद का।
तिलक, दादा, महात्मा का, सन्देशा हम सुना देंगे॥
दयामय गोद में अपनी, उठा लो वीर भारत को।
शांतिरस प्रेम का प्याला, प्रभू सब को पिला देंगे॥
पुष्प! उनका सन्देशा यह, करो जी जान से पालन।
अहिंसा न्याय से निर्भय, स्वराज्य अपना जमा लेंगे॥

एक शैदाये वतन का तराना।

शैर।

हाकिम की क्यों लिखने से जब कलम बन्द हो।
इजहार हो मेरा यही आजाद हिन्द हो॥
ताक़त दे खुदा हिन्द को आजाद करा दूँ।
या दुश्मनों के जेल को आबाद करा दूँ॥
फ़रहाद कैस का मुझे दर्जा नसीब हो।
मेरा वतन ही बस खुदा मेरा हबीब हो॥
दुश्मन की गोलियों का हो सीने पै निशाना।
गाता हो "इन्द्र" तब भी वतन का ही तराना॥

"असहयोग करो"।

जाति अंगरेज़ से हर बल में असहयोग करो।
तुम्हें भगवान् भी देंगे स्वराज्य भोग करो॥

वीर-भारत के सुपूतो तुम्हें भगवान कसम
जाति सम्मान कसम, धर्म्म व ईमान कसम
शुद्ध जातीयता औ देश के अभिमान कसम
आर्य्य को इष्ट, मुसलमान को क़ुरान कसम

शान्ति के साथ सभी मिल के असहयोग करो।
तुम्हें भगवान् भी देंगे स्वराज्य भोग करो॥

शान्ति-माला पै असहयोग मन्तर वर लो
इसकी सिद्धी में जो काम आये मरण तो मर लो
यों तो सब मरते है तुम देश की सेवा कर लो
दोनों हाथों में सुयश कीर्ति के लड्डू भर लो

कष्ट कितना ही मिले सह के असहयोग करो।
तुम्हें भगवान् भी देंगे स्वराज्य भोग करो॥

स्वतन्त्रता की झन्कार।

लाख बहलाये कोई नेक न मन से बहलो।
कोई कितना ही डरावे न कभी तुम दहलो॥
कर्म्मभूमी में बरसती हो अगिन तो सह लो।
इष्ट मित्रों से भी ललकार कर तुम यों कह लो॥
न्याय की राह पर सब आके असहयोग करो।
तुम्हें भगवान् भी देंगे स्वराज्य भोग करो॥

मानते वह नहीं तुम को तो न तुम भी मानो।
न इनके हो रहो, इन को भी न अपना जानो॥
न्याय, व्यवसाय से सेवा से असह हठ ठानो।
नीति गांधी की ये सिर आंख के बल लन्मानो॥
तन से मन धन से सफल ढंग से असहयोग करो।
तुम्हें भगवान भी देंगे स्वराज्य भोग करो॥

२

दमन-नीति का स्वागत !

दमन—नीति के भूत—भयंकर।
तू हम को होवेगा श—कर॥
प्रकटित होगा तुझ से ही सत—
स्वागत। स्वागत!!

बन देंगी हम को हथकड़ियां,
तेरा जंजीरों की कड़ियां॥
सिर पर 'गोते' होंगे अक्षत!
स्वागत। स्वागत!!

कारागार स्वर्ग-सम आना,
अत्याचार सहेंगे,—ठाना ॥
इनसे दूनी होगी ताकत !
स्वागत ! स्वागत !!

" मुहँ बन्दी " पर मुसकायेंगे,
कोड़ों पर बलि बलि जायेंगे ॥
कौड़ी देंगे नहीं ज़मानत ।
स्वागत ! स्वागत !!

कंकड़दार दाल खायेंगे,
सूखे टुकड़े अपनायेंगे ॥
हैं आश्रमी, हमें वह न्यामत !!
स्वागत ! स्वागत !!

वन्दे मातरम् ।

छीन सकती है नही सरकार वन्देमातरम् ।
हम ग़रीबों के गले का हार वन्देमातरम् ॥१॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता ज़रूर ।
कान में पहुँची जहाँ झन्कार वन्देमातरम् ॥२॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिए इस वक़्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम् ॥३॥
जेल में चक्की घसीटे, भूख से ही मर रहा ।
उस समय भी बक रहा बेज़ार वन्देमातरम् ॥४॥
मौत के मुहँ पर खड़ा है, कह रहा ज़ल्लाद सेः—
भोंक दे सीने में वह तलवार,—वन्देमातरम् ॥५॥

डाक्टरों ने नब्ज़, देखी सिर हिला कर कह दिया।
हो गया इसको तो यह आज़ार वन्देमातरम् ॥६॥

ईद, होली, दसहरा, सुबरात से भी सौगुना।
है हमारा लाड़ला त्योहार वन्देमातरम् ॥७॥

ज़ालिमों का ज़ुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार—वन्देमातरम् ॥८॥

वीर प्रण।

(१)

पैदा हुए हैं देशहित ही देश हित मर जायँगे !
हम हैं समर्पित देशहित कुछ देशहित कर जायँगे!!

(२)

दिनरात हृदयों में हमारे गूजती आवाज़ यह—
"बलिदान होकर देशहित हम अमर हो जायँगे"॥

(३)

[illegible] के भक्तों उन पापियों के सामने—
हम विकट भैरव नाद कर के युद्ध में डट जायँगे !!

(४)

स्वाभिमानी हो वीर हम सब, अटल निर्णय धीर हो।
इस पुण्य भारतवर्ष का स्वातंत्र्य केतु उठायँगे।

(५)

[illegible] तज आर के सम्मुख न शीश झुकायँगे।
निज आत्मबल अरु वीरता को आज हम प्रकटायँगे !!

(६)

इस आत्मबल के सामने जड़वादिता मिट जायगी!
नीतिज्ञता हो कूट चाहे धूल में मिल जायगी!!

(७)

पापी जनों को मारना है प्रेम की तलवार से!
तलवार को भी छेदना है प्रेममय औजार से!!

(८)

हम प्रेममय हो उच्चस्वर से गीत मनहर गायँगे!
"जयहिन्द" "वन्देमातरम्" से नीचदिल दहलायँगे!!

असहयोगी के उद्गार।

(१)

अब तो हम संन्यास लेंगे, देश के ख़ातिर जरूर।
कोई हो नाराज़ या खुश, कुछ न इसकी है जरूर॥

(२)

अब नहीं परवा मुझे, अच्छा बुरा कोई कहे।
देश के उन्नतिविधायक, कार्य कर दूँगा ज़रूर॥

(३)

स्वार्थरत माता, पिता, भ्राता, सुता, सुतनारि है।
मोह, माया, लोभ, लालच, त्याग दूँगा मैं जरूर॥

(४)

हाँ विदेशी वस्तुएँ, बहु मूल्य, बे कीमत मिलें।
पर स्वदेशी ही सदा, वर्तूंगा अब तो मैं ज़रूर॥

(५)

प्राण प्यारे भाइयों को, पुलिस पल्टन आदि से ।
कर अलग, कर बंद कर ही सत्य दिखला दूं ज़रूर ॥

(६)

इस तरह करते हुए, यदि जेल में जाना पड़े ।
कुछ नहीं परवा मुझे, आनंद होवेगा जरूर ॥

(७)

जेल की तो बात ही क्या, बम मशीनों आदि से ।
जो मुझे उड़ना पड़े, उड़ जाऊँगा हँस कर जरूर ॥

(८)

मेरे कतरे खून से, लाखों बनेंगे राम कृष्ण ।
राक्षसों और कौरवों का, नाश कर देंगे जरूर ॥

(९)

ध्यान लाऊँगा नहीं क्षण मात्र के भी वास्ते ।
एक ईश्वर के सिवा, पर, और ना समझूं जरूर ॥

देशभक्त क़ैदी जेल में ।

खुश होके मूज कुटेंगे चक्की चलायेंगे ।
कोल्हू कुआ खरास खुशी से फिरायेंगे ।
जिन्दा की कच्ची रोटियां खुश होके खायेंगे ।
और भभुने चने भी खुशी से चबायेंगे ।
रंजो गमो अलम में भी खुशियाँ मनायेंगे ।
सख्ती तमाम झेलेंगे बेड़ियां उठायेंगे ।

दर्दो महन में फंस के न गर्दन झुकायेंगे।
मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे॥
खुद सहके जुल्म जुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
भारत के हाले जार को बेहतर बनायेंगे॥

वन्दे मातरम्।

फ़ैला जहाँ में शोर मित्रो शब्द वन्देमातरम्।
हिंद हो या मुसलमान सब कहते वन्देमातरम्॥ १॥
उत्पन्न हुये इस भूमिपर धर्म का रक्षण करो।
नीति धुरधर तिलक ने उच्चारा वन्देमातरम्॥ २॥
स्वराज्य का बिड़ा उठाया, महात्मा श्री गांधी ने।
सत्य का शस्त्र सम्हाला कह करके वन्देमातरम्॥ ३॥
मौलाना महमद अली शौकत अली इन्साफ़ खुद।
लाला लाजपतराय भरते नारा वन्देमातरम्॥ ४॥
कौंसील में मत बैठिये शाही नौकरी छोड़ दो।
बालक जनाना वृद्ध लोको कह दो वन्देमातरम्॥ ५॥

बैठे हैं। *

उधर अकड़े हुए गोरे बने सर्कार बैठे हैं।
इधर मचले स्वशासन के सभी हक़दार बैठे हैं॥
अजब हालत है भारत की फ़लक ने रङ्ग बदला है।
जो थे कल दोस्त वे ही आज ले तलवार बैठे हैं॥

* गांधी जयन्ती पर गाई हुई कविता।

ये कहते हैं कि डण्डे से दबाकर तुम को रक्खेंगे।
ये कहते हैं कि हम मर मिटने को तय्यार बैठे हैं॥
हमें भी देखना है किस तरह यह चक्र चलता है।
यहाँ मज़दूर तक भी रहने को बेकार बैठे हैं॥
चमकती बिजलियों से आस्मां घिर जायगा शायद।
खुदा जाने कि कैसे दोनों के ग्रहचार बैठे हैं॥
मगर इस मर्दुमी पर कौन न शाबाश कहेगा।
वे ले तलवार बैठे हैं, ये वे हथियार बैठे हैं॥
उधर बक्तर ढके कंधे इधर सीना भी खुला है।
मगर फिर भी वे रोता मुँह लिये बेजार बैठे हैं।
हमें है फिक्र क्या? हालत बनेगी उन वकीलों की,
जो हैं जरदार पर सर्कार के बन यार बैठे हैं॥
तरस आता है उन पर भी जो हिन्दी हैं, समझते हैं,
मगर फिर कौंसिलों में जाने को तय्यार बैठे हैं॥
जिन्होंने मुल्क के अभिमान को स्वातन्त्र्य को तोड़ा,
उन्हीं के मित्र बनने को बने हुशियार बैठे हैं॥

समर-भेरी।

असहयोगान्दोलन की समर भेरी बजा दीजे।
निडर हो हो, यों को शक्ति अब अपनी दिखा दीजे॥
स्वशासन दान देता है खुशी से पैर पड़ने से।
अगर हो 'हिम्मते मरदाँ' तो खुद झण्डा जमा दीजे॥
न इस में खूनरेज़ी है न इस में संगरेज़ी है।
मगर है सिर्फ यह है इस्ले हमदारी इटा दीजे।

जिन्होंने शक्ति मद से मत्त हो पंजाब में निर्भय।
पहाया खून बच्चों का, उन्हें नीचा दिखा दीजे॥
सती साध्वी स्त्रियों तक का जिन्होंने मान तोड़ा है।
उन्हें शासन यहाँ करना असंभव सा बना दीजे॥
गुलामी ही सिखाने के लिये निर्मित स्कूलों से।
तुरत ही अपने बच्चे बच्चियों को अब छुड़ा दीजे॥
अपढ रह जायँ, रह जायें, गुलामी हम न सीखेंगे।
सुघड़ विद्यार्थियो! यह वाक्य गुरुओं को सुना दीजे॥
खुला दो कोर्टें अपनी, चले पंचायतें अपनी।
भरे अन्याय से न्यायालयों को अब उठा दीजे॥
जवाँ मर्दाने हिन्दुस्तां, नहीं हैं भेड़ के बच्चे।
मजा शेरों से भिड़ने का जरा इनको चखा दीजे॥

मैं राजस्थान निवासी हूँ।

तन पुष्ट नहीं, दुष्कालों से, मन तुष्ट नहीं नरपालों से।
पर फिर भी, दृढ़ विश्वासी हूँ, मै राजस्थान निवासी हूँ॥
दुर्दैव दुष्ट का मारा हूँ, स्वेच्छाचारों से हारा हूँ।
निज स्वत्वों का अभिलाषी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
अत्याचारों को सहता हूँ, पर निष्क्रय कभी न रहता हूँ।
स्वातंत्र्य-जहाज खलासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
सब मिल कांग्रेस में जाते है, मुझको न निकट बिठलाते हैं।
क्या मैं योरुप-अधिवासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
दुख सहा, दिया सुख औरों को, भ्रमसे धन सौंपा चोरों को।
अब नीती कुशल सन्यासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥

अपनों के और परायों के, दुश्मन तक के घरजायों के।
हितचिन्तन का अभ्यासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
मैं पाप पङ्क का शोषक हूँ, निज पौरुष, प्रण का पोषक हूँ।
मरता न कभी अविनाशी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
पापी निज कृत फल पावेंगे, पर बुरा मुझे बतलावेंगे।
कारण कि स्वधर्म उपासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
अब नहीं चलेगी मनमानी, हो राजा या कि महारानी।
स्वातन्त्र्य साम्य अभ्यासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥
निज जन्म सफल कर लेने को, माता के दुख हर लेने को।
मैं पर हित निपुण प्रवासी हूँ, मैं राजस्थान निवासी हूँ॥

प्रतिज्ञा !

गोलों की बौछार पड़े, हो तोप मशीनों की भरमार।
चाहे क्रूर शासक दिलभर कर हमपर निशिदिन अत्याचार।
संकट-निराशा ऊँचे शून्य को पकड़ रहे हो निराधार।
विपत्ति-विद्युत प्रचण्ड कड़क कर करती हो भयङ्कर संचार।
बाधाओं के दुर्गम गिरि, बन खड़े हुए हों बाँध कतार।
बिछा गई हो पथ में चाहे तीखे काँटों की दीवार!
परन्तु न भारतीय बालाएँ पीछे पैर हटाएँगी!
निश्चय अपने साहस से इतिहास को पुन मिलाएँगी!

हिन्दोस्ताँ मेरा।

पसे मुर्दन भी होगा हश्र में यों ही बयां मेरा,
मैं इस भारत की मिट्टी हूँ, है यह हिन्दोस्तां मेरा।
मैं इस भारत के इक उजड़े हुए खँडहर का जर्रा हूँ
यही मेरा पता है, है यही नामो-निशां मेरा।
खजां के हाथ से मुरझाये जिस गुलशन के हैं पौधे,
मैं उस गुलशन की बुलबुल हूँ वही है गुल-सितां मेरा।
कभी आबाद यह घर था किसी गुजरे ज़माने में,
हुआ क्या गर बदस्ते-गैर उजड़ा खानुमां मेरा।
अगर यह प्राण तेरे वास्ते जायँ न ए भारत!
तो इस हस्ती के तख़्ते से मिटे नामोनिशां मेरा।
मैं तेरा हूँ, सदा तेरा रहूँगा बावफ़ा ख़ादिम
तुही है गुलसितां मेरा, तुही जन्नत निशां मेरा।
मेरे सीने में तेरे प्रेम की अग्नी भड़कती है,
निगाहों में मेरे भारत तुही है कुल जहां मेरा।

कर्म्मवीर बनो।
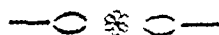
संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो।
जीवन समस्यायें जटिल हों, किन्तु उनसे मत डरो।
बर-वीर बन कर आप अपनी विघ्न-बाधायें हरो।
मर कर जियो, बन्धन-विवश पशु-सम न जीते जी मरो।

२५-स्वदेश प्रेम

—❀—

सेवा में तेरी भारत तन मन लगायेंगे हम।
फिर स्वर्ग का सहोदर तुझ को बनायेंगे हम॥
तुझ से जने तुही ने पालन किया हमारा।
उपकार जितने करता क्या २ गिनायेंगे हम॥
तेरे ऋणों का बोझा सर पर धरा हमारे।
कर के प्रयत्न पूरा उसको चुकायेंगे हम॥
तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे।
तेरे ही सेवा में यह जीवन बितायेंगे हम॥
घनघोर दुख-घटा भी हम पर घिरी खड़ी हो।
क्षणमात्र भी न तुझ को जी से भुलायेंगे हम॥
तू स्वर्ग है हमारा, तू सौख्य-गृह हमारा।
तुझ से ही नेह नाता अब तो लगायेंगे हम॥
जब जब मरें, तुझी में तब तब सदा जनम लें।
मरने के वक्त ईश्वर से यह मनायेंगे हम॥
गौरव गिरा है तेरा दुख ने है तुझ को घेरा।
दुख में तेरे दुखी हो आँसू बहायेंगे हम॥
प्यारे सुवन तिहारे फूट और मद के मारे।
बेहोश जो पड़े हैं उनको जगायेंगे हम॥
परमेश ! दो, हमें पूरन पुनीत बल दो।
बिन आपके सहारे कुछ कर न पायेंगे हम॥

———

४०

असहयोगी का वक्तव्य।

—:❀:—

भाई हो, या पिता, पुत्र हो, माँ हो, या प्राणेश।
आत्मा को ठुकरा कर इनका मानूं क्यों आदेश॥
मैं अपने जीवन का स्वामी मुझ को अपना ज्ञान।
मुझ से ही मेरा होवेगा मान और अपमान॥
सम्बन्धी वे, उनका मुझ पर सब प्रकार अधिकार।
पा सकते हैं मुझ से अपना न्याययुक्त सत्कार॥
पर मुझ से वे कहें कि तुम हो सदा हमारे दास।
रहो हमारे होकर ही तुम, रहो हमारे पास॥
यह होने का नहीं, देश का मुझ पर भारी स्वत्व।
दिया जन्म जिस मातृ भूमि ने पला जहाँ पर नित्य।
है उसकी सेवा ही मेरे जीवन का औचित्य॥
पाला मात पिता ने पलकर इसी भूमि के मध्य।
तो प्रधान, सेवा स्वदेश की, यही प्रथम आराध्य॥

—असहयोगी छात्र।

सत्याग्रही की प्रतिज्ञा।

—:❀:—

एक प्रभु को छोड़ किसी से,
मैं भयभीत न होऊँगा।
प्राणिमात्र का मित्र बनूँगा,
द्वेषभाव सब खोऊँगा॥

तब कुमुद खिलेंगे हाथों पर दीनों का सूर्य्य सदय होगा!
गुञ्जरा करेंगे चञ्चरीक जीवन यह और अभय होगा!!
मन मार करेंगे नृत्यखूब शासन अपना वहरावेगा!
आज़ाद देश होजावेगा, विजयी झण्डा फहरावेगा!!

व्याकुल थे मेरे आत्मदेव लख उनके अत्याचारों को!!
ग़महुआ करोडों कुटियों में, लख उनके दुर्व्यवहारों को!!
ये फूल फले मनोहर थे जलियान बाग़ के फूल हाय!!
पद तले खूब रौंदे जाकर वे धूल हुए मृदु फूल हाय!!
जलियान बाग़ उफ़! .ख़ौफ़नाक, उफ! दर्दनाक शोणित नदिय
तूफ़ान ज़ुल्म, हा! काल रात्रि—दुखही दुख में बीती सदियाँ!

सँहार हुआ, हा! वज्रपात! मर मिटने दो, मिहमान टलो!
लूटो मत तीस करोड़ों को! सीधे सादे, श्रीमान टलो!!
कष्टों का मस्तक, भार लिया, अब तो सपूत सन्तान टलो!
धनमद वाली, बलमद वाली नौकरशाही शान टलो!!
तुम टलो तिलाञ्जलि मिली तुम्हें अपमान सहा अहसान सहा!
बलिदान सहा, अरमान सहा, अभिमान सहा क्या क्या न सहा!!

अब नहीं सहूँगा, खूब सहा, मैं मानव हूँ हाँ रोगी हूँ!
दीनों का, हाँ धनहीनों का, निःशंकी हूँ मैं योगी हूँ!!
सदियाँ बीतीं सेवा करते, सेवा का फल क्या खूब दिया!
मैं रोऊँ तो तू खड़ा हंसे, सब देखलिया सब देखलिया!!
तू हिंसक है, मैं दयामूर्ति यानी हूँ सच्चा योगी हूँ!!
सहयोग त्याग कंटक तेरा सहयोग—त्याग का भोगी हूँ!!

आनन्दमय असहयोगी।

बिछी तोशक लगे तकिए, पलङ्ग मुझको न भाता था।
न आती नींद पल शब को, बदल कर करवटें बिताता था॥
ज़मीं कङ्कर बिछे जिस पर, वहां बश्शाश सोता हूँ।
बदल जाएगी नेचर इस, तरह क्या ख्याल जाता था॥
मुझे अब खुश्क रोटी ही, सुहाती और भाती है।
न शीरीनी कभी बिलकुल, समझ कड़वी मैं खाता था॥
लगे अब पोखरों का आब, नदला शीर से बहतर।
[illegible] यक रोज शरबत, शीर भी बेताब पीता था॥
सुनूं सब की सहूँ सब को, व झेलूं मुश्किलें सारी।
सदा पहिले मुझे सुन, बात भारी तैश आता था॥
सुनूं जब बात बेचैनो, तड़पता और रोता हूँ।
[illegible] इक दिन लगा दिल मेरा, न मुझको रहम आता था॥
न पीऊंगा, न खाऊंगा, करूंगा देश की सेवा।
उसी मां की कि जिसकी, और पहिले दिल न जाता था॥
[illegible] मादर हकीकी के, लिए घर बार छोड़ा है।
न पहिले मैं कभी घर से, निकल परदेश जाता था॥
[illegible] गीत है मुझे अब, जेल के आराम से बढ़कर।
[illegible] आलीशान बिल्डिंग भी, जहां मैं शान पाता था॥
[illegible] अच्छी लगे अब, गोलियों का वार और बम का।
[illegible] पहिले [illegible] भी, बाप की से याद होता था॥
[illegible] अब शान होती, बेड़िया झनकार कर पहिने।
न सोने के गहने पहने, पहिले ध्यान लाता था॥
[illegible] याद पूरा [illegible], अगर मादर को जानोगे।
[illegible] से है जो दिल, देश के ही गीत गाता था।

अनुरोध

— ❀ —

करो कुछ देश हित भ्राता ! अगर आये हो दुनियां में।
निछावर देश पर सर कर निशां रखने को दुनियां में॥
भलाई कर चलो सब पर तुम्हारा भी भला होगा।
भलाई के लिये सर दे दिये लाखों ने दुनिया में॥
अगर इच्छा तुम्हारी है तरक्की हिन्द कर जावे।
हटाओ मत कदम पीछे बढाये जाओ दुनियां में॥
जरूरत है कि हो कुरबानियां भारत पै लाखों की।
फ़क़ीरी धार लो भारत का यश रखने को दुनिया में॥
जो करना चाहो कर लो आज, फिर कल का भरोसा क्या।
समय गुज़रा कहीं आता सुना हम ने न दुनिया में॥
ये तोड़ो दासता की बेड़ियां, स्वाधीनता ले लो।
वतन का राग घर २ में सुनाओ-सारि दुनिया में॥

प्रहलाद का निष्कृय प्रतिरोध।

— ❀ —

पिता अधिकार है तुमको हमें गिरि से गिराने का।
जलाशय में डुवाने ओर पावक में जलाने का।
तुम्हें अधिकार है राजन करा दो देश निष्कासन।
तथा बन्दी बना डालो हमें इस जेलखाने का।
हमें भी सोलहो आना दिया है स्वत्व ईश्वर ने।
प्रतिज्ञा पालने में शांति सब दुख उठाने का।

तुम्हें अधिकार है हमको दुख शूली दिला दीजे।
हमें अधिकार है तिस पर न पीछे पग हटाने का॥
अहा नरेन्द्र न इस भय से न तुम भय भीत कर सकते।
है आत्मिक बल भय हममें सफलता सुख पाने का॥
लिया है सत प्रण जो कुछ न जौ भर अब टलेंगे हम।
कलंक कालिमा अब तो नहीं मुख पर लगाने का॥
हुआ प्रहलाद था जिसने लडा था डर के सत्याग्रह।
कभी इतिहास में ऐसा नहीं हरगिज लिखाने का॥
पवित्रोद्देश्य अपने को तिलांजलि दूं नहीं हूं मैं।
तुम्हारी इन दुर आज्ञाओं के सम्मुख सिर झुकाने का॥
हमारा लक्ष ऊंचा है हमारा धैर्य्य निश्चल है।
सहायता दे स्वयं भगवन जो रक्षक है जमाने का॥
तुम्हारी यह दमन शैली अवश्य इक दिन दमन होगी।
समय भी है उपस्थित अब दमनकारी के जाने का॥

(हकीकत का अन्तिम उत्तर नवाब को)

तुम प्रबल भय दिखला रहे मुझको न इसका ध्यान है।
मेरे हृदय में तो सर्वथा निज धर्म ही का मान है॥
मैं निज कठिन कर्त्तव्य पथ से विमुख होने का नहीं।
आपत्तियां क्या दृढ हृदय को है हिला सकतीं कहीं।
अपनी [illegible] मृत्यु का मुझको तनिक भी डर नहीं।
पर देखना संकट न आवे आपके ऊपर कहीं।
धोखा दिलाना सिर काटना मारना आसान है
पर हृदय पर अधिकार करना तनिक टेढ़ा काम है॥

चाहे भले ही काट लो प्रत्येक अंग शरीर का।
विचलित कदापि न हो सकेगा मन हक़ीक़त वीर का॥
शतशः! कृपण प्रहार तन पर यदि एक दम होवें कहीं।
आनन्द से वह सब सहूँगा धर्म छोड़ूंगा नहीं॥

(अपने पिता को अन्तिम शब्द)

—❀—

हे पूज्य गुरुवर! हे पिता मन शान्त अपना कीजिये।
कुछ भय न करके जाइये पर शान्ति मां को दीजिये॥
हाँ पूज्य माता को सुनाना यह सदेशा तात का।
प्रिय जननी दृढ़ विश्वास मन में सदा रहूँगा आपका॥
प्रिय जाति के सन्मान हित निज प्राण देना धर्म है।
तन देश वेदी पर चढ़ाना परम पावन कर्म है॥
यह प्राण मेरे जायेंगे निज देश सेवा के लिये।
मैं त्यागता हूँ देह भावी विजय की आशा किये॥
धिक्कार है वह जन्म जो निज देश सेवा हित न हो।
उस मृत्यु को धिक्कार जिससे देश का कुछ हित न हो॥
प्रिय जाति सेवा लक्ष्यच्युत सब कार्य्य को धिक्कार है।
शुचि देश प्रेम विहीन मन धिक्कार है धिक्कार है॥
मर्ता हक़ीक़त एक ही है आज अत्याचार से।
होंगे हक़ीक़त सैंकड़ों ही इस रुधिर की धार से॥
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का।
हाँ नाश होगा उस समय दुख शोक के लवलेश का॥

धर्म्म के वास्ते पूरन ने कटवाये थे दस्तो पा।
ध्रुव ने भी धर्म्म के वास्ते वन में किया डेरा॥
हरिश्चन्द्र ने छोड़ा था धर्म्म की धुन में राज्य अपना।
हवाले विश्वामित्र के किया था तख्तो ताज अपना॥
लिया वनवास प्यारे राम जी ने धर्म्म की खातिर।
धर्म के वास्ते दशरथ ने दे दी जान तक आखिर॥
दिखा दूंगा कि इन वीरों की इक औलाद हूँ मैं भी।
धर्म्म पर जान देने के लिये दिलशाद हूँ मैं भी॥
तकाज़े खौफ से अपने अकीदे को न छोड़ूंगा।
मरूंगा जान दे दूंगा धर्म्म से मुंह न मोड़ूंगा॥
सुनो ऐ हाज़रीन तुम भी धर्म्म पे जान दे देना।
गमो रंजो अलम सिर पर जो आजाये वह ले लेना॥
पिता जी दीजिये रुखसत मुझे चोला बदलने की।
इजाजत मांगती है आत्मा बाहिर निकलने की॥
न करना गम मेरे मरने का माता चैन से रहना।
भजन ईश्वर का करना याद में मेरे न दुख सहना॥
तमन्ना ज़िन्दगी की है न कुछ जन्नत के लेने की।
जो ख्वाहिश है तो बस अपने धर्म्म पर जान देने की॥
कर ऐ जल्लाद जल्दी जो तेरे दिल में समाई है॥
चला खंजर उडा सिर देर से गर्दन झुकाई है।

मैं कलम हूं, एक मेरी जीभ से,
क्या करोगे, जब बढ़ेंगी सैकड़ों ॥६॥
खूब चारों ओर कांटे दो बिछा।
मर मिटूं मैं काढ़ लो जी की कसक॥
किन्तु आकर देख जाना एक दिन।
मैं मिलूंगा फूल सा हँसता हुआ ॥७॥
क्रोध ने जीता तुम्हें है सब तरह।
क़ैद में तुम क्रोध की हो हर घडी॥
किन्तु मैं जीते हुये हूं क्रोध को।
तब कहो मैं किस लिये तुमसे डरूं? ॥८॥
कौन हो तुम? मौत का मैं दूत हूं।
क्या करोगे? मौत से दूंगा मिला॥
है कहाँ वह जन्म भर की संगिनी!
मित्र! लो तुम प्राण वह उपहार में ॥९॥

मातृ-आराधना।

—:*:—

मुक्तिहेतु हे मातृ-भूमि! हम तेरे पद आराधेंगे।
जिसमें तेरा हित-साधन हो वही साधना साधेंगे॥
स्वार्थ और परमार्थ छोड़कर तुझसे लगन लगायेंगे।
तेरी सेवा करने को हम दौड़े दूर दूर जायेंगे ॥१॥
मुदित मनो मन्दिर में अपने, तेरी मूर्ति बिठायेंगे।
सलिल-प्रेम के आँसू ढाल ढाल नहलायेंगे॥

करके जप स्वातन्त्र मन्त्र का निज सिर सुमन चढ़ायेंगे।
तेरे दुख से दग्ध हृदय में काम-धूप सुलगायेंगे ॥२॥
ज्ञान-दीप को दीप्त करेंगे तब आरती उतारेंगे।
गुण गन करके गान भुवन में तेरा यश विस्तारेंगे ॥
बालक विघ्न प्रलोभन जग के लाख हमें बहकायेंगे।
ध्यान न देंगे हम कुछ उन पर सिद्धि न जब तक पायेंगे ॥३॥
जो जो कष्ट पड़ेंगे सिर पर साहस से हम झेलेंगे।
न्याय सत्य पर अटल रहेंगे, और जान पर खेलेंगे ॥
कुटिल नीति अप्सरा हमारा सत्य डिगाने आयेगी।
उसकी चालें व्यर्थ करेंगे, डिगा न हमको पायेगी ॥४॥
शासन स्वेच्छाचार, सत्यबल से हम उसे पछाड़ेंगे।
यह विषबेलि विषमता लपटी जड़ से इसे उखाड़ेंगे ॥
समता की भावना हृदय से दम भर नहीं हटायेंगे।
समझेंगे हम मनुज मनुज को, सबको हम अपनायेंगे ॥५॥
सम विकास के अवसर होंगे दुख न दीन जन पायेंगे।
फूले फले मनोरथ तरुवर हरे भरे लहरायेंगे ॥
तब समझेंगे सफला सेवा जब तुझसे वर पायेंगे।
अपने हाथों ही से हम सब अपना भाग्य बनायेंगे ॥६॥
अहा! चढ़ाया वीरवरों ने निज निज सिर निज देवी पर।
जगदम्बे! हे! जननि! जागती जीत रही है क्या जी पर ॥
तेरा देह तुम्हीं को अर्पण करने में संकोच नहीं।
लोकमान्य स्वातन्त्र युद्ध में मरने का कुछ सोच नहीं ॥७॥

मैं कलम हूं, एक मेरी जीभ से,
क्या करोगे, जब बढ़ेंगी सैकड़ों ॥६॥
खूब चारों ओर कॉंटे दो बिछा।
मर मिटूं मैं काढ़ लो जी की कसक॥
किन्तु आकर देख जाना एक दिन।
मैं मिलूंगा फूल सा हँसता हुआ ॥७॥
क्रोध ने जीना तुम्हें है सब तरह।
क़ैद में तुम क्रोध की हो हर घड़ी॥
किन्तु मैं जीते हुये हूं क्रोध को।
तब कहो मै किस लिये तुमसे डरु?॥८॥
कौन हो तुम? मौत का मैं दूत हूं।
क्या करोगे? मौत से दूंगा मिला॥
है कहाँ वह जन्म भर की संगिनी!
मित्र! लो तुम प्राण वह उपहार में ॥९॥

मातृ-आराधना।

—:*:—

मुक्तिहेतु हे मातृ-भूमि! हम तेरे पद आराधेंगे।
जिसमें तेरा हित-साधन हो वही साधना साधेंगे॥
स्वार्थ और परमार्थ छोड़कर तुझसे लगन लगायेंगे।
तेरी सेवा करने को हम दौड़े दूर दूर जायेंगे ॥१॥
मुदित मनो मन्दिर में अपने, तेरी मूर्ति बिठायेंगे।
सुरसरि सलिल-प्रेम के आँसू ढाल ढाल नहलायेंगे॥

करके जप स्वातन्त्र मन्त्र का निज सिर सुमन चढ़ायेंगे।
तेरे दुख से दग्ध हृदय में काम-धूप सुलगायेंगे ॥२॥
ज्ञान-दीप को दीप्त करेंगे तव आरती उतारेंगे।
गुण गन करके गात भुवन में तेरा यश विस्तारेंगे ॥
घालक विघ्न प्रलोभन जग के लाख हमें बहकायेंगे।
ध्यान न देंगे हम कुछ उन पर सिद्धि न जब तक पायेंगे ॥३॥
जो जो कष्ट पड़ेंगे सिर पर साहस से हम झेलेंगे।
न्याय सत्य पर अटल रहेंगे, और जान पर खेलेंगे ॥
कुटिल नीति अप्सरा हमारा सत्य डिगाने आयेगी।
उसकी चालें व्यर्थ करेंगे, डिगा न हमको पायेगी ॥४॥
राक्षस स्वेच्छाचार, सत्यबल से हम उसे पछाड़ेंगे।
यह विषवेलि विषमता लपटी जड़ से इसे उखाड़ेंगे ॥
समता की भावना हृदय से दम भर नहीं हटायेंगे।
समझेंगे हम मनुज मनुज को, सबको हम अपनायेंगे ॥५॥
सम विकास के अवसर होंगे दुख न दीन जन पायेंगे।
फ़ले फले मनोरथ तरुवर हरे भरे लहरायेंगे ॥
तब समझेंगे सफला सेवा जब तुझसे वर पायेंगे।
अपने हाथों ही से हम सब अपना भाग्य बनायेंगे ॥६॥
अहा! चढ़ाया वीरवरों ने निज निज सिर निज देवी पर।
जगदम्बे! हे! जननि! जानती बीत रही है क्या जीपर ॥
तेरी देह तुझी को अर्पण करने में संकोच नहीं।
सत्याग्रह स्वातन्त्र-युद्ध में मरने का कुछ सोच नहीं ॥७॥

नमो हिन्दुस्थान।*

९८

परज।

बन्दहु सब मिलि हिन्दुस्थान।
पूर्व समय को साँचो गौरव,
करे गिरा मम सुन्दर गान॥
धन, बल, बुद्धि विपुल यस गाथा,
मगन होय सुन सभा महान॥
बङ्ग, बिहार, अयोध्या, गुर्जर,
बम्बे उत्कल राजपुतान॥
सिक्ख पार्सी जैन ईसाई,
हिन्दू आरज मुग़ल पठान॥
सब आपन महँ सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान॥
(सब मिल के) हर हर हर हर हिन्दुस्थान!
दादर हुरमज हिन्दुस्थान!
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान!
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान!
एक होय सब भारतवासी,
फूट बैर की छोड़ें बान॥
रहें परस्पर प्रेमभाव सों,
दुख सुख सब में एक समान॥
बङ्ग, बिहार, अयोध्या, गुर्जर,
बम्बे उत्कल राजपुतान॥

* श्रीमती सरोजनी नायडू के "नमो हिन्दुस्थान" का अनुवाद।

सिक्ख पारसी जैन ईसाई,
हिन्दू आरज मुगल पठान ॥
सब भावन में सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥
(कोरस)
हरे मुरारे हिन्दुस्थान!
जय जिहोवा हिन्दुस्थान!
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान!
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान!

साहस औ उत्साह बढ़े नित
हो उत्तेजित तन मन प्रान।
आलस निद्रा त्यागि उठहु सब,
करहु देश को अब कल्यान ॥
बङ्ग, बिहार, अयोध्या, गुर्जर,
बम्बे उत्कल राजपुतान ॥
सिक्ख पारसी जैन ईसाई,
हिन्दू आरज मुगल पठान ॥
सब भावन में सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान ॥
(कोरस)
ब्रह्म रूप है हिन्दुस्थान!
अलखनिरंजन हिन्दुस्थान!
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान!
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान!

प्यारा वतन हमारा ।

बुलबुल अगर हैं हम तो वह है चमन हमारा ;
तन हो कहीं, वहीं पर रहता है मन हमारा ।
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ॥
इसके ही अन्न जल से हम सबके सब पले हैं ·
मिट्टी हैं इसकी जिसमें यों फ़ले हैं फले हैं !
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ॥
लगती है बन के सुर्मा आँखों में खाक इसकी ,
हमको है पाक करती तासीर पाक इसकी ।
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ॥
मिट्टी ने इसकी क्या क्या जग में है गुल खिलाये.
चुन चुन के फूल जिससे लोगों ने घर बनाये ।
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ।
थे राम भी यहीं पर, घनश्याम भी यहीं पर
ऐसे महापुरुष हैं गुजरे भला कहीं पर ?
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ।
बत्तीस कोटि बच्चे है गोद में खिलाता,
सबको यही खिलाता सबको यही पिलाता !
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ॥
इसकी ही रोशनी है चेहरे पै जो चमक है,
है हड्डियों में बेधा इसका ही तो नमक है !
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ॥
खादिम इसी के हैं हम मख़दूम है ये अपना,
प्यारा वतन हमारा प्यारा वतन हमारा ॥

भारत-माता ।

—:#:—

ऐ मेरी जान भारत ! तेरे लिये ये सर हो,
तेरे लिये ही ज़र हो तेरे लिये जिगर हो ।
हिचकूँ न तेरी सेवा से मेरी जान भारत,
गर्दन पै मेरी रक्खा शमशेर या तबर हो ।
गम जान के लिये भी मुझको कभी न होगा,
भारत तेरे लिये ही आती ये काम गर हो ।
किस्मत का मेरी अख्तर चमके फिर आसमाँ पर,
सेवा में तेरी माता गर जिन्दगी बसर हो ।
भारत ही में सदा मैं पैदा हूँ और मरूँ मैं",
ईश्वर न कुछ हो मन में, यह आरजू मगर हो ।
गर देश ही की सेवा हो प्यारा धर्म मेरा,
परमात्मा की तो फिर मेरी तरफ नज़र हो ।
जीवन सुफल तभी बस समझेगा साधु अपना,
सेवा में तेरी माता सर मेरा गर नज़र हो ॥

आत्म-निवेदन !

मुझे दे जननी यह वरदान ॥
तेरी हा सेवा में मानूँ, मैं अपना सनमान ।
तेरे लिए समर्पण कर दूँ, तन धन जीवन प्रान ॥
मुझे दे जननी० ॥

हर्षित होऊँ नेत्रों से लख, तेरी मूर्ति महान।
तेरे ही यश के सुनने में, तृप्त रहें ये कान॥
मुझे दे जननी० ॥

वाणी करती रहे सदा ही, तेरा गौरव गान।
मनन करूँ नित मन में, जननी तेरा ही कल्याण॥
मुझे दे जननी० ॥

सोते जगते इस आत्मा में, तेरा ही हो ध्यान।
ज्ञान, बुद्धि, धन, धाम तुझी को सर्वस कर दूँ दान॥
मुझे दे जननी यह वरदान॥

जेलख़ाना।

—:o:—

घर बार छोड करके जायेंगे जेलख़ाना।
यह डर नहीं है मुझ को, पावेंगे जेलख़ाना॥
जिस जेल में महाप्रभु श्रीकृष्ण जन्म पाये।
मेरे लिए तो प्यारा मन्दिर है जेलख़ाना॥
कहते हैं लोग होती है जेल में फजीहत।
गर वाकई में पूछो जन्नत है जेलख़ाना॥
गांधी महात्मा ने जिस में उमर गमाई।
वह सौख्य—गृह—हमारा प्यारा है जेलख़ाना॥
आत्मा बलिष्ठ होती है जेल में गये से।
सत्याग्रही जनों का खंजर है जेलख़ाना॥
ये हथकडी और बेडी, हैं ज़ेवरात सुन्दर।
हुब्बे वतन पर करता कुरबान जेलख़ाना॥
गृह—कार्य्य में अनेकों जंजाल दीख पडते।
चित शान्ति का है ज़रीया, यह एक जेलख़ाना॥

दर २ 'बिपिन' गुफ़ा में धूनी रमायेंगे क्यों।
यदि मुक्ति मार्ग मैंने पाया तो जेलखाना॥

जगा है राजपूताना।

जगा है फिर शुजाअत का चमन हाँ राजपूताना,
छिड़ा है जंग का हर सिम्त से फिर आज अफ़साना।
हर एक गुल ने शजर के शाख ने वह रंग बदला है,
कि पत्थर तक सुनाते आज आज़ादी का शाहाना।
कहीं तलवार चलती है कहीं गोले बरसते हैं,
मगर होते हैं कुरबाँ मर्द मैदाँ बनके परवाना।
नहीं परवाह मसाइब की न है परवाह मरने की,
मचल बैठा है मजनूँ क़ौम का बनकर के दीवाना।
सदा हर एक दर्रे कोह से है आ रही यह ही,
हुआ बस बहुत पापों को कदीमी कह के पुजवाना।
सितम के हामियो सम्हलो! ज़माना ख़्वाब का गुज़रा,
लबालब भर चुका है अब जहर जुल्मों का पैमाना।

आओ!

—*—

(१)

आओ सभी समरांगण में, रख धैर्य हृदय में आओ।
आओ अब कर्मवीर बनकर, शुभ शौर्य हृदय में लाओ॥
आओ प्रोत्साहित होकर सब, निज दुःख दशा न भुलाओ।
आओ बोलो भारत की जय, आओ निज मान बचाओ॥

(२)

आओ आओ दौड़ पड़ो अब, आओ जननि पुकार सुनो।
आओ जो था बोया तुमने, उसको सभी सहर्ष लुनो॥
आओ रख जान हथेली पर, माँ हित सर्वस्व गँवाओ।
आओ अब पावन वेदी पर, निज शीश सहर्ष चढ़ाओ॥

(३)

आओ पग पीछे नहीं हटाओ, अग्नि कुण्ड में कूद पडो।
आओ माँ हित तुमुल युद्ध में, तन से मन से खूब लडो॥
आओ वीणा सम बेड़ी अब, पद कर से खूब बजाओ।
आओ बन्दीगृह को मिलकर, सब स्वर्ग समान बनाओ॥

वन्दे मातरम् ।

—·०:*:०:—

हम भारतीयों का सदा है, प्राण वन्दे मातरम् ।
हम भूल सकते है नहीं शुभ तान वन्दे मातरम्॥
देश के ही अन्न जल से बन सका यह खून है ।
नाडियों में हो रहा संचार वन्दे मातरम्॥
स्वाधीनता के मंत्र का है सार वन्दे मातरम्।
हर रोम से हर वार हो उच्चार वन्दे मातरम्॥
झूमती तलवार हो सर पर मेरे परवाह नहीं।
दुश्मनो! देखो मेरी, ललकार वन्दे मातरम्॥
धार खूनी खजरों की, बोथरी हो जायगी।
अब करोड़ों की पड़े, झन्कार वन्दे मातरम्॥
टाँग दो सूली पै मुझको, खाल मेरी खींच लो।
दम निकलते तक सुनो, हुंकार वन्दे मातरम्॥

देश से हमको निकालो, भेज दो यमलोक को।
जीत लें संसार को, गुञ्जार वन्दे मातरम्॥
चौंकते हो क्यों भला, सुन मंत्र वन्दे मातरम्।
चीर कर देखो कलेजा, तन्त्र वन्दे मातरम्।
डायरी है कायरी और कर्ज़नी अन्याय है।
हम इन्हें समझायँगे, हर बार वन्दे मातरम्॥
मृत्यु शय्या पर मुझे उल्लास होवेगा तभी।
प्राण यदि छूटें हिलाते तार वन्दे मातरम्॥

नहीं डरेंगे।

खुशी से छीन लो घर बार जीवन प्राण धन मेरा।
ये आँखें फोड कर सारा जलादो तन वतन मेरा॥
हमारा बाग मिट्टी में मिलादो धूर कर डालो।
मेरे प्यारे खिलौने को भी चकनाचूर कर डालो॥
हमें परवा नहीं, इसका न लेंगे बदला हम अपना।
अगर कुछ लेंगे बदले में तो लेंगे होमरूल अपना।
जमाना डूब जावे या चाहे आकाश फट जावे।
जिमीं धर्रा उठे सूरज भी घबराहट से हट जावे॥
गिरे बिजली भी हम पर टूट कर वा सीस कट जावे।
जुवाँ छूट जावे तन का चाम बेतों से सिमट आवे॥
न छोड़ेंगे न छोड़ेंगे कभी यह टेक हम अपना।
निकलती साँस तक बोलेंगे लेंगे होमरूल अपना॥

समझ कर फ़स तूने गर मेरी कुटिया जला डाली।
तो क्या होगा फडक उठेगी फिर एकदम से हरियाली॥
यह सम्भव है नहीं जगदीश की इच्छा यों टल जावे।
फिर इस स्वातन्त्र्य युग में हाथ भारत मलके रह जावे॥
यही व्रत-नेम पूजा है यही बस मन्त्र है जपना।
मिले हमको फकत हम चाहते हैं होमरूल अपना॥
हमारी आँख में अब ज्योति है हम देख सकते हैं।
हमारी बुद्धि भी अब ठीक है हम सब समझते हैं॥
दबाये हम गये जितने अधिक उतने उभर आये।
लुटे जितने ही सिर से उतने ही फूले नजर आये॥
ज़ुबाँ में डाल दो ताले छुडा दो द्वार घर अपना।
मगर सन्तान चिल्लायेंगी लेंगे होमरूल अपना॥

ईश्वर-विनय।

—०*०—

परतन्त्रता से मुझको सत्वर प्रभू छुडादे।
या हथकड़ी डलाकर मुझे जेल में सुलादे॥
चाहे मैं मर मिटूँ पर आज़ाद हिन्द होवे।
मुझे ऐसी देश-भक्ति की चासनी चखादे॥
स्वातन्त्र्य हिन्द कर दूँ दे दे तूँ इतने बलको।
या दुश्मनों के कारागृह को भी जा बसादे॥
युरोपवासी करते हैं जुल्म नित्य भारी।
इसको तो जान जावें भारत को यों जगादे॥

भविष्य।

—*—

छात्र हूँ करता जीवन दान जेल जाने से आह नहीं।
दुखित माता की हुई पुकार मौत की अब पर्वाह नहीं॥
हुआ जब माता का अपमान पठन की भी तब चाह नहीं।
धरूँगा काँटों में अब पैर दुःख से होगा दाह नहीं॥
जेल में होगा मेरा जन्म कृष्ण बन करके आऊँगा।
दिया यदि दुग्ध पान का लोभ पूतना उन्हें बनाऊँगा॥
करे शिशुपाल अगर कुछ चोट सुदर्शन-चक्र चलाऊँगा।
बहुत होता है अत्याचार कंस को मजा चखाऊँगा॥
कंस भी जब मर जावेगा तभी भू होगी अहा स्वतन्त्र।
विश्व ब्रज होवेगा सुख धाम जपेंगे सभी शान्ति का मंत्र॥

बन्दी की अभिलाषा।

—:०*०:—

मरने की कुछ परवाह नहीं, धन-दौलत की भी चाह नहीं।
निर्धन हूँ जग से डाह नहीं, 'निर्बल'—हूँ मन में आह नहीं॥
अभिलाषा हाँ! अभिलाषा है।
प्यारा भारत स्वाधीन बने॥
मैं अगर कमल तो वह दिनेश, मैं यदि चकोर तो वह निशेश।
मेरा प्यारा जीवन—धनेश, कैसे देखूँगा सहे क्लेश—
मैं जीऊँ वह अधीन दिखे?
प्यारा भारत स्वाधीन दिखे॥
उस पर तन, मन, धन, वार चुका, उसका उसको सब हार चुका।
उस पर मर उसका मार चुका, जाऊँगा नर-तन कार्य चुका—

पर, देखूँगा न मलीन दिखे।
प्यारा भारत स्वाधीन दिखे॥
क्या! रोग-मुझे हाँ रोग सही, मरना ही मेरा भोग सही।
पर होगा उनसे योग नहीं, भारत का जिनसे योग नहीं॥
अभिलाषा है यह रोग तनै।
मेरा भारत स्वाधीन वनै॥

वीर प्रण

—o—

न होने देंगे अत्याचार,
लड़ जायेंगे न्याय पक्ष पर करके हृदय उदार। न होने०
अन्यायी अन्याय करें यों हाय! सरे बाज़ार,
और खड़े चुप देखें हम तो नयनों को धिक्कार॥ न होने०
प्रबल अनल में जलना हो या चलना असि की धार,
परपीड़न प्रतिकार हेत है हमको सब स्वीकार। न होने०
अत्याचारी दो यदि होंगे तो होंगे हम चार,
हमें न पग भर हटा सकेगी रण से मारा मार॥ न होने०
आवें दुष्ट सतावें—गावें, खायें जख्म हज़ार,
पर उद्धार हेत दीनों के हैं हम हरदम तैयार। न होने०

भारतीय प्रतिज्ञा।

—o—

भुजा उठाय साफ़ शब्दों में कहते हैं संसार समक्ष,
होमरूल अपना ले लेंगे जो चाहे सो होय विपक्ष।

विपत्ति हमारी दासी होगी दुख दास हो लेवेंगे,
सुखद स्वराज्य ध्येय है अपना लेवेंगे ले लेवेंगे॥
चाहे इसके लिये अग्नि में जलना बारम्बार पड़े,
चाहे इसके लिए हमारी गर्दन पर तलवार पड़े।
नहीं डिगेंगे, नहीं डिगेंगे, निज पैरों पर डटे खड़े,
होमरूल लेकर ही होंगे हम पृथ्वी में पूज्य बड़े॥
कब खाना है कब पीना है इसका कुछ भी नहीं विचार,
एक ध्यान है एक ज्ञान है होमरूल का सुदृढ़ प्रचार।
आओ आओ भारतवासी बढो बढो अब करो न देर,
तन मन धन अर्पण कर देंगे बस अब यही हमारी टेर॥
हम मनुष्य हैं हम मनुष्य हैं, है मनुष्य से बढ कर कौन,
निज शासन विहीन हम, कैसे रह सकते हैं मौन॥

पराधीन भारत।

भारत के सिवाय इस जग में, कोई देश नहीं आधीन।
फिर क्या हम भारतवासी, हैं सारे जग में सबसे हीन॥
ऐसा था न अतीत काल में, और न हो सकता है।
स्वत्वहीन था कभी न भारत, और न अब रह सकता है॥
रूस जर्मनी स्वीडन टर्की, अमेरिका इंगलेंड प्रधान।
डेनमार्क स्काटलंड अरु, कैनेडा चैना जापान॥
सब स्वतन्त्र हैं सब स्वतन्त्र हैं, सब कर रहे स्वराज्य विहार।
भारत ही फिर क्या इस युग में, बना रहे निर्बल लाचार॥
उठो उठो हे भारतवासी, है ब्रिटेन की यही पुकार।
स्वाधीनता स्वत्व की रक्षा, जिसका प्यारा धर्म प्रचार॥

कर्मक्षेत्र में आगे आओ, काटो निज क्लेश के जाल।
समय नहीं है प्यारे मित्रो, यों मत व्यर्थ बिताओ काल॥
यदि स्वातन्त्र स्वत्व की रक्षा, ब्रिटिश जाति का धर्म प्रधान।
तो विजय अवश्य हम होवेंगे, पावेंगे अधिकार समान॥

सहन शक्ति।

—.o.—

जेल केलिवन, काल कोठरी, क्रीडा गृह के सम होवे।
पुष्प शयन से भूमि शयन भी, भगवन् हमें न कम होवे॥
कनक कंकणों से भी बढ कर, हथकड़ियाँ निज सुखद रहे।
देश वेश को तजें नहीं हम, चाहे भारी क्लेश सहें॥
स्वर्गवास सा देश निकाला, हमें मुक्ति सी फांसी हो।
ईश्वर सजा नजरबन्दी की, काशी सी सुख राशी हो॥
पुष्प वृष्टि सी वृष्टि गोलियाँ, की अगों पर हमें लगें।
जन्मभूमि की रक्षा से पर, सपने में भी नहीं भगें॥
नश्वर देह, अमर देही है, सभी जानते हैं इसको।
फिर मरने से मन में कहिये, भय हो सकता है किसको॥
यदि भय भी हम करें व्यर्थ ही, मृत्यु न देगी छोड कभी।
इसलिये दुर्नीति देश की, प्रीति न सकती जोड कभी॥
बढ कर आगे हटें न पीछे, पीछे रहें नहीं जग के।
खल के बल से दबें न पल भर, बचे रहें छल के मग से॥
भरें न पर से, डरें न पर से, घर से बिछुडे रहें नहीं।
कहें न झूठे वचन, वचन भी, दुष्ट जनों के सहें नहीं॥
समझें लाल काल को मन में, समझें तन को ढाल सदा।
बाल बाल न हो पर कर से, बरसे यदि कर बाल सदा॥

रहें अचल से कभी न विचलें, चलें भलों की चाल सदा।
चले न हम पर, हरे! खलों पर, चले खलों की चाल सदा॥
अजर अमर हो धर्म समर में, कमर कसे हम खड़े रहें।
निज स्वत्वों पर अड़े रहें हम, बने कड़ों से कड़े रहें॥
पड़ें प्रलोभन में न परों के, बने विश्व में बड़े रहें।
गिरें न गुरुता के गिरि से यह, सेवक बन कर खड़े रहें॥
दिन की रात, रात का दिन हो, पश्चिम में यदि दिनकर निकले।
मरु से सिन्धु, सिन्धु से मरु हो, जल हो वज्र वज्र पिघले॥
पर सत्याग्रह ग्रहण करें यदि, यम भी सन्मुख खड़े रहे।
चाहे प्राण रहे या प्रण ही, खल रल पीछे अड़ा रहे॥
देश प्रेम रस पगे हुए हम, अग्निकुण्ड में खेलेंगे।
पराधीन हो किन्तु नहीं हम, विविध वेदना झेलेंगे॥
सिर के सहित प्राण तक देंगे, पर देंगे हम पीठ नहीं।
या हम कुटिल जनों की कंजी, देख सकेंगे दीठ नहीं॥

किससे डरना।

कुछ आह नहीं हथकड़ियों से अब इन हाथों को कसने दे।
परवाह नहीं इस मस्तक पर अम्बर से बम्ब बरसने दे॥
शोणित रंजित कर शस्त्रों से तन काट काट कर मलने दे।
"नैन छिन्दन्ति" अचल मत ले चाहे जिस भाँति कुचलने दे॥
कर आज आत्म-बलिदान धर्म हित त्रिभुवन को गुंजाने दे।
मम शोणित की प्रत्येक बूँद, लाखों शहीद उपजाने दे॥

वीर प्रतिज्ञा ।

—:०.—

निज देश सेवा हेतु मेरा जन्म है संसार में,
यह तुच्छजन तत्पर सदा होगा स्वजाति सुधार में ।
विद्वेष भावों को मिटाना मुख्य मेरा कर्म है,
जातीयता के भाव फैलाना प्रथम शुचिधर्म है ॥
मम शक्तियाँ होंगी सदा व्यय देश-भक्ति प्रचार में,
उद्देश्य होगा प्रेम फैलाना मनुज परिवार में ।
प्रिय देश सेवा-नाव में चढ़ भव-उदधि तर जायँगे,
चलते समय तक देश का उपकार कुछ कर जायँगे ॥
मुझको निराश न कर सकेंगी विघ्न बाधायें कभी,
आनन्द मय उद्योग फल को वह बनावेंगी सभी ।
जिस कार्य्य में बाधा न हो, बस, वह सरसता-हीन है,
गुणवान बुद्धि-प्रयोग बिन निर्गुण सदृश ही दीन है ॥
होगा हृदय में सर्वदा ही प्रेम भारत देश का,
होगा प्रवाह शरीर में शुचि भक्ति के आवेश का ।
अपने अपेक्षित कार्य्य में तत्पर रहूँगा मैं सदा,
उस देश-सेवा कर्म में होगी सहायक आपदा ॥
यदि देश हित मरना पडे मुझको सहस्रों बार भी,
तो भी न मैं इस क्लेश को निज ध्यान में लाऊँ कभी ।
है किन्तु पूर्ण स्वदेश के उपकार की इच्छा मुझे,
आनन्द इसमें ही अनिर्वचनीय है मिलता मुझे ।
निज भाइयों को पद-दलित होने न दूँगा मैं कहीं,
बदनाम होगा देश यह देशान्तरों में अब नहीं ॥

———

भारत-माता।

—:※:—

ऐ मेरी जान भारत! तेरे लिये ये सर हो,
तेरे लिये ही जर हो तेरे लिये जिगर हो।
हिचकूँ न तेरी सेवा से मेरी जान भारत,
गर्दन पै मेरी रक्खा शमशेर या तबर हो।
गम जान के लिये भी मुझ को कभी न होगा,
भारत तेरे लिये ही आती ये काम गर हो।
किस्मत का मेरी अखतर चमके फिर आलमाँ पर
सेवा में तेरी माता गर जिन्दगी बसर—हो।

प्रार्थना।

—०—

ख्वाहिश मेरी है या रब! अर्जुन मुझे बनाना
शहज़ोर भीम करना मोहन मुझे बनाना
सानी भरत का मुझको सज्जन मुझे बनाना,
बलराम जी का देना लछमन मुझे बनाना।
बजरङ्ग बन के गम की लङ्का को फूंक डालूँ,
बहरे मेहन को फाँदूँ कोहे अलम उठालूँ ॥ १ ॥
यह आस मेरी पूरी पे रब्बे दो जहाँ हो
जोशे दुरोन दिल में तन में करन सी जाँ हो।
चेहरे से मेरे दम खम सहदेव का अयाँ हो,
मेरी रगों में फिर से भीषम का खूँ रवाँ हो ॥
भालों की चोट सह लूँ हारूँ मगर न हिम्मत।
तीरों की सेज पर भी हो लेटने में राहत ॥ २ ॥

सांगा की तरह खा लूं खुश होके तेग़ का फल,
हो बाज़ुओं में पैदा परताप का सा कस बल।
क़ौमी वकार पर मैं मिट जाऊँ मिस्ल जयमल,
हिफ़ज़े वतन की खातिर आल्हा बनूं कि ऊदल।
अहलो अयाल छूटें, सर जाय, जान जाये।
माथे पे बुज़दिली की लेकिन शिकन न आये ॥३॥
हासिल मुझे ध्रुव की हो जाय इस्तक़ामत,
या बख्श दे तू मुझको प्रह्लाद की सी हिम्मत।
पूरन की तरह क़ायम रक्खूं मैं अपना जत सत
हो कर धरम पै क़ुरबाँ बन जाऊँ मैं हक़ीकत।
कट जायें दस्तोपा तक, उड जाय जिस्म से सर।
लेकिन न हर्फ़ आये मुतलक़ मेरे धरम पर ॥ ४ ॥
तुझसे यह दस्त कुदरत या रब अगर मैं पाऊँ,
वहबूद का वतन के बीडा अभी उठाऊँ।
कोमी निशाँ को ले के आलम में घूम आऊँ,
भूले हुए फ़साने फिर से 'फ़लक' सुनाऊँ।
सोतों को मैं जगा दूँ नग़मा वतन का गा कर।
बिछुडों को फिर मिला दूँ धुन प्रीति की उठा कर ॥५॥

कब सपूत कहलाऊँगा?

(१)

जननी जन्म-भूमि कब तेरी सेवा में मन लाऊँगा?
तव-पद-प्रेम मगन रख कर मन तन की सुधि बिसराऊँगा?
तेरे लिए पड़ेंगे जो दुख सो सुख समझ उठाऊँगा?
तन, मन, धन तुझ को अर्पन कर तेरा ही बन आऊँगा?

(२)

तेरे दुख से दुखी रहूँगा तुझे देख सुख पाऊँगा ?
अन्य गान की तान भूल कर तेरे ही गुन गाऊँगा ?
और देव का नाम न लेकर तुझ से लगन लगाऊँगा ?
ज्यों मुझ को तूने अपनाया त्यों तुझ को अपनाऊँगा ?

(३)

हे माता ! वह दिन कब होगा तुझ पर बलि २ जाऊँगा ?
तेरे चरण-सरोरुह में मैं निज मन-मधुप रमाऊँगा ?
तू समायगी मेरे मन में मैं तद्ध्यान समाऊँगा ?
भेद-भाव सब भूल भाल कर एक रङ्ग रँग जाऊँगा ?

(४)

धूल भरा तव-तन धोने को लोचन सलिल बहाऊँगा ?
तुझे श्रमित अवलोक पवन हित पङ्खा पलक बनाऊँगा ?
पीडित देख तुझे पल २ पर पीर सौगुनी पाऊँगा ?
तेरी सेवा में रत रह कर तब सपूत कहलाऊँगा ?

विद्यार्थियों को सन्देश।

उठो २ ऐ भारतवीरो माता ने तुम्हें बुलाया है।
धर्मवीर गांधी के द्वारा यह सन्देश पठाया है॥
उठो किताबें फेंको वीर गुलामी की तोड़ा ज़न्जीर।
न हो भारत जब तक स्वाधीन न लो विश्राम न हो श्रमहीन।
हो जाओ कुरबान देश पर यही मन्त्र सिखलाया है।
धर्मवीर गांधी के द्वारा यह सन्देश पठाया है॥

हिम्मत न हारिये।

— १० —

चलै तोप तलवार, चलै सगीनों की मार,
परै खाँडे हू की धार, पर आह न निकारिए।
बैठो नाग फुफकार, खड़ो शेर गुञ्जार,
उठै कैसे हू तूफान, पर प्राणों पै हू आन,
पर रहे ओही शान, यह बान न बिसारिए।
सच यह 'हिम्मती को, खुदा भी मदद देवे',
यातैं कहै भाई कबहूँ हिम्मत न हारिए॥

मैक्स्विनी का अन्तिम सन्देश।

(श्रीयुत नृसिंह)

(१)

कष्टों को पहुँचाने वाले, निष्ठुर, क्रूर, कँपाने वाले।
आवें और सतावें हमको, हम कष्टों के ही हैं पाले॥
तंग करें मनमाने ढंग से, जुल्मी पापी दिल के काले।
अटल रहेंगे सह लेवेंगे, हम दुःखों के तीखे भाले॥

(२)

पराधीन बन्दी रह कर हम, अन्न न मुँह में डालेंगे।
प्राणों पर प्रमुदित खेलेंगे, प्रण को पूरा पालेंगे॥
सात्त्विक बल से सहन शक्ति से, भूमण्डल दहलावेंगे॥
मातृभूमि पर मर मिट कर हम, अमर वीर कहलावेंगे॥

जबलों रहेगी सांस सर्वस भी लगा दूँगा,
ईश को भी झुकालूँगा देश की भलाई में ॥
चर्चा जहाँ देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले,
और नहीं खुले कहीं खुदा की खुदाई में।
मेरे कान गान सुने सांचे देश भक्तन के,
और गान आवे कभी मेरे ना सुनाई में ॥
मेरे अङ्ग रङ्ग चढे एक देश प्रेम को ही,
और रङ्ग भङ्ग होके बूडे जा तराई में।
मेरो मन मेरो तन मेरो धन मेरो जीव,
मेरो सब लागे प्रभु देश की भलाई में ॥

मेरी आरज़ू।

मादरे हिन्द की तसवीर हो सीने पै बनी।
बेडियाँ पैर में हो और गले में कफ़नी ॥
आज से शवे वफा का यही ज़ौहर होगा।
फ़र्श कांटों का हमें फ़ूलों का बिस्तर होगा ॥
फ़ूल हो जायगा छाती पै जो पत्थर होगा।
कैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा ॥
संतरी देख कर इस जोश को शर्मायँगे।
गीत जंजीर की झनकार पै हम गावेंगे ॥
दिल तड़पता है कि स्वराज्य का पैग़ाम मिले।
कल मिले आज मिले सुबह मिले शाम मिले ॥
हुक्म हाकिम का है फ़रियाद जवानी रुक जाय।
क़ौम कहती है हवा बन्द हो पानी रुक जाय ॥

पर यह मुमकिन नहीं यह जवानी रुक जाय।
हों खबरदार जिन्होंने यह अज़ीयत दी है॥
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है।

बलिदान।

जान में जब तक अपनी जान
दो वह आत्मिक बल करुणा निधि
दबें न लख बल वान॥ १॥

हमें डिगाने को यम आवे, अपना विकट रूप दिखलावे।
कभी न उनसे हम भय खावें, तजें न अपनी आन॥
पथ में अगर पहाड़ खड़ा हो, चाहे जितना मार्ग कड़ा हो।
कभी न पीछे पैर पड़ा हो, निभे सदा यह शान॥
अगर रहे दृढ़ प्रण पर अपने-होंगे सकल छुद्र छल सपने।
शत्रु लगें सब डर कर कँपने, झुकें करें सन्मान॥
मातृभूमि की वेदी पाकर, सच्चा प्रेम मन्त्र अपनाकर।
हृदय कमल की भेंट चढ़ा कर, हो जायें बलिदान॥

प्रार्थना।

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकलें।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकलें॥
भारत वसुन्धरा पर सुख शान्ति स्युता पर।
शश श्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकलें॥

देशाभिमान धरते जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्र पट हो युग नेत्र के निकट हो।
श्री जान्हवी का तट हो तब प्राण तन से निकले॥

ऐक्य।

—०—

खोलदो आँखें, उठो, लड़कर वतन को खो चुके।
हम तुम्हारे हो चुके अब तुम हमारे हो चुके॥
हुक्म गांधी, मानिये आज़ाद होने के लिये।
माडरेटों ने किया क्या जिन्दगी भर रो चुके॥
खून करता है कोई गर मज़हबे इस्लाम का—
हिन्दुओं का खून है जब एक हम सब हो चुके॥
तुम फूल हो तो हम सुगन्धि, तुम क्षीर हो हम नीर हैं।
अब दुई कैसे निभेगी प्रेम अंकुर बो चुके॥
बिल्लियों ने बैर करके न्याय बन्दर को दिया।
अब तो सम्हलना, जागना, हाँ सो चुके सो सो चुके॥
क्या शहीदों की क़बर पर नींद आती है तुम्हें!
भाइयों के खून से अपने जिगर को धो चुके॥

असहयोगी–वचन।

न लेंगे चैन दम भर बिन स्वाधीनता पाये।
खुशी से, दिल कड़ा करके सताओ जितना जी चाहे॥

'अभी लायक़ नहीं हो तुम' ये न देने, की बातें हैं।
मगर हम लेके छोड़ेंगे 'बनाओ' जितना जी चाहे॥
चलालो तोप बन्दूकें निकालो तुम हवस दिल की।
हमारे भाई से हम को कटाओ जितना जी चाहे॥
हमारी जान जाये देश हित गौरव समझते हैं।
खरा सोना कसौटी पर कसाओ जितना जी चाहे॥
हमारी गूँजती है जय तुम्हारी जय कहाँ है अब?
तसल्ली के लिये डके बजाओ जितना जी चाहे॥
अब हम कर्तव्य पथ से एक तिल भी टल नहीं सकते।
ये घुड़की बन्दरों की अब दिखाओ जितना जी चाहे॥

कर्त्तव्य।

—:o:—

बातों का यह समय नहीं है कर्मक्षेत्र में कूद पड़ो।
बन्धुविरोध भुलाकर सत्वर सत्पथ पर प्रण ठान अड़ो॥
मातृभूमि के सच्चे सेवक बन उसका सम्मान करो।
स्वार्थ भरे भावों को अपने दृढ़ता से बलिदान करो॥
अन्यायी झूठों को छोड़ो साथ न उनका ध्यान धरो।
निरपराध बच्चों के घातक दल का मत अभिमान करो॥
बहुत सहा, अब सहने की वह कायरता की बान तजो।
नौकरशाही की उपाधियों के ढोने की शान तजो॥
माननीय पर हत्यारों के त्यागो, भागो पापों से।
कायर बन कर तुम न तपाओ देश हृदय को तापों से।
अब न सडाओ प्रिय बच्चों को सरकारी स्कूलों में।
राष्ट्रधर्म का पाठ पढ़ाओ पड़े रहो मत भूलों में।

वीर वकीलो ! विश्व हिलाया बातों से गढ़ जीत लिया।
कोर्टों का काला मुँह कर दो जगदेसे क्या कार्य किया॥
देशोन्नति पर मिटने वालो ! पैर न पीछे पड़ने दो।
पहली सी पंचायत पद्धति प्रबल वेग से बढ़ने दो॥
मतदाताओं ! न्यायनाशिनी कौंसिलको मत भरने दो।
रही सही आर्यों की इज्जत यों न और अब हरने दो॥
दीनों के शोणित से रंजित हाथ न प्रतिनिधि छू पावें।
पशुबल की प्राप्ति मूर्ति पूजने प्रिय प्रतिनिधि न कभी जावें॥
कोरी शान और शौकत में देशद्रव्य मत लुटने दो।
करो गुज़र देशी चीज़ों से भारत में धन जुटने दो॥
घर घर में फिर निज करघों पर कौशल चहिये दिखलावें।
मुरलीधर मोहन को मोहक भारतीय पट पहिरावें॥
औद्योगिक व्यापारिक उन्नति कर भारत को उच्च करो।
'माल विदेशी यहाँ न खपने पावे' सन्तत ध्यान धरो॥
शस्य श्यामला भारतमैया सबला हो स्वाधीन बने।
भारतीय भारतशासनके चंदवे चारों ओर तनें॥
तभी स्वर्ग से तब सुर समुदित तुम पर सुमन गिरावेंगे।
अमरपुरी में भारत प्रेमी फूले नहीं समावेंगे।
असहकारिता आन्दोलन का शुचियश निशिदिन गावेंगे॥

आदेश।

—:*:—

(१)

बाधाओं की घोर घटा को घिरने दो पर्वाह नहीं।
विघ्नों के सम्मुख झुक जावे, ऐसे शिर की चाह नहीं

कर्म धर्म की वेदी पर हो बलि मुझको कुछ आह नहीं,
अंग अंग कट गिरे देशपर, घटे अतुल उत्साह नहीं।

(२)

देखो, दीन दुखी मत होवें, हीन मिसक कर मत रोवें,
सबलों से निर्बल दब करके स्वत्व नहीं अपने खोवें
सोते हैं जो, उन्हें जगा दो, कुयश-कालिमा वे धोवें,
जीने जी मुर्दे रह कर मानव हो मत पशु होवें।

(३)

जब विजयी बन जगत समर से विजय श्री ले आओगे,
दीना हीना अपनी माँ को सबला सुखी बनाओगे
तभी पोंछ अपने अंचल, चन्द्रवदन ! चुम्बन लूँगी,
धर्म धीर हो, चिरजीवी हो ! यह आशीष समुद दूँगी।

ग़ज़ल।

—.o:—

(१)

मुसलमाँ हिन्दू हैं एक दोनों,
समझ गये हैं यह खूब दिल में।
उग आया अंकुर है एकता का,
पड़ा था अब तक जो आन दिल में॥

(२)

मिले मुसलमाँ गले लगा कर,
हुए हैं सच्चे दिलों से भाई।
मिटाया सारी जरूरतों को,
हो धन्य भाई तुम्हें बधाई॥

(३)

जरूर होगी मुराद हाँसिल,
रहेगा योंही गर मेल क़ायम।
सितारा चमकेगा हिन्द का फिर,
खुशी के सामाँ होंगे फ़राहम॥

(४)

वही है ख्वाहिश'मधुप' की हरदम,
न मेल टूटे न जोश कम हो।
हज़ारों आफ़त का सामना हो,
मगर न पीछे कभी क़दम हो॥

अपनी प्यारी को समझाओ।

प्यारी कुछ भी न करती विचार।
चरखा कातो, सूत निकालो, इसीमें सभी सुधार।
वही सूत करघे में देकर कपड़ा करो तैयार॥
अपने पहनो, हमें पहनाओ, बच्चों को भी दो सभार।
अगर इसे नहीं मानोगी प्यारी ईज़्ज़त गई भंसार॥
देखो देशी चीजें प्यारी कहाँ रही ससार।
सेंदुर न अपना चुड़ी न अपनी कपड़ा भी न विचार।
सब कुछ खो चुकी हो प्यारी, परदेशी सिंगार।
अब भी ध्यान करोगी प्यारी होवेगा सचार।
झगड़े छोड़ चरखे में लागो पतिव्रत धर्म सुधार।
गांधी का यही सन्देश है समझो खूब विचार

घर भर को यही सलाह दे देशी मन्त्र सुधार।
'गङ्गा' बारबार विनवत है, हँसता है, संसार॥

ग़ज़ल।

—:*:—

अब ठान ली है मन में, हम तो स्वाराज लेंगे।
गांधी की सद्शिक्षा से, हम तो स्वराज लेंगे॥
आलस की नींद में हम, सब कुछ बिगाड डाला।
आँखें खुली हमारी, हम तो स्वराज लेंगे॥
काटा है दुख बहुत दिन, सदमा बहुत उठाया।
किस्मत जगी हमारी, हम तो स्वराज लेंगे॥
आशा बहुत दिनों से, दिल में हमें लगी थी।
आया समय वही अब, हम तो स्वराज लेंगे॥
नहिं हानि कोई इसमें, नहिं गौर का सबब है।
हक है मेरा पुराना, हम तो स्वराज लेंगे॥
हिन्दू मुसलमाँ मिल गये, हमको बहुत खुशी है।
दोउ भाइ हैं स्वदेशी, हम तो स्वराज लेंगे॥
सब को है दिल में इच्छा, अपने नफे की हरदम।
मेरा नफा है इसमें, हम तो स्वराज लेंगे॥
सुख स्वर्ग से भी बढ़ कर, समझा स्वराज पाना।
ईश्वर जरूर देंगे, हम तो स्वराज लेंगे॥
दुखों से दूर हो कर, दिल से दोआएं देंगे।
यह जन्म स्वत्व मेरा, हम तो स्वराज लेंगे॥
ताबे हुकुम रहेंगे जो कुछ कहें करेंगे।
लेकिन मुराद दिल की हम तो स्वराज लेंगे।

गर मेरी राजभक्ति राजा के मन बसेगी।
दिखला के दु:ख अपना, हम तो स्वराज लेंगे॥

असहयोग कर दो।

(१)

कठिन है परीक्षा न रहने कसर दो।
न अन्याय के आगे तुम झुकने सर दो॥
गँवाओ न गौरव नये भाव भर दो।
हुई जाति बेपर है तुम इसको पर दो॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(२)

मनाते हो घर घर ख़िलाफ़त का मातम।
अभी दिल में ताज़ा है पञ्जाब का ग़म॥
उन्हें देखता है ख़ुदा और आलम।
यही ऐसे जख्मों का है एक मरहम॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(३)

किसी से तुम्हारी जो पटती नहीं है।
उधर नींद उसकी उचटती नहीं है॥
अहम्मन्यता उसकी घटती नहीं है।
रुदन सुनके भी छाती फटती नहीं है॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(४)

बड़े नाज़ों से जिनको माओं ने पाला।
बनाये गये मौत के वे निवाला॥
नहीं याद क्या बाग़े-जलियानवाला।
गये भूल क्या दागे जलियानवाला॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(५)

गुलामी में क्यों वक्त तुम खो रहे हो।
जमाना जगा हाय तुम सो रहे हो॥
कभी क्या थे पर आज क्या हो रहे हो।
वही वेल हरवार क्यों वो रहे हो॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(६)

हृदय चोट खाये दवाओगे कब तक।
बने नीच यों मार खाओगे कब तक॥
तुम्हीं नाज वेजा उठाओगे कब तक।
बँधे बन्दगीयों बजाओगे कब तक॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(७)

नजूमी से पूछो न आमित से पूछो।
रिहाई का रस्ता न कातिल से पूछो॥
ये है अक्ल की बात आकिल से पूछो।
तुम्हें क्या मुनासिब सो खुद दिल से पूछो॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(८)

जियादा न ज़िल्लत गँवारा करो तुम।
ठहर जाओ अब वार न्यारा करो तुम॥
न सह दो न कोई सहारा करो तुम।
फँसो पाप में मत कनारा करो तुम॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(९)

न कुछ शोर गुल के मचाने से मतलब।
किसी को न आँखें दिखाने से मतलब॥
किसी पर न त्यौरी चढ़ाने से मतलब।
हमें मान अपना बचाने से मतलब॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(१०)

नहीं त्याग इतना भी जो कर सकोगे।
नदी मोह की जो नहीं तर सकोगे॥
अमर हो के जो तुम नहीं मर सकोगे।
तो फिर देश के क्लेश क्या हर सकोगे॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

(११)

न भोगा किसीने दुःख भोग ऐसा।
न छूटा लगा दास्य का रोग ऐसा॥
मिले हिन्दु मुसलिम लगा योग ऐसा।
हुआ मुद्दतों में है सयोग ऐसा॥
असहयोग कर दो, असहयोग कर दो।

विजय होगी।

उठो अब सत्य पर भाई विजय होगी विजय होगी।
कटादो अपना सर भाई विजय होगी विजय होगी॥
अगर वह गन मशीनों की धमकियाँ तुमको देते हैं।
बढा दो बढ के निज छाती विजय होगी विजय होगी॥
अगर वह हथकडी बेडी दिखावें तो दिखाने दो।
करो कर्तव्य सुखदाई विजय होगी विजय होगी॥
मेरे प्यारे शहीदो अब नहीं है काम देरी का।
दिखा दो चाल रौताई विजय होगी विजय होगी
अगर इस जङ्ग में चूके समझ लेना बुरा होगा
न पिछडो देख कर खाई विजय होगी विजय होगी॥
इधर हैं शेर गान्धीजो उधर है नामका का दल।
बनो मोहन के अनुयायी विजय होगी विजय होगी।

वन्देमातरम्।

शुद्ध सुन्दर अति मनोहर मन्त्र वन्देमातरम
मृदुल सुखकर दु:खहारी शब्द वन्देमातरम॥
मन्त्र यह है, तन्त्र यह है, यन्त्र वन्देमातरम
सिद्धिदायक, बुद्धिदायक एक वन्देमातरम
ओजमय बल कान्तिमय, सुखशान्ति वन्देमातरम।
भक्ति प्रदायक अति सहायक मन्त्र वन्देमातरम।
हर घडी हर वार हो हर ठाम वन्देमातरम।
हर दम हमेशा बोलिये प्रिय मन्त्र वन्देमातरम।

हर काम में हर बात में दिन रात वन्देमातरम्।
जपिये निरन्तर शुद्ध मन से नित्य वन्देमातरम्॥
सोते समय, खाते समय, कल गान वन्देमातरम्।
आठों पहर दिल में उठे मृदु तान वन्देमातरम्॥
मुख में, हृदय में रात दिन हो जाप्य वन्देमातरम्।
नाड़ियों के रक्त का संचार वन्देमातरम्॥
तेग़ से सिर भी कटे, भूलो न वन्देमातरम्।
मौत की घड़ियाँ गुँजादो शुद्ध वन्देमातरम्॥
जेल में हो तो जपो यह जाप्य वन्देमातरम्।
बेड़ियों ही को बजाकर गाओ वन्देमातरम्॥
तीर, गोली, तोप की है आड़ वन्देमातरम्।
तेग़ बर्छी के लिये दृढ़ ढाल वन्देमातरम्॥
विश्वविजयी शत्रुविजयी मन्त्र वन्देमातरम्।
"इन्द्र" का दृढ़ कवच है यह शब्द वन्देमातरम्॥

'परिचय।'

भारत माता का पाला हूँ।
मन निर्मल तन का काला हूँ॥
दुख सुख का सहने वाला हूँ।
सच निधड़क कहने वाला हूँ॥
अविराम-श्रम की काशी हूँ।
मैं सच्चा भारतवासी हूँ॥
ईश्वर से डरने वाला हूँ।
सत-पथ पर मरने वाला हूँ॥

विघ्नों से लड़ने वाला हूँ।
उन्नति में बढ़ने वाला हूँ॥
मैं ईश्वर का विश्वासी हूँ।
मैं सच्चा भारतवासी हूँ॥
मैं अरि का भी उपकारक हूँ।
शुचि सत्याग्रह का धारक हूँ॥
मैं नीति अनीति विचारक हूँ।
मैं सच्चा देश सुधारक हूँ॥
मैं श्रम कर हूँ, न विलासी हूँ।
मैं सच्चा भारतवासी हूँ॥
नृप, देश, जाति सद्धर्मों का।
परलौकिक, लौकिक कर्मों का॥
तन, मन, धन से मैं किंकर हूँ।
पशुबल का शत्रु भयङ्कर हूँ॥
निर्भय हूँ और अविनाशी हूँ।
मैं सच्चा भारतवासी हूँ॥
मैं स्वेच्छाचार विरोधी हूँ।
हूँ शान्त, नहीं मैं क्रोधी हूँ॥
हरदम गम का खानेवाला हूँ।
बदला का किया दिवाला हूँ॥
हूँ गृही या कि सन्यासी हूँ।
मैं सच्चा भारतवासी हूँ॥
मैं स्वाधीनता उपासक हूँ।
अन्याय तिमिर का नाशक हूँ।
नहिं 'हाँ हजूर' का रोगी हूँ।
नर अधिकारों का भोगी हूँ।

(२)

मैं ग्रेजुएट हूँ और लॉ को भी जानता हूँ।
चलता हूँ देखकर रुख अपनी न तानता हूँ॥
कीरत तुम्हारी दिल से हर दम बखानता हूँ।
दादा को भी तुम्हारे अपना ही मानता हूँ॥
आया हूँ दर पै तेरे हूँ वोट का भिखारी।

(३)

बन करके मेम्बर मैं कुछ भी अकड़ दिखाऊँ।
गर उनकी हाँ में हर दम अपनी भी हाँ मिलाऊँ॥
दोजख में जा पड़ूँ मैं ज़िल्लत सदा उठाऊँ।
ले करके वोट दाता तुझको जो भूल जाऊँ॥
आया हूँ तेरे दर पै हूँ वोट का भिखारी।

(४)

अपनी सखावतों से अब कर निहाल दे तू।
इज्ज़त बिगड़ न जाये दाता सम्हाल दे तू॥
भगत का दे सखी! कर पूरा सवाल दे तू।
झोली लिए खड़ा हूँ एक वोट डाल दे तू॥
आया हूँ दर पै तेरे हूँ वोट का भिखारी।

आज कल के लीडर।

मुल्क की ख़िदमत नहीं आसान है,
हर घड़ी ख़तरे में रहती जान है।
जो गरीबों की नहीं सुनते पुकार,
उनकी आहों पर न जिनका ध्यान है॥

वो करेंगे देश का क्योंकर भला:
जिनका जर ही दीन और ईमान है।
झाड़ना स्पीच मीटिंग में 'कमल',
आज कल यह लीडरों की शान है॥

आत्म विस्मरण।

भूलते न स्वत्व जो भरोसे विश्व-बन्धुता के
मान सुख सम्पत्ति स्वतन्त्रता गमाते क्यों?
जन्मभूमि का जो ध्यान रखते निरन्तर तो
गैर जन आके यहाँ पैर ही जमाते क्यों?
देके निज श्रम से समस्त जगती को सुख
अपने लिये ही दुख दारिद्र कमाते क्यों?
होता ज्ञान अपने विराट रूप का जो तुम्हें
मुट्ठी भर मानवों की मुट्ठी में समाते क्यों?

मेरी चाह।

नहीं है चाह पदवी की, न दिल में दिल मिलाने की।
नहीं परवाह दुनियाँ की, न फ़ेशन को बनाने की॥
न सबसे मेल कर करके, कपट कैंची चलाने की।
नहीं है चाह गैरों से, सलामों के कराने की॥
नहीं है गीत गाने की, धनी मानी कहाने की।
नहीं है चाह नौकर बन, किसीको सिर झुकाने की॥

स्वार्थ परित्याग।

करो तुम स्वारथ का बलिदान ॥टेक॥
उन्नत देश करना जो चाहो औ भारत उत्थान।
करो कार्य्य निःस्वार्थ भाव से होगा तब कल्यान॥
मातृ भूमि की यज्ञ भूमि पर, कर दो आतमप्रदान।
तन मन धन, वारो सब यां पर करो निछावर प्रान॥
सत पथ से तुम कभी न हो चल, रक्षक हैं भगवान।
कर्म मार्ग पर चलो निडर हो, फल को धरो न ध्यान॥
जीवन पथ यह कण्टक मय है, बाधी विघ्न महान।
चले चलो निर्भय यह बातें, विनती देश की मान॥

असहयोग भैरवी।

मन बोरो मझदार री धरम की नैया ॥टेक॥१॥
बृटिश सिन्धु के जाय भँवर में, विकट फँसी तव नैया।
तिलक डोर बल गहि न खींचौ मिल जोर लगाओ हैया॥२॥
चढे हिन्दू, सिख, यवन, जैन बुध नरम गरम सब भैया।
तिनके रहते बूड गयी तो काह कहेगी मैया॥३॥
सोरहु आना मिश्र पार भये, आयरिश पौन रुपैया।
तुम ही एक मझधार यहे क्यों भवसागर तव नैया॥४॥
लहरन से जिन डरो सङ्ग तव, सत्य धर्म परखैया।
असहयोग की डार लिये कर, "गान्धी" पार लगैया॥५॥
"माधव" या तो हो स्वतन्त्र नहिं बूड मरो बहि ठैया।
देखहु गीता बीच का टेरत मेरो "कृष्ण कन्हैया"॥६॥

गान्धी का मन्त्र।

आ गया है कर्म्म युग कुछ कर्म्म करना सीख लो।
देश पर अरु जाति पर हँस २ के मरना सीख लो ॥१॥
मारने का नाम मत लो, आप मरना सीख लो।
मिस्र आयरलैण्ड दब कर फिर उभरना सीख लो ॥२॥
पार यदि होना तुम्हें परतन्त्रता दुख सिन्धु से।
तैर कर तो रक्त सागर से उतरना सीख लो ॥३॥
तीर्थ यात्रा के लिये दिन रात उत्साहित रहो।
कृष्ण जन्म स्थान में निर्भय विचरना सीख लो ॥४॥
देखना है दृश्य भारतवर्ष में यदि स्वर्ग का।
देश का तो प्राण प्रण से दुःख हरना सीख लो ॥५॥

प्रतिज्ञा।

नहीं परतन्त्र रहेंगे हम,
न दारुण दुःख सहेंगे हम।
मिला जो स्वत्व ईश्वर से,
न खोवेंगे उसे कर से।
न डर कर विघ्न रिपु शर से,
तजेंगे क्षेत्र कायर से।
जगत-विजयी बनेंगे हम,
नहीं परतन्त्र रहेंगे हम।

सुपथ—कंटक कुचल देंगे।
कुटिल वन्धक मसल देंगे।
जगत में यश कमा लेंगे,
उसी पर वार सब देंगे।
भ्रान्ति-मद में न बहेंगे हम,
नही परतन्त्र रहेंगे हम।

जननि का ऋण पटा देंगे,
विपद् उसकी घटा देंगे।
दुखित जीवन हटा देंगे,
सबों को यह रटा देंगे।
'न पशु सम कभी जियेंगे हम,
नहीं परतन्त्र रहेंगे हम।

अमर हैं, मृत्यु से क्या डर?
करेंगे कर्म जीवन भर।
सदा बलि होंगे भारत पर,
मुक्त होंगे, यहीं मर कर।
न्याय-पग नित्य गहेंगे हम,
नहीं परतन्त्र रहेंगे हम।

द्वेष का दृढ़-गढ़ तोड़ेंगे,
फूट के सर को फोड़ेंगे।
प्रेम के पुष्प जुटावेंगे,
देश को स्वर्ग बनावेंगे।
करोड़ों कष्ट सहेंगे हम,
नहीं परतन्त्र रहेंगे हम।

चुप रहो ।

—:ꕥ:—

चुप रहो ! ऐ निर्बलो, हम हैं सबल,
तुम हमारे दास हो हम नाथ हैं ।
मार सहने को बने हो तुम अबल,
मारने को ही हमारे हाथ हैं ॥ १ ॥
चुप रहो ! ऐ निर्धनो, हम हैं धनी,
जो करें हम श्रेय हम को है सभी ।
'चञ्चला' दासी हमारी है बनी—
क्यों करें तुम पर दया हम सब कभी ? ॥ २ ॥
चुप रहो ! कृषको, हमीं भू-पति सुनो !
वे कहें सौ बार बेगारी करो ।
हम न देंगे ध्यान, तुम सौ सिर धुनो,
'देन' देकर, तब जियो चाहे मरो ॥ ३ ॥
चुप रहो ! कुलियो, लड़ो मत हट पड़ो,
देख लो पूँजी हमारी है बड़ी ।
बात तुम 'मिल-मालिकों' की मान लो,
दाम कम कर लो, पर करो मिहनत कड़ी ॥ ४ ॥
चुप रहो ! ऐ शासितो, तुम चुप रहो !
शासकों के मुँह कभी लगना नहीं ।
जो कहें हम, तुम उसे चुप हो सहो,
नियम पालन से कभी भगना नहीं ॥ ५ ॥
चुप रहो ! ऐ 'दीन दारो,' चुप रहो !
शक्ति के आगे न चलती 'दीन' की ।

हम न मानेंगे तुम्हारी, कुछ कहो,
नीति है यह, है न बात नवीन की ॥ ६ ॥
आदि से ही है बली होते बढ़े,
दुर्बलों की दाल कब गलती कहाँ ?
'जो लिये लाठी उसी की भैंस है'।
रिक्त-हस्तों का नहीं कुछ भी यहाँ ॥ ७ ॥

राय साहब !

तजलील है जहाँ में इकले हो राय साहब,
गर ईख थे कभी अब छिलके हो राय साहब।
इस राय साहबी को लेकर ही जाओगे क्या,
क्या इसको मुँह में लेकर निकले हो राय साहब?
किस वास्ते खुशामद का मर्ज मोल लेकर,
बँगले को अपने घर से निकले हो राय साहब।
बढ़ती है क़ौम आगे करने जब तरक्क़ी,
इसमें तुम्हीं कहो क्यों पिछड़े हो राय साहब।
शैदायवतन मिल कर बाजू कड़े किये हैं,
खुदगर्ज़ आग से तुम पिघले हो राय साहब।
रहबर उठा रहे हैं तुम उलटे गिर रहे हो,
क्यों इस कदर कहो तो फ़िसले हो रायसाहब।
इस रायसाहबी को ठुकरा के क़दम रक्खो,
इसकी वजह है जो तुम ढिमले हो रायसाहब।
इज़्ज़त करेगी दुनिया दुतकार दो इसे अब,
क़ौमी कलंक के तुम टिकले हो रायसाहब॥

गज़ल।

— ❀ —

सताते हो ग़रीबों को, तुम्हें ईश्वर सतावेगा।
रुलाते हो अनाथों को, तुम्हें ईश्वर रुलावेगा॥
भलाई का भला फल है, बुराई का बुरा फल है।
बुराई जो करेगा सो, बुरा फल क्यों न पावेगा॥
दया दीनों पै कर लीजै, किसी को दुख नहीं दीजै।
तुम्हारी नाव को मालिक, किनारे से लगावेगा॥
करो रक्षा अनाथों की, हो जो कुछ बन सके भाई
न दौलत में से पैसा भी, तुम्हारे साथ जावेगा॥
फिरे किस पेंठ में भूला, भजन कर ले ईश्वर का।
अरे नादान फिर यह दम, नहीं तनतन में आवेगा॥

चलाओ चरखा, चलाओ चरखा।

—— .o.o. ——

निकालो थोड़ा सा वक्त अपना,
और उसमें बैठ चलाओ चरखा।
जो इस पे भी वक्त और मिल जाय,
बीनो कपड़ा बनाओ चरखा।
जो चाहते हो नजात अपनी,
तो पहनो अपने गले में कफनी।
उठो करो देश की भलाई,
जो सीखे उसको सिखाओ चरखा।

डरो न योरोप के गन से दम भर,
पुकार दो आज जाके घर घर।
मशीनगन जो तुम्हें दिखावे,
तुम अपना उसको दिखाओ चरखा॥
ये गरदिशे चर्ख से है चरखा,
कभी न इसको जलील समझो।
जो चर्ख एकबाल पर हो जाना,
तो पहले घर में चलाओ चरखा॥
पड़ा है योरोप में जलज़लासा,
कि हाय सारा तिलस्म टूटा।
यह किसने कानों में आके फूँका,
ज़बां को रोको चलाओ चरखा॥
यह गांधी जी से खुदा ही समझे,
बनाया सभी को असहयोगी।
यहाँ तलक तो बुरा नहीं था,
मगर कहा जो चलाओ चरखा॥
नहीं है करगह का यों खटाखट,
नहीं है चरखे की योंही रें रें।
यह कह रहे हैं जो चाहो राहत,
तो बीनो कपड़ा चलाओ चरखा॥
गुलामी से छूटना जो चाहो,
जो चाहो स्वराज्य भी अता हो।
तो खाके मोटा पहिन के खद्दड़,
घरों में बैठे चलाओ चरखा॥
सुना है दाना भी घर में बैठे,
चलाया करते हैं अपना चरखा।

तो तुमको अब उम्र क्या है बाकी,
बस आओ बैठो चलाओ चरखा ॥

कामना।

देश दबा अब नहीं रहेगा दया करो, तुम छोड़ो शान,
जुल्मों की ज्वालाओं में हम नहीं जलेंगे हे मनिमान।
नहीं डरेंगे, नहीं डरेंगे दुष्टों की तलवारों से,
डटे रहेंगे रणक्षेत्र में नहीं हटेंगे वारों से।
स्वेच्छाचारी खंजर खींचे, वीर हृदय को आह नहीं,
गोले गर्ज गर्ज कर शिर पर टूटें कुछ परवाह नहीं
खूनी खून बहावें, आवें, हमें खून की चाह नहीं,
निरपराध बच्चे हम काटें पैशाचिक उत्साह नहीं।
वहाँ गनों का घन गर्जन हो, वहाँ गुँजावें जय जय गान
वहाँ करें फायर 'डायर' से, वहाँ अड़ें 'गान्धी' मतवान
वहाँ शान का ही शासन हो, वहाँ नम्रता का हो मान
दुष्टों पर भक्तों की जय हो, सत्य-सत्याग्रह हो भगवान !

सत्याग्रह का दिव्यनाद !

(सत्यमेव जयते नानृतम्)

सत्याग्रह की दिव्य ज्योति देखो यह आई
सत्याग्रह की करूँ कहो किस तरह बड़ाई

सत्याग्रह में धर्म कर्म का मर्म छिपा है,
सत्याग्रह पर परम पुरुष की परम कृपा है।
सत्य धर्म का रूप धर्म से प्रेम न न्यारा,
सत्याग्रह का प्रेम विना है सत्य न प्यारा।
जहाँ प्रेम है वहाँ नहीं हिंसा कुछ होती,
पड़े प्रेम की घोर विपत्ती पर भी ज्योती।
सत्याग्रह कर्तव्य शास्त्र ने है बतलाया,
प्रह्लादादिक भक्तजनों ने पाल दिखाया।
बड़े बडे ऋषि साधुजनों ने भी अपनाया,
शुभ सकल्प-सिद्धि का साधन इसे बनाया।
मीरां ने विष-पान किया निज नियम निभाया,
वीरम्मा ने जीव दिया पर जी न चुराया।
भस्म हुआ मंसूर अनलहक् नाद सुनाया,
इसे साध कर तुलस्ताय भी साधु कहाया।
सत्याग्रह के प्रेम मंत्र की जो लें दीक्षा,
लेवेंगे परमेश उन्हीं की उच्च परीक्षा।
जो होंगे उत्तीर्ण सिद्धियाँ उन्हें वरेंगी,
सत्ता जग की आय उन्हीं के पाँय पड़ेंगी।
सत्याग्रह का लिया जिन्होंने व्रत हो भारी,
हैं वे परम पुनीत तपस्वी सद्गुणधारी।
हिंसा रिपुता झूठ निकट उनके न रहेंगे,
होंगे जो उपसर्ग सभी वे सख सहेंगे।
नहीं किसी के जान-माल की हानि करेंगे,
परमेश्वर को छोड़ किसी से नहीं डरेंगे।
मनुज मनुज में सत्य प्रेम परिपूर्ण भरेंगे,
सत्य मार्ग पर चलने से वे नहीं टरेंगे।

मानवकुल की नहीं प्रतिष्ठा जिन में पूरी,
जिन को माने रहे सभ्यता सदा अधूरी।
वे बन्धन हों किये किसी के नहिं मानेंगे,
सत्याग्रह का जो रहस्य मानव जानेंगे।
होंगे जो कानून प्रजा-जीवन-संहारी,
होंगे जो कानून समुन्नति-बाधा-कारी,
होंगे जो कानून ज़रा भी अत्याचारी,
मानेंगे नहिं कभी उन्हें सत्याग्रहधारी।
इस की जो हो सजा हर्ष से सह लेवेंगे,
नहीं नीतिमय नियम कभी लोटा देवेंगे।
बचा भँवर से न्याय-नाव को सब खेवेंगे,
मानेंगे न अनीति कष्ट-मय तप सेवेंगे।
इस से खो के सुमति विपक्षी जुल्म मचावें,
नये नये निज शस्त्र अस्त्र दिन रात चलावें।
वैलनों में बैठ बैठ गोले बरसावें,
अपनी सारी शक्ति भले ही आ अजमावें।
होंग विचलित कभी नहीं सत्याग्रह वाले,
जायेंगे निज धैर्य नहीं सत्याग्रह वाले।
शान्ति—अहिंसा—सत्य—प्रेम में रंगे रहेंगे,
निज चरित्र सामर्थ्य दिखा स्थिर विजय लहेंगे।

महात्मा गान्धी का स्वराज्य।

बर वीर हिन्द-वासी कब तक पड़े रहोगे।
सदियाँ गुज़र गयी हैं! दासत्व कब तजोगे॥

रावण रुला रहा था तब 'रामने' बचाया।
बंसी बजा बजा कर 'श्रीकृष्ण' गान गाया॥
उन्होंने कंस कोड़ों के बाव को घटाया।
पञ्चाल राजपुत्रीं के दर्द को मिटाया॥
'गान्धी' 'अली बिरादर' तुमको जगा रहे हैं।
'सी. आर दास' नेता मशरिक सजा रहे हैं॥
पञ्जाब लाजपत को रख 'लाजपत' खड़े हैं।
यू. पी के स्तम्भ होकर 'श्रीनेहरू' अड़े हैं॥
बिहार आज भारत का हार हो रहा है।
'राजेन्द्र' हक साहब का साथ हो रहा है॥
तालिबे इल्म प्यारे अब क्या विचारते हो।
तुम जालिमों के जालों में खुद बँधा रहे हो॥
जब जब जहाँ हुई है परतन्त्रता से मुक्ती।
इतिहास कह रहा है तब की तुम्हींने युक्ती॥
जापान देश तेरा यश खूब गा रहा है।
प्रिय मिश्र ही को देखो डका बजा रहा है॥
तालीम यह जहाँ तक हो जल्द छोड़ दो तुम।
घर घर नगर में यह मन्त्र फूँक दो तुम॥
हिन्दू मुसल्माँ दोस्ती को हर तरह बढ़ा दो।
अर धर पकड़ पकड़ कर रिपु फूट को दबा दो॥
सर से कदम तले तक 'देशी' कवच पहन लो।
सब एकता का हरबा हथियार हाथ गह लो॥
लेकर क्षमाखड्ग फिर 'चरखा' चक्कर चला दो।
बस सान्ती पुष्प वृष्टि कर जय ध्वजा उड़ा दो॥
पञ्चायती अदालत अपनी यहीं बना लो।
परतन्त्रता की बेड़ी अब आपही कटा लो॥

गान्धी 'हकीम' नुस्खे में सख़्त यह मना है।
हर क़िस्म के नशों को छूना ज़हर बना है॥
हरदम दया करो तुम अपने विरोधियों पर।
निज आत्म बल बढ़ाकर खुश हो खरच घटाकर॥
बस साल भर डटो तुम दृढ़ होय साथ देते।
सहयोग छोड़ देखो 'गाँधी' स्वराज्य लेते॥

ग़ज़ल।

—:o:—

कब तक पियोगे प्याले, भारत के रहने वाले।
अब आँख खोल देखो, हिन्दोस्तान वाले॥
गैरों ने तुमको लूटा, सदियों से तुमको मारा।
क्यों बेखबर पड़े हो, भारत के नौनिहालो॥
कपड़ा रहा न तन पै, खाने को कुछ नहीं है।
करते गदागिरी हो, शाहों के नाम वाले॥
सुन्दर भवन कहाँ वे, रतनों से जो जड़े थे।
उनका पता नहीं है, भारी गुमान वाले॥
सन्तान जो तुम्हारी, फिरती है मारी मारी।
करती है आहोजारी भीष्म के नाम वाले॥
दुनियाँ में अब हमारा, कुछ भी नहीं ठिकाना।
मिलती है हमको गाली, भारत के मान वाले॥
आपस की फूट भाई, हम पर यह रङ्ग लाई।
तब ही तो मार खाई, ऊँचे निशान वाले॥
धर्मात्मा वही है, करते हैं जो देश—सेवा।
विनती यही है मेरी, भारी ईमान वाले॥

हृदय ।

—:*:—

(१)

हृदय, तू ले ऐसी कुछ ठान,
कायरता को अभी छोड़ तू, दीनों से हत्प्रेम जोड़ तू,
पारतन्त्र्य का जाल तोड़ तू, सह न कभी अपमान ॥हृदय०॥

(२)

केवल अपना पेट न भर के दीन जनों की रक्षा करके
आपद्गण से कभी न डर के, कर सुनीति रस पान ॥हृदय०॥

(३)

दुष्ट हृदय मन में झूलेगा, भक्ति न भक्त कभी भूलेगा,
भारत माँ का मन फूलेगा, छेड़ जरा तो तान ॥हृदय०॥

(४)

यदि तेरे में शक्ति अटल है, दीनों से अनुरक्ति अटल है ।
भारत माँ में भक्ति अटल है, तो कर जीवन दान ॥हृदय०॥

(५)

तूने तो स्वतन्त्रता चाही पर फैली ओडायर शाही ।
त्राहि त्राहि कर मची तबाही, गये सहस्रों प्राण ॥हृदय०॥

(६)

जिसको निज सर्वस्व दिया है, अकर्तव्य कर्तव्य किया है,
उसने ही हा ! प्राण लिया, अब मत सह अपमान ॥हृदय०॥

(७)

अभी छोड़ यह वेष जनाना, अब न किसीको कभी मनाना,
पुरुष तुल्य पौरुष दिखलाना, साहस मन में ठान ॥हृदय०॥

———

कलकत्ते में

स्वराज्य की धूम

—:o:—

कलकत्ते में

स्वराज्य की धूम।

है जो कि भारत में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की स्थापना करावे। साथ ही उस कानून में अत्यन्त अल्प अवधि भी नियत करदी जावे जब कि ध्येय की पूर्ति होगी।

यह कांग्रेस सोत्साह अपना मत प्रकट करती है कि सुधारों की कांग्रेस-लीग स्कीम उस क़ानून द्वारा शीघ्र ही प्रचलित कर दी जावे जो कि उन कार्य-प्रणाली की प्रथम सीढ़ी हो।

इस प्रस्ताव को पेश करते हुए सुरेन्द्र बाबू इस प्रकार बोले—"हम लोग गत वर्षों के विचारों की अपेक्षा आज दूसरी ही स्थिति में सम्मिलित हुए हैं। अब तक हमारी वाणी अरण्यरोदन के समान रही: अब तक हम यत्न, उद्योग, विवाद कर रहे थे, और, किसी २ की सम्मति में, एक काल्पनिक मृग-तृष्णिका का अनुसरण कर रहे थे। किन्तु अब यह सब परिवर्तित हो गया है। स्थिति में भारी उलट-फेर आ गया है। जब से कांग्रेस का जन्म हुआ तब से उसका जो सच्चा स्वप्न रहा—अर्थात् भारत के लिए स्वराज्य, उसकी पूर्ति किसी हद तक, या यों कह लीजिए कि किसी अंश की पूर्ति के हम बहुत निकट पहुंच गये हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो सर वेलेनटाइन, शिरोल के समान (धिक्कार २) [नहीं, उनके विचारों में परिवर्तन हो गया है (हास्यध्वनि) वे स्वराज्य के मित्र हैं। जो जिसका उचित अधिकार है वह उसको देना चाहिए और जो उनके भाव और व्यवहार में परिवर्तन हो गया उसके लिए कृतज्ञ होना चाहिए] मैं यह देखा करता था कि सर वेलेनटाइन शिरोल कहा ते थे कि जब मिएटो-मारले सुधारों की स्कीम सम्बंधित ो और कार्यकारी विभाग में भारतीय सदस्य सहित

व्यवहार में आ जायगी तब कांग्रेस के अधिवेशनों की आवश्यकता न रहेगी। और, हम (हिन्दुस्तानी) आन्दोलन को बन्द कर देंगे। प्रिय प्रतिनिधियो, नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते। जब तक हम पूर्ण रूप से स्वराज्य नहीं पालेंगे और जब तक हम स्वदेश को स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेशों के समान नहीं बना लेते, तब तक (ये) अधिवेशन बन्द नहीं हो सकते (करतल ध्वनि)। पिछले दिनों कांग्रेस ने बहुत काम किया पर अभी बहुत कुछ करना बाकी है। यदि आज स्वराज्य का प्रश्न व्यवहारिक राजनीति में आ गया है, यदि आज भारत का हृदय स्वराज्य की सतेज आकांक्षा से प्रकाशित हो रहा है, यदि स्वराज्य के वरदान का वचन मिल चुका है तो यह अधिकतर कांग्रेस, उसके कार्यकर्ताओं और, मैं कह सकता हूं कि, कांग्रेस की स्त्रियों के अथक और निरन्तर परिश्रम का फल है (करतल ध्वनि)।

घोषणा।

गत वर्ष लखनऊ में हम (कांग्रेस वालों) ने मुसलिम लीग से पूर्णत: एक राय होकर शासन सम्बन्धी सुधारों की एक स्कीम तैयार की थी। हमने प्रार्थना की थी कि एक घोषणा इस प्रकार की प्रकाशित की जावे कि भारत में बृटिश राज्य का अन्तिम लक्ष्य स्वराज्य है। जन-सत्ता ने हमारी पुकार सुनी। और, गत २० अगस्त को भारत-सचिव ने पार्लामेंट के पूर्ण परामर्श से 'हाउस आफ़ कामन्स' में घोषणा करदी कि बृटिश राज्य का लक्ष्य और उद्देश्य उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का स्थापन करना ही है जो धीरे २ उन्नति को प्राप्त होगा। और, जितना शीघ्र सम्भव होगा उस में वास्तविक सुधार भी किया जायगा। मुझे यह कहने तनिक भी

संकोच नहीं मालूम होगा कि यह घोषणा कांग्रेस की एक विजय है और वह विजय भी ऐसी कि उसे इस प्रकार की यासिलसिला विजयों में से सर्वप्रथम कहना चाहिए। अतः आपने इस को प्रस्ताव में उचित स्थान देकर, अच्छा ही किया। परन्तु उस में एक कसर बाकी है। अर्थात्, (आप के प्रस्तावानुसार) स्वराज्य का रूप और उस के आरम्भ का समय ब्रिटिश जनसत्ता और भारतीय सरकार निर्धारित करेगी। किन्तु ब्रिटिश जनसत्ता और भारत-सरकार की अपेक्षा हम लोगों की इस विषय में अधिकतर घनिष्ट रुचि है। अतः उस सम्बन्ध में अपनी सम्मति देने के लिए हम का अधिकार है—हमारा दावा है—और इस लिए इस स्थल पर हम आपन को प्रधान मन्त्री के वाक्यों पर आश्रित करते है। उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा था कि, युद्ध के पश्चात् जब साम्राज्य के पुनर्संङ्गठन का प्रश्न उपस्थित होगा तब—इन शब्दों पर ध्यान दीजिए—"जनता की अभिलाषाओं पर पूर्ण विचार किया जावेगा"। इस स्वीकृति के लिए हम कृतज्ञ हैं और कांग्रेस को भी इस के लिए अनुग्रहीत होना चाहिए, क्योंकि ये वचन प्रदेश-विशेष से बद्ध नहीं, इन का प्रयोग गरम देशों में भी हो सकता है। इस लिए हम उस उल्लेख पर स्थिर होते हुए भारत-सरकार के भावी पुनर्संङ्गठन में इस वचन के आदर के लिए आग्रह करते हैं। परन्तु प्रतिनिधि भ्रातृगण! भारत के शत्रु चुप नहीं हैं। उन्होंने "अभी नहीं" की सदा बलन्द कर दी है। (धिक्कार) बेशक यह धिक्कार की बात है। किन्तु अब यह [illegible] आक्षेप नहीं रहा। यह चातुर्यपूर्ण चाल है जो कदा-[illegible] उन्होंने बोयर (Boer) युद्ध के हथकण्डों से सीखी है।

वे सरकार से कहते हैं "कुछ कर दो परन्तु उस को जितना सूक्ष्म कर सको—करो, और अज्ञातकार्य में न कूद पड़ो। स्थानीय स्वराज्य से आरम्भ करो, उस को समझाओ, उस की वृद्धि करो, उस के साथ निर्वाचन समुदाय को उचित रूप में रख कर स्थानीय स्वराज्य-चक्र में ही उत्तर-दायित्वपूर्ण शासन स्थापित करो और तब इस परीक्षा-कार्य को प्रान्तीय शासन की अवस्था में ले जा सकते हो।" मुझे इस का ज़ोरदार उत्तर देना है। मैं कहता हूं कि सरकार ने स्थानीय स्वराज्य के मार्ग में बाधाओं और अयोग्यता के रोड़े अटका दिये हैं जिस से कि वह एकदम निर्बल हो गया है। आप ने उस समय उस के विरोध में कानी उंगली तक नहीं उठाई। आप बेख़बर सोये रहे और अब आप अपने पापों और कृत अकृत के पापों से लाभ नहीं उठा सकते। सुधारों को मुलतवी रखना यह एक व्यर्थ के धोखे-बाज़ी की बात है। ऐसा कभी नहीं होने का। क्योंकि सदेश का वायदा इतना स्पष्ट है जैसे कि मध्याह्न का सूर्य। उत्तरदा-यित्वपूर्ण शासन देने की प्रतिज्ञा हुई है न कि स्थानीय स्वराज्य की। यही सन्देश की टेक है। पार्लमेण्ट की स्पष्ट आज्ञा से आगे या पीछे जाना निरर्थक है।

League) के सदस्य हैं जिस के जन्म का स्वागत एंग्लो-इण्डियन पत्रों ने दुन्दुभि द्वारा किया था ? या वे थोड़े से नमः शूद्र हैं जो स्वराज्य का विरोध करने के लिए एंग्लो-इण्डियन की सहायता से डलहाउस संस्था (Dalhousie Institute) में एकत्रित हुए थे। मुझे इसका पता नहीं ! और मेरे मदरासी मित्र भी कदाचित् ही बतला सकें कि क्या वे उस मदरास सभा के सम्बन्धी हैं जो उदार परिषद् (Liberal Federation) के बड़े नाम से प्रसन्न होते हैं (धिक्कार) । और लीजिए । उन में से एक संघ तो बिल्कुल लड़ाकू सा प्रतीत होता है। भारत-सचिव के अभिनन्दनपत्र में उसका कहना है कि वे स्वराज्य के विरुद्ध लड़ने में रक्तपात तक करने को भी तैयार हैं (धिक्कार)। वाह ! कैसे वीर हैं ! स्वराज्य के विरुद्ध युद्ध करेंगे ! उन को तो अपना नाम उस जर्मन-सेना में लिखा लेना चाहिए जो सभ्यता और स्वतन्त्रता से युद्ध कर रही है। परन्तु इन कूट-नीतियों से काम न चलेगा। क्या नमः शूद्र और अब्राह्मण हमारे देशभाई नहीं है ? क्या हमारी और उन की हड्डियाँ तथा मांस एक नहीं है ? क्या उन के कल्याण का हम को विदेशी शासकों की अपेक्षा स्वभावतः अधिक ध्यान नहीं है ? यदि हम में राजनैतिक शक्तियां होतीं और उस के सञ्चालन में वे हमारे साथ होते तो, मुझे विश्वास है, हमारे प्रयत्न अब की अपेक्षा, जब कि हम देश की कौंसिलों में केवल भाषण ही दे सकते हैं, तब अधिक सफलीभूत होते।

किसी संकुचित शासनतन्त्र की आवश्यक नहीं।

हम ब्राह्मण शासनतंत्र के पक्ष में नहीं । मुसलमान हमारे साथ हैं। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि वे भी

हमारे साथ ब्राह्मण शासन को स्थान देने के लिए मिल गये हैं ! मेरे मित्र मि० चक्रवर्ती ने टाउनहाल में इसी विषय पर एक भाषण दिया था। उस भाषण से मैं पूर्णतः सहमत हूं। मुझे विश्वास है-आप भी होंगे। उन्होंने कहा था कि स्वदेशी शासन विदेशी शासन से अधिक अच्छा है। यह भी स्मरण रखिए कि संकुचित शासन जनसत्ता के शासन का विधाता है। प्राचीन काल मे प्लेबियन (Plebiens) और पेट्रीशियन (Patrician) के विरोध में यही हुआ था और १८३२ ईसवी के पहिले संयुक्त राज्य (United Kingdom) में भी यही दशा थी। दूसरा आक्षेप जो हम पर आरोपित किया जाता है वह यह है कि "अजी, शाहाबाद के दंगे पर तो नजर डालो"। और, 'पायोनियर' ने तो यहाँ तक कह डाला कि स्वराज्य-संस्थाओं द्वारा ही ये झगड़े गढ़े गये (धिक्कार) ! यह बात का बतंगड़ है। यह सरासर सफेद झूठ है। मै 'पायोनियर' को चुनौती देता हू कि वह एक भी उदाहरण ऐसा बतलावे कि अभियुक्तों में से कोई भी स्वराज्य-संघ का सदस्य रहा हो। मैं 'पायोनियर' को इस की भी चुनौती देता हूं कि वह किसी घटना, अवस्था, सूक्ष्म परिणाम का भी उल्लेख करे जिनका उन दङ्गों के सङ्क्रमण में स्वराज्य का कुछ भी सम्बन्ध रहा हो। पर उन्होंने जब यहां मुँह की खाई तब दूसरा ही मार्ग पकड़ा। 'पायोनियर' कहता है कि यदि उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दे दिया गया तो विप्लवकारियों में के कुछ आदरणीय पुरुष शासन-सचालन में आ जांयगे। यहां मेरे मित्र मि० मज़रुलहक़ और मि० हसनइमाम उपस्थित हैं। मुझे विश्वास है कि वे जन-निर्वाचन समुदाय के उचित सदस्य

बनायेंगे और मुझे यह भी विश्वास है कि वे उचित उपदेश भी देंगे। सजायाब बहुतेरे उपद्रवी केबिनेट-मिनिस्टर हो चुके हैं। इस सम्बन्ध में अंग्रेजी उदाहरण भी पृष्ठपोषक है। उदाहरणार्थ मि० जोन वर्नस् को ले लीजिए। वे स्थानिक सरकारी बोर्ड के सभापति हुए थे (करतल ध्वनि)। अतएव ऐसा तर्क परीक्षा में कभी भी स्थिर नहीं रह सकता।

निर्वाचितों का प्रश्न।

मैं क्षण भर के लिए निर्वाचन समुदाय के उपस्थित प्रश्न पर कुछ विचार करना चाहता हूं। मुझे आशा है कि मैं आप का अधिक समय नहीं ले रहा हूं (नहीं २)। हमारी निस्बत एंग्लो इण्डियन पत्रोंका कहना है कि-मैं आशा करता हूं कि उनके यहां उपस्थित प्रतिनिधि मेरे शब्दों पर ध्यान देंगे—हम लोगों में ऐसे व्यक्ति ही नहीं जिन्हें उचित निर्वाचित व्यक्ति कहा जाय। मैं कहता हूं कि हम लोगों में निर्वाचक दल है। अपरञ्च हमारे पास ऐसे अनेक साधक और यथेष्ट साधन भी हैं जो समस्त भारत द्वीप में विस्तृत हैं और जिनसे विद्वान्, योग्य और सत्यव्रती निर्वाचक समुदाय बनेंगे, जो साम्राज्य की कौन्सिलों में प्रतिनिधि भेजेंगे। अब उन निर्वाचक समुदाय को लीजिए जो म्युनिसिपैल्टी और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड में अपने सदस्य भेजते हैं। प्रायः हमारे यहां सार्वजनिक निर्वाचक अधिकार है। बङ्गाल में यही दशा है। मैं संयुक्तप्रान्त और अन्यत्र की स्थिति नहीं जानता। बङ्गाल में निर्वाचक गण उत्तम लोगों को ही म्यूनिसिपैल्टी या स्थानिक बोर्डों के लिए सदस्य चुनते हैं। छोटी छोटी बातों में हमारी परीक्षा हो चुकी है और, मेरा दावा है कि, अब हम बड़े कार्यों के

योग्य है। बङ्गाल में पुरुषों की जन संख्या एक करोड पच्चीस लाख है जिन में पढे लिखे पच्चीस लाख हैं शेष पुरुषों में से तीस लाख का निर्वाचक दल सुगमता से प्रान्तीय कौन्सिलों के लिए बन सकता है जिसमें इस संख्या के चौथाई पुरुष प्रतिनिधि होंगे। मदरास प्रेसिडेन्सी के मेरे मित्र मि० वी० एन० शर्मा ने कहा था कि निर्वाचक समुदाय का बनाना वहां ऐसा सरल नहीं है। इस लिए यह प्रश्न किसी और नियत से नहीं इसी उद्देश से रखा गया है कि उस बुरे दिन से जल्दी छुटकारा मिल जाय क्योंकि तभी तो इस प्राचीन भूमि में स्वराज्य-अभिषेक हो सकेगा। प्रस्ताव में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन के लिए कुछ नहीं है। उत्तरादायित्व-पूर्ण शासन का अर्थ है ऐसे शासन का जो निर्वाचक समुदाय के प्रति उत्तरदायी हो और जिसके कार्यकारीगण जनता के प्रतिनिधियों द्वारा अलग किये जा सकें। इस प्रस्ताव में दो मुख्य मन्तव्य, जो उत्तरदायित्वपूर्ण शासन से सम्बन्ध रखते हैं, रह गये हैं। उत्तरादायित्वपूर्ण शासन की जो दूसरी सीढ़ी है उसके लिए इसमें स्थान दिया गया है। इसमें हमने बजट, आर्थिक कोष और कार्यकारीतन्त्र स्वाधीन रखा है। प्रस्तावानुसार हम अधिकारीतन्त्र को निकाल नहीं सकते परन्तु ऐसी स्थिति अवश्य बना सकते हैं जिस से कि उनको त्याग-पत्र देना पडे। कार्य करने की यह प्राच्य रीति है। उनका गला पकड कर उनको धक्का देकर निकालने के स्थान में हम उनको नमस्कार और सलाम करेंगे। इसलिए वास्तव में यह प्रस्ताव एकगृह है, ठहरने का स्थान है, उन्नतिशील स्थिति है, जिस से उत्तरादायित्व-पूर्ण शासन मिलेगा। मेरे बङ्गाली मित्र कुछ असतुष्ट हैं और

वे इससे कुछ और आगे बढ़ना चाहते हैं। मुझे तनिक भी आपत्ति नहीं (सुनिये २)। परन्तु जहां तक कांग्रेस जा सकती है हमें वहीं तक जाना चाहिए। फिर यदि आवश्यकता हुई तो हम स्वय और जा सकते हैं। यह बात साधारण बुद्धि और अनुभव से काम लेने की है। हमको मिलकर-एक वेग-से चलना चाहिए। फिर यदि हमारे मित्र और साथी हमारे संग जाने को तैयार न हों तो फिर हम अकेले ही चल पड़ेंगे। सर्वोपरि यह ध्यान रखिए कि हमारी अवस्था यह है। एकता हमारा कार्य-नियम होना चाहिए। कांग्रेस के इतिहास में हम एक नवीन अवस्था में प्रवेश कर रहे हैं। अब तक हम आलोचना करते आये है। मि० माण्टेगु मार्च के आरम्भ में इङ्गलेण्ड लौट जॉयगे तब वह अपने प्रस्तावों का संगठन कर के एक मसौदा पेश करेंगे।

डेपूटेशन का प्रस्ताव।

हम लोगों को उस समय क्या करना चाहिए? निःस्वार्थ और निश्चिन्त मनुष्य होने के कारण, हम निरपेक्ष नहीं रहे। मेरा प्रस्ताव है कि एक डेपूटेशन इङ्गलेण्ड भेजा जावे जो ऐसी एक संस्था चलावे जिससे कि हमारे देखते ही देखते भारत को स्वतन्त्रता मिल जाय और जो इतिहास में नवयुग उत्पन्न करदे। आप के पहिले डेपूटेशनों ने दृष्टि-कोण में परिवर्तन कर दिया है। दूसरा डेपूटेशन अच्छी सफलता प्राप्त करेगा। स्मरण रखिए कि जब लार्ड कर्ज़न सरीखे मनुष्य स्वराज्य के पक्षपाती है तब हम सुधार के निकट ही हैं। उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का वचन को समय से एक दिन भी पूर्व नहीं दिया गया। लार्ड

कारमाइकल ने रायल ,संघ (Royal Institute) में भाषण करते हुए कहा था—और वे भारत के सम्बन्ध में बहुत माननीय हैं—"भारत की समस्त जातियों में असंतोष फैल रहा है। क्यों ? इस लिए कि जो वचन उसको दिये गये थे या तो वे पूरे नहीं किये गये या किये गये तो अपूर्ण रूप से, इस लिए कि सद्नीति का घोर दुरुपयोग किया जा रहा है और साम्राज्य की कौंसिलों में शान्ति-नीति की न्यूनता है और इस लिए भी कि अधिकारी-तन्त्र स्थिति का सामना करने में सफलीभूत नहीं हुआ।" १८५८ में महारानी विक्टोरिया ने अपनी कृपालु घोषणा में कहा था कि "हम भारतीय प्रजा के उन्हीं कर्तव्य-बन्धनों से बँधे हुए हैं जैसे कि अपनी अन्य प्रजाओं से।" यह समानता की प्रतिज्ञा है। पर क्या उपनिवेश के साम्राज्य के अन्य भागों की प्रजा की बराबरी में होने का हमें सौभाग्य प्राप्त है ? स्वयं अपने देश में ही हम निकृष्ट अवस्था में रहते और आहें भरते हैं। सन् १९११ में यद्यपि स्वाधीनता का वचन मिला था पर वह प्रान्तीय स्वतन्त्रता है कहां ? प्रति-ध्वनि कहती है कि "कहां"? लार्ड कारमाइकल ने अपने भाषण में कहा था कि यह असंतोष भयावह है। हम साम्राज्य के सब कामों में भाग लेने को तैयार हैं पर सिर्फ इसी बात पर अर्थात्, जब कि हमारा साम्राज्य में बराबरी का दरजा हो और हमारे भ्रकुटी से राजनैतिक हीनता का चिह्न हटा दिया जाय और हम स्वतन्त्र राष्ट्रों में अपना सिर ऊंचा कर सकें। हमें धोखे-धड़ी और दिखावट में अधिक न डालिए। लेक्चर देने की सभायें भी हम नहीं चाहते। इनमें बहुत समय हो चुका। हम कुछ वास्तविक सारयुक्त

सुधार चाहते हैं जो जनता की उचित आकांक्षाओं को सन्तुष्ट कर सके। समस्या की पूर्ति में जैसे २ विलम्ब होगा वैसे ही वैसे कठिन समय उपस्थित होगा। आयरलैण्ड के इतिहास के दोषों को यहां दुहराने की ज़रूरत न हो। ज्यों २ सुधारों का देना स्थगित किया जायगा त्यों २ मांग अधिक और अवस्था भी अधिक अपकारी होगी। मुझको कोई संशय नहीं है कि बृटिश जनता स्थिति के गाम्भीर्य के विषय में खबरदार हो गई है।" सुरेन्द्र बाबू के पश्चात्

(२) माननीय मि० जिन्ना

ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। कहा—"इस प्रस्ताव के तीन खंड हैं। पहिला यह कि कांग्रेस भारतीय सरकार की ओर से की हुई घोषणा पर साभार सन्तोष इस लिए प्रकट करती है कि उसका लक्ष्य भारत में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन स्थापन करना है। सन् १८७५ में बम्बई की कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से इस प्रकार की घोषणा के लिए मतालबा किया था और सन् १८१८ में लखनऊ की कांग्रेस और मुसलिम लीग-दोनों-ने सुधारों की सम्मिलित स्कीम तैयार की। साथही प्रस्तावना में उन्होंने इस नीति की घोषणा भी चाही थी कि भारत को शीघ्र ही स्वराज्य दे दिया जाय। इस मतालबा के उत्तर में,जोकि कांग्रेस और भारतीय मुसलिम लीग दोनों का ही मतालबा है, ब्रिटिश सरकार ने गत २० अगस्त को घोषणा कर दी। अस्तु, इसलिए ही हम इस प्रस्ताव द्वारा हार्दिक सन्तोष प्रकट करते हैं। प्रस्ताव का दूसरा खंड अत्यन्त महत्व का है और फिर मैं तीसरे खंड पर आगे चल कर विचार करूंगा। जो सुधार-स्कीम लख॰

नऊ में स्वीकृत हुई थी वह पूर्ण उत्तरदायी शासन के प्रति केवल निश्चित गमन है परन्तु साथही हम यह भी चाहते हैं कि पूर्ण उत्तरदायी शासन की प्राप्ति एक क़ानून में रख दी जाय और किसी पक्ष विशेष की इच्छा पर आश्रित न की जाय और इसी कारण हम कहते हैं कि (स्वराज्य-प्राप्ति की) अवधि क़ानून में ही लिख दी जाय। क्योंकि एक सीढी के पश्चात, जिसका कि प्रस्ताव सुधार-स्कीम में है, दूसरी सीढ़ी स्वतः आ जायगी, और वही नव क़ानून द्वारा स्थापित पूर्ण उत्तरदायी शासन कहला सकेगा। प्रस्ताव का तीसरा खण्ड यह है, कि लखनऊ में निश्चित सुधार-स्कीम शीघ्र व्यवहार में लाई जाय। महिलाओ और सज्जनों, इसी सुधार-स्कीम पर हम आप को कुछ समय के लिए रोकना चाहते हैं। कहा जाता है कि यह स्कीम तर्करहित है, यह भी कहा जाता है कि यह सुधार-स्कीम स्तम्भन उत्पन्न कर सकता है। इन आलोचनाओ के प्रति मेरा यह उत्तर है कि सम्राट् ने यह घोषणा करदी है कि मेरा उद्देश इस देश में पूर्ण उत्तरदायी शासन देना है और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए आवश्यक प्रयत्न शीघ्र ही किये जायेंगे। अतः इस घोषणा के अनुसार जो कुछ भी प्रस्ताव किया गया है वह यही कि उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का सारयुक्त भाग जितना शीघ्र हो दिया जाय। इस लिए तर्क-रीति से यह आशय हुआ कि कुछ अंश में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन होगा और यदि कुछ अंश में ऐसा शासन मिल रहा है तो क्या आप ऐसी किसी स्कीम का अनुमान कर सकते हैं जो ऐसी तैयार की जाय कि जिसका कुछ भी अंश अद्भुत गुणों का नहीं और जो स्तम्भनकारी न हो सकती हो? मेरा कहना है कि मै यह

जानना चाहता हूं कि अपनी पूर्ण योग्यता से हमने एक स्कीम तैयार की है और जिसे मैं साहसयुक्त कहता हूं कि कुछ देशों के राज्य-संगठन से अपरिचित नहीं है परन्तु मैं जो जानना चाहता हूं वह यह है कि इस समय आपकी क्या स्कीम है? सरकार की ओर से अभी तक कोई प्रस्ताव पेश नहीं हुआ है। और जब तक मुझको इसके विषय में विश्वास न दिला दिया जाय यह तब तक मैं यही कहूंगा कि यही स्कीम भारत के लिए सर्वोत्तम है (हर्षध्वनि)। हमने कुछ स्थानों से कुछ और प्रस्तावों की भी चर्चा सुनी है, और यदि कोई प्रस्ताव कुछ भी विचारयोग्य है तो वह सिर्फ मि० कीर्टस की जॉफिशानी वाला प्रस्ताव है और उस प्रस्ताव को एक वाक्य में रखने के लिए जो उनसे आया है अथवा उनके समर्थन या उपदेश से किसी प्रकार आया है, यह है कि इस देश में कुछ उत्तरदायित्वपूर्ण और अंशतः अधिकारी-तन्त्र शासन स्थापित किया जाय। और उसका अधिक भाग अधिकारीतन्त्र के अधीन रहे और महत्वहीन कुछ विभाग हमको आरम्भ में दे दिये जांय और तब यदि हम अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करें या कर्तव्यविमुख हों तो वे वापिस ले लिये जॉय और हम लोग अलग कर दिये जाँय। इसके विपरीति में केवल एक दलील दूंगा। मान लीजिए कि इस देश के लोगों को मुख्य शासन में कोई विभाग दिया गया, जो उत्तरदायी शासन की नीति पर चलाया जाय, तो मैं समझता हूं कि देश के विविध भागों से आप उसके लिए प्रतिनिधि भेजेंगे और वे उस विभाग को उत्तरदायित्व पूर्ण शासन के मार्ग पर चलावेंगे अर्थात् व्यवस्थापक सभा के आदेश से कार्यकारी तन्त्र अलग किया जा सकेगा। मैं

अब आप से यह प्रश्न करता हूं कि हमारे इस विभाग के संचालन का न्यायाधीश कौन होगा? यदि आपने उन्हें खुश रक्खा तो वे (अधिकारी तन्त्र) कहेंगे कि "वास्तव में तुम भारत के प्रतिनिधि हो, वास्तव मे निर्वाचन समुदाय की सम्मति तुम्हारी पृष्ठपोषक है परन्तु हमारी समझ में तुमने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग किया और इस लिए जो उत्तरदायित्वपूर्ण शासन हमने तुम्हें दिया था वह हम वापस लेते हैं" इस से बढकर मेरे अनुमान में और कोई असम्भव बात नहीं आती कि तीस करोड़ प्रतिनिधियों के कार्य और व्यवहार के अन्तिम न्याय-कर्ता अधिकारी-तन्त्र हों! हम को छोटे २ विभाग दिये जावेंगे। इस लिए मेरा केवल यह अनुरोध है कि बस, हमारी स्कीम तैयार है। यह कहना व्यर्थ है कि उसमें कुछ दोष है। हिन्दू और मुसलमान, दोनों, उनका समर्थन करते हैं। आप अपना प्रस्ताव तो उपस्थित करें। यदि वे न्यायानुकूल समझे गये तो हम निश्चय करेंगे कि हम उससे सहमत हैं या नहीं। एक बात में और कहना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि मि० माण्टेगु, जो इस समय यहां अपने कार्य कर रहे हैं, इङ्गलैंड लौटने पर वहाँ अपनी सम्मति प्रकट करेंगे और कदाचित मई मास के लगभग। जब वह अपनी सम्मति प्रकाशित करेंगे और जब उनके मन्तव्य इस देश तथा ग्रेट ब्रिटेन में विचारणार्थ रखे जायँगे तब, मैं आप से एक प्रश्न करता हूँ कि, आप क्या करेंगे? मेरी इच्छा है कि आप उसके लिए तैयार रहें। हम आज यहां एकत्रित हुए हैं और फिर अलग २ हो जायेंगे परन्तु जहां तक मुझ को ज्ञान है ये प्रस्ताव मई मास के लगभग प्रकाशित होंगे।

इस लिए मै चाहता हूँ कि आप विचारें कि आप क्या कार्य करेंगे। इस सम्बन्ध में मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि समय ऐसा उत्तम है और विषय ऐसा गम्भीर, कि मई मास में, या मन्तव्य-प्रकाशन के पश्चात्, शीघ्र ही कांग्रेस और भारतीय मुसलिम लीग का एक विशेष अधिवेशन हो और उस अवसर पर दोनों मिल कर ध्यान पूर्वक मि० मान्टेगु की सूचनाओं पर विचार करें और अपने इस प्रस्ताव को भी ध्यान में रखते हुए सदा के लिए यह निश्चय कर लें कि हमारी माँग क्या होगी। उसके पश्चात्, पीछे न हट कर अपनी मांग के समर्थन में हमें अपना समस्त बल और उत्साह लगाना चाहिए। मै प्रार्थी हूँ कि मेरा यह मन्तव्य नेतागण ध्यानपूर्वक विचाराधीन रखेंगे।" फिर

(३) बा० विपिनचन्द्र पाल

उठे। आपने कहा—"मै समझता हूँ कि मै किसी क़दर अधिकारहीन हस्तक्षेप कर रहा हूँ, परन्तु मुझ को इसके लिए खेद नहीं है, क्योंकि इस देश का प्रत्येक माननीय सज्जन सर शङ्कर नायर से ले कर निम्नश्रेणी तक के सभी लोग-अपनी अपनी स्थिति में कुछ न कुछ अपने को वैसा ही बाधक मानते हैं। मै अपने को अनाधिकारी इस कारण से समझता हूँ कि जिस प्रस्ताव को उपस्थित कर के उसका अनुमोदन किया गया उसका मैं हार्दिक समर्थन न कर सका। और न मै बुद्धिमत्ता से उसका विरोध ही कर सकता हूँ। इस लिए मै एक उपप्रस्ताव उपस्थित करता हूँ। [illegible]र यह उपप्रस्ताव सिर्फ बङ्गाल के ही समस्त भागों के [illegible]ारपूर्ण सम्मति और एकीकृत वाणी को ही नहीं वरन्

मैं यहां पर उपस्थित प्रत्येक कांग्रेसवादी की भी एक व्यक्तिगत रूप से उसमें सम्मति समझता हूं। वह उप-प्रस्ताव इस प्रकार है। मैंने यह उपस्थित करना चाहा था कि मि० मांटेगु की नीति-घोषणा (अर्थात् भारत पर ब्रिटिश-शासन का उद्देश) के पश्चात् पार्लामेंट तुरन्त एक एक्ट बना डाले, और मैं चाहता हू कि उक्त एक्ट में भारत को साम्राज्य का एक मुख्य खण्ड समझते हुए उसे उत्तरोत्तर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देने की एक शर्त हो। मेरी यह इच्छा थी कि उसमें भारत-सरकार के काम प्रान्तिक सरकारों के कर्तव्यों से अलग और स्पष्ट कर दिये जाय। भारत-सरकार के काम केवल समूचे देश के शासन सम्बन्धी होने चाहिए और प्रान्तों के पारस्परिक सम्बन्ध के मामलों को भी भारत-सरकार ही तय करे। भारत-सरकार के कर्तव्य स्पष्टतः अलग हो चुकने के पश्चात् प्रान्तिक सरकारों के दायित्वों को केवल प्रान्तिक मामलों तक ही परिमित रखना चाहिए और इन्हें समस्त प्रान्तिक मामलोंमें, यहां तक कि आर्थिक मामलों में भी भारत-सरकार की मानहती से मुक्त कर देना चाहिए। सज्जनों, मैं इस बात को आपके सामने रखता हू, क्या आप में से कोई सज्जन ऐसा है जो इस प्रकार के प्रान्तिक स्वराज्य का समर्थन न करेगा? ('कोई नहीं,' कोई नहीं,' की ध्वनि)। मैं जानता था कि आप यही कहेंगे। दूसरी बात मैं यह कहता कि यह एक्ट प्रान्तों को समूचा उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दे देता। मै यह चाहता कि प्रान्तिक व्यवस्थापक कौंसिलों से सरकारी अफसरों

का मनोनीत करने की प्रणाली बिल्कुल मिटा दी जाय। ('सुनो' २ की ध्वनि)। इसके आगे मैं यह चाहता कि प्रान्तिक कौन्सिल का एक मेम्बर, प्रान्तिक शासन में ब्रिटिश शासन का प्रतिनिधित्व धारण करने वाले लेफ्टीनेन्ट गवर्नर या गवर्नर के संरक्षण में कार्य-कारिणी कौंसिल का संगठन करें। लेफ्टीनेन्ट गवर्नर या गवर्नर के आज्ञानुसार, जिस मेम्बर पर सबका (व्यवस्थापक सभा के सदस्यों का) पूरा विश्वास हो, वही (कार्यकारिणी) कौंसिल का इस प्रकार संगठन करने पावे, और यह कौंसिल व्यवस्थापक कौंसिल की मातहती में रहे। इसके आगे मैं यह चाहता कि सब प्रकार की अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधि चुनने की प्रणाली बिल्कुल मिटा दी जाय, और साथ ही पिछड़ी हुई कहाने वाली जातियों और महत्वपूर्ण वर्गों और संस्थाओं के भी प्रतिनिधित्व का पूरा प्रबन्ध कर दिया जाय। मैं ग्रेटब्रिटेन के पिछड़े हुए वर्गों के वास्तविक तथा पूर्ण अनुभव के पश्चात् कहता हूं कि हमारी ये जातियां चतुरता, आचरण, समझदारी और मनुष्यता में किसी भी प्रकार से कम नहीं हैं (करतल ध्वनि) और समुद्र पार के उन वर्गों की अपेक्षा गई गुज़री नहीं हैं। मेरा कहना यह है कि वे पीछे छूट गई हैं। हम विशेष निर्वाचक-दलों द्वारा इन पिछड़ी हुई जातियों के विशेष प्रतिनिधि रक्खा करेंगे। इसके आगे मैं यह चाहता कि कांग्रेस-लीग स्कीम में कही गई व्यवस्थापक सभाओं में मुसलमान प्रतिनिधियों की फी सैकड़ा संख्या भी इस एक्ट में एक करार पाय, ताकि हम पर तथा सभी लोगों पर यह एक प्रकार संयम रहे कि हमारे मुसलमान मित्र उस समझौते

पूर्णतः उस स्थिति में रखे जांय जब तक कि वे हम लोगों के साथ सम्मिलित रूप में नहीं रहना चाहते, और यह उस समय तक जब तक कि पृथक् निर्वाचन की प्रणाली उनकी मदद से बनाये गये पक्ष द्वारा नहीं दी जाती। हम भारत-सरकार को इसी रूप में बनाये रखेंगे जिसमें कि वह इस समय है, सिर्फ हम इतना ही चाहेंगे कि भारत-सरकार कांग्रेस-स्कीम को जहां तक उसका उससे सम्बन्ध है स्वीकृत कर ले।

कांग्रेस-स्कीम।

कांग्रेस-स्कीम एक उत्तम स्कीम है। मैं उसके विरुद्ध कुछ नहीं कहता। मै सिर्फ यही कहता हूं कि जिस परिस्थिति के बीच हमने उसे बनाया था वह स्थिति, जैसा कि बा० सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी कह चुके है, अब बदल गई है, बल्कि किसी २ अंश में तो उसमें बहुत बड़ा परिवर्तन तक हो गया है। यह स्कीम इस विचार को लेकर तैयार की गई थी मानों हम इस देश में सरकार के विरोधियों में वही दर्जा रखते हैं जो इङ्गलैंड की पारलामेंट में विरोधी दल का होता है। स्कीम का मूल भाव और सिद्धान्त यह है कि हम सरकार का विरोध करें, उसे रोकें और धीरे २, अगर हम प्रबन्ध कर सकें तो, उसको असम्भव कर दें। मेरे मित्र मान० मालवीय जी कहते हैं कि 'नहीं,' ऐसा नहीं है। मैं नीति का ज्ञान रखने वाले वकीलों के समक्ष सिर झुकाता हूं, लेकिन एक ईमानदार साधारण आदमी की भांति। मैं वकीलों पर कोई आक्षेप नहीं करता। मैं यह

समझना हूं कि यदि आपकी कार्यकारिणी कौंसिल
में आधे तो विरोधी दल के निर्वाचित सदस्य हों
और आधे सरकार द्वारा नियुक्त, तो इसके माने क्या
होंगे? या तो निर्वाचित सदस्य सदा इस्तीफा देते रहेंगे,
या दूसरे दल में मिल जायगे और नहीं तो वे दूसरे दल के
स्थायी विरोधी हो जायगे। कांग्रेस-स्कीम अगस्त की
घोषणा के पहिले बनाई गई थी। गत वर्ष हम इस बात को
जानते ही न थे कि ब्रिटिश सरकार तथा सम्राट् के दायित्व-
पूर्ण मन्त्री पार्लामेंट के साथ हम से शान्ति के लिए सहयो-
गिता चाहेंगे। मैं इस घोषणा को भारतीय स्वराज्यवादियों
और अंग्रेज़ी राज्य की दृढ़ता चाहने वालों के बीच का सम-
झौता मानता हूं।

घोषणा के परिणाम।

यदि लार्ड हार्डिंञ्ज की सोची हुई अवधि से यह युद्ध
और लम्बा न बढ़ जाता तो यह घोषणा और सुधारों का
वचन न दिया जाता। मैं आपसे कहता हूं कि अगर इस
घोषणा के पश्चात् शीघ्र ही एक एक्ट न बनाया जायगा तो
यह आन्दोलन न तो रुकेगा ही और न पलटेगा।
फिर दूसरी तरफ यह भी बात है कि इस घोषणा
ने आरम्भ में असाध्य उत्तरदायित्व पूर्ण प्रान्तिक
शासन और फिर मुख्य (भारतीय) शासन के लिए, न कि
छोटे २ सुधारों के लिए, आपकी अभिलाषा को आगे बढ़ा
दिया है। यह आन्दोलन और बढ़ेगा। लेकिन वे इसका
बढ़ना क्यों नहीं रख सकते? इस लिए कि वे साम्राज्य के
लिए तुम्हारी सहायता, सहानुभूति, समर्थन और भक्ति
चाहते हैं। हम लोग साम्राज्य के भक्त होने के लिए

तयार है। हम साम्राज्य के भक्त हैं। लेकिन कोई भी मनुष्य उस वस्तु का भक्त नहीं हो सकता जो कि उक्त मनुष्य के सबसे ऊँचे और प्रिय आदर्शों से सम्बन्ध नहीं रखती। हम उस चीज के भक्त हैं जो हमसे सम्बन्ध रखती है और जिससे हम सम्बन्ध रखते हैं। हम ऐसे साम्राज्य की रक्षा के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने को तैयार हैं क्योंकि हम जानते हैं, मानते हैं और अनुभव करते हैं, कि अगर ब्रिटिश-शासन से हमारा सम्बन्ध बलपूर्वक तोड़ दिया जाय तो हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व पर खतरा पहुचेगा। ये बातें हमारे और दूसरे पक्ष के लिए एक ही प्रकार के मतलब की हैं। आज यह घोषणा वे क्यों करते हैं? इस लिए कि साम्राज्य इस प्रकार के त्याग का इच्छुक है, इस लिए कि यह साम्राज्यके जीवनके लिए परमावश्यक वस्तु है। और जब किसी वस्तुके जीवन-रक्षाके लिए कोई त्याग चाहा जाता है तो उक्त त्याग को न करना मानों उस चीज के जीवन को ही नाश हो जाने देना है। साम्राज्य इस समय त्याग चाहता है। अगर ऐंग्लोइन्डियन उक्त त्याग को करनेके लिए तैयार हैं तो हम भी तैयार हैं। यदि वे तैयार नहीं हैं तो हमारा त्याग भी व्यर्थ जायगा। वे हमारी आकांक्षाओं को दाब नहीं सकते। अगर वे ऐसा करते हैं तो साम्राज्य को हानि पहुँचेगी। अवस्था चिन्ताजनक है और अब वह मार्मिक समय आ गया है जब इंगलैंड को साम्राज्य के स्वामीकी हैसियत रखते हुए अपने बड़े उत्तरदायित्व को खूब समझ लेना है। यदि उसने इस बात को नहीं समझा तो उसकी क्षति होगी, और अगर हम साम्राज्य की मांग का उत्तर न दे सकें तो हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व का खटका है। फिलहाल,मैं कांग्रेसस्कीम को

स्वीकार करता हूं। मि० मांटेगु जब अपनी घोषणा सुना दें तब आप मेरे साथ २ पूर्ण अबाध्य उत्तरदायित्वपूर्ण शासन, अभी तुरन्त प्रान्तों के लिए, फिर, साम्राज्य संगठनके समय भारत-सरकार के लिए एक स्वर से मांगें (करतल ध्वनि और हर्ष ध्वनि)" मि० पाल के पश्चात्

(४) लोकमान्य तिलक

ने स्वाराज्य-प्रस्ताव के समर्थन में कहा—"मि० पाल समझते हैं कि नीति की घोषणा के लिए कृतज्ञ होने का अभी समय नहीं है। किसी हद तक मैं उनकी इस राय से सहमत हूं, पर साथ ही मैं यह भी नहीं कह सकता कि प्रस्ताव के शब्द पर्याप्त नहीं हैं। क्योंकि कृतज्ञता का अर्थ इङ्गलैण्ड के एक उत्तम नीति-शास्त्र-लेखक ने 'भावी कृपाओं की प्रतीक्षा का करना' बतलाया है। और इस परिभाषा के अनुकूल कृतज्ञतापूर्ण सतोष का अर्थ यह हुआ कि हम घोषणा के लिए सन्तोष प्रकट करते हैं परन्तु आशा करते हैं कि भावी सीढ़ियां समय २ पर जितना शीघ्र हो सके मिलें। फिलहाल मुझे सतोष है कि जो बात पहिले घोषित नहीं की गई थी वह घोषित करदी गई और मुझे आशा है कि कुछ समय में उन्नति की उच्च अवस्थायें भी प्राप्त हो जांयगी। अभी आगामी अवस्थाओं की बात चीत रहने दो, अभी तो वर्तमान स्थिति पर ही हमारा पूरा ध्यान होना चाहिए। मेरी स्वराज्य-परिभाषा एकदम सीधी-सादी है। उसे एक किसान भी समझ सकता है। और वह यह है—कि ने ही देश में मैं वैसा ही रहूं जैसे कि एक अंगरेज

अपने देश और उपनिवेशों में रहता है। आपके इस प्रस्ताव में जो लम्बे चौडे समास रखे गये हैं वे सब आसानी से इसी के अन्तर्गत आ जाते है। और, जहाँ यह स्वीकृत हुआ कि पूर्ण स्वराज्य धरा धराया है । और यदि कोई कल उसे मजूर करले तो मुझे उसके प्रचार स बहुत प्रसन्नता होगी, क्योंकि तब वह सहसा दिया गया भारतीय स्वराज्य होगा। परन्तु अपने कुछ मित्रों और जो हमारे पक्ष में नहीं है उनसे कुछ निपटारा करना होगा। भारत में वृटिश शासन निपटारे पर ही आरम्भ हुआ था। वास्तव में किसी भी प्रान्त का,जो विजित नहीं किया गया, पहिला शासन निपटारे द्वारा ही आरम्भ हुआ था। भावी उन्नति—अर्थात्,पहिले प्रान्तों में और फिर मुख्य शासन मे, उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की स्थापना आदि के सम्बन्ध की बातें बहुत अच्छी हैं। मेरी उससे पूर्ण सहानुभूति है। पर मैं उसको तुरन्त के लिए नहीं कहता। हम सब सिद्धान्त में एकमत है । बा० सुरेन्द्रनाथ सब कुछ शीघ्र ही चाहते हैं। मैं कहता हू कि धीरे २ मिलना चाहिए । सरकार ने उत्तरदायित्वपर्ण शासन शब्द का प्रयोग किया है । मि० माण्टेगु और भारतीय सरकार ने इनको जान वूझकर प्रयुक्त किया है पर अभाग्य-वश उसकी परिभाषा नहीं वतलाई क्योंकि उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का अर्थ जो स्वभावतः किया जाता है यह है कि कार्यकारी शासन राज्यव्यवस्था के सामने उत्तरदाता रहे। मि० कर्टिस की पुस्तिका में उसकी परिभाषा यों दी गई है-कि राज्यव्यवस्था कार्यकारीतन्त्र के अधीनस्थ है। अतएव आप देखेंगे कि इसकी परिभाषा करना आवश्यक है। अन्यथा शब्दों का अर्थ हमारे विचारों के प्रतिकूल कर लिया जा सकता है

और फिर यह कहा जा सकता है कि हमने तो तुम को ऐसे उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देने के लिए वचन दिया था जो कार्यकारीतन्त्र के अधिकार में रहे और जितना अधिक कार्यकारीतन्त्र के अधीन होगा उतना ही अधिक इसके अनुसार उत्तरदायी होगा (हास्यध्वनि)। मैं बिना किसी लगाव के कह सकता हूं कि इस प्रकार का उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन हमें नहीं चाहिए। हम तो ऐसा शासन चाहते हैं जहां कार्यकारीतन्त्र सर्वथा राज्यव्यवस्थातन्त्र के सामने पूर्णतः उत्तरदायी रहे और व्यवस्थातन्त्र पूरा का पूरा स्वनिर्वाचित हो। यही उत्तरदायित्वपूर्ण शासन है। जब मैं कहता हूं कि कार्यकारीतन्त्र व्यवस्थातन्त्र के अधीन होगा तब मेरा तात्पर्य यह है कि गवर्नर और लेफ्टेनेन्ट गवर्नर भी निर्वाचित रहें, हालांकि यह बिलकुल अन्तिम अवस्था है। किन्तु वर्तमान दशा में यदि हमारी पहिली मांग शीघ्र हो, और स्वराज्य थोडी अवधि में, दे दी जाय-और जिसे प्रत्येक बुद्धिमान शीघ्रता से यही समझेगा कि जो पंद्रह वर्ष के पहिले मिल जाय-तो मैं कहता हूं कि मैं खुद और आप में भी बहुत से बिलकुल सन्तुष्ट हो जायंगे। जो एक पीढी की प्रतीक्षा के बाहर समझा जाय वह शीघ्र नहीं समझा जायगा। कुछ लोग सोचते हैं कि दश या पद्रह वर्ष में पूर्ण शासन मॉंगना उद्दण्डता होगी। न सही। कुछ चिन्ता नहीं। पर आशय तो वही है। मैं आपका ध्यान उस घोषणा की ओर दिलाऊंगा जिसमें कहा गया है कि आपको दश या पद्रह वर्षों में पूर्ण उत्तरदायी शासन या अबाध्य उत्तरदायित्वपूर्ण शासन मिल जायगा। हम उसको सहर्ष कृतज्ञता की दृष्टि से देखते हैं। उस में कुछ और

शर्त है। अर्थात, वह धीरे २ दिया जायगा। हम उससे भी सहमत हे। घोपणा का तीसरा खड यह है कि उन सीढियों का निश्चय भारत-सरकार करेगी। हम इस से सहमत नहीं। हम चाहते हैं कि अवधि का निश्चय हम खुद करें न कि कार्यकारीतन्त्र की स्वेच्छाचारिता। हम कोई निपटारा भी इस सम्बन्ध में नहीं चाहते। हम निश्चित अवस्था चाहते हैं। हम चाहते हे कि एक्ट में ऐसी अवधि नियत की जाय जिससे कि सुख की पूर्ति स्वयमेव हो जाय। अत. इस विपय में हम सिफ घोपणा की शब्दावलि से कुछ भेद रखते है। अतः अब हम लखनऊ में स्वीकृत स्कीम पर ही अपने को आश्रित करते हैं। कहा गया है कि यह स्कीम आक्षेपनोय है और एक वर्प के अनुभव के पश्चात, इस कांग्रेस में, उस का सुधार होना चाहिए था। पर इस विपय में मेरी कुछ और ही सम्मति है। मै समझता हू कि हमारी वर्तमान आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए यही कम से कम माग हो सकती है जो हमको दी जानी चाहिए। और, भारत में स्वराज्य-दान या प्रचार का यही अच्छा आरम्भ होगा। विविध स्थानों में बहुत सी स्कीमें अनेक सघो, सस्थाओं, कांग्रेस, ग़ैर-कांग्रेस, मुसलिम, ग़ैर-मुसलिम, प्रायः सभी जातियों ने स्वीकार की हैं और वे सब भारत-सचिव के पास भेजी गई हैं। अब यदि हम उन्हें सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो क्या पाते हैं? यही कि उनमें से अधिकांश ने कांग्रेस-मुसलिमलीग-स्कीम को ही स्वीकार किया है। यह भी कहा गया है कि सरकार तुमको उत्तरदायित्व पूर्ण शासन देने को तैयार है परन्तु तुम उस के लिए मतालवा नहीं करते क्योंकि कांग्रेस मुसलिम लीग के

अनुसार कार्यकारिणीतन्त्र को राज्यव्यवस्था तन्त्र जब चाहे तब हटा नहीं सकता। यह परिभाषानुकूल उत्तरदायित्वपूर्ण शासन नहीं है। घोषणा यह हुई है कि धीरे २ उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दिया जायगा, इस लिए पहिली सीढ़ी में भी कुछ उस शासन का अंश होना चाहिए। मैं नहीं समझता कि यह दलील ठीक है। सरकार का इस से यह भी मतलब हो सकता है कि पहिली सीढी स्थानिक तथा म्यूनिसिपिल सम्बन्धी होगी और दूसरी प्रान्तीय तथा तीसरी भारतीय। पर मैं जो अर्थ लगाता हू वह यह नहीं है। कांग्रेस लीग-स्कीम मे मै मानता हू कि, कोई धारा नहीं है जिससे कि व्यवस्थापकतंत्र इच्छानुसार कार्यकारीतंत्र को अलग करदे परन्तु जब कि व्यवस्थापक सभा के ४।५ सदस्य निर्वाचित होंगे तब कार्यकारीतत्र पर अपना अधिकार बना बनाया है क्योंकि तब अधिकारीतत्र व्यवस्थापकतंत्र के सामने उत्तरदायी रहेगा। वे निःसंदेह हटाये नही जा सकते परन्तु वे इतने काफी बुद्धिमान हैं कि अपने भावी व्यवहार को उसी प्रकार बना लेंगे जबकि उनको निर्वाचित व्यवस्थापकतत्र से आज्ञायें मिला करेंगी। दूसरी बात जो हमारी इस स्कीम के विपक्ष में कही जाती है यह है कि शिखर की अपेक्षा किसी चीज की जड़ से बुनियाद डालना कहीं अच्छा है। परन्तु हम भारतीय (नादान) बच्चे नहीं हैं कि हमें तरक्की का एक एक दर्जा दिया जाय। हम पूर्णत. प्रौढ वयस्क मनुष्य हैं। राज्यों और साम्राज्यों के शासन का हमें बराबर अनुभव है। हमने पश्चिमी शिक्षा भी पाई है और,यह भी जान गये हैं कि उसका उपयोग कैसा होना चाहिए। यदि शासन-भार आज हमको देदिया

जाय तो क्या हम कल से ही भारतीय शासन का संचालन नहीं कर सकेंगे (दीर्घ हर्षध्वनि)। भारत की दशा एक ऐसे क्षीणदेह मनुष्य के समान है जिसकी उत्तेजक शक्ति नष्ट कर दी गई हो। आप जानते हैं कि यदि किसी मस्तिष्क-क्षीण मनुष्य को अच्छा करना होता है तो सब से पहिले आपको मस्तिष्क-रोग की ही चिकित्सा करनी पड़ती है। यही दशा भारत की है। कांग्रेस-स्कीम में यह गुंजायश है कि मुख्य शासन में हम को कुछ अधिकार मिले। पर यदि स्थिति में कुछ फेर-फार न भी हुआ तो भी हम को कम से कम समानता का दर्जा तो मिलेगा ही। और इस प्रकार हम शिखर से ही निर्माण आरम्भ कर देंगे। हमें मुख्य शासन-शक्तियों में भाग अवश्य मिलना चाहिए। यदि आप का मतलब स्थानिक स्वराज्य लेने से है तो आप को अधिकार ऊपर से नीचे तक सभी लेने चाहिए। यदि कांग्रेस-स्कीम प्राप्त हो जाय तो वह पूर्ण उत्तरदायी शासन नहीं है। वह वास्तव में उत्तदायी शासन का 'सिर्फ श्री गणेश ही है।' इसके बाद लो० तिलक ने भारत की दशा की तुलना उस बालक से की जो अभी बालिग़ हुआ है परन्तु अधिकारी उसको उसकी सम्पत्ति का अधिकार तुरन्त नहीं वरन् धीरे २ देना चाहते हैं। लो० तिलक कहते हैं कि बृटिश सरकार ने वास्तव में यही कहा था "हम जानते हैं कि हम को अपने अधिकार देने होंगे परन्तु जब सौ वर्षों में तय्यारी हो जायगी तब धीरे २ देंगे। इस प्रकार का हीला उचित नहीं है। हम समस्त सम्पत्ति के अधिकारी हैं। यदि हमने तुमको उस आधिपत्य में भाग लेने के लिए कह दिया था तो इसी आशा से कि तुम उसको छोड़ दोगे। तुम्हें

यह जरूर मानना पडेगा कि मालिक हमीं हैं।"इसके बाद लो० तिलक ने कहा कि "शासनतन्त्र में किसी परिवर्तन के लिए यह स्कीम नहीं है। हम भारत-सचिव, भारतीय और स्थानिक स्वराज्य तथा अधिकारीतन्त्र भी चाहते हैं परन्तु साथ ही यह भी चाहते हैं कि प्रत्येक अवस्था में जनता को कुछ अधिकार अवश्य दिये जांय।" लो० तिलक के बाद

(५) मि० सी० पी० रामस्वामी अय्यर

उठे। आप ने जो कुछ भी कहा उसका सार यह है— यदि कोई यह कहे कि भारत स्वराज्य के योग्य नहीं है तो इसमें शासकों का ही दोष है। परन्तु इसमें भी तो अब संदेह नहीं रहा कि भारत को शीघ्र ही स्वराज्य मिलना चाहिए। वह उस के योग्य है। जार्ज चौथे के शासनकाल के इङ्गलैंड की अपेक्षा भारत हीनावस्था में नहीं है। कुछ समय पहिले इङ्गलैण्ड का शासन भी थोड़े मनुष्यों के हाथों में था। इस समय भारत दायित्वपूर्ण शासन के लिए पूर्वोक्त योग्य है और उसकी आवश्यकता भी है। आज कल शासन का आदर्श उन्नतिशील नहीं है और देश की औद्योगिक उन्नति भी बहुत ही धीमी है। हम लार्ड मारले से सहमत हैं कि जब प्रजा में अधिक असंतोष फैलता है तब शासन या राज्य-संगठन में अवश्य कोई दोष पाया जाता है। जनता के कल्याण की चिन्ता किसी अन्य की अपेक्षा हमको अधिक है। यह असत्य है कि भारत के विषयों में हस्तक्षेप करने का वर्तमान मन्त्रिमण्डल को पूर्ण अधिकार नहीं। वर्तमान युद्ध को जीत कर भावी युद्धों को असम्भव करना इसका काम है। यह तभी [illegible] सकता है जब संतुष्ट, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत

उसकी सहायता करे। मेरी सम्मति में वर्तमान मण्डल ही इस प्रश्न का निश्चय करने के लिए उपयुक्त है। कर्टिस की प्रणाली और स्कीम दो त्रुटियों पर आश्रित हैं एक तो अविश्वास की नीति, दूसरे उन्नति की परीक्षा अधिकारीतन्त्र के अधीन रहे। पर हम उदार नीति, स्वार्थत्याग और विस्तृत दृष्टि-चक्र चाहते है" मि० अय्यर के बाद

(६) मिस्टर चितरञ्जनदास

ने कहा "प्रस्ताव का समर्थन करने के पहिले मैं आप का ध्यान उस गीत की ओर आकर्षित करना चाहता हू जो आपने अभी सुना है। वह भारत का विजयगान है। आज हम इस मञ्च पर भारत की कीर्ति और विजय के लिए खड़े हुए हैं (करतल ध्वनि)। मै आप से प्रार्थना करूंगा कि जो दलीलें कि प्रस्ताव के रूप पर दी जा चुकी है उनके कारण उसके मध्यान्तर्गत और पृष्ठपोषक मूल भावको न भूल जाइयेगा। इस प्रस्ताव का उद्देश्य महान भारतीय राष्ट्र का उत्कर्ष और विकास है। इस सम्बन्ध मे हम सब एकमत हैं परन्तु प्रश्न यह है कि वह हो कैसे? मेरे मित्र बा० विपिनचन्द्र पाल ने बङ्गाल का आदर्श अभी आपको बतलाया है। मैं उसको स्वीकार करता हू और यदि इस प्रस्ताव में उस आदर्श के विरुद्ध कोई बात होती तो मैं उसका समर्थन न करता। इस प्रस्ताव में मैं ऐसी कोई बात नहीं पाता जो उस आदर्श के विरुद्ध हो जिसको कि प्रान्तीय कान्फ्रेन्स में बङ्गाल ने एकमत होकर घोषित किया था।

बंगाल का आदर्श।

वह आदर्श क्या है? पहिले तो वह आदर्श प्रान्तीय स्वतन्त्रता है-अर्थात्, भारतीय सरकार को प्रान्तीय सरकारों

के साथ व्यवहार करने में स्पष्ट जनसत्ताक नीति रखनी चाहिए। फिर क्या यह आदर्श इस प्रस्ताव के वहिर्गत है ? यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो भारतीय और प्रान्तीय शासन के चक्र के बीच भेद-रेखा स्पष्ट प्रतीत होती है। इस लिए जहां तक उद्देश से सम्बन्ध है मैं उसमें कोई ऐसी बात नहीं पाता हूं जो इस प्रस्ताव के विरुद्ध हो जिसका कि मैं समर्थन करता रहा हूं। बंगाल आदर्श में आप दूसरी बात क्या पाते हैं? वह यह है कि कार्यकारी शासन जनता की प्रतिनिधित्व से व्यवस्थापक सभाओं के अधीन हो। क्या इस प्रस्ताव में ऐसी कोई बात है जो इसके विरुद्ध हो? हां, यह बात हो सकती है कि बङ्गाल ने उसे एक खास ढग से रखा है और आपने उसको इस प्रस्ताव में दूसरे ढग से। परन्तु जहांतक आदर्श से सम्बन्ध है मैं समझता हू कि बंगाल और इस प्रस्ताव के आदर्श में कोई अन्तर नहीं। आप अपने इस प्रस्ताव में कहते हैं कि कोषाधिकार व्यवस्थापक सभा के हाथ में हो। क्षण भर के लिए विचारिए कि इसका अर्थ क्या है? मान लीजिए कि आपकी स्कीम सरकार ने स्वीकार करली। उसका तात्पर्य तब यह होगा कि कार्यकारीतन्त्र व्यवस्थापक सभा का आज्ञाकारी रहेगा। यदि कार्यकारीतन्त्र व्यवस्थापक सभा की आज्ञाओं को न माने तो व्यवस्थापकतन्त्र कह देगा कि हम तुम्हारी रसद बन्द करते हैं। यह कहा जा सकता है कि वृटिश पार्लामेण्ट तुम्हें यह अधिकार कभी भी न देगी। पर हम क्या यह विचार कर रहे हैं? जब वे अपनी घोषणा द्वारा कहेंगे कि हम वह अधिकार नहीं देते तब हम को समय मिलेगा हम ऐसे उपायों की रचना करें जिससे कि हमारा

उद्देश प्राप्त हो सके। हां, इस पर वादाविवाद करने का समय अभी नहीं आया है। मैं इस आदर्श को आपके सामने रखने के लिए बहुत उत्सुक नहीं हूं क्योंकि प्रस्ताव का रूप चाहे जो कुछ हो उस पर फिर विचार कर लिया जायगा परन्तु मैं आशा करता हूं कि चाहे जो हो आप इस पर तो जमे रहेंगे-अर्थात् यही, कि समय आगया है जबकि बृटिश पार्लामेण्ट को निश्चय कर लेना होगा कि वह अधिकारों को अधिकारीतन्त्र के हाथों से निकाल कर देश की जनता को देदे (करतलध्वनि)।

अधिकारीतन्त्र की सत्ता बहुत हो चुकी।

हम लोगों ने इस देश में अधिकारीतन्त्र का शासन बहुत कुछ भोग लिया। हम १५० वर्षों तक दुःशासन में कष्ट भोग चुके हैं और अब अपनी इच्छाओं के प्रकाशित करने में हमें एक दिन का भी विलम्ब न करना चाहिए। साथ ही आज जो शक्तियां अधिकारीतन्त्र के हाथों में हैं कल जनता के अधीन हो जानी चाहिए। कहे गये उस आदर्श का ध्यान रखते हुए अपने लक्ष्य और प्रस्ताव में मैं कोई भेद नहीं पाता हूं। परन्तु मेरे श्रद्धेय मित्र लोकमान्य तिलक ने कहा था कि जो स्कीम इस प्रस्ताव में है वह बंगाल या अन्यत्र की स्कीम से अधिक अच्छी है। मैं प्रान्तीय शासन के सम्बन्ध में कुछ नहीं कह रहा हूं। मैं उस स्कीम के विषय में कह रहा हूं कि जिसका सम्बन्ध प्रान्तीय शासन के आदर्श से है। मैं उसमें कुछ भी अन्तर नहीं पाता। लोकमान्य तिलक कहते हैं कि अधिक मांगना बुद्धिमत्ता नहीं है। वे प्रस्ताव को फिर पढ़ें। उनको मालूम हो जायगा कि जिस बातको बंगाल चाहता है इस प्रस्ताव में उस से कम एक बात भी नहीं है। उसमें सभी

बातें आ गई है। वह बंगाल, साथ ही साथ भारत, दोनों, के लिए सम्पूर्ण उत्तरदायी शासन मांगता है। कोष पर अधिकार पा लेना सम्पूर्ण उत्तरदायी शासन नहीं तो और क्या है? आप को अपने प्रस्ताव में यही कहना था कि हम प्रान्तीय तथा भारतीय दोनों के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण शासन चाहते हैं और वहां आप अपना आशय यह कर प्रकट कर सकते कि "तुम कुछ भी करो मुझे चिन्ता नहीं परन्तु कोषाधिकार को हमें दे दो। यदि कोषाधिकार दे दोगे तो तुम्हारा गला हमारे हाथ में रहेगा। यदि तुम (कार्यकारीतन्त्र) हमारी आज्ञा न मानोगे तो हम तुम्हारी सहायता बन्द कर देंगे।" अब आप ही सोचिए कि आप क्या कहते है? माना कि हम ने उत्तरदायित्वपूर्ण शासन नहीं मांगा परन्तु हमने अन्य रीति और पूर्ण प्रभावयुक्त ढग से प्रान्तीय और भारतीय उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दोनों तो मांगा है। यह हो सकता है कि यह दूसरे रूप में रखा जाय। शब्द बदलने पडेगे। परन्तु यदि यह स्कीम पूर्णतया उचित स्कीम न हो तो मैं मि० जिन्ना के इस कथन से सहमत हूं कि सरकार अपनी घोषणा सहित सामने तो आये। अभी तक वह सदिग्ध है। सरकार यह निश्चित रूप से बतला दे कि वह क्या देने को तैयार है तब हमको यह विचारने का अवकाश होगा कि किन शब्दों का प्रयोग किया जाय, कौन शब्द अलग किये जॉय और कौन से नये शब्द रक्खे जॉय। हम लोग व्यर्थ में ही झगड़ रहे हैं। हम सब उस महान आदर्श के सम्बन्ध में एकमत हे। हमको सशक्ति बलसहित उसके लिए लडना चाहिए और जब तक वे सब बातें—अर्थात, भारतीय और प्रान्तीय उत्तरदायित्वपूर्ण शासन

तथा समस्त शासन जनता के हाथों में न सौंप दिया जाय तब तक हमें सतुष्ट न होना चाहिए। मैं राजनीतिज्ञों के लेखों का आश्रय नहीं लेता। मैं अपने स्वत्व पर निर्भर रहता हूं। मैं इसकी परवाह नहीं करता कि आस्ट्रेलिया, स्वीज़रलेण्ड और इंगलेण्ड का राज्य-संगठन क्या है। मैं अपना निज का संगठन हा निर्माण किया चाहता हू। मैं इस बात का अधिकार चाहता हूं कि मैं अपना सगठन इस ढग से बनाऊ जो कि देश के लिए उपयुक्त हो और जो फिर आगे चल कर भारतीय सगठन के नाम से माना जा सके। (करतल ध्वनि)। यही हमारी अभिलाषा है और यह हमको मिलना चाहिए। व्यर्थ की बकझक में न पडिये। इस अवसर पर सशक्त होकर प्रत्येक ग्राम, नगर, सभा और इस कांग्रेस में एक स्वर से कहिए कि शासनाधिकार जनता के अधीन कर दिये जॉय और हम तभी सतुष्ट होंगे। यह प्रत्येक व्यक्ति का जन्म-स्वत्व है कि वह जीवित रहकर उन्नति करे। प्रत्येक राष्ट्र का यह स्वाभाविक अधिकार है कि वह अपना जीवन उन्नति सहित व्यतीत करे। हम केवल उस स्वत्व को चाहते हैं जो अन्याय द्वारा हम से छीन लिया गया है। हम ने जाना कि हम सो रहे हैं परन्तु ईश्वर की दया से अब हम अपने स्वाभाविक अधिकारों को सशक्त प्राप्त करने के लिए जग उठे हैं।" (दीर्घ काल तक सवेग करतल ध्वनि)।

(६) मि० एम० आर० जयकर

ने इसके पश्चात् इसका समर्थन करते हुए कहा कि "यह कहना कि स्वराज्य-सदेश को साधारण जनता नहीं

समझनी, झूठ है। दक्षिण भारत में मैंने कई पुराने ग्रामीणों से इस पर बात-चीत की है। एक ने तो यहाँ तक कहा कि, 'इंगलेण्ड जर्मनी को जिस पाप के लिए दण्ड दे रहा है वही पाप इंगलेण्ड भारत में स्वयमेव कर रहा है और जब तक अधिकारी-तन्त्र का भारत में नाश न होगा तब तक युद्ध समाप्त न होगा।' भारत और इंगलेण्ड दोनों के लिए अधिकारी-तन्त्र का नाश परम हितकारी है।" तत्पश्चात्

(७) डाक्टर अनसारी

ने भी ओजस्विनी वक्तृता द्वारा इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

(८) मि० बी० पी० वाडिया

ने पारसी जाति के प्रतिनिधि रूप में इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि, "(पारसी जाति)एक अब्राह्मण संस्था है। मैं उसका सदस्य हूं। वह कांग्रेस से पूर्ण सहानुभूति रखती है और जातीय निर्वाचन के सम्बन्ध में मत-भेद होते हुए भी भारत-माता के कल्याण के लिए अपना स्वार्थ त्यागने को तैयार है। कांग्रेस-लीग-स्कीम को भारतीय और सरकारी, दोनों दृष्टि से देखना चाहिए। हमने बृटिश-साम्राज्य का सभ्य होना स्वीकार किया है। युद्ध के अन्त में जो सभा पुनः संग-ठन के लिए होगी उसमें हमारी क्या स्थिति होगी? क्या हमको पचराष्ट्र का दास बनना पड़ेगा? (नहीं २)। यदि नहीं तो अपने निर्वाचित प्रतिनिधिगण पार्लामेण्ट में भेजिये परन्तु बिना स्वराज्य पाये यह नहीं हो सकता। स्वतन्त्र राष्ट्र एक दास राष्ट्र के साथ बैठना स्वीकार नहीं करेंगे। हम स्वराज्य के योग्य हैं या नहीं, यह हम्हीं निश्चय करेंगे।

क्या शिक्षा, शासन, कृषि, जनता-उद्धार, समाज-सेवा और समस्त सुधारों के लिए स्वराज्य की आवश्यकता नहीं है? हम कांग्रेस-लीग-स्कीम को अब निश्चय करके प्राप्त करेंगे और सदैव दास न बने रहेंगे। १५० वर्ष के राज्य में हम दरिद्र और हीन होगये। नवीन जागृति का विकास भारत के प्रत्येक भाग में होगया है और अब वह समय निकट ही है जब हम दास्य-भाव को त्याग कर स्वदेश के स्वामी बनेंगे।" (करतलध्वनि)। मि० वाडिया के बोल चुकने के बाद

(६) मि० एस० आर० बोमनजी

ने बम्बई के व्यापारियों की ओर से समर्थन करते हुए कहा कि, 'हमारी जाति स्वराज्य के पक्ष में पूर्णतः तैयार है और हम उसकी प्राप्ति के लिए भरसक उद्योग कर रहे हैं। स्वराज्य-आन्दोलन की सहायता के लिए भारतीय व्यापारियों ने बम्बई में कुछ घण्टों ही में सहस्रों रुपये एकत्रित कर लिये थे।" बोमन जी के बाद तालियों की तड़तड़ाहट के साथ कांग्रेस-मञ्च पर

श्रीमती सरोजिनी नायडू

पधारीं और बोलीं कि—"कई वर्ष हुए, इसी ऐतिहासिक नगर में, आधुनिक (भारत के) राष्ट्र- निर्माता (स्वर्गीय) दादाभाई नौरोजी ने स्वराज्य का एक अविनाशी संदेश आपके कानों तक पहुंचाया था। मैं नहीं समझती कि आप में से एक भी हृदय (उस समय) ऐसा रहा हो जिसने कि अपने जन्म-स्वत्व की पुकार से—उस जन्म-स्वत्व की पुकार से जो कि इतने दिनों से मटियामेट हो रहा था—अनुकूलता न प्रकट की हो। हम लोग आज यहां इसी लिए एकत्रित हुए हैं कि हम उन (स्वर्गीय दादाभाई) के दिये हुए उस संदेश का

प्रतिपालन करें, हम उन की उस (स्वराज्य की शंख ध्वनि की) सच्चाई को, जो उन्हों ने हमारी इच्छित कामना के रूप में उस स्मरणीय अवसर पर देखा था, अपनी माँग की पूर्ति द्वारा सही कर दिखलायें। अगर आज मैं आप के सामने संयुक्त भारत के चुने हुए प्रतिनिधि की हैसियत से उपस्थित हूँ तो वह केवल इस लिए ही कि राष्ट्र का (दूसरा अंग स्त्री)-समुदाय भी आज आप के साथ है। उत्तरदायित्व तथा पूर्ण स्वायत्तशासन की चाह को अधिक प्रकट करने के लिए आप को अब इस से बढ़ कर और किसी प्रमाण के देने की जरूरत नहीं रही। क्योंकि आपने अपने विवेक तथा न्याय द्वारा आज यह दिखला दिया है कि भारतीय पुरुष-समुदाय की इच्छाओं, प्रयत्नों, विचारों और मांगों में स्त्रियों को भी बोलने का पूरा २ अधिकार है और वे भी इसे (स्वराज्य की मांग को) पुष्ट कर रही हैं। मुझ से पहिले और कई व्याख्यानदाता (प्रस्तावित विषय पर) बोल चुके हैं। उन्हों ने आप की उस स्कीम को, जिसे कि आप ने तजवीज़ की है, बहुत ही ब्योरेवार आप को समझाया है। उन्हों ने आप को यह भी बतलाया है कि आप की इस स्कीम की मंशा क्या है, इस से आप की कौनसी अभिलाषायें पूर्ण होने वाली हैं? अतः मेरा प्रयत्न केवल यही होगा कि मैं आप को स्कीम के तह में छिपी हुई उन बातों से परे कुछ और ही बातें बतलाऊं, और मेरी वह बात केवल वह आदर्श होगा जो इस प्रस्ताव में प्रदर्शित है। स्मरण रखिए कि इस प्रस्ताव मे चाहे जो कुछ हो और उसके लिए आप चाहे जैसी दलीलें देते हो, किन्तु उस का स्थायी नियन्त्रण इस आकांक्षा से प्रेरित है जिस से आप की ये तमाम मांगें, ये

तमाम आकांक्षायें उत्पन्न और पूरी हुईं। हम किस चीज़ का मतालबा करते हैं? किसी नई बात का नहीं! किसी आश्चर्ययुक्त वस्तु का नहीं! हमारा मतालबा उस वस्तु का है जो उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव-चेतना, और (स्पष्ट शब्दों में) वह है इस संसार के प्रत्येक व्यक्ति का जन्म-स्वत्व! याद रखिये, आप को अपने प्रान्त में, अपने मुल्क में (सुखमय) जीवन का वही अवसर मिलना चाहिए जो कि दूसरे राष्ट्र आज आनन्दपूर्वक भोग रहे हैं। यह नहीं कि निर्वासितों की भांति आप अपनी ही भूमि के सारे अधिकारों से वंचित कर दिये जांय, अपने ही मुल्क में गुलाम बने रहें, गूंगों की तरह न कुछ कहने पावें और बहरों की तरह न कुछ सुनने, तथा अंधों की तरह न कुछ देखने ही पावें। वे दिन लद गये जब कि हम मानसिक तथा राजनैतिक बन्धन में बंधे हुए ग़ुलामी की अवस्था पर संतोष मानते थे, और यह इस लिए कि अब फूट का समय बीत चुका है। अब इस बड़ी भूमि में कोई एक जाति दूसरी जाति से विलग नहीं की जा सकती। अब हिन्दुस्थान हिन्दुओं या मुसलमानों का हिन्दुस्थान नहीं रहा वरन् अब वह हिन्दोस्तान हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का संयुक्त हिन्दोस्तान है। आप सब जानते हैं कि कितनी चालाकी और कुटिलता से ये दलीलें पेश की जाती हैं कि हिन्दोस्तान तो एक ऐसा देश है जो सदैव विजित देश रहा है, यह वह देश है जहां कि सदैव विदेशी हुकूमतों का दौर-दौरा रहा है। यह सच है, किन्तु आप को यह जानना चाहिए कि हिन्दोस्तान एक ऐसा बड़ा देश है जिस ने ५००० वर्ष पहिले की अपनी वैदिक सभ्यता से संसार की आर्य्य सभ्यता, बौद्ध सभ्यता और

योरोपीय सभ्यता को हज़म करके अपने को बलवान बनाया। हमारी कुल मुसीबतों का कुछ कारण यह है कि हमारी प्रतिष्ठा धूल में मिला दी गई, हमारे पुरुषार्थ का तिरस्कार किया गया, और अपनी स्त्रियों की लाज-रक्षा तथा अपने देश की रक्षा करने के प्रारम्भिक मानव—स्वत्व हम से छीन लिये गये। हमारा यह अपमान सब से बड़ा अपमान है! और इस अपमान ने हमें केवल नामर्द और भकुआ ही नहीं बना डाला, वरन् हिन्दोस्तान के पुरुषार्थ की उसने बिलकुल हत्या ही कर डाली है। केवल यही नहीं कि इस से आप की राजनैतिक शक्ति और शासन जाता रहा, किन्तु इस से आप अपने उस आत्मिक जोश को भी खो बैठे जो आप का जन्म-स्वत्व था। आप कहते हैं कि मुग़ल हमारे शासक थे। किन्तु मुग़ल शासकों की नीति क्या थी? वे हिन्दोस्तानियों में बिलकुल घुल-मिल गये थे। उन्हों ने भारतीय जनता को वे स्वत्व और जिम्मेदारियाँ दे रक्खी थीं जिन्हें आज हम ब्रिटेन से मांग रहे हैं। ये जिम्मेदारियां, जिन्हें आज हम इस स्कीम द्वारा पाना चाहते हैं, मुग़लों ने हिन्दुस्तानियों को बहुत पहिले दे रक्खी थीं। अकबर के शासन-काल में आर्थिक शक्तियां (सारा खजाना) मुग़ल बादशाहों की विजित प्रजा के क़ब्ज़े में था। क्या इस शक्ति से शासक और शासित में किसी तरह का भेद-भाव पैदा हुआ था? क्या इस से अराजकता भभक उठी थी? नहीं। इस आर्थिक शक्ति से शासक और शासितों में एक ज़बरदस्त मिलाप पैदा हो गया था। धर्म, पुरानी रीति-रिवाज और सभ्यता में दोनों एक से गुंथ गये थे। फल हुआ? भारत की मानसिक सभ्यता को मुफाजिर्स

के पैमाने पर लाना तो दूर रहा, इन विदेशी विजेताओं ने विदेशी सभ्यता का हमारी से मिला दिया, और एक दूसरे के कल्याण के साथी बने। इस सम्बन्ध से हिन्दोस्तान को प्रतिष्ठा मिली थी। उसे विजेताओं की हजूरी में हाजिर होने और बंधन के लपेट में रहने की मुसीबतों का सामना नहीं करना पड़ा था। जब हम उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की बातें कहते हैं तब उस का अर्थ यह नहीं है कि हम अधिकारों के मृग-मरीचकों से सन्तुष्ट हो जांयगे। अधिकार तो उत्तरदायित्व को नीचता की ओर ले जाते हैं। हम अधिकार का लाइसेन्स नही मांगते, हम मांगते है अपनी प्रतिष्ठा, बुद्धि और शक्ति से सयुक्त वह अधिकार, जो अपने तथा राष्ट्र के सामने उत्तरदाता हो। हम जनता के हृदय से विलग होना नही चाहते। हम किसी भेद-भाव भरी शक्ति को नहीं चाहते, हमारा सब का लक्ष्य एक है, किन्तु राये भिन्न २ है शर्तें भिन्न२हैं, परस्थितियां भिन्न २ हैं और इन सब बातों पर विचार करने के पश्चात् मालूम पड़ता है कि अब हिन्दोस्तान न इस फिरके का है और न उस फिरके का, वह इस दल का या उस दल का नही है, नरमों या गरमों का भी नही है। वह सब का है। समझौते की बात केवल इतनी ही है कि बलवान निर्बलों का ख्याल रक्खे और उन के लिए कुछ त्याग करें। कौन कहता कि यहां एक भी स्त्री या पुरुष ऐसा होगा जो सोते जागत इस प्रस्ताव में निहित अपनी स्वाधीनता का स्वप्न न देखता हो। एक जमात दूसरी जमात से कुछ पहिले चल कर आगे बढ़ गई है। निपटारे का यही अर्थ है कि हम में कमज़ोरों की कलक बनी रहे। कांग्रेस-लीग-स्कीम में हमारा जो मतालबा है वह सब से अल्प है। कम से कम मतालबे की पूर्ति में अब

एक घण्टे की भी देर न होनी चाहिए। मैं केवल एक (अबला) स्त्री हूं और आप सब से यह कहना चाहती हूं कि जब वह समय आये और अन्धकार में गुज़रने के लिए आप को मशाल दिखाने वालों की ज़रूरत पड़े, जब आपके पताका को मज़बूती से पकड़ने के लिए दृढ़ आत्माओं की आवश्यकता हो और जब अपने विश्वास पर स्थिर रह कर आप को संसार से कूंच करना पड़े, तब भारतीय स्त्रियां आपके साथ होंगी, वे आप की पताका पकड़ेंगी, और, आप को सहारा पहुंचायेंगी। यदि आप कर्म्म-क्षेत्र में मर मिटे तो आप यह भी स्मरण रक्खें कि चित्तौड की पद्मिनी की आत्मा पवित्रता-पूर्वक भारत के पुरुष समुदाय के साथ है।" सब से अन्त में

माननीय पं० मदनमोहन मालवीय

ने एक सारगर्भित व्याख्यान दिया। कहा कि, "हमको स्मरण रखना चाहिए कि यह स्कीम देश की वर्तमान दशा को ध्यान में रख कर ही तैयार की गई है। हम नवीन जाति के मनुष्य नहीं, सहस्रों वर्षों की सभ्यता का हमें गर्व है। हिन्दू, मुसलमान और पारसी, शासन-विज्ञान से अनभिज्ञ नहीं हैं। भारत में वृटिश साम्राज्य की अपेक्षा अशोक का साम्राज्य अधिक विस्तृत था। हम पर टीका-टिप्पणी करने वालों को स्मरण रखना चाहिए कि उनका साबिक़ा ऐसे मनुष्यों से नहीं पड़ रहा है जो स्वराज्य-विज्ञान को आज पहिले पहिल सीखने जा रहे हों। सन् १९०९ के भारतीय कौंसिल-एक्ट का मूल सिद्धान्त यह था कि भारत की जनता [illegible] निधि सरकार को शासन में सहायता देने के लिए [illegible] किये जांय। हम ऐसे नौसिखिआ नहीं हैं जैसा कि

मि० कर्टिस का अनुमान है। हमारा पहिला अनुरोध यह है कि हमारा एक विस्तृत रूप होना चाहिए जोकि देश के २५० जिलों में रहने वाली समस्त जनता, प्रान्तीय और भारतीय कौंसिलों में अपने कुछ न कुछ प्रतिनिधि भेज सके। जो कुछ पहिले हो चुका है, उसमें और इस मांग में, कोई अन्तर नहीं। दूसरा सिद्धान्त जिसके लिए कि हमारा आग्रह है यह है कि बिना प्रतिनिधित्व के हम पर कोई कर न लगाया जाय। हम यह चाहते है कि जनता के प्रतिनिधि को यह निश्चय करने का अधिकार रहे कि कर किस प्रकार लगाये जांय, क्योंकि इसके विपरीत प्रतिनिधित्व का तब फिर कोई अर्थ ही न होगा। हमारा तीसरा मतालबा यह है कि सरकार ने जिन प्रतिनिधियों को कौंसिलों में प्रवेश होने दिया उन्हें कार्य-कारीतन्त्र पर भी अधिकार हो। जब सरकार ने प्रतिनिधि संस्था का भारत में श्रीगणेश किया था तब उसने इस बात का भी विचार कर लिया होगा-और, यदि नहीं किया तो यह मूर्खता की-कि प्रतिनिधि संस्थायें यदि जनता के प्रतिनिधियों को कार्य-कारीतन्त्र पर अधिकार न दिलावें तो वे प्रतिनिधित्व के बिल्कुल विपरीत होंगी। इस अधिकार के साथ ही कोषाधिकार भी लगा हुआ है। हमारी अन्य अंगरेजी सहयोगिनी प्रजा ने अपने यशस्वी साहित्य द्वारा हमको शिक्षा दी है कि प्रजा कर देती है और उसे ही कौंसिल मे अपने प्रतिनिधियों द्वारा यह निश्चय करने का अधिकार है कि उन (करों) का ख़र्च किस प्रकार हो। यह कोषाधिकार प्रतिनिधि संस्थाओं का राष्ट्रीय विकास और उत्कर्ष है। हमने अवस्था के रहस्यों पर विचार कर लिया है। अब सिर्फ़ स्थिति और घटनाओं पर,

जैसी कि आज है, ध्यान देना है। कांग्रेस-लीग-स्कीम उसी रीति पर राष्ट्रीय और स्वाभाविक संवर्धन है जिसके द्वारा कि देश में अभीतक राजनैतिक संस्थायें कार्य करती आ रहीं हैं। इसलिए यह कहना व्यर्थ है कि जो स्कीम अन्य देशों में निर्मित की गई हैं उनसे हमारी स्कीमों में भिन्नता है। कांग्रेस-लीग-स्कीम भारत की दशा के लिए उपयुक्त है। हमारे कुछ आलोचक कहते हैं कि उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का यह तात्पर्य है कि वह प्रजा के प्रतिनिधियों का उत्तरदायी हो और इन्हीं प्रतिनिधियों की इच्छा से वह अलग भी कर दिया जाय। मैं चाहता हूं कि इन समालोचकों ने कुछ और विचार किया होता और हमारे साथ व्यवहार करने में अधिक उदारता दिखलाई होती और यदि और न सही तो हमको साधारण बुद्धि का ही समझ लिया होता। स्वराज्य का अर्थ है कार्यकारी-तन्त्र का जनता के सामने उत्तरदायी होना। जब हम स्वराज्य के सम्बन्ध में कुछ कहते हैं तो हमारा आशय औपनिवेशिक प्रणाली के स्वराज्य से है। उपनिवेशों में कार्यकारीतन्त्र व्यवस्थापिकों के अधीन है। जब ऐसा है तब यह कहना बिलकुल भूल है कि स्वराज्य मांगने से हम उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन से कुछ कम चाह रहे हैं। (आगे चलकर) यह भी कहा जाता है कि (अच्छा तो यह हो यदि) हम अपनी स्कीम में अधिक उदारता और उत्साह रखते। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि उसके रचयिताओं को केवल आप का और मेरा ही ध्यान न रखना था किन्तु अधिकारीतन्त्र और उनका भी जिनके प्रतिनिधि लार्ड सिडेनहम (Lord Sydenham) हैं और (सचमुच) उन्होंने यह बुद्धिमानी का किया कि उसको ऐसी भाषा में रचा कि जिस से

हम सब संतुष्ट हो जॉय और साथ ही जिसमें निकट भविष्य में उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन मिलने की प्रतिज्ञा भी आ जाय। प्रस्ताव यह है कि स्वराज्य धीरे २ दिया जाय। कांग्रेस यह नहीं चाहती थी कि औपनिवेशिक स्वराज्य की भांति यहां के स्वराज्य का कार्य तुरन्त आरम्भ हो जाय। दूसरी सीढी इस देश को उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन का दिया जाना होगा। कांग्रेस का कार्य-क्रम अगस्त की पार्लमेण्ट की घोषणा के विरुद्ध नहीं है। परन्तु आपको यह स्मरण रखना चाहिए कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इन सीढियों के अन्तर को हमारी अपेक्षा अधिक चाहते हैं। परन्तु हमको यह भी आशा करनी चाहिए कि हमारा एकीकृत स्वर और मत उन लोगों के शब्द को पराजित करेगा जो कि पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना को इस देश में विलम्ब से चाहते हैं।"

फिर एक वक्ता ने ऐंग्लो-इण्डियनों और दूसरों के इस विचार का खण्डन किया कि कांग्रेस की मांग जनता की इच्छा के प्रतिकूल है, और कहा कि, जब से कांग्रेस हुई है तभी से जनता के कल्याण ही के लिए वह प्रस्तावों को स्वीकृत करती आई है।

इसके पश्चात् एक नम शूद्र ने, जिसका परिचय कि बा० सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने कराया, स्वराज्य पर बङ्गला भाषा में एक छोटी सी वक्तृता दी और आनन्द और उत्सव में मग्न होकर उछलने लगा। साथ ही समस्त सभा से आग्रह किया कि भारतीय स्वराज्य के लिए एक स्वर से आवाज़ उठानी चाहिए।

इन व्याख्यानों के हो जाने बाद, पूरे पांच घण्टे के पश्चात् बड़े उत्साह और हर्ष के साथ, स्वराज्य का प्रस्ताव एक मत से स्वीकृत हो गया।

स्वराज्य-प्रस्ताव

पर

मि० मुहम्मद अली जिन्ना

ने मुसलिम लीग में, जो वक्तृता दी थी उसका मुख्य अंश यह है:—

"मौलवी मुहम्मदअली तथा शौकतअली के छुटकारे वाले प्रस्ताव को छोड़ कर यह प्रस्ताव सब प्रस्तावों से अधिक महत्व का है। इस प्रस्ताव के आदि में कहा गया है कि हम लोग एक निश्चित समय के अन्दर अपने देश में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की स्थापना चाहते हैं। हां, समय की अवधि (पास होने वाले) एक्ट में स्वय स्थिर कर के रक्खी जायगी। आप सब लोग इस बात को जानते हैं कि गत २० अगस्त को सम्राट् महोदय की (वृटिश) सरकार ने एक घोषणा प्रकाशित की थी। भारतवर्ष के इतिहास में यह पहला ही अवसर था जब ब्रिटिश सरकार ने इतने स्पष्ट शब्दों में, साफ २ तौर पर, भारत में वृटिश शासन का अन्तिम लक्ष्य उत्तरदायित्वपूर्ण शासन का स्थापन घोषित किया। (करतल ध्वनि)। परन्तु साथ ही, इस घोषणा में यह भी कहा गया है कि (उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की स्थापना की ओर) इसके बारे में क़दम बक़दम बढ़ाव किया जायगा और यथासम्भव शीघ्रता के साथ सारयुक्त पग बढाये जायेंगे। इस प्रस्ताव में हम जो कुछ कहना चाहते हैं वह

यह है कि इस ओर चाहे जैसा वढ़ाव किया जाय और चाहे जो सारयुक्त पग वढ़ाये जांय, पर सम्पूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की प्राप्ति हमें एक निश्चित अवधि के भीतर ही मिल जानी चाहिए और यही अवधि उक्त एक्ट में अवश्य स्थिर कर दी जानी चाहिए। हम इस वात को इस लिए कह देना चाहते हैं क्योंकि हम लोग यह नहीं चाहते कि यह वात सरकार की इच्छा या तवियत (बुद्धि) पर निर्भर रक्खी जाय, वलिक हम लोग चाहते है कि यह वात स्वयं एक्ट में ही स्पष्ट करदी जाय।

हमारे प्रस्ताव की दूसरी वात यह है कि इस लक्ष्य की ओर एक स्पष्ट पग वढ़ाया जाय और उक्त स्पष्ट पग, लखनऊ में सम्मिलित रूप से कांग्रेस और मुसलिम लीग द्वारा पास की गई, सुधार-स्कीम में समावेष्टित हो। उक्त स्कीम की आलोचना (नुक्ताचीनी) की जा चुकी है और हमारे विरोधियों ने उस में वहुत से दोष निकाले हैं। मै इसके उत्तर में यह कहना चाहता हू, और मेरा विश्वास है कि मै समस्त भारत-निवासियों की ओर से यह कह रहा हूं, कि पहिला प्रश्न तो यही है कि हम-भारतवर्ष को जनता के भले के लिए शासित होने देना चाहते है अथवा नहीं? मैं समझता हूं कि कोई भी ईमान्दार मनुष्य, चाहे वह अंग्रेज़ हो या अन्य कोई, इस वात के कहने का साहस न करेगा कि भारतवर्ष का शासन उनकी भलाई के लिए न होना चाहिए। यदि मेरी यह वात ठीक है तो दूसरी वात यह है कि फिर भारत का शासन कौन करे? वास्तव में कोई समुदाय, फ़िरक़ा या जाति--विशेष नहीं, वरन् केवल इस देश के निवासी ही (भारत का शासन कर

सकते हैं)। मैं यह बात बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार करता हूं कि वर्तमान भारत जो कुछ बना हुआ है, वृटिश जनता द्वारा ही बन पाया है, पर साथ ही मैं इस बात का बड़े जोर शोर से विरोध करता हूं कि इस कारण को लेकर अंगरेज़ लोग भारत के पूरे दावेदार बन जॉय।
(करतल ध्वनि)

'हिंदू शासनतन्त्र' से कोई खतरा नहीं है।

यह भी कहा जाता है, और मैं अपने मुसलमान दोस्तों के इस कथन का उल्लेख करता हूं, कि यदि हम लोग इस तेज़ रफ्तार से बढ़ते चले जांयगे तो, चूं कि हम लोग थोड़े हैं अतः कहीं हिन्दू शासनतन्त्र ही इस देश का शासक न बन बैठे?' मैं इसका उत्तर दे देना चाहता हूं। इस सम्बन्ध में मैं अपने मुसलमान दोस्तों से कुछ कहूंगा। पहिली बात तो यह है कि क्या आप लोग इसे सम्भव समझते हैं कि इस देश का शासन करने वाला कभी अकेला एक हिन्दू शासन-तन्त्र हो सकता है? क्या आप समझते हैं कि शासन करने वाली सरकार केवल चुनाव के द्वारा (चिट्ठियां फेंक कर) ही निश्चित की जा सकती है? ("नहीं, नहीं" की ध्वनि।) और क्या आप यह समझते हैं कि चूं कि हिन्दू लोग गिनती में अधिक हैं अतः व्यवस्थापक सभाओं में प्रस्ताव पास कर डालेंगे, और बस इतने से ही सब ख़तम हो जाता है? क्या इस प्रकार की (चुनाव की) सरकार द्वारा पास किया हुआ कोई प्रस्ताव यदि सात करोड़ मुसलमान उसका विरोध करेंगे, तो भी क़ानून के रूप में लाकर बरता जाने लगेगा? ('कभी नहीं, की आवाज)। क्या आप लोग यह [illegible] हैं कि जब आप लोगों को स्वराज्य मिल जयगा तब

हिन्दु राजनीतिज्ञ अपनी बुद्धिमता तथा पूर्व इतिहास के गौरव को साथ लेकर कभी चिट्ठियां फेंक कर किसी क़ानून की रचना करने बैठेंगे ? ('नहीं २' की ध्वनि)। तो फिर किस बात का डर है ? ('किसी बात का भी नहीं' की आवाज़) इसी लिए मैं मुसलमान मित्रों से कहता हूं कि डरो मत। यह एक फँसाने की चाल है जो आपके शत्रुओं द्वारा आपके सामने रक्खी जाती है, ('सुनो सुनो') जिससे आप डर जांय, और उस एकता और सहयोगिता से अलग रहें जो स्वराज्य की स्थापना के लिए परमावश्यक है। (करतल ध्वनि)। यह देश अकेले हिन्दू या मुसलमानों द्वारा शासित होने के लिए नहीं है, मुझे यह भी कहने दो कि यह देश अंग्रेजों द्वारा भी शासित होने के लिए भी नहीं है। (सुनो २ की ध्वनि')। यह देश, देश की जनता और उसकी संतान द्वारा शासित किये जाने के लिये है। मैं विश्वास करता हूं कि समस्त देश-निवासियों की अभिलाषा प्रकट करते हुए यहां खड़ा हुआ मैं देश की गवर्नमेण्ट के हाथों से सारयुक्त अधिकार के शीघ्र ही परिवर्त्तन के लिए मांग कर रहा हूं। यही हमारी सुधार-स्कीम की खरी सत्यता है। क्या आप के विरोधी इस बात को नहीं समझते हैं ? क्या वे इतने मन्द बुद्धि और इतने बेवकूफ हैं ? क्या वे हमारी मांगों को नहीं समझते हैं ? हमारी मांग केवल यह है कि आप लोग देश के शासन का सर्वाधिकार रख सकें। आप लोग ही इस देश की सेना के पूर्णाधिकारी हैं और आप ही लोग इस देश के व्यापार के पूर्ण स्वत्व-भोगी। और, हम लोग अब इन तीन स्वत्वों को किसी के हाथों में नहीं रखे रहने देना चाहते। १५० वर्ष तक ऐसा करते रहे हैं, पर अब हम इससे आजिज़ आ

गये है (करतल ध्वनि)। इस लिए विरोधियों की बातें केवल कागज़ पर ही भली मालूम हो सकती हैं, लेकिन मुझ पर विश्वास कीजिए कि वे हमारी बात अच्छी तरह समझते हैं। परन्तु, जैसा कि कहा जाता है कि, उनसे बढ़ कर कोई अन्धा नहीं है जो (जान बूझ कर) देखते ही नहीं, और ऐसी ही दशा इन लोगों की है।"

भारतीय स्वराज्य संघ

की ओर से ता० ३ जनवरी को सध्या के ५ बजे कलकत्ता-बीडन स्कावर में एक सार्वजनिक सभा हुई थी। लो० तिलक, बा० विपिन चन्द्रपाल, मद्रास के श्रीयुक्त के० वी० रङ्गास्वामी आयंगर, श्रीयुक्त कृष्णमाचार्य, बा० पाच कौड़ी बनर्जी, श्रीयुक्त सुरेशचन्द्र समाजपति, श्रीयुक्त वासुदेव रावजी जोशी, डा० परांजपे, बा० पद्मराज जैन बा० मदन गोपाल गाडोदिया आदि सज्जन उपस्थित थे।

प्रारम्भ में पं० गोकुलचन्द्र चौबे ने लोकमान्य की स्तुति में कुछ पद्य पढ़े। बाद नेकीराम शर्मा ने लोगों को स्वराज्य ससघ के सदस्य होने का उपदेश दिया। इसके बाद

लोकमान्य तिलक

ने हिन्दी में इस प्रकार भाषण किया:—

अध्यक्ष महाशय और मेरे प्यारे भाइयो,

प० नेकीराम शर्मा ने ऐसा प्रस्ताव किया है कि हम हिन्दी में बोलेंगे। मुझे हिन्दी आती नही, इस वास्ते मेरी टूटी-फूटी और अशुद्ध हिन्दी के लिए आप क्षमा करेंगे।

आज का जलसा होमरूल का है। आप बड़े बाज़ार के रहने वाले हैं। इस लिए आपकी बडी दूकान होगी। मान लीजिए, कि किसी दूकान का मालिक लड़का है। दूकान पर पिता ने मुनीम रखा था। वह लडका २१ वर्ष का हुआ तो कहने लगा कि दूकान मुझे क्यों नहीं सौंप देते? पर मुनीम कहता है कि हम २० वर्ष से मुनीम है, काम काज करते हैं। दूकान तुम्हारी है सही, पर आज एक कोठरी ले लो। जब उसे ठीक रख सकोगे तो धीरे धीरे सारी दूकान तुम्हें सौंप देंगे। पर हक़ लडके का है, उसे कम करने का मुनीम को हक़ नहीं है। पहले कैसे अंगरेज़ आये यह हम नहीं कहते। वह इतिहास से मालूम होगा। उस समय हम अज्ञान थे, इस लिए बादशाह ने हमारी दूकान पर नौकर रख कर उन्हें काम-काज सौंप दिया। अब हम सज्ञान हुए हैं इस लिए बादशाह से स्वराज्य मांगते हैं। नौकरों का हमारे देश पर कुछ अख़्त्यार नहीं है। ये सिविल सर्वेण्ट नौकर हैं। ये चले जायंगे तो बादशाह का कुछ नुक़सान न होगा। वह दूसरे नौकर रख लगा। हमारे हाथ में सत्ता आने से बादशाह को हानि न होगी। हमें स्वराज्य मिलेगा तो भी बादशाह रहेगा और पार्लमेण्ट क़ायम रहेगी। ये नौकर हमारा हित देखने वाले नहीं हैं, इस वास्ते हम सत्ता मांग रहे हैं, स्वराज्य यही चीज़ है। वह कोई भयङ्कर और राजद्रोही चीज़ नहीं है। स्वराज्य मांगने से राजद्रोह नहीं होता—ऐसा हाईकोर्ट का निर्णय हो चुका है। पुलिस पूछे तो कहो कि, हम अपना हक़ मांगते हैं। यह राजद्रोह नहीं है, तुम चाहे जो करो। दूकान हमारी है। हमारे लोग

जिसको चुनेंगे, उसका कहना नौकर को मानना पड़ेगा और जो न मानेगा वह डिसमिस कर दिया जायगा। स्वराज्य देने की सूचना से अधिकारि-वर्ग के पेट का सम्बन्ध है इससे वह विरोध करता है। वह यह नहीं कहता कि स्वराज्य न देंगे, पर कहता है कि तुम अभी लायक़ नहीं हो, इससे आज म्यूनिसिपैलिटी का काम लो, सड़क साफ करो, बत्ती लगाओ। यह सब अच्छी तरह करोगे तो और देने का विचार करेंगे। पर ऐसा थोड़ा थोड़ा मिलने से युगान्त में भी पूरा न मिलेगा। प्रदेश की शिक्षा का प्रबन्ध कर देगा तो भी ठीक नहीं है। क्योंकि नीति, उसी के हाथ में रहेगी। पगार (तनख़्वाह) बाटने का काम हम को मिलेगा। इस तरह का होमरूल हम नहीं चाहते। हमारी फ़रियाद पार्लामेण्ट के पास है। स्वराज्य सब अधिकार की कुञ्जी है। वह कुञ्जी हाथ में आती है तो सब ट्रेज़री (ख़ज़ाना) हाथ में आ जायगा। स्वराज्य क्या वस्तु है इसे अच्छी तरह ध्यान में रखो। इससे अंगरेज़ी राज्य की भी हानि नहीं है। हमको स्वराज्य देने से साम्राज्य का बड़ा फ़ायदा होगा। १०।५ लाख फौज साम्राज्य को रक्षा के वास्ते हिन्दुस्तान में ही मिलेगी और कहीं न मिलेगी। हमारे हाथ में हथियार नहीं रखा इस लिए हम लोग दुर्बल हो रहे हैं। स्वराज्य मिलेगा तो हिन्दुस्थान १०।५ क्या ५० लाख आदमी दे सकेगा। हमारे पूर्वज राजपूत, सिक्ख आदि बहुत शूर थे। उनका रक्त हमारे शरीर में है। साम्राज्य-रक्षण करने की हमारी उम्मेद है। फिर ऐसा दुर्बल भाव मत रखो, और बादशाह का इरादा भी हमें दुर्बल रखने का नहीं है। क्योंकि महारानी की [illegible]कार ने जो जाहिरनामा निकाला था उसमें काले-गोरे का

भेद नही रखा था। वह भेद अधिकारिवर्ग ने किया। आज जापान या अफगानिस्तान हम पर चढ़ाई करे तो उन्हें रोकने की शक्ति हम में नहीं रही। हमे स्वराज्य देने से साम्राज्य भी अच्छा रहेगा। यह बात विलायत वालों के ध्यान में कुछ कुछ आई है। उने उन्हें अच्छी तरह समझाना चाहिए। यह समय परमेश्वर की कृपा से आया है। उद्योग न करेंगे तो आपके सरीखा दुर्भाग्यवान जगत में कोई न होगा। विलायत का लोकमत जो अनुकूल करेंगे तो हमारा उद्देश सफल होगा। ऐसा समय अब सौ वर्ष में भी न आवेगा। समय अनुकूल होने से काम करना चाहिए। आलस्य छोड कर शरीर से, द्रव्य से और बुद्धि से मदद करो। व्यापारी हो, क्लार्क हो, क्षत्रिय हो, मुसलमान हो, कोई भी हो, स्वराज्य के लिए मदद करो।" × × ×

अनन्तर बा० मनोरञ्जन गुह ठाकुर और प० सुरेशचन्द्र समाज-पति के बंगला में और बा० पांचकौड़ी बनर्जी तथा बा० विपिनचन्द्र पाल के व्याख्यान हिन्दी में हुए।

मिसेज़ बीसेन्ट का भाषण।

[भाषण के स्वराज्य-सम्बन्धी मुख्य २ अंश]

"भारतवर्ष दो कारणों से होमरूल मांगता है। एक तो यह कि यह बहुत ही ज़रूरी है क्योंकि स्वाधीनता हरएक क़ौम का पैदायशी हक़ है। दूसरा कारण यह है कि उसकी भारी भारी हित और स्वार्थ की बातें उसकी मर्जी के ख़िलाफ़ ब्रिटिश साम्राज्य के मातहत कर दी गई हैं और उस की

अपनी दौलत या अपनी शक्ति उसके अपने ही बहुत जरूरी कामों के लिए नहीं लगाई जातीं। उसकी फ़ौज के लिए जो रुपया ख़र्च किया जाता है, उसी का जिक्र कर देना काफी होगा। यह फ़ौज हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए रक्खी जाती है और इसीकी बराबरी में आरम्भिक शिक्षा के लिए बहुत ही कम रुपया लगाया जाता है।

पहिला और ज़रूरी कारण।

कौम या जाति किसे कहते हैं?

किसी जाति या क़ौम के आत्म-सम्मान और मर्यादा या बड़ाई के लिए स्वराज्य की ज़रूरत होती है। दूसरे का राज्य जाति को कमजोर बना देता है, उसके चालचलन को गिरा देता और उसकी लियाक़त को घटा देता है। देखिये, हथियार रखने के क़ानून ने ही कैसी बुराइयां की हैं। राजा रामपाल सिंह ने दूसरी कांग्रेस की बैठक में कहा था कि, 'ब्रिटिश सरकार से हमको जितने तरह के लाभ हुए हैं उनकी बराबरी में अकेले इसी कानून ने कहीं बढ़कर नुक़सान पहुंचाया है। इसने हिन्दुस्तानियों को बहुत कमज़ोर बनाया है, बहुत नीचे गिरा दिया है, और धीरे २ हम में वीरता बिलकुल कुचल डाली है। हमको सिपाहियों और बहादुरों के बदले क़लम चलानेवाली भेड़ों का झुण्ड बना दिया है।'

जाति क्या है? जाति ईश्वरीय तेज या अग्नि का एक गोला या शिखा है। वह ईश्वरीय जीवन का एक अंश है। जातीयता का जादू, एकता का भाव है, और जिस काम के लिए जो जाति लायक़ है उसी काम से संसार की सेवा करना ही उसका फल है। ईश्वर ने हिन्दुस्तान को धर्म

फैलाने, फ़ारस को पवित्रता, मिस्र को सायंस, यूनान को सुन्दरता, और रोम को कानूनों के लिए बनाया था। परन्तु संसार को पूरा लाभ पहुँचाने के लिए इसे अपने आप अपने ही विशेष ढंग से काम करना चाहिए।

स्वराज्य की पुकार।

इसीलिए किसी जाति का स्वाधीनता या स्वराज्य के लिए चिल्लाना और भी ज़्यादा अधिकार पाने या ज़्यादा सुख लूटने के लिए नहीं होता। यदि वह जाति ऐसा भी करे तो कोई बुरी बात नहीं है, क्योंकि सुख से जीवन की पूर्णता का अर्थ निकलता है और पूर्णता की पुकार एक सच्ची धार्मिक पुकार है। पर स्वराज्य की मांग अपने स्वभाव की उन्नति के लिए होती है जिससे संसार की सेवा हो सके। यह मांग बड़े गहरे आध्यात्मिक भाव की मांग है। इससे यही जान पड़ता है कि अपनी सब से अच्छी चीज़ संसार को दी जा सके। इस लिए बाधाएँ इसे रोक नहीं सकतीं, न धमकियां इसे डरा सकती हैं, और न अधिक सुख आनन्द की लालच अपनी स्वाधीनता दे डालने के लिए इसे फुसला ही सकती है।

जाति को निर्बल बनाना।

ध्यान देकर देखा जाय तो विदेशी राज से हर एक मर्द, औरत और बच्चे का चालचलन बिगड़ जाता और वह कमज़ोर हो जाता है। अच्छे से अच्छे हिन्दुस्तानी अपने हृदयों में इस बात का अत्यन्त ही तीक्ष्ण अनुभव कर रहे हैं। देश की नौकरियों में हिन्दुस्तानियों की नियुक्ति के विषय में गोपालकृष्ण गोखले कहते हैं,—"वर्तमान प्रणाली से हिन्दु-

स्तानी क़ौम की बाढ रोकी जा रही है, वह बौनी बनाई जा रही है। हमें अपने जीवन के कुल दिन हीनता के नभोमंडल में बिताने ही पड़ेंगे, हममें बडे से बडे को भी झुक जाना पड़ेगा जिससे वर्तमान प्रणाली की पाबन्दियां पूरी हो सकें। उत्थान का वह भाव जो इंगलैंड का बच्चा २ अनुभव करता है कि वह एक दिन ग्लैडस्टन, नेल्सन या वेलिंग्टन बन सकता है, हम भारतवासियों के लिए नहीं है।" × × × ×

भारत के हक़।

क्या कोई अंगरेज़ चाहेगा कि जर्मन लोगों को इंगलेंड में बडे २ ओहदे मिल जायँ? हरगिज नहीं। इस लिए कि एक स्वाधीन मनुष्य का आत्म-अभिमान परदेशी अधिकार के विरुद्ध ही खड़ा होगा। हिन्दुस्तानी बचपन ही से साहब लोगों को अपना बडा समझने लगते हैं। हिन्दुस्तानी पोशाक, हिन्दुस्तानी खाना, हिन्दुस्तानी रहन-सहन, ये सब नीची नजर से देखे जाते हैं। हिन्दुस्तानी मातृभाषा और हिन्दुस्तानी साहित्य द्वारा कोई शिक्षित नहीं कहला सकता। पर अब लोगों की आंखें खुलने लगी हैं। अब लोग समझने लगे हैं कि वे भी आदमी हैं और उनको भी अपने देश की स्वाधीनता का अधिकार है। अब हिन्दुस्तान घुटने टेककर दया की दरखास्त नहीं करता, अब अपने हकों के लिए वह अपने पैरों पर खडा है। मैंने ऐसी बातें सिखलाई हैं, इसलिए हिन्दुस्तान के अंगरेज मेरा मतलब नहीं समझते, वे मुझको राजद्रोही मानते हैं।

यह भाषा बहुत कडी जँच सकती है क्योंकि हिन्दुस्तान मे खुल्लमखुल्ला सच बात अकसर नहीं कही जाती। पर यही हर एक अंगरेज़ अपने देश में सोचा करता है और हर

एक हिन्दुस्तानी को भी अपने देश में ऐसा ही सोचना चाहिए। इसी स्वाधीनता के लिए मित्र-राष्ट्र लड रहे हैं। यही लोकसत्ता की नीति है—यही वर्तमान युग की प्रेरक शक्ति है। और ज्योंही भारत अपने हक को मांगने लगेगा, हर एक सच्चा अंगरेज इसको सच मान लेगा। जब यह मिल जायगा, तब ग्रेट-ब्रिटेन और भारत का मेल, प्रेम और सेवा का पक्का सुनहला बन्धन बन जायगा और परदेशी जूए की लोहे की ज़ंजीर टूटकर गिर पडेगी। हम लोग साथ साथ रहेंगे और साथ साथ काम करेंगे। हम में कोई अविश्वास या नापसन्दगी नहीं रहेगी और भाई भाई की तरह हम लोग एक ही उद्देश के लिए काम करते रहेंगे। इस मेल से अत्यन्त शक्तिशाली साम्राज्य या 'कामनवेल्थ' पैदा होगा जो ईश्वर के सुन्दर काल में युद्ध की इतिश्री कर देगा।

दूसरा कारण।

योग्यता की जांच।

होमरूल की पुकार के लिए दूसरा कारण इन सूखे शब्दों में कहा जा सकता है—"आजकल का शासन बहुत छोटी २ सी बातों और ब्रिटिश स्वार्थों के मामलों में तो बहुत ही योग्य है, पर बडी बडी बातों में जिनसे लोगों के सुख और स्वास्थ्य का तअल्लुक़ है, वह अयोग्य ठहरता है।" हां, बाहरी तडक-भडक-जैसे रेल, तार डाकखाने वगैरः को देखकर परदेशी जो यहां के विषय में आधे असभ्य देश का ख्याल रखते थे, हाथ उठाकर वाह वाह कहने लगते हैं। परन्तु वे अगर लोगों के जीवन पर निगाह डालते, २५) मासिक पाने वाले परिश्रमी क्लर्कों के विशाल समूह को अपने बच्चों को शिक्षा देने

की कोशिश करते हुए देखते, अगर वे उन मज़दूरों की हालत देखते जिनको हर रोज एक वक्त खाना नसीब होता है और वह जिन झोंपड़ों में अपने दिन बिताते हैं तो वे अवश्य ही कुछ सोचते । यदि पढे-लिखे लोग जी खोल कर उनसे बातें करें तो उनको मालूम हो कि, वे लोग कैसे विपद्ग्रस्त हैं।

हिन्दुस्तान और प्रजा-सत्ता।

हम को बराबर इस बात का विश्वास दिलाया जाता है, यहाँ तक कि हम तंग आ गये हैं, कि हिन्दुस्तान प्रजा-सत्ता के योग्य नहीं है, क्योंकि वह हमेशा निरंकुश शासनों की छाया में रहा है। परन्तु ऐतिहासिकों की यह राय नहीं है, और न यह सत्य घटनाओं ही पर निर्भर है, हाँ, यह इंडियन सिविलसर्विस की पक्षपातपूर्ण राय भले ही हो सकती है। होमरूल लीग ने श्रीमान् वायसराय और भारत-मंत्री की सेवा में जो आवेदन-पत्र पेश किया है उस में ठीक ही कहा है कि 'कोई जानकार आदमी यह दलील पेश नहीं कर सकता कि प्रजा-सत्ता भारतवर्ष के लिए एक अपरिचित वस्तु है। 'मेन' और अन्य इतिहासवेत्ता इसे स्वीकार करते हैं कि प्रजा-सत्ता की संस्थाएँ विशेष रीति से आर्य जाति की हैं जो भारतवर्ष से जाकर यूरोप में फैली हैं और जिन को यहां से विदेशों में चले जाने वाले आर्य अपने साथ ले गये थे। पंचायत अर्थात् 'ग्रामीण प्रजातंत्र' हिन्दुस्तान की सब से दृढ़ संस्था थी और वह सिर्फ पिछली शताब्दी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के दबाव से लुप्त हो गई। यहाँ की भिन्न २ जातियों में वे अब तक मौजूद हैं, प्रत्येक जाति में पूरे प्रजा-तंत्र की [illegible]ति पाई जाती है जिस में एक ही व्यक्ति का सम्बन्धी

एक राजा और एक किसान हो सकता है। सामाजिक उच्चता, धन और उपाधियों पर इतनी निर्भर नहीं है जितनी कि विद्वत्ता और व्यवसाय पर है। हिन्दुस्तान की आत्मा ही प्रजासत्तात्मक है और जो संस्थाएँ अतीतकाल से बच रही हैं और जो इस समय मौजूद हैं वे भी प्रजातन्त्र के रंग से रँगी हुई हैं।'

हमारा नवीन ध्येय।

(१) जहाँ तक वृटिश भारत का सम्बन्ध है, कोई ऐसा प्रबन्ध न होने पावे कि किसी ऐसी रियासत के शासक को, जिस को अपनी रियासत के भीतर पूरे अधिकार प्राप्त हों या जो ब्रिटिश भारत के ढँग पर शासन न करता हो हमारी कौंसिलों में राय देने का अधिकार प्राप्त हो।

(२) केन्द्रीय साम्राज्य सरकार के संगठन में हिन्दुस्तान का पद साम्राज्य में उस के महत्व के अनुकूल ही होना चाहिए नहीं तो साम्राज्य-सम्बन्धी समस्त मामलों में इङ्गलैंड और उपनिवेश भी उस पर हुकूमत करने लगेंगे। यदि, जैसा कि प्रस्ताव किया गया है, युद्ध-सभा केन्द्रीय महान् सरकार में परिवर्द्धित हो जाय तो उस के अधिकार साम्राज्य-रक्षा तक ही परिमित रहें। संगठन के सब राष्ट्रों की सलाह के बिना कोई प्रश्न उस में पेश न हो सके और यदि एक राष्ट्र भी आपत्ति करे तो प्रश्न अलग रक्खा जाय। प्रत्येक राष्ट्र को अपने समस्त कर नियत करने में और अपने खज़ाने पर पूरे अधिकार रहने चाहिए जैसे कि इस समय उपनिवेशों को प्राप्त है—केवल साम्राज्य-रक्षा का व्यय उन को अवश्य देना पड़ेगा।

१० वर्ष में पूरा स्वराज्य ।

हमें ब्रिटिश सरकार से आस्ट्रेलियन स्वराज्य-संगठन के ढंग पर एक बिल १९१८ में पास करने के लिए कहना चाहिए, जो उसी बिल में लिखी हुई मियाद के भीतर ही कार्य में परिणत कर दिया जाय। उचित तो यह होगा कि १९२३ में उस बिल को असली जामा पहिना दिया जाय परन्तु अधिक से अधिक १९२८ ई० के भीतर वह जारी हो जाना चाहिए। बीच के ५ या १० वर्ष शासन के अधिकारों को ब्रिटिश से भारतीय हाथों में सौंपने में लगाये जायँ। अधिकारों की यह तबदीली किस्तों में की जा सकती है जिसका आरम्भ कांग्रेस-लीग की योजना के समान सुधारों से होना चाहिए और जिनके परम आवश्यक अंश ये रहेंगे —निर्वाचकों का विस्तार, कार्य० कौंसिलों में आधे चुने हुए सदस्य, खज़ाने पर अधिकार, तथा बड़ी और प्रान्तिक व्यव० कौंसिलों में हमारा वास्तविक बहुमत।

समस्त भारत-वासियों के नाम

मिसेज़ बीसेन्ट का संदेश

प्यारे भाई-बहनों!

हम आप सब स्वदेशवासी ऐसे समय में स्थिर और जीवित हैं जब कि समस्त अवनीतल पर महान् परिवर्तन उपस्थित हो रहा है और जिस का परिणाम यह है कि इस प्रकार के ढंग स्वीकार किये गये हैं जिनसे पूर्वकाल की

वीरत्वपूर्ण सरलता वा स्वच्छता झलक रही है। हमारे साम्राज्य के सहकारी-अर्थात्, श्रीमान् वायसराय महोदय ने, जो हमारे प्रिय श्रीमान् सम्राट के स्थानापन्न हैं, उक्त बहु-मूल्यवान सम्राटोचित शब्दों को कि "भारतवर्ष के शासन-प्रबन्ध मे सहानुभूति विलुप्त है" ध्यान मे रखते हुए पहले के सम्राटों की भांति अपनी सम्बन्धहीन उदासीनता छोड कर बाहर पग रक्खा है और सविस्तृत एव सुविशाल भार-तीय साम्राज्य में वे इस बात क जानने के लिए दौरा कर रहे है कि भारतवासी किस बात को चाहते है। केवल इतना ही नहीं, वरन् उनके साथ साथ साम्राज्य सिंहासन की ओर से एक प्रधान दुत अर्थात् साम्राज्य-मन्त्री इतना दूरव्यापी पर्यटन अङ्गीकार करके बृटिश देश से स्वय सम्राट की ओर से 'प्रेम' और 'न्याय' की भेंट लेकर पधारे है। यह वह प्रेम है जो हम पर आच्छादित होकर बीती हुई विपत्तियों को विस्मृत वा निर्मूल कर देगा और यह वह न्याय है जो हमको उन नाना अधिकारो को चुका देगा जिनको अन्य जातियों के मनुष्य उन मद-बुद्धि सम्राटों से असि-शक्ति द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं जो उस महान् धर्म से अजानकार हैं जो कि एक नरपति में होना चाहिए।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि भारतवर्ष के उच्च शिक्षा-प्राप्त समुदाय की दृष्टि में उस न्याय का क्या अभिप्राय है? वह यह अभिप्राय है कि उनके हाथों में वे अधिकार दिये जावें जिनसे वे लोग उन आवश्यक सुधारों वा प्रबन्धों को काम में लावें जिनके विषय में गत ३३ वर्षो से वे नेश-नल कांग्रेस से प्रस्ताव पास कराते आ रहे हैं। अर्थात्, यह कि वे प्रारम्भिक शिक्षा का कानून जारी

१० वर्ष में पूरा स्वराज्य।

हमें ब्रिटिश सरकार से आस्ट्रेलियन स्वराज्य-संगठन के ढंग पर एक बिल १९१८ में पास करने के लिए कहना चाहिए, जो उसी बिल में लिखी हुई मियाद के भीतर ही कार्य में परिणत कर दिया जाय। उचित तो यह होगा कि १९२३ में उस बिल को अमली जामा पहिना दिया जाय परन्तु अधिक से अधिक १९२८ ई० के भीतर वह जारी हो जाना चाहिए। बीच के ५ या १० वर्ष शासन के अधिकारों को ब्रिटिश से भारतीय हाथों में सौंपने में लगाये जायँ। अधिकारों की यह तबदीली किस्तों में की जा सकती है जिसका आरम्भ कांग्रेस-लीग की योजना के समान सुधारों से होना चाहिए और जिनके परम आवश्यक अंश ये रहेंगेः—निर्वाचकों का विस्तार, कार्य० कौंसिलों में आधे चुने हुए सदस्य, खजाने पर अधिकार, तथा बड़ी और प्रान्तिक व्यव० कौंसिलों में हमारा वास्तविक बहुमत।

समस्त भारत-वासियों के नाम

मिसेज़ बीसेन्ट का संदेश

प्यारे भाई-बहनो!

हम आप सब स्वदेशवासी ऐसे समय में स्थिर और जीवित है जब कि समस्त अवनीतल पर महान् परिवर्तन उपस्थित हो रहा है और जिस का परिणाम यह है कि इस प्रकार के ढंग स्वीकार किये गये हैं जिनसे पूर्वकाल की

वीरत्वपूर्ण सरलता वा स्वच्छता झलक रही है। हमारे साम्राज्य के सहकारी—अर्थात्, श्रीमान् वायसराय महोदय ने, जो हमारे प्रिय श्रीमान् सम्राट के स्थानापन्न हैं, उक्त बहु-मूल्यवान सम्राटोचित शब्दों को कि "भारतवर्ष के शासन-प्रबन्ध में सहानुभूति विलुप्त है" ध्यान में रखते हुए पहले के सम्राटों की भांति अपनी सम्बन्धहीन उदासीनता छोड़ कर बाहर पग रक्खा है और सविस्तृत एवं सुविशाल भार-तीय साम्राज्य में वे इस बात क जानने के लिए दौरा कर रहे हैं कि भारतवासी किस बात को चाहते हैं। केवल इतना ही नहीं, वरन् उनके साथ साथ साम्राज्य सिंहासन की ओर से एक प्रधान दूत अर्थात् साम्राज्य-मन्त्री इतना दूरव्यापी पर्यटन अङ्गीकार करके बृटिश देश से स्वयं सम्राट की ओर से 'प्रेम' और 'न्याय' की भेंट लेकर पधारे हैं। यह वह प्रेम है जो हम पर आच्छादित होकर बीती हुई विपत्तियों को विस्मृत वा निर्मूल कर देगा और यह वह न्याय है जो हमको उन नाना अधिकारों को चुका देगा जिनको अन्य जातियों के मनुष्य उन मद-बुद्धि सम्राटों से असि-शक्ति द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं जो उस महान् धर्म से अजानकार हैं जो कि एक नरपति में होना चाहिए।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि भारतवर्ष के उच्च शिक्षा-प्राप्त समुदाय की दृष्टि में उस न्याय का क्या अभिप्राय है? वह यह अभिप्राय है कि उनके हाथों में वे अधिकार दिये जावें जिनसे वे लोग उन आवश्यक सुधारों वा प्रबन्धों को काम में लावें जिनके विषय में गत ३२ वर्षों से वे नेश-नल कांग्रेस से प्रस्ताव पास कराते आ रहे हैं। अर्थात्, यह कि वे प्रारम्भिक शिक्षा का कानून जारी करेंगे

जिससे जापान-सम्राट के कथनानुसार किसी ग्राम का कोई परिवार और किसी परिवार का कोई व्यक्ति शिक्षा से वंचित और मूर्ख न रहने पावेगा। वे लोग भिन्न २ व्यापारिक वस्तुओं पर ऐसा महसूल लगावेंगे जिससे, उन प्राकृतिक सुविधाओं के कारण जो व्यापार के सम्बन्ध में भारतवर्ष को प्रधानतः प्राप्त है, अन्य जातियों की सम्पत्ति, जिसकी भारतवासियों को सुधार और उन्नति के निमित्त आवश्यकता है, खींच लावेंगे। प्रकृति देवी ने जो सुविधाएं प्रदान कर रक्खी हैं वे भारतवासियों के लिए इस प्रकार लाभदायिनी और प्रभावोत्पादिनी होंगी जिस प्रकार भगवान् इन्द्रदेव की कृपा से जलवृष्टि सूखे हुए धानों को दुबारा हरा भरा कर देती है। यह उच्च शिक्षा-प्राप्त समुदाय उन समस्त जबरी कानूनों को व्यर्थ कर देगा जो इस इच्छा से बनाये गये हैं कि स्वदेशी जन अपने उन सम्पूर्ण असंतोषों को प्रगट न कर सकें जो मिथ्या और अनुचित ढंगों से अस्तित्व में आये हैं और जिनका, अन्य जातियों के शासन में जिनकी भाषा, स्वभाव और रीति रिवाज भारतवासियों से जिन पर वे शासन करते हैं सर्वथा भिन्न है, उत्पन्न होना अवश्यम्भावी है। उच्च शिक्षा-प्राप्त भारतवासियों के समुदाय की दृष्टि में न्याय का यह उद्देश है कि उस उच्च उत्तरदातृत्व एवं हार्दिक आन्दोलन का अवसर प्राप्त हो कि जिसको वे प्रसन्नता पूर्वक अपने उन देशबन्धुओं के अभ्युदय एवं आनंद के लिए अपनी गर्दन पर लें जिनमें स्वयं उनका अस्तित्व हुआ है और जिनके सम्बन्धी एवं निकटवर्ती उन सहस्रों लाखों देहातों में बसे हुए हैं जहां उनके पुरातन वंश अगणित पीढियों से रहते रहे हैं। कोई कारण नहीं है कि जिन

लोगों में हमने जन्म लिया है हम उनकी सेवा सुश्रूषा न करें। क्योंकि भारतवर्ष में ऐसी साम्प्रदायिकता नहीं है जिससे भारतवासी सम्मिलित होने के अयोग्य हों जैसी कि पाश्चात्य देशों में महलों के रहने वाले श्रीमानों एव झोपड़ों के रहनेवाले निर्धनों में मौजूद है।

दूसरा प्रश्न यह है कि उस समुदाय के लिए न्याय का अर्थ क्या है जो अपने घरों से बाहर काम करते हैं और यदि वे ग़रीब हैं किन्तु सेना और पुलीस में भर्ती होते हैं। इस विभाग में यदि प्रतिष्ठित पुरुष जावेंगे तो वे उसी दशा में रह सकेंगे जब कि उनको यह अवसर प्राप्त होगा कि उनके लिए, जो स्वाभाविक वीर और युयुत्सु हैं, भविष्योन्नति का द्वार खुला हुआ हो। यही अतोक्त समुदाय इस समय कुहृदय और असतुष्ट है। क्योंकि इसकी अभिलाषा काम करके दिखला देने की है, किन्तु वह इस विषय में अब तक 'कोपि न पृष्ट' की ही दशा में पड़ा है। अतः उनके लिए यह न्याय ऐसा उन्नति का मार्ग खोलेगा जो उनके गौरव, अभिलाषा एवं योग्यता के विचार से ठीक और उचित हो तथा उनको उस स्थल वा जल सेना एव भारतवर्ष की पुलिस में, जिसमें सिपाही से लेकर उच्च अफसर तक भारतवासी हों, भर्ती किया जावेगा जिसमें सबसे अधिक वीर और बढ़िया क़वायद जाननेवाले, जिनमें अफसरी की पूरी २ योग्यता हो, उच्चतर पद और सेनाओं के 'कमान' पर उन्नति कर सकें। इस योग्यता का न होना इस समय देश की सेवा में चिन्ता उत्पन्न कर रहा है क्योंकि ये भारतवासी लोग ही अपने देश को अन्य जातियों से बचानेवाले और भीतरी सुप्रबन्ध के सरक्षक एवं रखवारे हैं।

अब तीसरा प्रश्न यह है कि इस न्याय से व्यापाराजीवी समुदाय की क्या आकांक्षा है। इस समुदाय का यह उद्देश है कि उनके लिए बाज़ार लगाये जावें जहां वे अपने परिश्रम और प्रयत्न के बदले में द्रव्य प्राप्त करें और लक्ष्मी देवी अपने सेवकों वा उपासकों के परिश्रम का मनाभिलाषित फल प्रदान करें। यह ही समुदाय शिल्प, वाणिज्य आदि व्यापारिक पैदावार का संरक्षक एवं नियमानुसार व्यवस्था देनेवाला और अपने देश की उपज को एकत्र करके भारतवर्ष एवं पृथ्वी के अन्य देशों में उचित रीति से वितरण करने का अधिकारी होगा तथा अपने समुदाय में उन सम्भ्रान्त एवं आनुभविक मस्तिष्कों को प्रविष्ट करेगा जो इस समय देश के भिन्न २ भागों में उन आभूषणों की भांति फैले हुए हैं जिनमें स्वल्प मूल्य नगीने जड़े हों, और जातीय सम्पत्ति का प्रबन्ध-कर्त्ता एवं संरक्षक बन कर तथा उसको सम्मानपूर्ण प्रभुत्व वितरण करके जातीय उन्नति का आश्रयदाता बनेगा। इस समुदाय में वे प्रतिभाशाली व्यक्ति पुंज २ प्रविष्ट होंगे जिन्हों-ने जातीय सेवा के विभाग में पूर्ण कृतकार्यता प्राप्त की है कि जिस पर अन्य विभागों की अपेक्षा जातीय उत्कर्ष एवं अभ्युदय का अधिकतर निर्भर है।

अब चौथी बात यह है कि उन बहुसंख्यक भारतवासियों के लिए न्याय का क्या अभिप्राय है कि जो वेचारे बिना किसी आशा के घोर परिश्रम करते हैं और बिना किसी साहाय्य एवं कृपा के कष्ट सहन करते हैं। यह वृहत् समुदाय जो तोड़ परिश्रम करता है किन्तु उसका फल अन्य जन खाते और उससे वह सम्पत्ति अर्जन करते हैं जिसमें उन विचारों का किञ्चन्मात्र कोई भाग नहीं है। यद्यपि, वास्तव में, समस्त पदार्थों की उपज एवं अन्य नित्य व्यवहार्य्य उपज

तथा सुपास एवं सजधज उन्हीं के हाथों की उत्पन्न की हुई होती है और वे देख रहे हैं कि यह सब उपज नदी-तरंग के समान देश से बाहर चली जा रही है। किन्तु उन विचारों के स्त्री-पुत्र उपवास करने की दशा में छोड दिये जाते हैं और सम्पूर्ण उपज, जिसको उन्हों ने पसीना बहा कर उत्पन्न किया है, दूसरों के सुख-सुपास के लिए देश से बाहर चली जा रही है और उनके झोपडे जीवन की सामग्रियों से शून्य पडे हुए हैं। इस प्रकार के बहुसंख्यक भारतवासियों के लिए न्याय के ये अर्थ होंगे कि उनके परिश्रम और कष्ट से उत्पन्न की हुई उपज पर सब से प्रथम यह नियम रहे कि उसमें से उनके खाने के लिए पर्याप्त उपज और आगामी फसल बोने के लिए बीज छोड दिया जावे तथा प्राचीन पंचायत का ढंग फिर से स्थापित किया जावे जिससे ग्रामों के रहनेवाले स्वयं अपने ग्रामों के समस्त काम-धन्धों का प्रबन्ध करें और ग्रामों के सम्पूर्ण पदाधिकारी वहाँ के निवासियों के दुबारा सेवक बनें, न कि अत्याचारी और निष्ठुर। ग्रामवासियों को यह अवसर प्राप्त हो कि वे प्राचीन काल की भांति अपने अपने ग्रामों में पाठशाले या पढाने के स्थान खोलें जहां उनके बालक बालिकायें शिक्षा प्राप्त करके ग्रामीण जीवन के लिए अधिक प्रवीन एवं उपयोगी बन सकें, और यदि इनमें से कोई बालक या बालिका तीव्रबुद्धि, मेधाशाली और उच्च विद्यालयों में शिक्षा पाने की योग्यता रखते हों तो उनके निमित्त यूनिवर्सिटी ऐसा सुगम मार्ग प्रस्तुत करे जो वर्तमान पद्धति से स्वतंत्र कष्ट-दाता और कठोरता से रहित हो। क्योंकि न्याय वह है कि जिस से प्रत्येक व्यक्ति को उसके जन्म-जात स्वत्व प्राप्त हों और वह जन्म-जात स्वत्व 'स्वराज्य या होमरूल' है।

अतएव, प्यारे देशबंधुओं! क्या आप मेरे सहकारी बन कर मेरे साथ साथ काम करेंगे कि जिससे हमारा भारत-देश स्वयं अपनी सीमा के भीतर सुखी और स्वच्छन्द तथा संसार की अन्य समस्त जातियों में गौरवान्वित हो? क्या आप स्वयं अपनी और अपनी भविष्य सन्तान की स्वाधीनता के लिए हम से कन्धा जोड़ कर काम न करेंगे? भारतवर्ष का ग्रेट बृटेन के साथ सम्बन्ध ईश्वर की उस इच्छा का परिणाम है जो अपनी कृपा से प्राची एवं प्रतीची को समस्त धरातल की प्रसन्नता के लिए परस्पर युक्त कर देगा। इस समय का सम्बन्ध बल और अत्याचार पर निर्भर है। हमको उचित है कि इस सम्बन्ध को पारस्परिक प्रेम और प्रीति की नींव पर स्थापित करें और साम्राज्य के सानन्द साझीदार बनें; न कि एक शासित और अधीन जाति।

अतएव, प्यारे देशबन्धुओ! वीरों की भांति बद्ध-परिकर हो कर उठो और वीरता-पूर्वक अपनी अवस्था और अपने विचारों को प्रकट करो, तब आपकी आवाज़ समुद्र पार करके बृटिश देश तक पहुँचेगी जो प्रतीच्य देशों में स्वायत्तशासन का आविष्कर्त्ता और अगुआ है। वह अपनी भगिनी की भांति भारतवर्ष को प्रीति के आवेश में प्रेममय हृदय से आलिङ्गन करेगा, जो एक समय में पौर्वात्य प्रदेशों के स्वायत्त-शासन का आविष्कर्त्ता रहा है, एवं जिसने अपने पुत्र-पुत्रियों को प्रतीचा में स्वतन्त्रता स्थापित करने के लिए भेजा था। अब यदि ये दोनों परस्पर एक प्राण दो शरीर हो जायँगे तो सम्मिलित प्रयत्न से स्वाधीन जातियों का एक ऐसा सुविशाल संयुक्त साम्राज्य बन जायगा कि जिससे सम्पूर्ण मानव-जाति सुखी और स्वच्छन्द दृष्टिगोचर होगी और लाभ पावेगी।

——•——

स्वराज्य-साहित्य-माला।

हमने 'प्रताप-कार्यालय' से स्वराज्य-सम्बन्धी छोटी २ पुस्तिकायें स्वराज्य-साहित्य-माला के नाम से निकालना शुरू की हैं। इस माला में अब तक नीचे लिखी पुस्तिकायें प्रकाशित हुई हैं।

१—स्वराज्य (ले०-श्रीमती एनी बीसेन्ट मू० ~)॥

२-३—स्वराज्य की आवश्यकता और दुर्बल देश पर भारी बोझ (श्रीमान् सी० वाई० चिन्तामणि और लाला लाजपत राय) मू० ~)

४—स्वराज्य सगीत (स्वराज्य सम्बन्धी कविताओं का संग्रह) ~)

५- स्वराज्य की व्याख्या (बा० अम्बिकाचरण मजूमदार) ~)

६—स्वराज्य की कसौटी (प० जगतनारायण) ~)

७—स्वराज्य का संदेश (प० मदनमोहन मालवीय जी का लखनऊ की स्पेशल कांग्रेस का भाषण) ~)

८—स्वराज्य-नाद (पद्यमय स्वराज्य का स्पष्टीकरण) ~)

९—मिसेज़ बीसेंट का अन्तिम पत्र ~)

१०-स्वराज्य की लहर (देश के ९ नेताओं के भाषण) ~)

इस माला की और भी पुस्तिकायें छप रही हैं।

मेनेजर, 'प्रताप' कार्यालय—कानपुर।

स्वराज्य पर मालवीय जी

अर्थात्

मान० पं० मदनमोहन मालवीय जी.

के

स्वराज्य सम्बन्धी ६ व्याख्यान।
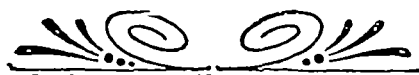
दबा हुआ यह देश नहीं अब दब मरना है।
बन कर रहना दीन किसे अब फब मरना है॥
प्राप्त करेंगे स्वत्व विश्व में होड़ बदेंगे।
लेलेंगे अधिकार, कभी हम छोड़ न देंगे॥
चन्द टरै, सूरज टरै, टरै जगत ब्योहार भी।
बिन स्वराज्य पाये न पै, हम अब रह सकते कभी॥

प्रकाशक,
प्रताप कार्यालय,
कानपुर।

१९७४

व्याख्याता,
मान० पं० मदनमोहन
मालवीय।

[प्रथम संस्करण।]

[मूल्य ४ आने।]

उपक्रमणिका ।

मानतीय पं० मदनमोहन मालवीय जी हमारे प्रान्त के एक मात्र राजनैतिक नेता हैं। उनकी सार्वजनिक सेवा के लिए समस्त देश तथा विशेष कर यह प्रान्त अत्यन्त कृतज्ञ है। १६०२ ई० से आप प्रान्तिक एवं बड़ी कौंसिल की मेम्बरी करते आये हैं। इसके अतिरिक्त आप के ही सदुद्योग से १६१५ में देश के कल्याण के लिए काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित हुआ है। आप का समस्त जीवन किसी न किसी रूप में मातृ-भूमि की सेवा में ही बीता है। इस समय आप बड़ी कौंसिल में ग़ैर-सरकारी सदस्यों के अगुआ हैं। स्वराज्य-आन्दोलन में जिस दृढ़ता और भविष्य-चिन्तना के साथ आप ने काम किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। उन्होंने मद्रास, बम्बई आदि में घूम २ कर व्याख्यान द्वारा स्वराज्य का ज्ञान फैलाया है। हमें उनके स्वराज्य-सम्बन्धी समस्त व्याख्यानों को पाठकों की भेंट करते अत्यन्त आह्लाद होता है। हमें विश्वास है कि मालवीय जी के ये प्रभावोत्पादक भाषण प्रत्येक पाठक के हृदय में स्वराज्य के प्रति उतनी ही उत्कण्ठा उत्पन्न कर देंगे जितनी उत्कण्ठा किसी भी सच्चे स्वदेशानुरागी को हो सकती है। गत वर्ष लखनऊ कांग्रेस में आपने जो भाषण दिया था उसकी प्रशंसा सारे देश के समाचार-पत्रों ने की थी और कहा था कि कांग्रेस में इतना निर्भीकतापूर्ण भाषण अभी तक नहीं हुआ। 'भारतीय मांग' अर्थात् सुधार स्कीम पर आपने जो अकाट्य प्रमाणों सहित मद्रास में व्याख्यान दिया, कांग्रेस-लीग स्कीम को

व्याख्या पर अभी तक वैसा भाषण देश में सुनने में नहीं आया। इस वर्ष की लखनऊ की स्पेशल प्रान्तिक कांग्रेस में जिन करुणा-जनक शब्दों में आपने देश की दुर्दशा का चित्र खींचते हुए भारत के नौनिहालों को स्वराज्य-आन्दोलन में जुट जाने का सदेश दिया है, जो लोग प्रान्तिक कांग्रेस में उपस्थित थे, वे ही कह सकते हैं कि उक्त व्याख्यान ने कितने आदमियों के मुँह से दर्द भरी आहें खिचाई थीं। हमें खेद है कि कागज़ आदि की मँहगी के कारण हम इस पुस्तक को अधिक सस्ती न बना सके। पर क़ाग़ज़ के सस्ते होते ही हम इस पुस्तक को भारत के घर २ में पहुँचाने के उद्देश्य से बहुत कम मूल्य पर विक्रय करावेंगे। आशा है हमारे देशानुरागी पाठक भारतीय स्वाधीनता के इतिहास के इस अमर-साहित्य को सादर अपनावेंगे।

प्रकाशक।

देवोत्थानी एकादशी
१९७४ वि०

व्याख्यान--सूची।

स्वराज्य पर मालवीय जी।

स्वराज्य और कांग्रेस।

३१ दिसम्बर सन् १६१६ की लखनऊ वाली कांग्रेस मे मान० मालवीय जी ने सभापति को धन्यवाद देते हुए यह वक्तृता दीः—

सज्जनो, इस कांग्रेस का कार्य समाप्त हो गया। सभापति को उनके प्रशंसनीय ढंग से कांग्रेस की कार्यवाही सञ्चालित करने के उपलक्ष्य में आप सब की ओर से उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है। मैं इस समय सभापति की उन सेवाओं की गणना नहीं करना चाहता जो उन्होंने इस कांग्रेस के लिए की हैं, क्योंकि इस में बहुत समय लग जायगा। मै उसी वर्ष कांग्रेस में सम्मिलित हुआ था जिस वर्ष मेरे उत्साही मित्र सभापति महोदय, अर्थात् सन् १८८६ की कांग्रेस मे जिस के सभापति भारतपितामह दादा भाई नौरोजी बनाये गये थे।

कांग्रेस की स्मृति मुझे उन सब वर्षों और स्थितियों की याद दिलाती है, जिनके बीच में हम लोगों ने अपने प्रयत्नों द्वारा देश को ऊपर उठाने के लिए कोशिश की थी। साथ ही उन सब प्रस्तावों और प्रश्नों के सम्बन्ध में भी स्मरण आता है जिनमें एक प्रस्ताव भारतीय जातियों के सम्बन्ध में था, जिस का उल्लेख किया जा चुका है।

एक और महत्वपूर्ण विषय है । वह हमारे कार्य-क्रम में हो जाने वाले परिवर्तन का विषय है। सन् १८८५ में जब हम लोगों ने कार्य आरम्भ किया था तब हम लोग उस वक्त के शासन-कार्य चलाने वालों में बड़ा विश्वास और भक्ति रखते थे। हम लोगों ने प्रार्थनाओं और विनतियों के साथ भीख मांगते हुए कार्य आरम्भ किया था।

गत ३० वर्षों के बीच में प्रस्तावों के बाद प्रस्ताव पास किये गये, उनका लेखा जिसे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, यह प्रकट करता है कि किसी एक समय में भारत-निवासियों की शासकों पर कितनी बडी श्रद्धा थी, उनकी देश के शासन को अच्छे ढंग पर लाने के लिए कदम बकदम बढ़ने की कैसी इच्छा थी, यद्यपि यह खेद की बात है कि उस की तरफ बड़ी धीमी चाल से बढना पडता था। यह तीस वर्ष का लेखा हमें बतलाता है कि हम एक सुधार के बाद दूसरा सुधार मांगते रहे, एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि हम लोग इन वर्षों में लगातार उन्हें मांगते रहे। यह ३० वर्ष का अनुभव है, जिस के कारण हम लोगों के हृदयों में अब यह विश्वास जम गया है कि जिन के हाथों में शासन का काम है, वे तथा सिविल सर्विस के अधिकारी एवं ब्रिटिश पार्लमेंट के सदस्य तक विवेक तथा न्याय की पुकार के सुनने में असफल रहे और बुरी तरह असफल रहे! मुझे ऐसा कहते अत्यन्त खेद होता है। मुझे प्रसन्नता होती यदि कृतज्ञता के साथ मैं यह कहने पाता कि उन्हों ने महत्व-शालिनी ब्रिटिश जाति के पुरुषों की भांति हमारी मांगों को सुना और उन पर ध्यान दिया। कुछ छोटे २ मामलों में उन्होंने ध्यान दिया है। उस के लिए हम सब कृतज्ञ [illegible]न्तु समस्त महत्वपूर्ण मामलों की या तो पुकार

नहीं सुनी गई अथवा फिर अत्यन्त विलम्ब किया गया। फल इस का यह हुआ कि हम लोगों को विश्वास हो गया कि अपने देश के शासन में जब तक निश्चय रूप से हमारा हाथ न होगा, तब तक उस बढ़ती की सम्भावना नहीं की जा सकती जिस की प्राप्ति प्रत्येक सभ्य जन-समूह का जन्म-स्वत्व है। हमारी कार्यवाही के लेखे में बहुत से प्रस्ताव,न्याय कराने के सम्बन्ध में पड़े है, जैसे कि न्याय और शासन विभागों का पृथक्करण, इसी के साथ प्रति वर्ष दोहराई जाने वाली यह माग भी है कि हमें कुछ शिक्षा दी, जाय। हमारे लेखे में यह बात सन्निहित है कि यद्यपि हमने प्रारम्भिक अनिवार्य शिक्षा-प्रचार की मांग उठाई परन्तु उसके सम्बन्ध में अत्यन्त हतोत्साह करने वाली और निराशा-जनक कार्यवाही की गई। कौंसिल के नव सगठित होने हुए भी, जब स्व० मि० गोखले ने प्रारम्भिक अनिवार्य शिक्षा बिल पेश किया तो सरकारी मेम्बरों की अधिक संख्या ने,जिन का काम कौंसिल में बैठ कर प्रजा-प्रतिनिधियों के प्रस्तावों का विरोध करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं, उसे रद्द करवा दिया। इस के साथ ही उपर्युक्त विश्वास लाने के लिए और कौन २ सी घटनायें हुई? हम जानते है कि कुछ वर्षों के पूर्व रूस में प्रजा-शासन नहीं था, परन्तु जापान से परास्त हो जाने के पश्चात् रूस की आखें खुली और उसे यह समझ पड़ा कि वर्तमान सभ्यता की कौन २ सी सामग्रियों की उसे आवश्यकता है। १९०३ में, जो पहिली डूमा (प्रजा-सभा) की बैठक हुई उस में यह प्रस्ताव पास हुआ कि जनता को राष्ट्रीयता की ओर ले जाने के लिए सार्वजनिक शिक्षा का अनिवार्य कर दिया जाना परमावश्यक है। इस की पूर्ति के लिए १६ वर्ष का समय निश्चित किया गया, अर्थात् यह समझा गया कि

रक्खा है उन्हें हमारी सब से बड़ी मांग न समझ बैठना चाहिए। वे केवल हमारी सब से छोटी परम आवश्यकता को प्रकट करते हैं, इस के बारे में ज़रा भी भ्रम में पड़ने की जरूरत नहीं है। हमारे कुछ मित्र हमें यह कह कर साव-धान करने की कोशिश में लगे हुए हैं कि धीरे २ बढ़ना चाहिए। हम लोग तीस वर्ष तक बड़ी सावधानी से धीरे २ बढते आये है। अतः सिविल सर्विस के किसी व्यक्ति अथवा पार्लामेंट के किसी सदस्य को यह कहने की मजाज़ नहीं रही कि भारतवासी बहुत बड़े सुधार चाहते हैं और लम्बी उछाल मारना चाहते हैं। हम लम्बी उछाल मारना नहीं चाहते, ऐसी कुछ परिस्थितियां ही उपस्थित हैं जो इसका स्वय निश्चय कर देती हैं कि क्या जरूरी है और क्या नहीं। हर एक मनुष्य का हक़ है कि अपने पर वह स्वयं शासन करे। अपने हाथों से होने वाले शासन से बढ़ कर कोई शासन नहीं। जब कि संसार के शेष सभ्य भाग में यह स्वीकार किया जाता है तब कौन से तर्क और कारण हो सकते हैं जो हमें उन कुछ आदमियों के शासन में सन्तुष्ट रहने के लिए मजबूर करें जिन्हें कुछ भी पूर्व-ज्ञान, और इतिहास से परिचय नहीं, जो सिर्फ बड़ी २ तनख्वाहों को मांगने और अपने समय को हमारे देश की सुनहली धूप में काटने के लिए आते हैं? और, यह हमें कैसे विश्वास हो सकता कि वे हमारे देश का शासन हमारी इच्छानुसार कर सकेंगे? उनके शासन-सम्बन्धी ढगों पर आपत्तियां उठाई गईं पर वे सब की सब एक २ कर के अस्वीकृत कर दी गईं। हम अब भारतीय जनता को फिर नये सिरे से उनके उठाने के लिए रोक रखना नहीं चाहते। हम लोगों ने अब जिन पगों को बढाना

आशा है कि आप लोग इसके लिए काम करने में कुछ उठा न रक्खेंगे। आपके ऐसा करने पर यह कांग्रेस चिरस्मरणीय हो जायगी, जिस के साथ यह भी निश्चय है कि इस कार्य के सफल हो जाने से हमारे सभापति भी अमर हो जांयगे।

भारतीय मांग।

२१ जनवरी १९१७ को मद्रास में मान० मालवीय जी ने यह ओजपूर्ण वक्तृता दी:—

सज्जनो, वर्तमान समय में आप देश की स्थिति से अभिज्ञ है। जिस साम्राज्य के अन्तर्गत हम लोग रहते हैं, वह इस समय तक वर्तमान ऐतिहासिक तथा संहारकारी महायुद्ध में सम्मिलित है। स्वाधीनता और सत्यता के लिए वह अपना भीषण पराक्रम प्रकट कर रहा है। मेरा विश्वास है कि इस समय में हम सब का सब से पहिला कर्त्तव्य यही है कि इस युद्ध को सफल बनाने के लिए अपनी शक्ति भर सहायता करें। यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि भारत-निवासी इस समय अपने उचित कर्त्तव्य से डिगे नहीं हैं। जब से युद्ध की घोषणा का समाचार इस देश में पहुचा है, तभी से हमारे राजा-महाराजाओं तथा देश-निवासियों ने साम्राज्य का श्रद्धा सहित सहायता करने में निरन्तर उत्साह दिखलाया है। मेरा विश्वास है कि मै यह बात सारे देश की तरफ से कह रहा हू कि जबतक इस युद्ध की समाप्ति नहीं होती तबतक भारत-निवासी इंगलैंड की इस कठिन परीक्षा के मार्मिक अवसर पर श्रद्धा-सहित अपने कर्त्तव्य पर दृढ रहेंगे और मुझे उम्मेद है कि हम सब को यह कहते आनन्द होगा कि छोटे २ राष्ट्रों की

स्वाधीनता की रक्षा और न्याय की सत्यता के लिए सफलता के साथ लड़ चुकने पर इंगलैंड और अधिक तथा विशेष गौरव प्राप्त करके इस संकट से उबरेगा।

स्थिति के इस रूप से सभी सम्मत होंगे, मेरा ऐसा विश्वास है। परन्तु बात एक और है। अब ब्रिटिश साम्राज्य भर के लोगों के विचारों में परिवर्तन हो गया है, लोगों का ऐसा ख्याल है कि वर्तमान परिस्थिति छोटे २ देशों के लिए एक मार्मिक प्रश्न है, अस्तित्व और अनस्तित्व का एक धमका है। बड़े से बड़े देशों के लिए भी यह कठिन समस्या है कि जब तक वे अपना फिर से सविस्तर और ढंग से संगठन नहीं कर लेते तब तक उन का भविष्य के लिए स्थान सुनिश्चित नहीं है। ब्रिटिश साम्राज्य और इंगलैंड के बड़े से बड़े राजनीतिज्ञ के सिर में साम्राज्य के नव संगठन का प्रश्न चक्कर खा रहा है। लेकिन हम भारतीयों को अभी और कुछ दिन चुप रहने की सलाह दी जाती है। हमारे हितैषी और अनेक छिद्रान्वेषक युद्ध के समय और उस के पश्चात् किसी प्रश्न के न उठाने का सदुपदेश देने से बाज़ नहीं आते। यदि इस युद्ध में हमारे भारतीय भाई अपने कर्त्तव्य का पालन न करते होते तो शायद ऐसी बातों का कुछ प्रभाव भी पड़ता, किन्तु जब हम लोग समय की गति के अनुसार ही काम कर रहे हैं, तब मैं नहीं जानता कि हमारा विरोध क्यों किया जा रहा है। हम भी ऊंचा नीचा और इधर उधर देखते हुए इन बातों पर ध्यान दे रहे हैं, जिस से हमारे भविष्य पर किसी प्रकार का धक्का न लगने पावे। हमें तो चुप्पी साधने की सलाह दी जा[illegible], परन्तु इंगलैंड के निवासी स्वयं इस नेक सलाह पर [illegible] दिखलाई नहीं देते। जब युद्ध-सम्बन्धी अन्तरङ्ग

सभायें युद्ध को जोर-शोर से चलाने के उपाय सोच रही हैं, तब भी इंगलैंड के निवासी अपने स्वत्वों का पूरा ख़्याल रक्खे हुए हैं। और साम्राज्य को अधिक सविस्तर और मज़बूत बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं। आप लोग जानते हैं कि अभी एक युद्ध-सम्बन्धी सरकारी कान्फ्रेंस हुई थी। भारतवर्ष, इंगलैंड और सारे साम्राज्य के व्यापार-प्रश्न पर भी ध्यान दिया गया था। शासन-सम्बन्धी बातों में उपनिवेशों को बहुत पहिले से ही यह बुलावा मिल चुका है कि साम्राज्य-शासन में वे हाथ बटावें। उपनिवेशों के मन्त्री निमन्त्रित किये गये हैं, और इंगलैंड-स्थित मन्त्रियों से उन की लिखा-पढ़ी जारी है। सिर्फ इतना ही नहीं, हम लोगों की आंखों में धूल झोंकी जा रही है. हम से यह तक छिपाया जा रहा है कि लार्ड हार्डिङ्ग ने युद्ध के पश्चात् भारत के सुधारों का जो खरीता भारत-मंत्री के पास भेजा है, उस में क्या है। समाचारपत्रों में यह बात प्रकट मात्र की गई है कि वर्तमान वायसराय (लार्ड चेम्सफोर्ड) ने भी सुधारों का एक खरीता भेजा है। हमें यह भी विदित है कि कुछ लोग जो यद्यपि इस देश से सम्बन्ध नहीं रखते, बहुत दिनों से इस बात के उद्योग में लगे हुए हैं कि साम्राज्य का संगठन किस प्रकार किया जाय। आप जानते हैं कि 'राउन्ड टेबिल' क्या है ? (धिक्कार २ की गूंज) उन्हें धिक्कारणा मत दीजिये। वे अपनी सूझ-बूझ के अनुसार अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं। हमें भी अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए। ये सज्जन इस राय पर पहुंचे हैं और बहुत से अफसर भी इस से सहमत हैं कि जब तक उपनिवेश और भारत मिल कर साम्राज्य की सहायता न करेगा तब तक वह भविष्य में खड़ा नहीं रह सकता और उसे संकटों का सामना करना पड़ेगा।

हूं कि इंगलैंड और भारत के इस मामले में सहमत होने के निमित्त कैसी २ कारगुजारियां की गई है और की जा रही हैं, जिन का प्रभाव भारत और इंगलैंड पर विना पडे नहीं रह सकता। मैं अपने योरोपियन मित्रों, सरकारी और गैर-सरकारी मेम्बरों तथा विशेषतया उन सरकारी आदमियों से, जो यह समझते हैं युद्ध के पश्चात् ये मामलात साम्राज्य की दृष्टि से सरकार के ध्यान देने लायक है और जिन पर पहिले भी कई वार सरकारी अफसरों द्वारा वाद-विवाद हो चुका है, यह प्रश्न पूंछता हूं कि यदि मामला ऐसाही है तो फिर आप लोगों को इस कसीदे के काढने की जरूरत क्यों पडी? भारत-निवासी भी ऐसा विचार करने लगे हैं कि इस प्रश्न को भूल जाना और समय वढाने का दिलासा दिया जाना कोरी वेइन्साफी है।

हमारे विरोधी हम से चुपचाप रहने की वात कहते हैं। लार्ड सिडनहम जैसे महोदय ने 'नाइनटीन्थ सेंचुरी' में दो लेख छपाये हैं, उन्होंने व्यवस्थापक कौंसिल के चुने हुए १६ मेम्बरों के सुधार प्रस्तावों को छिन्न भिन्न करने की कोशिश की है। ('लज्जा' २ ध्वनि)। प्यारे मित्रो, मैं आप से विनयपूर्वक कहता हूं कि आप उन्हें मत धिक्कारिये, वास्तव में लज्जा की वात हमारे लिए है यदि हम लोग उन्हें तथा उनके से लोगों को अपनी कारगुजारियों में सफल हो जाने दें। (हर्ष ध्वनि)। लार्ड सिडनहम अपने नम्र शब्दों में कहते है कि वे भारत-हितैषी हैं, वे भारत के हित की वहुत चिन्ता रखते हैं। उनका निश्चय है कि यदि ये सुधार-मन्तव्य रद्द न कर दिये जांयगे तो खतरा है। इतना ही नहीं, अगर ऐसा न हुआ तो वडे भारी उपद्रव के उठ खडे होने की भी सम्भावना है। अव इस दशा में हम

लार्ड सिडनहम तथा उनके, जैसे लोगों से कह दें कि वे जो कुछ कहते हैं हम उसे नहीं चाहते और चाहते भी हैं। मतलब उनका कहना है कि जर्मन लोग पूर्वीय राज्यों की प्राप्ति के लिए पूरी कोशिश में लगे हुए हैं और भारत का सारा भविष्य दांव पर लगा हुआ है। कुटिल राजनीतिज्ञों ने जिनकी गणना करोड़ों आदमियों में कुछ सहस्र मात्र है, यह अच्छा अवसर ताका है। यह कौंसिल के मेम्बरों का अपराध नहीं है, वरन् अपराधी है स्वयं सरकार जो मेम्बरों के अधिकारों को बढा दे। पर लार्ड महोदय के 'भारत सरकार के अधिकारों को छीन लेना' इन शब्दों पर विचार कीजिए। इस से बढ़कर झूठी बात अभी तक नहीं हुई थी। हमने भारत सरकार से उसके अधिकार छीनने का विचार भी कभी नहीं किया। हमने प्रयत्न किया है इस बात का कि साम्राज्य-सगठन में हमारी भी आवाज़ बलंद रहे। (सुनो २) बड़ी कौंसिल के १९ ग़ैर-सरकारी मेम्बरों ने जिस मसौदे को तैयार किया है, जो, सुधार उसमें मांगे गये हैं, वही सुधार कांग्रेस और मुसलिम लीग की स्कीम में भी मांगे गये हैं। सुधारों की स्कीम पूर्ण रूप से देश की जनता के सामने उपस्थित भी है। समस्त भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी और मुसलिम लीग कमेटी की सम्मिलित स्कीम में वे सुधार रक्खे गये हैं और लखनऊ वाले अधिवेशनों में स्वीकृत भी किये जा चुके हैं। आप सब लोग सुधारों की प्रस्तावना में देखेंगे कि प्राचीन सभ्यता को परम्परागत अपना अधिकार समझने वाले भारतीयों ने साम्राज्य और शासन के सम्बन्ध में कितनी योग्यता प्रकट की है। साथ ही, ब्रिटिश शासन के गत १०० वर्षों में शिक्षा तथा सार्वजनिक उत्थान के काम में कितनी उन्नति की है। वर्त-

मान शासन-सगठन द्वारा लोगों की उच्च अभिलाषायें उचित ढंग से पूरी नहीं होने पातीं, साथही उक्त शासन-प्रणाली वर्तमान परिस्थिति और आवश्यकताओं के लिहाज से उचित भी नहीं है, इन्हीं बातों को विचार कर कांग्रेस के यह कहने में कोई रुकावट नहीं है कि अब वह समय आ-गया है जब सम्राट् महोदय को यह घोषणा कर देनी चाहिए कि ब्रिटिश नीति के मुताबिक भारत शीघ्र ही स्वराज्य पाने के योग्य है। (हर्ष ध्वनि)। भारत सरकार का अधिकार लेने के विषय में हम ने कब और क्या कहा है? कांग्रेस फिर कहती है कि स्वराज्य की ओर ले जाने वाले सुधारों को मंजूरी के लिए भी ठीक २ और मुख्य २ उपायों का करना ज़रूरी है। कांग्रेस-लीग की सम्मिलित स्कीम का सारांश यह है कि स्वायत्त-शासन प्राप्ति के लिए उपाय किये जांय। उपनिवेशों के आधार पर वह स्वराज्य या स्वायत्त-शासन नही है। स्कीम में हम लोगों ने स्पष्ट कर दिया है कि हम लोग यह नहीं चाहते कि भारत का पूरी तरह शासन हमीं करें, हम चाहते हैं यह कि उस के लिए उपाय किया जाय।

प्रान्तिक और वायसराय को कार्यकारिणी कौंसिलों में आधे भारतीय मेम्बर हों। वायसराय सभापति हों। उन्हें किसी चीज के नामंजूर करने का भी अधिकार हो। वे अपनी इच्छानुसार चाहे अंग्रेज़ मेम्बरों की ओर राय दें अथवा भारतीय मेम्बरों की ओर। अगर कोई प्रस्ताव उठाया जाय, अगर वे चाहें तो उसे अस्वीकृत भी कर दें। आप जानते होंगे कि सरकार ने भार-तीयों की योग्यता स्वीकार की है और कार्य-कारिणी लों में भी स्थान दिया है। प्रान्तिक और वायसराय

की कार्यकारिणी कौंसिलों मे कम से कम एक मेम्बर अवश्य रहता है। हमारा भी ऐसा ही कहना है। हम अपने मित्रों के अनुभव से यह समझते हैं कि केवल एक मेम्बर की कुछ क़दर नहीं हो सकती। वह भारतीय स्थिति को अपनी इच्छानुसार प्रभावजनक रूप में पेश नहीं कर सकता। उसके विरोधी सहयोगी सख्या मे उस से अधिक रहते है। इस लिए मेरा अनुभव है कि यदि इन कौंसिलों मे आधे भारतीय मेम्बर रहें तो कम से कम यह बात होगी कि स्वीकृति के लिए अपनी दशा को तो प्रकट कर सकेंगे। साम्राज्य-सगठन में हम कोई परिवर्तन नहीं चाहते। किसी भी वर्तमान शासन-प्रथा को हम अलग नहीं किया चाहते। और न उस की जगह पर किसी नई प्रथा को ही प्रचलित किया चाहते हैं। जो कुछ हमारी इच्छा है वह यह है कि सिविल सर्विस के कुछ आदमी कार्यकारिणी कौंसिल के लिए तो चुन लिए जाया करें और सख्या में उन के बराबर ही अनुभव-प्राप्त भारतीय मेम्बर भी ले लिये जाया करें, क्योंकि कार्यकारिणी कौंसिलें हमारी रक्षा आदि के सभी मामलों की पूरी निगहबानी रखती है। क्या कोई यह कहेगा कि यह भारत-सरकार से अधिकारों का छीनना है? ('नहीं-नहीं' की ध्वनि) दूसरी बड़ी आवश्यकता क्या है, इस बात के पहिले यह कह देना भी जरूरी है कि किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए इस बात के विरुद्ध कुछ कहना अन्याय है। चाहे कोई इस बात को माने या न माने। सुधार होगा, चाहे उस में शीघ्रता हो या देर लगे। हमारी आशा है और हम यह चाहते हैं कि वह शीघ्र हो। अगर यह देर से भी हो तो भी यह कोई ऐसी बात नहीं है कि इगलैंड और भारत से सम्बन्ध

रखने वालों के इस प्रस्ताव से दिल दहल जांय। सिविल सर्विस में इस समय कुछ ऐसे सज्जन भी हैं जो अपने को सब से उत्तम कहने में ही अपनी शान समझते हैं, उन में से बहुतों ने कार्यकारिणी कौंसिलों में जा कर भी अच्छाई का परिचय नहीं दिया। हम यह भी मानते हैं कि हम में उतने ही योग्य अनुभवी और बुद्धिमान व्यक्ति हैं जो देश के सम्बन्ध में उनकी अपेक्षा अधिक अच्छी बातें सुझा सकते हैं।

हमारे सुधारों की स्कीम में जो खास बात है वह यह है कि व्यवस्थापक कौंसिल के प्रस्ताव कार्यकारिणी गवर्नमेंट के अधीन हैं जब तक कि वायसराय उन्हें अस्वीकृत न कर दें। या फिर यह कि, अगर उक्त प्रस्ताव पास न किया जाय तो उस पर कम से कम एक वर्ष तक कार्यवाही न की जायगी, इस प्रकार के प्रस्ताव करने का हमारा यह अभिप्राय है कि कौंसिल में कई वर्षों के अनुभव ने इस प्रकार के प्रस्तावों की जरूरत हम पर प्रकट कर दी है। बड़ी कौंसिल में हम लोगों ने बहुत से प्रस्ताव पेश किये परन्तु वे जब तक स्वीकृत नहीं किये गये तब तक गवर्नमेंट ने उन्हे आवश्यक नहीं समझा! बाक़ी सब अस्वीकृत हो गये। हम अच्छी तरह जानते है कि यह दशा अब असह्य है। हमारा विश्वास है कि कौंसिलो के योरोपियन मेम्बरों की बनिस्बत हम लोग देश तथा देश निवासियों के हित के लिए कम चिन्तित नहीं हैं, परन्तु बात यह है कि व्यवस्थापक कौंसिल के प्रस्ताव मंजूर किये जाने चाहिए अथवा नहीं, यह केवल वे ही निश्चय करते है। कार्यकारिणी कौंसिल के मेम्बरों तक यह बात नहीं पहुंचने पाती।

सेक्रेटरियों तथा इन मेम्बरों (योरोपियन मेम्बरों) द्वारा जो कुछ तय हो जाय वही वाकी मेम्बरों को भी सिर-माथे रखना पड़ता है। ऐसी तो हालत है, और फल इसका यह होता है कि सुधार-मूलक प्रस्तावों के सम्बन्ध में भी हम लोगों को बहुत करके असफलता ही हाथ आती है। हम समझते हैं कि अब वह वक्त आ पहुंचा है जब देश के दशा-सुधार और उसकी उन्नति के सम्बन्ध में, सरकारी अफसरों की आवाज़ की बनिस्बत, हम लोगों की आवाज़ अधिक ऊंची रहा करे। हमारा विश्वास है कि इस प्रकार हमें कहीं अधिक सफलता प्राप्त हुआ करेगी। क्या कारण है कि हमें इतनी स्पष्ट बात कहनी पड़ती है? मसलन हम शिक्षा की उन्नति चाहते हैं। हमारे भाई स्व० गोखले ने एक बिल इस आशय का पेश किया था कि देश के लिए शिक्षा अनिवार्य और आवश्यक बना दी जाय। खेद की बात है कि उक्त बिल पास नहीं हुआ। यद्यपि सरकार ने बहुत से वादे किये थे परन्तु आज तक आरम्भिक शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ भी अधिक उन्नति नहीं हुई है। हमारा निश्चय है कि आरम्भिक शिक्षा में तब तक कुछ भी उन्नति नहीं हो सकती जब तक हम स्वयं न इसकी नीति का सचालन करें और सरकार के सामने इसके लिए ऊंची आवाज़ न उठावें। यह सिर्फ एक उदाहरण मात्र है। कोडियों ऐसे उदाहरण मौजूद हैं। पिछली तीस कांग्रेसों में उपस्थित किये गये प्रस्तावों में से अगर बहुत ज़्यादा नहीं तो एक २ उदाहरण से तो इसकी पुष्टि हुई ही है। अब शर्तबन्द कुलियों का ही प्रश्न लीजिए। हम लोग बहुत दिनों से पुकार मचा रहे हैं कि शर्तबन्द कुलीगीरी को उठा लीजिए। परन्तु अभी तक वह जिन्दा है। सरकार इसे स्वीकार भी कर चुकी है कि

यह प्रथा अवश्य बन्द करदी जानी चाहिए परन्तु अब तक उसका टंटा तमाम नही हुआ। हम नहीं जानते कि इस प्रथा की जिन्दगी कब तक खत्म होगी। साम्राज्य-शासन में अगर प्रजा के प्रतिनिधियों की कुछ चलता होती तो अब तक कुलीगीरी कभी की मर गई होती। अब अदालती और माली अधिकारों की भिन्नता पर ध्यान दीजिए। सविस्तर ३१ वर्ष बीत गये पर अब भी वही हाल है। इसी लिए कहना पड़ता है कि जब तक शासन-प्रणाली ही म पूरा परिवर्तन न किया जायगा तब तक शायद ही कोई अभिलापा पूरी हो सके। यह कहते मुझे खेद होता है और सरकार को गुनाहगार ठहराने में भी मुझे आनन्द नहीं मिलता कि उसने प्रजाप्र-तिनिधियों की सम्मति के अनुसार सर्वसाधारण की इच्छा के विरुद्ध काम करने के उदाहरणों के पश्चात् उदाहरण दिये हैं। ऐसे प्रस्ताव नहीं, वरन् अनेक उदाहरण मौजूद हैं, इसी लिए तो हम कहते हैं कि यदि प्रतिनिधियों द्वारा सुधार-मूलक कोई प्रस्ताव व्यवस्थापक कौंसिल में रक्खा गया है तो पहिले तो वह कार्यकारिणी सरकार पर छोड़ दिया जायगा और अन्त में उठा लिया जायगा।

हम भारत सरकार के अधिकार नहीं छीनना चाहते। हमने यह शर्त रक्खी है कि यदि वायसराय किसी प्रस्ताव को पास करने योग्य नहीं समझते, तो वह उसे खारिज कर सकते हैं। परन्तु हित की दृष्टि से अन्य किसी अभिप्राय से नहीं। हम इस बात को कह देना भी उचित समझते है कि यदि कोई प्रस्ताव एक साल बाद फिर पास कर दिया गया तो उसके अनुसार कार्यवाही

होनी चाहिए । इस शर्त का कारण यह है कि सरकार के पक्षपातियों की ऐसी मर्ज़ी है कि सरकार, पर दोषारोपण न करना चाहिए। मैं भी इस बात से रज़ामन्द हूं, परन्तु सरकार के इन मेम्बरों और पक्षपातियों को हम पर भी कोई दोष न मढ़ना चाहिए। जब कार्यकारिणी सरकार को ऐसे प्रस्तावों को ठीक २ रीति से स्वीकृति करने में आना-कानी होती है तभी ऐसी बातें पिंड छुड़ाने के लिए उठाई जाती हैं। हम (मेम्बरों के लिए) एक वर्ष की अवधि और बढ़ाने के लिए कहते हैं। परन्तु इस के साथ २ यह बात भी है कि यदि सरकार की ओर से गैर-वाजिबी समझ कर यह रद्द कर दिया गया, परन्तु व्यवस्थापक कौंसिल के मेम्बर सर्वसाधारण के हित को समझते हुए इसे फिर से उठाते हैं तो सरकार को भी उचित है कि योग्यता और न्याय के साथ उनकी इच्छा पूर्ण करे। हम समझते हैं कि इस प्रस्ताव से जनता और सरकार, दोनों ही की भलाई है। इस से जल्दबाजी का राग बन्द हो जायगा, और उन अच्छे भावी उपायों की ठीक २ रक्षा भी हो सकेगी, जिनको सरकार सदैव के लिए अथवा कुछ समय के लिए अस्वीकृत कर देती है। क्या इस बात से सरकार के अधिकार छीने जाने की बात प्रकट होती है ?

उपर्युक्त दो मुख्य बातें हैं। तीसरी बात भी समान महत्व की ही है। यह बात आर्थिक बल की है। अब तक थोड़े से धन-सम्बन्धी प्रस्ताव भी सरकारी अफसरों की इच्छा के बिना पास नहीं हो पाते हैं। मुझे उसका व्यक्तिगत अनुभव है। यह केवल परीक्षा मात्र की बात थी कि हम लोगों के वास्ते सरकार की इच्छा बिना किसी प्रस्ताव का पास

करा सकना मुमकिन है अथवा नहीं, यद्यपि यह विदित था कि उचित होने के कारण सरकार इसे मजबूर होकर मंजूर करेगी। एक वर्ष हुआ जब मैंने यह प्रस्ताव किया था कि एक खर्चे से १२ हज़ार रुपये निकाल कर देशी व्यापार की उन्नति के खाते में डाल दिये जांय। आप को कदाचित् विश्वास न होगा, पर वास्तव में सरकार ने यह बात मंजूर नहीं की! मैंने इस के लिए बहुत कुछ जोर दिया। मैंने पीछा नहीं छोडा। पर सरकारी दल के लोगों ने इसका विरोध किया, बस, वह रद्द हो गया! बारह हज़ार रुपये एक खाते से निकाल कर गवर्नमेंट ने दूसरे खाते में नहीं दिये, इस लिए कि सरकारी मेम्बरों की राय में यह उचित नहीं ठहरा। और फिर ये रुपये मांगे गये थे देशी व्यापार की उन्नति के लिए, किसी भयानक और हानिकारक काम के लिए नहीं। कितने ही प्रस्तावों की यह दशा हुई। अपनी भीतरी उन्नति के बारे में मैं तीस वर्षों से देख रहा हूं कि कार्यकारिणी सरकार पर हमारा कुछ भी अधिकार नहीं है। और अब हमको स्पष्टतः विदित हो गया है कि हमारी उन्नति की गति अत्यन्त धीमी है।

हमारी आँखों के सामने एक मिसाल यह भी उपस्थित है कि जितने समय में हमने इतनी थोडी उन्नति की है, उतने ही समय में पूर्वीय पडोसी जापान ने कितनी अधिक उन्नति कर ली है। उस की १८६८ की दशा से और अब की दशा में इतना बडा परिवर्तन हो गया है कि प्रत्येक देश उसे मित्र कह सकने में अपना गौरव [समझ]ता है। अन्य देशों की सभ्यता के सम्मुख उसने ऐसा [स्था]न पा लिया है कि उस की मित्रता बडी ठोस

और स्थायी मानी जाती है। उसे यह अवस्था किस प्रकार प्राप्त हुई? यह अवस्था उसे प्राप्त हुई है जीवन के हर तरफ उन्नति का ध्यान रखने से। यह अवस्था का उपस्थित कर देने वाला उन जापानी राजनीतिज्ञों के कार्यों का फल है जिन्हें साम्राज्य की ओर से जनता की प्रत्येक भलाई कर सकने का काम सौंप दिया गया था। सज्जनो, हम जो कुछ चाहते है, वह यह है। हम लोग बादशाह को सम्राट् मानते हैं। जब भारत का शासन कम्पनी के कब्जे से निकल कर सरकार के हाथों में आया तब स्व० विक्टोरिया को महारानी माना था। सम्राट् के प्रति भी हम ने अनकों वार अपनी अद्वितीय राजभक्ति और सहानुभूति प्रकट की है। हम समझते हैं कि इंगलैंड के बादशाह की जाज्वल्यमान छत्र-छाया में रहने वाली भारतीय जनता को भी उतनी ही उन्नति करनी चाहिए जितनी कि जापानियों ने अपने देश में की है। हमारा विश्वास है कि, यह हमारा हक है कि हम उन हाकिमों से जो किसी भी रूप में सरकारी काम के प्रतिनिधि है, यह कह दें कि हम लोग भी कौंसिलों में लिए जांय और उन्नति के प्रत्येक मार्ग पर बढ़ कर इतनी शीघ्र गति से आत्मोन्नति करें कि जितनी जापान ने गत ३० या ४० वर्षों में कर ली है। हम ऐसा करना अपना हक़ समझते हैं और यह भी विश्वास रखते हैं कि हमारी उन्नति उस हालत में अवश्य हो जायगी अगर हमारे उद्योगों, कार्यों का और एकता का आदर किया जाय और हमारी दशा पर अधिक ग़ौर किया जाय। साथ ही मैं आप से यह भी कहता हूं कि थोड़ी देर के लिए आप यह समझ लीजिए कि आप लोगों के बजाय मैं अंग्रेज श्रोताओं से कह रहा हूँ। भारत की शिक्षित जनता

के विचारों को भी अंग्रेज़ों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। मैं चाहता हूं कि वे यह समझ लें कि हम प्राचीन सभ्यता की संतान हैं, व्यतीतकाल की जाज्वल्यमान् सभ्यता हमारी बपौती है और व्यतीतकाल की भांति आगामी काल के लिए भी हम गर्व किया चाहते हैं। साथ ही साथ, उन्हें यह भी परिज्ञात हो जाना चाहिए कि अंग्रेजी सभ्यता और अंग्रेजों के सहवास में रह कर—उन के साहित्य और विशेषतया उन के विश्व-प्रशंसित राजनैतिक साहित्य को पढ़ कर—अंग्रेज लेखकों द्वारा कथित जातीयता के प्रेम का अध्ययन कर हम ने उनके गुणों को प्राप्त कर लिया है, जिसे वे नहीं जानते, पर वास्तव में मैं उन्हें यह बात परिज्ञात करा देना चाहता हूं। विदेशी जातियों के सम्बन्ध में हमारा विश्वास है कि संसार में अंग्रेज जाति को छोड़ कर अन्य कोई ऐसी जाति नहीं जिस के सम्बन्ध को हम स्वीकार करें। यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि अनेक दुर्गुणों के होते हुए भी अंग्रेज जाति में ऐसे गुण और विचार हैं जिसके लिए वह गर्व कर सकती है। इसी जाति के लोगों से आज कल की सभ्य जातियों ने सार्वजनिक शासन-प्रबन्ध सीखा है। इंगलैंड को इसका समस्त श्रेय है कि आज कल भी उसने मनुष्य मात्र की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर ओढ़ लिया है। इस लिए हमें कोई ऐसी आवश्यकता दृष्टिगत नहीं होती कि हम उस से अपना सम्बन्ध विच्छिन्न कर बैठें। हमारी इच्छा है कि उन के साथ हमारा सम्बन्ध दिन प्रति दिन आदरणीय और संतोष-जनक बना रहे। सब से अधिक ऊपर उठे हुए राज्य के सर्वश्रेष्ठ सम्राट् की प्रजा बने रहने का हमें गर्व है और हम [illegible]का लाभ भी उठाना चाहते हैं। हम अपने अंग्रेज [illegible]ों, के इस उत्साहपूर्ण कार्य में सहायता पहुंचाना

चाहते हैं कि वे हमारे देश की उन्नति करें और भारतीय जनता का ध्यान रक्खें। परन्तु इंगलैंड के साथ अपना सम्बन्ध अधिक आदरणीय बनाये रखने की इच्छा रखते हुए भी हम उन असुविधाओं को सहन नहीं कर सकते जो हमें भुगतनी पडती हैं। आप यह कहेंगे कि अपनी कमजोरी के कारण ही यह सब सहना पडता है। मेरा अभिप्राय मानसिक कमजोरी स है, न कि जंगलीपन और शारीरिक बल से। क्योंकि इस नाशकारी संग्राम के कारण जंगलीपन और शारीरिक बल तुच्छ समझा जाने लगा है। मैं मानसिक बल और विचार-बल के सम्बन्ध में कह रहा हूं और उसी के साथ मेरा यह भी कहना है कि भारत का शिक्षित समुदाय उन असुविधाओं को किसी हालत में भी सहने के लिए तैयार नहीं है जो उसे वर्तमान समय में सहनी पड रही हैं। इस लिए यह हमारा माना हुआ कर्तव्य है कि अपनी शक्ति के अनुसार हम हरेक मामले को समझें और नियमानुसार सरकार को और इंगलैंड के निवासियों को इन मामलों से सूचित करें, सुधार के लिए जोर डालें और देखें कि वे कहां तक किये जाते हैं।

जिसमें सुधारों का सारांश है, जिसे कांग्रेस और मुसलिम लीग ने पेश किया है वह क्या है? ज़्यादा न कह कर मैं संक्षेपमें कहूंगा कि यह कहा जाता है कि 'यदि भारत वासियों को स्वराज्य मिल गया तो सरकार के पास रह ही क्या जायगा? आप प्रधान होंगे और सब स्थानों पर आपका अधिकार रहेगा, परन्तु इसकी तो अभी हमें तैयारी करनी है। हम स्वराज्य अभी नहीं मांगते, अभी तो हम उस की

प्राप्ति के लिए उचित उपाय मात्र कर रहे हैं। अतएव इस महद्योग की तरफ आपका ध्यान आकर्षित किया गया है कि व्यवस्थापक कौंसिल को कोई अधिकार नहीं रहेगा कि वह सरकार के फौज़ी, पर-राष्ट्र सम्बन्धी, देशी मामलों तथा दूसरे देशों से युद्ध छेड़ने या मेल करने के कामों में बाधा डाल सके। होमरूल या स्वराज्य केवल उन शक्तियों का प्रयोग मात्र होगा, जिसे हम बिना किसी दूसरे देश से युद्ध या सन्धि किये ही कर सकते हैं। हमने जान बूझ कर इन बातों को अलग रक्खा है। क्या इससे सरकार के अधिकार छीनने की इच्छा ज़ाहिर होती है? फौजी मामलों का प्रबन्ध हम सरकार पर ही छोड़े देते हैं। हम देशी और विदेशी मामलों में भी हस्तक्षेप न करेंगे। यदि हमारे प्रस्ताव स्वीकृत किये गये तो देश के भीतरी मामलों पर ऐसा प्रभाव पड़ेगा जिसका सार्वजनिक उन्नति से सम्बन्ध रहेगा। इनके कारण सरकार के अधिकारों पर ठेस न पहुंचेगी, वायसराय के हाथ में और भी शक्तियां है, जिनके द्वारा वे किसी बात को रद्द भी कर सकते हैं। हम केवल इतना ही चाहते हैं कि स्वराज्य-प्राप्ति के लिए उपाय किये जांय। हम अभी स्वराज्य नहीं मांगते। हमारी इच्छा है कि हम स्वराज्य के योग्य बनें पर खेद की बात है कि अभी, इसी समय, हम उसके लिए तैयार नहीं हैं। हम उसे इसी क्षण नहीं मांगते। हमारे तर्क निराधार बातों पर नहीं है, वरन् उनका अभिप्राय हमारी बातों को ठीक २ रूप में प्रकट करने का है।

अर्थ-सम्बन्धी प्रस्तावों के बारे में हमारा कहना है [illegible]पके सब द्वार तथा व्यय की सब रकमें बजट के रूप [illegible]वस्थापक सभा में पास होने के लिए पेश की

जाया करें। हमने अपनी शर्तें दिखला दी हैं। फौज़ी और दूसरे मामलों से सम्बन्ध रखने वाले खर्चे से हमारा कुछ सरोकार नहीं और भारतीय, सिविल सर्विस में ऐसे आदरणीय और उदार तबियत के भी व्यक्ति हैं जो इस दशा में रहकर भारत से अनुचित लाभ उठा रहे हैं। भारतीय शासन-सम्बन्धी मामलों में उनकी ही चलती है और अपनी शक्ति तक वेतन बढाने के लिए उन्होंने ऐसे उपाय किये हैं जो वाजिबी नहीं थे। मेरा अभिप्राय बदले की पूर्ति के लिए भत्ता * लेने की बात से है, जिसे कोई भी आदमी कभी निर्दोष न बतलावेगा और जो भारतीय सिविल सर्विस के सम्बन्ध में सदा अनुचित कही जायगी। वर्तमान प्रथा के अनुसार सरकार बिना कुछ ब्योरे-वार वर्णन किये, बिना उचित निरीक्षण करवाये भिन्न २ खातों में स्वेच्छानुसार व्यय बढा सकती है, हम ऐसी ही बातों को उठा देना चाहते हैं।

पब्लिक सर्विस के अधिकारों के कारण भी भय की आशंका है, जिसके लिए धमकी भी दी गई है। आप को मालूम है कि कमीशन की रिपोर्ट प्रकट हो चुकी है, मेरी भांति बहुतों को आशंका थी कि रिपोर्ट इतनी खराब है कि सरकार उसे प्रकाशित नहीं करना चाहती और अन्त में वह बात ज्यों की त्यों निकली भी। इसके सम्बन्ध में नम्र शब्दों में कुछ कहना मेरी शक्ति के बाहर है। मैं समझता हूं कि कमीशन ने इंगलैंड और भारत के हित के साथ अन्याय किया है, उसने न्याय की हत्या की है। (सुनो २) उस ने भारतीय युवकों के हित पर ही छुरी नहीं फेरी है वरन्

* Exchange compensation allowance

उसने इंगलैंड के युवकों को भी यह बतला कर तुच्छ कहा है कि ये चलते-पुर्जे अंग्रेज युवक भारत के निकम्मे और कच्ची-पक्की योग्यता रखने वाले अंग्रेजी पढ़े युवकों का सामना नहीं कर सकते। इस दुर्भाग्य सिफारिश के लिए यह भी कारण है कि भारत और इंगलैंड में में एक साथ सिविल सर्विस की परीक्षायें न होनी चाहिए। सन् १८६० में एक कमेटी ने भारत-मंत्री से न्यायानुसार इस के लिए उचित प्रार्थना की, सन् १८३३ के एक्ट के मुताबिक यह प्रकट किया गया था कि भारत वासी भी अपनी योग्यता और शिक्षा के अनुसार सब नौकरियों पर नियुक्त किये जाया करेंगे। सन् १८५८ में घोषणा-पत्र ने इस इस बात को फिर कहा, और महारानी विक्टोरिया के भारत-शासन ले लेने के पश्चात् नियुक्त की गई अंग्रेजों की एक कमेटी ने भी यह स्वीकार कर लिया कि 'सिविल सर्विस की जो परीक्षायें भारत और इंगलैंड में एक साथ ही होंगी उन से भारत-निवासियों के साथ उचित न्याय हो सकने का द्वार निश्चित हो जायगा, अंग्रेज युवकों की भांति भारतीय युवकों को भी समान अवसर दिया जाया करेगा।' यह कभी बिलकुल बराबर न रहेगा क्योंकि अंग्रेज युवक अपनी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पढ़ा करेंगे और भारतीय युवक कठिन और दुस्तर विदेशी भाषा के माध्यम से। परन्तु यह ऐसा ही था जैसा कि उन्होंने विचारा, और इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं कि न्याय करने का यही सब से अच्छा उपाय था जिस का उन्होंने अवलम्बन किया। ब्रिटिश राज्य की साठ वर्षों की उन्नति और यूनी-वर्सिटियां स्थापित होने के पश्चात् तीन वर्षों में जब और कालेज नहीं थे, मिलटन, शेक्सपीयर, स्पेंसर

और मिल की रचनाओं का इतना अध्ययन नहीं हुआ जितना इन पिछले ६० वर्षों में हुआ। उस समय सहस्रों छात्र स्कूलों और कालजों में शिक्षा पाने के लिए नहीं दौड़ते थे और न आज कल की भांति इतना त्याग ही दिखलाते थे। सरकार की शिक्षा-प्रचार की इस नीति के ६० वर्षों के बाद भी कमीशन के अंग्रेज मेम्बरों ने फरमाया है कि अब भी इंगलैंड और भारत में सम-कालीन परीक्षाओं के होने का समय नहीं है। साथ ही उन्होंने यह भी सिफारिश की है कि भारत-निवासियों परीक्षा की सिविल सर्विस के कुछ पद की पूर्ति के लिए ही होना परीक्षा जरूरी है। इस मामले में हम किसी प्रकार की दया की आकांक्षा नहीं करते, हम बिना किसी बधन के स्पष्ट स्पर्धा चाहते हैं। हमारी आकांक्षा है कि चाहे हम न्यून ही क्यों न हों पर जो सूची बनाई जाय वह सम्मिलित सूची हो। उनकी इस सिफारिश के बारे में हम इसके अतिरिक्त और कह ही क्या सकते हैं कि वे चाहते हैं कि इसी बहाने अंग्रेज युवक अधिक सुविधा उठावें और भारतीय युवक हानि। मैं इस बात पर अधिक जोर नहीं डालूंगा क्योंकि बहुत से सचेष्ट समाचार पत्र इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाल चुके हैं। उन्होंने बड़े प्रभावशाली ढंग से इस विषय पर वादविवाद किया है। मुख्य बात जिस के कारण हम रो रहे हैं, वह यह है कि भारतीय सिविल सर्विस में वेतन और पेन्शन इतनी बढ़ी चढ़ी है कि वैसी अन्य किसी देश में नहीं। अत यह जरूरी है कि तनख्वाहें कम करने और देश का खर्च घटाने के लिए देशी ढग से कार्यवाही की जाय। पर दूसरी तरफ, कमीशन समाप्त होने के पूर्व ही ऐसे प्रस्ताव पास होते रहे हैं कि ये तनख्वाहें बढ़ाई जाय और पेंसन

जानते हैं कि इस संहारकारी महायुद्ध ने पहिले की सब बातों में परिवर्तन कर दिया है, और हमें अब प्रत्येक बात पर ग़ौर करने के लिए मजबूर कर दिया है। मि० लायड जार्ज ने 'युद्ध और इस के परिणाम' पर जो बातें कही हैं, उस से अब यही अवस्था बनी रहनी अत्यन्त हानिकर है। अब हम देखते हैं कि हमारे सिर पर वे आपत्तियां आ टकराने वाली है कि यदि सरकार ने अपनी सेना-सम्बन्धी नीति में परिवर्तन नहीं किया तो भारत को ही नहीं वरन् सारे साम्राज्य को बहुत बड़ी हानि सहनी पड़ेगी। सर नार्मन लाकयर ने कहा है कि यह भी शिक्षा का एक अंग है कि हरेक नवयुवक को सैनिक शिक्षा दी जाय। पश्चिम के बहुत से देशों में और खास कर के उन देशों में जहां इस का ठीक प्रयोग नहीं हुआ है वहां आज कल सेना में जब्रिया भर्ती का नियम चल पड़ा है। सैनिक-शिक्षा और क़वायद का काम अनिवार्य रक्खा गया है। यह धीरे २ परन्तु खेद के साथ स्वीकार किया जा रहा है कि बिना ज़ब्रिया भर्ती के काम नहीं चल सकता और इस बात की भी चर्चा उठी है कि भारत में रहने वाले योरोपियनों की भी ज़ब्रिया भर्ती कर ली जाय। मामला बड़ा नाज़ुक दिखलाई पड़ता है। हम इस की बहुत दिनों से शिकायत करते आये हैं कि आर्म्स ऐक्ट ने निरस्त्र रखने और सेना के ऊंचे पदों पर भारतीयों को नियुक्त न करने की नीति कड़ाई ही नहीं वरन् कोरा अन्याय है। क्या इस महासंग्राम के भीषण उपदेशों के नाम पर यह अन्याय किया जा रहा है? हमें ऐसा विश्वास नहीं पड़ता कि बात यही है, हम चाहते हैं कि सरकार इस बात को भली भांति जानले कि भारतीय इस बन्धन और अपमान को केवल अपनी

जनता सैनिक शिक्षा से वञ्चित रख कर अयोग्य रक्खी जाव। मैं अपने भारतीय भाइयों से ही नहीं, वरन् किसी भी छोटे से छोटे आदमी को यह कह कर दुखाना नहीं चाहता। किसी भी मनुष्य को या किसी भी विज्ञान-वेत्ता को इतनी शक्ति नहीं कि संसार के किसी भी जीव को वह पैदा कर सके और न यही उचित है कि कोई जीव मारा जाय। मनुष्य मात्र को इससे बचना चाहिए। प्रत्येक युद्ध दृष्टि से अनुचित और हेय है। हमें आशा है कि एक समय ऐसा आवेगा जब युद्ध होना बिल्कुल बन्द हो जायगा। परन्तु जब तक वह समय दूर है, जब तक पाशविक शक्तियों के द्वारा गरीबों और निर्बलों पर अत्याचार किया जाता है-कमजोर दबाये और स्वाधीनता के स्वत्वों से वंचित रक्खे जा सकते हैं—स्वाभाविक स्वतन्त्रता और ईश्वर-दत्त सुविधायें अपहृत की जा सकती हैं, तब तक यह परमावश्यक है कि ऐसे मार्मिक अवसर का सामना करने के लिए हरेक जाति के लोग शिक्षित किये जांय और तैयार किये जांय। जिस अवसर पर न्याय के ऊपर शक्ति की जीत होती जान पड़े, उस समय प्रत्येक जाति के वीर पुरुष का यह सगर्व कर्त्तव्य है कि वह श्रीकृष्ण और पाण्डवों की भांति सत्य का पक्ष सम्भालने के निमित्त लड़े। इस प्रकार युद्ध का करना धर्म-संगत है। हम चाहते हैं कि ऐसे अवसर के लिए हम भी तैयार रहें। इसी लिए हम जोर डालते हैं, प्रार्थना करते हैं कि सरकार आर्म्स ऐक्ट को ढीला कर दे अथवा तोड़ दे और इंगलैंड की भांति यहां भी वहां का सा नियम जारी कर दे, जिससे प्रत्येक सभ्य पुरुष लाइसेन्स देने पर हथियार रख सकता है। हमारी यह भी प्रार्थना है कि वालेन्टियरी सेना तैयार की जाय। आप लोगों ने सुना होगा कि देश में डकैत इधर उधर घूमा ही करते हैं और

महरानी के उत्तराधिकारियों को सदा अपना समझते रहे। इस लिए हम यह विशेष रूप से समझते हैं कि सरकार को देश की संतान के हित के लिए यथासाध्य सब कुछ करना चाहिए, और इसी के समर्थन में हम लार्ड सिडनहम के कुछ शब्द दुहरा देना चाहते हैं कि "भारतवर्ष में अंग्रेजी शासन तभी निर्दोष प्रमाणित हो सकता है जब अलग करने वाले छिद्रों को बन्द कर के वह देशनिवासियों की उन्नति करे।" मेरे और लार्ड सिडनहम के विचारों में इस विषय पर सहमति है। हम कहते हैं कि इस कार्य की सिद्धि के लिए स्वराज्य के बारे में प्रत्येक आवश्यक उपाय करना चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि लार्ड सिडनहम भी सेना में भारतीयों की नियुक्ति चाहते हैं, परन्तु खेद की बात तो यह है कि वे उन्हें कुछ शर्तों के बन्धनों में डाल कर निकम्मा रखना चाहते हैं। वे भारतीयों की बहुत थोड़ी संख्या सेना में भर्ती करना चाहते हैं और हम चाहते हैं कि सम्राट् की प्रत्येक प्रजा को समान शर्तों के साथ सेना में भर्ती हो सकने का अधिकार मिलना चाहिए।

दूसरी बात है सरकार की सैनिक नीति। जिसे ढीली कराने की हमारी इच्छा है। ये सिफारिशें सेना-सम्बन्धी और अन्य मामलों से सम्बन्ध रखती हैं, जिन के अनुसार साम्राज्य की नौ-सैनिक नौकरियों में भारतीयों के लिए द्वार खुले हैं, उनके चुनाव, शिक्षण तथा अभ्यास के लिए भारत में ही उचित उपाय कर दिये जांय। भारतीयों को वालंटियर बनने की आज्ञा मिल जानी चाहिए। यद्यपि हम विस्तारपूर्वक इस विषय में नहीं गये हैं परन्तु तो भी सुधार के और भी कई उपाय हैं। हमने अभी सिविल-सर्विस का विषय नहीं उठाया है, क्योंकि हमारी इच्छा है कि

की शक्ति है, जिस के कारण हमें भी चारों ओर की स्थिति का ज्ञान हुआ है । वह शक्ति जिस से यह विदित होता है कि फ्रांस ने सर्वस्व बलिदान कर दिया, इंगलैंड ने स्वतन्त्रता और धर्म के लिए कोई बात उठा नहीं रक्खी; जब हम अंग्रेज लेखकों की उत्साह और उत्तेजन से पूर्ण कथा-कहानियों को पढ़ते हैं, जिन में उन्होंने अपने देश निवासियों को छोटे २ राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपना सब कुछ अर्पित कर देने का उपदेश दिया है तब क्या कारण है कि भारतीयों को साम्राज्य-शासन में आगे बढ़ते और अपनी आवाज़ उठाते देख कर वे नुकताचीनी करते हैं? मुमकिन है कि जिन सुधारों को हम चाहते हैं वे वास्तव में आवश्यक न हों। मैं यह भी नहीं कहता कि जिस स्कीम को हम लोगों ने पेश किया है वह पूर्णाग है, सम्भव है कि हमारे विरोधी अभी यह ख़्याल करते हों कि अभी देश में सुधार करने का वक्त नहीं आया है। मैं चाहता हू कि वे इस प्रश्न पर भ्रातृ-भाव और मित्र की भांति हमारे साथ विचार करें । यदि हम भूल पर हैं तो वे हमें सुझावें, हम अपने विचारों में शुद्धि कर लेंगे। यदि वे किसी रूप में ऐसा करने की बात ज़रूरी नहीं समझते तो उन्हें ध्यान से हमारी बात सुनना चाहिए, इस बात पर विचार करना चाहिए कि हमारी मांग क्या है, तब समझ बूझ कर उन्हें हमारा विरोध करना चाहिए। यदि हम बिना किसी उत्तर के ही दोष निकालें तो हम इंगलैंड और भारत दोनों की भलाई के बाधक होंगे । इस लिए मै उपस्थित समुदाय से निवेदन करता हू कि अब तो सारयुक्त सुधार किये जांय तभी भलाई है । हम को एक दूसरे के कथनों का तात्पर्य समझ लेना चाहिए और यह भी जान लेना आवश्यक है कि ऐसी

की शक्ति है, जिस के कारण हमें भी चारों ओर की स्थिति का ज्ञान हुआ है। वह शक्ति जिस से यह विदित होता है कि फ्रांस ने सर्वस्व बलिदान कर दिया, इंगलैंड ने स्वतन्त्रता और धर्म के लिए कोई बात उठा नहीं रक्खी, जब हम अंग्रेज लेखकों की उत्साह और उत्तेजन से पूर्ण कथा-कहानियों को पढ़ते हैं, जिन में उन्होंने अपने देश निवासियों को छोटे २ राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपना सब कुछ अर्पित कर देने का उपदेश दिया है तब क्या कारण है कि भारतीयों को साम्राज्य-शासन में आगे बढ़ते और अपनी आवाज़ उठाते देख कर वे नुकताचीनी करते हैं? मुमकिन है कि जिन सुधारों को हम चाहते हैं वे वास्तव में आवश्यक न हों। मैं यह भी नहीं कहता कि जिस स्कीम को हम लोगों ने पेश किया है वह पूर्णाग है, सम्भव है कि हमारे विरोधी अभी यह ख़्याल करते हों कि अभी देश में सुधार करने का वक्त नहीं आया है। मैं चाहता हूं कि वे इस प्रश्न पर भ्रातृ-भाव और मित्र की भांति हमारे साथ विचार करें। यदि हम भूल पर हैं तो वे हमें सुझावें, हम अपने विचारों में शुद्धि कर लेंगे। यदि वे किसी रूप में ऐसा करने की बात ज़रूरी नहीं समझते तो उन्हें ध्यान से हमारी बात सुनना चाहिए, इस बात पर विचार करना चाहिए कि हमारी मांग क्या है, तत्व समझ बूझ कर उन्हें हमारा विरोध करना चाहिए। यदि हम बिना किसी उत्तर के ही दोष निकालें तो हम इंगलैंड और भारत दोनों की भलाई के बाधक होंगे। इस लिए मैं उपस्थित समुदाय से निवेदन करता हूं कि अब तो सारयुक्त सुधार किये जांय तभी भलाई है। हम को एक दूसरे के कथनों का तात्पर्य समझ लेना चाहिए और यह भी जान लेना आवश्यक है कि ऐसी

अवस्था में चाहिए क्या ? लार्ड सिडनहम का कहना है कि 'मेरी इच्छा है कि अंग्रेजी पढ़े-लिखे समुदाय को प्रतिनिधित्व की पूरी शक्ति दी जाय (जो मुझे विश्वास है कि उन्हें प्राप्त है। मैं इन शब्दों को छोड कर शेषांश से सम्मत हूं।) और सर्वसाधारण के हित-कार्य में हर तरह की सहायता पहुचाई जाय। जिस किसी पद-के लिए भारत-वासी योग्यता दिखलावें वह पद उन्हें दिया जाय।" बस, यही हमारी भी मांग है। हम यही चाहते हैं कि सर्वसाधा-रण के हित की जो कुछ बातें सरकार सोचे उस में हमें भी सम्मिलित कर ले। हमारी समझ में यह सब तभी होगा जब ये 'सुधार' कर दिये जांयगे। हम इस विषय पर भी जोर दे चुके हैं कि भारतीय जिन २ पदों के लिए योग्य बनें वे पद उन्हें दिये जांय। यदि हमारे इन उपस्थित किये गये सुधारों की तरफ अंग्रेजों ने ध्यान दिया तो मुझे आशा है कि हम लोग एक होकर सप्रेम उक्त सुधारों को कार्य के रूप में कर दिखावेंगे, जिस से हमारी उन्नति होगी, भारत में सुख और शान्ति बढ़ेगी, भारत-वासी अन्य राष्ट्रों की प्रतिद्वन्दिता में अपनी उन्नति स्वयं कर सकेंगे और ऐसे महाराजाधिराज सम्राट् महोदय की छत्र-छाया में बने रह कर अपने को कृतकृत्य मानेंगे; जिस के आधीन रह कर साम्राज्य में हमें प्रत्येक जाति के समान स्वत्व और आदर प्राप्त हुआ है। और साथ ही, इंगलैंड की प्रशंसा करेंगे कि उसने इतने फासले पर रहते हुए भी भारत के हित के लिए कोशिश की।

वर्तमान स्थिति ।

गत १० जौलाई १९१७ को सर्वेन्ट्स आफ़ इन्डिया सुसाइटी (भारत सेवक समिति) बम्बई में मान० मालवीय जी ने निम्न लिखित वक्तृता वर्त्तमान राजनैतिक स्थिति पर अपने विचार प्रकट करते हुए दीः—

बहिनो तथा भाइयो, पूर्व काल से चली आने वाली राजनैतिक स्थिति अब एक दम बदल गई है और यह हर्ष की बात है कि सर्व साधारण अपनी दशा को ऊपर उठाने के लिए चिन्तित दिखलाई पड़ते हैं। उन्होंने अपनी दशा को ऊपर उठाने के लिए गत वर्ष से सरगर्मी से कार्य आरम्भ कर दिया है। कांग्रेस और मुसलिम लीग ने अपनी सम्मिलित स्कीम पेश करके अपनी पहिली मांग सामने रक्खी है। होमरूल लीगें भी कांग्रेस के उद्देश्य की सफलता के लिए कार्य करने में लगी हुई हैं। हमारे विरोधी भी कम नहीं हैं, हमें उनकी तरफ़ से सावधान रहना चाहिए। हम अब चुपचाप नहीं रह सकते। इसमें हमारा अकल्याण है। हमें अपने आन्दोलन में बड़ी २ बाधायें पड़ सकती हैं पर हमें विचलित न होना चाहिए। मिसेज बीसेन्ट ने कोई ऐसा अपराध नहीं किया था और अगर मान भी लिया जाय, तो भी साधारण कानून द्वारा उनका विचार किया जा सकता था। भारत-रक्षा कानून का, जो विशेष २ अवसरों किसी खास बात के लिए काम आने वाला कानून है, इस प्रकार और खास करके इस मामले में इस्तेमाल किया जाना अन्याय-संगत हुआ है।

इस समय भारतवर्ष एक विशेष स्थिति के बीच से गुजर रहा है। यह हमारा मार्मिक समय है। जाति के

कन्धों पर एक विशेष महत्व-पूर्ण उत्तरदायित्व है। जाति का यह उत्तर-दायित्व इस बात पर अव-लम्बित है,कि हम अधिकारी-वर्ग तथा ब्रिटिश जनता को इस बात का विश्वास दिला दें कि हमारी कांग्रेस-लीग स्कीम उचित है। इस कार्य के लिए हमें बहुत कुछ प्रयत्न करना बाकी है। जिले २ में कांग्रेस-कमेटियाँ स्थापित करना, गांव गांव में स्वराज्य का ज्ञान पहुंचाना और घर घर तथा झोपड़े झोपड़े में इसका संदेश फैलाना हमारा कर्तव्य है। यह मुनासिब ही नहीं वरन् परमावश्यक है कि देश के कोने२ से, घर घर से और प्रत्येक मनुष्य के मुह से अपने स्वत्व के लिए आवाज़ उठे। हमें अपने पढ़े और ग़ैर-पढ़े भाइयों को सम्मिलित करके सगठित स्वराज्य-आन्दोलन करना चाहिए। हमें इस अवसर पर समस्त घरेलू झगड़ों को छोड़ कर अपने ध्येय की सिद्धि के लिए एक हो जाना चाहिए। व्यक्ति-गत अन्तरों को त्याग देना चाहिए, यह ख़याल इस समय बिल्कुल न आने देना चाहिए कि कौन गरम दल का है और कौन नरम दल का। बड़े भाग्य से यह समय प्राप्त हुआ है, इसके भीतर हमें अपनी पूरी तैयारी कर लेना चाहिए, अन्यथा इसके बीत जाने और हाथ से निकल जाने पर हम पीछे पड़े रह जायगे। अगर इस समय हमने काम किया और हम अपनी आवाज बलंद करके इंगलैंड नि-वासियों के कानों में अपनी मांग भरते गये, उन्हें सुझाते गये तो २ वर्ष के भीतर ही हमारी कांग्रेस-लीग स्कीम अर्थात पहिली किस्त हमें प्राप्त हो जायगी। पर अब बातों का समय नहीं है, सिर्फ बातें बनाने से काम नहीं चलेगा।

...ाव पास करके छोड़ रखने के दिन अब गये, अब दृढ़ता-... काम करने में ही अपनी सिद्धि है। समय की पुकार

यह है कि हम नियम-बद्ध होकर दृढ आन्दोलन करें और अपनी मांग ऊँची करें। हमें आवश्यकता है अथक आन्दोलन और दृढ़ उद्योग के करने की। इसके विना कामों की सिद्धि नहीं हो सकती। वर्त्तमान युग की यही ज़रूरत है। ध्यान रखना चाहिए कि अगर इस समय हम कावा काट गये और चूक गये तो प्राचीन भारत की तुलना में हम अपनी सन्तान के पतन के कारण होंगे। साथ ही हमारे नवयुवक समुदाय को भी यह ध्यान में रखना चाहिए कि वडों की आज्ञा न टालें, वलिक वृद्धों के अनुभव और योग्यता से लाभ उठावें। साथ ही हमारा वृद्धों से भी कहना है कि वे नवयुकों को वच्चा समझ कर त्याग न दें उनके उत्साह को फीका न करें, वरन् उनकी शक्तियों को मार्ग दें और मार्ग दिखावें। मै सदा इस वात के विरुद्ध रहा हू कि विद्यार्थी गण राजनीति में भाग लें, पर तो भी मै इसे अत्यन्त हानिकर और आगे के लिए भयानक समझता हूं कि वे राजनीति से अनभिज्ञ रक्खे जांय, जाति के आदर्श और वड़े पुरुषों के विचारों और कार्यों से अज्ञान वने रहे और यह स्थिति उस दशा में और भी घृणित प्रतीत होती है जब सरकार की तरफ से ऐसी रुकावटें डाली जांय।

हमारी अन्तिम विनय यह है कि देश के इस मार्मिक अवसर पर हमें एक होकर काम करना चाहिए। ध्येय की पूर्ति के लिए इस अवसर पर विरोध और व्यक्तिगत विचारों को त्याग देना ही उचित है। हमें देश के कल्याण के नाम पर शीघ्र ही घरेलू मामलों को छोड कर स्वराज्य-आन्दोलन में एक होकर हाथ बटाना चाहिए।

स्वराज्य-आन्दोलन।

गत ८ अगस्त १९१७ को प्रयाग की एक महती सार्वजनिक सभा में मान० मालवीय जी ने यह वक्तृता दी थी.—

बहिनो तथा भाइयो,

देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति जानने के लिए यह जरूरी है कि हम भूतपूर्व घटनाओं पर भी दृष्टिपात करें, जिन के आधार पर इस का जन्म हुआ है। इस का विचार करते समय हमें स्मरण रखना चाहिए कि देश की दोनों महान जातियां, हिन्दू और मुसलमान, प्राचीन सभ्यता की उत्तराधिकारिणी हैं। हिन्दुओं ने हजारों वर्षों तक राज्य किया, अपनी सभ्यता को उच्च से उच्च श्रेणी तक पहुंचाया। मुसलमान जाति उस विशेष सभ्यता को साथ लाई जिस की छाप यूरोप पर भी पड चुकी थी। उस के शासकों ने शासन-कला में भली भांति सफलता प्राप्त की। इस प्रकार १५० वर्ष पूर्व भारतीय अपने देश का शासन भली भांति चलाते रहे हैं। इस के बाद प्रत्येक महती जाति की भांति भारत का भी पतन हुआ। योरोपियन जातियो ने भारत में राज्य करने की कोशिश की। अंग्रेज लोग इस में सफल हुए। वे प्रजा द्वारा प्रजा का शासन करने में प्रसिद्ध रहे हैं। भारतवासी भी इस उदार प्रणाली के कारण अंग्रेजी शासन में रहने लगे। ईस्ट इन्डिया कम्पनी के हाथ में जब तक शासन रहा तब तक उसे क्रमशः २० वर्ष के लिए विलायत से सनदें प्राप्त होती थीं। जब सनद की बदली होती थी तब ब्रिटिश पार्लामेंट शासन-सम्बन्धी जांच [illegible] थी, जिस का अभिप्राय प्रजाके सुख, समृद्धि से था। १८३३ में ऐसे ही अवसर पर पार्लामेंट ने यह

क़ानून पास किया कि भारतीय अपने देश के उच्च से उच्च पद पर आरूढ हो सकें। १८५८ में ग़दर के पश्चात् महारानी विक्टोरिया ने समान प्रजा-स्वत्व भारतीयों को देने की बात कही। गवर्नमेंट आफ़ इन्डिया बिल में प्रजा प्रतिनिधियों की नियुक्ति पर जोर दिया गया। पर उस समय इस सम्बन्ध में बहुत कम हो सका। किन्तु यह प्रकट होगया था कि प्रतिनिधियों द्वारा शासन करने के सिद्धान्त की ओर भारतीयों को बढ़ाया जाय।

१८६१ के इन्डियन कौंसिल एक्ट के मुताबिक़ व्यवस्थापक कौंसिलों में कुछ भारतीय नियुक्त किये गये। पर उन की अल्प संख्या के कारण कोई वास्तविक काम नहीं हुआ। शिक्षा के फैलने पर यह अनुभव होने लगा कि शासन तब तक ठीक २ नहीं हो सकता जब तक हमें काफी शासन-शक्ति प्राप्त न हो जाय। १८८५ में पहिली कांग्रेस ने इस पर जोर दिया। श्रीमान् दादाभाई ने कहा कि 'हम अंग्रेजों से इस की शिक्षा प्राप्त कर चुके है कि बिना प्रतिनिधियों के शासन अच्छा नहीं हो सकता, इस के बिना हम लोग दासों और गुलामों की भांति है।' दूसरी कांग्रेस में व्यवस्थापक कौंसिलों में संख्या-वृद्धि पर जोर डाला गया। यह तीस वर्ष पहिले की बात है, जब आधे सदस्य चुने हुए माँगे गये थे, पर अब सरकारी सदस्य चौथाई से अधिक कदापि न होने चाहिए। क़ानून-सम्बन्धी और बजट-सम्बन्धी प्रस्ताव तथा प्रश्न भी कौंसिलों के सामने पेश होने चाहिए। कौंसिल की ही राय पर साधारण रूप से काम किया जाय और सिर्फ किसी खास अवस्था में, यदि प्रजा के हित को धक्का न पहुंचता हो, तो, गवर्नमेंट को कौंसिल के निर्णय को

न मानने का भी अधिकार होना चाहिए। पर सरकार को एक महीने के भीतर ही अपनी अस्वीकृति के कारण उपस्थित कर देने चाहिए। प्रान्तिक सरकारें भारत-सरकार के पास और भारत-सरकार भारत-मंत्री के पास अपने कारण भेजा करे, तथा यदि कौंसिल के मेम्बर विरोधी कारणों से सम्मत न हो तो पार्लामेंटरी कमेटी नियुक्त कर के मामला तय किया जाया करे। यह बात गत वर्ष की कांग्रेस-लीग स्कीम की ही ली है। कांग्रेस के इस प्रस्ताव पर मि० ब्रैडला ने कौंसिलों के सुधार का एक बिल पार्लामेंट में पेश किया। तब सरकार ने स्वयं १८९२ में एक कौंसिल-सुधार बिल पास किया, जिस के अनुसार कौंसिलों मे मेम्बरों की कुछ संख्या बढ़ी। पर इस वृद्धि मे हमारी सन्तुष्टि नहीं हो सकी। १९०५ में मि० गोखले ने बनारस की कांग्रेस में फिर इस पर ज़ोर डाला। उन्होंने कहा कि 'हिन्दुस्तान का शासन हिन्दुस्तानियों के हित के लिए किया जाय।' १९०६ में दादाभाई नौरोजी ने कलकत्ते की कांग्रेस में स्वराज्य-स्थापना की बात कही। हम लोगों के आन्दोलन के कारण ही १९०९ मे मिन्टो-मार्ले के कौंसिल-सुधार ज़ारी हुए। उस समय हम उक्त सुधारों से कुछ चुप-चाप हो गये, पर अनुभव के पश्चात् विदित हुआ कि उक्त सुधारों से भी हम कौंसिल में कुछ कर धर नहीं सकते। इस लिए फिर इस बात पर जोर दिया गया कि हमारे स्वत्व और हमारी संख्या बढ़ाई जाय। १९१५ में सर सत्येन्द्रप्रसन्न सिनहा ने बम्बई में 'प्रजा की सरकार' का प्रस्ताव किया।

इस तरह से प्रकट है कि 'स्वराज्य की पुकार कुछ नहीं है, बल्कि कांग्रेस के जन्म से ही हम उसे

चाहते आये हैं। कुछ विरोधियों का कहना है कि स्वराज्य की मांग पहिले पहिल मिसेज़ बीसेन्ट ने ही उठाई है, पर बात ऐसी नहीं है। कांग्रेस ने कुछ यह नई बात नहीं उठाई है।

तीस वर्ष से भारत की यह शिकायत है कि सरकार फ़ौजी मामले में भारतीयों और योरोपियनों एवं यूरेशियनों के बीच अन्तर डाले हुए है, वह दूर कर दिया जाय। वर्षों से अस्त्र-आईन का विरोध किया जा रहा है, इसके कारण भारतीय निकम्मे होते जा रहे हैं। फौजों में कमीशन देने तथा सैनिक शिक्षा के विस्तार पर भी जोर डाला गया। स्वयं-सेवक बनाने के लिए भी भारतीयों ने समय २ पर आवाज़ ऊंची की है। सम्राट् महोदय ने युद्ध छिड़ने पर प्रकट किया था कि छोटे बड़े राज्यों की स्वाधीनता की रक्षा के लिए ही यह न्याय-युद्ध छेड़ा गया है। हमने तथा देशी राज्यों ने उनकी सहायता करना स्वीकार की। हमारे भारतीय भाइयों ने वीरता के साथ ब्रिटिश साम्राज्य के लिए खून बहाया। इस हालत में यह उचित था कि गोरे काले का भेद दूर कर के समता का वर्ताव किया जाता। पर शोक की बात है अभी तक उक्त भेद मौजूद है। उचित तो यह है कि अब भारतवासियों की यह शिकायत शीघ्र दूर कर दी जाय। चूंकि युद्ध का अन्त अभी दृष्टि-गत नहीं होता अतः फ़ौजी मामले की रुकावटें भारतीयों के लिए फ़ौरन दूर कर देने में ही ब्रिटिश साम्राज्य का हित है भारत-रक्षा सेना के लिए किये गये सुधार भी मञ्जूर किए जांय। सैनिक शिक्षा की समान व्यवस्था की जाय।

र
है
भे-
य

कांग्रेस लीग की स्कीम जो प्रकाशित हो चुकी है। खेद की बात है कि इस तुच्छ मांग में भी अड़गे लगाये जाते हैं। कुछ लोग इसे छोटे मुंह बड़ी बात तक कहने से नहीं हिचकते। यहां तक कि वायसराय ने स्वयं एक मसौदा तैयार किया है। कई प्रान्तों के हाकिमों के कथनों से प्रकट होता है कि सरकारी मसौदा अत्यन्त लचर और पोच हैं। यद्यपि ये सरकारी सुधार अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं पर उनकी वास्तविकता प्रकट है और उससे हम किसी भी हालत में सन्तुष्ट नहीं हो सकते। भारत-मंत्री पर भी जोर डाला गया है कि ये सरकारी सुधार ही मंजूर किये जांय। इस दशा में हमें चुपचाप न बैठे रहना चाहिए। देश भर में शिक्षा-सयुत आन्दोलन फैला देने की एकदम आवश्यकता है।

हमने जो स्कीम पेश की है यदि वह मान ली जाय तो सरकार के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। कोई उलट-फेर करने वाली वह स्कीम नहीं है। इससे किसी तरह की हानि होनी सम्भव नहीं, हमारे मन्तव्यों में कोई ऐसी बात नहीं कि किसी योरोपियन सहयोगी प्रजा को क्रोध या डर पैदा हो सके। बड़ी हंसी तो मुझे उस दिन लगी जब एक योरोपियन सज्जन ने यह बात कही कि 'हमें कोई विरोध नहीं यदि भारतीय जनता स्वराज्य चाहे, पर विरोध यह है कि हम उसके शासन में रहें।' ठीक रही! अगर वे एक स्वतन्त्र सहयोगी प्रजा की भांति इस देश में रहना नहीं चाहते तो वे खुशी से यहां से चले जा सकते हैं। इंगलैंड से अलग होने का विचार नहीं करते। हम स्वराज्य स्थापित कर के दोनों के हित की रक्षा

करना चाहते हैं। पर दुर्भाग्य की बात तो यह है कि कुछ लोगों को यह विश्वास जम गया है कि कांग्रेस-लीग के मन्तव्य असङ्गत हैं वे सदा हमारे आन्दोलन का विरोध करते यहां तक कि भारत-सरकार ने भी एक ऐसा सरकुलर जारी कर के प्रान्तिक सरकारों से ऐसे आन्दोलनों को हानिकर बतलाया है। इन प्रान्तिक सरकारों ने भी दमन-नीति से अच्छी तरह काम लिया है। मेरा विश्वास है कि मिसेज़ बीसेन्ट की नजरबन्दी इस का फल स्वरूप थी। यदि मान लो कि उन्हों ने कुछ अनुचित लिख या कह ही डाला तो क्या साधारण कानूनों से काम नहीं चल सकता था? इस की क्यों आवश्यकता पडी कि भारत-रक्षा कानून का दुरुपयोग किया गया? हमेशा हम से यही कहा जाता है कि अभी युद्ध का समय है, अभी अपना आन्दोलन बन्द रक्खो। पर ब्रिटिश सरकार ही कब अपना काम रोके हुए है। न जाने कितने राजनैतिक सुधार बिल पास हो चुके हैं। आयर्लैंड की समस्या पर ही विचार किया जा रहा है, तब फिर हम ही क्यों चुप रहें? मैं सच कहता हूं कि युद्ध-सम्बन्धी कार्यों में इने-गिने ही लोग लगे हुए हैं। अब विचारने की बात है कि युद्ध के समय में हमारे वायसराय तक को अपनी सुधार-स्कीम तैयार करने का समय मिल गया! दूसरे, युद्ध के कारण बहुत से मुहकमों में काम की कमी हो गई है। इस से भी अफसरों को अधिक सुभीता हो गया है कि हमारी बात पर वे विचार करें। हम लोग युद्ध में तन, मन, धन से सहायता देते रहे हैं और देते रहेंगे, सिर्फ फौज में सम्मिलित होने वाले भारतीयों को ही नहीं वरन् बाहरी भारतीयों को भी युद्ध-सम्बन्धी सहायता की जिम्मेदारियों का सम्मान प्राप्त है। यदि इस समय

भी यह विषय न छेड़ा जाय तो फिर हम समझेंगे कि हम अपना उचित कर्त्तव्य पालन नहीं कर रहे हैं।

इन सब बातों के सोचने पर ही यह प्रश्न उठता है कि फिर हमारा कर्त्तव्य क्या है? हमारे लिए यह जानना परमावश्यक है कि हम चाहते क्या हैं और यह कि उस की प्राप्ति के लिए हमें करना क्या चाहिए? पहिली बात के बारे में हम सब समझते हैं कि स्वराज्य क्या है। परन्तु साथ ही देश में ऐसी भी एक बड़ी संख्या है जिसे इस के अर्थ पूर्ण रूप से समझाने पड़ेंगे। उन में इस की प्राप्ति के लिए उत्कंठा उत्पन्न करनी पड़ेगी। पर हमें यह भी जान लेना चाहिए कि सहयोगी अंग्रेज प्रजा को इस के लिए सम्मत कर लेना सहज काम नहीं है। सरकार को भी इस बात का विश्वास दिलाना पड़ेगा कि देश की अधिकांश प्रजा स्वराज्य चाहती है। यहां पर श्रीमान् दादाभाई के कथनानुसार 'हमें भारतीय प्रजा को स्वराज्य के अर्थ समझाते हुए अंग्रेजों को भी यह विश्वास दिला देना चाहिए, कि यह हमारा सच्चा और अटल दावा है। हमें संगठित आन्दोलन कर के ही यह सब बातें सफल करनी चाहिए। आन्दोलन करो, आन्दोलन करो, देश के कोने २ में आन्दोलन करो, यदि हम वास्तव में अंग्रेज़ों से अपने लिए न्याय कराना चाहते हैं। त्याग और दृढ़ उत्साह के साथ काम करना ही हमारा कर्त्तव्य है। मुझे विश्वास है कि बृटिश विवेक की होगी और बृटिश जनता वर्तमान राजनीतिज्ञों के इस पुष्ट करेगी और बहुत शीघ्र भारत को स्वराज्य मिलेगा।' हमारे लिए यह खेद की बात होगी अगर हम

अपने पूज्य नेता की वात का अनुसरण करें। हमें कलंक लगेगा यदि हम उनकी बात कार्य रूप में परिणित न करें।

१६०९ के सुधारों ने हमें मोहित कर लिया था, हम फूल उठे थे कि हमें काफी सुधार प्राप्त हो गये, पर वास्तव में हमें कोई वास्तविक अधिकार नहीं मिले। अब हमें अनुभव के पश्चात् सार-युक्त सुधारों की महती आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। इसके बिना हम कुछ भी नहीं कर धर सकते। इस समय जब कि हमारी शक्तियां स्वराज्य प्राप्ति के लिए कुछ २ एकत्रित हो चली हैं हमें तात्विक काम कर दिखाना चाहिए। पार्लमेंट के सामने पेश करने के लिए एक फार्म बांटे जाने वाले हैं जिन पर अधिक से अधिक हस्ताक्षर कराके पेश किये जांयगे। हमें यह भी उचित है कि जगह २ अपनी पुष्टि के लिए कांग्रेस कमेटियाँ स्थापित करें। जिला कान्फ्रेंसें की जांय। यदि हमने उचित ढंग से काम किया तो हमारी पहिली सारयुक्त किस्त युद्ध के वाद १८ महीनों में ही मिल जायगी। सत्य और न्याय हमारे साथ है। समय की संचालक शक्ति भी हमारे हाथों में है। अंग्रेज राजनीतिज्ञों ने यह भी स्वीकार कर लिया है कि भारत ने साम्राज्य रक्षा के लिए यथाशक्ति अपना सब कुछ दिया है अतः उसकी दशा अब वैसी ही नहीं बनी रह सकती। यदि इस परिस्थिति में भी हम स्वराज्य नहीं पा सकते तो समस्त दोष हमारा है। अपनी सफलता को निश्चयता का रूप देने के लिए यह परमावश्यक है कि हम अपने आन्दोलन को देश व्यापी बनावें और बड़े जोर शोर से उसे चारों तरफ गुंजा दें। साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम लोक

निरन्तर अथक आन्दोलन करना चाहिए। यदि इस कार्य में नियम-बद्ध रहते हुए भी कोई विपत्ति सामने आवे तो उस का हमें हर्ष के साथ सामना करना चाहिए। यदि हम भ्रम के भूत से न डरें, जो कायरता के फन्दे में फांस कर गुलाम बनाये रखता है तो सफलता दूर नहीं है। हमारा कर्तव्य-मार्ग स्पष्ट है, हमें मनुष्यों की भांति पग बढ़ाना चाहिए।

स्वराज्य का संदेश।

गत १० अगस्त १९१७ को संयुक्त प्रान्तिक विशेष कांग्रेस स्थान रिफाहे-आम हाल, लखनऊ में माननीय मालवीय जी ने सारगर्भित व्याख्यान दिया था:—

बहिनो और भाइयो, क्या आप लोग चाहते हैं कि मैं अंग्रेजी में बोलूं? हिन्दुस्तान के स्वराज्य पाने के सम्बन्ध में क्या अंग्रेज़ी में बोला जाय? क्या स्वराज्य पाजाने पर भी आप अंग्रेजी में ही काम किया करेंगे? तब तो यह अच्छी बात न होगी। अगर आप स्वराज्य या होमरूल लेना चाहते हैं तो इरादा कर लीजिए कि इसके बारे में आपस में जब कभी बातचीत करेंगे, जब कभी अंग्रेज़ी न पढ़े हुए भाई-बहिनों से इसके बारे में चर्चा करेंगे तो हिन्दी में करेंगे, हिन्दी ही बोलेंगे। मेरे भाई गांधी जी ने मुझे लिखा है कि अबकी बार जो कोई कांग्रेस का प्रेसीडेन्ट चुना जाय, वह अपनी वक्तृता हिन्दी में ही सोचे और हिन्दी में लिखे। हां, अंग्रेजों के लिए चाहे उसका तर्जुमा अंग्रेजी में ही कर दिया जाय, पर हिन्दुस्तानियों के लिए वह हिन्दी में ही छपे। जब आप के हाथ में ज़बान तक नहीं है तो स्वराज्य का खयाल भी छोड़ दीजिए। (करतलध्वनि)। भाइयो, अगर इस ख़याल में

बैठे हो कि इसी तरह स्वराज्य मिल जायगा, स्वराज्य आता है, तो यह धोखा है। सरकार के इस काम से, जो उसने मिसेज़ बीसेन्ट को नज़रबन्द करके किया है, यह बात ज़रूर हुई है कि लोग जाग उठे हैं। स्वराज्य का ले लेना सहज नहीं है। सरकार ने मिसेज़ बीसेन्ट को नज़रबन्द करके बड़ी ग़लती की। उनकी इस तरह तौहीन करना उनकी आज़ादी छीनना बड़ी भारी बेइन्साफ़ी हुई। पर इस समय हमें सोचना चाहिए कि हमारा फर्ज़ क्या है? जब अंग्रेज़ लोग यहां नहीं आये थे तब भी हिन्दुस्तानी लोग सल्तनत करते थे। इस वक़्त भी एक तिहाई मुल्क पर हिन्दुस्तानी राज कर रहे हैं। प्रकृति सदा अपना बाग़ सर-सब्ज़ रक्खेगी, भारत पर सैकड़ों नादिरशाही हमले हुए पर वह अब भी क़ायम है। यूरोप भी, जहां लाखों आदमी कट गये हैं और कट रहे हैं, लड़ाई के बाद क़ायम रहेगा। जब रहना है तब अधिक सुख से क्यों न रहा जाय? हम ज़्यादा सुख से कैसे रह सकते हैं, यही देखना है। अनुभव से देखा गया है कि अपने ऊपर अपना इन्तज़ाम रखना सब से अच्छी बात है। अपनी पचायतों का होना बहुत अच्छा होता है। अपने ऊपर अपना राज उम्दा राज कहलाता है। संसार में ऐसे ही राज का लोग डंका पीट रहे हैं। दादाभाई नौरोजी ने १८८५ की कांग्रेस में यह प्रस्ताव उपस्थित किया था कि रियाया के प्रतिनिधियों द्वारा शासन करने की प्रथा ही राज॰ करने का अच्छा तरीक़ा है, इस के बिना हम लोग दास की तरह हैं। इसी [illegible] य पर १८८६ की कांग्रेस में बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी [illegible] ज उठाई थी। १८८९ में मि० ब्रेडला ने भी इस बात [illegible] था। १९०५ में मि० गोखले ने बनारस की कांग्रेस

ने अपने भाषण में कहा था कि देश का शासन हिन्दुस्तानियों के फ़ायदे के लिए हो और हम भी उपनिवेशों की भांति अपने देश का शासन अपने आप करने लगें। १९०६ में दादाभाई ने कलकत्ते की कांग्रेस में इस बारे में बहुत कुछ कहा। १९१६ में कांग्रेस तथा मुसलिम लीग ने स्वराज्य का प्रस्ताव इसी लखनऊ नगर में बड़े ज़ोर शोर से पास किया था। अफ़सर लोग हम से कहते हैं कि यह स्वराज्य की माग तुमने कब से उठाई, यह तो एक ही दो वर्ष की सूझ है। उनको ३० वर्ष पहिले की बात याद नहीं है। पहिले जो कुछ इस विषय में कहा सुना जा चुका है, हम कहते है, उतने पर हमने इधर ग़ौर तक नहीं किया है। ३० वर्ष से कांग्रेस वाले इस बात के उठाने के गुनहगार है। अफसरों की निगाह में यह गुनाह है। पर हम लोग इसे दुनियां की खिद्मत समझते हैं। दुनियां की सेवा का यह मत्र है। विलायत वालों का कहना है कि रियाया की राय से होने वाला राज ही सब शासनों में उत्तम शासन है। इस सब का निचाड यह है कि सब से उम्दा राज का एक ही तरीका है और वह है रियाया की राय के मुताबिक होने वाला राज। ईश्वर की इससे बढ कर और कोई सेवा नहीं कि रियाया की इच्छा-नुसार राज हो। अब इसके बिना काम चल ही नहीं सकता। बहुत दिनों से कांग्रेस कौंसिलों के सुधरवाने की पुकार मचा रही है। मेरा १५ वर्ष का अनुभव है कि कौंसिल में कहने मात्र को रियाया के प्रतिनिधि रहते है। आप क्या जानें, वहां क्या होता है। हम लोग मुलायम से मुलायम बातें कहते हैं, सरपच्चा कर कर के प्रस्ताव पेश करते हैं परन्तु सरकारी मेम्बरों की ज़्यादती की वजह से 'यस' (हां) की आवाज़ तो बडी धामी सुनाई पड़ती है परन्तु

'नो-नो' (नहीं, नहीं) की आवाजें बड़ी कड़कदार उठती है। ये आवाजें दिल को टुकड़े २ कर देती है! कितनी ही मर्तबा मैंने अपने दोस्तों से कहा कि मुझे अब कौंसिल छोड़ देने दो, पर उन्होंने मुझे आज्ञा नहीं दी। भारत-रक्षा-कानून हम्हीं लोगों के सामने पास हुआ। हम लोगों ने सब कुछ कहा, पर हमारा कहना कुछ भी न मा गया। फिर उसके बाद ही हम क्या पाते हैं कि हमारे भ मुहम्मदअली शौकतअली नज़रबन्द कर दिये गये? कु मालूम नहीं कि उनका क्या गुनाह था? जब तक उन: गुनाह नहीं मालूम होता, तब तक हम नहीं मानते कि गुनहगार है। ३१ वर्ष तक कांग्रेस भी मुलायम शब्दों काम करती रही। मुलायम से मुलायम भाषा इस्तेमा करती रही-जैसी कि हमारे सभापति (पं० मोतीला नेहरू) की स्पीच तुले हुए शब्दों में है, न एक शब्द इध और न एक शब्द उधर—वैसी ही भाषा मे मेमोरेन्डम, व व्यवस्थापक कौंसिल के १६ सदस्यों का सुधार सम्बन्ध प्रस्ताव, भी लिखा गया। हम लोग तो मुलायम शब्दों इस्तेमाल करने के आदी हो गये है। पर अब गुजर नहीं अगर किसी ने यह सोचा कि इनके कान खड़काओ तब सुनेंगे, तो इसमें ताज्जुब ही क्या है? ताज्जुब तो तब है ज अब भी मुलायम मुलायम बातें कहने ही को कहा जाय इस वक्त डंका पिट रहा है कि योरोप की यह लडा आजादी और इन्साफ़ की लड़ाई है, जिसले छोटी बड़ सभी कौमें आजाद रह सकें, अपनी तरक्की कर सकें। हम तो तीस वर्ष से इसी के लिए कोशिश कर रहे थे। ज एक दूसरे राज्य बेल्जियम की आजादी फि कर देने के लिए अपने लाखों आदमी कटा रह

है तो क्या हम लोगों के साथ, जिनको वहां वाले अपना 'सहयोगी प्रजा' कह कर पुकारते हैं, इन्साफ़ न करेंगे ? फिर हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों ने बराबर उनके साथ अपना खून वहाया। क्या लड़ते समय गोरों का खून सफेद और हिन्दुस्तानियों का खून काला वहा होगा ? क्या दुश्मन ने उनकी जान निकलते वक्त, गोरों की वनिस्वत कम तकलीफ़ दी होगी ? क्या विलायती वहिनों की तरह हमारी हजारों लाखों वहिनें पुत्र-हीन और पति-विहीन होकर विलख नहीं रही है ? 'जादू वही जो सर पे चढ के वोले।' यहां और वहां वाले दोनों ही वाहवाही करते है और कहते हैं कि खूब लडे ! हम भी समझे कि हमारे भी दिन आये। और हम उस वक्त भी अपनी मुलायमियत से नहीं हटे जब आयर्लेण्ड और पोलेंड ने कह दिया कि "होमरूल रख दो नहीं तो ठीक न होगा। हमारा तुम्हारा तव तक कोई सम्बन्ध नहीं और हम तुम्हारे साथ नहीं। जब ऐसा काम कर दो तब हम तुम्हारा साथ दें।" नतीजा यह होना चाहिए था कि हमारे वारे में इन्साफ़ से ग़ौर किया जाता। हमारी सच्चाई और शराफ़त का फल ज़्यादा होना चाहिए था। रज की वात है कि हाकिमों ने ऐसा मौका पाकर भी हमारी तरफ ग़ौर न किया—ख़्याल न किया। यह उन्हों ने मुनासिव काम नहीं किया। हमारी मांगों के वारे में उन्होंने कहा कि, 'क्या तुम्हारा दिमाग़ इतना वढ गया ! स्वराज्य मिलना चाहिए ? ओफ़ ! तबाही आ जायगी। ग़दर मच जायगा।' अक़्ल जब दिमाग़ से उड जाती है तव ऐसा ही होता है, परमात्मा के सामने सचाई और शराफत का ज़रा भी लिहाज न किया गया ! हम यह नहीं चाहते कि अंग्रेज़ी राज उठ जाय। हम तो कहते हैं कि व्रिटिश साम्राज्य के अन्दर

हमारा भी राज हो। इस वक्त इंगलैंड को भी दोस्तो की ज़रूरत पडी है। आगे चल कर हमें भी दोस्ती की जरूरत पडेगी। विलायत की दोस्ती हम दोनों के फ़र्ज पर क़ायम होगी। अगर वे इस वक्त अपने फ़र्ज को अदा न करेंगे तो कहना पडता है कि अब तक जो कुछ निभी, अच्छी निभी। पर, अब निभती नजर नहीं आती। विलायत वाले सात्विक भोजन नहीं खाते। उनके मिज़ाज में ठढापन कम है। एसि-याई तहज़ीब मे ठढापन है। वहां वालो पर मुलायम बातें असर नहीं डालती। अब यह आशा छोड दीजिए कि वे सीधी २ बातें सुन कर स्वराज्य दे देंगे। इसी लिए कहते हैं कि अब इस तरह काम पूरा न होगा। अब हमें भी गर्मी के साथ कहना होगा और तब उन पर असर पड़ेगा। हमारे मुख़ालिफ़ कहते हे कि रियाया का इस मामले से कुछ तासुक़ नहीं है। हमें दिखलाना है कि हम सब, छोटे बडे, ग़रीब अमीर, भाई बहिन, बूढ़े बच्चे, मर्द औरत एक राय है। हमें देश के कोने २ में स्वराज्य की गूंज फैला देनी पड़ेगी। गांव २ घर २ मे इसका ज्ञान पहुंचा देना पडेगा। फ्रांस और इगलैंड वाले एक दूसरे से भिन्न होने के कारण, अलग अलग स्वराज्य रखने के कारण दूसरे देश की दवाइयां नहीं खाते। पर हमारे देश में सभी देशों की दवाइयां छ, छ महीने तक बन्द पडी रहती हैं और बिना विचारे खाई जाती हैं। और फिर भी हम ताज्जुब करते हैं कि हमारे इतने भाई क्यों मरते है।

हिन्दुस्तानी अफ़सर ही अपने मुल्क की तरक्की का ध्यान रख सकता है। दूसरा नहीं। जो अंग्रेज़ पहिले पहिल [illegible]तान में नया आता है, जो पहिले कभी यहां आया नहीं, [illegible]ने ओहदे की तरक्की और पेंशन लेकर चले जाने की

फिक्र मे रहता है वह हिन्दुस्तान की तरक्की के वारे में क्य सोचेगा ? हां, सभी ऐसे नहीं होते । मि० ह्यूम और सर विलियम वेडरवर्न ऐसों में नहीं है। पर इनक से होते ही कितने हैं ? जापान को ही ले लीजिए। ३० वर्ष के भीतर शिक्षा में उसने इतनी उन्नति करली है कि १८७३ में वहां पढ़े लिखों की संख्या २८ फ़ी सदी थी और १९०३ में ९० फ़ी सदी हो गई ! आप के यहां मुश्किल से १९ फ़ी सदी पढ़े-लिखे मिलग । रूस-जापान की लडाई के बाद १९०३ में रूसियों ने यही कहा कि शिक्षा की कमी के कारण हम हार गये और डूमा ने उस वर्ष से शिक्षा के लिए पूरा उद्योग किया। हमारे भाई गोखले का शिक्षा-सम्बन्धी प्रस्ताव पास नहीं किया गया। फिर यहां शिक्षा कैसे बढे ? न तो बेहतरी का तरीका काम में लाया जायगा और न करने वाले जो कुछ करेंगे उस पर ध्यान दिया जायगा। यह हम नहीं कहते कि कुछ किया नहीं गया परन्तु शिक्षा के वारे में जो कुछ किया गया वह बहुत कम है। जापान ने ३० वर्ष में इतनी वृद्धि की तो हम यह फ़र्क २० वर्ष में मिटा सकते हैं, परन्तु हमें अपना इन्तज़ाम खुद करने को मिले। हिंदू और मुसलमानों के जमाने में क्या यह बात नहीं थी। वडे २ योग्य पुरुष राज-काज सम्हाले हुए थे। मुसलमानों के राज में राजा मानसिंह हाकिमेसूबा और राजा टोडरमल अर्थ-मंत्री थे। कहा जाता है कि मुसलमान तहज़ीब में कम थे, पर देख लीजिए, उन्हों ने विना किसी भेद-भाव के योग्य हिन्दुओं को ऊंचे से ऊंचे ओहदों पर नियुक्त कर रक्खा था। आज हिन्दुस्तानियों को कलेक्टरी, कमिश्नरी के मिलने में बड़ी मुश्किल है। विलायत वाले तो लंदन में सिविल सर्विस का इम्तहान दे लें और यहां वाले इस घुडदौड में यहां से दौडे

जांय। नतीजा यह होता है कि इन करोड़ों रुपये की १४७८ नौकरियों में १ अप्रैल १९१७ को केवल १९८ भारतीय थे! चाहिए यह था कि १४: अंग्रेज होते और उस हालत में, जब कि योग्य हिन्दुस्तानी ढूंढे न मिलते। इंसाफ का पलड़ा उलटा हुआ! ५० वर्ष तक दादाभाई बराबर इस कोशिश में लगे रहे कि सिविल सर्विस की परीक्षा यहां हो, पर अफ़सोस कि वे चले गये किन्तु परीक्षा यहां नहीं हुई। सिविल सर्विस कमीशन की रिपोर्ट से तो खुदा ही पनाह दे! हमें आशा नहीं कि जब तक कौंसिलों में अंग्रेज़ों की संख्या अधिक रहेगी तब तक कुछ भी हो सकेगा।

सेना की बात सुनिए। हमारे हिन्दुस्तानी सिपाही चावल का पानी पी २ कर लड़े हैं। सिक्ख, पठान, गुरखे आगे बढ़कर लड़े पर उनके लिए ऊंचा पद नहीं, कमीशन नहीं। अब तक यह ग़ज़ब का बेइन्साफ क़ायम है! १८८५ से कॉंग्रेस इस पर जोर डाल रही है, पर सब्र की ही दुहाई दी जाती है। सब्र की भी कुछ इन्तहा है? इसके माने क्या कि एक आस्ट्रेलियन तो कीटा में फ़ौजी तालीम पाने के लिए जा सके पर हिन्दुस्तानी नहीं! हम तो ऊंचे पदों के लिए तरसते रहें और दूसरे लोग झट उनको पा जॉय! यह कहाँ का इन्साफ है? यह ग़ज़ब की बेइन्साफ़ी है, और अब तक क़ायम है। सिपाही भर्ती करने के लिए भर्ती की सरकारी कमेटियां बनाई गई हैं। अगर जोश बनाये रक्खा जाता, बेइन्साफी की पालिसी न बरती जाती तो लोग पुकार२ कर सिपाही बनते। दसगुने और बीसगुने फौज में जाते।

अपना अख़्तयार मिले पहाड़ सी ये इन्साफियां कभी [illegible]हीं हो सकतीं।

इस ज़रख़ेज मुल्क की कच्ची पैदावार दूसरे

देशों में चली जाती है। किसान बेचारे भरपेट खाना नहीं पाते। तन ढांक नहीं सकते और फिर मालगुजारी भी भरते हैं। यह सब इस लिए कि अगर हिन्दुस्तानियों की तिजारत बढ जायगी तो अंग्रेज़ों की तिजारत को हानि पहुंचेगी। जूट, चमडा, तिलहन जाता है और सोलह गुने मूल्य पर हम उसकी वार्निस और अन्य चीजें खरीदते हैं। इस से जान पढता है कि केवल स्वराज्य ही तरक्की का वहुत वडा सीग़ा है। लाखों वच्चे मरते हैं, हम उनके लिए कोई इन्तज़ाम नहीं कर पाते। हम कहते हैं कि हमारे इन्तजाम में हम स भी मशविरा कर लीजिए। हमारी अक्ल की भी आज़माइश कर लीजिए। हम आप के ऐसे प्रवन्ध को नहीं चाहते। ईश्वर के लिए इस इन्तजाम को खतम कीजिए। मि० गोखले और दा-दाभाई सरीखे अपना मग़ज़पच्ची कर, वक्त खराव करें, और आप कुछ भी न सुनें। इस तरीके को अब वन्द कीजिए। पहिले कांग्रेस की तजवीज स्वीकार कीजिए। अब तक हम मुलायमियत से कहते रहे पर अब उस तरह कहने से फायदा नहीं। अब आवाज ज़ोर शोर से उठानी पडेगी। माँ-वहिनें जानती हैं, और क्या हम नहीं जानते कि, जब तक वच्चा बारे२ रोता है तब तक ध्यान नहीं दिया जाता। जरा ज़ोर पकडने पर कुछ ध्यान जाता है। और अगर उसने लात पैर फटकारने शुरू कर दिये तब तो उसकी मांग तुरन्त पूरी कर दी जाती है! अंग्रेज लोग ठंढे मुल्क के रहने वाले हैं उन पर मुलामि-यत का असर नहीं होता। वे समझते हैं कि कांग्रेस एक ही दिन की जमात है फिर लोग अपने २ घर की राह नापते हैं। पर अब यह वात नहीं होगी।

हम मदद करते हैं। पर वह भी नहीं मानी जाती। हाय, हम भीख मांगते हैं कि हमारा भी एक प्रतिनिधि ला-

स्वराज्य-कांग्रेस में रख लिया जाय। हम खुद इस सबके कसूरवार हैं। १८८६, १८८७ तथा १८८८ में जिस जोश से काम हो रहा था उसी जोश से हमने काम नहीं किया। नहीं तो इस समय हम इस दशा को न पहुंच जाते। हमारी इतनी गिरी हालत न हो जाती। एक छोटे से छोटा, दो कौडी का, अंग्रेज की सूरत रखने वाला किरानी हमें हिक़ारत की निगाह से देखता है। अगर हम में शरम और हया है तो अब ऐसी कोशिश करें कि इस हालत से छुटकारा मिले। वहम है कि क्या करें, काम करने की क्या हद्द है? हम प्रस्तावों को कोशिश की हद्द नहीं बनाना चाहते। मक़सद को हासिल करना ही कोशिश की हद्द है। नुक़सान फ़ायदे का ख़्याल मत करो। विपत्तियों की चिन्ता छोड दो। ईश्वर का नाम लेकर, देश तथा जाति के लिहाज़ से सीधे रास्ते पर चले जाओ। रास्ता साफ़ है तो बेहतर है। अगर मुसीबतें पड़ें तो मुबारक हैं। पर दुश्मनों के सामने अपनी तौहीन मत कराओ। कस्द कर-लो कि स्वराज्य का मक़सद गांव २ घर २ और कोने २ में फैलायेंगे। कांग्रेस, कांफ्रेंस और लीगों को ताक में रखिए, आइए और काम में हाथ लगाइए। परमेश्वर और देश के नाम पर दिल से ख़ौफ़ निकाल डालिए। इस तरह निकाल डालिए जिस तरह दूध से मक्खी निकाली जाती है। जब आप आगे बढ़ने के लिए निकलेंगे तो रास्ते से विरोधी भाग जाँयगे। वे रास्ता साफ़ कर देंगे। विना मुसीबत झेले काम नहीं चलेगा। आराम से बैठे हुए चिट्ठी भेजकर स्वराज्य नहीं मिल जायगा। हाँ, यह ज़रूर है कि इस वक़्त अंग्रेज कौम हम लोगों पर ग़ालिब है। पर जब तक उन्हें हम यकीन न दिलायेंगे उन पर कुछ भी असर न होगा। हमारे देश के कुछ कहते हैं, 'पण्डित, स्वराज्य लोगे?' वे हँसते हैं, मज़ाक उड़ाते

हैं ।—स्वराज्य लेंगे और दिखला देंगे कि ऐसे लिया जाता है। पर इस सब के लिए हम लोगों को काम करना पड़ेगा, सहज ही काम पूरा न हो जायगा। कुछ पढ़े लिखे लोग कहते हैं कि अंग्रेज़ चले जांयगे तो ? हमारा कहना है कि हम उनसे ऐसा कब कहते हैं, और क्या एक तिहाई भारत पर हमारे हिंदुस्तानी राज नहीं करते ? फिर ? हमारा कहना तो केवल यह है कि हमारे साथ इन्साफ़ कीजिए। मगर ईमानदारी शराफत और सच्चाई की शर्त है। अगर बेइन्साफी की जायगी, अगर हमें हिक़ारत की निगाह से देखेंगे तो ईश्वर जानता है कि हम भी हिकारत की निगाह से देखेंगे। अगर हमारी तौहीन की जायगी तो हम भी बड़ी तौहीन करेंगे। हम लड़ना नहीं चाहते, हमारे काम करने के ढंग ऐसे नहीं होंगे। अगर हममें लियाक़त होगी तो हम २४ महीने के अन्दर अपना मकसद पूरा कर लेंगे। अगर रूस के किसान, फिलीपिनोज़ और एसियाई जापानी स्वराज्य के योग्य हैं तो हम भी इसके योग्य हैं। हाय ! ग़ज़ब, कितनी बेइन्साफी है कि पुरानी सभ्यता के मालिक, हिन्दू और मुसलमान, स्वराज्य के योग्य नहीं ! इरादे कर लीजिए, कस्द कर लीजिए, कि गाँव२ घूम कर घर२ में स्वराज्य के माने समझा-बुझा देंगे और बतला देंगे कि इसके बिना अब गुज़र नहीं है। अगर स्वराज्य लेना है तो यह भी समझने की बात है कि हिन्दुस्तानी अफ़सरों की उतनी ही इज्जत करना सीख लो जितनी कि एक अंग्रेज अफ़सर की करते हो। बल्कि उनको दिलोजान से हरेक काम में मदद दो। अपना काम शुरू कर दीजिये। मुहल्ले मुहल्ले घर घर चर्चा फैला दीजिये। ख़ौफ़ की बात नहीं। ख़ौफ़ को तो सांप की तरह कुचल डालिए। ख़ौफ़ ईश्वर का, किसी इन्सान का नहीं। इन्साफ़ और सचाई का ख़ौफ़, बेइन्साफी

का नहीं। ईश्वर के लिए अपने को अयोग्य मत समझो, इसका ख़याल तक न रक्खो। अगर आप लोग अपना काम शुरू कर देंगे और प्राण-पण से शुरू कर देंगे तो लड़ाई के खत्म होने पर १२ महीने के भीतर ही हम स्वराज्य की पहिली किस्त पा जायगे।

स्वराज्य-प्राप्ति के लिए तीन आवश्यकतायें।

गत ८ अक्तूबर को प्रयाग में होमरूल लीग की तरफ से की गई एक सभा में मालवीय जी ने यह वक्तृता दी:-

सज्जनो,

मेरी बहुत बड़ी इच्छा थी कि अंग्रेज़ी न जानने वाले भाइयों के लिए लोकमान्य तिलक की कल वाली और आज की वक्तृताओं का सार हिन्दी में उपस्थित करता, परन्तु उन वक्तृताओं की कठिनता, उनके अध्यवसाय के साथ कहे जाने के कारण बहुत बढ़ी हुई है और मेरा स्वास्थ्य भी इस समय ऐसा नहीं है कि मैं स्वराज्य या होमरूल के सब प्रश्नों पर देर तक बोल सकूं इस लिए मैं ऐसा करने के लिए समर्थ नहीं हूँ। स्वराज्य के प्रश्न की महत्ता यथेष्ट रूप से इसी बात से जानी जा सकती है कि देश के इतने बहुत से अत्यन्त योग्य आदमी इतने उत्साह के साथ इस ध्येय के लिए काम कर रहे हैं। यह जान लेना परमावश्यक है कि स्वराज्य हमारी उन्नति के लिए क्यों आवश्यक है। इंगलैंड ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसके कारण हम उसके कृतज्ञ हैं, परन्तु विचारवान भारतीयों का विश्वास है कि अपनी ग़रीबी तथा अन्य अनेक बुराइयों को दूर करने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि अपने देश के शासन में भारतवासियों की बुद्धि तथा उनके हृदयों का अधिक [illegible] रहे। जब से अंग्रेज़ों के हाथों में भारतीय शासन की

बागडोर गई है तब से ऐसा हो गया है कि अधिक महत्व के ओहदे ज्यादातर उन्हें ही मिलते हैं, और भारतीय उनसे वञ्चित रहते हैं। लो० तिलक के कथनानुसार हमारे लिए अपनी क्षति के साथ २ यह अपमान की बात भी है जो हमें शासन-कार्य के अयोग्य प्रमाणित करने के लिए काम में लाई जाती है। हजारों वर्षों तक हिन्दू योग्यता के साथ हुकूमत करते रहे हैं और इसी प्रकार मुसलमान लोग भी सकडों वर्ष तक राज्य कर चुके हैं।

इस समय भी एक तिहाई भारत-देशी रियासतों-में भारतीयों का ही राज्य है। यह बात सच है कि एक विदेशी जाति हम पर शासन करने के लिए आई है, परन्तु यह भी भलीभांति स्मरण कर लेना चाहिए कि हरेक जाति का किसी न किसी समय उत्थान का अवसर आता है और किसी न किसी समय पतन का, और बहुत कर के कभी न कभी प्रत्येक जाति को किसी न किसी विदेशी जाति की हुकूमत में रहना ही पड़ता है। कोई भी जाति इसका गर्व नहीं कर सकती कि उसका सितारा सदा बलन्द रहा है। और यह कि सदा वह ऐसा ही रहेगा। लेकिन यह किसी जाति को शोभा नहीं दे सकता कि वह अपने पूर्ण वैभव के दिनों में दूसरी जाति के मार्ग में कांटे लगा दे, सिर्फ इस कारण से कि उस दूसरी जाति के दुर्भाग्यवश बुरे दिन आ गये हैं। यह एक बिल्कुल अस्वाभाविक बात है कि एक देश दूसरे देश पर सदा हुकूमत ही करता रहे। वरन् स्वाभाविक बात तो यह है कि हरेक जाति अपने भाग्य का निपटारा करने वाली स्वयं बनी रहे। इसी सिद्धान्त के प्रमाण में यह कहा जा सकता है कि अपरिमित धन जन की सहायता के साथ इंगलैंड बेल्जियम

की रक्षा के लिए खड़ा हुआ है। इंगलैंड के इस शुभ सिद्धान्त के लिए खड़े होने के कारण भारतीय जनता उसकी हृदय से प्रशंसा करती है और यह पूर्णतया स्वाभाविक है कि इस देश में भी उस शुभ सिद्धान्त का व्यवहारिक पूर्ति के लिए भारतीय जनता उत्कठित हो। किसी देश का शासन उसके निवासियों द्वारा ही हो, यह बात इतनी स्वाभाविक है कि इससे सिवा उनके जिन्हें कुछ स्वार्थ होता है, और कोई इनकार नहीं कर सकता। भारतीय जनता इंगलैंड से सम्बन्ध विच्छिन्न करना नहीं चाहती लेकिन वह यह भी नहीं चाहती कि सहयोगी प्रजा अंग्रेजों की हुकूमत में रहे वह अंग्रेजों के साथ समान स्थिति में रहना चाहती है। अब ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत पर ब्रिटिश शासन का अन्तिम लक्ष्य स्वराज्य-स्थापन स्पष्ट रूप से स्वीकार किया जा चुका है। इस प्रकार कानूनी शब्द-शास्त्र के अनुसार हमें अपने पक्ष मे डिगरी मिल चुकी है। अब सिर्फ उसका कार्य रूप में परिणित होना मात्र रह गया है। यह ख़्याल, जो कुछ स्थानों में फैला हुआ है कि भारतीय जनता इंगलैंड से अपना सम्बन्ध तोडना चाहती है बिलकुल बेबु-नियाद है, क्योंकि, क्या हमारी सब पुकारें सम्राट्, ब्रिटिश पार्लमेंट अथवा ब्रिटिश लोक-सत्ता के नाम पर नहीं उठाई गई हैं? मि० मांटेगु के आगमन के विचार से भारतीयों को अपने इस ध्येय की पुष्टि के लिए विशेषरूप से उद्योग करना चाहिए। यह प्रत्येक भारतीय का परम कर्त्तव्य है कि वह स्वराज्य अथवा होमरूल के लिए [illegible]ा-सयुत आन्दोलन उठावे जिससे इस देश के गांव २ और २ से उसकी मांग उठ खड़ी हो।

हिन्दू मुसलमानों को अपने धार्मिक मत-भेदों को दूर

कर डालना चाहिए। हिन्दुओं को चाहिए कि अगर वे देखें कि उनके मुसलमान कुछ ग़लती कर रहे हैं तो उन्हें अत्यन्त मित्रता-पूर्ण वर्ताव के साथ तर्कों द्वारा उनको जीत लेने की कोशिश करना चाहिए। लेकिन अगर कोशिशें बेकार जांय, तब भी उन्हें क्रोध करके मामले को उकसाना और भीषण रूप धारण करने न देना चाहिए। मैं हिन्दू भाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें मुसलमान भाइयों के धार्मिक विश्वासों का आदर करना चाहिए, साथ ही मुसलमान भाइयों से भी मेरी यह विनती है कि उन्हें भी अपने धार्मिक विचारों के लिहाज से हिन्दुओं के हृदयों को आघात पहुंचाने से रुकना चाहिए। हिन्दू और मुसलमान, दोनों को ईश्वर को प्रसन्न रखने के लिए उसकी सन्तान के साथ प्रेम का वर्ताव करना चाहिए। हरेक भारतीय कभी २ उठ खड़े होने वाले इन जातीय झगड़ों को निन्द्य समझता है, और उनके लिए, जो इन झगड़ों से अपना स्वार्थ साधना चाहते हैं मेरा यह कहना कि उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि इस देश तथा अन्य देशों में भी ऐसे धार्मिक झगड़ों का उठ खड़ा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। योरोपीय व्यापारी समाज से भी मेरा यह कहना है कि भारत के स्वराज्य पा लेने के बीच में फसाद खड़ा करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि भारतीयों ने आज तक अपने देश में आने वाले सभी लोगों का हाथ फैला कर स्वागत किया है।

निष्क्रिय प्रतिरोध के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि सर्व साधारण के कष्टों की तरफ ध्यान आकर्षित करने के लिए निश्चय ही वैध आन्दोलन एक मार्ग है परन्तु जैसा कि लोक० तिलक ने कहा है, वैध आन्दोलन का यह आखिरी क़दम है इसे बहुत सोच समझ कर उठाना चाहिए। जब कभी इसे

काम में लाने की आवश्यकता मालूम पड़े तो इसे अपने नेताओं को फैसले के लिए सौंप देना चाहिए। इसके काम में लाये जाने की आवश्यकता उस समय समझी गई थी जब मिसेज़ वीसेन्ट तथा उन के साथियों के छुटकारे के लिए आन्दोलन हो रहा था, और जिस समय यह भी दिखलाई पड़ने लगा था कि नजरबन्दी के विरुद्ध सभा करने और बोलने के हकों में भी खरखशा उपस्थित होने वाला है। लेकिन मिसेज़ वीसेन्ट तथा उन के साथी खुशी २ छोड़ दिये जा चुके हैं, और हाल में बैठी हुई समस्त भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी और मुसलिम लीग कमेटी को सम्मिलित बैठक के फैसले से हम यह जान चुके हैं कि स्थिति के हेर-फेर की दृष्टि से उस ने निष्क्रिय-प्रतिरोध के प्रश्न का विचार त्याग दिया है।

भारत-मन्त्री तथा वायसराय की घोषणा के पश्चात् सुधारों की मांग के लिए किये जाने वाले किसी वैध आन्दोलन में हस्तक्षेप न किया जाना चाहिए और न इस मामले में सरकार तथा जनता ही कोई मत-भेद होना चाहिए। इस समय लोकमान्य तिलक के कथनानुसार वैध-आन्दोलन कर के स्वराज्य प्राप्त कर लेना ही हमारा परम कर्त्तव्य है। यही हमारा एकमात्र पवित्र कार्य है। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अपने देश की दशा उत्तम बनाने के लिए हमें अपने सहस्रों योग्य आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी।

भूमिका।

मित्रगण। ड्रामा लिखना कोई साधारण बात नहीं। बड़े बड़े योग्य और विद्वान् लेखकों ने इस कलामें अपनी लेखनी का चातुर्य्य दिखाया है, किन्तु दुर्भाग्य वश सफलता नहीं पा सके। तुक बन्दी कर देना अथवा इधर उधर से पद पंक्तियोंको खेंचा तानी करके पद्य (नज़म) और गद्यका एक संग्रह पाठकोंके सामने रख देना कोई नाटक रचना नहीं कहलाता। इस अथाह सागर में तैरने वाले कविको पद पद र गोते खाने पड़ते हैं। वह नाटक लेखन के विशेष नियमों ा अनुसार नया रङ्ग नयी चाल नया चित्र और नया विचार ठ निकालने का प्रयत्न करता है। "थोड़ा और मीठा नियम प्रतिक्षण उसके हृदय नेत्रके सम्मुख रहता है। नाटक लेखकको इस बात पर विशेष ध्यान रखना है कि कैरेक्टर (पात्र) की कोई बात उसकी पहुंच से बाहर न रहे और प्रत्येक बात ऐसी विशेषता से दरसाई जाए कि उसमें कल्पित होते हुए भी वास्तविकताका रङ्ग दिखाई दे। घटनाओंकी सच्चाई अपनी झलक दिखा जाए। यह काम

काम में लाने की आवश्यकता मालूम पड़े तो इसे अपने नेताओं को फैसले के लिए सौंप देना चाहिए। इसके काम में लाये जाने की आवश्यकता उस समय समझी गई थी जब मिसेज़ बीसेन्ट तथा उन के साथियों के छुटकारे के लिए आन्दोलन हो रहा था, और जिस समय यह भी दिखलाई पड़ने लगा था कि नज़रबन्दी के विरुद्ध सभा करने और बोलने के हक़ों में भी ख़तरा उपस्थित होने वाला है। लेकिन मिसेज़ बीसेन्ट तथा उन के साथी खुशी २ छोड़ दिये जा चुके हैं, और हाल में बैठी हुई समस्त भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी और मुस्लिम लीग कमेटी की सम्मिलित बैठक के फैसले से हम यह जान चुके हैं कि स्थिति के हेर-फेर की दृष्टि से उस ने निष्क्रिय-प्रतिरोध के प्रश्न का विचार त्याग दिया है।

भारत-मंत्री तथा वायसराय की घोषणा के पश्चात् सुधारों की मांग के लिए किये जाने वाले किसी वैध आन्दोलन में हस्तक्षेप न किया जाना चाहिए और न इस मामले में सरकार तथा जनता ही कोई मत-भेद होना चाहिए। इस समय लोकमान्य तिलक के कथनानुसार वैध-आन्दोलन कर के स्वराज्य प्राप्त कर लेना ही हमारा परम कर्त्तव्य है। यही हमारा एकमात्र पवित्र कार्य है। स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अपने देश की दशा उत्तम बनाने के लिए हमें अपने सहस्रों योग्य आदमियों की आवश्यकता पड़ेगी।

भूमिका।

मित्रगण। ड्रामा लिखना कोई साधारण बात नही।
बडे बडे योग्य और विद्वान् लेखकों ने इस कलामे अपनी
लेखनी का चातुर्य्य दिखाया है, किन्तु दुर्भाग्य वश सफलता
नही पा सके। तुक बन्दी कर देना अथवा इधर उधर से पद
पंक्तियोंको खेचा तानी करके पद्य (नज़म) और गद्यका
एक सग्रह पाठकोंके सामने रख देना कोई नाटक रचना नही
कहलाता। इस अथाह सागर मे तैरने वाले कविको पद पद
पर गोते खाने पड़ते है। वह नाटक लेखन के विशेष नियमो
के अनुसार नया रङ्ग नयी चाल नया चित्र और नया विचार
ढूंढ निकालने का प्रयत्न करता है। "थोड़ा और मीठा"
यह नियम प्रतिक्षण उसके हृदय नेत्रके सम्मुख रहता है।
नाटक लेखकको इस बात पर विशेष ध्यान रहता है।
कि कैरेक्टर (पात्र) की कोई बात उसकी पहुंच से बाहर न
रहे और प्रत्येक बात ऐसी विशेषता से दरसाइ जाए कि
उसमे कल्पित होते हुए भी वास्तविकताका रङ्ग दिखाई दे।
घटनाओंकी सच्चाई अपनी झलक दिखा जाए। यह काम

कोई अभ्यास अथवा अध्ययनसे नहीं आता, इसके रसको वही चखता है जिसका परमात्माने नाटक लिखने की विशेष योग्यता जन्म से ही दी है, जिसकी कुशाग्र बुद्धि सुविचार पूर्ण है, जो सृष्टि और उसकी सुन्दरता हृदय की सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेकी विशेष प्रतिभा रखता है।

नाटक कला कहांसे आई, भारतकी पुष्प वाटिका में यह मनोहर क्यारी किस मालीने लगाई, पहले पहल नाटक किसने बनाया, स्टेज पर खेलनेका विचार प्रथम किसको आया हमारे पाठकोंके मनमें यह प्रश्न अवश्य उठते होंगे। जिनका उत्तर विस्तार से देनेकी हम यहां आवश्यकता नहीं समझते, क्योंकि इस विषय पर पहले बहुत कुछ कहा जा चुका है, हां किसी नयी बात का वर्णन कर देना हम कर्त्तव्य समझते हैं।

भारतवर्ष में सब से पहले (जब कि इस आर्य्य सेवित भूमि पर तो क्या, संसारमें कहीं नाटकका नाम भी न था) मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रके वीर पुत्रों लव और कुशने राम नाटक संस्कृत भाषामें लिखवा कर स्टेज पर करवाया। उसके बाद समय बदला, संसार चक्रने कई चक्कर खाए कालिदासके अद्वितीय नाटक स्टेज पर आए। तत्पश्चात् हिन्दी नाटकोंका रवाज हुआ फिर नये युगमें शेक्सपियरके अंग्रेजी ड्रामोंने उर्दू की पोशाक पहन कर स्टेजको नयी रोशनी के सांचेमें ढाल

पाठकगण! मुझे इस कलाका अभ्यास करते बारह वर्ष के लगभग हो चुके है। नौकरी और विद्याध्ययन की राखमें दबी हुई शौककी चिङ्गारी पहलेसे विद्यमान थी, केवल समय की हवा लगने की आवश्यकता थी, स्वाभाविक लगनने अपना रङ्ग दिखाया और पूरे शौक और विश्वासके साथ मैदानमे आया। सूरदास, नरसी भगत, जगतसिंह, बालकृष्ण, भीष्म-पितामह, प्रह्लाद, गङ्गावतरण, सीता बनवास, दानवीर कर्ण इत्यादि नाटक लिखे। स्टेज पर उर्दू के स्थान मे हिन्दीका रिवाज दिया। यहा तक कि मेरे इन नाटकोंके आधार पर देशमे कई एक खालस हिंदु धार्मिक कम्पनिया पैदा हो गई। धार्मिक नाटक देखने के लिये पबलिकने भी जोश और चाव प्रगट किया। परतु आज समयका प्रवाह किसी और तरफ़ है। रसिक और प्रेममय नाटकोंका स्थान धार्मिक नाटकोंने लिया था। अब धार्मिक नाटकोंको पीछे छोड़ कर राजनैतिक ड्रामे अपना पाओं स्टेज पर आगे बढाना चाहते हैं। क्योंकि महात्मा गांधी ने पालिटिक्सको धर्म के आधीन कर दिया है। नहीं नहीं, इससे प्रथम शास्त्रकार भी इस विषय पर उचित प्रकाश डाल चुके हैं, जैसा जल वायु है, स्वभाव भी वैसा ही हो जायगा। आज वह समय है कि जिस लिटरेचरमें पालिटिक्स की झलक नहीं कोई उसकी आवाज नहीं सुनता। जिन पुस्तकोंमें पालिटिक्सकी रङ्गत नहीं वह रद्दीके हवाले है

भला कौन पढ़ता है। यही अवस्था नाटकों की है अब लचर और रसिक विषय, भद्दे सदाचारसे गिरे हुए कामिक को कोई पसन्द नहीं करता।

लेखक को भी समय प्रवाह जिस तरफ हो, उसी ओर चलना पड़ेगा समय उसको जबर्दस्ती चलावेगा, या तो वह पब्लिक को उसकी चेटकके अनुसार वर्त्तमान कालका सच्चा चित्र खेंच कर दिखायेगा अथवा लेखनी छोड़ कर इस मैदान से भाग जायेगा। दिनोंकी बात है मित्र लोग मुझ तुच्छसे लेखक की प्रशंसा के पुल बांधने लगे। बातचीत में नाटक लिखने का विषय छिड़ गया एक सज्जन ने सलाह दी कि पंजाब ट्रेजडीका ड्रामा लिखो, अत्यावश्यक है, कद्र होगी, पबलिक पसन्द करेगी। पंजाब ट्रेजडीसे बढ़कर और कौन सा विषय करुणामय और रोचक होगा। इसी सम्मति ने मेरे अन्दर यह सङ्कल्प पैदा किया और उसी दिनसे इस विषय पर विचार करना आरम्भ कर दिया। आज परमात्माकी कृपासे वह विचार और वह शुद्ध सङ्कल्प परिपक्व होकर इस पुस्तक के रूपमें पाठकों के सन्मुख है।

केवल ट्रेजडी को लिखा है। किसी प्रकारकी कोई कल्पना सम्मिलित नहीं की। बहुतसे पात्र कल्पित लेने पड़े हैं। इनके बिना किसी नाटकमें भी वह रङ्गत नहीं आ सकती

जो केवल नाटक का ही अंग है, यद्यपि उद्देश्य वही है, परन्तु नाटक कलाके नियमानुसार शब्दोंके बन्धन से मुक्त होकर घटनाओं को अपने शब्दोंमें लेखबद्ध किया है। जो कुछ वर्तनमें होता है वही टपकता है। अपनी योग्यता के अनुसार जहां तक पहुंच थी पहुंच गया, अब कद्र करना न करना आपके हाथ है।

"ज़ेबा"

इल्तमाकी जुर्म

है यदि कोई महाशय इस नाटकको स्टेज पर खेलनेका विचार करे, क्योंकि पहले तो हमने यह नाटक केवल प्रेमी जनो और देश प्रिय सज्जनो के पढनेके वास्ते ही तैयार किया है, और दूसरी बात यह है कि महात्मा तिलक गाधी और शौकत अली आदि जैसी महान् आत्माओ की स्टेज पर नकल उतारना एक ऐसा पाप है जिसका प्रायश्चित होना ही असम्भव है।

इस आवश्यक निवेदन को सपूर्ण नाटक मण्डलिया नोट कर ले।

"जेबा"

॥ मङ्गलाचरण ॥

नट (सूत्र धार) व नटीका परमात्मा की स्तुति
करते हुए दिखाई देना।

गाना।

चरण शरण तुमरी सुखदाई।
सकल जगत के आप सहाई॥
दुख सङ्कट के हरणहार सब के दाता हो उदार।
कुद्रत नुद्रत पर निसार॥
सत विश्वासी असत विनाशी-हो सुखराशी।
सृष्टि सुन्दर सरस रचाई॥

नटी-प्राणनाथ! आज इस रङ्ग भूमि पर कौनसा नाटक दिखलाओगे?

नट-प्रिये! उस नाटक का नाम लेते मेरी जबान दरती है, क्या पूछती हो, दुखकी शिलासे आत्मा पिसा जाती है।

खुशी का यह नही परयोग गमका यह फसाना है।
इस नाटक यह करुणामय सभासदोंको दिखाना है।
कि जिससे वे तरसको रहम की आदत सिखाना है।
जो सङ्ग दिल है उन्हें भी खून के आंसू रुलाना है॥

नटी-मन की आजादी को गमकी बेड़ियोंसे जकड़ने वाला दुखके फौलादी पंजेसे अन्तरात्मा को पकड़ने वाला वह ऐसा कौनसा इतिहास है जिसका नाम लेनेसे पहले ही आपकी सूरत उदास है?

दुरख़लाकी जुर्म

है यदि कोई महाशय इस नाटकको स्टेज पर खेलनेका विचार करें, क्योंकि पहले तो हमने यह नाटक केवल प्रमी जनो और देश प्रिय सज्जनो के पढनेके वास्ते ही तैयार किया है, और दूसरी बात यह है कि महात्मा तिलक गांधी और शौकत अली आदि जैसी महान् आत्माओ को स्टेज पर नकल उतारना एक ऐसा पाप है जिसका प्रायश्चित होना ही असम्भव है ।

इस आवश्यक निवेदन को सपूर्ण नाटक मण्डलिया नोट कर ले ।

"जेबा"

॥ मङ्गलाचरण ॥

नट (सूत्र धार) व नटीका परमात्मा की स्तुति
करते हुए दिखाई देना।

गाना।

चरण शरण तुमरी सुखदाई।
सकल जगत के आप सहाई॥
दुख सङ्कट के हरणहार-सब के दाता हो उदार।
कुद्रत नुद्रत पर निसार॥
सत विश्वासी असत विनाशी-हो सुखराशी।
सृष्टि सुन्दर सरस रचाई॥

नटी-प्राणनाथ! आज इस रङ्ग भूमि पर कौनसा नाटक दिखलाओगे?

नट-प्रिये! उस नाटक का नाम लेते मेरी जवान थर्राती है, क्या पूछती हो, दुखकी शिलासे आत्मा पिसी जाती है।

खुशी का यह नही परयोग गमका यह फसाना है।
हमें नाटक यह करुणामय सभासदोंको दिखाना है॥
कि जिससे वे तरसको रहम की आदत सिखाना है।
जो सङ्ग दिल है उन्हें भी खून के आसू रुलाना है॥

नटी-मन की आजादी को ग़मकी वेडियोंसे जकड़ने वाला दुखके फौलादी पजेसे अन्तरात्मा को पकड़ने वाला वह ऐसा कौनसा इतिहास है जिसका नाम लेनेसे पहले ही आपकी सूरत उदास है?

नट-वह इतिहास जिसने भारतवर्षमें दया दृष्टि के बदले खून के छींटे उड़ाए हैं, जिसने योग्य पुरस्कार के बदले आकाश से आग के गोले बरसाए हैं।

जिसका है हर एक फिकरा खून से सींचा हुआ।
जिसका फोटो बे गुनाह ने मरके है खींचा हुआ।
जिसके मजमू से लहू की आ रही सौ बास है।
खूने नाहक से जो इक गूधा हुआ इतिहास है॥

नटी-तो मतलब की तर्फ आइये, उसका नाम तो बतलाइये पुराना है या ताज़ा यह तो फर्माइये ?

नट-पुराना नहीं बल्कि ताजा, बागमें खिले हुए खूबसूरत फूलकी मानिन्द बिलकुल ताजा।

अभी तक जहर है बाकी जो उगला सापने फन से।
निशा मिलता है बर्बादी का इस उजडे नशेमन से॥
अभी तक जख्म ताजा है जिग्र के जो लगे गन से।
लहू का रङ्ग अभी उतरा नहीं कातिलके दामन से॥

नटी-क्या इसी बीसवी सदी का वृत्तान्त है ?

नट-हा, और कोई दो एक वर्ष का वृत्तान्त है।

अब तक हैं उस अग्नि से पडे सीने पे छाले।
सुनने में अभी आते हैं विधवाओं के नाले॥
अब तक भी अनाथो की वही आहो बका है।
भारत का जिग्र जुल्म के खञ्जर से छिदा है॥

नटी तो क्या यह कोई भारतवासियों की बिपदा है, भारत-वर्ष की कथा है ?

नट-हां उस आर्य्य सेवित भारतवर्ष को आज कई सदियों से अन्य जातियों के पैरों मे कुचला जा रहा है, जो गुलामी को जंजीरोंमें जकडा हुआ अन्दर ही अन्दर गमसे घुला जा रहा है, वह भारत जिसके हाथ पाओं सुनहरी जंजीरों मे जकडे हैं, जिसके मनमें बुद्धि और आत्मा विदेशी विचार के रङ्ग में रंगी है, जिसके सिर पर अनर्थ के भाले हैं, और जबान पर ताले हैं।

बन्द पिंजरे में है पर आज्ञा नहीं फरियाद की।
घुटके मर जाए यही मर्जी है बस सैयाद की॥

नटी-भारतवर्ष में ऐसा कौनसा अनर्थ हुआ, निर्दोष ऋषि सन्तान पर अनर्थ करने को कौनसा समर्थ हुआ ?

दोहा—भारत को गुणवान है जो भावी सन्तान।
किया ऋषि सन्तान का है किसने अपमान॥

नट-उस राक्षस रूपी मार्शल ला ने।

नटी-मार्शल ला ने क्या अनर्थ किया ?

नट-वह अनर्थ जो आज तक किसी न्यायशाली हाकिम ने अपनी निर्दोष प्रजा पर नहीं किया। चीन जापान, रूस, ईरान, तुर्की, अर्बिस्तान, फ्रांस, इङ्गलिस्तान का इतिहास खोल कर देखा, मगर ऐसी करुणा जनक घटना न पाओगे। कहने

को मार्शल ला दो शब्द हैं, जरासी जबान हिलानेका नाम है, परंतु भारतमे आज इस मार्शल ला की बदौलत कितने आत्माओंका जीना हराम है, घर घर मे कुहराम है।

अच्छा बुरा न देखा सब को लिताड़ डाला।
मुद्दत से जो बसा था उसको उजाड़ डाला॥
रौलटने भी निकाला यह चोचला जफाका।
भारतको यह मिला है अच्छा सिलह वफा का॥

नटी-लेकिन मार्शल ला तो बागी प्रजाके वास्ते है, उस प्रजा के लिये नही, जो राजा की खातिर अपनी जान तक लड़ा दे, राजा के हित को रणभूमि मे अपना पवित्र खून बहा दे, जो राजा के गौरव रूप देवता पर अपने प्यारे बच्चोंको भेट चढ़ा दे।

दिया इङ्गलैण्ड ने भारत को जो समरा वफाओ का?
सिलह था यही नेकी का यह बदला था वफाओ का?

नट-प्रिये! आज इस घटना से इङ्गलैण्ड के नाम पर कलङ्क का टीका लग रहा है। एक मछली सारे जलको गन्दा कर देती है, एककी मूर्खता तमाम जातिको परागन्दा कर देती है।

ओडवायर गर न होता तो न होता यह अनर्थ।
खूनरेजी को न होता इस तरह डायर समर्थ॥
ओडवायर शह अगर देता न उस जल्लाद को।
हौसला पड़ता न फिर डायर सितम ईजादको॥

नटी-डायर और ओडवायर कौन ?

नट-पंजाबका सङ्ग दिल लाट ओडवायर और जल्या वालेका जल्लाद जरनैल डायर।

नटी-प्रजा का रक्षक और प्रजाका खून करने वाला जिस वतनमें खाया उसी को छेद कर डाला, जिसके सायेमें विश्राम किया, उसी दरख्त को जडसे उखाड दिया, जिस खिर्मन से सारा ससार रोजी पाता है, उसीको उजाड दिया ?

सन्तरी ही चोर हो तो कौन रखवाली करे।
चमन का क्या हाल जब माली ही पामाली करे॥

नट निस्सन्देह, इन हाकिमो ने बादशाह की दी हुई ताकत और तलवार का बेजा इस्तामाल किया है। भारत के कुलहाड़े से भारतही को हलाल किया है।

अगर चलती रही गोली यूही निर्दोष जानो पर।
तो कौए और कबूतर ही रहेगे इन मकानो पर॥
मिटा डालेगे मर इस तरह, हाकिम अपनी पर्जा को।
हकूमत क्या करेगे फिर वह, मरघट और मसानों पर॥

नटी-अनर्थ है इन हाकिमोने भारतका बडा अंपमान किया।

नट—बल्कि यो कहो कि बडा ऐहसान किया।

पकड कर कान से इस ओडवायरने उठाया है।
पडे सोते थे तोपोसे यह डायर ने जगा या है॥

अगर गोली न चलती खूनके नाले न गर बहते।
न जाने कब तलक हम ख्वाब गफलतमें पड़े रहते॥

नटी-तो क्या आज इस घटना का नाटक दिखलाओगे।

नट-हां आज इसी घटनाके रोचक दृश्य दिखलायेंगे न्याय और अन्याय का चित्र खेंच कर बतलायेंगे, जिससे भारतवासी अपने अधिकार को जानकर सरकार को अपनी बीती सुनायेंगे, अपना दुखड़ा राजा के कानों तक पहुंचायेंगे।

गाना।

रोना है आप खुद भी औरों को आज रुलाना है।
भारत के दुखिया पुत्रों का रो रो कर हाल सुनाना है॥
निरापराध जो कत्ल हुये डायर के अग्नि शस्तर से।
उनके जो दुखिया बंधु हैं उनका दुख दर्द बटाना है॥
किस तरह आज कल दुनिया में नेकीका बदला मिलता।
जो साथ हमारे बीती है वह विपदा हमें बताना है॥
किस तरह पशुवत होता है बर्ताओ भारत पुत्रों से।
भारतके जो हितकारी है उनको यह चित्र दिखाना है॥
अपराध नहीं है गैरोंका ह दोष हमारी किस्मत का।
यह भारत एक अकेला है और बैरी एक ज़माना है॥

——o——

पूरा ड्रामा।

पंजाब ट्रैजिडी

अर्थात्

ज़ख्मी पंजाब।

सीन पहला एक्ट पहला

(स्थान गांधी आश्रम)

महात्मा गांधी का भारत माता की उपासना
करते हुए दिखाई देना।

गाना।

जय जय बन्दहु सकल सुखकारी।
जननी जन्म भूमि महतारी॥

जय जय श्रीकृष्ण की माता, जय रघुवरकी जनम प्रदाता।
तोरी रज मस्तक पर धारूं, तो पै तन मन धन बलिहारूं।
तू पदार्थ सब उत्पन्न करनी, गङ्गा जमना हिरदे धरनी।

॥ जय जय ॥

गांधी-(जबानी)।

आज प्रसन्न हो कि माता दर्दो गम जानेको है।
अब तो पच्छिम से कोई अच्छी खबर आने को है॥
तेरे बच्चोंने वफ़ाये को है इंग्लिश राज से।
राज कर देगा तसल्ली अब तेरी स्वराज से॥

(आवाज़ भारत चित्रसे भारत का प्रत्यक्ष देवी
स्वरूपमें प्रकट होना।)

भारत—

दोहा—तुझको देकर जन्म में धन्य हुई हूं लाल।
एक तेरे पुरुषार्थ से जाति हुई निहाल॥

गांधी-हे माता, हे जननि ! हे सर्व सुख दाता !!! तेरी सेवा करना, तो प्राणी मात्र का धर्म है, जिसने तेरे उदर से जन्म लेकर तेरी कुछ सेवा नही की वह परले दर्जे का बेशर्म है।

तूने जन्म दिया है हमको तूने दूध पिलाया।
तूने पाला पोसा हमको तूने लाड लडाया॥
लाखों दिये पदारथ हमको तूने मनुष्य ब या।
गङ्गा जमना और हिमालय सब तेरी है माया॥
तेरी रजके बदले लू मै राज न यह पृथ्वी का।
मैं अभिलाषी हूं अयमाता शरणागत पदवी का॥

भारत-तेरे जैसे जिस देश में सपूत हो उसका अवश्य

उद्धार होगा, जिस नावके केवट तुम हो वह बेडा जरूर पार होगा।

यूं तो लेते है जनम खा पी के मर जाते हैं सब।
और मुसाफिर की तरह से कूच कर जाते है सब॥
यूं तो सब चलते है साधारण धर्म उपदेश पर।
जन्म है पर धन्य उसका मर मिटे जो देश पर॥

गांधी-हे जननि! मै कुछ भी नही तेरी पावन रजका एक जर्रा मुझ से अधिकतर है। तेरी खाक पर रींगने वाला एक तुच्छ जीवधारी मान और रुतबे मे मुझसे बेहतर है। मेरी शान मेरा सन्मान इसीमे है कि मै भारत सन्तान हू तेरी भक्ति की अग्नकुण्डका एक नाचीज बलिदान हू।

जब तक मैं जियोगा तेरी सेवा ही करूंगा।
और मौत जो आई इसी आशामे मरूंगा॥
जब जब हो मेरा जन्म इसी देशमें जन्मूं।
हर बार इसी देश के हित प्राण तियागूं॥

भारत तो हे आर्य्य पत्र! क्या अब भी कुछ विलम्ब है, स्वाधीनता जो मेरा जन्म अधिकार है, अब भी मिलनी दुशवार है, क्या किसीको सेवा और मेहनत भी वृथा जा सकती है, आम की शाखा धतूरेका फल ला सकती है,

जो कुछ थी पास मेरे पूंजी इंग्लैण्ड पै उसको वारा है।
अन्न के भण्डार किये खाली बच्चों को भूखा मारा है॥

गिन गिन कर भेंट चढ़ाए हैं बच्चों से क्या कुछ प्यारा है।
एक एक जिगर का टुकड़ा भी दे देना किसे गवारा है॥

गांधी-माता ! नेकी कभी जाया नहीं जाती अंग्रेज कौम ऐसी ऐहसान फरामोश नहीं, हमें अभी तक उसकी तरफ से असन्तोष नहीं, शान्ति करो, वह देखो, आजादी की देवी समुन्दर की विकट लहरों पर सवार होकर पच्छिम से इधर को आ रही है।

वेद में व्याख्याता, शास्त्रों की ज्ञाता सर्व सुख की दाता, शुद्धाचरण की माता आ रही है।

नाज़ की लहरों पे वह देखो तो इठलाती हुई।
आ रही आनन्द की वर्षा है बर्साती हुई॥
आज सदियों की यह आशा कौम की पूरन हुई।
क्या न निकलेगी गुलामी अब भी घबराती हुई॥

(देवी रूप से आजादी का दाखल होना)

आजादी-तोड़ दो, गुलामी की जंजीरों को आत्मिक शक्ति के झटके से तोड़ दो, स्वतन्त्रता विचारों की ठोकर से पराधीनता के सुनहरी खिलौने को तोड़ दो।

छोड़ दो बस आज से परतन्त्रता के मशगले।
आओ अय भारत के बेटो मेरे झण्डे के तले॥

आज से आकाश और पृथ्वी यह सब आजाद है।
मरना और जीना तुम्हारा सब कुछ अब आजाद है॥

(भयानक राक्षस रूप से रौलट बिल का दाखल होना और आज़ादी का दामन पकड़ लेना और भारत मातासे भेंट करने से आज़ादी को रोक देना)

रौलट बिल—ठहरो ठहरो, अपने पवित्र आत्मा को कलुषित मत करो, इस गुलामी की धर्ती पर पैर मत धरो।

न अपना आप खो बैठो तबीयत की रवानी से।
कहीं अपमान हो जावे न या नाक़द्रदानी से॥
अभी कुछ और सदियों तक समुन्दर की हवा खाओ।
कहीं इन बागियोंसे मिलके तुम बागी न हो जाओ॥

गाधी—(रौलट बिल से) कौन हो, भारत के पवित्र अधिकार, वफादारी के अनमोल पुरस्कार, प्राचीन भारत के शृङ्गार अर्थात् आजादी को अपनी जन्म भूमि में आने से, अपनी माता की गोदी की तरफ़ हाथ फैलाने से रोकने वाले तुम कौन हो ?

मसल कर हम को पैरों से हमारा नाश करते हो।
हमें क्यों अपने अधिकारोंसे तुम निराश करते हो॥

यह आजादी हमारे बाप दादा की वरासत है।
किसी का हक दबा लेना कहां की यह सियासत है ?

रौलट बिल—तुम सियासत की बातों को क्या जान सकते हो, तुम महात्मा हो, पालिटिक्स के गूढ़ तत्व को क्या पहचान सकते हो।

करो तुम धर्म का धन्धा धर्म का काम करो।
पकड़ के हाथमें माला को राम राम करो।

गांधी—लेकिन वह कौनसी नयी वस्तु है जो तुम्हें हमसे अधिक आजादी का अधिकारी बनाती है, किस बातमें तुम्हारे अंदर हमसे अधिकता पायी जाती है, तुम्हारी तरह हम सम्पूर्ण रङ्ग नहीं, कर्म या ज्ञान इन्द्रियोंसे हीन हैं, हमारे दिल में दिमाग नहीं या किसी और मानवी वस्तु से कुदरती तौर पर विहीन हैं।

क्या हो तुम कुछ देवता हम दुर्बुद्धि हैवान हैं।
ए हम भी तो भगवान के हैं पुत्र और इन्सान हैं॥

रौलट बिल—लेकिन तुम्हारे हाथ में यह अधिकार देना हमारे लिये इखलाकी खुदकुशी से बेहतर है।

गांधी—किस तरह ?

रौलट बिल—अगर किसी दीवाने, सिड़ी, सौदाई के हाथ तलवार पकड़ा दी जाय, तो वह जरूर उस तलवार से अपना या दूसरों का गला काट देगा।

जो अय्याशी मे डूबे है जो गहरी निद्रा मे सोये हैं।
जो कमजोरी के तागे हैं अविद्या से परोये है।
अविद्या कायरी सुस्ती हो जिन लोगो का हिस्सा है।
वह आजादीको क्या समझे यह हमलोगोका वर्सा है॥

गाधी—हम कायर है, लेकिन हमे कायर किसने बनाया।
तुम लोगोके स्वार्थ ने। हम गुलाम है मगर हमे मिथ्याचार की शिक्षा देकर गुलामी का हार किसने पहनाया ? तुम लोगो के स्वार्थ ने।

वर्ना हम तो वीर थे वीरो की हम सन्तान थे।
तुमको भी विद्या सिखाई हम तो वह विद्वान थे॥
आज लेकिन गर्दिशे अय्याम से नाकाम है।
आपकी किरपा से पर आधीन हैं वदनाम है॥

रौलट बिल—वह किस्सा अब पुराना हो गया तुम्हारी गुरुता की एक जमाना हो गया। जब तक तुम्हें नये सिर से आजादी की शिक्षा न दी जायगी, यह आजादी तुम्हारे हिस्से में नही आएगी।

वह कर सके तमीज न दिन और रात मे।
देदो अगर चिराग भी अन्धे के हाथ में॥

गाधी—लेकिन जब तक किसी आदमी को पानी में बे सहारा न छोड दिया जायगा, उस को हरगिज तैरना नही आएगा, जब तक भारतवासियों को आजादी की आबो हवामें

न छोड़ा जायगा, तुम्हें उनकी योग्यता का जन्म भर तक विश्वास न आयेगा।

रौलट बिल--मगर तुम लोग बागी हो, बगावतसे आजादी का कुछ सरोकार है?

गांधी—मिथ्या विचार है, क्या बादशाह वक्त का सङ्कट में हाथ बटाना बगावत है, क्या लड़ाइयों में बादशाह की खातिर जर लुटाना बगावत है, क्या गरीब बच्चोंको रण देवी की भेंट चढ़ाना बगावत है?

सर कटा देने में जिन को जरा इन्कार नहीं।
हम हैं वह जो कि बगावत के रवादार नहीं॥
यह हमारे तो धर्म के भी अनुसार नहीं।
हम हैं बागी तो तो यहां कोई वफादार नहीं॥

रौलट बिल—कुछ भी हो, तुम्हारी आशाओं को अब अच्छी तरहसे कुचल दिया जायगा, तुम्हारी गुलामी की जञ्जीरों को आज से और भी ज्यादा कठिन किया जायगा।

गांधी—इसका कारण।

रौलट बिल—आने वाले सङ्कट का निवारण, हमने तुम्हें उन अपराधों से बाज रखने की ठानी है, जिनसे हमारे देश और जाति की हानि है।

गांधी—तो क्या देश भक्ति जुर्म है?

रौलट बिल—हमारे लिये नहीं तुम्हारे लिये जुर्म है, और

अब इस जुर्म का मुजरिम न्याय प्राप्त नहीं कर सकेगा, यही जुर्म रोकने की सबील है अब मेरे राजमे न दलील है न वकील है और न अपील है।

नाला नही जारी नहीं फरयाद नही है।
आगेकी तरह हिंद अब आजाद नहीं है॥

गांधी—अगर तुम्हारी हस्ती हमारी शहरी आजादी के प्रवाह को रोकेगी आजादीके अमृत सरोवर तक पहुंचने के लिये हमारी राहको टोकेगी तो हम तुम्हारी हस्ती से ही इन्कार कर देंगे, अपनी पवित्र धर्म भूमि पर पावों फैलाना तम्हारे लिये दुशवार कर देंगे।

हम भी है मनुष्य हम कोई हैवान नही है।
पत्थर नही तिनका नही बे जान नही हैं॥
माना कि है पंजे में हम इस वक्त तुम्हारे।
सीने मे है दिल, दिलमे ह इक दर्द हमारे॥

रौलट बिल—अगर तुम मेरी हस्ती से इन्कार करोगे तो मैं बल कौशल से मनाऊंगा।

गांधी—तुम्हारा बल कौशल मेरे शरीर से मनवा सकता है, लेकिन आत्मा को कदाचित् नही हिला सकता है।

भट्टी में चाहे झोंक दो पानी में बहा दो।
शस्त्र से काट दो कि फांसी पर चढा दो॥
इक वार से तलवार से गर्दन को उडा दो।

नस नसको मेरी काट दो रग २ को मिटा दो ॥
सब सख्तियां सहलूंगा मै प्रह्लाद की न्याई।
दुनिया में जियूंगा मगर आजादी की न्याई ॥

रौलटबिल—जानते हो कि मेरा हुक्म न माननेसे क्या होगा?

गर तुम्हारे क्रोध से सीना स्याह हो जायगा।
जानते लेलो है अब लाशा तबाह हो जायगा ॥

गांधी—और क्या होगा ?

रौलट बिल—देखो, अभी मै प्यार से समझा रहा हूं। मान जाओ।

(चमत्कार लिबासमे रिफार्म का आना)

रिफार्म—(रौलट बिल की हां में हां मिलाकर) हां मान जाओ, तुम तो बड़े भोले भाले धर्मात्मा हो मान जाओ, वृथा दुख न उठाओ, आराम से जिंदगी के चार दिन बिताओ (रिफार्म का खिलौना देकर) लो इस रिफार्म स्कीम का आनन्द उठाओ, इसको ग्रहण करो, इससे आजादी खारदार रास्ता साफ हो जायगा, और यह शीघ्र ही तुम्हें मंजिले मकसूद तक पहुंचायेगा।

गांधी—इससे क्या होगा ?

रिफार्म—धारा सभाओं मे तुम्हारे अधिकार बढ़ जायगे, भारती सरकार के आला औहदों पर तुम्हारे भाई शोभा पायगे जो आसानी के साथ राजा तक प्रजा की आवाज पहुंचायेंगे।

आज़ादी—हे आर्य्यपुत्र ! स्वीकार करनेसे पहले बुद्धि को सावधान कर लेना, अमृत और विषको पहचान कर लेना।

नहीं दम इसमें कुछ भी यह सियासतका सराफा है।
खिलौना है यह चमकीला यह इक खाली लिफाफा है॥

रौलट बिल-महात्मा स्वीकार कर लो।

गाधी यह खिलौना देकर क्या बच्चों को बहलाते हो, मुंह में मिठाई देकर गुलामी की सख्त जञ्जीरों से जकड़ना चाहते हो।

काम करना चाहिये अपना बेगना देख कर।
पांवो धरना चाहिये रुख और जमाना देखकर॥
हिर्स और लालचमें जो मूरख है वह फंस जायगा।
मुर्ग दाना पर नहीं फंसता यह दाना देखकर॥

—(०)—

(टीला और पर्दा)

सीन दूसरा ऐक्ट पहला

स्थान तिलक आश्रम।

(महात्मा तिलक का गीता का पाठ करते हुए दिखाई देना। आकाशवाणी द्वारा देव बालाओं के गाने की आवाज)

गाना।

तेरी सृष्टि का अय भारत बड़ा सुन्दर नजारा है।
कहीं कैलाश पर्वत है कहीं गङ्गा की धारा है॥
फलों से हैं लदी शाखें शजर फूले हैं फूलों से।
कहीं बेला कहीं चम्पा कहीं पर गुल हजारा है॥
तेरी पूजा के लायक शुद्ध वस्तु पर नहीं मिलती।
नगर में खोज कर ली है बनों को ढूंढ मारा है॥
है अमृत दूध गाये का करूं क्या दूध से पूजा।
मगर वह भी नहीं शुद्ध है कि बछड़े ने झाड़ा है॥
बड़े सुन्दर खिले है फूल पर चूमे है भवरों ने।
तुझे यह भोग दूं जूठा मुझे यह कब गवारा है।
तो फिर यह मन मेरा शुद्ध है बड़ी अनमोल पूंजी है।
अगर स्वीकार हो माता तो लो यह तुम पे वारा है॥

तिलक—हे परम दयालु भगवान शक्तिमान !! देख देख मेरी जननी भारतभूमि कितनी दुखी है। आज मेरे भारतवासी भाई दीन दशा को प्राप्त हो रहे हैं।

हिन्दियों के वास्ते कोई ठिकाना भी न था।
गैर मुल्कों में तो पहले आबोदाना भी न था॥
अब तो अपने देशका भी बास मुश्किल होगया।
पीसने के वास्ते आकाश भी सिल हो गया॥

बचाओ, भगवान, चारो दिशाओ से सङ्कट के ओले वर्स रहे है, जननी के बच्चे भूखे है, टुकडे २ को तर्स रहे हैं, प्रति दिन सवा मन स्वर्ण दान करने वाले दानवीर करण जी सन्तान, आज कौडी कौडी को लाचार है, एक भारत है और लाखो मसीबतो की भरमार है। भगवान इस बूढे शरीर को बल प्रदान करो, कि जननी की सेवा कर सकूं, मेरे भारतवासी भाइयो का कल्याण करो।

शीघ्र दो शक्ति मुझे जननी का मै सेवन करू।
हो जरूरत तो मै तन मन और धन अर्पण करू॥
सोते उठते बैठते स्वदेश का हो ध्यान हो।
सुद्ध बुद्धि दो कि जिससे देशका कल्याण हो॥

(मिष्टर पटेल का दाखल होना)

मिस्टर पटेल—भगवान तिलक की जय, बाल गङ्गाधर तिलक की जय।

तू हो सरस्वती का सुहावन तिलक है।
तू भारत के मस्तक का पावन तिलक है॥
वतन के दुलारे सदा तेरी जय हो।
हे भारत के प्यारे सदा तेरी जय हो॥

तिलक—आओ प्यारे पटेल, आप जैसे सपूतो को पाकर भारत क्यो न प्रफुल्लित होगा, देशमें स्वदेश भक्ति का दीपक क्यो न प्रज्वलित होगा।

जिनको यह आन मान है औरों के वास्ते।
सन्तान और जान है औरों के वास्ते॥
जिनको न अपने देश के सङ्कट से बेकली।
उनसे ज्यादा कौन नमकहराम का है वली॥

पटेल—भगवन यह सब आप जैसे शुद्ध आत्माओं का प्रताप है कि हमारी रसना को सदा जननी का जाप है।

कोई भी आफत चाहे आजाए मेरी जान पर।
दुख करे शासन सदा इस आत्मिक स्थान पर॥
तो भी मैं तत्पर रहुंगा देश सेवाके लिये।
है मेरा सर्वस्व हाजिर इसकी पूजा के लिये॥

तिलक—कहो प्रियवर, भारत भक्त, देशका क्या समाचार है?

पटेल—जिधर देखो रौलटबिलकी पुकार है, आज हर एक भारती इसी के चिन्ता रूपी बन्धनमें गिरिफतार है। नेताओं (लीडरों) के सुविचार के गर्दन पर यही भूत सवार है। युद्ध समाप्त होने पर आशा लगाई थी, कि महंगाई दूर हो जायगी, प्रजा आजादी की हवा खायेगी, परन्तु अब प्रतीत हुआ कि भारत के भाग्यमें ख्वारी है, वही भूख, वही गुलामी, वही लाचारी है और इन तमाम मुसीबतों पर अभी एक और आफ़त की इन्तिजारी है।

हो रही है अब नयी तदबीर भारत के लिये।
बन गई पराधीनता तकदीर भारत के लिये॥

थी प्रथम सोने की कड़ियां जिनमें था जकड़ा हुआ।
बन गई अब आहनी जञ्जीर भारत के लिये॥

तिलक—अब ऐलानिया नौकरशाही ने बतला दिया कि तुम्हारी कुर्बानियों की कीमत गुलामी है तुम्हारी किस्मत में हमेशा जिल्लत और बदनामी है, सर्वस्व बलिदान करने पर भी अपनी अभिलाषाओं में नाकामी है।

धक्के मिले हैं योग्य पुरस्कार के बदले।
ओले पड़े हैं मेंह की बौछाड़ के बदले॥

पटेल—तात्पर्य यह कि दफ्तरी हकूमत का मशा पवित्र नहीं है।

तिलक—बल्कि उसका यह मशा है कि रौलट बिल से भारतवासियों की कलम और जबान छीन ली जाये, ताजा कुर्बानियोंके सिलेमें स्वराज के लिये जो प्रार्थना की जाने वाली है, उसको अभी से दबा दिया जाये, परंतु स्वतन्त्र विचार दबाये नहीं दबते।

ओस के कतरों से शोला आग का बुझता नहीं।
मोम के हथियार से लोहा कभी दबता नहीं॥

पटेल—तो भगवन्, जब नौकरशाही ने निराशा की ज्वाला पर रौलट बिल का तेल छिड़क दिया, भारत के हित का जरा विचार न किया, तो फिर आप की क्या सम्मति है?

है वृथा नाले हमारे आह बेतासीर है।
हर तरह गर्दिशमें अब तो देश की तकदीर है॥

है निशाना जुल्म का और जोर का मञ्जीर है।
क्या कोई भारतके बच जाने की भी तदवीर है॥

तिलक--हा, दफ़्तरी हकूमत की मनमानी कारवाइयोंका मुकाबला करने के लिये एक हथियार बडा उपयोगी है।

वार जा सकता नही खाली यह वह तलवार है।
कुन्द होता ही नही हर्गिज यह वह हथियार है॥
जिसका हो प्रयोग तो सारा जगत भय भीत हो।
हार नौकरशाही की और हिन्दियों की जीत हो॥

पटेल—क्या याचनिया सवाल ?

तिलक—नही।

पटेल—सत्याग्रह की ढाल ?

तिलक—नही।

पटेल—आलमगीर हडताल ?

तिलक—नही, बल्कि अब हमे दफतरी हकूमत के वार को रोकने के लिये वह हथियार हाथमें लेना पडेगा, जिस हथियार को ध्रुव भक्त ने इस्तेमाल किया, जिस हथियारसे पहलाद ने असत्य को पामाल किया, जिस हथियार से मीरा ने विजय पाई, जिस हथियार के धारण करने वालो ने कभी शिकस्त नही खाई।

दोहा—साप मरे लाठी बचे और मतलब बर आय।
हीग लगे नही फिटकरी रङ्गभी चोखा आय॥

पटेल—अर्थात्।

तिलक—अर्थात्, असहयोग, नामिल वर्तन, अदम तआवन नान को आपरेशन। अन्याय और असत्यसे असहयोग करना शास्त्र का भी प्रमाण है, अनिष्ठाचार से मुकाबला करना, असत्य से युद्ध करने के लिये हमारे पास यही अ म सामान है।

सेवक तजो कनिष्ट तजो स्वामी अन्याई।
तजो अधर्मी मित्र तजो निर्लज्ज लुगाई॥
तजो मुकद्दमे बाज और झगड़ालु भाई।
तजो पुत्र बदकार तजो खुदगर्ज सहाई॥
तजो राजसम्बन्ध न हो जिसमें कुछ न्याय।
सुख चाहो गर मित्र यही है एक उपाय॥

पटेल—तो हे लोकमान्य भगवान, भारतवासियों को असहयोग का उपदेश कीजिये, और संसार मे देशोद्धार के यश को और भी निर्मल कर लीजिये।

वतन को तुम हो पर भरोसा बड़ा है।
तुम्हारे ही साहस पै भारत खड़ा है॥
अगर आप की जन परस्ती न होती।
तो दुनिया में भारत की हस्ती न होती॥

तिलक—प्यारे पटेल, मैं तो भाइयों का सेवक, जननी का दास और स्वदेश का पुजारी हूं, भारत के गौरवार्थ ही बन्धनमें जन्म बिताकर यह बाल सफेद हुए है, और अन्तिम भेट मे भारत भक्ति की वेदी पर प्राण निछावर कर दिये हैं।

भारत के दर की खाक हूं अदना फक़ीर हूं।
मिट्टी भी मुझ से बढ के है इतना हक़ीर हूं॥
सेवा के वास्ते मेरा जीवन तैय्यार है।
एक एक रोम मेरा वतन पर निसार है॥

पटेल महाराज! हीरा कभी अपने मुंह से नहीं कहता कि मेरा इतना मोल है, आपका जीवन तो जननी के लिये अनमोल है, आप के जीवन की एक साधारण घटना देश भक्ति का पूर्ण इतिहास है, आप जननी के सच्चे सेवक हैं, इस लिये हर एक भारत पुत्र आप का दास है।

जननी दशा सुधार के आधार आप है।
भारत के मित्र भारती सालार आप हैं॥
औरों के हित के वास्ते तैय्यार आप है।
सच्चाई और धर्म के औतार आप है॥

तिलक-लेकिन इस समय महात्मा गांधी की तपस्या का सूरज कीर्त्ति के आकाश मण्डल में जगमगा रहा है, उनके सुधर्म का तेज भारतवासियों को सन्मार्ग पर चला रहा है, मुझे किसी प्रकार से इन्कार नहीं, परंतु वह अभी असहयोग के लिये तैयार नहीं।

वह इक औतार दया के है और दया धर्म के हामी है।
वह भोलेपन पर भूले है अपनी मर्ज़ी के स्वामी है॥
नौकरशाही की तेशे ने हम को हर तरह तराशा है।
लेकिन इस नौकरशाही से उन को अब तक भी आशा है॥

पटेल-तो पत्थर से नर्मी की आशा व्यर्थ है।

नाग से करते हैं आशा प्रीति की।
आग से आशा है उनको शीत की॥
क्या बगूला जल कभी बरसायेगा।
मोम पत्थर किस तरह हो जायगा॥

तिलक-मुझे कुछ आशा नही, अब आशाका पात्र भरपूर हो गया, उम्मेद बर आनेका विचार दिल से दूर हो गया, अब पूरा विश्वस होगया कि हमारे प्रार्थना पत्र रद्दी की टोकरीमें पहुंचाये जाते है, हमारे डेपुटेशन खाली तसल्लियो से भुलाये जाते है रोने धोने का कुछ भी असर नहीं दफतरी हकूमत को हमारी आहो का मुत्लक खतर नहीं, परन्तु सच है।

बलवान दौड़ करता है मैदान की तरफ।
निर्बल ढकेला जाता है ढलवान की तरफ॥
बातो के सब्ज बाग दिखाते हैं वह हमे।
दबते है हम तो और दबाते हैं वह हमे।

पटेल-महात्मा गाधी तो अज्ञान नही, फिर उनके हथकडो से क्यो सावधान नही ?

तिलक वह अभी धर्म की नाजक ख्यालियो को राजनीति के गूढ तत्व से अधिकतर समझते है, वह दुश्मन के भी दोस्त है, इस लिये प्राण घाती को अपना मित्र समझते है, लेकिन वह दिन जल्दी आने वाला है जब वह अपनी आखरी शुभ

कामना से मयूस होकर हर तरह से निराश हो जायगी उस समय असहयोग के बिना कोई उपयोगी हथियार वह अपने वशमें न पायेगी।

दो०—होगा नौकरशाही से भारत मे सग्राम।
आएगा असहयोग ही आखिर उनके काम॥

पटेल-और आपकी कृपा से अन्त में असहयोग की जय होगी।

तिलक-हा परमात्मा की इच्छा होगी तो अवश्य ही विजय होगी।

दोहा—जाको राखे साइया मार न सक्के कोय।
बाल न बाका करि सके जो जग बैरी होय॥

गाना।

सारे जहा मे बस हो ईश्वर अगर हमारा।
बाका न बाल हो गर बैरी जहा हो सारा॥
गर मित्र ईश्वर है क्या कर सकेंगे दुश्मन।
तदवीर दुश्मनो की हो जाय पारा पारा॥
प्रह्लाद को मिटाने में क्या कसर रही थी।
उसको बचा रहा था भगवान का सहारा॥
झोंका था राचस ने भट्टी में इस कुवर को।
पर आग बन गयी थी तत्काल जल की धारा॥

सुग्रीव के सहाई जब राम वन गये तो।
कुछ कर सका न बाली परलोक को सिधारा॥
तुम भी रखो अय मित्रो भगवान का सहारा।
कोई न कर सकेगा फिर कुछ बुरा तुम्हारा॥

सीन ऐक्ट पहला तीसरा

स्थान मंदिर।

(सत्याग्रही भारतीयों का आरती करते हुये दिखाई देना)

आरती-ओऽम् जय जय जय महादेव।

प्रेमी जन को तारे कष्ट निवारे॥

भक्त जनन के सङ्कट छिन में दूर करे, जय जय जय महादेव।
सब के हो दाता, तुम पितृ देव प्रिय माता, दीन दुखी तारे॥

॥ दुष्टन पाप हरे, जय जय॥

तुम पर हो बलिहारे हम प्यारे सारे, तुमगे जो श्रद्धा धारे,

॥ वैतरणी को तरे जय जय॥

पहला सत्याग्रही-हे दीन दयाल! तुम ही सङ्कट के हरण-हार हो, तुम ही हमारी आशाओं के आधार हो, इस समय

हम भारतवासियों के गौरव की नाव अन्याय के मंझदार में डगमगा रही है, हे प्रभु! इसे किनारे पर लगाओ, यह देखो सामने रौलटबिल रूपी महा तूफान इधर को आ रहा है।

नज्र आना हो ना मुमकिन कहो साहल न हो जावे।
प्रभु यह हमसे मज़हब का कहीं मायिल न हो जावे॥
हमारे उन्नति मारग में कहो इक सिल न हो जावे।
तुम्हारा नाम लेना भी कहीं मुश्किल न हो जावे॥

दूसरा सत्याग्रही हे कृपा सिंधु, आजहम सत्य धारण करके सत्य मार्ग का प्रण करके, तमाम सङ्कट अपने सिर पर सहन करके तेरे द्वार पर एकत्र हुये हैं, हे प्रभु! हम दीन दुखियों की पुकार, रौलट बिल राक्षसी मायामय अन्धकार है, अति भयानक हत्याचार है, कहीं इससे हमारी रही सही आजादी न छिन जावे, कहीं यह भारतकी गौरव युक्त सन्तान को अन्य देशों की दृष्टिमें और भी जलील न कर दिखावे। हे राजाओं के महाराजा! ऐसी आज्ञा किकरे जिससे यह अन्यायी कानून रूपी राक्षस पवित्र भारत भूमि पर पैर न धरने पाए। इस दुखी देश पर अपना सिक्का न बैठाए।

रावण को तुमने मारा है बाली का सीस उतारा है।
पापी राजाओं का बधकर दुर्योधन को सहारा है॥
तुम सृष्टि पल में नाश करो इतनी ताकत और शक्ति है।
भगवान तुम्हारे आगे फिर रौलटबिल की क्या हस्ती है॥

तीसरा सत्याग्रही-हे करुणा सिंधु ! हम संसारी राजाओं से निराश होकर तुम्हारी शरण आये है।

जगत के कुचले हुये दुनिया के ठुकराये हुए।
आये है द्वार पे तेरे हाथ फैलाये हुये॥
तुम हो राजों के महाराजा सुनो फरियाद को।
कुछ करो चारा कि दुखिया चोट है खाये हुये॥

चौथा सत्याग्रही-हे प्रभु ! हम तेरे धर्म पुत्र धर्म के आज्ञाकारी हैं, तुम्हारी कृपा से सच्चे अधिकारी है, हमारे पास धन नहीं, शक्ति नहीं, समर्थ नही, केवल सत्य का हथियार "अहिंसा परमो धर्म" से ही सरोकार है। भगवान ! हमारे सत्य में बल दो कि शुभ काम कर सके, झूंठ और मिथ्याचार से संग्राम कर सके। हम जो ब्रह्मविद्या में प्रवीण है वही इस तरह पराधीन है। चोर नहीं, डाकू नहीं, किसी के धन पर अन्याय से अधिकार करना नहीं चाहते ?

अपनी मेहनत से खाते है कोई अपराध नहीं करते।
बेशक आजादी चाहते है कोई अपराध नही करते॥
हम सारी दुनिया को रोटी होकर निस्वार्थ खिलाते है।
उसके बदले में हम स्वयं दुनिया मे धक्के खाते है॥

(दो मिथ्याग्रहियों का आना)

मिथ्याग्रही (सत्याग्रही से) क्यों लाला जी, आज दूकान बन्द है ? तुमको तो रात दिन पूजा ही पसन्द है।

सत्याग्रही आज महात्मा गांधी के सत्याग्रह का अवतार हुआ है, आज भारत सदियों की गहरी निद्रा से बेदार हुआ है, आज पहले पहल हिन्दु मुसलमान अपने भेद भाव को भूल कर शुद्ध हृदय से ईश्वर के झगड़े के तले आए हैं, आज स्वाधीनता के अरुणोदय से स्वराज्य नीति के सात्विक मार्ग ने अपने दर्शन दिखलाये हैं।

मिथ्याग्रही—हड़ताल की तह में कोई नाराजगी जरूर होगी।

सत्याग्रही—हां विलायत की रौलट कमेटी ने हमारे लिये कानून नया बनाया है, मरे हुये भारत को मारने का बीड़ा उठाया है।

मिथ्याग्रही—क्या है वह कानून?

सत्याग्रही—आरजूओं का खून।

जो है वतन परस्त वह इतना जलील हो।
उसको दलील हो न वकील और अपील हो॥

मिथ्याग्रही-मगर हड़ताल किस बात की?

सत्याग्रही—परमात्मा से प्रार्थना के लिये, व्रत रखकर मन्दिर में उपासना के लिये।

भगवान से न्याय यह मांगने को आये।
हाकिम जो हैं हमारे उनको दया सिखाये॥

मिथ्याग्रही-मगर मांगनेसे क्या कुछ सरकार देने वाली है, [illegible]ओं की जगत में सदा पामाली है।

बात हमारी मानिये पत्थर की लीक।
बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीक॥

सत्याग्रही—लेकिन परमात्मा से मांगने में हर्ज नहीं।

मिथ्याग्रही—कितने आश्चर्य की बात है तीस करोड़ हिन्दुस्तानियों की यह औकात है, अपनी मानवी सत्व साहस से क्यों नहीं लेते?

सत्याग्रही—पराधीन हैं।

मिथ्यग्रही—शक्ति से क्यों नहीं लेते?

सत्याग्रही—बल नहीं है।

मिथ्याग्रही—खून खराबी से क्यों नहीं लेते?

सत्याग्रही—हिंसा अधर्म है।

मिथ्याग्रही—बगावत से क्यों नहीं लेते?

सत्याग्रही—वफादारी की शर्म है।

मिथ्याग्रही—क्या अत्याचार अपने ऊपर सहे जाओगे?

सत्याग्रही—हां सत्याग्रही बने गे आप दुख उठायेंगे और मन, वचन या कर्म से किसी जीवको न सतायेंगे।

गाना।

सत्याग्रही है नर वही न भय राखे कभी मन में।
न मत छोड़े न प्रण तोड़े जब तक जान इस तन में॥
सितम चाहे कोई ढाले या नस नस छेद कर डाले।
सती यह चोट भी खाले हो बस्तीमें कि हो बन में॥

खड्ग गर मोस पर होवे न उससे भी खतर होवे।
है क्या चिन्ता बमर होते अगर यह उम्र बंधन में॥
हमेशा जोकि निर्भयहो यह निश्चय जिसका निश्चय हो।
जगतमें उसकी जय जय हो यही शक्ति है सतपन में॥

मिथ्याग्रही-(अपने आपको) अरे ऐसे सत्याग्रह की ऐसी तैसी (दूसरे मिथ्याग्रही से) क्यों भैय्या '
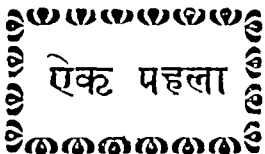
दूसरा मिथ्याग्रही—हां भैय्या।

पहिला मिथ्याग्रही-रौलटबिल जाय जहन्नम में, और यह सब पड़े खाईमें, यारों को तो अपने हलवे माडे का खयाल है छज्जू, फज्जू, और रज्जू को लेकर किसी मकान को आग लगाये और शोर शराबे में माल चट कर जाये।

दूसरा मिथ्याग्रही-इन मूर्खों का यह हाल है तो फिर इनकी दौलत हमारा माल है, हमारा तो यह हाल है कि न सर्कार की पर्वा है न भाइयों का ख्याल है, माल उड़ायेंगे हम

पहिला मिथ्याग्रही-और पकड़ें जायगे लीडर, बन्दर की बला तबेले के सिर पर पड़ेगी।

जो कुछ मजा है झूंठ में सच में कहां वह रङ्ग है।
बस है बडा पाजी वही जिसका खयाले नङ्ग है॥

सीन एक पहला चौथा

स्थान बंगला।

(ओडवायर का भयानक ख्वाब को दुनिया से खौफजदा होकर घबराए हुये दाखल होना)

ओडवायर-कैसा भयानक ख्वाब है, खून की धारा में हजारों ग्रीस बहे जाते है, आत्माओं के भयङ्कर स्वरूप लहू से भीगी हुई लाल झण्डिया लिये डराते है। बच्चों और औरतों की पुकार से कान बहरे हुये जा रहे है, बिना सिर, बिना धड़ बिना टांग के बेशुमार इन्सान मेरी तरफ दौड़े आ रहे हैं।

यह अजब करुणामयी इस ख्वाबकी तासीर है।
चाहिये अब देखना क्या ख्वाब की ताबीर है॥
एक मैं और कितने दावेदार हैं चिमटे हुए।
कोई दामनगीर है कोई गरेबा गीर है॥

लेकिन अभी तक मेरे ऐहदे हकूमत में कोई ऐसी दुर्घटना नहीं हुई, क्या ऐसा समय भी आने वाला है, नहीं कुछ भी नहीं। सियासत की पेचीदगियों में घिरा हुआ एक मुदब्बर का दिमाग थकावट के प्रभाव से अक्सर ऐसे ख्वाब देखा करता

है, अगर इन बातों पर ध्यान दिया जाए तो हकूमत करः कठिन हो जाय कुछ भी हो, पंजाब का सफ़ेद व सफेद मे हाथ है. डायर जैसा दिलावर जर्नल मेरे साथ है, पंजाब देखे और मैं दिखाऊ गा।

वह नमूना सख्तगीरी का दिखाऊ गा इसे।
अपनी मंशा अपनी मर्जी पर चलाऊ गा इसे॥

(इन्साफ़ का देवता रूपमें दाख़ल होना)

इन्साफ-चाहिये कुछ राजनीतिमें दख्ल अल्ताफ का।
खून कर डालो न इस अभिमान में इसाफ का॥
शुद्ध बुद्धि गर न हो इन्सान तो हैवान है।
राजनीति गर न हो तो राज भी श्मशान है॥

ओडवायर-लेकिन सच्ची राजनीति का आदर्श वही दिख लाया जा सकता है, जहा उसकी खालिस आवश्यकता है।

राजनीति वह चलाऊ गा मै अब पंजाब में।
लोग देखेंगे न आजादी की सूरत ख्वाब में॥

इन्साफ-परंतु पंजाब के लोग तो वफादार हैं गद्दार नहीं बहादुर है शेखी के रवादार नहीं।

ओडवायर-कुछ भी हो, जो लोग बजाय बुद्धि के मूर्खता अपील करते हैं, जो दानमें सरकार की तरफ से मिली हुई शहरी आजादी को अशान्ति से जलील करते हैं।

अब उनको मिटाने का वक्त आ गया है।
बल और छल दिखानेका वक्त आ गया है॥

इन्साफ बल और हकूमत को इस्तैमाल करने का क्या यही तरीका है।

ईश्वर ने राज दिया है तो कर्त्तव्य करो राजाओं का।
उद्धार करो अपने बल से कौमो स्वदेश सभाओ का॥
बल ह दिखलाना है तुमको बुद्धि का और भुजाओ का।
तो बन्न कौशल से यत्न करो भारत की शुद्ध आशाओ का॥
उद्धार हो राजा प्रजा का ऐसा भारत मे काम करो।
यश लो न्याय और रीति से और बृटिश राजका नाम करो॥

ओडवायर-लेकिन जिन लोगो के दिमाग जल गए हैं, जो पोलिटिकल रियायते पाकर कपडो से बाहर निकल गए है, क्या उनको तरफ आख बन्द कर ले ?

जिस शक्ति से हमने छोटी कौमों का मान बचाया है।
जिस शक्ति से जर्मन शक्ति को भी नीचा दिखलाया है॥
भारत के सियासी झगड़ो को अब उस शक्ति से जोडेंगे।
बन्धन मे सब को डालेगे अब एक न बागी छोडेंगे॥

इन्साफ—क्या आप पवित्र विचारो के स्वामी नेताओ को बागी और राजविद्रोही समझते है, लेकिन स्मरण रखिये राजनीति को कुछ वही समझते हैं।

ओडवायर—वह तमाम आदमियो को कुछ समय के लिये

धोखा दे सकते हैं और कुछ आदमियों को हमेशा के लिये बहका सकते है, लेकिन तमाम को हमेशा के लिये अपने मार्ग पर नही चला सकते है।

अगर यह सर उठायेंगे तो मैं फौरन दबा दूंगा।
हो इबरत जिससे औरों को उन्हें ऐसी सजा दूंगा॥

इन्साफ-सजा मे आपने क्या कुछ कसर छोड़ी है, आपने पाल और तिलक का पंजाब मे दाखला बन्द करवा दिया, अपने अख्त्यार की जंजीरों को वसीय और मनमानी हकूमत के झण्डे को बुलन्द कर दिया, सैकड़ो को बिला वजह सजा दी, देसी अखबारो की जबा बन्दी की, स्वदेशी अखबारों को उठानेकी बजाय और दबा दिया, जबान और कलम की बन्दिश से कौमी गुरुता को मिटा दिया।

भारत की शुद्ध उमङ्गो का तुमने ही गला दबाया है।
भारत के कई शरीफो को बुलवाया और धमकाया है।
इस पर भाइयों को कहते हो भारत सुख और अमनमें है।
प्रत्यक्ष जबा पर तो कुछ है, कुछ और तुम्हारे मन में है॥

ओडवायर—अभी मेरा काम तमाम नही हुआ, अगर ६ अप्रैल के मानिन्द पंजाब मे कभी फिर ऐसा दिन आयगा तो मेरे अख्त्यारका खड्ग वह रवानी दिखायेगा कि सियासी उमङ्गों का गुब्बार हमेशा के लिये दब जायगा।

इन्साफ—लेकिन आपका यश धूल मे मिल जायगा।
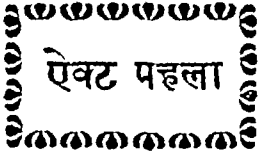
ओडवायर—और सब से पहले आपका गला घोट दिया जायगा।

अदावत न होगी बगावत न होगी।
न होगे अगर तुम अदावत न होगी॥

(ओडवायर का इन्साफ का गला घोट देना) टीले पर पर्दे का गिराया जाना।

——o——

सीन ऐक्ट पहला पांचवां

दिखावो जल्यां वाला बाग़।

(बच्चे बूढे यात्री और शहरी लोगों का मजमा दिखाई देता)

एक—क्यों भैय्या घर से निकलना मना है।

दूसरा—घरसे न निकले तो दुनियाके कारोबार कैसे चलें

एक-सुना है कि अब सिविल कानूनकी नहीं, बल्कि फौजी कानून की अमलदारी है, और फौजी डायरशाही की तरफ से यह ऐलान जारी है।

दूसरा—क्या है वह ऐलान ?

एक—एक पुलिस वाला कह रहा था, कि शहर में रहने वाले किसी आदमी को शहर छोडने की आज्ञा नहीं ८ बजे

के बाद जो गली या बाजार मे मिलेगा वह गोली से मार दिया जायगा।

दूसरा—यार ऐसा सख्त ऐलान हो और कोई भी न साव धान हो ?

एक—यही तो मै कहता हू, कि ऐसा ऐलान तो घरमें, बार मे, गली में, बाजार मे हर एक जगह लगना जरूरी था।

दूसरा—बिलकुल जरूरी था।

एक—यही तो मै भी कहता हु, कि यह सब लोग ऐलान से बाखबर होते, तो इनका सिर फिरा था कि यहा आन कर एकत्र होते।

दूसरा—जब घर से बाहर निकलना भी सरकार का ना पसन्द होगा तो किसी प्रकार की सभा करना भी बन्द होगा।

एक हरे हरे।

अब तो अपने घर में ही ऐसा अनादर हो गया।
रहना सहना था कठिन जीना भी दूभर हो गया॥

(डायर का मय अपने सिपाहियों के आना)

डायर-(क्रोध में मजमा का देख कर) उफ इन पाजियों ने मेरी आज्ञा को मुत्लक अङ्गीकार नही किया मेरे ऐलान का जरा विचार नही किया, शायद इन्हे यह खबर नही कि डायर कितना सङ्ग दिल है उसके क्रोधसे बचना कितना मुशकिल है। मौत के मुह से साफ बच जाना आसान है, लेकिन मेरे गुस्से की आग से जान बचाने का विचार अज्ञान है।

आह भी करने न पाए बेजबानों की तरह।
भून डालूँगा इन्हें भट्टी में दानों की तरह॥
खुशकीतर कोई नहीं बचने का मेरे कोप से।
दाह होगा हिन्दियों का आज इंग्लिश तोप से॥

राजनीति—(देवी रूप से प्रगट होकर) ठहरो, मन के मड़े हुए विचारों को क्रोध अग्नि के हवाले मत करो जिन ार्टीयों को तुम गोलियों का निशाना बनाना चाहते हो, ननको मिटा कर अपनी नेकनामी और शोहरत का कल्पित क़ला बनाना चाहते हो, जानते हो वह कौन है?

डायर—कौन है?

राजनीति—

यह वह है जिनसे जर्मन की हुई रुसवाई है।
जङ्ग यूरुप में जिन्होंने वीरता दिखलाई है॥
तुम समझते हो कि जिन्हे बागी है गद्दारोंमे है।
वह तुम्हारे जार्ज पञ्चम के वफादारों में है॥

डायर—मेरा फैसला आखरी है।

राजनीति—नहीं क्रोधमे मनुष्य अन्धा हो जाता है अच्छा ारा कुछ नज्र नहीं आता है। किसी राज अधिकारी से फैसला कराबो, मेरी नहीं तो किसी और मित्र की सलाह मानो।

तुम्हें शक्ति मिली है तो न इस शक्ति पै इतराओ।
अभी गर्मी उतरने दो जरा ठण्डी हवा खाओ॥
हकूमत की खुमारी में कहीं धोखा न खा जाओ।
सभल कर पैर धरना फिर कहीं पीछे न पछताओ॥

डायर—अगर इन्हें सजा न दूंगा, तो बग़ावत का थोड़ा जोश खाकर खतरनाक आग का शोला हो जायगा अभी फुन्सी है नस्तर से न चीरूंगा तो फोड़ा लाइलाज हो जायगा।

अभी अच्छा है यह गन्दा मादा दूर होजाये।
न रस्ते रस्ते आखिर को कहीं नासूर हो जाये॥
अभी से शाकाबन्दी हो अभी छोटा सा चश्मा है।
अगर बढकर हुआ दरिया तो फिर मुश्किलसे रुकना है॥

राजनीति—लेकिन जिस तर्ज पर तुम हुकूमत को लाते हो, जिस नीति से तुम प्रजा पर रोब का सिक्का बैठाना चाहते हो, वह तमाम मुहज्जब देश ना पसन्द करेगा भारतवासी शिकायत में वह आवाज बुलन्द करेंगे जो आकाश तक जायेगी और विश्वपति के सिंहासन को हिलायेगी।

तोप से यह तेज होगा और शोला आग का।
क्रोध बढता है दबा देने से काले नाग का॥

डायर—यह कायर, बुजदिल, शक्तिहीन क्या कर सकते हैं।

राजनीति—कर सकते है, शारीरिक बल से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति से इसका इतकाम लेकर छोड़ेंगे।

पुत्र योद्धाओं के है ऋषियों की यह सन्तान है।
क्या हुआ गर आज ऐसी बेसरो सामान है॥
जिस्म की ताकत में माना हीन है मजबूर है।
आत्मिक बल से मगर संसार मे मशहूर है।

गाना ।

यह प्रजा राज की जड है इस पर सब बोझ पड़ा है ।
मत काटो जड को भाई इस पर ही राज खडा है ॥
यह महल थियेटर खाने, उनके भण्डार खजाने ।
है दिये सभी परजा ने इसका उपकार बडा है ॥
कायम यह नही जमाना, है कठिन समय भी आना ।
परजा को नही दुखाना आगे भी काम पडा है ॥
युक्ति से कदम उठाना आगे नहीं पैर बढाना ।
कहीं बीच नही गिर जाना देखो इस तर्फ गढा है ॥

डायर-यह कुछ भी है तो भी महकूम है, उन्होने एक मेरे जैसे हाकिम के हुक्मको अदूली की ठोकर से ठुकरा दिया है, गुस्ताखी और बे अदबीसे मेरे सोये हुये क्रोधको जगा दिया है।

\तौहीन की उन्होने डायर दलेर की ।
गोया हसी उडाई है गीदडने शेरकी ॥

राजनीति-परतु, बे हथियार पर वार किसी भी धर्म के अनुसार नही । तहजीब ऐसे बह शियाना बर्ताव की रवादार नहीं ।

कहा की है दलेरी जो किसी को बे खता मारा ।
यह खुदही मररहे है इनको गर मारा तो क्या मारा ॥

डायर-यह बे खता नही कसूरवार है ।

राजनीति तो पहले इन्हे मुतशिर करनेका यत्न करो। कारण कि बे हथियार है।

डायर-अब इनको कोई मौका नही दिया जायगा, जो भी यहा मौजुद है वह जरूर किये की सजा पायेगा ।

सूरज अगर इधर का उधर से निकल आये।
तो भी न इरादा मेरा यह टूटने पाये॥

राजनीति-तो याद रखो, आइन्दा जब दुनिया की तवारीख लिखी जायगी तो जहा जङ्ग यूरुप की खूरेजीका जिक्र आयेगा वहा पञ्जाब की यह करुणा जनक घटना भी अनीतिकी सुर्खी के नीचे खूनी कलम से लिखी जाएगी।

चलो मत तुम इस राह में सर उठाकर।
दुखी होगे तुम भी दुखी को सता कर॥
उडेंगे बड़ी दूर तक उस के छीटे।
नया रङ्ग लाओ न तुम खूं बहा कर॥

डायर-कुछ भी हो, मै अपनी ताकत का ज़रूर इस्तेमाल करूंगा, अपनी बन्दूक और तलवार से इन सब को पामाल करूंगा।

राजनीति—जानते हो, बादशाह ने तुम्हें यह बदूक और तलवार किस लिये दी है।

डायर—किस लिये दी है ?

राजनीति—कि इन शस्त्रो से दुखिया और दीन पर अत्याचार न होने दो, धर्मात्माओ पर पापियो का वार न होने दो, प्रजा को दुश्मन के हमलो का शिकार न होने दो।

जानता है यह तेरी तलवार क्या करने को है।
दुष्ट लोगों के बदन से सर जुदा करने को है॥
बेकसो और रोगियो की यह दवा करने को है।
यह प्रजा के दुश्मनो का सामना करने को है॥
गर उठाया उसको परजा पर चलाने के लिये।
काल की तलवार है तुझ पर भी आने के लिये॥

डायर—लेकिन जो प्रजा बगावत करे ?

राजनीति—क्या यह लोग बग़ावत कर रहे है, भाइयों का मिल बैठना, एक दूसरे को अपना दुखडा सुनाना क्या बगावत है, जिनको सरकार मे दोस्ती की उम्मेद है तुम्हे उनसे बग़ावत है।

यह अब नहीं हैं इनसे यह आशा सब खयाली है।
बगावत क्या करेगा वह कि जिसका पेट ख़ाली है॥

डायर—तुमको इसको क्या खबर है, फौजी कानून राजनीति से जुदा हैं।

राजनीति—तो परमात्मा के लिये दया करो।

डायर—एक फ़ौजी आदमी से दया की उम्मेद ?

क्या रहम की उम्मेद है मेरी जबान से।
ठण्डक की है उम्मेद तुम्हे आफ़ताब से।

राजनीति—परमात्मा को खौफ करो।

डायर—परमात्मा का खौफ गिरजे की कहानी है, यह मैदान जङ्ग है यहा सिर्फ हमको अपनी शुजाअत दिखानी है।

राजनीति—किसी का भी भय नही ?

डायर—भय कुछ भय नही।

राजनीति—क्या तुम्हें परमेश्वर का भी डर नही ?

डायर—यह सोचने का अवसर नही।

फर्ज है यह मुदब्बर का कि वह अच्छा बुरा सोचे।
बस इतना काम फौजी का है वह दुश्मनके पर नोचे॥
अभी इसमें मै अपना फैसला तुमको सुनाता हूं।
नज़ारा कश्तो खूं का देखना हो तो दिखाता हूं॥

कहां छोड कर मुझको जाते हो प्यारे।
छुरी से कठिन है जुदाई तुम्हारी॥
न बे रहम कातिल को कुछ रहम आया।
कमाई जन्म भर की लूटी है सारी॥
न जल्लाद को मौत थी याद अपनी।
है किसका हमेशा रहा हुक्म जारी॥
उजाडा मुरादों का यह बाग मेरा।
न कातिल बर आईं मुरादें तुम्हारी॥
अय कातिल हमेशा हो नाशाद तू भी।
मैं यह शाप देती हूं विधवा दुखारी॥

रत देवी—(जवानों) लुट गई, उजड़ गई, बर्बाद होगई।
बाग आशाओं का है बर्बाद मेरा हो गया।
आज दुनिया में मेरी हाय अंधेरा हो गया॥
मार डाला मुझको जालिम मौत की बेदाद ने।
लूट ली अनमोल यह पूंजी मेरी जल्लाद ने॥
प्राणनाथ! मैं यह जानती कि मेरा फुला फला हुआ खुशियों का बाग यकायक अत्याचार की गर्म लू से उजड जायगा, तो तुमको कभी आज घर से बाहर न आने देती।
जानती थी मैं तो इतना न्यायशाली राज है।
क्या खबर थी ओडवायर बादशाही आज है॥
मैं समझती थी जमाना है अमन आराम का।
क्या खबर थी हुक्म होगा आज कत्ले आम का॥
परंतु मैं तुम्हारी वीरोचित मृत्यु पर शोक नहीं करूंगी, तुम्हें जन्म देकर जननी आज धन्य हुई। वीर पति तुम्हारी पत्नी आज धन्य हुई। तुम भाग्यशाली हो कि कर्त्तव्य कुण्डमें

इतिहास में रहेंगी कुर्बानिया तुम्हारी।
तुम पर फख्र करेगा प्यारा वतन तुम्हारा॥
(चन्द एक खाकी वर्दी वालों का आना और लहाशों की
कीमती जेवर उतारना)।

आवाज—(हर तरफ से) हाय, हाय, पानी, पानी, आह
आह।

रत्न देवी—(खाकी वर्दी वालोंको देखकर) हाय यह
कौन। क्या यम के दूत इन देश भक्तों के प्राण लेने आये है
नहीं यह तो किसी और ही मार पर ललचाए है। यह तो
मरे हुए बेवस और बेकस, घायल बदन और नेकफन लहाशों
के जेवर और नकदी निकाल रहे है। पापके अन्धेरेमें अ धे
हुए धर्म की आखो में धूल डाल रहे है, क्या मनुष्य इतना भी
निर्दयी हो सकता है? क्या इस तरह जान बूझ कर कोई
अपनी राहमें कांटे वो सकता है, अरे नीच मनुष्यो!

भाई तो मरते है और तुमको पडी है माल की।
याद क्या आती नही है तुमको अपने काल की॥
पाप की दौलत को लेकर अन्त को पछतावोगे।
ले गए जब यह न इसको तुम कहा ले जाओगे॥

आवाज—(जख्मी आदमियों की) आह, पानी, पानी।

रत्नदेवी मूर्खों मनुष्यत्व का सन्मान करो, दुखिया कालकी
विकाल भुजाओंमे जकडे हुए अपने इन भाइयों पर पहसान
करो। लोक और परलोक को सुधारना है, तो कुछ उपकार
कर जाओ। प्यासे मर रहे है इनको पानी पिलाओ।

वरना यह पैसा खा लोगे फिर किसको खाने जाओगे।
तुम टुकडा टुकडा मांगोगे दर दर के धक्के खाओगे॥

क्या हुआ गर एक नेकी भी यहां कर जाओगी ॥
खाकी वर्दी-छित,फिर बोलेगा तो ज़बान काट ली जायेगी।

(जाना खाकी वर्दीवालोंका जेवर उतार कर)

बिस्मिल-आह जालिम ने पानी न दिया।

निर्दयी इंसान की क्या जाने यह क्या होगया।
हुस नसल इंसान उसको एक भुगा हो गया॥
नाम पहलेही न था अब रहमका यह हाल है।
एक कवा जलका भी अफमास महंगा होगया॥

(प्राण छोड देना)

रत्नदेवी-प्यासा मर गया, क्या यह सब एक बूंद पानी को तर्स २ कर प्राण छोड देंगे। अब मेरा कर्त्तव्य क्या है, अब पावन धर्ती को प्राणनाथ की तकिया बनाऊ, कुयें से साडी भिगा कर ले आऊ और इन प्यासे भाईयोंको पानी पिलाऊ। (कुयेमें लटका कर और साडी तर करके जख्मी और बिस्मिल भाईयों के हलक में पानी टपकाना)

कब मैं तुमको देख सकती हूं अब भाईयो क्लेश में।
जान देकर जान डाली तुमने अपने देश में॥

(आवाज पर रत्नदेवी के पति की रूह का नमूदार होना)

रूह-धन्य हो, धन्य हो, हे देवी जन्म भूमि भी तेरे जैसी वीर बाला को जन्म देकर आज धन्य हुई।

किया है नाम जिन्दा तूने मेरा सतवती हो कर।
मिला है स्वर्ग मुझ को भी सती तेरा पति होकर॥
सती तेरे ही सतपन का जो है परताप सारा है।
कि मैंने आज अपने देशका कर्जा उतारा है॥

रत्नदेवी-जाओ, प्राणनाथ आनन्द सहित स्वर्ग में वास करो, परमानन्द रूपी क्रीड़ा भवन मे रस रास करो मै तुम्हारी ह तो शीघ्र ही तुम्हारी शरण मे आऊ गी। हृदय की अग्निकं तृप्ति करनेवाला सुखदाई दर्शन पाऊ गी।

वहा तुम ईश्वर को सब मेरा दुखडा सुना देना।
यह हत्याचार डायर ओडवायर का बता देना॥
कही आनन्दमें फसकर वतनको भूल मत जाना।
सिफारिश करके मजलूमोको तुम इसाफ करवाना॥

रूह-हे देवी, भारत निवास के सनमुख स्वर्ग का वास भ नाचीज़ है, स्वर्ग की हर एक खुशी भारतके हर एक दुख क भी कनीज़ है, जब तक जनमभूमि का उद्धार न होगा, भारत न्याय का इकरार न होगा तब तक हमारी आत्माओं व करार न होगा।

भारत में फिर जन्म ले बस यही कामना है।
भारत में जन्म लेना वैकुण्ठ से सवा है॥

रत्न देवी-हे स्वामी, मुझे क्षमा करना कि मै इस ससार अकेली रह गई, मै अभी जिन्दा रहू गी अभी दुनिया को अप सुहाग की फूटी हुई चूडिया दिखाऊ गी। डायर के अनर्थरू खजर से छिला हुआ घायल हृदय समुन्दर पार से जाऊ गी मै भारत की स्त्रियों के लिये आदर्श होकर देश भक्ति का सब सिखाऊ गी, और देश सेवा मे अपने पतियो को बलिद करने के लिये अपनी बहनो का साहस बढाऊ गी।

आज से कर्त्तव्य में दृढ करके जब अड जायेगी।
औरतें मर्दों से भी इस काम से बढ जायेगी॥
अब करेंगी कद्र सब बहनें मेरे उपदेश की।

अपने पतियों को खुशी से भेट देंगी देश को ॥

स्वामी-अब कृपा करके मेरे विरहका कुछ क्लेश न करना।

रत्न देवी-स्वामी पति विरह से बढकर पत्नी के लिये और कौनसा क्लेश है।

गाना।

पति बिन सूना है संसार, पति बिन ॥ टेक ॥
पत से पत है पत से गत है, और पत बिन लाख विपत है।
पति बिन दुनिया है अन्धकार। पति बिन सूना।
पत से मत है पत को जत है, पत्नी का धन पातीव्रत है।
पति बिना जीना है धिक्कार। पति बिन सूना।

(आवाज पर रूह का गायब होना और रत्न देवी का मुर्छित होना।)

सीन दूसरा ऐक्ट दूसरा

स्थान अंग्रेजी डाक्टर का बंगला।

(डाक्टर साहब का मुंह मे चुरट लिये हुए मेज पर नोट और रुपये गिनते हुए नज्र आना। सामने १९१९ ई० की कैलेण्डर न अप्रैल का महीना दिखाई देता है)

ना।

गाना।

ऊआ ॥

पैसे की दुनिया सारी है। हो गया।
पैसे की यह सर्दारी है ना हो गया॥
पैसे का सिक्का जारी श्मन है, हम तुमसे बद

दुनिया पर सत्ता तारी है, वस अब तो जीत हमारी है।
पैसे की है सब लूट, पैसे की बूट सूट।
यह बंगला यह वाडी है॥
यह फ़ाईन ओल्ड, वाइन कोल्ड, है पैसे की वहार।
यह आवदार विस्की, मोहवत ये यग मिसकी।
पसेकी तावेदार है पैसे की वहार॥

डाक्टर-(जवानी) आहा दौलत दौलत, भी अजीव चीज है। इसकी अपनी तरफ खेंचनेकी हमें तमीज है, दौलत वह वेतार की वर्क है, जो आसमान की खवरें लाती है, दौलत दुनिया में रुतवा और शान वढाती है दौलत की चाबी से मुशकिल से मुशकिल उलझन का ताला खुलजाता है। दौलत का मिकनातीसी असर, इज्जत, आराम गरूर और हर एक दुनियावी खुशी को अपनी तरफ खेंच लाता है। दौलत दुनिया की सलतनत कराती है, दौलत वडी २ मेशीनो की ताकत वाली कौम को नीचा दिखाती है।

है काम सब तमाम जो टीमे दाम हैं।
दुनिया के सब गरीब हमारे गुलाम है॥
हम पेश है जहा मे करने के वास्ते।
पैदा हुए गुलाम है मरने के वास्ते॥

[खानसामा का आना और पैग देना]

खानसामा-हजूर जाम नोश फर्माइये।

डाक्टर-(पी कर) वेल अब तुमको छुट्टी है जाओ।

खानसामा हजूर केहा जाऊ, शहर में जाने वाला तो गोली से भुन जाता है।

डाक्टर-बागी पर गोली चलाना चाहिये,तुमलोग बागी है।

खानसामा हजुर हम बागी नहीं, हम अलबत्ता पेट से भूके है।

यह पेट खाली है क्या करें हम यह पेट मजबूर कर रहा है।
बडी अजीयत से खुश्क टुकडा हलक से नीचे उतर रहा है॥
तुम्हारी सेवा ही करते करते हमें जमाना गुजर गया है।
बहा किनारोंसे अब गुजर कर किपात्र धीरज का भर गया है॥

डाक्टर-तुम बडा नालायक है।

खानसामा-तौ भी वफादार है।

डाक्टर-फिर तुम्हारा लीडर लोग बगावत क्यों करता है?

खानसामा-हजूर, जो स्वराज्य मागनेवाले हमारे लीडर है वें बिल्कुल बेजरर है, खून खराबा करनेवाले तो चन्द एक कौमी गद्दार हैं, जिनके साथ निर्दोप भी जुल्म का शिकार है, सरकारके क्रोध से निरापराधियो पर भी अनर्थ का गोला चल रहा है, सूखे के साथ गीला भी जल रहा है।

कम्पौराडर व एक जख्मी हिंदोस्तानी का आना।

कम्पौण्डर-हजूर यह एक घायल नौजवान है और इलाज का ख्वाहा है।

डाक्टर-किससे घायल हुआ?

था मुसाफिर यह वेचारा शहर में आया हुआ।
जा रहा था रेल पर मृत्यु का उकसाया हुआ॥
खौफ के मारे ष्टेशन पर रवाना हो गया।
रास्ते मे गोलिया का पुर निशाना हो गया॥

डाक्टर देखो, तुम लोग हमारा दुश्मन है, हम तुमसे बद

है अगर इसको शफ़ाखाने में रखोगे, तो हम इस को ज़हर दे डालेगा, जहर दिलवाना हो तो यहा रखो और इलाज करवाना है तो गाधी के पास ले जाओ।

इस को मेरे सामने से बस अभी ले जाइये।
साथ बदकारो के ऐसी ही बुराई चाहिये॥

जख्मी-हजूर आप डाक्टर हैं, आपको चाहिये कि हर एक से आप का बर्ताव दोस्ताना हो, इलाज करना आपक कर्त्तव्य है, मरीज अपना हो या बेगाना हो।

बिन भेद भाव सब लोगो को ज्ञानी उपदेश सुनाता है।
दोनों बद और शरीफो पर बादल पानी बरसाता है॥

डाक्टर-दुश्मन का इलाज करनेवाला बड़ाही कम अक्ल है

ज़ख्मी-तो फिर दुश्मन के ज़ख्मी सिपाहियोका इलाज करना समर (मैदान जङ्ग) नीतिमें क्यो उचित माना है,युद्धस्थल में गोली चलानेवाले, सन्मुख युद्ध करने को तलवार उठानेवाले शत्रु का भी इलाज करना जब राजनीतिने मुनासिब जाना है, तो प्रजा अगर फ़ौजी ताकत का निर्दोष निशाना बन जाए, और वह अपना इलाज कराने आये तो इलाज कराने वाला मूर्ख है या दाना, बल्कि उसका इलाज करना वैद्य का मुख्य कर्म है, नीति का विशेष धर्म है।

बने है यह शफ़ाखाने हमारी ही भलाई से।
मजे करते हो तुम भी तो हमारी ही कमाई से॥
हमारीही यह माया और हम निरआश फिरते हैं।
हमारे जर के गोले और हमारे सर पे गिरते है॥

डाक्टर-जय महात्मा गाधी की जय बुलाते हो, तो सहायता के लिये उसके पास क्यो नहीं जाते हो ?

जख़्मी-गाधी की जय बुलाना क्या मुजरमाना है ? गाधीको आपने किस तरह घृणा का पात्र गर्दाना है। गाधी कोई चोर नही, डाकू नही, खुनी नही, रहजन नही, वह सच्चा देशका हितकारी है, वह भारत का सच्चा पुजारी है दीन का, अनाथ वे सहारे का सहारा और परोपकारी है, वह तो हमें केवल पवित्र देश भक्ति का उपदेश सुनाता है, वह तो हमे हिंसा को त्याग कर अहिंसा मार्ग पर चलाता है, उसी की हम पर दया विशेष है, और यह उसीका उपदेश है, यह उसीके उपदेश का नतीजा है कि—

अपने सिर पर रख लेते है हिंसा करने को चाह नही।
यह गोली तो क्या वस्तु है पर गोले खाकर आह नही॥

डाक्टर हम ज्यादा मग दर्दी नही मागता, तुम्हारा इलाज करना हमारे दस्तूर के खिलाफ है और जवाब साफ है।

जख़्मी-हजुर आप चिकित्सा करनेको मजबूर नही लेकिन याद रखिये तहजीब पर नाज करनेवालोंका यह दस्तूर नही।

डाक्टर-तम तहजीब को क्या जान सकता है ?

जख़्मी-हजूर ! जब हमारी तहजीब का सूर्य्य उन्नतिके आकाश पर जगमगाता था, जब हमारी तहजीब का झडा तरक्की के शिखर पर लहराता था तो उस वक्त यह मिथ्या व्यवहार न था। रावण के खास वैद्य सुषेण ने रावण के शत्रु रामके भाई लछमन को मौत के मुह से बचाया था, महाभारत युद्धमें भीष्म पितामह ने शिखण्डी को पिछले जन्म का औरत समझ कर तीर नहीं चलाया था, यह हमारी तहजीब है और यह तुम्हारी तहजीब है।

पापी भी कुचला जाता है धर्मी से भी नही टलती है।
औरत की गर्दन कटती है बच्चे पर गोली चलती है॥
यह है तहजीब मगर बिजली जो सबके पीछे फिरती है।
मन्दिर हो मस्जिद या गिर्जा हर एकके ऊपर गिरती है॥

डाक्टर-बस हम ज्यादा नही सुनेगा, ले जाओ इस सिडी सौदाई मरीज को ले जाओ। (जाना)

जख्मी-जाइये हमारी कमाईके पसीने से बनाए हुए गर्म गद्देलो पर लम्बी तान कर सो जाइये, मैं मरूंगा या जीऊंगा, लेकिन तुम्हारा यह वर्ताव संसारके इतिहासमें एक शिक्षाप्रद यादगार रहेगा, जिसको सुनकर और मुंह में उंगली देकर अन्य जाति का हर एक जन भी यही कहेगा।

यह भारत है जो भूका मर रहा है।
और इसपर भी खजाने भर रहा है॥
है इस वर्ताव पर हौसला यह।
जफाओ पर वफायें कर रहा है॥

आकाशवाणी-शान्त हो! भारत वीर चिन्ता दूर कर इस अभिमानी डाक्टर का कहना सत्य होगा, गान्धीके नामसे भारत में वह आलीशान भण्डार होगा, और जो अपने वर्तावमें इतना उदार होगा कि बिना भेद भाव सुजन और दुश्मन यहूदी और ईसाई सब इस औषधालय से फैज पायेंगे और भारत की उदारता को सराहेंगे।

सिखाती है यह बातें इनको दुनिया में बड़ा होना।
हमें आएगा इन बातोंमें पाओं पर खड़ा होना॥

—(.०.)—

सीन एक दूसरा तीसरा

रास्ता ।

(एक हिन्दोस्तानी बच्चे का दाखिल होना गीत गाते हुए)

गाना ।

यह आर्जू है मेरा भारत पे वार करदूं ।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसार करदूं ॥
ऐसी हवा चलाऊं जाये यह दिन खिजाके ।
भारतके गुलसितामें मौसम बहार करदूं ॥
ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे हौसला दे ।
भारत की उन्नति की नावों को पार करदूं ॥
यह आस्तीं गुलामी की कौम के बदन पर ।
पहनी जो मुद्दतों से तार तार करदूं ॥
ऐसी करूं तपस्या स्वराज्य लेकर छोड़ूं ।
मिट जाए बे करारी दूर इन्तजार करदूं ॥

(एक साहब का दाखिल होना)

साहब ए यू, तू नहीं जानता कि मार्शल ला है ।
यह है कानून जारी आज कल भारत के शहरों में ।
तुम्हारी जिंदगी है कैद इन संगीन पहरों में ॥

बच्चा—हां इतना जरूर जानता हूं कि आज हर एक

शहरों की आजादी पर फौजी कानून की मोहर लगी हुई है, भारत की पवित्र भूमि पर अन्याय और अत्याचार की किस्मत जगी है।

आज पानी अपनी मेहनत का पसीना हो गया।
आज मुशकिल हम वफादारों का जीना हो गया॥

साहब—तो इस तरह निडर होकर क्यों फिर रहे हो?

बच्चा—क्योंकि हमारे मनमें पापका लेश नहीं, यह तो बताइये क्या इस धर्ती पर हमारा कुछ अधिकार नहीं, यह भूमि हमारा देश नहीं?

साहब—अच्छा तुमने हमको सलाम क्यों नहीं किया?

बच्चा—(अपने दिल में) मुझे मालूम न था कि आप सलाम के इस कद्र भूके हैं।

साहब—अच्छा अब, बाकायदा सलाम करो।

बच्चा—(फौजी सलाम करना) यह लीजिये सलाम (खुद से) मगर यह सलाम किसका, यह कोई शान नहीं, यह कोई सन्मान नहीं, यह हमारा अपमान है और तुम्हारा मिथ्या अभिमान है, अगर चाहते हो कि तुम्हारी इज्जत करें तो पहले हमारे दिल की सलतनत पर विजय पाओ, हमारे सर को नहीं बल्कि उपकार और मित्र भाव से हमारे आत्मा को झुकाओ।

वह राजा क्या जो तोपों से अधिकार किलों पर करता है।
है महाराजाऽधिराज वही जो राज दिलों पर करता है॥

साहब—जो ज्यादा कलाम करोगे तो बेंट लगाए जायेंगे।

बच्चा—तो जिस अमलदारी में निर्दोषों का खून बहाया जाता है, पशुवत रींग कर पेटके बल दौड़ाया जाता है, मीलों तक की कड़कती धूप में दौड़ाया जाता है, उस अमलदारी में

बेद लगाना कोई न्याय के खिलाफ नहीं। कारण कि इस वर्तमान कानून में बेगुनाही भी माफ नहीं, महकूम से हाकिम का दिल साफ नहीं, कोई दाद फरियाद नहीं कोई इन्साफ नहीं।

यही तर्जे हकूमत है तो फिर इन्साफ क्या होगा।
बे इन्साफी की रस्सी में न्याय का गला होगा॥
अगर निर्दोष परजा पर सितम ऐसा रवा होगा।
हुकूमत में अमन होगा न परजा का भला होगा॥

साहब—तुम दुनिया में जलील से जलील सजा के लायक हो।

बच्चा—हमारा दोष ?

साहब—कुछ नहीं।

बच्चा—हमारी गलती ?

साहब—कुछ नहीं।

बच्चा—हमारी तकसीर ?

साहब—कुछ नहीं।

बच्चा—तो फिर।

साहब—बस थाने पर चलो।

बच्चा—चलिये, थाने पर ले चलिये, कोर्ट मार्शल में ले चलिये, अदालत में जाने से वह घबरायेगा जो कसूरवार होगा, सजा से वह डरेगा जो गुनहगार होगा, जो खालिस सोना है इसको आग में तपाये जाने का क्या डर है, जो शुद्ध आचरण वाला स्वामी है उसको कोतवाली या थाने का क्या डर है।

जन्मका पापी है जो डरता है वह ही काल से।
जिसका खाता साफ है क्या डर उसे पडतालसे॥

साहब—तो सजा भुगतनेके लिये तैयार हो जाओ।

बच्चा—हम सत्याग्रही है, इस लिये हर एक जुल्म सहने को तैयार है, हम सच्चाई के प्रेमी है, इस लिये सच्चाई की देवी पर बलिहारी है, आम मुजम कानून को कपट और छल से तोड़ता है, और फरेब से बचने के लिये सजा से मुंह मोड़ता है, परन्तु सत्याग्रही हमेशा राज के कानून के अनुसार चलता है, कारण कि कानून को वह जाति सुधार के लिये उचित समझता है, लेकिन जब वह किसी कानून को मनुष्यत्व से गिरा हुआ जानता है तो वह उस कानून को नहीं मानता है।

कूआं नदियो तालाबो में सुन्दर स्वच्छ जल लहराता है।
बिन स्वाति बूंद पपीहा पर आखिर प्यासा मर जाता है।
जो शुद्ध अमृत का भोगन है विष का फरहार नहीं करता।
जो है इन्सा वह पशुओ का बर्ताव स्वीकार नही करता॥

साहब—यह सब गंदे ख्याल सत्याग्रह की बुराई है।

बच्चा—बल्कि सत्याग्रह तो वह सिक्का है जिसके एक तरफ प्रेम और दूसरी तरफ सच्चाई है।

साहब—सत्याग्रह को आखिर पराजय होती है।

बच्चा—सत्याग्रही जानता ही नही कि शिकस्त क्या शय होती है, वह हमेशा सत्य के लिये युद्ध करता है और सत्य की सत्य की सदा जय होती है।

अगर कैद हो तो आजादी अगर मौत हो तो मुक्ति है।
यह दोनों सिद्ध मनोरथ करने वाली एक भक्ति है॥

साहब—यह जितना दङ्गा फिसाद है सत्याग्रह ही इस की बुनियाद है।

बच्चा—यह दलील बिलकुल भद्दी और बे बुनियाद है, सत्याग्रही के लिये अमन को तोड़ना तो कुजा किसी का मन

तोड़ना भी अधर्म है, उसको किसी का भय नहीं केवल सत्य की धर्म है सत्याग्रही या तो अपनी दलील के कोड़े से मुखालिफ़ को मनाता है, या अपने आत्मा का बलि देकर मुखालिफ के मन पर अपना असर बैठाता है।

जो है सत्याग्रही वह सत्य पर सरकार चलता है।
अहिंसा परमोधर्म के नियम अनुसार चलता है॥
हम उसकी बोटी बोटी काट डालो या जला डालो।
न बोलेगा कभी वह झूठ चाहे तुम मिटा डालो॥

साहब—कोड़े लगाकर तुम्हारे दिमाग की अभी मरम्मत की जायगी।

बच्चा—कोड़े लगाओ या पेटके बल चलाओ, लेकिन याद रखो जब अन्याय की घनघोर घटासे मत्तला साफ हो जायगा, और सूर्य भगवान अपनी किरणों के द्वारा स्वतन्त्र द्वीपों में भारत को सच्चाई का प्रकाश पहुंचायेगा और पवन देवता अपने झोंकों के वेग के साथ हमारे खून नाहक की सुगन्धि देश देशान्तरों में फैलायेगा तो उस वक्त एक दुनिया इस अत्याचार की निन्दा करेगी, एक सृष्टि इस क्रूर कमसे तुम्हें शर्मिन्दा करेगी।

ज़ुल्म का बादल समय पर जब कभी फट जायगा।
और धुआ अन्याय का आकाश से छट जायगा॥
तुम छिपाओगे मगर यह भेद सब खुल जायगा।
दाग यह ऐसा नहीं धोनेसे जो धुल जायगा॥

साहब—तो कोड़े खाने का इन्तजार करो।

बच्चा—हां मैं गर्दन झुकाता हूं तुम अपनी तलवार की धार तैयार करो।

तुम्हारा जितना जी चाहे सितम मजलूम पर डालो।
कलेजा चीर डालो मेरी आँखों को निकलवा लो॥
मेरी नस नस को छेदो और रग रग मेरी कटवालो।
यह हाजिर है बदन मेरा इसे कोल्हू में पिलवा लो॥
मगर मैं देश सेवा का जो प्रण है वह न तोड़ूंगा।
रहूंगा सत पै कायम यह छोड़ा है न छोड़ूंगा॥

(ड्रापसीन)

थाने का दिखावो। एक मसनूई शकंजे में बांधकर कई एक निर्दोषियों को बेंत लगाए जा रहे हैं, चीखों की आवाज से आकाश में गूंज है और इधर उधर से शकंजा और कोड़ा लहु लोहान है।

सीन ऐक्ट दूसरा चौथा

पर्दा महल !

(राक्षस रूप मार्शल ला का क्रोध में भरे हुए और हांपते हुए दाखल होना।)

मार्शल ला-(जबानी) है कौन ? खूबसूरत जिन्दगी की नाव को नेस्ती के समुन्दर में डुबाने वाला, भुन्ये की तरह मनुष्य जीवन को मसल कर धूर में मिलाने वाला, अमन और

आमान को अन्त तक पहुचाने वाला, काल की विक्राल गदा को शरमाने वाला, मित्र और शत्रु को एक ही पाषाण मे बाधकर चलाने वाला, परमात्मा की सुन्दर सृष्टि पर अन्याय को आग बरसाने वाला, सतियों को बर्बाद, बच्चो को नाशाद और बूढो को वे औलाद बनाने वाला तेजस्वी मार्शल ला।

खुश्को तर दोनो जला देता हु अपनी आग से।
खून योधाओंका जम जाता है मेरी लाग से॥
मुझको पर्वा नम्रता और आही जारी की नहीं।
मुझको चिन्ता दर्द ल्न्द की वेकरारी की नहीं॥

(पुत्र की मृत्यु से दुखित माता का आना)

माता—(मार्शल ला का दामन पकड कर) यही है खूनी चोर, डाकू, मेरे अनमोल लाल को लूटने वाला, जिसने मेरी बुढापे की लाठी को तोड डाला।

जन्म की थी कमाई एक ही अनमोल हीरा था।
मेरा बेटा मेरी तारीक आखो का ममोरा था॥
अय जालिम तोड कर तूने रखा है फल मेरा कच्चा।
बता मूजी कहा है वह मेरा प्यारा मेरा बच्चा॥

मार्शल ला बुढिया, तू भूलती है।

अब मेरा क्या वास्ता अब तो अमन का दौर है।
हुक्म का बन्दा हु मै तो इसका कातिल और है॥

माता-नही देख देख, तेरे हाथ अभी तक बेगुनाहो के खून से लाल है खूनी डाकुओ की तरह तेरी भुजाये विक्राल है।

तेरी मुझ को सूरत ही बतला रही है।
कलेजा यह तेरी निगाह खा रही है॥

तूही मेरे बच्चे का कातिल है जालिम है।
लहू को मुझे तुझ से बू आ रही है॥

(सतीका अपनी पतिकी मृत्यु मे दुखित दीवानी दाखिल होना)

सती—(मार्शल ला का दामन पकड़ कर) यही है, मेरे शीस के ताज को धरमे मिलाने वाला, मुझे जन्म भर के लिये सोग का मातमी लिबास पहनाने वाला मुझ नौदूलही को एक नामुराद विधवा बनाने वाला हत्याकारी वही है बता जालिम बता '—

लूटा है जिसको तूने वह सम्पति कहा है।
जालिम बता मेरा प्यारा पति कहा है॥
मर जाऊंगी मैं तुझ पर मेरा सबर पडेगा।
यक और खून नाहक सिर पर तेरे चढेगा॥

मार्शल ला—अय औरत तू क्या दीवानी है ?

सती-हा दीवानी हू, दुनिया में जीने की आशा छोड कर आई हू, सुहाग की चूडिया फोड कर आई हू, बता नही तो मैं अभी अपने सतपन का चमत्कार दिखाऊ गी, तेरी मनमानी डायरशाही को धूर में मिलाऊ गी।

मै न्याय के लिये धर्ती से मुरादो को जगाऊ गी।
मै अपनी आहो जारी से अभी परलै मचाऊंगी॥
मै चीखो से अभी आकाश धर्ती पर गिराऊ गे।
मै नालो से श्री भगवान का आसन हिलाऊ गा॥
मै अपने दिलका दुखडा उनको रो रो कर सुनाऊंगी।

मार्शल ला-लेकिन उसके छोटे ज्वालामुखी के भयानक शोलो को नहीं बूझा सकते, रात दिन बहने वाले नदी नाले पत्थर की चटानों को पानी नहीं बना सकते।

तुम्हारी आंखका पानी असर कुछ कर नहीं सकता।
तुम्हारे रोने धोने से मैं हर्गिज डर नहीं सकता॥

माता—जालिम यह तेरा मिथ्या विचार है, सती का साप विश्व को पलमें नाश कर देने वाला हथियार है।

सती के आपसे डरते है साहस और बल वाले।
अभी चाहे तो पृथ्वी का सती तख्ता उलट डाले॥

सती—यदि सती नर्मदा ने अपनी शक्ति से सूर्य भगवान को उदय होनेसे रोक लिया था यदि सती सावित्री ने काल को पतिके प्राण लेने से रोक दिया था तो मेरी फ़रियाद भी वृथा नहीं जायगी, आज नहीं तो समय पाकर फल लायेगी।

या हमेशा के लिये भारत से तू मिट जायगा।
या अमन भारत में दोबारा न होने पायगा॥

(भाई के शोग में बहन का बाल खोले हुए दाखल होना)

बहन—(मार्शल ला का गिरेबा पकड़ कर) यही है जिसने भारत की भावी सन्तान का अपमान किया, जिसने मुल्कसे बस्ते हुए लाखों घरानों को वीरान किया।

अभी तक खून नाहक से है दामन तर कसाई का।
यही जल्लाद मूजी है यह कातिल मेरे भाई का॥

माता—यही हत्याकारी दुखदाई है।
सती—यही जल्लाद है, अन्यायी है।
बहन—यही बेरहम कसाई है।

मार्शल ला—अरी नादान और तो मुझे छोड़ दो।

माता—तुझे छोड दें, जिसने भारत में हाहाकार मचा दिया, जिसने भारतवर्ष का गौरव और मान धूल में मिला दिया, उसे छोड दें।

(महात्मा गांधी का आना और मार्शल ला का आंख बचा कर भाग जाना)

गांधी—शान्त, बहनो, माताओ, शान्त।

फूलता हर फूल है और झूमता हर बात है।
आज सब कुछ है परन्तु काल कहा यह बात है॥
काल सबका तक रहा है सब के ऊपर घात है।
चार दिन की चांदनी है फिर अंधेरी रात है॥

माता—हे कर्मवीर, हे देश भक्त हे जन हितकारी, जिस का कलेजा फट जाये, वह किस तरह शान्ति करे, जिसके लिये यकायक धरती पलट जाये वह किस तरह शान्ति करे। इस विधवा सती को देखो, इस दुखिया बहन की गति को देखो।

जल रही विरहा अगन में यह अभागिन नार है।
पुष्प मुख है और उस पर आंसुओ की धार है॥

गांधी—माता अपना मुख मातृसेवा के अर्पण करो, दुख सुख का लेशमात्र भी ध्यान न करो।

है चञ्चल बड़ा जमाना यह अन्दाज बदलता रहता है।
हरबार नये सुर लेता है यह माल उदलता रहता है।
यह पृथ्वी और आकाश हमें नित नये रङ्ग दिखलाते हैं।
इन दो पाटो की चक्की में रङ्क और राजा पिस जाते हैं।

सती—हे वीर, मैं दुखिया लाचार विधवा अब किसकी शरण में रहूंगी ?

गांधी—उसकी, जो संसार का दाता है, जिसके अटल भण्डारसे हर कोई खाता है जो किसी को भी द्वारसे निराश

वह भारत का तिलक प्यारा तिलक नामी तिलक धारी।
कि जिसके तनके तिल तिलका निकल कर तेल है जारी॥
मुसीवत पर मुसीवत मातके कारण है लाचारी।
नहीं इक पग तिलक मर का यह है तूफान भी भारी॥
तुझे है धन्य अय केवट किनारे तू लगायेगा।
हमारी डूबती नैय्या को तू ही अब बचायेगा॥

तिलक—हे सती, ईश्वर इच्छा को प्रबल मानो, कौन मरा? भगवान कृष्णका गीता उपदेश पढो और दिल को शान्ति दो।

यह अमर है आत्मा मारे से मर सकता नहीं।
नाश इसका अस्त्र या हथियार कर सकता नहीं॥
आग से जलता नही और जल डुवा सकता नहीं।
देह बदलता है मगर यह नाश हो सकता नहो॥

माता-हे वृद्ध देव! तुम्हारे अमृत रूपी उपदेश से मुझे पुत्र वियोग का दुख भूल गया।

मेरे हृदयमें यह जिसके लाख लाख एहसान हैं।
ऐसे भारत पर तो जितने पुत्र हों कुर्बान हैं॥

तिलक हे बहनो! अब मैं आखरी अवस्था में हूं, न जाने तुमसे मेरी यह अन्तिम भेट हो। यदि तुमको मेरे साथ कुछ स्नेह है तो इसे ग्रहण करो मेरा उपदेश यह है।

आदर्श मान निर्मल जीवन पवित्र जो है।
भारत निवासियों का बेगर्ज मित्र जो है।
सन्यास गृहस्थ दोनों का एक चित्र जो है।
हे धीर वीर गांधी चरणों में उन के जाओ।
जो चाहते विजय हो सेना पति बनाओ॥

गांधी -हे पवित्र पूजनीय देवियो ! मैं अपने मान्यवर धर्म पिताका प्रसाद ग्रहण करता हूं, अब तुम भी अपने पतियों और भाइयों का मरण शोक भूल जाओ देश सेवामें अपने प्राण निछावर करने वाले, अचल पदवी को प्राप्त करने वाले सचे वीरों की मृत्यु पर आंसू न बहाओ।

पहुंचते है वह भगत परम पिता के पास।
इन योधाओ का हुआ देखो स्वर्ग निवास॥
(सीन का ट्रांसफर होना)
(जल्यां वाले बाग के शहीदों का स्वर्गवास दिखाई देना)

——o——

सीन ऐक्ट दूसरा पांचवां

मकान।

(दो फौजी आदमियों का मुसल्ला दिखाई देना)

पहला—क्यों दोस्त आज तो पौ बारह है ना ?

दूसरा—वह किस तरह ?

पहला—दिल के अरमान निकालने के लिये आज सुनहरी मौका हाथ आया है, डाका, चोरी, रहजनी, जब्र हर एक काम कर गुजारनेके लिये आज किस्मत ने हमें यह दिन दिखाया है, आज इस सृष्टिका बेहतरीन इन्तजाम करने वाली महान शक्ति की आंखे बन्द है, कान बहरे है, ज़बान गूंगी है, सरकारी नौकरी में ऐसे अवसर अक्सर आते है लेकिन समझदार ही इस से लाभ उठाते है।

हाकिम आला नहीं और न्याय को आला नहीं।
जो भी कर गुजरेगे कोई पूछने वाला नहीं॥

दूसरा—तो क्या करें ?

पहला—किस पर हाथ साफ करें ?

दूसरा-निर्दोष प्रजा पर हाथ साफ करना क्या पाप नहीं ?

पहला—वाह !

पाप करना पाप हो तो पाप की हस्ती न हो।
जोश हृदय में न हो स्वभाव में मस्ती न हो॥
लूटना गर है मजा इस पापके सामान का।
ध्यान रखना है वृथा फिर मान और अभिमान का॥

दूसरा कसूरावर—पर अनर्थ हो जाए, तो यह निस्सन्देह है न्याय, लेकिन —

पहला—लेकिन यहां पर एक और सवाल है, न्याय और अन्याय का फजूल ख्याल है आज एक एक अङ्गरेज के खून का बदला हिन्दोस्तानी बच्चो और औरतो की हत्या से चुकाया जायेगा। जहां सफेद खून का एक कतरा गिरा है वहां हजारों काले आदमियोंका खून गिराया जायेगा।

टकोंका कौनसा अपने लिये टूटा न तोड़ा है।
इन्हें जितना भी हम रुस्वा करें उतना भी थोड़ा है॥
हम ही ने इन को पाला है हमें पामाल करते हैं।
हम ही से सीख कर चालें यह हमसे चाल करते हैं।

दूसरा-लेकिन यह देखना है कि पापका क्या परिणाम है ?

पहला—क्या परिणाम है ?

दूसरा बुरा अञ्जाम है।

हमेशा पाप दम भर के लिये ऊपर उछलता है।

दूसरा—आप का ऐसा विचार है तो बन्दा भी इस नेक काम में साथ देनेको तैय्यार है।

पहला-(दरवाजा खटखटा कर) दरवाजा खोलो।

(मकान की छत पर डरके मारे सहमे हुई दो औरतो का जाहिर होना)

पहली औरत—(आवाज सुन कर) बहन मालूम होता है कि अब मार्शल ला ने और भी अधिक भयङ्कर रूप धारा है, जो जातिका महत्व कुचलनेके लिये भारत महिलाओं के निवास स्थान में अपना पाव पसारा है।

दूसरी औरत —

बस तो समझा विश्व से अब शर्म सारी उठ गई।
और अमन आमान की मर्याद सारी उठ गई॥
बाड की बदली है नियत खेत को खाने लगी।
अब वह रचा और रस्म पासदारी उठ गई।

पहली औरत-तो फिर ?

पहला-जल्दी दरवाजा खोलो।

दूसरी औरत—तो अब क्या करना होगा ?

पहली औरत—अब कायरों को भूल कर शेरनीका स्वांग भरना होगा, झोपनेको भूल कर मर्दानी ताकत से अत्याचारका सामना करना होगा।

हम कहनेको तो औरत हैं निर्बल हैं और अबला हैं हम।
जब लाज पे हाथ कोई टूटे तो अबला नहीं बला हैं हम।
देखेंगे अत्याचारी भी क्या तेज प्रचण्ड सती का है।
भारत महिला के हृदयमें क्या तेज प्रबल शक्ति का है।

की भी गुलाम हो हम तुम्हारे अन्न दाता और जर दाता है, तुम हर तरह से हमारे दास मे हो।

पहली औरत—क्या तुम्हे जरा मालका घमण्ड है ?

पहला मर्द—और हमारा यह घमण्ड ? है ?

पहली औरत—अय दौलत पर घमण्ड करनेवाली, इसपर न इतराओ, अपने परलोक को सभालो।

पास रावण के भी थी इक दिन जो लङ्का स्वर्ण की।
क्या तुम्हे उसकी तरह चिन्ता नही है मरण की।
इस पे गर इतराओगे तो अन्तको पछताओगे।
कौन इसको ले गया जो तुम इसे ले जाओगे॥

दूसरा मर्द—अगर तुम अपने हाथ से अपने मुंह से पर्दा नही उतारोगी, तो फिर हमे बाहुबल से काम लेना पडेगा।

पहली औरत—अरे मूर्ख, बाहुओ के बल पर घमण्ड न कर।

है वृथा मूरख तुझे इन बाहो के बल का गुमान।
तुझसे क्या कम था अरे बाली भी था बलका निधान॥
क्या रहा उसका जो अब तेरा अमन्न रह जायगा।
काल के आगे तेरा सब बाहु बल रह जायगा॥

पहला मर्द—मगर हम काल से नही डरते।

पहली औरत—तो ईश्वर से डरो, उस सर्व शक्तिमान से डरो, उस भक्त भय भञ्जन, दुष्ट निकन्दन से डरो।

डरो उस से कि वह सृष्टि का शक्तिमान ईश्वर है।
वह जितना दिल का कोमल है उतना हो भयङ्कर है॥
अनाथो को सताने का तरीका क्यो निकाला है।
पता है निर्दयी तुझ को कि कल क्या होने वाला है।

पहली औरत-देखो धर्म का अमल उठ रहा है, आज यह काम अन्ध सेवक अपने गरीफ दिल शाहशाह जार्ज पंजम जैसे प्रजा हितकारी स्वामी की आज्ञा उल्लङ्घन कर रहे हैं। जिस स्वामी का आज तक निमक खाया उसी की कीर्ति का अनादर कर रहे है, अपने राजा की प्यारी प्रजा की सती महिलाओ के धर्म को स्वार्थ की ठोकरोंमे पामाल करने की ठानी है। आज जिधर देखो हे प्रभु उधर ही आर्य्य सेवित भारतवर्ष की हानि है।

गर अब नही आओगे तो कब आओगे प्यारे।
जब नाम ही मिट जायेगा तब आओगे प्यारे॥

(दोनों औरतों का गाना)

वक्त हैं यही मेरे बासुरी वाले आजा।
अब तो बिगडी हुई भारत को बनाले आजा॥
माल की फिक्र थी पहले तो बडी भारत को।
अब तो लेकिन है पडे जानके लाले आजा॥
द्रौपदी को थी रखी लाज सभा म तूने।
आज भारत की बस्ती को बचा ले आजा॥
हाथ इमदाद का सुग्रीव को देने वाले।
हाय भारत के दुखी जन का बटा ले आजा॥
दर्दो इफलास सुदामा का बटाने वाले।
इस दुखी देश का भी दर्द मिटाले आजा॥
देख कोई न कहे इनका कोई राम नही।
सूर्य्य की बंश के सूरज के उजाले आजा॥

हर तरफ फैली हुई आग है बे चैनी की।
गीता उपदेश के छींटों से बुझाले आजा॥
(सीन का ट्रांसफर होना)
(क्षीर सागर का दिखाव, विष्णु भगवान लक्ष्मी के जघा स्थलसे सर उठा कर भारत भूमिको तसल्ली दे रहे हैं)।

सीन एक तीसरा तीसरा

राष्ट्रीय मिलाप-भुवन।

(लीडरों को राष्ट्रीय दुनिया से निकलती हुई आवाज का सुनाई देना)

गाना।

इस आजादीकी खातिर अपना तन मन धन लगा देंगे।
हम अपने प्यारे भारत को स्वतन्त्र फिर बना देंगे॥
अभी तो की है कुर्बानी सिर्फ माल और दौलत की।
जरूरत जब पडेगी तो यह जानें तक लडा देंगे।
गुलामी की यह जजीरें जिन्होंने देश को जकडा।
हम उनको तोडना तो क्या है टुकडे तक उडा देंगे।
यह आजादी का संदेशा दिया जो आत्मा ने है।
इसे भारत के घर घर में पहुंच कर हम सुना देंगे।
जन्म से हक है जो अपना है जिससे कौम का जीवन।
हम अपने प्यारे भाइयों को वही न्यामत दिला देंगे।

अगर सच्चे स्वदेशी है रखेंगे देश को लज्जा।
विदेशो में हम अपने देश का डङ्का बजा देंगे॥
"न मिल वर्तन' से हम को एक दिन स्वराज्य लेना है।
चमत्कार आत्मिक शक्ति का हम सब को दिखा देंगे॥

[शेर पञ्जाब लाजपतराय का प्रवेश]

लाजपतराय--आओ मेरे प्यारे मित्रो आओ। अन्धेरे से निकल कर उस रोशनी मे आओ, जहा से स्वाधीनता का सुन्दर स्वरूप अपने पूरे प्रकाश के साथ चमकाता हुआ नजर आ रहा है। आओ इस गुलामी के कारागृह से निकल कर उस खुली हवा मे आओ जहा आजादी का शीतल झोंका तुम्हारे आत्मा को अपनी कुदरती खुराक बहम पहुचायेगा। आओ जिस सच्ची खुशी को तरसते हुए तुम्हारे बाप दादा परलोक को सिधारे है, उसका खूबसूरत चेहरा यहीं से नज़र आयेगा। जो आन बान तुम्हे चमकदार दिखाई देती है, वह गुलामी की सुनहरी जञ्जीर है, जिसमें बधा हुआ तुम्हारा स्वतन्त्र आत्मा ससार की सच्ची राहत से महरूम होकर भटक रहा है। जो नुमायिश तुम्हे सुख देने वाली प्रतीत होती है, वह गुलामी की झूल है, जिसके नापाक बोझ से दबी हुई तुम्हारी हस्ती तुम्हें नाचीज और गुलाम बना रही है। इस झूल को फेक दो उस गुलामी की जञ्जीर को तोड दो। वह रास्ता छोड दो और उस रास्ता पर आओ जो सीधा और साफ है।

अगर लेना है आजादी बढो आगे इधर आओ।
तुम आजादीके लायक हो तो लायक बनके दिखलाओ॥

गुलामी का यह जूआ अपने सरसे फेंक डालो तुम।
खड़े होकर तुम अपने पाओं पर अपना बनालो तुम॥

हां मगर जाने रहो, इस स्वाधीनता के मार्ग में हिंसक डाकू मिलेंगे, त्याग से उन का मुकाबला करो। स्वार्थ के खूंख्वार पशु मिलेंगे, आत्मिक बल के शस्त्र से उन को नीचा दिखाओ। मुसीबत के ओले बर्से तो दृढ़ता के छाते से उनका निवारण करो। दुखों की आंधी चले तो साबित कदमी से कर्त्तव्य की चट्टान पर अपने पैर जमा लो। आओ प्यारे अपने लीडरों की तरह देश की खातिर अपना सर्वस्व बलिदान करो। कौमी आन के लिये अपनी सब से ज्यादा अज़ीज वस्तु प्रदान करो। प्यारे देश ही हमारा सर्वस्व है।

देश की चिन्ता और स्वदेश का ही ख्याल है।
इस पे कुर्बां जान है इस पर निछावर माल है॥
गर वतन को अपना इक २ गाम भी दरकार है।
मर्द है वह ही जो देने के लिये तय्यार है॥

[शैदाय वतन हकीम अजमलखां का प्रवेश]

हकीम अजमल खां—शाबाश बरादरे हिम्मत सहां [illegible] अय शेरे पञ्जाब, पञ्जाब तो क्या इस वक्त सारा भारतवर्ष तुझ पर नाज कर रहा है। इस वक्त तेरी हिम्मत का [illegible] बाज अपनी पूरी ताकत के साथ कुर्बानी के [illegible] पर पर्वा [illegible] कर रहा है। सच्ची कुर्बानी की शमा को रोशन करके तूने भारत पुत्रों को आजादी का मार्ग दिखलाया है। तूने अपने पंजाबी भाइयों को स्वाधीनताके पवित्र जल प्रवाह में गुप्त अमृत का पान करवाया है। धन्य है वह कर्त्ता जिसने तेरे पाक

वजूद का हस्ती का जामा पहनाया है। धन्य है वह मात
जिसने तुझे अपने उदर से दाया है।

> खूब जीना है तुम्हारा खूब दुनिया में जिये।
> अपने रहने के मका तक कौम की खातिर दिये॥
> पूर्वजों के नाम का तूने है रोशन कर दिया।
> दाग खाए दिल पर और भारत को गुलशन कर दिया॥

लाजपतराय—अय भारत के सच्चे सपूत, वह तू ही है
जिसने मान ईमान दौलत और शान, बङ्गले और मका
इज्जत के तमाम निशान, सब कुछ कौम की जरूरत प
निसार कर दिया। बडी बड़ी उपाधियों और सरकार
मिथ्या वरदान का बलिदान कर दिया। आज इस्लाम क
तुझ पर अभिमान है आज भारतवर्ष पर तेरा ऐहसान है।

> काम वह करके दिखाया तूने हिन्दोस्तान में।
> हो गया चर्चा तेरा तर्की में और ईरान में॥
> कौमी और इज्जत पर किया तूने बलि आराम का।
> क्यों न हम प्यारे कहें हीरा तुझे इस्लाम का॥

हकीम अजमलखां—कौमी के जरूरत के सामने य
खताब और रुतबा क्या चीज है, अगर वक्त आयेगा तो अप
मादरे वतन का यह फर्मांबरदार बेटा अपनी जान न
करने से भी कद पीछे न हटायेगा।

> जो भी है या पर हमारा है वतन के वास्ते।
> मालो जर असबाब सारा है वतन के वास्ते॥
> इससे बढ़कर जो कि प्यारी है हमें वह जान है।
> सबसे प्यारी है मगर यह जान भी कुर्बान है॥

[फख्रे कौम पं० मोतीलाल नेहरू का प्रवेश]

मोतीलाल—मेंहदी का पत्ता पिस कर रङ्ग लाता है। एक कम कीमत स्याह पत्थर का टुकड़ा सिल पर घिस कर आंख का सुरमा बन जाता है। दीपक खुद जल कर दूसरों को रौशनी पहुंचाता है। दाना खुद खाक में मिल कर औरों के लिये गुल खिलाता है।

है वह मुर्दा जो रहा जो अपने तन के वास्ते।
वह ही जीता है जो जीता है वतन के वास्ते॥
देश के हित जिसने दुख सुख सब गवारा कर लिया।
लोक और परलोक का अपने सुधारा कर लिया॥

लाजपतराय आओ वतन के प्यारे लाल तुमने अपने नामका सच्चा परिचय दिया है, तुम बेशक भारत माता के मान मुकुट में चमकाने वाले अमूल्य मोती हो। तुम भारत माता के अज्ञाकारी लाल और अन्धकार मय वर्तमान काल की ज्योति हो। हजारों रुपया की आमदनी पर लात मार कर अमीराना सुख और आराम को बिसार कर, आत्मा की गर्दन से स्वार्थका जूआ उतार कर मातृ सेवा के भाव भावों को हृदय में धार कर, कर्त्तव्य की रण भूमि में आने वाले तुम ही हो। क्रोध मोह लोभ अहङ्कार इन पांच शत्रुओं को पछाड़ कर, खुद गर्जी के परों से लिताड़ कर कर्मभूमि में जौहर दिखाने वाले रण धीर तुम ही हो।

तुम से भारत की जाति का क्यों कर यश दूना न हो।
तुम देश भक्त और त्यागी हो और सतका एक नमूना हो।
तुमने सब को दिखलाया है यूं देश भक्ति का दम भरते हैं।

इस तरह वतन पर देश भक्त सर्वस्व निछावर करते हैं॥

मोतीलाल—मैंने कुछ नहीं किया, जिस भारत माता ने हमारे खाने को नाना प्रकार के भोजनोंका भंडार दिया, जिस भारत माता ने हमारे पूर्वजों का आत्मिक ज्ञान प्रदान करके भवसिन्धुसे तार दिया, जिस भारत माता ने हमारे एक एक रोम पर लाख लाख उपकार किये, जिस भारत माता ने हमारी आत्मिक प्यास बुझाने के लिये अपने सर्व लोक पूजनीय धर्म शास्त्रों द्वारा धर्मोपदेश रूपी अमृत बरसाया, जिसने आज तक हमको खिलाया और पिलाया, तो भारत माता अब वृद्ध अवस्था में भी हमारे बुढापे की लाठी बन कर हमें चलायेगी और जो मृत्यु के पश्चात् अपनी आनन्द स्वरूपिणी गोदी में हमें सुलायेगी, उस की खातिर हजारों रुपयों की आमदनी तो क्या चीज है, संसार में सबसे ज्यादा अजीज है वह भी तैयार है।

दरकार बाल की हो तो मैं बाल बाल दूं।
चमडी हो काम की तो मैं अपनी यह खाल दूं॥
आखें यह काम आये तो आखें निकाल दूं।
दरकार हो जिगर की तो चरणों में डाल दूं॥
माता जो मेरे वास्ते ऐसी उदार है।
उसकी तो एक आने पै सब कुछ निसार है॥

गाना।

अगर भारतके काम आये तो मेरी जान हाजिर है।
मेरे जीवन के सुख दुख का सब ही सामान हाजिर है॥
यूँही यह जान एक दिन तो जहां से जाने वाली है।

अगर इसके लिये जाये तो फिर यह भाग्य शाली है ॥
है भारत एक देवी और मैं इसका पुजारी हूं।
यह माता है मेरी बेटा मै इसका आज्ञाकारी हूं ॥
मै इसका धर्म बालक हूं यह है धर्म आत्मा मेरी।
मै इस की आत्मा हूं और यह परमात्मा मेरी ॥

हकीम अजमलखां—तो आज यही भारत माता जो निरादर और अपमान के कोडे खा रही है, जिस के मान की नाव दुख के भवर मे फसी हुई डगमगा रही है, क्या हम उसको अपने जीते जी दुख के सागर मे बे सहारा छोड देंगे, क्या इन आखो से देख कर जहर खाया जायगा।

(मुहिबे वतन सी० आर० दासका प्रवेश)

सी० आर० दास--नहीं कभी नहीं, यह आंखें भारत का अपमान होता न देख सकेंगी। यह कान भारत की बुराई सुनने को हर्गिज तैयार नही होंगे, बल्कि हम प्राणों को भारत के गम मे रो रो कर घुला देंगे इन की खातिर सख्तियां उठाने के लिये हम अपने दिल को पत्थर का बना लेंगे। जर दिया माल दिया दौलत दी [illegible] जान दिया, अब जो कुछ बाकी है वह भी इसी भारत माता की खातिर लगा देंगे।

पण्डित रामभज दत्त—और उस वक्त तक गुण गायेंगे, जब तक कि मुंह में जबान है और शरीर में प्राण है। महात्मा गांधी के सत्य उपदेश अथवा असहयोग पर चलते हुए जबान से सत्य का प्रचार करेंगे। जबान बन्द कर दी जायेगी तो कलम को इस्तेमाल करेंगे। कलम पकड़ लिया जायेगा तो शुभ भाव से, सच्चे हृदय से, दृढ़ विश्वास से, प्रार्थनाओं द्वारा भारत का भला चाहेंगे, पञ्जाब के अत्याचारों की तलाफी करायेंगे और खिलाफत सम्बन्धी गलतियों का संशोधन हो जाने पर चैन पायेंगे।

हम अहिंसा परमो धर्म की सत्ता बतलायेंगे।
धर्म पर चलते हुए हम धर्म का यश पायेंगे॥
बाहु बल से और कौमों ने लिया स्वराज है।
आत्मिक बल से मगर स्वराज हम ले जायेंगे॥

मोतीलाल—क्यों नहीं जब देश भक्त सी० आर० दास जैसे त्यागी और आप जैसे भारत अनुरागी देश कल्याण में डट जायेंगे तो हमारी आजादी को रोकने वाले और हमारी शुभ कामनाओं का विरोध करने वाले समस्त साधन मार्ग से हट जायेंगे, कामयाबी हाथ बांधे हुए सेवा में हाजिर हो जायेगी, स्वाधीनता हमारी उन्नति के मार्ग सफा करने में तत्पर हो जायेगी।

घिसने से कसौटी पै ही सोने को जिला है।
यश जिसको मिला उसको ही सेवा से मिला है॥
भाइयों की बुराई से बुराई है हमारी।
गर सबका भला है तो हमारा भी भला है॥

लाजपतराय—

बस न अब पेशे नजर ध्यान पेमो प्रेम का हो
है वही काम भला जिस से भला देश का हो ॥

(भारत सेवक पंजाब वीर डाक्टर किचलू का प्रवेश)

तो हम अपने देशका सुधार करने के लिये और जाति का उद्धार करने के लिये समुन्दर के किनारे पर चट्टान की तरह दृढता से कायम हैं। मुसीबत के थपेडे हमारे पाओं को नही उखाड सकते। त्रास के गर्म झोंके हमारी शुभ कामनाओ के बाग को नही उजाड सकते। अब तो हम उठे है, तो पहाडी किले की मीनार के मानिन्द जरूर ही ऊपर को सर उठायेंगे अब तकदीर के तीर हमारे पाओं तले की खाक को चूमने के लिये कामयाबी की कमान से निकल कर आयेंगे।

मुसीबत का तूफान चाहे बया हो
हो दुश्मन जमाना मुखालिफ हुआ भी ॥
है क्या फिक्र गर शीस भी यह कटेगा।
न पीछे को हिम्मत का पाव हटेगा ॥

(मुहिब्बे वतन सत्यपालका प्रवेश

सत्यपाल—और जैसे सहरा मे ऊंट भूक प्यास गर्मी और सफर की मुसीबत झेलता है और शिथिल होकर गिर नही पडता, उसी तरह हम भी तमाम खतरों और मुसीबतों से अपने दिल को ढारस देंगे, तकदीर के क्रोध का ध्यान

नहीं लायेंगे। जिस मार्ग मे पैर जमा दिये हैं, उस मार्गसे पीछे हटकर नहीं जायेंगे।

दिल है पहलु मे तो है देशकी उल्फत दिलमें।
जान हाथों पे लिये फिरते हैं हसरत दिल में॥

जगद्गुरु स्वामी शङ्कराचार्य का प्रवेश

धन्य है वह महापुरुष जिनका धन अपने ब्रह्मपुरवासी भाइयों के काम आता है। धन्य है वह देवता स्वरूप नेता जो अपने मजलूम भाइयो की रक्षा करते है, जो बलवान निर्बल पर जुल्म करने से बाज रखते है, जो अनाथों की खोज लगाते और उनकी सच्ची जरूरियत का प्रबन्ध करते हैं, और जो अपने दस्तरख्वान की बची हुई चीजों को अपने नादार भाइयो के योग्य समझते हैं।

दोहा—धन्य धन्य वह आत्मा, धन्य उसी के भाग।
जिसके हृदयमें बसा, सच्चा देश अनुराग॥

लाजपतराय—और अफसोस है उन पर जो दौलत पर दौलत जमा करते और उस पर इतराते है, जो गरीबो का गला घोट कर और अनाथो का पेट काट कर द्रव्य का अम्बार लगाते है। धिक्कार है उनको जो गरीबों के खून और पसीने को खातिर में नही लाते और बेदर्दी से उन पर अनर्थ करके मौज उडाते है। लानत है उन पर जो यतीमों के आसुओ को दूधकी तरह पी जाते है, जिनके कान विधवाओ की गिरयाजारी सुन कर बन्द हो जाते है।

शङ्कराचार्य—वही लोग लोक को बिगाड कर परलोक [आ]त्मिक अधिकार से जाते है।

जो अपनी रोटी के खातिर भाइयो का पेट जलाते हैं।
जो अपनी प्यास बुझाने को भाइयो का खून बहाते हैं॥
जो अपने स्वार्थ की खातिर भाइयो का नाम मिटाते हैं।
जो खुद गर्जी की वेदी पर भाइयों को भेट चढाते हैं॥
वह एक बार तो जीते जी यहा अगन चिता मे पड़ते हैं।
फिर घोर नर्क में पड़ते हैं सड जाने पर भी सड़ते हैं॥

सब—जगद्गुरू शङ्कराचार्य्य की जय।

लाजपतराय—आप जैसे जगद्गुरू इस कर्तव्य समर मे पुरुषार्थ के सस्त्र बाध कर उतर आयेंगे, तो निश्चय ही भारतीय कौम की जय होगी।

देश के उद्धार मे साधु भी जब लग जायेगे।
फिर नसीबे अपने भारतवर्ष के जग जायेगे।
देश भक्ति मे पडेगे भक्त जब भगवान के।
दिन फिरेगे क्यो न फिर इक बार हिन्दुस्तान के॥

(आवाज़ भारत माता का प्रकट होकर जगद्गुरू को फूलों का हार पहनाना)

भारत माता:—

दोहा—जगद्गुरु जाकर करो जातिका उद्धार।
साधु पुरुषा में करो देश भक्ति प्रचार॥

शङ्कराचार्य्य—बोला भारत माता की जय, ऐ मातेश्वरी! दरिया अपना रोजाना काम करता है। बस्तियो और मैदानो मे बहता हुआ चला जाता है, तो भी उसको लहर तेरे चरणो को चूमने के लिये दौड़ी चली आती है। फूल अपनी खुशबू से हवा को सुगन्धित बनाता है, तो भी जब

को आखिरी सेवा यह है कि वह अपने आप को तेरी भेंट कर दे, तो क्या मैं अपने इस जीवन के खूबसूरत फूल को तेरी भेंट नहीं करूंगा, परमात्मा ने यह सुन्दर पुष्प इसी मतलब के लिये पैदा किया है।

बल दे मुझे कि मैं तेरा कर्जा उतार दूं।
जानें हजार भी हों तो मैं तुझ पर वार दूँ॥

(तमाम लीडरों का भारत माता को प्रणाम करना भारत माता का सब पर फूलों की वारिश करना)

—o—

सीन ऐक्ट दूसरा छठा
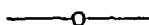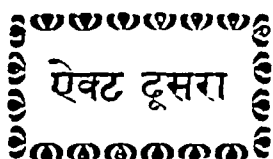
(स्थान पञ्जाबी लीडर का मकान)

(लीडर का लाला लाजपतराय की फोटो को जो मकान की दीवार से लटक रही है देख कर —)

लीडर—अय शेर पञ्जाब अफसोस कि तू इस वक्त पाताल लोक में पाबन्दियों की जञ्जीरों से जकड़ा हुआ हसरत की निगाहों से अपने प्यारे वतन को देखने के लिये बेताब है। हमारे सुख से सुखी और दुख से दुखी होने वाली महान् आत्मा, आ और देख कि आज किस तरह डायरशाही के हाथों हमारा खाना खराब है, जिस आजादी को तूने अपना शुद्ध रक्त पिलाया है, जिसके लिये तूने बन्धन का कष्ट उठाया आज उस आजादी के तमाम मार्ग हमारे लिये बन्द हो

रहे है, तेरे दुखी भाइयोंके नाले वायु मण्डल को चीर कर अन्तिम आकाश तक बुलन्द हो रहे हैं।

मां और देख दुख की वर्षा बरस रही है।
हर एक आंख प्यारे तुझको तरस रही है॥
तुझ को अय लाजपत है पंजाब की दुहाई।
कुछ सूझता नहीं है कर आके रहनुमाई॥

(एक विद्यार्थी का दाखिल होना)

विद्यार्थी—वन्दे मातरम्।

लीडर-क्यों, आपका चेहरा क्यों उदास है, कोई बात खास है?

विध्यार्थी श्रीमान्! अब कुछ नहीं सूझता, अब हमें क्या करना चाहिये?

लीडर-अपने जाति लाभ और फायदे की पूंजी को कौमी जरूरत पर कुर्बान करने के लिये तैयार रहना चाहिए मातृभूमि के गौरवार्थ अपने आत्मा पर एक प्रकार का कष्ट सहना चाहिये महात्मा गांधीके खामोश मुकाबले का नियम एक सुनहरी असूल है, उस पवित्र नियम पर हत्याचार का दोष फजूल है।

विद्यार्थी-हम अपने अन्त करण की आवाज के अनुसार हर एक काम करने को तैयार हैं।

सिर पर सहेंगे सख्ती और जेल में सड़ेंगे।
लेकिन इस आत्मा के बल झूठ से लड़ेंगे॥
सत बात ही करेंगे सत पर स्थिर रहेंगे।
औरों को दुख न देंगे और आप दुख सहेंगे॥

लीडर-लाहौर का क्या समाचार है?

विद्यार्थी-वहां कर्नल जान्सन का खूब तूती बोलता है।

लीडर-सुना है कि कालिज के विद्यार्थियों पर जान्सन ने खूब हाथ साफ किये हैं।

इन हरकतों से क्या यश जाति का होगा दूना।
क्या है यही यूरूप की तहजीब का नमूना॥

विद्यार्थी-कर्नैल जान्सन किसी आला पदवी की योग्यता नहीं रखता, वह एक मुहज्ज़ब इन्सान का दिल और हौसला नही रखता।

लीडर बेशक, हिज मजेस्टी के आला ओहदे की इज्जत रखते हुए, भारत पर शासन की ताकत रखते हुए, बादशाहकी वफादार प्रजा का अपमान करना निन्दनीय काम है।

विद्यार्थी-जिसका हर सूरत में बुरा अंजाम है।

जो युधिष्ठिर भीम अर्जुन कृष्णकी सन्तान हो।
जिसके दिल अपने राजा के लिये सन्मान हो॥
जिसका राजा के लिये सर्वस्व तक बलिदान हो।
ऐसी हितकारी प्रजाका इस तरह अपमान हो॥

लीडर-प्यारे भाई स्मरण रखो! चन्द्रमा एक छिन भर के लिये ग्रस्ता है, सायकाल की शीघ्र हो ढल जाने वाली शफकके समान थोड़े समय के लिये ही राहु के चक्कर में फंसता है। जाति गौरव और आत्मिक बल रखनेवाली ऋषि सन्तान को जितना कष्ट दिया जाय उतना ही उसकी ज्योति का प्रभाव फैलने पायेगा। पवन से भरपूर गेंद को जितनी शक्ति से नीचे को फेंका जायेगा उतनीही शक्ति और बलसे ऊपर को उठेगा।

दबाने से सर्प भी काटखाने को उछलता है।
मुसीबत में बशर का जौहरे मर्दाना खुलता है॥

यह आजादी का जज्बा जो दबाए और बढता है।
कसौटी पर घिसाने से स्वर्ण का मोल बढता है॥

विद्यार्थी-लेकिन तमाम ताज़ा इत्याचारो को ईजाद करनेमें डायरने कमाल किया है. वफादारी को गद्दारी को एकही उलटी छुरी से हलाल किया है।

प्रजा पर आक्रमण डायर का ऐसा बुजदिलाना है।
सुनो तो रो पडा ऐसा अमृतसरका फसाना है॥

लीडर—क्या जल्यांवाले बाग का इत्याचार ?

विद्यार्थी—हा भारतवर्ष का निर्दोष परिवार और अनर्थ की तलवार।

कटते है इस तरह भाई हमारे इस जमाने मे।
हैं कटते भेड बकरी जिस तरह कस्साबखाने में॥
सर और धड बह रहे थे इस तरह खूं की रवानी मे।
बहे जाते हो तिनके जिस तरह दरिया के पानी मे॥

लीडर-कितनी देर तक यह इत्याचार का बाजार गर्म रहा ?

विद्यार्थी—जब तक डायर के पास गोले बारूद का भण्डार गर्म रहा।

निर्दोष बाल और जवानो की टोलिया।
खाकर मरे है इस तरह डायर की गोलिया॥
कीडो को जिस तरह कोई पाओ से मार दे।
या इक पशु हकीर की गर्दन उतार दे॥

लीडर-जलसे को मुन्तशिर करने का कुछ उपाय न किया ?

विद्यार्थी—बल्कि जो लोग भयभीत हो कर भाग रहे थे, वही गोलियो का निशाना हुए, बच्चे और वृढे इसी दौड धूप में कुचले जाकर अदम को रवाना हुये।

लीडर—यह भारतवर्ष के दिनों का फेर है, कि इसी के टुकड़ों पर पला हुआ भी इसी पर शेर है।

अय्याम हो बुरे है भारत की बेकसी के।
खाये इसी के टुकड़े, टुकड़े किये इसी के॥

विद्यार्थी—इतने पर भी डायर की अग्नि तृप्त न हुई।

लीडर—अर्थात् ?

विद्यार्थी—इस से अधिक उत्पात, शहर के कुओं को सिपाहियों ने पेशाब से अपावन कर दिया, शहर वालों को पहरों तक धूप में पा बरहना खड़ा किया, धर्म स्थानों में जाने वाले पेट के बल चल कर जाते थे। जो साधारण सिपाही को भी सलाम न करते, वह हवालात की हवा खाते थे। बड़े बड़े लखपती रईस सर्कारी आदमियों को मजबूरन सलाम करते थे। कानून के जानने वाले वकील कुलियों का काम करते थे।

वां पर दलील और बहाना व्यर्थ था।
सुनता न था किसी की कोई यह अनर्थ था॥

लीडर—गोया शराफत जिल्लत के पैरों की ठोकरें खा रही थी, झूठ की अदालत न्याय की गर्दन दबा रही थी।

विद्यार्थी—और अभी तक दबा रही है, लीडर धड़ाधड़ निर्दोष पकड़े जा रहे हैं, पोलीस के द्वारा झूठी शहादतों के खींचतान खड़े किये जा रहे है।

अदालत की दशा इतनी गिरी अन्धेर शाही में।
निरपराधी जबर्दस्ती धरे जाते गवाही में॥
न हो गर पेश जो पोलीस वालों की सफाई में।
तो आ जाती है उसकी जान आफत और तबाही में॥

लीडर—निर्दोष और ऐसी परेशानी में ?

विद्यार्थी—इससे बढ़ कर पञ्जाब की राजधानी में, विद्यार्थियों की चार मर्तबा दिन में हाजरी ली जाती थी, उन्हें सख्त से सख्त अज़ीयत दी जाती थी, सोलह सोलह मील या ज्यादा चल कर जाना और इस पर ज़बान भी न हिलाना, यह है इन्साफ खुसरवाना।

मासूम बालकों पर यह जौर हो रहा है।
सर पीटता है न्याय और धर्म रो रहा है॥

लीडर—क्या ऐसा दण्ड देने वाले कर्मचारी का यह विचार है कि विद्यार्थियों पर अनर्थ करनेसे यह तहरीक दब जायेगी।

विद्यार्थी—नहीं बल्कि इस कष्ट और इत्याचार का विचार पत्थर पर लकीर की तरह विद्यार्थियोंके दिलों पर खुदा रहेगा।

हम भूल जायें चाहे कालिज की हिस्ट्री को।
भूलेंगे पर न हर्गिज़ लाहौर ट्रेजडी को॥

(एक अफसर का दाखिल होना)

अफसर—मिस्टर लीडर, माफ करना मैं आपको बात चीत में दखल देना चाहता हूँ (ज़रा रुक कर) क्या आप तय्यार हैं।

लीडर—(अफसर का मतलब भाप कर) हां परमात्मा की इच्छा को सीस पर धारण करने के लिये हर वक्त तैय्यार हूं।

जो उसकी मसलहत है उस तलक किसकी रसाई है।
वह जो कुछ भी करेगा उस में मेरी ही भलाई है।

अफ़सर—काश कि मेरी जगह कोई और अफसर इस ड्यूटी पर मामूर होता, तो आज मैं तुम्हारी गिरफ़्तारी का वारण्ट लाने पर न मजबूर होता।

लीडर—लेकिन हां इस के सम्बन्ध में एक प्रश्न जरूर करूंगा।

अफसर—कौन सा ?

लीडर—क्या आप वह दिन भूल गये ?

अफसर—कौन से दिन ?

लीडर—जंग जर्मन।

अफसर—वह कैसे ?

लीडर—अफसोस है कि जिन हाथों से आप मुसीबत के वक्त मुझ से युद्ध के लिये दान मांगने आये थे, आज उन्हीं हाथोंसे गिरफतार करने आये हो, क्या तहजीब का लहु इतना सफेद, उपकार का बदला कैद का है।

> इमदाद की जिन्हों ने लड़ाई के अहद में।
> उनका ही आज डालना चाहते हो कैद में॥
> जर ले गये हो जिनका खुशामद से नाज से।
> बम उन पर गिराते हो हवाई जहाज से॥

अफसर—पोलिटिकल मामला है।

लीडर—तो वह भी पोलिटिकल तकाजा था, हमने किस लिये जर्मन की लड़ाई में जर लुटाया था ?

अफसर—अच्छा सिलह पाने के लिये।

लीडर—नहीं।

अफसर-हमदर्दी जिताने के लिये।

लीडर-नहीं।

अफसर इज्जत और खिताब पाने के लिये।

लीडर-नहीं।

अफसर-तो फिर ?

लीडर-अलबत्ता हमने आशा लगाई थी कि हमारे जर और बच्चा की शहादत से भारत की स्वतन्त्रता का पोदा हरा होगा, हमें अपना प्राचीन मानवी स्वत्व अता होगा। लेकिन वह हमारी भूल थी, सब आशा फजूल थी।

अब यह जाना है मदद करना भी इक तकसीर है।
कुछ निमक में ही हमारे बे असर तासीर है॥
हमने समझा था मिलेगी अब तो आजादी हमें।
वहम था वह ख्वाब यह उस ख्वाब की ताबीर है॥

अफसर—आप से और मुझ से ज्यादा हिज आनर ओडवायर इस नीति को समझते है।

लीडर—यह उसी ओडवायर की राजनीति का नमूना है, कि पंजाब में जो सङ्कट के वक्त सहायता में सब से आगे था आज मातम घर का नमूना और सूना है। ओडवायर की राजनीति का केवल तोपो और हवाई जहाजो पर आधार है, जो मुसीबत में मित्र था अब गुलाब और गद्दार है।

अफसर—और तुम्हारी राजनीति ?

लीडर—हमारी राजनीति क्या थी वह गीता और रामायण बतलायेगी। राम ने सुग्रीव का हाथ बटाया, तो सुग्रीव ने राम के कार्य्य हित अपना सर्वस्व लगाया, लङ्का पर चढ़ाई करने के योग्य बनाया, विभीषण ने राम की सहायता की, राम ने उस के पुरस्कार में उसे लङ्का की राजगद्दी दे दी।

सीन एक तीसरा पहला

दिखाओ सीन—वाकिंसग ।

आवाज़

(पञ्जाब के नक्शे का फटना और पीछे से शिमले के पहाड़ का नमूदार होना। आराम कुर्सी पर चेम्सफोर्ड का बैठे हुए और खुशी व दौलत का हाथ ग्लास में लिये हुए दोनों पहलुओं में खड़े हुए नज़र आना।)

अन्दर से गाने की आवाज।

गाना।

उठो नज़ाकत में सोने वालो तुम्हें जमाना जगा रहा है।
तुम्हारी गफलतसे कोई भारतका नामतक भी मिटा रहा है।
तुम्हें तो पहुंचा रहो है ठण्डक ऋतु यह शिमलेकी वायुओं की
खबर है प्रजाको दुखकी अग्निसे कोई जालिम जला रहा है।
हज़ारों बच्चे अनाथ हैं और हज़ारों विधवाये रो रही हैं॥
लगाओ ढारस का उनको मरहम कि दर्द उनको सता रहा है।
हैं जिनकी मेहनतसे आज शिमले की यह हवाये नसीब तुमको
उन्हीं की पिछली मुरव्वतोंको यह ओडवायर भुला रहा है।
तुम्हारा इस वक्त जो धरम है करो उसे चेम्सफोर्ड पूरन॥
तुम्हारी खातिर जो मरमिटे हैं उन्ही को डायर मिटा रहा है।

चेम्सफोर्ड—(चौकन्ना होकर) यह कैसी दर्द भरी आवाज आ रही है।

आज इस बंगले की दीवारों की सूरत जर्द है।
सुन रहा हूं मैं कि इस आवाज में कुछ दर्द है॥

खुशी—श्रीमान्! दर्द किसका? मेरे होते हुए दर्द की हस्ती नहीं रह सकती। आप मेरे कर कमल से एक प्रेम प्याला पीजिये और दिलसे इस दर्द के ख्यालको दूर कीजिये।

गम का यह होगा कोई मातम यह होने दीजिये।
रो रहा है जो उसे मातम में रोने दीजिये॥
दे रही है अपने कोमल हाथ से पीही थपक।
सुख के फूलों की शय्या पर दिल को सोने दीजिये॥

दौलत—हे भारत के वीर शासक, जब तक आप की यह अदना लौंडी आप की सेवा में तत्पर है, आप के सन्मुख आने की चिन्ता की क्या समर्थ है।

बड़े आराम से झूलो पडे खुशियों की झूलों में।
न कांटा गम का आने दो कभी इन सुख के फूलों में॥

आवाज—(अन्दर से भारत माता), इन्साफ व राजनीति का डेपुटेशन) सुनो दीन की हाहाकार सुनो'

चेम्सफोर्ड—बार बार शोर मचाकर हमारे कानों को कौन कष्ट दे रहा है।

छेडता है कौन इस मातम के सोजो साज को।
कान भी दुखने लगे है सुनके इस आवाज को॥

सेक्रेटरी—हजूर अनवर, कुछ दुखी लोगोका डेपुटेशन है

चैम्सफोर्ड—यह कौन लोग है?

सेक्रेटरी—इन्साफ राजनीति और भारत माता।
अब तक सितम की गोया तलवार तन रही है।
सूरत मलीन तीनों दुखियों की बन रही है।

मानो किसी ने उनको पाओं मे रौंद डाला।
कपडो से खाक मिट्टी और धूर छन रही है॥

चैम्सफोर्ड—जाओ, उनको अन्दर बुलाकर लाओ।

खुशी—तो श्रीमान हम यहा से निकल जाये?

आप की सेवा का सब को हौसला होने लगा।
दर्दमन्दो का यहा मातम बपा होने लगा॥
जिस जगह गम है वहा कैसे खुशी की जात हो॥
काम क्या दिनका वहा होगा जहा पर रात हो॥

दौलत—मै भी तो यही कहती हू, कि दुख और दर्द के साये से मेरा पवित्र शरीर भ्रष्ट हो जायेगा। इन लोगों के आने से मेरी गुरुता का तेज नष्ट हो जायेगा। माई लार्ड मेरे होते हुए आप को दुखी लोगों की सगत नही करनी चाहिये, इन लोगो को जवाब में "नहीं" करनी चाहिये।

जहा पर खुशी और दौलत पडी है।
जहा चोबदारी में राहत खड़ी है।
वहा दर्दमन्दो का आना मना है॥
वहा आके आसु बहाना मना है।

चैम्सफोर्ड—लेकिन यह लोग बडी आशा लगाकर आये होंगे, हर तर्फ से ठोकरें खाकर आये होंगे।

दौलत—तो जो लोग खुशी और दौलत से हीन हैं, वह हमेशा ठोकरें ही खाया करते है। ये लोग दुनिया मे एक दूर दराज जङ्गल में उन नामुराद फूलों के मानिन्द है, जो कि समपुर्मी की हालत में पैदा हुए खिलते और मुर्झा जाया करते है।

उनके साये से सदा दामन बचाना चाहिये।

जो कि निर्धन हैं उन्हें मत मुंह लगाना चाहिये॥
उनकी हस्ती ही बनी है नीच कामों के लिये।
ठोकरें अच्छी हैं इन मुफलिस गुलामों के लिये॥

खुशी—अगर आप उनका दुखड़ा सुनकर उन्हें अपनायेंगे, उन्हें मुरव्वत की सहायता से आसूदा बनायेंगे, तो फिर आप की सेवा कौन करेगा, आपके ऐशो आराम की रक्षा करने के लिये सङ्कट का सामना कौन करेगा?

वह करो युक्ति कि जिस से यह सदा मोहताज हों।
इन की आशायें सदा तदबीर से ना राज हों॥
मुंह लगाते ही रहोगे तो यह सिर चढ़ जायेंगे।
इनको गर अवसर मिला तो आप से बढ़ जायेंगे॥

आवाज—(अन्दर से डेपुटेशन की) सुनो सुनो अय नर्म गद्देलों पर लम्बी तान कर सोनेवाले। दौलत और खुशी पर हज़ार जान से कुर्बान होने वाली दर्दमन्दों की भी हाहाकार सुनो, क्यों वृथा अभिमान पर उधार खाये हो, हम भी तो उसी ईश्वर के पुत्र हैं जिसके तुम बनाए हो?

न दौलत के नशे में इस क़दर भी चूर हो जाओ।
न बल कौशल पे इतने निर्दयी मग़रूर हो जाओ॥
न इनकी बात पर जाओ यह उलटी राह जाते हैं।
यह दौलत और खुशी तो धर्म से तुमको गिराते हैं॥

चैम्सफोर्ड—अच्छा यह लोग क्या कहना मांगता है?

सेक्रेटरी—हजूर, पञ्जाब में ओडवायर ने जो उत्पात किया है, डायर ने जो निर्दोषों का रक्तपात किया है, उन लोगों के हत्याचार से जो लाखों घराने बर्बाद हुए हैं, अमृ-[त]से जल्या वाले बाग और दूसरे शहरों में जो अपवाद

हुए हैं, यह उनकी करुणा जनक कथा सुनाना चाहते हैं, अपने जख्म खोल कर दिखाना चाहते है, इस मामले में आप से न्याय कराना चाहते हैं।

यह आपके जिम्मा ही सियासत के काम हैं।
कारण कि आप शाह के कायम मुकाम हैं॥
सरकार की मदद पे उन्हे एतबार है।
भारत में उन को यही तो अन्तिम द्वार है॥

चम्सफ़ोर्ड-आखिर उनकी क्या सलाह है ?

सेक्रेटरी-कि आप कुछ समय के लिये पंजाब की यात्रा करें, अपनी आंखों से हत्या काण्ड का दृष्य मुलाहजा करें।

हाल के शामिल अगर इतनी दया हो जायेगी।
आप की इतनी दया उनको दवा हो जाए गी॥

चैम्सफ़ोर्ड-मगर एप्रेल का महीना है, शिमले से सफर करना जान बूझ कर मरना है।

खुशी हो श्रीमान् सत्य है, पंजाब की गर्म जल वायु से आपका मिजाज बिगड़ जायेगा, शिमले की सुगन्धित शीतल वायु का आदी शरीर पंजाब की गर्म हवाओं का कष्ट क्यों कर उठायेगा। आपके दुश्मनों की तबीयत बिगड़ जायेगी तो क्या इन लोगों की दर्दमन्दी कुछ काम आयेगी ?

उसी में जल बुझे हैं यह जो अग्नि खुद लगाई थी।
बचाता कौन उनको वह मरे है जिनकी आई थी॥
यहीं पर कीजिये गम का अगर इजहार करना है।
मरे हैं जो अब उनके वास्ते क्या हमको मरना है॥

दौलत-अगर तीस करोड़ गुलामों में से एक आध हजार मर भी जायें तो क्या सरकार का काम रुक सकता है ?

गरीबों को अमीरों से ही आखिर काम पड़ता है।
गरीबों की कमी से क्या अमीरों का बिगड़ता है॥

चैम्सफोर्ड ठीक है, ऐसी घटना तो राज में हुआ ही करती है और जो कुछ ओडवायरने किया होगा वह सोच समझ कर किया होगा, अपने देश और जाति के हित का काम किया होगा।

जो हुआ इस पर न अब आंसू बहाना चाहिये।
हिन्दियोंको अब यह घटना भूल जाना चाहिये॥

आवाज-परन्तु यह वह घटना नही जिस को भारत वासी भूल जायेंगे। क्या भारतवासी यह खूनी इतिहास भूल जायेंगे? नहीं नहीं, आप आखो से देखोगे तो शिमलेका वास भूल जायेंगे।

न देखा हो अगर अन्धेर तुमने ओडवायर का।
न देखा हो अगर पहले कभी भी जुल्म डायर का॥
तो देखो किस तरह दोनोंने मिलकर खाक छानी है।
बहाया इस तरह है खून मानो खून पानी है॥

आवाज पर फुलाटका फटना, जल्या वाले बाग का दहशत नाक नजारा दिखाई देना, सबका देख कर कांपना टेबले पर पर्दा।

सीन दूसरा — ऐक्ट तीसरा

स्थान अगला महल—पर्दा !

(शौकतअली व महात्मा गांधी का आना)

गांधी—प्यारे शौकत अब हमें एक संसार को यह दिखाना है कि हिन्दू और मुसलमान अपने अपने मजहब पर कायम रहते हुए भी किस तरह एक हो सकते हैं, किस तरह पापोंसे छूटकर दोनों नेक हो सकते हैं।

शौकतअली—उस खालिक वाहद से कौन सी बात दूर है, अब उस खुदा को यही मंजूर है।

तारे कब रौशनी से न्यारे हैं, तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं।

गांधी--मत भेद के सिवा हमारे बीच में और कोई भेद भाव नहीं।

दोनों का एक खुदा है और दोनों भारत के बेटे हैं।

दोनों गर्दिश के मारे हैं दोनों किस्मत के हेटे हैं॥

शौकतअली—

हमको है चिन्ता भारतकी और उस पर दर्द खिलाफत का।

तुम दुखी हमारे दुख से हो उस पर है रोग सियासतका॥

गांधी—इस वक्त हमारे दुख और सङ्कट की सीमा नहीं।

कठिन जीना है और है सामना आफत पर आफत का।

इधर रोना है भारतका उधर रोना खिलाफत का॥

शौकतअली—लेकिन प्यारे गांधी, याद रखो जिस दिन दुनिया में खिलफत का नाम न होगा, उस वक्त यह समझ लेना कि आलम के तख्ते पर इस्लाम न होगा।

यह जिंदा ही रहेगी गर हमारा नाम बाकी है।
खिलफत तब तलक है जब तलक इस्लाम बाकी है॥

गांधी-अफसोस! क्या इङ्गलैण्ड के साथ आपका यह समझौता था?

शौकतअली—खलाफत की आन पर बट्टा लगाने के लिये कौन मुसलमान तैयार होता था, लेकिन हमें बतलाया गया कि इस्लाम की अज़मत की तौहीन नहीं की जायेगी, तुम्हारी खिलाफत पर आंच न आवेगी।

नहीं एक वादा भी पूरा हुआ है।
बताओ तुम्ही कौन अब बे वफा है॥

गांधी—तो जहां इन बातोंने भारत वासियोंके दिल घायल किये हैं, वहां हिन्दू मुसलमानोंके दिल परस्पर जोड दिये। जिस हिन्दू मुसलमानों की एकता के लिये नेता लोगोंने बडे परिश्रम से कई सालों तक ‹ल किया, उस एकता को संसार चक्र ने एक ही दिन में सफलता का सेहरा पहना दिया।

जो कि नामुमकिन था वह ही आज मुमकिन होगया।
आज भारत के लिये स्वराज्य मुमकिन हो गया॥

शौकतअली—आपने इंग्लिश मुदब्बरोंकी पालिसी को देखा
न पूरा हो कयामत तक भी यह इकरार देखा है।
यह वादों से मुकर जाना यह साफ इन्कार देखा है॥

गांधी—हमने क्या नहीं देखा लार्ड कर्जन का शासन नहीं देखा या कि जनूबी अफ्रीकाके आन्दोलनमें बृटिश सरकार का चलन नहीं देखा।

शौकतअली—जङ्ग जर्मन में जब भारतने अपना तन मन धन निछावर किया था, क्या उस समय हम लोगों ने

तमाम सियासी तहरीकों को इसी लिये रोक दिया था।

गांधी—"लीग आफ नेशन" ने हमें विश्वास दिलाया था कि अगर जर्मनी के तमाम मंसूबे बर्बाद हो जायेंगे तो तमाम पराधीन देश आजाद हो जायेंगे। इसी आशा पर मैंने स्वर्गीय तिलक को असहयोग करने से रोका था।

दोहा—लेकिन इतने त्याग और आशा के पश्चात्।
रौलट बिल ने कर दिया भारत पर आघात॥

शौकतअली-और इस पर डायर का हत्याचार, मार्शल ला का वार, लार्ड चेम्सफोर्ड का पीठ ठोंकना, डायर की इम्दादके लिये फण्ड खोलना।

किया है मजबूर सबने मिल कर हुई नसीरी हमें सताकर।
अब इसपे कहता है कौन भारत को बेवफाओंसे तू वफाकर॥

गांधी—अब तो भारतवासियों को नौकरशाही की न्याय शीलता पर लेशमात्र विश्वास नहीं, अब किसी तरहकी इनलोगों से आश नहीं। दफतरी हकूमतने अभी तक अनर्थ की तलवार को वापस म्यानमें नहीं डाला। जबान बन्दीसे कैदसे, जुर्मानेसे जब तक भी वक्त आया अपने दिल का गुबार निकाला।

जारी रहा यदि कर्म यह यूंही हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का॥
जो कुछ रही थोडी सी जा वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण भारत भूमि बस मरघट मही बन जायेगी॥

शौकतअली-इन कोताह अन्देश हाकिमों पर अफसोस है, जिनको इतने पर भी सब्र नहीं, जिनका अपनी उमडी हुई बे लगाम तबीयतों पर जरा भी जब्र नहीं। वतन की बेचैनी जो खतरनाक आग के शोलों की तरह आसमान की तरफ बढ

रही है, वह कहीं दुनिया के अमनो अमान पर हाथ साफ न करे, अपनी ताकत से आप अपना इन्साफ न करे।

कह रहा है आस्मा कुछ अब दिनों का फेर है।
भर चुका है अब यह बर्तन फूटने की देर है॥

गांधी-तो उचित होगा कि हम इस घोर असन्तोष का उपाय करें अपनी मुसीबतका आप न्याय करें,प्रजाकी प्रज्वलित रोष अग्नि फैलाने के बदले आत्म त्याग का उपदेश करें।

दफतरी अजमत को काटें आत्मिक हथियार से।
जुल्म का ले इनसे बदला सब्र की तलवार से॥

शौकतअली-मुझे कामयाबी की पूरी उममेद है। आप की इसलाह निहायत ही मुफीद है। हमारी दबी हुई जिन ताकतों के जोर पर दफतरी हकूमत हम पर जुल्म करने के काबिल है, वह ताकतें हटा ली जायें।

गांधी-तात्पर्य्य यह कि अन्याय से अपना सम्बन्ध तोड लें, और न मिल वर्तन करके नौकरशाही को अपनी किस्मत पर छोड दें। यही सबसे अच्छा और अन्तिम उपाय है, हमारे लिये अब यही धार्म्मिक न्याय है।

इस युक्ति से शक्ति जुल्म की एक दिन तबाह होगी।
मुझे निश्चय है यह आखिर हमारी ही फतह होगी॥

शौकतअली-अदम तआवनके लिये इससे बेहतर मौका फिर हाथ नहीं आ सकता। मार्शल ला और खिलाफतके मसलेसे जो बेदारी मुल्कमें हो रही है,अब उसे कोई भी नहीं दबा सकता।

है झुकाओ इस तरफ जरदार और मोहताज का।
चाहता है बच्चा बच्चा अब तो हक स्वराज्य का॥

।धी-और अब स्वराज्य के बिना हमारी जाति का उद्धार

नहीं होसकता। स्वराज्यके बगैर देशका उपकार नही होसकता।

दोहा-पराधीनता का मिटेगा इस से ही रोग।
आशाये पूरन करेगा केवल असहोग॥

शौकत—अब इसका प्रोग्राम तैयार करना होगा।

गांधी—प्रोग्राम यही है कि पदवी धारी पदवियो का त्याग करे कौसलो और बृटिश अदालतो का बहिस्कार हो। सरकारी कालिजो में पढने वाले विद्यार्थियो को त्याग का विचार हो, ताकि देश को नौकरशाही सरकार की संस्थाओ की शान मिट जाय। स्वदेशीके प्रचार से भारतवासियां का अज्ञान मिट जाय बोलो स्वराज्य की जय।

(स्वराज्य का झंडा लिये गांधी महाराज के चन्द एक शिष्यो का आना और गाना)

गाना।

हम लेकर छोड़ेंगे इसको, स्वराज हमारा हक है। हम।
सब कुछ कुर्बान करेंगे, बेटो पर सीस धरेंगे॥
बन्धन से नही डरेंगे, क्या चिन्ता यदि मरगे। हम लेकर
प्यारो सब भेद मिटाओ, सब कर्म वीर बन जाओ।
आत्म का तेज दिखाओ, गांधी को कुशल मनाओ। हम॥
भारत यह देश हमारा, है प्राणो से भी प्यारा।
सत और धर्म की धारा, तन मन धन इसी परवारा। हम।
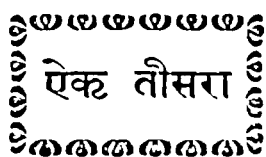
सीन एक तीसरा चौथा

कौमी पिण्डाल।

अदम तश्रावनके झण्डे के नीचे गांधीका चर्खा कातते हुए दिखाई

गाना।

चर्खा कातो अय प्यारो स्वराज अगर लेना है।
चर्खे से हमको मित्रो घर जर से भर लेना है॥
यह चर्खा बना स्वदेशो है सच्चा मित्र हितैषी।
हमको भण्डार विदेशो अपने वस कर लेना है॥
ऐसा अब करो उपाय पैसा नहो बाहर जाय।
हमको इंगलिश से न्याय इस चर्खे पर लेना है॥
कातो अय बहनो भाइयो, कातो अय मित्रो भाइयो।
हमको अय मित्र महाइयो, स्वराज समर लेना है॥

(एक शराबखोर का हाथ में बोतल लिये सूफियाना हालत में दाखल होना)

शराबी—नहीं है नहो है, वह आजादो जो मनुष्य को गुलामी के बन्धन से आजाद करती है, वह इस शराब में नहीं। वह सच्ची खुशी जो इन्सान को मरते दम तक न उतरनेवाली खुमारी से शाद करती है, वह इस शराब खाना में नहीं। शराब खोरी हमारी गुलामी की जंजीरों को और भी कठिन कर रही है। यह शराब खोरी हमें मुफलिस और निर्धन कर रही है। यह खाना खराब हमें छिन भर के लिये झूठी खुशी देकर हम से द्रव्य पदार्थ जन्म भर के लिये छीन ले जाती है। यह खाना खराब हमें भूका कङ्गाल और सिडी सोदाई बनाती है यह शराब हमारे देश की दौलत को लूट कर हमें रुस्वाई का मुँह दिखाती है।

जिल्लत का है निशान गरीबी कहर है।
खुश रङ्ग है असर में मगर एक जहर है॥
सेवन किया है जिसने इस मदिरा मलीन का।

दुनिया का वह रहा न रहा अपने दीन का ॥

इस कमबख्त ने बीवी के शरीर का जेवर और सन्दूकका धन तक न छोड़ा। इसने अपने अभागे पुजारी के घर का वर्तन तक न छोडा। आत्मा और बुद्धि को मलीन कर दिया, हर तरफ से निराश और निर्धन कर दिया। बस आज से इस नामुराद को तिलाजलि देता हूं और अदम तआवन (असहयोग) की शरण लेता हूं। मैं इस को अपावन और भ्रष्ट वस्तु समझ कर हमेश के लिये छोडता हूं, आज से इस बोतल को तोडता हूं (तोडना) इस लिये नहीं, कि इसने केवल मेरी ही बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया, बल्कि इस लिये कि इसने हमारे देश की पवित्रता को नष्ट कर दिया।

वसीला है दुखो का यह जरिया है यह तापो का।
यह कारण है बुराई का यही है मूल पापो का॥
न मिल वतन करूंगा आज से इस भ्रष्ट वस्तु से।
मै अब भागूंगा इसके नाम से और उसकी बदबू से॥

[अदम तआवन के झंडे के नीचे जाकर चर्खा कातना]

गाधी—आओ! आओ! छोटी राह को त्याग कर उस सच्चे मार्गपर आओ। जो सधा खुशी और स्वाधीनता की खूबसूरत मञ्जिल को जाता है।

दोहा--होगा अब नही जान पर सङ्कटका आघात।
नया जन्म है आज से हुआ तुम्हारा तात॥

शराबी—बोलो गाधी की जय!

(खां साहब का आना)

खां साहब—कुछ नहीं, यह खिताब जो नाम की खुशबूको केवल नौकरशाहीको तहजीतारीक दुनियामें फैलाता है,जो अपने भाइयोंका कृपापात्र बननेके बजाय नौकरशाहीकी खुशामद का पात्र बनाता है। कुछ नहीं,यह चकाचौंध सुनहरी और खयाली सूरत का खिताब पाकर इन्सान अपने आपको बिरादरी और भाई चारेके आनन्द मंगलसे दूर समझने लग जाता है। वह अपनी शानको बाकी तमाम भाइयोंसे बाला और अपने आपको मगरूर समझने लग जाता है। लेकिन यह गरूर और बड़ाई जो अपनी मातृभूमिके जाये सगे भाइयों की आजाद मोहब्बतसे महरूम करके जीवन को शानदार बनाती है, जो गुलामी के गढे की सबसे नीची गहराई तक ले जाती है वह तुच्छ है। उसका जाहरी रूप कुछ है और बातनी सूरत कुछ है।

> है बोझ नदामत का धन्धा है गुलामी का।
> दासत्व की बेड़ी है फन्दा है गुलामी का॥
> जो इसके हैं दिलदादा देश को भूले हैं।
> हस्ती नहीं है जिसकी उस चीज पै फूले हैं॥

खिताब के लिये एड़िया रगड़ने वाले एक ऐसे मार्ग पर जा रहे है। जो स्वाधीनता से बहुत दूर है और जो गुलामी की झाड़ियों और कलंक के कांटों से भरपूर है।

> जगत में अच्छे बुरे की इन्हे तमीज नहीं।
> यह जान देते है उस पर जो कोई चीज नहीं॥

चूंकि इन खिताबोंके शौकने ही मेरे हम वतन भाइयों को जलील बनाया है, देश को जल्या वाले बाग का दृष्य दिखाया है, खिलाफत की आन को मिटाया है, इस लिये मैं आज अपने खिताबों को सलाम करता हूं।

इन्हों के बोझने अच्छे खयालों को दबाया है।
हमें बेबस किया है और हमें बेकस बनाया है॥
न मिल वतन करूंगा आज से मैं इन खतावों से।
रखूंगा दीनको छूटूंगा दुनिया के अजाबों से॥

[अदम तआवुन की झण्डे के नीचे जाना]

गांधी—आओ प्रिय, उस सायेके नीचे आओ, जो तुम्हारे ताप को दूर कर देगा, सत्य धर्म की शिक्षा देकर अज्ञान को चूर चूर कर देगा।

उपाधि 'ाब यह झूठी है यह गद्दारी गुलामी ह।
करो भाइयों से मिल कर काम इसीमें नेकनामी है॥

खानसाहब—बोलो गांधी की जय।

जिलेदार—कुछ नहीं, यह गुलामी की ताबेदारी कुछ नहीं। यह नम्बरदारी यह जिलेदारी कुछ नहीं। यह उपाधियां हमारे दिल और दिमाग को परतंत्रता के विचारों से भरपूर कर देती है, हमें तरक्की के रास्ते से हटाकर आज़ादी की गोद से दूर करती है। इन्होंने हमारे ऊपर गुलामी का गहरा रङ्ग चढाया है। इन्होंने हमारे बच्चों को कौमी तालीम के विचार से महरूम करके गुलामी का सबक पढाया है। इन्हों ने हमें स्वार्थ का गाना दिखाकर उस जालमें फसाया है, जिससे निकलना मुहाल है। आज ठण्डे दिलसे विचार करने पर, अपने अन्तरात्मा की आवाज सुनने पर हमें प्रतीत हुआ कि हमारा सर्वस्व पामाल है। कानून की खुफिया पेचीदगियों में फसी हुई हमारी अपनी वरासत ही हमारा अपना माल नहीं, इस पर भी हमें अपने और अनभले का ख्याल

यह जुगराफिया हमें तोते की तरह रटने का सबक पढाता है यह कहानियों का कोर्स हमे बिल्ली को चार टांग और कुत्ते के दो कान के सिवा कुछ नहीं सिखाता है। यह शिक्षा हमारे दिलों में दफतरी हकूमत की नौकरी का शौक पैदा करती है। यह सरकारी स्कूलों और कालेजों की शिक्षा हमें अपनी प्राचीन चाल ढाल से भगा कर हमे फैशन पर शैदा करती है। ऐसी तालीम जो हमे फाकाकशी का हुनर सिखाती है, जो हमें पराधीन और मुफलिस बनाती है, आज मै उस तालीम से हमेशा के लिये असहयोग करता हूं।

सुवास आती गुलामी की है इन खुश रंग फूलों से।
नमिल वर्तन करूंगा आज से मैं इन स्कूलों से॥

अदम तआवन के झगडे के नीचे जाना

गांधी-दोहा—युवकों पर है देश और जाति का आधार।
चर्खा कातो तात और करो देश उद्धार॥

विद्यार्थी—बोलो गांधी की जय।

जैण्टलमैन का आना।

लुटा है मालो जर अपना इन विदेशी लिबासों में।
बन्धी है अपनी गर्दन इनके ही तागों की रासों में॥
बने है इस कदर लट्टू हम इन की खुश नुमाई पर।
जरा भी अब ध्यान अपना नहीं अपनी भलाई पर॥

लेकिन यह कालर क्या है गुलामी का फन्दा है, हमारा हर एक विचार आज विदेशी शासन का बन्दा है। यह नकटाई नहीं, बल्कि हमारी गर्दन की जञ्जीर है। हमारा खाना पीना पहनना उठना बैठना सब कुछ विदेशी बन्धनमें

असीर है। इन्हीं जाहरी खूबसूरतियों के सब्ज बाग में आकर हम करोड़ों रुपये विदेशों को लुटा देते हैं। हम यह सुनहरी भड़क देखने के लिये अपने घर को आग लगा देते हैं। वह स्वदेशी खद्दर जिसको हमारे पूर्वजों के पावन शरीर ने पवित्र किया है, हाय, आज हमने भोलेपन में फंसकर, धर्म से पतित होकर उसे त्याग दिया है। जिस देशी खद्दर स्वाराज का आधार है, उसे हमने छोड़ दिया, जो चर्खा हमारे लिये लक्ष्मी का भण्डार है, उसको हमने तोड़ दिया, हमारे दिमाग रद्दी होगये, हमारे मन अपवित्र होगये। हम सिरसे पैर तक विदेशी है हमने अपने कर्त्तव्य को, अपने धर्म को मसल दिया, और धर्मने हमको कुचल दिया। हाय हमने यह न जाना कि —

देश के तिनके में तेराने की एक तासीर है।
देश की मिट्टी का जर्रा भी बड़ा अक्सीर है॥
देशका खद्दर है बढ़िया मखमलो कमख्वाब से।
मात है अतलस विदेशी इसका आबोताब से॥

आज अपने जाति सुधार के लिये, देशोद्धार के लिये, अपने मुल्क का पैसा बचाने के लिये, कौम की मुफलसी को मिटाने के लिये और स्वराज्य पाने के लिये मैं विदेशी वस्तु को हाथ नहीं लगाऊंगा। स्वदेशी खद्दर पहनूंगा, स्वदेशी भोजन खाऊंगा और परमात्मासे प्रार्थना करूंगा।

मेरा खाना स्वदेशी हो मेरी भाषा स्वदेशी हो।
मेरी शिक्षा स्वदेशी हो मेरी आशा स्वदेशी हो॥
मेरी नस २ मेरी रग रग स्वदेशी की हितैषी हो।
मेरा जीना स्वदेशी हो मेरा मरना स्वदेशी हो॥